

श्री हेमहंस गणि विरचित टीका सहित-

श्री हरिज़ड सूरि विरचित **लग्नशुन्धिः**

श्री रत्नशेखर सूरि विरचित दिनशुष्टि.

ए त्रले व्यंथो सर्वोपयोगी जाली गुर्जर जापानुवाद छपात्री प्रसिद्ध करनार

श्रावक जीमसिंह माणेक.

पुस्तको प्रसिद्ध करनार तथा वेचनार. मांमवी, मुंबइ.

संवत् १७७४. वीर संवत् १४४४. सने १७१०.

crinted by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press, 23, Kolbhat Lane, Bombay.

Published by Bhanji Maya for Bhimsi Maneck, 225-231 Mandvi, Sackgalli, Bombay.

प्रस्तावना.

धा ध्यार संसारसागरमां मग्न थयेखा प्राणीगणो चोराज्ञी दक्त योनिक्य तरंगोमां पण कर्या करे हे. तेमां दैवयोगे मानुष्यादिक सामग्रीक्ष्य फलकादिन छुं ध्वयदं न क्या हतां पण केटलाएक अजन्यत्वादिक छुर्जाग्यने योगे असत्कर्मरूप विपरीत वायुना । कर्षण्यी पुनः पुनः अरघष्ट्रघटीना न्याये तेज योनितरंगोमां अनंत काळ सुधी प्रमण्यां करे हे, अने केटलाएक जन्यो सद्जाग्यने योगे संयमादिक सत्कर्मरूपी अनुकूळ युनी प्रेरणायी मुक्तिरूपी तीरे पहोंची निर्जय परमानंदने पामे हे. आ मुक्तिज सर्व । इ पण दर्शनने इष्टतम हे, कारण के अन्य गतित्रय (देव, नारक अने तिर्यंच) सिवाय क मनुष्यगतिमांज अने तेमां पण कर्मजूमिना मनुष्योने माटेज धर्म, अर्थ, काम अने । इ ए चार पुरुषार्थ साधवानी फरज शास्त्रमां कहेली हे अर्थात् ते मनुष्योज चारे रुपार्थी साधवानी फरज शास्त्रमां कहेली हे अर्थात् ते मनुष्योज चारे रुपार्थी शाक्षवानुं अवशेष रहेतुं नथी. ते मोद्यने साधवानुं एकांत साधवा ही बीजुं कांइ पण साधवानुं अवशेष रहेतुं नथी. ते मोद्यने साधवानुं एकांत साधव मंज हे, एटले के धर्मनुं मुख्य फळ मोद्यज हो, अने अर्थ तथा काम ए आनुषंगिक ळ हे. आ छपरथी सिद्ध थाय हे के मनुष्य अने तिर्यंचना प्राणित्व जाति अने आहा-दिक धर्मी (संज्ञान) समान हतां पण मात्र एक धर्म पुरुषार्थने आश्रीनेज मनुष्यजव ह गएयो हो. कह्यं हे के—

"श्राहारनिदाजयमैथुनं च, समानमेतत्पशुजिर्नराणाम् ।

धर्मो हि तेषामधिको नराएां, धर्मेण हीनाः पशुजिः समानाः ॥ १ ॥"

"आहार, निजा, जय अने मैथुन आ चार पशुर्जनी साथे मनुष्योने समान है. तेमां नुष्योने एक धर्मज अधिक हे, ते धर्म वके रहित होय तो ते पशु समानज हे."

त्रा धर्म जिन्न जिन्न दर्शनोमां अन्यान्य प्रकारे वर्णन कर्यों है. तेमां सर्वथा प्रकारे भैनी शुक्रता जैन दर्शन्ना जेवी कोइ पण दर्शनमां नथी एम घणी रीते सिक्ष थाय है।

रंतु ते श्रत्र श्रप्रस्तुत होवाथी कहेवामां श्रावतुं नथी।

श्रहीं धर्म शब्दनो सामान्य श्रश्नं फरज-कर्तव्य थइ शके हे. ते लौकिक श्रने लोको-र जेदे करीने वे प्रकारनो हे. तेमां पित्रादिक पुत्रादिकनुं पोषण करे, जन्मोत्सवादिक स्कार करे, विद्याध्ययन करावे, लग्न करे तथा व्यापारादिकमां योजना करे, ए तेमनी रज-धर्म हे. तेज रीते पुत्रादिक पित्रादिकनी सेवा-जिक्त करे, तथा श्रंते श्रीध्वदेहिका-रंक किया करे, ते तेमनी फरज-धर्म हे. एज रीते पित-पश्यादिक श्रन्योन्यना हितकार्यमां वर्ते तथा निर्वाहादिकने कारणे कृषि, ब्यापार श्रने राजसेवादिक कार्यमां प्रवर्ते, ए वंगेरे धर्म-फरज कहेवाय हे. श्रा सर्वनो लौकिक धर्ममां समावेश श्राय हे श्रने केवळ

१ उपरती युक्तिथी अर्थ, काम अने मोक्षतो भर्ममांज समावेश थाय छे.

कात्माना मोद्य पर्यन्तना पारतोकिक हितने माटेज नित्यकर्म, देवपूजा, गुरुशुश्रूप दान, शीळ, तप, जाव, संयम (देशविरति श्रने सर्वविरति) विगेरे सिक्तयामांज कि प्रवर्तेषुं ते सर्व लोकोत्तर धर्म कहेवाय है. श्रा बन्ने प्रकारना धर्ममां जेम वाह्य साम्ध एटले पुरुपसंपद्, धन, नीरोगता, श्रात्मवीर्य, सद्वुद्धि श्रने चित्तोत्साह विगेरेनी श्राव स्यकता है तेज रीते सन्मुहूर्त्तरूप श्राज्यंतर—देवी सामग्रीनी पण श्रत्यंत श्रावश्यकत है. लोकिक श्रथवा लोकोत्तर कोइ पण ग्रज कार्य करती वखते कुतूहळी सुद्ध देवोनं श्रनेक प्रकारे जपदव संजवे हे. कहुं हे के—

"श्रेयांसि बहुविज्ञानि, जवन्ति महतामि । श्रिश्रेयसि प्रवृत्तानां, कापि यान्ति विनायकाः ॥ १ ॥"

"महापुरुषोने पण कट्याणकारी कार्यो घणां विघ्नवाळां थाय हे, श्राने अशुज कार्यमां प्रवर्तेला पुरुषोनां विघ्नो कोइ पण हेकाणे चाल्यां जाय हे."

श्रयोग्य काळे करेखां विवाहादिक तथा दीका-प्रतिष्ठादिक कार्यो उत्तर काळे उत्तर श्रयाण फळने श्रापनारां दृष्टिपथमां श्रावे हे. श्रयोग्य काळे करेखां प्रयाण, वेपार विगेरेनां विपरीत परिणामो नीपजे हे. ए विगेरेने दूर करवा माटे दैवी सामग्री सिवाय बीर्ज, कोइ पण सामग्री समर्थ नथी एटखुंज नहीं, परंतु परवशताने खीधे ध्रयेखां जनम व्याधि श्रने मरणादिक पण श्रयोग्य काळे थयां होय तो ते पण शांति—पृष्टि श्राहि देवी सामग्रीथी निर्दोष थाय हे. श्रावा श्रमेक हेतुने खड़ने दरेक शुज कार्यमां शुज् मुहूर्त्तनी जहर हे, श्रने तेने प्रतिपादन करनार ज्योतिष शास्त्र हे.

अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष् शास्त्रनो विषय पए अत्यंत सूक्ष छने छत्मर्ग अपवादादिक वमे अति गहन तथा सुविस्तृत हे. जेम अध्यातमादिक तुं रहस्य समजहं छति किन हे तेम आ ज्योतिपनुं तत्त्व पए अति गहन हे. अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष तत्त्व पए अति गहन हे. अन्य शास्त्रोनी जेम आ ज्योतिष शास्त्र पए अनेक दर्शनी ए जिल्ल जिल्ल प्रकारे स्वस्वशास्त्रीय जापामां रचे हुं हे. जो के दर्शननी जिल्लताने सहने प्राये आ शास्त्रना विषयमां जिल्लता नथी, तोपए गिएत सिवायना सर्व विषयोमां एकज दर्शनना अथकार आचार्योना पए मतांतरो हे. ते सर्व विषयोनुं सूक्ष क्षान् जो होय तो ते अमुक अपेकाए केवळी जेटलुं क्षान घरावे हे तेम सामान्य मनुष्यने प्रतीत थाय हे, कारए के अष्टांग निमित्तने जाएनार गोशाळक श्रीमहावीर स्वामीनी समान बनी पोताना सेवकोमां तीर्थकर जेटलो पूज्य थयो हतो. वराहिमहिर के जेए

१ आ शास्त्र केवळ काळने प्रतिपादन करनार होनाथी सर्व कार्यमां काळनेज हेतुरूप गणे छे, तेथी करीने द्रव्य, क्षेत्रादिकनो निषेध यह शकतो नथी.

हत के हो दीया अंगीकार करीने ऋनेक शास्त्रोमां प्रवीणता सेळवी हती ते पोताना ाइ जडबाहुने गुरुष श्राचार्यपद श्रापे**टुं** जोइने ईर्प्याने खीधे चारित्रनो त्याग करी िठानपुरना जितशत्रु राजानो पूज्य पुरोहित थयो हतो. एकदा वराहमिहिरे छानुक काले कुंगाळुं करीने राजाने कहां के छा कुंगाळामां आकाशमांथी अमुक वखते वावन ळनो मोटो मत्स्य पमशे. ते वखते जाइबाइ स्वामीए कुंमाळानी बहार पमवानुं कहुं ने तोखमां तेथी जी परवानं कहां. तेज प्रमाणे कंराळा बहारज अने जी तोखवाळो ह्यो. त्यारपत्नी एकदा राजानी राणीए पुत्र प्रसच्यो. तेनी जन्मकुंमळी करीने वराह-िहरे कुंवरनं सो वर्षनं आयुष्य कह्यं, जडवाहु स्वामीए विलामी शकी सातमे दिवसे रण यहो एम कहां. ते सांजळी राजाए गाममांथी सर्वे विदामी जेने बहार कढावी अने ए। चोकसीथी महिकानो पए प्रवेश न थड़ शके तेवा एकांत महेलमां ते पुत्रने राख्यो. वयोगे सातमे दिवसे बारणाना जंबरामां बेठेखी धात्रीना जत्संगमां रहेखा पुत्रना माथा र द्वारनी अर्गद्वा पनी, तेथी तेनुं मरण नीपन्युं, ते जाणी राजाने अत्यंत शोक थयो. ਹੀ तेले गुरु पासे जइने पूच्छं के आपना कहेवा प्रमाले पुत्रनुं सातमे दिवसे मरण युं, परंतु ते मरण बिलामीथी थयुं नहीं, तेनुं शुं कारण ? गुरुए कहां के घारनी र्गला छपर बिलामीनुं चित्र हे, तेमज अर्गलाने बिलामी कहे हे, तेथी ते बिलामीथीज रण थयं हे. ते सांज्रही राजाए ते वातनी खात्री करीने गुरुना ज्ञाननी प्रशंसा करी. आ माणे जैन ज्योतिषमां रहेला श्रपूर्व ज्ञाननी यथार्थता शास्त्रप्रिक्त हे.

आवा विस्तार ज्ञानवाळा ज्योतिष् शास्त्रमां आखी खगोळ विद्यानो पण समावेश ।य छे. श्रीसूर्यप्रक्रिश्च अने चंड्रप्रक्षिति विगेरे गणित शास्त्रने आधारे वर्ष, अयन, रुतु, ।स, पद्य, रात्रि दिवस विगेरे काळचक्रनो विद्याग नियमित रीते जाणी शकाय छे. तेज कि तिथि तथा मासनी वृद्धि अने द्यय, प्रहो, नक्ष्त्रो, ताराचं विगेरेनो चदय, अरत, क्र गित अने रुजु गित, तथा जहकापातादिक चत्पातो आगळथी जाणी शकाय छे, प्रने फळप्रतिपादक प्रयोने आधारे पृथ्वी पर श्रता सुकाळ, इष्काळ विगेरे शुचाशुच छ पण जाणी शकाय छे. एक मनुष्यना जन्मादिक काळने आश्रीने तेनी आखी जींदगी

१ वराहमिहिरे ज्योतिषना विषय उपर वाराहीसंहिता रची छे, ते छोकमां प्रसिद्ध छे. आ भद्रबाहु खामी चौद पूर्वधर होवाथी श्रुतकेवळी हता अने तेथी करीने केवळीना जेटळी यन करवानी शक्ति हती. तेमणे आचारांग निर्युक्ति, सूत्रकृतांग निर्युक्ति, बृहत्कल्प मूळ तथा तेनी ार्युक्ति, व्यवहार मूळ, आवश्यक निर्युक्ति, दशवैकालिक निर्युक्ति, उत्तराष्ययन निर्युक्ति, पिंड । प्रुक्ति, ओघ निर्युक्ति, दशाश्रुतस्कंघ मूळ तथा तेनी निर्युक्ति, संसक्त निर्युक्ति, उपसर्गहर स्तोत्र तथा थोतिषमां भद्रबाहु संहिता अने द्वादश भाव जन्मप्रदीप विगेरे मंथो रच्या छे.

ंबंची दरेक शुजाशुज फळ जाखी शकाय के एटखुंज नहीं, परंतु तेना छाज्यंतर गु दोषो अने मनमां करेला गुप्त विचारो तथा पूर्व अने पश्चात् जवनुं पण कान अह भार हैं अमुक मनुष्यने आश्रीने अमुक मास, तिथि, वार, नक्त्र विगेरेना संयोगे का करवाथी श्रमुक शुजाशुज फळ प्राप्त श्रवानं जाणी शकाय हे. विगेरे विगेरे श्रा ज्योति शास्त्रमां अत्यंत सूदम ज्ञान समायेखं हे, परंतु आवा पमता काळमां तेवा ज्ञानना संपूर्ण काता अत्यंत छर्वज हे, तोपण तेना जहावत्ता कानवाळा तरतमताए करीने सांप्र काळे पण जोवामां आवे हे. ज्योतिष शास्त्रने आधारे कोइ पण निमित्त कहेलुं होय करतां जो ते विपरीतपणे परिणाम पामेलुं जोवामां आवे तो तेमां शास्त्रनो के आध्या पक गुरुनो दोष होतो नथी, परंतु ज्ञाताने तेनुं रहस्य यथार्थ समजवामां आव्यं न होवाथी तेनी विपरीत बुद्धिनोज दोष होय है. जेमके-कोइ गुरुना वे शिष्यो समान क्रानवाळा हता, तेष्ठं कार्यप्रसंगे यामांतर गया. याम बहार नदीतीरे तेष्ठं विश्रांतिने माटे बेठा. ते वखते गामनी एक वृद्धा स्त्री नदीमांत्री पाणी जरी पाणीनो घनो माथे खइ चाली तेणीए आ बन्ने ब्राह्मणोने विद्यान् जाणीने पूट्युं के 'हे पंकितो ! मारो पुत्र परदेश गयो है. तेना कांइ पण खबर नथी. तो ते क्यारे आवशे ?' आवो प्रश्न पृत्ती वेळाएज ते वृद्धाना मस्तक परथी पाणीनो घनो पनी गयो छाने तेना ककना थइ गया तथा तेमांनुं पाणी नदीमां मळी गयुं. ते जोइने एके कह्युं के 'हे वृद्धा ! तमारो पुत्र मृत्यु पाम्यो हे.' ते सांजळीने बीजाए कहां के-'हे बंधु ! एम न बोल. तेनो पुत्र श्रात्यारे धेर आज्यो हे. हे वृद्धा ! तमे शोक करशो नहीं. धेर जार्ड. तमारो पुत्र घेर आज्यो हे. ते सांजळीने वृद्धा जतावळी जतावळी घेर गइ अने पुत्रने जोयो. आ बन्ने विद्यार्थींड एकज गुरु पासे सरला मंत्रो जण्या हता इतां पहेलाए विनयहीन होवाची तेतुं रहस्य ाण्युं नहोतुं अने बीजाए विनयवंत होवाथी जाण्युं हतुं, तेथी तेनुं ज्ञान यद्यार्थ हतुं. श्रहीं विरुष्य फळ कहेवानो हेतु ए ने जे पहेलाए घनो फुटी जवाथी पुत्रनुं पए मरए कड्चं अने बीजाए घमो पोतानी जल्पिस (माटी)मां मळी जवाथी तथा पाछी साथे पाणी मळी जवाथी पुत्रने पोतानी जत्पत्तिस्थाने त्र्यावेखो कहप्यो.

श्रा जपरथी एम सिद्ध थाय हे के शास्त्र तो मात्र दिग्दर्शनज करावे हे, श्राने पहीं ब्राह्कनी बुद्धिना परिणाम प्रमाणेज ते परिणामें हे, तथी करीनेज श्रागममां कहां हे के—सम्यक् शास्त्र पण मिध्यादृष्टिने विपरीत परिणामें हे, श्राने मिथ्या शास्त्र पण सम्यक्-दृष्टिने सम्यक् परिणामें हे. तेज रीते श्रा ज्योतिष शास्त्रना विषयमां पण समजवुं. जैन ह्योतिषना ग्रंथो जेवा के—श्रश्रकांम, श्रष्टांगहृदय संहिता, श्रायक्षानतिलक वृत्ति, श्राय प्रश्न, श्राय सद्जाव, गणितितलक वृत्ति, चंदरक्ष्ण, चकविवरण, जन्मकुंमही विचार, जन्मपत्री विचार, जन्मपत्री पद्धत्ति, जन्मांनोधि, जातकानिधान, जातक

प्रस्तावनाः ए

विका, ज्योतिक्षक विचार, ज्योतिक्सार संग्रह, ताजिकसार वृत्ति, तिष्वादि सारणी, त्रिका जाव जन्म प्रदीप, नरपित जयचर्या विगेरे विगेरे एटला बधा हे के गान प्रसिद्ध थोनां पण नामो अते लखतां अति विस्तार थइ जाय. आ विषयना ग्रंथो बीजा रेपयोना ग्रंथोनी अपेकाए बहु उंहा हपाया है एम कहीए तो ते कांइ अतिकायोक्ति जरेलुं थी, मादे तेवा ग्रंथोनी खास जरूर जणायाथी हालमां आ आरंभिसिद्धि, लग्नशुद्धि ने दिनशुद्धि नामना नण ग्रंथो जाषांतर सहित हपावीने प्रसिद्ध कर्या है.

आ आरंजिसिकि नामना मूळ प्रंथना कर्ता नागेंज गन्नना श्रीउद्यप्रभदेव सुरि है. रेक शुजाशुज प्रारंजोनी सिकि करनार होवाथी आ प्रंथनुं "आरंजिसिकि" ए अन्वर्ध मि है. आ नाम उपरथीज तेनो विषय समजी शकाय है के आ प्रंथ केवळ मुहूर्तनाज वेपयवाळो है. कोइ पण कार्यना मुहूर्तनो निश्चय करवा माटे अनेक प्रंथोनी अपेहा कती होवाथी तेना विद्यानोने अति प्रयास थतो जोइ पूज्यपाद श्री हदयप्रजदेव सूरिए हूर्त्त अने तेने खगता योग, करण, गणित, फळ विगेरे सर्व आपेहिक विषयोनो संग्रह प्रा ग्रंथमां करेलो है, एम टीकाकारे पण प्रारंजे पीहिकामां स्पष्ट जाणाव्युं है, तेथी आ 'यनी पहेलां मुहूर्त्त संबंधी आवो कोइ पण ग्रंथ हतो नहीं एम सिक् थाय है.

ग्रंथकार श्रीज्दयम्बदेव सूरिए ग्रंथमां पोतानो सत्तासमय, जन्मन्नुमि, मातापिता, । हागुरु विगेरे कांइ पण हकीकत जणावी नथी। तेमज पोते बीजा कया कया ग्रंथो व्या हे ? ए विगेरे कांइ पण छल्युं नथी, परंतु ग्रंथना प्रारंजमां टीकाकारे पीठिकामां णाव्युं हे के "(श्रीवस्तुपाळ नामना) मंत्रीश्वरे श्रीनागेंड गञ्जना गुरु सत्कान सत्न्या अने सद्गुणोए करीने शोजता एवा श्रीमान् जदयप्रवदेव सूरिने आचार्यपद पर । । पन कर्या हता." आ छेलने अनुसारे शोध करतां आ सूरिश्वर संबंधी केटलीक कीकत अन्यान्य ग्रंथोमांथी मळी आवी हे. तेमां श्रीवस्तुपाळचरित्र प्रस्ताव सातमामां—

ततोऽनेकपुरमाम-वास्तव्याईतसन्ततिम् ।

श्राह्य बहुमानेन, श्रीधवलकपत्तने ॥ ३६० ॥

श्रीनागेन्द्रगणाधीशै-दिंधा मंत्री क्माजृताम् ।
प्रत्यकं कारयामास, सविशेषमहोत्सवम् ॥ ३६१ ॥

जदयप्रजसूरीणां, पूरिताङ्गिमनोरथम् ।

श्रीश्राचार्यपदारोप-प्रतिष्ठां विष्टपाद्धताम् ॥ ३६१ ॥ त्रिजिविंशेषकम् ॥
शतानि त्रीणि सूरीणां, तद्धत्सवदिहक्या ।
समं स्वकीयसंधेन, तदापुर्मत्रिवेश्मनि ॥ ३६३ ॥
तेषां सपरिवाराणां, संघपूजामहोत्सवम् ।
विधिवदिद्धे मंत्री, विशुद्धसिचयादिजिः ॥ ३६४ ॥ इत्यादि

"त्यारपठी वस्तुपाळ मंत्रीए श्रानेक पुर श्राने प्रामना रहेवाशी श्रावकोना समूह घणा मानपूर्वक श्रीधवलक पत्तनमां वोलावीने श्रीनागेंक गल्लना सूरीश्वर पासे कि प्रकारना महोत्सवपूर्वक बन्ने प्रकार द्याने धारण करनार श्री उदयप्रत सूरिनी जगत श्राव्युत एवी श्राचार्यपदनी प्रतिष्ठा करावी. ते वखते (दान वके) सर्व प्राणी उमनोरस्र तेणे (मंत्रीए) पूर्ण कर्या. ते महोत्सव जोवानी इल्लाश्री त्रणसो श्राचार्यों पो पोताना गल्ल श्राने संघ सहित मंत्रीना श्रामंत्रणश्री त्यां पधार्या हता. परिवार सहित सर्व श्राचार्योंना समूहनी पूजानो महोत्सव मंत्रीए शुक्ष वस्नादिक वके विधिपूर्व कर्यों हतो." इत्यादि.

श्रा जदयप्रत सूरिए धर्माभ्युद्य नामनुं महाकाव्य, सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी तः जपदेशमाळा जपर कर्णिका नामनी वृत्ति (टीका) रची हे. ते विवे कर्णिका वृत्तिः प्रशिक्तमां श्रा प्रमाणे जरूयुं हे.—

'श्रीमिद्रजयसेनस्य, सौमनस्यं न मन्यते ? । यदासिता घृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूधसु ॥ ११ ॥ शिष्यस्तस्य च खक्षणकणचणः साहित्य सौहित्यवा-नुद्यत्तार्किकतकेककशमतिः सिद्धान्तशुद्धान्तरः । श्रीधमान्युदये कविः प्रविद्धसहुर्वादिगोत्रे पवि-स्तामेतामुद्यप्रजोऽस्य गणजृष्ठ्तिं व्यधात्कर्णिकाम् ॥ १३ ॥ सेयं पुरे धवसके तिखके धरित्र्यां, मंत्रीशपुण्यवशतो वसतौ वसितः । वर्षे निध्यङ्कनयनेन्छमिते (११एए) वितेने, श्लोकैः शिवोदिधिशिवैः प्रमितेऽद्धतश्रीः ॥ ११ ॥"

"श्रीमान् विजयसेन गुरुना चित्तनी प्रसन्नताने कोण नथी मानता? ते गुरुधी वासि श्रयेखा तेना गुणो स्त्रने शिष्यो कोणे मस्तक पर धारण नथी कर्या? ते गुरुना शिष् खहुण शास्त्रमां निपुण, साहित्यना विषयमां विद्यान्, विकास पामता तार्किक खोको तर्कनो पराजय करवामां कर्कश मितवाळा, सिद्धांतना झानथी शुद्ध हृदयवाळा, श्रीधम न्युद्य काव्यना कवि (रचनार) स्त्रने विकास पामता छुष्ट वादी छरूपी पर्वतने जेट वामां वस्त्र समान श्री छदयप्रत्र सूरिए स्त्रा छपदेशमाळानी कर्णिका नामनी वृत्ति करी वे

१ भा कान्यमां वस्तुपाळ मंत्रीनुंज चरित्र आवे छे. २ कर्णिका वृत्तिनी प्रत मळी शकी नध् परंतु आ उदयमम सूरिना शिष्य श्रीमिहिषेण सूरिए रचेली स्याद्वादमंजरी (टीका)नी प्रस्तावनामांध् आ ऋोको मळी आव्या छे.

प्रस्तावनाः 9

्वीरूप स्त्रीना तिलक समान धवलकपुरमां मंत्रीश (वस्तुपाळ)ना पुण्यवशयी तेना पाश्रयमां वसता आ सूरिए संवत् १२७७ ना वर्षे ११४११ श्लोक प्रमित आ कर्णिका ।मनी वृत्ति रची हे."

श्रा उपरथी आ ग्रंथकार सूरि श्रीविजयसेन सूरिना शिष्य हता तथा तेमनो सत्ता-समय संवत् १२एए मां हतो एम सिद्ध थाय हे. श्रीविजयसेन सूरिना गुरु कलिकाळ गौतम श्रीहरिज्ञ सूरि, तेमना गुरु श्रीआनंद सूरि अने आमरचंद्र सूरि हता, तेमना गुरु श्रीशांति सूरि आने तेमना गुरु श्रीमहेंद्रप्रज सूरि हतां.

आ ग्रंथमां पांच विमशों पामेला हे अने तेनुं सर्व मळीने एकंदर अनुष्ठुप्नी गण्नीए ४६० श्लोक पूरतुं प्रमाण हे. श्लोको नाना मोटा हंद तथा वृत्तमां धणा रिसक प्रने छच्च संस्कृत जाषामां बनावेला होवाथी विद्यानोना हृदयने रंजन करे तेवा हे. आ ांचे विमर्शमां अइने अगीयार दार पामेलां हे. तेमां पहेला विमर्शमां तिथिदार १, वार-दार १, नक्षत्रदार २ अने योगदार ४, ए चार दार हे. बीजा विमर्शमां राशिदार ५ अने गोचरदार ६, ए बे दार कहेलां हे. श्रीजा विमर्शमां कार्यदार ७ एकज कहेलुं हे. श्रीष्ट्रा विमर्शमां गमदार ए तथा वास्तुदार ए ए बे दार कहेलां हे, अने पांचमा विम, र्शमां विलग्नदार १० तथा मिश्रदार ११ ए बे दार कहेलां हे. ते ते दारोमां ते ते

१ जैन धर्मना प्राचीन इतिहासमां पृष्ठ २१ मां उदयप्रभ सूरिनो सत्तासमय १२२० थी १२८७ लख्यो छे, परंतु कर्णिकानी प्रशस्तिमां लखेलो संवत् १२९९ छे. ते वधारे मानवा योग्य छे. ोमज जैन प्रंथावळीमां पण पृष्ठ १७१ मां कर्णिका रचवानो काळ संवत् १२९९ ज लखेलो छे. १ आ हरिभद्र सूरि सिवाय वीजा त्रण एज नामना सृरि थइ गया छे. तेमां एक याकिनीमहत्तरा-ान्ना नामथी महान् प्रसिद्ध छे, तथा बीजा वे बृहद्गच्छमां थयेला छे. आ हकीकत हरिभद्ध ।रि चरित्र (छापेल)ना पहेला पृष्ठमां फ़ुटनोटमां सित्रसार आपेली छे. ३ व्या वंशावळी जैन ार्मना प्राचीन इतिहासमां आपेली छे (पृष्ठ २१) तेमज उपर्युक्त हरिभद्र सूरि चरित्र उपर्थी पण बात्री थइ शके तेम छे. ४ आ सर्व उपर छखेली हकीकत तथा फुटनोटो उपरथी आ प्रंथकारनो वर्षे हेवाल सिद्ध थाय छे, परंतु जैन मंथावळीमां हकीकत संगत थती नथी. तेमां पृष्ठ ७६ मां फुट-ीटमां उदयप्रभ सूरि नामना ने आचार्य थयातुं लखे छे. तेमां आ प्रंथकारने पहेला कहा छे. ते तंबंधी छखेली हकीकत मळती आवे छे, परंतु बीजा उदयप्रभ सूरि रविष्रभ सूरिना शिष्य अने महि-ोण सूरि के जे स्याद्वादमंजरीना टीकाकार इता तेना गुरु इता एम जे लख्युं छे ते संगत नथी. ोमज दर्यप्रभ सूरिना रचेला घणा प्रंथो जैन प्रंथावळीमां लख्या छे, परंतु बेमांथी कया उदयप्रभ रूरिए कया कया प्रंथो रच्या ? तथा बीजा उदयप्रभ सूरिनो सत्ताकाळ कयो हतो ? ए विगेरे कांड्र ण चोकस थइ शकतं नथीः

विषयोने विस्तारबी संपूर्ण रीते वर्णन्या हे. आ बावत अनुक्रमणिकामां सविस्तर आपेट होबाधी अत्रे खन्तवी छचित धारी नधी.

यंथनी प्रांते टीकाकारे पोतानी प्रशस्तिने पज्ञवाने "प्रंथकारनो स्रजिप्राय" एव नामधी मोटा वृत्तमां तेर श्लोको आप्या हे. ते सर्व श्लोको आ ग्रंथना जिज्ञास सः मनुष्ये प्रथम अवस्य वांचीने ग्रंथकारना अजिपायने आज्ञारूपे मानवो एम अमो खास जलामण करीए डीए, कारण के वृत्तिकारे वृत्तिरूप यंथ बनाव्या पठी अत्यंत सावद्य कार्यथी जीरुपणाने लीधे आ मंथने जळशरण करवो जिवत धार्यो हतो, परंतु जिल जिन्न ग्रंथोमांथी छंठ वृत्तिए एकत्र करेला छुप्पाप्य विषयोनो नाश करवो ते पण योग्य नहीं खागवाथी मात्र पोताना गह्नमां गुप्त रीते राखवाना हेतुथी आ ग्रंथने जाळवी राखवामां आव्यो हे, परंतु सर्वविरतिने धारण करनार साधुए कोइ पण जातन (चैलादिकनां) महत्तीं श्रापवायी तेना व्रतनी हानि थाय हे, तेथी महत्ते कहेना साधने अने प्रथकारने महा पापना जागी कह्या है. अहीं शंका करी है के-ज्यारे चैत्या दिकनां मुहूर्त्तो साधुए आपवां न जोइए तो जिन्न जिन्न ग्रामोमां वसता आवकोने पुल्यनी वृद्धि ही रीते थाय श्रने साधुने पण पुल्यनो लाज ही रीते थाय ? श्रा शंकानः जवाबमां ग्रंथकारे कहां हे के-चैत्यादिक कराववामां यति हो श्रानमोदना करवाशी इ पुण्य श्राय हे, परंतु गृहस्थीर्सने विवाहादिकनी जेम चैत्यादिकनां मुहूर्त्तो पण जोशीय श्चापे हे, तथा ज्योतिषना ज्ञानवाळा मुनिचं तो मात्र जोशीचने समग्र संवाद वतावे है. अर्थात महर्त्तोमां दोष होय तो ते सूचना आपे है. आ रीते सर्व सुख्य यह शके हे. तेम ठतां कोइ मृढ जारे कर्मी आ शास्त्रने आधारे मुहूर्त आपशे तो आरंजना समृहथी जत्पन्न घतं पाप तेनेज हो, घाने मने प्रथकारने ते पापनो छेश पण न हो. एव खुक ष्टांतःकरणना जदगारी प्रथकारे प्रगट कर्या हे आ जपरधी प्रथकार सावद्य ार्धर्थ केटलावधा त्रीरु हे ते स्पष्ट जणाइ स्थावे हे, माटे संस्रकारना स्नित्रायने स्थाज्ञारूप मानवा दरेकने छामो प्रार्थना करीए हीए.

आ ग्रंथ छपर श्रीहेमहंस गिष्ण सुधीश्रंगार नामनी वृत्ति (टीका) संवत् १५१४ वर्षे रची छे. तेनुं अनुष्टुप्नी गण्त्रीए ५०ए३ श्लोकनुं प्रमाण छे. आ टीकाकार महार राजनो स्थितिकाळ तथा गुर्वाचळी प्रशस्तिना अंतमां लखेल छे त्यांश्रीज जाणी लेवा. प्रस्तावना विस्तृत थवाना कारणथी अहीं लखेल नथी. आ टीकाकारे संवत् १५१५ वर्षे व्याकरणना विषयवाळो न्यायसंग्रह नामनो ग्रंथ, तेना पर न्यायार्थमंजूबा नामनी मोटी वृत्ति (टीका) तथा तेना पर न्यास पण रच्यो छे. ते विषे तेनी प्रशस्तिना छेक्षा श्लोक आ प्रमाणे छे.—

चिन्मयानां मयाऽमीपां, क्षिणां खुपसादतः । हेमहंसाजिधानेन, वाचनाचार्यताजुपा ॥ १३॥ श्रीमदिकमयत्सरे तिथितियौ (१५१५) शुक्छिदतीयातियौ, पूर्वाह्ने मृगदाच्छने मृगशिरः श्रङ्गाप्रश्रङ्गारिणि । शुकस्याहिन शुक्रमासि नगरे श्रीसागरेऽहम्मदा-वादे निर्मितपूर्तिरेव जयताद्गन्थः सुधीवश्चनः ॥ १४॥

"ज्ञानवंत छा (चारित्ररत गणि नामना विद्यागुरु)ना सुवसादयी वाचनाचार्यनी दिवीन पामेला में हेमहंत गणिए विक्रम संवत् १५१५ ना जेठ सुदि दितीया शुक्रवारने देवसे पूर्वीह्न काळे मृगशिर नक्त्रना श्रंगना छात्र ज्ञागने चंक्र शोजावतो हतो त्यारे पृगशिर नक्त्रमां चंक्र हतो त्यारे) लक्कीना सागर समान छमदावाद नगरमां पंमितोने विय एवो छा ग्रंथ समाप्तिने पाम्यो, ते जयवंत वर्तो."

तेमज आ टीकाकारे संवत् १५१० वर्षे प्रनावश्यकनो वाळावबोध पण कर्यो है ते । 'ाळावबोधने अंते आ प्रमाणे खल्युं है .—

"इति श्रीतपागञ्चनायकसकलसुविहितपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरि-श्रीमुनिसुन्दरसूरि-ीजयचन्द्रसूरिपदकमलसेविना शिष्यपिष्कतहेमहंसगिषाना श्राद्धवराज्यर्थनया कृतोऽयं नावश्यकवालावबोध श्राचन्द्रार्कं नन्द्यात् । संवत् १५१० वर्षे" ॥

श्रा सिवाय बीजा ग्रंथो श्रा पूज्य गणिए रच्या हे के नहीं ? ते कही शकातुं नथी। नावश्यकनो बाळाववोध जोतां तेमनुं श्रागमज्ञान, न्यायसंग्रह जोतां तेमनुं व्याकरण-ान, तेनी न्यायार्थमंजूषा टीका जोतां न्यायशास्त्रनुं ज्ञान श्राने श्रा श्रारंत्रसिद्धिनी का जोतां तेमनुं क्योतिषनुं ज्ञान श्रादितीयज माखम पमे हे.

श्रा टीकामां टीकाकार महाराजाए प्राये मूळ श्वोकना दरेक पदनो सविसार छने रळ श्रश्न करेलो के ते जपरांत मूळ कारना वचनने सुद्द करवा माटे ख-पर दर्शनता यो तथा प्रंयकारोनां वचनोनी साद्दी आपी के केटलेक स्थळे प्रन्यांतरोनां गूढ वचनोनी ए सिवसार टीका करी के केटलेक स्थळे मूळ कारे नहीं कहेला मतांतर तथा श्रपवादो ए वर्णव्या के केटलेक केकाणे मूळ कारना विषयने लगता विषयांतरो पण विस्तार-र्वक वर्णव्या के तथा केटलेक स्थाने प्रसंगानुप्रसंगने लड़ने नवीन विषयोनां मुहूर्त्तों पण ह्यां के श्रा सर्व कार्योनां मुहूर्त्तोंनी साथे प्राये तेनां श्रुत्ताशुज फळो पण वताव्यां के मज केटलेक स्थळे मूळना श्रने प्रंथांतरना विषयो स्पष्ट समजाववा माटे यंत्रो पण गापेलां के श्रा सर्व हकीकत प्रंथांतरोनां वचनो श्रापीनेज सिद्ध करी के एकंदर श्रा श्राखा थमां लगजग सीतेर प्रंथो श्रने ग्रंथांतरोनां वचनो श्रापीनेज सिद्ध करी के एकंदर श्रा श्राखा थमां लगजग सीतेर ग्रंथो श्रने ग्रंथकारोनां वचनो श्रापीनेज सिद्ध करी के एकंदर श्रा श्राखा

श्रीपति सम रखमाळा यतिवद्यन नारचंद्र पूर्णजड देवज्ञवश्वर दिनशुद्धि व्यवहारप्रकाश नरपतिजयचर्या हर्षप्रकाश पा(लो)कश्रीयंथ व्यवहारसार सारंग केशवाके विवाहवृंदावन त्रिविक्रम सघुजातक बृहङ्गातक ताजिक अक्षशतक वृत्ति यवनेश्वर

दम्रशिक होरामकरंद **ज्ञवनदी**पक **त्रैलोक्यप्रकाश** मुहर्त्तसार सप्तार्धि वाराहसंहिता ज्योतिषसार रत्नमालानाष्य नक्त्रसमुख्य रुजयामस प्रश्नप्रकाश (कर) शौनक गदाधर महादेव जोज हरि **डुर्गसिं**ह कहपाख्य छेद ग्रंथ वृत्ति गौतम ययन स्थानांग वृत्ति

चंड्रश्रांशि वृत्ति वास्त्विद्या स्वरोदयवित जास्करव्यवहार योगयात्रा ग्रंथ वास्त्रशास्त्र ब्रह्मशंज्य टीका विद्याधरी विलास काळनिर्णय **ब्रह्मसिद्धांत** कारगृह्य खंमखाद्य जाध्य विवाहपटल जीमपराक्रम ग्रंथ करण्कुतृहल-जास्कर सिद्धांत

सत्यसूरि बृहस्पति क्झीधर देवलगुनि छध्यात्मशास्त्र

आ उपरथी वाचकवृंदने स्पष्ट समजाशे के टीकाकारने ज्योतियना विषयमां केटख प्रंथानुं अने केंद्रं असाधारण ज्ञान हतुं ? आ एकज ग्रंथ साद्यंत उपस्थित होय तो ते वर्तमान समयमां उच्च विदाननी पंक्तिमां गणाय ए निर्विवाद हे. टीकाना पण दरेर विषयो अनुक्रमणिकामां सविस्तर आप्या हे, तेथी आ स्थळे विस्तारना जयथी लखत नथी. आ ग्रंथ दरेकने उपयोगी थाय एवा हेतुथी जापांतर करावीने हपाव्यों हे. तेमां प्रथम मूळ श्लोक अने तेनी नीचे मूळ श्लोकनो अर्थ लखेलो हो. तेनी नीचे श्लोकनी टीकानुं मात्र जापांतरज लख्युं हो, परंतु टीकामां ग्रंथांतरोनां जेटलां वचनो टीकाकारे आप्यां हे तेनुं मूळ पण जापांतर सहित आप्युं हो. मूळ तथा ग्रंथांतरोनां वचनोने आश्रीने जेटली समजुती तथा उदाहरणो विगेरे टीकाकारे आप्यां हे तेनुं अक्ररश

जादांतरज सरळ रीते खरुं हे. मात्र कोइक स्थळेज टीकाकारना संदिष्ठ छने हिर्मन करेखा विषयने स्पष्ट समजावया माटे थोमोक विस्तार जापांतरमां कर्यों हे. आ ग्रंथनुं तेमज नीचे खलेखा लग्नशुद्धि तथा दिनशुद्धि नामना ग्रंथोनुं जापांतर वनगरनिवासी शेठ कुंबरजी आणंदजी मारफत शास्त्री जेठालाल हरिमाइ ते कराव्युं हे. तेमां प्रवर्तक महाराज श्रीकांतिविजयजीना शिष्य मुनिराज श्रीमिक्त-जयजी महाराजे सारी मदद आपी हे. तथा आ जापांतरनुं मेटर अने हपातां रमो साद्यंत तपासी आपनार पन्यासजी महाराज श्रीदानविजयजी महाराजाए घणी करी हे. तेमज आ ग्रंथनी परम शुक्ष एक प्रति पूज्यपाद श्रीविजयानंद सूरीश्वर श्रात्मारामजी महाराज)नी तथा बीजी तेमनाज प्रशिष्य छपर्युक्त मुनिवर श्रीजिक्तन्यजी महाराजनी मळी हती, जेथी आ स्थळे ते सर्व पूज्योनो आमो अंतःकरण-क आजार मानीए हीए.

आ ग्रंथ पूर्ण थया बाद पाठळ लग्नशुद्धि तथा दिनशुद्धि के जे मात्र मूळज लप-ध थया हे ते पण जाषांतर सहित हपाव्या हे. जो के आ बन्ने ग्रंथो अति लघु ग्रंथी आरंजसिद्धि करतां वधारे लपयोगी नथी, तोपण तेमांथी केटलांक चालतां चीं सहेलाइथी अहप प्रयासे मळी शके तेम हे, तथा कोइ कोइ नवीन विषयो पण हे, तेथी आ वे ग्रंथो कायमने माटे वधारे लपयोगी होवाथी तेमनुं प्राकट्य हरस्त शुं हे. ते बन्ने ग्रंथोमां कया कया विषयो हे, ते माटे जिज्ञासुए अनुक्रमणिका वांचीनेज जासा पूर्ण करवी.

श्रामांनो खग्नशुक्ति नामनो ग्रंथ १४४४ ग्रंथना कर्ता श्रीहरिभद्र सूरि के जेशो केनीमहत्तरास्तुना नामथी प्रसिद्ध हे तेमणे रचेद्यों हे. तेमां मात्र १३३ गाथार्छ ति जाषामांज हे, तोपण श्रहप शब्दोमां प्रजूत श्रर्थनो समावेश होवाथी सूत्ररूपे शंथ हे. श्रा ग्रंथमां मात्र खग्ननीज शुक्तिहे, तेमां पण दीहा, लपस्थापना श्रने प्रतिगंज खग्न विषे हे. श्रा ग्रंथ पर नानी मोटी टीका हे के नहीं? ते विषे कांश्रनिश्चय थयो ति. श्रा ग्रंथकार पूज्यपादनो संपूर्ण इतिहास तथा तेमनुं माहात्म्य सुप्रसिद्ध होवाथी क्वर्यना समयनो व्यर्थ व्यय करवा श्रष्ठता नथी.

देनशुद्धि प्रंथना कर्ता श्रीहेमतिलक सूरिना शिष्य श्रीरंलशेखर सूरि हे. एम प्रंथनी । गायामां स्पष्ट खखेखुं हे. तेर्जनो सत्तासमय संवत् १४२० मां इतो. तेमने दिट्हीना

१ आ नामना बीजा श्रीरत्तरोखर सूरि आ सूरिनी पछी एटले संवत् १४५७ मां जन्म, त् १४६३ मां दीक्षा, संवत् १५०२ मां सूरिपद अने १५१७ मां पोष वदि छठने दिवस स्वर्ग-ा विगेरे जैन धर्मना प्राचीन इतिहास उपरथी थयेलां जणाय छे. ते सूरीश्वरे श्राद्धपतिकमण

राज्ञा फिरोजशाह तुधल के घणुं मान छाए पुंहतुं. छा सूरी श्वरे श्रीपाठचरित्र, गुण्ह्य क्ष्मारोह छाने लघु होत्रसमास विगरे छानेक यंत्रो रचेला हे. एम जैन धर्मना प्राचीन इ हालमां छाए लुं हे. तेमज जैन यं धावळी हां पृष्ठ १३२ मां गुण्ह्यानक मारोहना व रखशेखर सूरि लखेला हे छाने रच्यानो संवत् १४४७ लख्यो हे. ते सिवाय बीजा यं पण्छा सूरिना रचेला हशे के नहीं तेनो निश्चय छइ शकतो नथी, कारण् के गुरुगु पर्त्रिशका वृत्तिना रचनार रखशेखर सूरि यं धावळी ना पृष्ठ १४० मां लख्या हे, प्रतेनो संवत् विगरे कांइ पण्न नहीं होवाथी बेमांथी कया सूरि छाना कर्ता हे ते ि छइ शकतुं नथी. तथा पृष्ठ १७७ मां गुरुगुण्वद्त्रिशका कुलक छपर दीपिका नाम टीकाना कर्ता रखशेखर सूरि लख्या हे, तेमां पण्ण संवत् लखेलो नथी, परंतु ते फुटनोटमां नागपुरीय शालाना हेमतिलक सूरिना शिष्य छने वक्षसेन सूरिना प्रशि तथा श्रीपाळचरित्रना कर्ता लखेला होवाथी छा। प्रकृत सूरि मालम पर्ने हे. विगरे. विगरे स्वास्त्र स्वास्त स्वास्त्र स्वास्त स्वास्त्र स्वास्त्य स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व

आ दिनशुद्धि ग्रंथ पण संक्षित्रज हे एटले के तेमां १४४ गाथा है है. आ ग्रंथ पण नानी मोटी टीका हे के नहीं ते छपछ घ ययुं न होवाथी मात्र मूळ ग्रंथज जावां सिहत प्रगट कर्यों हे, तोपण केटलेक स्थळे स्पष्ट समजुतीने माटे प्रतिमां नहीं है यंत्रो दालल कर्यों है. आ ग्रंथमां वार, तिथि, करण, नक्त्र, तारावळ, योगो, प्रय चैत्य करणादिक, मृतिकया, दीक्षा, प्रतिष्ठा विगरेनां मुहूर्त्तों तथा लोच, विद्यारंज विविषयों लीधा है. एकंदर आ लघु ग्रंथ हतां पण अति छपयोगी है. आ ग्रंथना विस् विषयों पण अनुक्रमणिकामां दालल करेला होवाथी अत्रे विस्तारता नथी.

हेवट आ ग्रंथोना जिज्ञासु जनोने आ ग्रंथना सञ्जयोगमां प्रवृत्ति अने क्रत्योग निवृत्ति करवानी सूचना आपी आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे हे अने आशीः आपीए हीए के आ ग्रंथोमां वतावेलां शुज कार्योनां शुज मुहूर्त्तोने लीधे शुज फळ प्र करी सज्जनो आनंद पामो. इति शम्। तथाऽस्तु ॥

धृति, श्राद्धविधि वृत्ति तथा आचारप्रदीप विगेरे शंथो रच्या छे. आ सूरिना गुरु श्रीमुनिसुंदर ह इता. आ उपरथी आ बन्ने सूरि भिन्न छे एम सिद्ध थाय छे, अने उपर लखेला प्रंथावळीना आ पण जूदा सिद्ध थाय छे, केमके प्रंथावळीना पृष्ठ ९६ मां लक्षणसंप्रह्ना कर्ता रत्नशेखर लख्या छे, के मीचे फुटनोटमां संवत् १५०२ थी १५१७ नो सत्तासमय लख्यो छे. (आ सूरिपदनो सत्तासम जाणवो.) तोपण प्रंथावळीमां रत्नशेखर नामना एकज सूरि थया होय एम धारीने लखेलुं जणाय है परंसु बन्ने भिन्न मानवा योग्य छे.

संवत् १ए७४ आषाढ पूर्णिमाः 🗧 लीः प्रकाशकः

श्चनुक्रमणिका. प्रथम विमर्शः १

तिथिदारः १

श्स्रोक.	वृष्ठ.	मूळ १	स्रोक.	पृष्ठ.
टीकाकारे करेखुं मंगळ	5. १	3	दग्धा तिथिनी स्पष्टत	n o
ग्रंथ करवानो हेतु तथ	IT .		चंद्रस्था तिथि	U
तेनो सद्घपयोग करव	п		दग्धा तिथिनुं फ	ಷ ए
शिका	२	ָד	क्रूर तिथि	
ग्रंथकारनुं मंगळ.	३	ĮŲ	तिथिने छाश्री श	_
श्चनिधेय, संबंध ञ्चने प्र	यो-	•	विगेरे चार करणो	•
जनपूर्वक यंथनां श्रगी	यार	ξp	बाकीनां बच विगेरे	
घारोनां नाम •		• •	करणोः	
नंदादिक तिथिखनां ना			अगीयारे कर णो	
तेमां करवानां काय	र्गे		·	
तथा तेना स्वामी छं	1		स्वामी	
वर्ग्य तिथिष्ठं.	६	११	श्रमीयारे करणोनुं फ	
पक्त ब्रिप्त (ऋशुज)			विष्टि (जजा) नो	
तिथिजं.		१२	जज्ञानो स्पष्ट् समय	
त्रिदिनस्पर्शिनी (वृष्टि	5)		सर्व करणोनो छ	_
तथा श्रवम (इत्य) ति	थि	₹₹	विष्टिनां मुखादिक	
डाने ते नुं फळ .	g		तथा तेतुं ५ळ.	
दग्धा तिथि जाएवानी र	रीत,	₹8	विधि क्यारे कइ वि	-
चदाहरण सहित	9		होय ? अने तेनुं	फळ. १५
	वारदा	र. ३.		
वारनो श्चारंज क्यारे थाय	११६	१६	वारनां नामो तथा ते	नुंफळ. १ए
दिनमान खाववानो		\$3	वार छाश्रीने का	ळहोरा
जपाय	. \$3		तथा तेनुं फळ.	_
दिनमाननी स्थापना	. १० 📗	.	_	
वारना प्रारंज विषे		₹0	वार श्राश्रीने कुवेळा	तथा
विशेष इकीकतः	१०		तेनुं फळ	२१

मूळ १ छ	तिक. पृष्ठ.	मूळ श्लाक.
१ए	कंटक तथा जपकु दिक श्रने	२१ वारने श्राश्री सुवेळा २
	तेनुं फळ ११	११ वारने विषे ग्राया खन्न
হত	कुखिक तथा तेनुं फळ १३	तथा तेनुं फळ ध
	नक्त्र	घार. ३.
२३–२ए	ए श्र ठ्यावीश नक्त्रोनां नाम	संज्ञा, तेनुं प्रयोजन
	तथाते दरेकना पादा-	तथा फळ
	श्रित द्यक्रो. ृ १६	३० चंद्र संक्रांतिने आश्री सत्या-
	नक्त्रोना पादाश्रित	वीश नक्त्रोनी मुहूर्च
	ऋहरोनी स्थापना	संख्या तथा फळ
	तथा तेनो विशेष १७	कयां कयां नक्त्रो चंद्रनी
३७	श्रजितित् नक्षत्रनुं स्वरूपः २०	श्चागळ, पाइळ तथा
₹₹	श्रक्यावी रा नक्त्रोना स्वामी,	साथे होय ? तेनी रीत
	तेनी स्थापना तथा सम-	·
	जुती २ ए	तथा फळ
३१	श्रव्यावीश नकत्रोना तारा-	नक्त्रोनी श्राकृति
	जंनी संख्या तथा ते नुं	कइ कइ दिशामां क्यां
	प्रयोजनः ् ३०	कयां नहत्रो चाखे है ?
₹३–३१	३ नक्त्रोनी चर, ध्रुव विगेरे	चंज्रश्री कह कह दिशामां
•	संज्ञाने तथा तेमनां फळ. ३०	नस्त्रो रहेलां वे ?
इष	चर विगेरे नक्त्रोमां कर-	तिथि तथा नक्त्रनुं
	बानां कार्योः ू ३१	संपूर्ण बळ कये वखते
	वारने श्राश्री चरादिक	होय ? इ
	योग	दार. ध.
३ ए⊌	रविवारे तिथि तथा नक्त-	४५-४६ बुधवारे शुज तथा ऋशुज
	त्रने छाश्री शुज्ज योग	योग
	तथा श्रशुज योगः ३५	४९ –४० गुरुवारे शुज तथा ऋशुज
8 ! 85	१ सोमवारे शुज योग तथा	1
	अ शुज्ज योगः ३६	योग ३
⊌ ₹⊌₹	। मंगळवारे शुज तथा अशुज	४ए-५० शुक्रवारे शुज तथा अ शुज
	योग• ३६	योगः ^इ

म्ह्योत्स. पृष्ठ-	्रमूळ श्लोक पृष्ट
५२ शनिवारे शुज तथा श्रशुज	गंकांतफळ धए
योग ३७	संधिदोप धद
अमृतसिद्धि योग तथा	६१ वज्रपात धष
તેનું फळ રૂષ્	काळमुखी धष
ज त्पात, मृत्यु, काण	मृत्यु योग (तिथि
अने सिद्धि योग ३ए	नक्त्र ऋाश्री) ৪৫
ज त्पात विगेरे योगोनी	अवदा योग ४०
स्थापना तथा तेनां	হুণ্ড স্থাপ্পী হুদাহুদ
वीजां नामो ४०	योग ५०
यमघंट योगः ४०	६२ रवियोग धए
वज्रमुशळ योग ४०	रवियोग फळ ५०
शत्रुयोगः ४०	६३ स.यावीश रवि योगने मध्ये
अस्थिर (चूर) योग धर	जपग्रह संज्ञाः ५०
क्रकच (कर्क) योग. धर	चपप्रहोनी बीजी
संवर्तक योगः धर	संक्षाजं तथा तेनुं फळ. ५१
विरुद्ध योग, सामान्य	ं श्रामल योगः ५१
योग, सुयोग, सिद्धि	६५ आनंदादिक जपयोगोनी
योग तथा श्रमृतसिद्धि	रीत ५१
योग अने तेनुं फळ. ४१	६५-६७ आनंदादिक अठ्यावीश
कुमार योग ४२	जपयोगोनां नाम ५१
राज योग धश	छानंदादिक छपयोगनी
स्थिर (स्थविर) योग ४३	स्थापना ५३
यमल तथा त्रिपुष्कर योग. ध३	६० कुयोगोनो भ्रपवाद ५३
पंचक ध३	६७ शुजाशुज योगना संकरमां
पंचक विषे मतांतर ४४	शुच योगनी प्रवळता ५४
यमख, त्रिपुष्कर श्रने पंच-	७०─७२ दररोजना विष्कंचादिक
कनी श्रम्बर्धताः ४४	सत्यावीश योगो ५४
लग्न गंमांत, तिथि गंमांत	पर विष्कंजादिक योगो मांहे खा
श्रमे नक्त्र गंमांत ४४ ^{आ०३}	<u>ड</u> प्ट योगोनी ड्रप्ट घनीलं. ५५

म्ह स्लोक. १४.	मूल श्लोकः (
७७ प्रकारांतरे योगोनी वर्ज्य	सात शखाकाना वेधनो
घर्न ीर् जः ५५	यंत्र ५
७५ एकार्गखवेध योग ५५	प्रए विवाहमां जोवानो पांच
9६–99 एकार्ग खवेधनी स्थापनानो	शलाका वेध ए
	पंच शलाका वेध चकः ६
विधि ५६	o वत्ता योग ६
एकार्गखवेध तथा एका-	०१ बीजे प्रकारे खत्ता योग ६
र्गेल पादवेध यंत्र ५९	०२ लत्ता विषे मतांतर ६
७० सात शलाकाना चकवरे	ण्ड पात योग ६
થતો વેધ∙ ५૦	📗 🕫 🗎 बीजे प्रकारे पात योगः 🦈
विमर्	તે. ર .
राशिष	ार. ७.
१–६ बार राशि ड तथा तेमां 🍴	१३ बार राशिजना बार
ञ्चावता नक्ष्त्रोना पाद ६४	न्नावीनां नाम तथा तेनुं 👍
ও बार राशिखंना वर्ण ६५	फळ गु
o राशिजनां स्वरूप(स्राकार). ६ ५	१४-१० बार जावोनां बीजां नामो. उ
राशिजनी चेष्टा, स्थान	रए बार राज्ञिले (गृह)ना
विगेरे ६६	स्त्रामीर्छः ं उः
ए राशिजंनुं दिक्स्वामित्व	२० राशिजेनी होरा तथा
त्या स्वजावः ६७	श्रेष्काणः प
१० राशिजंनुं वळ तथा जदय. ६०	२१ राशिजंना नवांशो, ते <u>न</u> ुं
११ राशिजनां जच स्थान ६०	फळ तथा वर्गोत्तमः ३६
१२ राशि चंनुंनीच तथा त्रिकोण	
स्थान् ६ए	११ घादशांश तथा त्रिंशांशनुं
राशिखंनुं परम नीचपणुं	स्वरूपः पः
तथा परम जच्चपणुं. ४०	गृह्ना स्वामी, होरा
अहोना उच्च नीचप णानुं	विगेरे छ वर्गनी
फळ प्रश	स्थापना ष्ट
जन्मने विषे जच्च ग्रहनुं	१३ 🛭 वर्गनुं क्षिप्ता मान ९ए
फळ, ५१	नवांशोतुं बळवानप णुं. ७ ^०

श्लोक.	વૃષ્ઠ.	मूळ श्लोक.	वृष्ट-
स्ववर्गमां श्रयवा परवर्गम	i	वर्ष, मास, दिवस छाने	
रहेला घहनुं स्वरूप	. 00	काळहोराना स्वामी.	ម្
सौम्य ब्रहोनुं फळ	. 5 0	३१ चोश्चं चेष्टावळ	០អ
दिशार्खना स्वामी तथ		पांच यहोनी गतिः …	
ग्रहोनी सौम्यता अन		३२ पांचमुं दृष्टिबळ, तथा छद्वं	
कूरता		स्वाजाविक वळ. ू	-
्र प्रहोनो वर्ण तथा तेर्		३३–३४ इष्टिबळेन विषे इष्टिनो	
फळ	_	प्रकार	បឱ
केतुना स्थाननो निर्णय तथ		३५–३० घ्रहोनुं शत्रुपखुं, मित्रपुषुं	
महोनी जातिः	 . ሆኒ	अने समपणुं, तथा तेनुं	
त्रहाता जात्यः ब्राह्मणादिकवर्णीना स्त्रार्म	_	यंत्र	. סס
_		३ए तात्कालिक मैत्रीनुं फळ	
ग्रहोना च प्रकारनां बढ मध्ये प्रथम स्थानबळ	o U₹	४० राशिमां रहेला ब्रहोनो	
		परस्पर वेधः	ំ ស្ន
बीजुं दिग्बळ		<u> </u>	. ূ খ
त्रीजुं काळवळ		ग्रहवेध यंत्र	. ୯୧
• •	गोचरघ		
ग्रहगोचर तथा तेनुं फळ		तेनी स्थापनाः	
चंडगोचर फळ		चंद्र नरनी तथा मंगव	
चेंघनुं चळावळ		नरनी स्थापनाः	_
तारावळ.		बुध तथा गुरु नरन	
तारानुं स्वरूपः		स्थापना	_
तारार्जनी स्थापना		शुक्र तथा राहु नरन	
ताराउंनो विशेष		स्थापनाः केतु नरनी स्थापनाः	
चंदनी अवस्थाः			
राशिना घादशांश का		५१ अञ्चल बहुगोचरने व्यथ करवा माटे अष्टकवर्ग	
वानी रीतः		0 0	. १०५ . १०५
शनिनुं		·	. १०५ . १०५
तनु नक्त्र गाचरः . शनिनो पुरुषाकार तश्र		५६-५५ जीमाष्टकवर्गः	
शानना पुरुषाकार तथ	Į ŧ	्रप्राप्त सामाद्यालयः •••	, , , ,

मूळ श्लोक.	पृष्ठ.	मूळ श्दा	ोक. पृ
५०-५ए बुधाष्टकवर्गः	. १०८	ξξ	कार्यने आश्री ग्रहोतुं वळ-
6 - 6	रैण्ड		वानपणुं १
	१०ए	६व	राशिमां आवेलो कयो यह
	११०	•	क्यारे फळदायक होय? १
ऋष्टकवर्गनी रे खार्चर्न		६๓–६๗	अशुज बहोनी शांति १
समजण तथा तेनु	. 1		प्रहोनी शांति माटे स्नानः १
फਲ	. ११०	_	यहोनी बीजे प्रकारे
राहु श्रष्टकवर्गनी रेखा	. ११२		शांति १
_	विमर्श	r. 3.	
	कार्यदार	. 9.	
१ दीका अने विवाह सिवा	- 1	ប	मूळ विगेरे नक्त्रोमां
यना कार्यमां पुष्य नहः			जन्मेला बाळकनुं फळ. १
त्रनुं बळवानपणुं	· ·	ūν	मूळ नक्त्रनुं पुरुषरूप
२ कार्यना जेदने लीधे नकः	-		तथा तेनी स्थापना अने
त्रोना ऋधोमुख विगेरे	1		फळ !
नेदो तथा तेमां करवानां	1		मूळनुं वृद्यरूप तथा
कार्योः	११ए		तेनी स्थापना अने फळ.१
३ तिर्जा मुखवाळां नक्त्रो			श्यश्खेषा पुरुष तथा
तथा तेमां करवानां कार्यो			तेनी स्थापना स्थने
ধ তথ্ব मुखवाळां नक्त्रो	[फळ १!
तथा तेमां करवानां कार्यो			अश्लेषा वृक्तनी स्थापना
५ पुत्रनी इक्वावाळा पुरुषोने	г		अने फळ १
स्त्री सेवनमां वर्ज्य दिवसे	া. १२०		मूळ तथा अश्लेषानां
गर्जाधानमां वर्ज्य न क्	ते		त्रीश मुहूर्त्तोना
तथा ते वर्जवानुं	1		स्वामीलं तथा तेनुं
कारण	१२०		फळ १
६ स्त्रीना सीमंतनुं मुहूर्त्त	रधर	₹ 0	मूळ तथा अश्लेषा नक्ष-
प्र विष बाळकनी छत्पत्ति तथा			त्रमां जन्मेखा बाळक
तेनुं फळ	१२१		मादे शांति १

श्वीक.	युष्ठ.	मूळ	श्लोक.	પૃષ્ઠ.
विष्कंजादिक कुयोग			षमष्टकनी स्थापनाः	१ ३४
विगेरेमां जनमेखा बाळ-			दिदादश (बया वारमा)	
कनी शांति	१ २७		नी स्थापना	१३५
जन्मादिकमां जपयोगी		२३		
कुस्य नक्त्रो	१२ ७		स्थापनाः	१३६
जपकुस्य नक्त्रो	१२७		एकज नक्षत्रमां जन्मेखा	
कुहय तथा उपकुहयमां			दंपती होय तो मूळ	
जन्मेखानुं फळ	१२८		वेध	₹₹9
कुस्योपकुस्य नक्त्रो तथा			दंपतीनो नामीवेध.	
तेनुं फळ	१२०		तृतीयैकादश, सप्तम	
वारोना कुट्यादिक चेदो			सप्तम तथा दशम चतु-	
तथा तेनुं फळ	१२०		र्थनी स्थापना	१ ३ঢ
तिथि, वार, राशि अने			नवा गाममां वसवाधी	
समयना योगश्री श्रतो			ते गामनुं खेणुं जोवा	
कुस्य योग	१ २८		विषे	१३ए
रवि पुरुष, तेनुं फल तथा		ষ্ধ	गुरु शिष्यादिक माटे	
तेनी स्थापनाः	१ इए		त्रिनासीवेधः ः	१ हे ए
जातकर्म, षष्ठीजागरण तथा	ļ		त्रिनामीवेधनी सर्पा-	
नाम करणनुं मुहूर्त्त	१ ३०		कारे स्थापना तथा	
शक्यावीश नहत्रोनी योनि.	१३१		तेनुं फळ १	(성e
योनिवेर	१३१	इए		188
जन्मनक्त्त्र करतां नाम-		१ ६	वर्ग मैत्री (श्रवर्ग, कवर्ग	
नक्त्रनुं प्रमाणपणुं	१३१		विगेरे चपरथी जोवाती	
११ सत्यावीश नक्षत्रोना देवा-			मैत्री) १	ধ্র
दिक गणो. ते परथी प्रीति			वर्गना स्वामीचं १	धश
विगेरेनुं ज्ञान	१३२	ध्व	परस्पर खेखादेखी जाख-	
राशिकूट तथा राशिखंनुं			वानी रीत १	ধ্রহ
परस्पर वैर श्राने मित्राइ.	१३३		दंपतीमां ब्राह्मणादिक	
शत्रु पमष्टक तथा प्रीति	J		वर्ण जोवानी रीत १	ধঽ

मूळ	श्लोक.	ag.
	जिनविंत्रमां योनि	
	विगेरे छ प्रकारनुं बळ	
	जोवानी रीतः	१ ४४
	शिष्यनुं तथा पुत्रनुं	
,	नाम पानवानी रीतः	
ខុច	कर्णवेधनुं मुहूर्त्तः	₹ ਬ੫
श्र्	बाळकने प्रथम चलाववानुं	
	तथा प्रथम जोजननुं	
	तथा शिष्यने प्रथम	
	गोचरीनुं मुहूर्तः	
₹ 0	नवां पात्रो वापरवानुं मुहूर्त्त.	१४६
३१	प्रथम कौरनुं मुहूर्त	१ध६
	श्चौरमां तारा तथा	
	चंजना बळनी स्त्राव-	
	इयकता, दिवस तथा	
	रात्रिना इुणोना	
	स्वामीडं तथा दिव-	
	सना इलोनां नामो	₹83
	प्रयाणादिक कार्यमां	
	श्रजित् (विजय)	
	मुहूर्त्तनी बळवत्ताः	₹ਖ਼ঢ়
	सायंकाळनो विजय	
	योग तथा तेनुं फळ.	₹ ध ए
	धातःकाळनो चपा	
	श्चथवा त्रितार योग	
	अपने तेनुं फळ	१४ए
	रात्रिना पंदर क्लोनां	
	नामो तथा तेनुं फळ.	१४ए
	पुराणमां कहेखा दिव-	

मूळ श्सं	ोक.	ā
	सना तया रात्रिना	
	क्रणोनां नामो तथा	
	तेनुं फळ	*
इद	प्रथमना अने पत्नीना पण	
	क्षौरने श्राश्रीने वर्ज्य	
	वखत	*
	गृह प्रवेशादिकमां पण	
	नवमा दिवसने निषेध.	,
३३	वर्ज्य दिवसे छौर करा-	
	व्यानुं श्वज्ञुच फळ	
३ध	राजाने आश्री कौर कर्म.	
३ए	विद्यारंत्रनुं मुहूर्तः	
३६	नंदी (नांद) मांस्वानुं	
	मुहूर्त्त	\$
	शांतिक पौष्टिक कार्योनुं	
	मुह ूर्त	ŧ
३७-४५	मौंजीबंध (खपनयन)नुं	
	्रहरूर्त तथा चौख विगेरे नुं	
	मुहूर्त	\$
ध६–५१	अग्निस्थापन (अग्निहोत्र)	
	नुं मुहूर्च	3
ષ્ဍ	नवां वस्त्र पहेरवानुं मुहूर्त्त.	*
ષર્	स्त्री जैने नवां वस्त्र तथा	
	अञ्जंकार विगेरे पहेरवानुं	
	मुहूर्त	?
५ ध	विवाहादिकमां मळेखुं वस्त्र	
	तथा राजादिके छापेलं	
	वस्त्र मुहूर्त्त विना पण	
	पहेरबुं	\$

श्खोक.	वृष्ठ.	मूळ श्लोक.	98.
-५९ फाटेलां तथा बळेलां वस्त्रा-		हळचकनी स्थापना-	१६ए
दिक विषे	१५७	पण बीज वाववानुं मुहूर्त्तः ते	
गयेला ज्ञ्यनी पुनःप्राप्ति	. !	विवे त्रिनामी सर्पनी	
तथा थापण विगेरे माटे	. !	स्थापनाः	₹3¤
मुहूर्त	१६०	उए कृषि विषे नक्त्र आश्री	
गयेली वस्तु पानी मळवा		शुजाशुज फळ. कृषि	
विषे	१६०	नरनी स्थापनाः	\$8\$
छांधळां, का णां विगेरे	,	७ ० जळाशूय नबुं कराववानुं	
नक्त्रनी संज्ञा तथा	,	मुहूत्तं ू	
्स्थापनाः		०१ वृक्त वाववानुं मुहूर्तः	
दश प्रेत कर्मनुं मुहूर्तः (श्रशुज	r	ण्य नृत्य कर् बुं तथा शीखवानुं	
योगमां मरेखानो विधि)	1	श्चने मदिरा पान नुं मुहूर्त्तः	\$32
सर्पभ्शवाळो जीवे के नहीं।		अन्य शुजाशुज कार्यनुं	
६७ मांदो माण्स जीवे के नहीं १		मुहूर्त	१ ७२
तेनी स्थापना विगेरे		गर्जाधाननुं मुहूर्त्तः	१ 9३
श्रौष्ध खावानुं मुहूर्त्त		पुंसवन (पुत्रजन्म)नो	ı
रोगीने माथे पाणी रेमवानुं		योग	१ 9३
मुहूर्त		सीमंतनुं गुहूर्नः	888
श्चन्यंग स्नाननुं मुहूर्त्त		जातकर्म तथा नाम	
नबुं अनाज खावानुं मुहूर्त्तः		करणनुं मुहूर्त्तः	१ 98
राजादिक स्वामीना दर्श-	:	कर्णवेधनुं मुहूर्तः	\$38
ननुं मुहूत्तं	:	श्रवमाशननुं मुहूर्त्त	
इस्ती तथा अश्वना कर्मे		द्यौर कर्मनुं मुहूर्त्त	
विषे	रद्ध	चौस कर्मनुं मुहूर्त्तः	
गायो विगेरेनां बंधन-		विद्या तथा शिहपना	
स्थानादिकनुं मुहूर्त्तः		श्रारंत्रनुं मुहूर्त्तः	
गायो विगेरेने खरीदवानुं		नाटक तथा काञ्यना	
तथा वेचवानुं मुहूर्त्तः	1	माटक तथा काञ्चना श्रारंत्रनुं मुहूर्त्तः	
७७ इळ जोमवानुं मुहूर्त्तः	र ५ छ	आरभनु सुहूत्तः	134

मृळ श्लोक.	पृष्ठ.	मूळ श्ट	ोक. ग
मं त्रादिव	म्प्रहण् करवानुं	į	पशुकर्मनुं मुहूर्त्तः र
मुहूर्त्त.	१७६		खेतीकर्म, वीज वाव-
वेताख	मंत्रादिकना		वानुं तथा वृक्त रोप-
साधवा	ानुं मुहूर्त्तः १७६		वानुं मुहूर्तः 🝌 १
धर्मना ः	आरं जर्नु तथा		जळारायोनां कार्यनुं
	ांकवानुं मुहूर्त्तः १७६		मुहूर्त
दीकानुं :	मुहूर्त १९९		डुकान मांनवानुं मुहूर्तः
	नां कार्योतुं		धनने निधानमां मूकवुं
मुहूर्त्त.	 \$3 9		श्रयवा कोइने देवुं,
वस्त्र य	हण करवानुं		ए विगेरेनुं मुहूर्त्त,
मुहूर्त्त.	₹99		करीयाणानां क्रय विक-
	थ्रारंज करवानुं		यनुं मुहूर्त्त
	₹99		रसनो संग्रह तथा चोरी
रोगथी :	मुक्त थयेखाने		करवानुं मुहूर्त्तः 👾 🤄
स्नान व	हरवानुं मुहूर्त्तः १९९		सामान्य शुज कार्यनुं
नृपाद िक	नी सेवा कर-		मुहूर्त. ू १
वानुं मु	हूर्त १ ९०		कूर कार्यनुं मुहूर्तः
	विमद	તે. ૪.	
	गमदा	₹. ʊ.	
१-२ प्रस्थान विधि	बे १०१	Ū	परिघनो अपवाद तथा
	ामयनी शुद्धि १०३		नक्त्र शूळ. 🗼 👑
दिनशुद्धि	ζ १ 0३		नक्तत्र दिक्शूळ १
	ध्य स्रने निंद्य		नक्षत्र कीलः १
नक्त्रो.		U-30	वारने आश्रीने दिक्शूळ
-	ाश्री यात्रामां	, -	तथा विदिक्शूळ १
	नियमः १०५		दिक्रुळ तथा विदक्-
	देशानी शुद्धि		शूळनी स्थापना १
_	१ ₀ ६	११	दिक्शूळ तथा विदिक्-
_	स्थापनाः १७७	* *	शूळनो श्रपवादः १
11/4/11	444 4-44- 444 4 W	1	Albanier men neutral anne :

स्रोक,	पृष्ठ.	मृळ श्लोक. पृष्ठ.
योगिनीविचार	१ए₀	१६-३३ यात्राने योग्य सम्र ११०
योगिनीतुं कोष्टकः	L	३४–३५ यात्राने योग्य होरादिक
पाश तथा काळनुं स्वरूप.	१एइ	पांच वर्गमांथी होरानुं
पाश तथा काळनी		स्वरूपः ं २१४
स्थापनाः	१ए३	३६ डेब्काएनुं स्वरूप ३१५
राहुचार तथा तेनी		३७ नवांश, दादशांश श्चने
स्थापनाः	१एध	त्रिंशांशनुं स्वरूप ११७
चंद्रचार तथा तेनी		३७ यात्राने विषे बार जावो. २१ए
स्थापनाः		३ए-४२ यात्रामां बार जावोने
रविचार		श्चाश्री ब्रहोनो विचार ११ए
रविचारनुं स्वरोदयनी रीते		दशा तथा दशापतिनो
निरूपण		विचार २२१
प्रयाणनी जेम प्रवेश		धर− धध तान तथा कारक सं का छने
करवानो विधि		तेनुं फळ. (स्थापना
शुक्रचार		सहित) २१२
शुक्र श्रंध.	. २०१	धए यात्रामां वकी गहनुं फळ. २२४
शुक्रचारना फळ विषे		ं ब्रहोनी वक गति तथा
मतांतर	. २०३	मार्ग गतिना दिवसनी
घत्सचार तथा तेनी		संस्या २१५
स्थापनाः		श्चतिचारी प्रहोनुं
वत्सचारनं फळ		स्वरूप ् शश्य
रवि, राहु, चंद्र, मंगळ	-	यहोनां जन्मनक्त्रो. ११५
बुध, गुरु, शुक्र स्त्रने		४६ उत्तर्चर तथा अंतश्चर
शनिचारनुं चक्र 		यहो, तेनुं ए छ, यात्रा
शिवचार तथा तेर्न		खन्नमां छ वर्ग तथा वारनो
स्थापना श्वने तेनुं फळ		नियम ११६
्ध यात्रामां चेष्टा निमित्त		४ ९ यात्रामां केंद्रादिक स्थानतुं
विगेरेनी शुद्धिः		फळ ११०
यात्रामां छष्ट निमित्तोनो		ग्रहोनुं छढार प्रकारे कर्मानाणं करण
परिहार भा• ४	. २२०	नळहीनपणुं २२ए

मूळ श्खोक.	पृष्ठ.	मूळ श्खोक.
राहुना मुख तथा पुञ्चनुं स्वरूपः	হহ্দ	करनारने कयो छपाय जयकारक छे ? ५० हान्रुषी पहेलां के पड़ी
मुश्रुशिख श्रने मुशरिफ योगोनी छत्पत्ति प्रद्ोोन्री नव प्रकारे	2३०	प्रथास पहला के पेड़ा प्रयास करवा विषे ए१ चोर, ब्राह्मस, स्त्रन्य वा तथा राजाने स्त्राक्षी
निर्बळता ४० यात्रामां केम्झ स्थाननो विद्योष		यात्रानो नियम ५२–६१ राजाने प्रयाण करवाना
दिक्पतिने सन्मुख राखवानो प्रकार तथा तेनी स्थापनाः		ग्रहयोगोः ६२ सर्व योगोनो सारः बृहज्जातक्मां कहेला
सन्मुख रहेखा ग्रहनुं फळ ्		राजयोगो तथा तेमां जन्मेलानुं फळः ६३ यात्रादिकमां चित्तोत्साहर्न
४ए यात्रानी कुंमळीमां केवा . अने कया महोए प्रयाण		प्रबळता ६४ यात्रामां दिशानो विजागः
	वास्तुदार	_
६५ वास्तुमां क्षेवानां छ प्रका- रनां बळ बार राशिखंनां श्रंगो.	1	कया वास्तुमां कोन हायथी मान करतुं । तथा जीतोने गणवी
६६ ध्वजादिक स्त्राठ स्त्रायो तथा तेनी स्थापना		नहीं ? ते विषे वास्तुतुं जन्मनक्त्र विगेरे
	२ ५२	व्ययना पिशाचादिक त्रण प्रकार तथा शांतादिक श्राठ
६९ एक आयने स्थाने (बदले) अन्य आय खेवानो विधि	१ ५३	प्रकार ६ए इंड,यम छने झाप नामन
६० फळ, छाय, नक्त्र आ		श्चंशो खाववानी रीत ७०–७१ ध्रुव विगेरे सोळ प्रकारन
ब्यय खाववानी रीत.	इएइ	वास्तु तथा तेनं फळ.

बोक.	वृष्ठ.	मूळ श्लोक.		વૃજ્ઞ.
अस्तारनो प्रकार तथा तेना		धर	नी राशि जालवा स	माटे
सोळ जंगनी स्थापनाः		न	क्त्रना पाद खाव	` -
ध्रुवादिक घरो जत्पन्न कर-		व	ानी रीत	१६४
वानी रीतः		वए ब्राह्मण	दिकने छाश्री घर	ना
घरनी दिशानो निर्णय.	२ ५७	श्राय	तथा दारन	री
ध्रुवादिक घरोनी			्था	
स्थापनाः	श्र्ण		देकनो अपवाद.	
वास्तुमां चंदनुं बळ्तया	1	ए१ स् त्रपार	त विगेरेनुं मुहून	र्त्त. २६५
राशिबळ,तारावळ विगेरे.	- 1	ण्य-ण्य घरनाः	खारं जमां लग्नवट	ऽ. २६६
वास्तु प्रारंत्र करवाना		ण्ध खन्नने	विषे दोष	হ্হচ
महीना तथा तेनुं फळ.			्री पाना आवे	
घरना आरंजमां संकातिए	1		दिकनो घरप्रवे	
करीने युक्त एवा सूर्य	,		वा न्वा घरमां प्रवे	
मासो	1		शमां वार तः	
कइ दिशामां प्रथम खोद-			ानो नियमः	
वानो आरंज करवो ?	1	एए घरप्र वे	शमां खन्नबळ	2व१
(वास्तुना मस्तकादिक	I		स्थापन श्रने गृह	{ -
ञ्जवयवो)		37	विशमां ब्रहोनी	
विदिशामां खोदवानो			व्वस्था.	
नियम (शेषनागना			प्रवेश तथा स्तिव	
श्चवयवरे)			इ निर्माण इ	
आयादिक कहेवानुं तात्पर्यः	. १६३	54	वेश	२७३
	विमर्श			
	विसम्रदा	₹₽.		
विवाह, दीका अने प्रति-	•	३ जेवर्ष	, मास विगेरेमां छ	स्य
ष्टामां लग्ननी स्थावस्य-			तुं नथी ते विषे.	
कता तथा सौर्मास			_	
श्राश्रीने तेतुं मुहूर्तः	व्यव		इस्थमां खग्ननो दं	स्य
चांज मासनो नियम	538	त	था अध्दोप.	इव्ह

स्ळ म्सोक. पृष्ठ.	मूळ श्लोक.
धनार्क तथा मीनार्कमां लग्ननो दोष तथा च्यानो दोष तथा च्यानेष २९९ विष्णुना शयनकाळे लग्ननो निषेध २९० श्रिष्क मासमां लग्ननो निषेध तथा श्रिषक मास लाववानो प्रकार २९० द्वय मास जाणवानी रीत २९० लग्ननो तथा श्रंशनो स्वामी नीच होय के श्रस्त पाम्यो होय तो लग्ननो निषेध २९० लग्नमां बुधना श्रस्तोद- यनुं समान फळ २०० ग्रहोना जदय श्रने श्रस्तना दिवसनी संख्या २००	मूळ श्लोक. इह होय त्यारे लग्ननो निषेध गुरु शुक्रना श्रम्तमां लग्ननो निषेध लोपगत गुरुमां लग्ननो निषेध नक्षत्रने नामे महीनानां नामो बुधना जदयमां लग्ननं शुक्रना श्रम्तमां दीकानो श्रमां लग्ननो गुरु नीच स्थानमां होय लग्ने स्थानमां होय लग्ने स्थानमां होय लग्ने निषेध लग्नमां नीचांशोनो त्याग विवाहादिकमां समयन शुद्धि
अहोनो चदयास्त थवानो प्रकारः २०० लग्न तथा स्रंशनो स्वामी	ध विवाहादिकना लग्नमां श तथा गुरुनी त्याज्य छ। स्थार्च
	र. ११.
५ क्य ब्रहण करवामां ब्रह्-	ग्रहोना बळनी तरत
गोचरनी शुद्धिः २०४ चंद्रनां पंदर प्रकारनां वळ विषेः २०४	मता चंद्रना वळ विषे ग्रहगोचर करतां श्रप्ट
दीकादिकमां चंदादि-	वर्गनुं बळवानपणुं.
कना बळनी श्राव- इयकताः २८४	दश वर्ष छपरांत वय वाळी कन्या म

स्रोक. पृष्ठ.	. मूळ श्लोक. पृष्ठ.
मात्र खग्ननीज खाव-	नानी रीत तथा तेनी
इयकता∙ ६८६	६ स्थापना १ए०
त्रमां मासशुद्धि, दिन-	१५ नक्त्रना दोषनो प्रकार १ए।
शुद्धि तथा निरुत्रशुद्धि	राहुना नक्तत्रनुं तथा
विषे १०१	६ विद्वर नक्त्रनुं त्याज्य-
लग्न मां दिनशुद्धि विषे १०।	प्राणुं इत्थ
खग्नमां नक्षत्र गुद्धिः ५ए१	१ यहिनम्न (वेध) नहः-
प्रतिष्ठाने ऋाश्री विशेष. २एः	१ त्रनो त्याग तथा तेनी
सप्तर्षित्रेनो नकत्रचार . २ए३	१ स्थापना १७।
युद्धिष्ठिर श्रमे शाखि-	१६ अशुद्ध नक्षत्रनी शुद्धि ३०
वाह्मना शकनो काळ. १ए	
सप्तर्षिजेना छदयनी	जाणवानी रीत ३०
व्यवस्थाः १एः	२ १७ वेध अने एकार्गदादिके
विवाहादिकमां शुज नक्त्रो	दूषित थयेखा नद्यत्रनो
तथा तेनी स्थापना १एः	३ त्याग ३०१
विवाहनां नक्तत्रोमां विशेष. १एः	२ १० समयनी शुद्धि (ऋांति-
१३ विवाहमां वर्णक, कुसुंज,	साम्य दोष) ३०१
मंमपारोपण, वेदिका,	क्रांतिसाम्य काढवानी
जुवारा श्रने वेसवाळ	रीत ३०१
विगेरेनुं मुहू र्त २ ए४	ध विवाहमां तजवा योग्य
प्रतिष्ठा छाश्री नक्त्रनो	श्रदार दोषो तथा
नियम १ए।	ए तेमनो जंग ३०।
नक्त्रोनी ब्राह्मणादिक	१ए-२० प्रतिष्ठामां लग्नना श्रंशनो
जाति ३ए।	५ नियम ३१६
नव प्रकारनां नक्त्रोनी	दिस्वजावादिक त्र ण
श्रशुचता १ए१	६ प्रकारनां लग्ननी
श्चित्रिषेक नक्षत्र तथा	स्थापनाः ३१६
देश नक्तत्र १ए:	 ११ दीकामां लग्नना श्रंशोनो
पद्म नक्षत्रनी स्थाप-	नियम ३१६

म्ळ श्लो	षिः•	વૃજ્ઞ.
श्व	विवाहमां खग्न तथा	
	श्रंशोनो नियम	३१७
१ ३	प्रतिष्ठा, दीका अने विवा-	
	हनां खन्न विषे साधारण	
	नियमः	₹₹ए
	क्रूर कर्तरीनी जत्पत्ति	
	तथा तेनी स्थापना	३१ए
	जामित्र दोषनी छत्पत्ति.	३११
	चंद्रथी केन्द्रस्थानमां	
	रहेला कूर ग्रहना दोष	
	विषे	३११
হয়	चंदशी सातमा स्थाने रहेखा	
	ऋर ग्रहथी जत्पन्न यता	
	जामित्र दोषनो जंग	३ ११
9 ए	दीकासमये चंदनी साथे	
	रहेखा बीजा ग्रहोनुं फळ.	३१३
१६	विवाह तथा दीक्षानो	
	साधारण नियम	
	युति दोष तथा तेनुं फळ.	
হর	जामित्र दोषनो जंग,	३२ध
२७	प्रतिष्ठाने आश्री महोनी	
	युति तथा दृष्टिनुं फळ.	३१५
इए–३४	सर्वे शुज कार्यनां घटिका	
	बन्नोमां साधारण रीते	
		३१६
	प्रतिष्ठादिकमां घटिका	
	खन्नमां साधारण जंग	
	श्चापनारी ग्रहोनी	
	संस्थाः	२२२

मूळ श्लं	ोक.
੩ ૫	दीकालग्नमां असाधारण
	ग्रहोनी संस्था. 🕚
३६३९	विवाहलग्नमां रेला श्राप-
	नारी ग्रहोनी संस्था
₹७–४१	विवाहतमां विशेष
धर्-५०	सर्व कार्यमां साधारण प्रद-
	संस्थारूप शुज योगो
५ १	प्रतिष्ठाद्मग्नां रेखा आप-
	नारी ब्रहसंस्थाः
५१–५३	प्रतिष्ठाखग्नमां विशेष
૫ધ	सर्व कार्यमां शुज अहोनी
	शक्ति तथा तेनुं फळ
	ग्रहोने विषे वीश प्रका-
	रचुं बळ
	ग्रहोना हर्षस्थानना चा र
	प्रकार
	ं रिष्ट योग श्रवानी रीतः
	(बुध पंचक दोष).
५५-५६	बुध, गुरु अने शुक्रना
	जञ्चपणाने विषे शक्तिनुं
	फळ
	दोषो वरे सन्ननी ऋशु-
	ञ्चता
	साध्य तथा श्रसाध्य
	दोषो
ру	साध्य दोषनो प्रतीकार
एढ	साध्य दोषनो प्रतीकार । शुज्ज ग्रहोनी दृष्टिनी शक्तिः । शुज्ज ग्रहोनी संस्थाः । ग्रहोना जदयासानी शुद्धिः ।
भ्रष्	शुज ग्रहोनी संस्थाः
६०–६१	ग्रहोना जदयास्तनी शु द्धिः

क्रीफ. पृष्ठ	. 7	मूळ श्स्तोक.	वृष्ठ.
सेपादिक लग्ननुं मान ३६	হ :	६० इष्ट्रं समृतुं जुक्त साववा	
साठ गुरु श्रद्धरोनी एक		वके करीने इष्ट्रसमयने	
पळ, ते विषे श्लोक ३६	₹	स्पष्ट करवानी रीत	३७३
लंका नगरीना लग्ननुं		६ए–७० खन्ननो नवांशक स्पष्ट करवा	
मान तथा तेनी		माटे वीजो प्रकार	
स्थापना ३६	ર	४१- ४२ समयने आश्रीने खन्न खाव-	
मध्य देशमां लग्नतुं		वानी रीत	. ३ ७७
मान तथा तेनी		दिवसे काळने ऋाश्रीने	
स्थापनाः ३६	ម	लग्न श्रमे श्रं श खाव-	•
श्रण्हिञ्चपुर पाटणना खन्ननुं		वानी रीत	. ३९७
मान तथा तेनी स्थापनाः ३६	ξ	रात्रिजं काळने श्राश्रीने	Ī
खग्नोनुं जदय संबंधी	, <u></u>	लग्न श्रने श्रंश लाव	•
घनी चेनुं मान अने	.	वानी रीतः	्ड्छ०
होरादिकनुं पळमान, ३६	ε	शंकु बायामां खपयोगी	ì
नक्त्रोना जदयनुं मान,	``	दिनमान खाववानी	1
तेनी स्थापनाः ३६	3	रीत	, ३००
राशिजनी विशेष संज्ञा	· }	मध्याह्ननी द्वाया खाव	-
तथा तेनुं प्रमाणः ३६	ָּט	वानी रीतः	३७६
सूर्यने स्पष्ट करवा माटे		सध्याह्न ग्रायाश्री इष्ट	
बारे संकांतिर्जनी श्रंतराळ		काळनी ठाया लाव	•
घमीलं २६	0	वानी रीतः	ই চহ
संक्रांतिलंना श्रंतरनी		यहो नुं तथा तेनी गतिनुं	Ì
ञ्जिनो यंत्र ३६	(m)	स्पष्टीकरणः	३०४
सूर्य स्पष्ट करवानी रीत. ३६	שָּ	ग्रहोने स्पष्ट करवा नु	Ì
स्पष्ट करेला सूर्यथी अय-		फळ	. ३०ए
नांश सहित सूर्यनुं जोग्य	{ }	वकी तथा मागी थयेख	Ţ
मान खाववानी रीतः ३९	3१	ब्रहोनी स्पष्टता कर	-
श्रयनांश खाववानी		वानी रीतः	३ए०
रीत २ः	92	9३ विवाहमां गोधू सिक सम	. ३ए६

मूळ श्खो	क.			पृष्ठ.
88	गोधूलिक	खग्न मां	केटसी	
		वी जोइए		
	धुव लग्न			इएए
9६–ঢ়ঽ	राजादिकः			
ᡦᢋ᠆ᢑ᠙	अ जिषेकम			धः३
		र्यादिक	-	
		ना विषे		ध⋼३
σξ	सम्य यंथ	ना ऋर्थर्	रुं सम्-	
	र्थन-	****	••••	प्र∘५

मूळ श्सोक.

श्रहप दोषवाळा खग्नना स्वीकार विषे. शकुननी बळवत्ता. चंद्र सूर्य नामी. पृथ्वी, जळ विगेरे पांच तत्त्वो विषे. टीकाकारनी प्रशस्ति. ग्रंथकार (टीकाकार) नो श्रजिप्राय.

ष्ट्रग्रशुद्धिनी अनुक्रमणिकाः

	मंगळ लग्न शब्दनो छार्थ छा ग्रंथमां कया	तथा		ਬ	श्राष्ट	कहेवानुं ते ग्रंथनां गोच त्रण द्वारन	गरशु क्डि
			गोचरशु	इत. १.			
५–१ २	चंघ, गुरु, रवि अने	तारा-		:	र्छनी	शुद्धि.	****
			दिनशु	दे. २.			
१ ३	दिनशुद्धिमां मास	विगेरे		३४-३५	कुमार	योग	***
	दश दारनां नाम.	****	ধহ্	३६	গ্যুন্স	कार्यमां	योगनी
१४-१ ५	मासनी गुद्धिः	•••	ध श्ष		च्यव स	था	••••
१६	वारनी शुद्धिः		ধহ্	३ छ	रजश्स	प्रादिक चा	. घारोन
\$ 3- 2 ¤	तिश्रिनी शुद्धिः	****	धश्६	、 -	नाम.	****	-(1 (1)
	नक्त्रनी शुद्धिः	****	ধহহ	3 =		_	
१४–१६	योगनी शुद्धि.	****	৪২৪			प्र दिवसनुं	
23	करणनी शुद्धि.	****	ধ্রর			दग्ध तथ	•
২০-২৫	सिक्षि योगनुं खरूप		ধ্রর		Ξ	तिथि.	****
३'०−३३	बीजा सिद्धि योगोः	••••	ধহত	ម੩	कर्क यो	ग	••••

	\sim
अनुक्रम	। एकाः

-	-
7	ш
٠.	

हरू पृष्ठ.	्रमूळ श्लोकः	ष्टाः
वार नक्त्रने श्राश्री श्रशुज	दग्ध मद्यत्र विषे	. ४३३
योग∙ ध३०	६१–६४ विष्ठ् ग्रह विषे	. ध३३
थ्रह जन्मन द्दत्र अशुप	६५ जपग्रह नक्त्र	. ยุรุย
योग ४३१	६६-६७ खत्ता	. ยุรุย
३ श्रर्धप्रहर, कुलिक, जपकु-	-1	. ध३ए
खिक विगेरे कुयोगो <i>.</i> ४३१	७०-७१ एकार्गलः	. ध३ए
ए सं ध्यागत विगेरे वर्ज्य	७२-७६ एकार्गलनी बीजी	
नक्त्रो तथा तेमनां फळ. ध३२	रीत	. ध३६
धूमित, छार्खिगित छने	७७ सगुण नक्त्र	. ยุรุธ

लग्नशुद्धि. ३.

	•	.	•	
	लग्नशुङ्चिना प्रकारः ध३७	ए६एठ	चदयास्तशुद्धिः ४४०	3
:	न्न वर्गनी शुद्धिनां नामो	एए-१०१	महोनी दृष्टि ४४५	J
	तथा पां च वर्गनी शुद्धिनी	१०२-११३	दीकाने आश्री प्रहोनुं	
	प्रमाणता ध३७		बळवानपणुं. (दीक्ता-	
	मेषादिक खन्नना पळोनी		कुंमळी). ं धधः	ţ
	संख्या ध३७	११४—१२६	प्रतिष्टाने श्राश्री शुजा-	
ŧ	त्रिंशांशने आश्री ब		शुज महो (मतिष्ठा-	
	वर्गनी शुद्धि ४३०		ਭੁੰਜਨੀ) ਖ ੪	₹
	नवांशने आश्री खग्ननी	१ २९	सृरिपद, राज्याजिपेक,	
	খুদ্ধি ধঽ০		विवाह विगेरे माटे	
ñ	खन्ननां स्थानो तथा होरा. ध ३०	i i	त्रसामण ४४६	Ų
	<i>फे</i> ब्काण अ३ए	१२५-१३१	शीव्रताथी कार्य करवा	
ą	नवांशा ४३ए	1	माटे ध्रुव लग्न तथा	
	द्रादशांशा ध३ ए	<u> </u>	राया सम्र ४४१	Į
	त्रिंशांशा ध३ए	१३६	शुज शकुन विषे धध	٦
	सौम्य तथा क्रूर ग्रहो. ४४०	१ ३३	प्रंयनुं फ िलतार्थः ४४६	Ę

आः ५

दिनशुद्धिनी अनुक्रमिक्ता.

दिनशुद्धिनी अनुक्रमणिका.

- Sez

मूळ श्लोक	. पृष्ठ.	मूळ श्लोक	•
\$	ਜੰ गळ ਖ਼ਖ਼ਾ	æ व	अपिजित् नहत्रन [ी]
হ	वारना स्वामी तथा तेनी	<u> </u>	समज्ञाष
	सौम्य विगेरे संज्ञा ४४ए		नक्त्रोना अक्रोनं
३	वारने विषे होरा धधए		यंत्र
a	वारनी प्रवृत्तिनो निर्ह्षय. ४५०	হ ং	कइ राशिमां केटलां
Ų	वारने ऋाश्री सुवेळा		नक्त्रो आवे ते, यंत्र
	(चोघमीयां) धए०		सहित
६	कुंबिक, कंटक, जपकु-	হহ–হম	चंदनी श्रवस्थार्च, श्रंहं
	बिक खने काळवेळा ,		तेनुं बळ
	यंत्र सहित. 🔻 ५५०	व्य-व्य	ताराबळ, यंत्र सहित.
a	वर्ज्य अर्धप्रहर तथा	হ ঢ	रवि योग
	गुमनादिकमां वर्ज्य	च् ए	कुमार योग- 🔐
	्दिशा, यंत्र सहित. ४५१	३०	राज्योग
U	तिथिचेनां नंदादिक	₹₹	स्थविर योग
	नामोः ४५१	३१	यमल तथा त्रिपुष्कर
Ć− ś ¤	शुन्न कार्यमां वर्ज्य	<u>{</u>	योग
	तिबिर्ज ४५१	३३	पंचक योग
११	सूर्यदग्धा तिथि ४५२		विष्कं जादिक सत्या
१२-१३	स्थिर तथा चर करणोः ४५२		्वीश योगोनो यंत्र
१ध−१५	विष्टिनुं स्वरूप, यंत्र	২ ৪	वर्ष्य योगो
	सहित ध५३	३५–३६	
१६	जजा (विष्टि) नां श्चंगो	ļ	योगोनी जत्पत्ति तथा
	तथा तेनुं फळ ४५४		तेनुं फळ, सयंत्र
₹ 9	करण्नी अवस्थार्च ४५४	₹9-₹0	वारने आश्री शुन
१०-१ए	नक्षत्रोनां नाम तथा		तिथिचे
	तेनी तारार्ड, यंत्र	३ए-४१	
	सहित धएध	ļ	नक्त्रो

ोक.	पृद्ध.	मूळ श्लोक.	पृष्ठ.
	श्रमृतसिद्धि योग ४६२	93	प्रयाणमां नक्त्रने श्राश्री
	जत्पात, मृत्यु, काण		अशुन्त समय ४६ ७
	श्चने सिद्धि योगो,	38	परिघनुं स्वरूप, यंत्र
	यंत्र सहित ध६२		सहित ४६७
	यमघंट तथा ग्रह जन्म-	9 3 98	दिक्र्यूळ तथा विदिक्-
	नक्त्र ध६६		शूळ ४६०
	कर्क योगः ४६३	૭ ૫	श्चळना दोषनो अ पवाद. ४६ए
ī	वारने आश्री अशुन	98	नक्तत्रशूळ ४६ए
	तिथिनं ४६३	23	वत्सुनं स्वरूप. ू ४६ए
σ	त्रण प्रकारनुं गंमांत	30-36	योगिनी, यंत्र सहित. ४९०
	तथा तेनुं फळ, सयंत्र.४६३	Ū □	राहुविचारः ४९०
	वज्रपात योग ४६४	□ ₹	शिवविचार, यंत्र सहित. ४ ९०
ង	मृतक अवस्थावाळां	σश	रविविचार ४९१
	नक्त्रो ४६४	ច₹	चंद्रविचार ४९२
ñ	नक्त्रोनी तीदण, ज्य	οЯ	शुक्रविचार ४७२
	विगेरे संक्षा तथा तेनुं	συ	पाश तथा काळ ४९२
	फळ ५६ए	σξ	्हंस (नामी) विचारः धष्
	प्रस्थान करवा विषे ४६७	ចឲ្	चैत्यनुं खात तथा शिखा-
	प्रयाणमां शुप्त सन्नादि-		स्थापन् मुहूर्सः ् ४९३
	कनुं फळ ध६६	៥៤	प्रतिमानो गृहप्रवेश ४५३
₹	प्रयाणमां शुज्ज तिथि	<u>ଅଜ</u> −ଜ∘	अधोमुख विगेरे नहत्रो
	तथा तेनुं फूळ. ू ४६६		अपने तेनुं फळ ४७३
	प्रयाणमां वर्ज्य तिथि	ए १	प्रतिमानुं नाम पामवानी
	तिथि नक्त्रने योगे		रीत ध७३
	प्रयाणमां शुज्ञ वार. ४६६	एश—ए३	
	प्रयाणमां सामान्य शुज		नक्ष्त्रयोनि वेरः ४९४
	्दिवस ू ध६६	6à	वर्गाष्ट्रक ४७५
	्रयाणमां श्रशुज दिवसः ४६७	एठ	नामीमां रहेलां नक्त्रना
Þ	प्रयाणमां शुज, मध्यम	1	्रनाव, नामीयंत्र ४७५
	श्चने श्चशुज नक्त्रो. ४६९	עש	विंशोपक ध७५

मूळ श्लोक.	वृष्ठ-	मूळ श्लोक.
१००-१०१ देवगणादिक	ยอธ	१२१-१२९ दीका तथा प्रतिष्ठानः
१०२-१०३ विद्यारंज विषे	धबह	् मुहूर्तः
१०४–१०५ स्रोच विषे		१२७-१३२ संध्यागत विगेरे वर्ज्य
१०६ कर्णवेध तथाराजाना	!	न द त्रो तथा तेनुं
दर्शननां नक्त्र्ञो	ś	स्वरूप
१०५ वस्त्रधारणः		१३३ जप श्रह
१०० नवां पात्र वापरवा विषे.	890	१३४ एकार्गेख यंत्र
१०९-११० गयेखी वस्तु पाछी		सहित
श्चाववा विषे, यंत्र		१३७ पात दोष
सहित	8 30	१३६ बत्ता दोष
सर्पदंश विषे	प्तवक ।	१३७ वेध दोष
११२-११३ रोगनी शांति जोवा		सप्त शक्षाका यंत्रः
विषे		१३० पंच शासाका यंत्र वके
रिरेध श्रीषध शरु करवानां	1	ग्रहवेध
नक्त्रो रोगधी मुक्त	1	१३ए ग्राया खग्न
अयेखाने स्नान₊ ११५–११६ मृत्यु जोवा विषे.	gae	१४० ध्रुव चक्रनुं फळ
११९–११५ भृत्यु आवा विषः त्रिनासी यंत्रः	UES	१४१ शंकु जाया खग्न विषे.
१४५-११० मृत कार्यमां बर्ज्य		१४२ प्रथम गोचरी, नंदी
२२५ पुतः पायमा वर्ष नक्षत्रो छने तेनो	,	विगेरे
विधि	,	१ध३ छपसंहार
११ए-१२० संयोगी नक्त्रो		१४४ य्रंथकारनुं नामः 🐠
and the state of t		ton Attended and Bu

॥ श्रीउद्यप्रभदेवसूरिविरचित ॥

॥ आरंभसिद्धि ॥

॥ भाषान्तर ॥

॥ अथ प्रथमो विमर्शः॥ ॥ ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय॥

श्रीधर्मन्यायसम्यग्व्यवहृतियुवतेर्जीवस्रोकेन जर्ता, श्रेष्ठे तादक्षुदूर्त्ते परिणयनमिद्दाचीकरचो युगादौ । द्यीखायेते यथेतौ सत्ततमिवयुतौ सत्कदाद्व्यौ स दत्तां, वस्तुं नः सिद्धिसीधे सुसमयमृषजस्त्रामिदैवक्तराजः ॥

र्थ-जे ज्ञष्यत्वे स्वामीए युगना प्रारंत्रमां तेवा कोइ श्रेष्ठ मुहूर्ते श्रीधर्म अने विक सम्यक् प्रकारनी व्यवहृति (व्यवहार)रूप युवति (स्त्री)नो जीवखोक-र्ता साथे विवाह कराव्यों हे, ते श्रीक्ष्यत्वामीरूपी श्रेष्ठ देवक्ष (नैमित्तिक) जे आ बन्ने दंपती सत् फले करीने व्यास एवा श्रुवे निरंतर वियोग रहित श्रीमा अकारे सिद्धिरूपी सौधमां निवास करवा माटे स्त्रमने सारु मुहूर्त्त स्त्रापो.

श्रादर्शेषु पुरापि सन्ति कतिचिद्धाख्यासवाः केऽपि च, प्राप्ताः श्रीवरसोमसुन्दरगुरोः पादप्रसादान्नवाः । लक्तानुक्तपुरुक्तमर्थमय तैरारंजसिद्धरहं, व्याकर्तुं स्वपरोपकारविधये तदार्तिकं प्रस्तुवे ॥

े—आ आरंत्रसिक्षि नामना ग्रंथनी व्याख्याना केटलाक लवो (नानी व्याख्यार्छ)
पण केटलांक पुलकोमां हे, अने केटलाक नवा लवो मने छत्तम एवा श्रीसोमपुरुना चरणकमळना प्रसादथी प्राप्त थया हे, माटे ते सर्व लवोए करीने पोताना
रना छपकारने माटे छक्त, अनुक्त अने पुरुक्त अर्थने स्पष्ट करवा माटे हुं आ
सिक्षिनी न्याख्या करं हुं.

जरतकेत्रमां समम त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ अने काम)नुं इक्षा प्रमाणे छर्पाजन कर-गर्जना करतो गुर्जर (गुजरात)नामे देश है. तेना स्वामी श्रीवीरधवख नामना राजाए ते (संघवी) श्रीवस्तुपाळने सर्व राज्यना ज्यापारनो अधिकार आप्यो हतो. ते ारे श्रीशञ्चंजय, छक्कयंत (गिरनार) अने श्र्रबुद (श्राबु) विगेरे मोटां तीर्थोमां

केताना अर्बुद, अंबुज अने खर्द विगेरे संख्यावाळा ज्व्यनो व्यय करीने क श्रहंकार नारा पमाड्यो हतो. जिन्न जिन्न देशमां निवास करनारा कविजनोए स्तृतिलंना समुद्दने सहन करनार अने तेवा प्रकारना धीर, जदात्त अने मनोहर श्रेणिए करीने जपार्जन करेखा तथा जगतने व्यापीने रहेखा यशरूपी शरीरनी करीने कदापि नाहा नहीं पामनार ते मंत्रीश्वरे श्रीनागेंद्र गहना गुरु, सत् का किया अने सम्रुणोए करीने शोजता एवा श्रीमान् खदयप्रजदेव सूरिने आचार्य स्थापन कर्या हता. तेमणे अन्य अन्य (जिन्न जिन्न) ग्रंथोमां बुटक बुटक रहेखां श्चने खोकोत्तर कर्मना विषयवाळा ज्योतिषनां मुहूर्त्तादिक होवाथी जोशी खोकोने प्रयास घतो जोइने तेमना छपकारने माटे निरंतर छपयोगी, सत् ऋर्थनी प्राति देवहट्टी समान आ ग्रंथ रच्यो हे. ''आ ग्रंथने जलनाराओनुं खंग पांकित्य (क्षान) न थार्च" एवा हेतुथी पोतानी कृतिनुं सर्व ज्योतिषना विषयमां समर्थपणुं ववा माटे स्त्रा पूज्य स्त्राचार्य महाराजे केटलांएक सावध कर्मी पण संपूर्ण रीते क तथा केवळ धर्मनां कार्योमां ज एकांतपणे श्रान्युदयने इञ्चता श्रामोए पण ते (धर्मी नां मुहूत्तीं अने खग्नोना विषयमां घणा जोशीर्जना विवादने पामेखा गुण दोषना ि स्पष्ट करवा माटे घणा घणा ज्योतिषना अजिप्रायो देखामवापूर्वक आ टीका क तोपण पूर्वे कहेला हेतुथी ज ते सावद्य कर्मीना विषयमां पण व्याख्या करी सत् अने असत्ना विवेकमां (विवेचन करवामां) चतुर एवा माह्या पुरुषोए कियार्रातां मुहूर्तादिको मात्र जाएवा योग्य ज हे, पए सावद्य कर्ममां प्रवर्तेखा कहेवा खायक नथी. ते विषे कहां हे के-

> "यदेव साधकं धर्मे तदक्तव्यं वचस्विना । न त्वीषदपि बाधाकृदेपैव हि वचस्विता ॥"

"धर्मनुं ज जे साधक होय, ते ज माह्या पुरुषे बोलवुं जोइए, परंतु धर्मने वाधा । दोश पण बोलवुं नहीं. ए ज माह्या पुरुषनुं महापण हे."

श्रहीं कोइ शंका करे के—"ज्यारे सावद्य कर्मोनां मुहूत्तीदिक जाखवा योग्य जग्य पण कहेवा योग्य नथी, त्यारे तेवां कर्मोने श्रा ग्रंथमां खखवानुं शुं फळ हे ? तेवां कर्मो ग्रंथमां खखवां ज नहोतां" श्रानो जवाब ए हे जे—"तेवां कर्मोनुं श्रहीं खखवानुं फळ हे." फरीथी शंका करे हे के—"ज्ञान कियाए करीने ज फळ (एटखे ज्ञाननुं फळ किया ज हे.) किया रहित ज्ञान तो वंध्या गायनी जेम प्राप्त खायक नथी." श्रानो जवाब ए हे के—"मात्र किया करवाथी ज ज्ञान फळवाछुं एवो कांइ नियम नथी, परंतु श्रकृत्योमां (न करवा योग्य कियार्जमां) जे न ते पण क्ञाननुं फळ हे. नहीं तो चोरी श्राने परस्वीसेवनादिक पापने जाणनारा ।

त्रिवेकीने पोतानुं ज्ञान सफळ करवा माटे ते चौर्यादिक कर्ममां प्रवृत्ति करवानुं ो, तेथी करीने छाहीं पण सावद्य कर्ममां प्रवर्तनना निवर्तन वके ज सावद्य कर्मना अफळपणुं कटपवुं योग्य हे. छा ज कारणने खड्ने कह्युं हे के—

''ये सुविहिताः पदस्थाः प्रौढाः सावद्यवचनतो विरताः।

तेषामेव ब्रन्थः सदायमुपयोगितां खजताम् ॥"

श्रो सत्कार्यने करनारा, शौढतावाळा श्रने सावद्य वचनश्री निवृत्ति पामेखा (श्राचार्यादिक पदने धारण करनारा) हे, तेर्चने ज श्रा ग्रंथ सदा उपयोगी थार्च." श्रीजिनशासननी प्रजावनादिक विशेष फळना खाजने जोश्ने कोश्वार श्रपवाद प्राश्रीने सावद्य कर्मनी प्ररूपणा करवानुं पण श्रागममां कहे हुं होवाश्री श्रमुक गवद्य कर्मनां मुहूर्तादिकनुं ज्ञान पण उपयोगी हे. श्रत्यंत विस्तारथी सर्थुं प्रस्तु-कहीए हीए.—

"तत्त्वार्श्वमेव वक्ष्ये कचन विशेषं च सोपयोगमिह । तत्त्वतुसारतोऽक्षरघटना सूत्रे स्वयं कार्यो ॥"

आ ग्रंथनी टीकामां तास्विक अर्थने ज कहीरा, अने कोइ स्थळे छपयोगी एवा पण कहीरा, माटे ते ते तास्विक अने विशेष अर्थने अनुसारे सूत्रमां (मूळ होकमां) अक्ररघटना (अक्षरार्थ) पोतानी मेळे करी खेवी."

शास्त्रना आरंजमां मंगल, अजिधेय, संबंध अने प्रयोजन कहेवां जोइए एवं वाथी प्रथम मंगळने माटे छचित एवा देवताना नमस्कारने प्रथकार कहे हे .--

ँउँ नमः सकखारंत्रसिद्धिनिर्वैधवेधसे । छईणामईते साक्ताडुपक्षंत्राय शंजवे ॥ १ ॥

-समय शुज कर्मना आरंजनी सिक्रिमां निर्विष्ठता करनार, पूजा करवा योग्य, गनवाळा तथा सुखने चत्पन्न करनारा जिनेश्वरने मारो नमस्कार थार्च.

लोकमां "शं" एटले सुखने माटे "जवित" एटले थवाना स्वजाववाळा ए अर्थने गंस्वयंविप्राष्ट्रवो मुः" आ व्याकरणना सूत्रवमे मु प्रत्यय लागवाथी शंजु शब्द वे ए चतुर्थी विज्ञिक्तना एकवचननुं रूप थयुं हे. आवा शंजुने एटले जिनेश्वरने आहे. आ ग्रंथ सर्व दर्शनी होने छपयोगी होवाथी शंजु एवो श्लेष्वाळो शब्द है. ते शंजु केवा हे १ तो तेनुं विशेषण "हैं" हे, ते "अव्," एटले रहण करवुं छपरथी छणदिनुं सूत्र लागी "म" प्रत्यय तथा "क्रह्" आगम आवी गुण

क ज शब्दने जूदा जूदा अर्थमां छइ शकाय ते श्लेष कहेवाय छे, तेथी शंभु एटले महादेव नेश्वर एम बन्ने अर्थ छइ शकाय छे, माटे ए श्लेष कहेवायो धवाथी हैं शब्द सिद्ध थयों है. ते अव्ययना प्रकरणमां गणवेलो होवाथी अ कोने तेनो अर्थ "परमबहारूप" थाय हे. आ म्लोकमां मात्कायण्नी जेम "हैं ए सिद्धमंत्र खख्यों हे तेनुं प्रयोजन विझ रहित इष्ट अर्थनी सिद्धि आय ते हे समय शुज आरंजो (कार्यो)नी सिद्धिमां विझरहितपणाना छत्पन्न करनार आ पणवमे युक्तिए करीने "आरंजसिद्धि" एवं आ प्रंथनुं नाम पण सूचव्युं हे. तथ करवाने योग्य ए पण शंजुनुं विशेषण हे. त्यां कोइ हेकाणे "अहीणामहते" एवं होय तो "पूज्यना पण पूज्य" एवो अर्थ करवो. तथा प्रत्यह झानवाळा एट प्रत्यह झान हे अने जेनाथी अन्यने प्रत्यह झान थाय हे एवा शंजुने नमस्कार

हवे बीजा सूत्र (श्लोक) मां श्रनिधेय, संबंध श्रने प्रयोजन कहे हे-

दैवज्ञदीपकक्षिकां व्यवहारचर्या-मारम्जसिद्धिमुदयप्रजदेव एताम्।

शास्ति क्रमेण तिथि र वार १ ज ३ योग ४ राशि ५-गोचर्य ६ कार्य ७ गम ० वास्तु ए विखन्न र० मिश्रेः॥ १॥

श्रर्थ श्री उदयप्रत श्राचार्य जोशी उने दीपकनी ज्योत जेवी श्राने श्रुत व्य कार्योने श्राचरण करनारी श्रा श्रारंत्रसिद्धिने श्रानुक्रमे तिथि १, वार १, न योग ४, राशि ४, गोचर ६, विद्यारंत्रादिक कार्य ७, गम (प्रयाण) ०, १ लग्न १० श्राने मिश्र ११ श्रा श्रायार दारवेन कहे हे.

स्पष्ट श्रर्थने प्रकाश करवाथी आ आरंजिसिकि जोशी होने दीपकनी ज्योत सर व्यवहार एटखे शिष्ट (सारा) जननो शुज तिथि, शुज वार अने शुज नहजा शुज कार्य करवारूप सदाचार. आवा सदाचारनी चर्या एटखे अमुक रीते कर वर्षा अजिधेयपणाए करीने जेमां रहेखी हे. आ प्रमाणे "व्यवहारचर्या" एम क आ प्रंथनुं अजिधेय जणाव्युं हे; अने आम कहेवाथी आ प्रंथ वाचक थयो आ हारचर्या वाच्य थइ, तेथी वाच्य वाचक जाव नामनो संबंध पण सूचव्यो हे एम तेमज "व्यवहारचर्या" एवं आ प्रंथनुं बीजुं नाम पण हे एम जाणवुं. अहीं प्रयोजन रं रनुं हे—एक अनंतर अने बीजुं परंपर. तेमां ओताहने व्यवहारनी कुशळतानी याय ए आ आरंजिसिकिनुं अनंतर प्रयोजन हे, तथा यथार्थ रीते व्यवहारनी असरीने धर्म, अर्थ अने काम ए त्रण पुरुषार्थनी सिक्ति थाय, तथा अनुक्रमे म पुरुषार्थनी पण सिक्ति थाय ए परंपर प्रयोजन हे. हवे पूर्वोक्त व्यवहारचर्या अजिधेयने अग्यार हारवेम विजाग पानीने बतावे हे.—प्रतिपद् विगेरे तिरि

ति श्रिश्वासिनी श्रादि नक्त्रों ३, सिद्धियोगादिक योगों ४, मेष विगेरे विशेष परंदुं ते गोचर कहेवाय हे. "चरेरामस्त्वगुरी" ए सूत्रश्री य वर्ष शब्द सिद्ध श्रयों हे. एनो श्रश्च "पूर्व पूर्वनी राशिशी छत्तर छत्तर वर्ता" एवो श्राय हे ६, विद्यारंजादिक कार्यों ७, गम एटखे यात्रा ७, इति, प्रासाद विगेरे श्राने तेना संबंधश्री तेमां प्रवेश करवों ते पण म श्राने वास्तु नामनां बन्ने दारोनों कार्यदारमां समावेश श्रद्ध शके हे, तेमां वधारे कहेवानुं होवाश्री जूदां जूदां दार कर्यों हे. विद्युप्त एटखे १०, तथा मिश्र एटखे कहेवां श्राने नहीं कहेखां एवां घणां दारोए एकां एक दारमां संग्रह करवों ते ११, श्रा श्रान्यार दारोवके व्यव-

प्रथम तिथिदारने कहे हे.

मजा जया रिक्ता पूर्णा चेति त्रिरन्विता । मध्योत्तमा शुक्का कृष्णा तु व्यत्यया तिथिः ॥ ३ ॥

[बी आरंजीने नंदा, जजा, जया, रिक्ता अने पूर्णा ए प्रमाणे अनुक्रमे वी. ए रीते जण वार गणवाथी पंदर तिथि पूरी थाय हे. एटखे के विश्वने नंदा जाणवी, १-५-१२ ए तिथिलं जजा जाणवी, ३-५-१३ रिका अने ५-१५-१५ ए तिथिलंने पूर्णा जाणवी. आ नंदा विगेरे रखे के पोतानां नाम प्रमाणे फळ आपनारी हे. ते विषे श्रीपतिए कहुं अब, वास्तु, केत्र अने नृत्यादिक आनंदवाळां कार्यो नंदा तिथिए विषक्, आवंकार, वाहन, प्रयाण तथा शांतिपौधिकादिक जब कर्मोंने वास्तं अवे हे. युक्त तथा सैन्य लपर हुमलो करवो विगेरे विजयवाळां ए करवामां आवे हे. वध, बंध, घात, विष, अग्नि अने शस्त्रादिक संबंधी ए करवामां आवे हे. तथा विवाह, दीका, यात्रा विगेरे मांगिलक कार्यो । समां आवे हे. तथा विवाह, दीका, यात्रा विगेरे मांगिलक कार्यो । समां आवे हे. तथा विवाह, दीका, यात्रा विवेरे मांगिलक कार्यो । समां आवे हे. तथा अमावास्था अने रिका तिथिने वर्जीने । प्रमां कार्य करवामां आवे हे. तथा अमावास्थाने दिवसे ते ज तिथिए । कार्य सिवाय बीजां कार्य करवानो निषेध हे. लक्ष कहे हे के—

मंत्ररहादीहाकुषेषु कर्मसु स्नाने । रिकादर्शाष्टम्यः शस्ताः॥"

ता, दीका, क्रुड कार्य अने स्नान एटलां कार्यमां रिक्ता तिथि तथा। अध्मी ए पांच तिथिखं शुज्ज हे." हुएस पहानी पहेंसी पांच तिथिनं हीन कहेंचाय हे, हुएसी दशम सुधीनी बी तिथिनं मध्यम हे, अने अग्यारशथी पूर्णिमा सुधीनी त्रीजी पांच तिथिनं ह परंतु कृष्ण पद्मां एथी छलडुं जाणबुं. एटले के कृष्ण पद्मां पहेंसी पांच तिथिनं बीजी पांच मध्यम अने त्रीजी पांच तिथिनं हीन जाणवी.

रत्नमाळामां तिथिना स्वामी आ प्रमाखे कह्या हे.—

"तिथिपाश्चतुर्मुख १ विधात २ विष्णवो ३,यम ४ शीतदीधित ए विशाख ६ वि वसु ए नाग् एधर्म १० शिव ११ तिग्मरक्मयो१२,मदनः १३कलि१४स्तदनु विश्व१५६

"चतुर्मुख (ब्रह्मा) १, विधाता २, विष्णु ३, यमराज ४, चंज ५, विशाख (स्वामी) ६, इंज ४, वसु ७, नाग ए, धर्म १०, शिव ११, सूर्य १२, कामदे कि थि अने विश्व १५ आ पंदर स्वामी छं प्रतिपद्श्री पंदर तिथिना अनुक्रमे ज

"तियौ हि दर्शसंक्षके पितृनुशन्त्यधीश्वरान् । त्रयोदशीतृतीययोः स्मृतस्तु चित्तपोऽपरैः॥"

अमावास्यानी तिथिने विषे पितृदेवने स्वामी कहेला हे. एने बीजा आषायं अने त्रयोदशीनो चित्तप एटले कामदेव स्वामी हे एम कहां हे."

"विह्न १ विरिज्ञो २ गिरिजा २ गणेशः ४, फणी ५ विशाखो ६ दिनकू ७ न्महेः इर्गी ए न्तको १० विश्व ११ इरि १२ स्मराश्च १३, शर्वः १४ शशी १५ चेति पु

"श्रिप्त १, ब्रह्मा १, पार्वती ३, गण्पित ४, शेषनाग ५, कार्तिकस्वामी महेश ए, छुर्गा ए, यमराज १०, विश्व ११, हिर ११, कामदेव १३, शर्व १४ १५, श्रा प्रमाणे पण श्रमुक्तमे तिथिना स्वामी एए पुराणने विषे जोयेला है." श्रा प्रतिष्ठा विगेरे कार्यमां ते तिथिनो छपयोग हे. एटले के जे देवनी जे तिथि होय ते ते देवनी प्रतिष्ठा विगेरे करवामां श्रावे हे. ए ज प्रमाणे श्रागळ नक्त्र, करण श्र र्सना स्वामीश्रो कहेवामां श्रावशे त्यां पण ते ते देवनी प्रतिष्ठा दिकमां पोत नक्त्वादिकनो छपयोग करवामां श्रावे हे एम रक्तमाळाना जाव्यमां कह्युं हे. जिन् प्रतिष्ठा विगेरेमां तो सर्व शुद्ध तिथि, नक्त्व, करण श्रने मुहूर्त्त छपयोगी हे, क जिनेश्वर सर्व देवोना पण श्रिधदेव हे.

हवे लराब एटखे वर्ज्य तिथि कहे हे.-

रिक्ताः ४-ए-१४ षष्ट्यष्टमीद्वादश्यमावास्याः शुन्ने त्यजेत् । स्वीकुर्यान्नवर्मी कापि न प्रवेशप्रवासयोः ॥ ४ ॥

अर्थ--शुज कार्यमां रिका (४-ए-१४), उठ, आठम, बारश अने आमावार तिथिष्ठं त्याग करवा खायक है। कोइक शुज कार्यमां नवमीने पण खेवामां इ थि प्रशास्त्रां श्राप्रवा प्रवेशमां विलङ्कत हेवी नहीं. श्रा व्यवस्था हत एटडो त्यां आह्वी, श्राहुच कार्यमां तो श्राहुच तिथि ज विशेष हिन्धिकारण कहार अपरनी सर्व तिथिलं पश्चिक नामे होवाथी श्राहुच हे. कहां हे हो—

"पष्ट्यष्टमीचतुर्थीचतुर्दशीदादशीकुहूनवमीः। पद्यक्विदाण्याहुर्द्वजते नेतेषु संसिद्धिम्॥"

आतम, चोख, चौदरा, बाररा, अमास अने नोम आटली तिथिलं पक्तिक वाय हे आ तिथिए करेला कार्यनी सिक्ति यती नथी तेमां पण उठ अने वे तिथिलं यात्रामां विशेष अशुज है; परंतु ध्रुव कार्यमां ते वे तिथिलं शुज है, कहे हैं. "चौदरा पण यात्रामां विशेष अशुज है" एम श्रीपति कहे है.

त्रीन् वारान् स्पृशती त्याज्या त्रिदिनस्पर्शिनी तिथिः। वारे तिथित्रयस्पर्शिन्यवमं मध्यमा च या ॥ ५ ॥

-जे तिथि वृद्धि होवाने खीधे त्रण वारने स्पर्श करती होय ते त्रिदिनस्पर्शिनी वाय है। हर्षप्रकाश प्रंथमां आने फह्गु नामे तिथि कही है, तथा तिथिना क्यने वारमां त्रण तिथिनो स्पर्श थतो होय तो ते त्रण तिथिमांनी वचली तिथि । (क्य) कहेवाय है। आ त्रिदिनस्पर्शिनी तथा अवम ए बन्ने तिथि शुज जेवी। कहां है के—

"दिनक्त्ये जवेत्कार्यक्तयस्तेन शुजं न तत् । प्रकृत्यन्यत्वमुत्पातस्व्यहस्युक् तदतोऽशुजम्॥"

स (तिथि)नो क्य होय तो कार्यनो क्य याय हे, माटे क्य तिथि शुज नथी; तिनुं अन्यपणुं एटखे विकार होय तो ते छत्पात कहेवाय हे, तेथी त्रण दिवसने नारी तिथि गण अशुज हे.

हवे दग्धा तिथि कहे हे.

दग्धामकेंण संकान्ती राश्योरोजयुजोस्त्यजेत्।

तृत ५ हम् १ युक्तयोः शेषां शोधिते जगणे ११ तिथिम् ॥६॥

-सूर्यनी संक्रांतिमां जे राशि चाखती होय ते जो विषम (एकी) होय तो छमरवा, अने जो सम (बेकी) होय तो तेमां वे छमरवा, पठी तेनो बारे i जे अंक शेष रहे ते तिथिने दग्धा तिथि जाएवी बारे जाग खेतां जो शून्य तो बारशने दग्धा जाएवी, अने बारे जाग खड़ न शकाय तो ते ज तिथि दग्धा आ दग्धा तिथि शुज कार्यमां वर्जवानी है।

पटडो के सेप १, निशुन ३, सिंह ५, तुला ७, धन ए अने कुंक ३१ ए छे आमांनी कोइ पण राशिमां सूर्यसंकांति होय तो ते राशिना धंकमां बारे जाग लेतां जे शेष रहे ते अंकवाळी तिथि ते संकांतिमां सूर्यदग्धा जार वृष २, कर्क ४, कन्या ६, वृश्चिक ०, मकर १० अने मीन १२ ए समराशि छे कोइ पण राशिमां सूर्यसंकांति होय तो ते राशिना अंकमां वे छमेरी बारे जा शेष रहे ते तिथि ते संकांतिमां सूर्यदग्धा जाणवी.

जदाहर ए — मेष राशि पहेली हे, तेथी एकमां पांच छमेरतां ह थाय. तेनो नहीं चालवाथी ह ज बाकी रह्या, तेथी मेष राशिनो सूर्य होय त्यारे हण्ने दग्ध तुला राशि सातमी हे, तेथी सातमां पांच नालवाथी बार थाय. तेनो बारे र शून्य वधे हे, तेथी तुला राशिनो सूर्य होय त्यारे बारशने दग्धा जाएवी. धन रा हे, तेथी नवमां पांच नालवाथी चौद थाय. तेनो बारे जाग खेतां वे शेष रहे धन राशिनो सूर्य होय त्यारे बीजने दग्धा जाएवी. ए रीते बीजी पण विषम जाए हुं. वृष राशि बीजी हे, तेथी तेमां वे छमेरी बारे जाग खेतां जाग चा तेथी चारना चार बाकी रह्या; माटे वृष राशिनो सूर्य होय त्यारे चोथने दग मकर राशि दशमी हे, तेमां वे छमेरवाथी बार थाय. तेनो बारे जाग खेतां श तेथी मकर राशिनो सूर्य होय त्यारे बारशी बारशा वाणवी. मीन राशि बारमी छमेरतां चौद थाय तेनो बारे जाग खेतां वाकी वे रहे हे, माटे मीन राशिने त्यारे बीजने दग्धा जाएवी. ए ज रीते बीजी सम राशिनमां पण जाएवं. ते दग ते संक्रांतिना ध्याखा मासमां तजवी योग्य हे.

दग्धा तिथिने ज स्पष्टताथी कहे हे.-

द्रग्धाऽकेंण धनुर्मीने १ वृषकुंत्रे ४ ऽजककिणि ६। • इन्ह्रकन्ये ए मृगेन्डालौ १० तुलेणे ११ द्वादियुक्तिथिः

श्चर्य—धनुष श्चने मीननी संकांतिमां बीजने दग्धा तिथि जाएवी, वृप श्च संकांतिमां चोथ, मेष श्चने कर्कनी संकांतिमां उठ, मिथुन श्चने कन्यानी संकांतिर सिंह श्चने वृश्चिकनी संकांतिमां दशम तथा तुला श्चने मकर राशिनी संकांति दग्धा तिथि कहेवाय हे. श्चा रीते सूर्यदग्धा तिथि जाएवी.

प्रसंगोपात्त चंद्रदग्धा तिथिने कहे हे (हर्षप्रकाश)—
"कुंत्रधे १ अजिमहुणे ४ तुलसीहे ६ मयरमीण ए विसकके ।
विश्वियकन्नासु १२ कमा वीश्वाई समतिही छ सिसदृष्टा ॥"
"कुंत्र अने धनना चंद्र होय त्यारे बीजने दग्धा तिथि जाण्वी, मेव अने

चंद्र होय गरे चोथ दग्धा तिथि जाण्वी, तुद्धा छने सिंहना चंद्र होय त्यारे ठठ, मकर छने मीन ग चंद्र होय त्यारे छाठम, वृपन्न छने कर्कना चंद्र होय त्यारे दशम तथा वृश्चिक छाने कन्याना चंद्र होय त्यारे वारशने दग्धा तिथि जाण्वी." दग्धा तिथिमां जन्मेखं बाळक प्राये छहप आयुष्यवाळं होय छे.

्दग्धा तिथिनुं फळ् यतिबद्धन्त नामना ग्रंथमां छा प्रमाणे कहां हे.

"कुष्टं कौरेऽम्बरे दौःस्थ्यं गृहवेशे तु शून्यता । स्त्रायुधे मरणं यात्राकृष्युद्दाहा निरर्थकाः॥"

दग्धा ति थिने दिवसे क्षौर कराववाथी कुष्ट रोग थाय है, नवुं वस्त्र पहेरवाथी दुःस्थिति थाय है, नवर घरमां प्रवेश करवाथी शून्यता थाय है, नवुं शस्त्र धारण करवाथी मरण थाय है, अने यात्रा, खेती तथा विवाह करवाथी ते निष्फळ थाय है.

इवे ऋर तिथि कहे है.---

त्रिराश्चतुर्णामपि मेषसिंहधन्वादिकानां क्रमतश्चतस्रः।
पूर्णाश्चतुष्कत्रितयस्य तिस्रस्त्याज्या तिथिः कूरयुतस्य राशेः॥ ।।।।।।

श्चर्य-भीषथी, सिंहथी अने धनथी आरंत्रीने राशिनां त्रए चतुष्क करवां तेमां प्रतिपद्दशी प्रारंत्रीने अनुक्रमे चार तिथिखं तथा पहेली पूर्णा एटले पांचम ए तिथिखंने पहेखा चतुर्कमां ऋर तिथि जाएवी. ए रीते वीजा चतुष्कमां उठ्यी आरंजी नोम सुधी तथा बीजी पूर्णा एटले दशम ऋर तिथि जाणवी तथा त्रीजा चतुष्कमां अग्यारशयी श्रारंजीने चीदश सुधी तथा त्रीजी पूर्णा एटले पूर्णिमा ए तिथिउने ऋर तिथि जाएवी. (श्रा ऋर/तिश्रि सर्व शुज कार्यमां तजवानी हे.) एटले के मेप राशिमां (रवि, मंगळ, शनि के र हु एमांथी) कोइ पण कर ग्रह होय तो एकम अने पांचम, वृपराशिमां कोइ पए कूर मह होय तो बीज अने पांचम, मिथ्रुनमां कूर ग्रह होय तो त्रीज अने पांचम, तथा कर्कमां कर यह होय तो चोथ छाने पांचम आ तिथिछ कर आणवी. एवी रीते सिंह राशिमां छठ अने दशम, कन्यामां सातम अने दशम तथा वृश्चिकमां नोम अने दशम ए तिथिन कर जाएवी. ए रीतेधनमां अग्यारश अने पूर्धिमा, मकरमां बारश अने पूर्णिमा, कुंनमां तेरश अने पूर्णिमा तथा मीनमां चौदश अने पूर्णिमा ए तिथिछ कूं जाएवी. आ राशिछ केवळ कूर यह सहित होय तो ज ते तिथिछ कूर आय बे, पए ौ म्य ग्रह्नी साथे होय तो ते तिथिखं शुज ज जाएवी. "जे माएसनी नामराशि कूर महे छ । कांत होय ते माणसे शुज कार्यमां ते राशि संबंधी तिथि वर्जवी" एम केटलाक कहे हे ब ब ब बीजा कोइ आचार्य कहे हे के - मेप राशि ऋर यह सहित होय त्यारे एकम श्वने पांचमनी पहेखी पंदर घमीनो त्याग करवो, वृष राशि ऋर ग्रह सहित होय त्यारे छा. २

वीज श्रने पांचमनी बीजी पंदर घमीनो त्याग करवो, निद्युन राशि क्रूर ब्रह हित होय तो त्रीज तथा पांचमनी त्रीजी पंदर घमीनो त्याग करवो, तथा कर्क राशि क्रूर ब्रह सहित होय तो चोथ श्रने पांचमनी चोथी एटले हेडी पंदर घमीनो त्याग करवो. ए रीते सिंहादिक चतुष्कमां तथा धनादिक चतुष्कमां पण ते ज ब्रमाणे जाणवुं.

हवे तिथिने आश्रीने करणो कहे छे.--

करणान्यथ शकुनि र चतुष्पद २ नागानि ३ क्रमाच किंस्तुश्लम् ४। श्रसितचतुर्देश्यर्धात्तिथ्यर्धेषु ध्रवाणि चत्वारि॥ ए॥

श्रर्थ—ज्यारे जेटला प्रमाणवाळी तिथि होय त्यारे तेना श्रध प्रमाणवाळां सर्व करणो होय हो, केमके "तिथिनो श्रध जाग करण कहेवाय हो," एवं वचन हे. ते आ प्रमाणे—कृष्णपद्दनी चतुर्दशीना श्रधी जागश्री एटले रात्रिश्री आरंजीने श्रधीं श्रधीं तिथिमां श्रतु- क्रमे शकुनि १, चतुष्पद १, नाग ३, श्रमे किस्तुझ ४, ए चार करणो ध्रुव जाणवां। (कारण के ते करणो नियमित स्थाने रहेलां होवाश्री ध्रुव कहेवाय हे.) श्रश्रीत् कृष्ण- पद्दनी चतुर्दशीनी रात्रिए शकुनि करण होय हे. श्रमावास्थाए दिवसे चतुष्पद श्रमे रात्रिए नाग, तथा शुक्ल प्रतिपद्ना दिवसे किस्तुझ करणं होय हे.

वाकीनां करणो कहे हे.--

श्रय बव १ बाखव १ कोखव ३ तैतिल ४ गर ५ विणज ६ विष्ट यः ७ सत्त । मासेऽष्टशश्रराणि स्युरुज्जवलप्रतिपदन्त्यार्थात् ॥ १० ॥

श्रर्थ—वव १, बाखव २, कौंखव २, तैतिख ४, गर, ए, विण्ज ६, श्रमे विष्टि ७, श्रा सात करणो छे; श्रमे ते शुक्ख प्रतिपद्नी रात्रिष्ठी आरंजीने एक मासमां श्राठ वार श्रावृत्ति करवाधी चर कहेवाय छे. श्रश्रात् शुक्ख प्रतिपद्नी रात्रिए वव करा ! होय छे, बीजने दिवसे तैतिख श्र ने रात्रिए गर होय छे (तैतिखनुं बीजुं नाम स्त्रीविखोचन पण छे). चोथने दिवसे वी लेज श्रमे रात्रिए विष्टि (ज्ञा) होय छे. श्रा एक श्रावृत्ति थइ. ए प्रमाणे पांचमने दिवसे बव, रात्रिए बाखव, उठने दिवसे कौंखव श्रमे रात्रिए तैतिख, सातमने दिवसे गर १ प्रने रात्रिए विण्ज, तथा श्राठमने दिवसे बिष्टि, श्रा बीजी श्रावृत्ति थइ. ए प्रमाणे श्राठमनी रात्रिए बव, ते छेवट शुक्ख एकादशीनी रात्रिए विष्टि श्रावे. श्रा त्रीजी श्रावृत्ति थइ. पठी बारशने दिवसे बव ते यावत् पुनमने दिवसे विष्टि श्रा चोश्री श्रावृत्ति न्यः पठी पुनमनी रात्रे वव, कृष्णपद्यनी प्रतिपद्ने दिवसे बाखव, यावत् कृष्णपद्यनी इ ।जनी रात्रे विष्टि ए पांचमी श्रावृत्ति थइ. पठी चोश्रने दिवसे वव यावत् सात ने दिवसे विष्टि ए उठी श्रावृत्ति थइ. पठी सातमनी रात्रिए बव यावत् दशर्मी नी रात्रिए विष्टि ए उठी श्रावृत्ति थइ. पठी सातमनी रात्रिए बव यावत् दशर्मी नी रात्रिए

बिद्धि आ वे ते सातमी आधृत्ति यइ. पठी अग्यारहाने दियसे वय यावत् कृष्ण कर्तुर्दशीए दिवसे विष्टि आवे ते आठमी आवृत्ति थइ. आ आठ आबृत्ति तथा पठीनां चार भ्रव करणोए करीने आलो मास पूर्ण आय हे. आहीं जे दिवस तथा रात्रिना विज्ञाग कह्या हे, तेमां तिथि ज्यारथी शह थाय त्यारथी त्रीश घमी सुधी दिवस (पूर्व-दळ) जा एवो, अने बीजी त्रीश घमी रात्रि (पश्चिमदळ) जाएवी. एटखे के तिथिनी जेटखी धमी होय तेना वे जाग करी पहेला जागने दिवस अने बीजा जागने रात्रि समजवी.

प्रसंगने खीधे आ करणोना स्वामी कहे हे.-

"इन्डो १ विधि २ मित्रा २ र्थम ४ जू ५ श्री ६ शमना ७ श्रक्षेषु करलेषु । कि १ वृष १ फणि ३ मरुतः ४ पुनरीशाः क्रमशः स्थिरेषु स्युः ॥"

इंज १, ब्रह्मा २, मित्र २, सूर्य ४, पृथ्वी ५, ब्रह्मी ६ श्राने यम ७ श्रा अनुक्रमे वव विगेरे चळ करणोना स्वामी हो. तथा कित १, वृषत्र २, सर्प २ श्राने वायु ४ श्रा शकुनि विगेरे चार ध्रुव करणोना श्राडकमे स्वामी जाणवा."

करणोनुं फळ कहे हे.--

्रदशामूनि विविष्टीनि दिष्टान्यखिलकर्मसु । राज्यहर्व्यत्ययाक्रझाऽप्यक्तृष्टैवेति तद्विदः ॥ ११ ॥

अर्थ — विष्टि विनानां वाकीनां दशे करणो सर्व कार्यमां शुन्न हे. अर्थात् एक विष्टि (जका) वंरण ज अशुन्न हे. तथा जका पण रात्रि अने दिवसना विपर्यासयी अदू- िषत हे एर. खे शुन्न हे एम तेना विकानो कहे हे. अर्थात् रात्रिनी (तिथिना पश्चिम- दळनी) क्रा जो दिवसे आवे अथवा दिवसनी (तिथिना पूर्वदळनी) जका जो रात्रिए आवे तो ते अशुन्न नथी.

जजाना श्रशुत्तपणा माटे ग्रंथांतरमां कछं हे के.—
"यदि जजाकृतं कार्ये प्रमादेनापि सिध्यति ।
प्राप्ते त पोमदो मासे समुद्धं तिज्ञित्वयित ॥"

"जो कराच जड़ामां करेख़ं कार्य जूख़थी पए सिट्ट शइ गयुं होय तोपए सोळमो मास प्राप्त थये ते कार्य मूळ सहित नाश पामे हे."

कोइ व खत ज्ञजाने प्रशस्य पण कही हो. ते विषे नारचंजना टिप्पनकमां कहां हे के—
"दाने चानशने चैव घातपातादिकर्मणि।

खराश्वप्रसवे श्रेष्ठा जजान्यत्र न शस्यते ॥"

"दानगां, अनशनमां, घात आने पात विगेरे कर्ममां, तथा गधेमा आने घोमानी प्रसू-तिमां जड़ा श्रेष्ठ हे, अन्य कार्यमां श्रेष्ठ नथी." ज्ञा रात्रि छाने दिवसना विपर्यासथी छादूषित हे ते विषे कहां हे के— "रात्रिज्ञा यदाऽहि स्यादहर्ज्ञा यदा निशि। न तत्र ज्ञादोषः स्यात् सर्वकार्याणि साध्येत्॥"

"रात्रिनी जाजा जो दिवसे होय छाने दिवसनी जाजा जो रात्रे होय तो ते वस्तते जानो दोष नथी. ते सर्व कार्योने साथे हे."

वळी "या विष्टिरक्रमप्राप्ता स्यात्" "अन्य दिवसनी जड़ा अन्य दिवसे एटले तेथी बीजे दिवसे आवी होय अथवा अन्य रात्रिनी जड़ा अन्य रात्रिए आवी होय तो ते अदूषित हो (शुज हो)." आम पण कोइक कहे हे आ बन्ने वचनोनो अजिपाय ए हे जे पोताना स्थानथी ज्रष्ट थवाने लीधे ते जड़ा निर्वळ हो, परंतु आ बन्ने वचनो बहु संमत नथी, केमके अन्य स्थाने गयेला (रहेला) विपादिकनुं पण मारणस्वरूप नाश पामतुं नथी. एम त्रिविक्रम कहे हे. अहीं आ प्रमाणे विशेष जाणवो.

"सुरने वत्स या जड़ा सोमे सौम्ये सिते गुरौ। कृड्याणी नाम सा प्रोक्ता सर्वकार्याणि साध्येत्॥"

"हे वत्स (शिष्य)! देवगणना नक्षत्रमां सोम, बुध, शुक्र के गुरुवारे प्रजा आवे तो ते कह्याणी नामनी जजा कहेबी हो, ते सर्व कार्योंने साधनारी हो." वर्ळा—

"स्वर्गेऽजोक्तैणकर्केष्वधः स्त्रीयुग्मधनुस्तुते । कुंजमीनाविसिंहेषु विष्टिर्मत्येषु खेत्रति ॥"

"मेप, वृप, मकर अने कर्कना चंद्र होय त्यारे विष्टि (ज्ञा) स्वर्गमां क्रीमा करे छे, कन्या, मिश्रुन, धन अने तुखाना चंद्र होय त्यारे विष्टि पातालमां क्रीमा करे छे, तथा क्रंज, मीन, वृश्चिक अने सिंहना चंद्र होय त्यारे विष्टि मनुष्यलोकमां क्रीमा करे छे."

जजानो काळ (समय) स्पष्ट रीते बतावे हे.---

रात्री चतुर्थेकादश्योरष्टमीराकयोर्दिवा।

जडा शुक्ले तिथौ कृष्णे त्वेकैकोने यथाक्रमात्॥ ११॥

अर्थ — शुक्खपक्षमां चतुर्थीं तथा एकादशीनी रात्रिए (पश्चिमदळमां) अने अष्टमी तथा पूर्णिमाए दिवसे (पूर्वदळमां) जा होय हो, अने कृष्णपक्षमां अनुक्रमे एक एक ओही तिथिए होय हे. एटले के कृष्णपक्षमां तृतीया अने दशमीनी रात्रिए (पश्चिम-दळमां अने सप्तमी तथा चतुर्दशीए दिवसे (पूर्वदळमां) जा होय हे.

अहीं कोइने शंका याय के—''विष्टि अशुज होवार्थी तेने वर्जवा माटे विष्टि नामनुं एक ज करण कहे बुं योग्य हो, परंतु बीजां बव विगेरे करणोनुं वर्णन कर्युं तेनो क्यां छप-योग यशे ?'' आनो जवाब ए हे जे—''संक्रांति विगेरेमां आ सर्व करणोनो छपयोग है.'' कहां हे के—

"शकुनिचतुष्पदनागे किंस्तुघ्ने कोखवे विणिज्ये च । जर्ध्व संक्रमणं गरतेतिखविष्टिषु पुनः सुप्तम् ॥ ववबाखवे निविष्टं सुजिक्तं चोर्ध्वसङ्कमे । जपविष्टो रोगकरः सुप्तो छुर्जिक्तकारकः ॥"

"शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तुझ, कोलव अने विण्ज्य एटलां करणमां जो संकांति बेठी होय तो ते कर्ध्व (जजेलुं) संक्रमण कहेवाय हे. गर, तैतिल अने विष्टिमां संक्रांति बेठी होय तो ते सुप्त (सुतेली) कहेवाय हे अने वय तथा बालवमां संक्रांति बेठी होय तो ते बेठेली संक्रांति कहेवाय हे. तेमां जो कर्ध्व (जजेली) संक्रांति होय तो सुकाळ थाय, बेठेली होय तो रोगने जल्पन्न करे अने सुतेली होय तो छकाळ थाय." तथा—"शीतोष्णवर्षतुंषु सूर्यसंक्रमाः, क्रमेण सुप्तोर्ध्वनिवेशिनः शुजाः।" "शीत कतुमां, जण्ण कतुमां अने वर्षा कतुमां अनुक्रमे करी सुतेली, कर्ध्व अने बेठेली संक्रांति होय तो ते शुज्ज हे, एटले शीत कतुमां सूर्यसंक्रांति सुप्त होय तो ते शुज्ज हे, जण्ण कतुमां सूर्यसंक्रांति कर्ध्व होय तो ते शुज्ज हे अने वर्षा कतुमां सूर्यसंक्रांति कर्ध्व होय तो ते शुज्ज हे अने वर्षा करणना स्थिमां (एक करणनी समाधिमां अने बीजा करणना प्रारंजमां) रहेली संक्रांति सुप्तोत्थिता (सुइने जलेली) नामे कहेवाय हे, ते सर्वदा अशुज ज हे." एम पूर्णज्ञ कहे हे.

विष्टिनां मुखादिक श्रंगो श्रने तेना फळने कहे हे.— बाण ५ दि १ दिग् १० जलधि ४ षद् ६ त्रिक ३ नािक सासु, बक्तं १ गलो १ हृद्य ३ नािज ४ कटा ५ श्र पुरुम् ६ । विष्टेविद्ध्युरिह कार्य १ वपुः १ स्व ३ बुद्धि ४— प्रेम ५ दिषां क्रय ६ मिमेऽवयवाः क्रमेण ॥ १३ ॥

श्रर्थ — विष्टिनी पहेली पांच नामिका (घमी)ने विष्टिनुं मुख जाण्वुं, त्यारपठीनी वे घमीने कंठ जाण्वो, त्यारपठीनी दश घमीने हृदय जाण्वुं, त्यारपठीनी चार घमीने नाजि जाण्वी, त्यारपठीनी ठ घमीने किट जाण्वी श्राने त्यारपठीनी त्रण घमीने पुछ जाण्वुं. तोमां जो विष्टिने मुखे कार्य कर्युं होय तो ते कार्यनो नाश श्राय ठे, कंठे कर्युं होय तो शरीरनो नाश (मरण्) श्राय ठे, हृदये कर्युं होय तो घन्यनो नाश श्राय ठे, नाजिए शुद्धिनो नाश श्राय ठे, कटिए प्रीतिनो नाश श्राय ठे, श्राने पुठमे श्रवश्य जयनी प्राप्ति श्राय ठे. श्रा विषे लक्ष कहे ठे के—

"शुजाशुजानि कार्याणि यान्यसाध्यानि जूतले । नामीत्रयमिते पुत्ने जजायास्तानि साधयेत् ॥" "आ पृथ्वी पर शुन्न अथवा अशुन जे कोइ कार्य असाध्य होय ते त्रण घनीना प्रमाणवाळा विष्टिना पुन्ने करवाश्री सिद्ध थाय हे." तेनुं पुन्न आ प्रमाणे कह्यं रे.—

"दशम्यामष्टम्यां प्रथमघटिकापञ्चकपरं, हरिद्यौ ११ सप्तम्यां त्रिदश १३ घटिकान्ते त्रिघटिकम्। त तृतीयायां राकासु च गतसविंशैक २१ घटिके, ध्रुवं विष्टेः पुद्यं शिवतिथि १४ चतुर्थ्योश्च विगलत्॥"

"दशम अने आठमे प्रथमनी पांच घमी पठी विष्टिनुं पुछ आवे हे, एटले के ते तिथिए विष्टिनो किटनी बीजी घमीथी प्रारंत याय हे, तेथी पांच घमी पछी पुछ आवे अने त्यारपडी मुख विगेरे किट पर्यंत आंगों आवे हे. आग्यारश अने सप्तमीने दिवसे हृदयनी हेड्डी त्रण घमीथी विष्टिनो प्रारंत्र थाय हे, तेथी विष्टिनी तेर घमी गया पड़ी तेनुं त्रण घमी प्रमाण पुछ आवे हे. त्रीज अने पुनमने दिवसे विष्टिनो कंहनी बीजी घमीथी प्रारंत्र थाय हे, तेथी विष्टिनी एकवीश घमी गया पड़ी तेनुं पुछ आवे हे, तथा चोथ अने चौदशने रोज विष्टिनो मुख्यी प्रारंत्र थाय हे, तेथी विष्टि जतरतां हेड्डी त्रण घमी पुछ आवे हे." जाता (विष्टि)नो आकार आ प्रमाणे कह्यों हे.—

''सर्पिंग्री वृश्चिकी जाजा दिवाराज्योः स्मृता कमात् । सर्पिंग्या वदनं त्याज्यं वृश्चिक्याः पुत्तमेव च ॥"

"दिवसनी जाजा सार्पिणी कही हो, अने राजिनी जाजा वृक्षिकी (वीं हण) कही हो. तेमां सार्पिणीनुं मुख अने वृक्षिकीनुं पुञ्च तजवा योग्य हो." आ प्रमाणे केटलाक कहे हो. वळी बीजा कोइ एम कहे हे के—"शुक्लपक्ती जाजा सार्पिणी हो अने कृष्णपक्ती। जाजा वृक्षिकी हो."

श्रहीं विष्टिनां मुल विगेरे श्रंगो पांच विगेरे घमीवाळां कहाां हे ते मात्र व्यवहारशी एटले सामान्य रीते साह धमीनी तिथि होय तो त्रीश धमीनी श्रधीं तिथि थाय अने ते वस्ते ज श्रा कहेली धमीनी व्यवस्था घटी शके हो, परंतु तिथि साह धमीथी न्यून के श्रिथक होय त्यारे श्रधीं तिथि पण न्यूनाधिक होय. ते वस्ते मुलादिकनी पांच विगेरे घमीलं पण न्यूनाधिक श्राय हे. दालला तरीके कोइ तिथि जधन्यश्री ५४ घमी होय त्यारे श्रधीं तिथि २९ घमीनी होय; माटे विष्टि पण २९ घमीनी होय; तथा कोइ तिथि लत्कृष्ट ६६ घमीनी होय त्यारे ३३ घमीनी श्रधीं तिथि होय, माटे विष्टि पण ३५ घमीनी होय होय हो होय हे. तेथी करीने एक घमीना साह पळ होवाथी तेने विष्टि पण मध्यम प्रमाणवाळी होय हे. तेथी करीने एक घमीना साह पळ होवाथी तेने विष्टिनी घमी ३० होवाथी त्रीशे जाग लेतां वे पळ श्रावे हे, माटे विष्टि त्रीश घमीश्री जेटली घमी न्यून के श्रधिक होर तेटली

धसीयी त्माणा पळ दरेक अंगनी धमी उंमांची न्यून के अधिक करवा. जेमके कोइ तिथिए विष्टि १ए घरीनी होय त्यारे जजाना मुखनी पांच घरीमांथी दश पळ न्यून करवा, तेटखुं विष्टिनुं मुख समजवुं. ए जरीते विष्टिनुं गळुं वे घमीनुं हे तेथी वे घमी-मांथी चार पळ न्यून करवा, तेटखुं विष्टिनुं गळुं जाणबुं. ए ज प्रमाणे विष्टिनुं हृदय दश धमीनुं हे तथी तेमांथी वीश पळ न्यून करवा, तथा नाजि चार धमीनी हे माटे चार घमीमांथी आठ पळ न्यून करवा, तथा कि उ घमीनी है माटे तेमांथी बार पळ न्यून करवा, अने पुछ त्रेण घमीनुं हे तेथी तेमांथी ह पळ न्यून करवा. आ मान त्रीश घर्मीमांथी एक घर्मी न्यून एटले २ए घर्मीनी विधि होय त्यारे समजबं, पण ज्यारे विधि त्रीश घमीमांथी वे घमी न्यून होय एटले के २० घमीनी होय, त्यारे जपर कहेलुं हानिनुं प्रमाण वमणुं करीने न्यून करवुं. जेमके विष्टि एक घमी उंठी हती त्यारे पांच धरीना प्रमाणवाळा मुखमांथी दश पळ न्यन कर्या हता. तेथी ज्यारे र्वि वे घर्मी खोड़ी हे त्यारे तेथी बमणा एटले वीश पळ न्यून करवा, छाने ज्यारे वि. ब्रीश धनी-मांश्री त्रए पनी न्यून होय एटखे के सत्यावीश घनी होय त्यारे ते ज हानिनुं प्रमाए त्रए गणुं श्रोबं करवं. जैम एक घनी न्यून हती त्यारे विष्टिना मुखमां दश पळ न्यून कर्या हता तेम त्रण घमी न्यून होवाथी त्रीरा पळ न्यून करवा जोरूए. एज प्रमाणे विष्टि त्रीरा धर्मी छपर एक, बे के त्रण घर्मी विगेरेनी वृद्धि होय त्यारे पण ते ज प्रमाणे विष्टिना ते ते श्रंगनी घमीश्री बमणा करेला पळो ते ते श्रंगनी घमीमां वधारवा. जेमके विष्टि एक ब्रीश घमी होय तो तेना मुखनी पांच घमी हो, तेथी तेमां दश पळ वधारे समजवा विगेरे.

विष्टिनुं मुख एकांतपणे तजवा योग्य हे, माटे यात्रादिक समयमां ते विष्टि जे प्रकारे सन्मुख श्राय हे ते कहे हे.—

जड़ेन्द्रा १४ प्रा त श्व ९ तिथ्य १५ विध ४ दशे १० शा ११ मिते तिथी। दिग् त यामा त एकयोर्नेष्टा संमुखी पृष्टतः शुना ॥ १४ ॥

अर्थ — चतुर्दशीने दिवसे पहेंदे पहोरे विष्टि पूर्व दिशामां होय हो, अष्टमीना बीजा प्रहरे अग्नि खूणामां होय हो, सप्तमीना त्रीजे प्रहरे दिश्णमां होय हो, पूर्णिमाना चोषा प्रहरे नैकेल खूणामां होय हो, चतुर्थीना पांचमे प्रहरे पश्चिममां होय हो, दशमीने होचे प्रहरे वाय न्यमां होय हो, एकादशीने सातमे प्रहरे छत्तर दिशामां होय हो अने तृती-याना आहमा प्रहरे ईशान खूणामां होय हो. आ विष्टि प्रयाणादिक कार्यमां सन्मुख होय तो ते अशुज जाणवी, अने पाहळ होय तो ते शुज जाणवी. आ विष्टिनी दिशा विगेरे जोवानी बीजी रीत—

"घुजादृषी सिते पक्ते गृतिजूढ सितेतरे। व्यञ्जनैस्तिथयो क्षेयाः स्वरैश्च प्रहरा दिशः॥"

शुक्लपक्षमां घु, जा, दृ अने एी तथा कृष्णपक्षमां गृ, वि, जू अने ढ ए अक्रोमां व्यंजने करीने तिथि जाण्वी अने स्वरे करीने प्रहर तथा दिशा जाण्वी. एटेबे के घु ए चोओ व्यंजन अने पांचमो स्वर वे तेथी चोअने दिवसे पांचमी दिशा (पश्चिम)मां पांचमा प्रहरे प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख आवे वे, ए ज प्रमाणे जा ए आव पो व्यंजन अने बीजो स्वर होवाथी आठमने दिवसे बीजी दिशामां एटेबे अग्नि ख्लामां बीजे प्रहरे प्रयाण करनारने जजा सन्मुख याय वे. दृ एमां ट ए अग्यारमो व्यंजन अने ऋ ए सातमो स्वर होवाथी अग्यारशने दिवसे सातमे प्रहरे सातमी दिशा (वत्तर)मां प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख आवे वे. एी एमां ए ए पंदरमो व्यंजन अने ई ए चोथो स्वर होवाथी पूर्णिमाने दिवसे चोथा प्रहरे चोथी दिशा (नैर्ऋत्य)मां प्रयाण करनारने विष्टि सन्मुख होय वे. ए ज प्रमाणे गृ, वि, जू अने ढ ए अक्रोमां पण जाणी देवुं.

॥ इति तिथिदारम् ॥ १ ॥

॥ श्रथ वारद्वारम् ॥ २ ॥

हवे बीजं वारघार कहे हे, तेमां वारनो आरंज क्यारे थाय हे ? ते कहे हे.— वारादिरुदयाङ्गध्वं पक्षेमेंषादिगे रवो । तुलादिगे त्वधिस्त्रंशत्तदयुमानान्तराधिजेः ॥ १५ ॥

श्रर्थ—मेपादिक उ राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे सूर्योदयनी पठी ते दिव ना दिनमान श्रने त्रीशनी वहाना श्रांतराना श्रर्थ पठवके वारनी श्रारंत्र थाय हे, ध्रने तुला-दिक ह राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे सूर्योदयनी पहेलां तेटला पठे वारनी प्रवृत्ति थाय हे. जेमके गुर्जर देशमां कर्क संक्रांतिए छत्कृष्ट दिनमान दमी ३३ पठ ४० मुं होय हो, तेमांथी त्रीश बाद करतां बाकी घमी ३ पठ ४० रह्या. तेनो श्रर्थ जाग करतां घमी १ पठ ५६ रह्या. एटले के कुल ११४ पठ रह्या, माटे ते दिवसे सूर्योदय पठी ११४ पठे वारनो श्रारंज जाएवो. ते ज प्रमाणे मकर संक्रांतिमां जघन्य दिनमान घमी १६ पठ १६ मुं होय हे. तेने त्रीशमांथी बाद करतां वाकी घमी ३ पठ ४० रह्या. तेने प्रथमनी जेम श्रर्ध करतां ११४ पठ रह्या, माटे ते दिवसे सूर्योदय पहेलां ११४ पठे वारनी प्रवृत्ति जाएवी. ए ज प्रमाणे मध्यम दिनमान होय त्यारे पए श्रा रीते ज जाएवं. श्रा वारना श्रारंजनो समय कहेवानुं प्रयोजन ए हे जे श्रागठ जे काळहोरा तथा श्रर्थ पहर विगेरे कहेवामां श्रावशे तेनी गएतरी वारना श्रारंजधी करवानी हे. दिनमान साववानो स्थूठ छपाय—सामान्य छपाय श्रा प्रमाणे कह्यो हे.—

"रसि २६ नाड्योऽर्कपढा १२ मृगे स्युः, सचापकुंनेऽष्टकृतैः पर्तेस्ताः २६-४० । श्रक्षी च मीनेऽष्टयमाः सशका २०-१४, मेषे तुद्धायामि त्रिंशदेव २०॥ कन्यावृषे जूशिखिनो २१ऽङ्कवेदैः ४६, सार्कास्त्रिरामा मिश्रुने च सिंहे २२-१२। कर्के त्रिरामा वसुवेदयुक्ता २२-४०, एषा मितिः संक्रमवासराणाम् ॥"

"मकर संक्रांतिने पहेंसे दिवसे घमी १६ पळ १२ नुं दिनमान होय हे, धन श्रमे कुंज संक्रांतिए घमी १६ पळ ४० नुं दिनमान होय हो, वृश्चिक श्रमे मीन संक्रांतिए घमी १० पळ १४ नुं दिनमान होय हो, मेष श्रमे तुला संक्रांतिए ३० घमीनुं दिनमान होय हो, कन्या श्रमे वृष संक्रांतिए घमी ३१ पळ ४६ नुं दिनमान होय हो, मिश्रुन श्रमे सिंह संक्रांतिए घमी३३ पळ १२ नुं दिनमान होय हो, तथा कर्क संक्रांतिना पहेले दिवसे घमी ३३ पळ ४० दे दिनमान होय हो, श्रमाणे ते ते संक्रांतिने पहेले दिवसे दिनमान होय हो, श्रमे त्यारपही—

"एकार्क १-१२ पश्चित्रशा १-५२ स्त्रिदन्ता ३-३१-स्त्रिदन्त ३-३२ पश्चित्रशाः १-५२ कुसूर्याः १-१२। मृगादिषद्वेऽहनि वृद्धिरेवं, कर्कादिषद्वेऽपचितिः पलाद्या॥"

"मकर किंतिमां दरेक दिवसे पळ १ विपळ १२ एटखुं दिनमान वृद्धि पामे हे, कुंज संक्रांतिमां पळ २ विपळ ५२ दरेक दिवसे वृद्धि पामे हे, मीन संक्रांतिमां पळ २ विपळ २२ वृद्धि पामे हे, मेष संक्रांतिमां पळ २ विपळ २२, वृष संक्रांतिमां पळ २ विपळ ५२ तथा मिथुन संक्र तिमां पळ १ विपळ १२ एटखुं दिनमान दरेक दिवसे वृद्धि पामे हे. ए ज रीते कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक अने घन संक्रांतिमां अनुक्रमे छपर प्रमाणे तेटखुं तेटखुं दिनमान हानिने पामे हे. दिनमान जेटखुं वृद्धि पामतुं होय तेटली राजिना माननी हानि जाण्यी अने दिनमाननी जेटली हानि होय तेटली राजिना माननी हानि जाणी वृद्धि हानि करवाथी कुल पळनी संख्या आ प्रमाणे आवे हे—

"बहुइ उसु मयराइसु पदाण उत्तीस २६ उदिसे ए६ उहिस्रसयं १०६। कमज्रकमणं हायइ तहेव ककाइरासीसु॥"

' "मकर विगेरे छ संक्रांतिमां २६, ०६ अने १०६ पळ क्रमे तथा छत्क्रमे चुक्कि पामे हो. एटखे के मकर संक्रांतिमां २६, कुंजमां ०६, मीनमां १०६, मेषमां १०६, चृषमां ०६ अने मिछुन संक्रांतिमां २६ पळनी दिनमानमां चुक्कि खाय हो. ते ज प्रमाणे कर्क विगेरे संक्रांतिमां २६, ७६ अने १०६ पळ क्रमे तथा छत्क्रमे हानि पामे हो.

दिनमाननुं यंत्र—

संक्रांतिना प्रथम दिवसनुं			मासावधि प्रतिदिन मान			। छाखा मासमां वृद्धि हानिना
	मान			पळ	विपळ	कुख पळ.
	घर्मी	पळ				
मकर	१६	११	वृद्धि	₹.	१ घ	३६
कुंप	१६	ងច	वृद्धि	হ	५१	τε
मीन	२०	₹8	वृद्धि	₹	३१	१०६
मेष	३०	8	वृद्धि	₹	३.घ	१ ०६
वृ ष	₹ .	ម្ជន្	वृद्धि	হ	५२	υ६
मिश्रुन	३३	१ २	वृद्धि	₹	१घ	३६
मिश्रुन कर्क	३३	អូច	हानि	?	१घ	३६
सिंह	३३	१६	हानि	হ	५ २	ចឱ្
कन्या	₹१	ម្ច	हानि	३	३१	१ ७६
तुखा	₹•	Ð	हानि	₹	३१	१ ०६
वृ श्चिक	হচ	₹8	हानि	হ	५१	υ€
धन	घ्६	ងច	हानि	3	१ ६	₹६

दिनशक्ति ग्रंथमा आ प्रमाणे विशेष कह्यो हे --

"विश्चित्रज्ञंजाइतिए निसि मुहि विस धणुहकक्कतुक्षिमञ्जे। मिगमिहुणकन्नसीहे निसि श्चंते संकमइ वारो॥"

"वृश्चिक, कुंज, मीन अने मेप आ चार संक्रातिमां रात्रिना प्रारंज बखते वारनो प्रारंज श्राय हे, वृषज, धन, कर्क अने तुला संक्रांतिमां अर्ध रात्रिए वारनो पारंज श्राय हे, मकर, मिश्चन, कन्या अने सिंह संक्रातिमां रात्रिना अंतमां वारनो प्रारंज श्राय हे." "राम ३० रस ६० नन्द ए० वाणा ए० वेदा ४० द्यौ ०० सप्त ४० दशहताः कार्याः। मन्दादीनां दिनतः क्रमेण जोगस्य नाड्यः स्यः॥"

"शनिवारनी जोगघनी दिवसना प्रारंज्ञथी ३० घमी सुधी हे, त्यारपहीनी ६० घमी रिवनी जोगनामी (घमी) हे, त्यारपहीनी ए० घमी सोमनी, पही ए० घमी मंगळनी, पहीनी ४० घमी सुभनी, पहीनी ४० घमी गुरुनी छाने त्यारपहीनी ९० घमी शुक्रः गरनी जोगनामी हे. (शनिवारनी सवारथी आरंजीने आवता शनिवारनी सवारे आ सर्व घमी पूर्ण याय हे.) माटे ज शनिवार सुतो होय तो तेने शुज कह्यो हे, केमके शनिवार दिवसनी श्रीश घमी पूरी थये रात्रे रिवनी जोगघमी होवाथी शनि सुते हो कहेवाय हे, माटे: ते शुज हे.

हवे वारनां नानो तथा तेमनुं फल कहे हे— रविचन्झमंगलबुधा गुरुशुक्रशनैश्चराश्च दिनवाराः । रविकुजशनयः क्रुराः सौम्याश्चान्ये पदोनफलाः ॥ १६ ॥

अर्थ-रिव, सोम, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्त अने शिन ए सात वार है. तेमां रिव, मंगल अने शिन ए त्रण वार कूर हे अने बाकीना चार वार सौम्य हे. आ सर्वे वारो है शुजाशुज फळ आपनारा हे. एटले के वीश वसानी अपेकाए पंदर वसा जेटलुं फळ आपे हे. कूर वारमां करेलुं कार्य पंदर वसा अशुज फळ आपे हे, अने सौम: वारमां करेलुं कार्य पंदर वसा शुज फळ आपे हे. कहां हे के—

"रविमन्दारवारेषु यस्मिन् संक्रमते रविः। तस्मिन्मासि जयं विद्यादुर्जिकावृष्टितस्करैः॥"

"रिव, शिन के मंगळवारे जो सूर्यनी संक्रांति यह होय तो ते मासमां घुकाळ, श्रनाकृष्टि तथा चोरादिकनो जय थाय ठे एम जाण्वुं;" परंतु श्रा त्रण वारोनी ऋरता जेटली
दिवसे गण्य ठे तेटली रात्रिए गण्यती नथी. कहुं ठे के—"न वारदोषाः प्रजवन्ति
रात्रों" "राि ए वारना दोष समर्थ थता नथी." वारोने विषे श्रा प्रमाणे कार्यो करवानां
कह्यां ठे.— ज्याजिषेक, नोकरी, विचार, शस्त्र, श्रोषध, विद्या, संग्राम, प्रयाण, सुवर्ण,
तांबु, जन, लंकार, शिह्प (कारीगरी), पुण्यकर्म तथा जत्सवादिक कार्यो रिववारे
करवाथी दिव थाय ठे. रूपुं, गायन, जोजन, खेती तथा वेपार विगेरे कार्यो सोमवारे
करवाथी सिद्ध थाय ठे. सर्व ऋर कर्म, रक्तसाव, सुवर्ण, परवाळा, खाण, धातु, सेना निवेशादिक कर्यो मंगलवारे करवाथी सिद्ध थाय ठे. श्रह्मर शीखवा, कान विधवा, कविता
करवी, करुरत करवी, तर्क करयो, याद विवाद करवो तथा कळाज्यास ए विगेरे कार्यो
बुधवारे रिद्ध थाय ठे. सर्वे शुज मांगलिक कार्य, दीह्मा, विद्या, यात्रा, श्रोपध विगेरे
गुरुवारे सिद्ध थाय ठे. दीह्मने वर्जीने बुध श्रने गुरुमां कहेलां सर्व कार्यो शुक्रवारे सिद्ध
थाय ठे, अने दीह्मा, घरप्रवेश, घरनो श्रारंज विगेरे स्थिर कार्य तथा ऋर कार्य शनिवारे
करवाथी सिद्ध थाय ठे. एम कहुं ठे, सामान्य रीते कहीए तो—

"सर्वार्थसाधका वारा गुरुशुक्रबुधेन्दवः। प्रोक्तमेव कृतं कर्म जोमार्काक्षिय सिध्यति॥"

"गुरु, गुक्र, बुध श्रने सोम ए वारो सर्व कार्यना साधक हे, श्रने मंगळ, रवि तथा शनिवारे ने कार्य करवानुं कहां होय ते ज करवाथी सिद्ध थाय हे." श्रा दैवक्षवञ्चन्रमां कहां हे. तथा—

"खाक्ताकुसुंजमंजिष्ठारागे काञ्चनजूषले । शस्तौ जोमरवी खोहोपखत्रपुविधौ शनिः॥" "क्षाल, कसुंबो ख्रने मजिठ ए रंगने विषे तथा सुवर्णना जूपणने विषे मंगळ तथा रिव सारा है, ख्रने खोढ़ं, पत्थर तथा सीसाने विषे शनिवार सारो है." तथा—

"इन्यादिदानग्रहणे निधाने, वाणिज्यसेवागुरुराजयोगे । कलाकृषिस्त्रीशुजकर्मवित्तन्यासीषधेष्वारशनी न शस्ती ॥"

"इन्यादिक क्षेवा देवामां, निधानमां, वेपारमां, नोकरीमां, गुरु अने राजना दर्श-नमां, कळा शीखवामां, खेती करवामां, स्त्रीना समागममां, शुच कार्यमां, इन्यनी यापण मूकवामां अने श्रीपध खावामां आटला कार्यमां मंगल तथा शनि सारा नश्री." एम यतिवञ्जनमां कह्यं हे.

श्रा विषे विशेषमां खक्ष श्रा प्रमाणे कहे हे.—
"छपचयकरस्य कुयाद्वहस्य वारे स्ववारविहितं यत् ।
श्रपचयकरब्रहदिने कृतमिप सिर्द्धिन याति पुनः॥"

"पोतपोताना वारमां करवानां जें कार्य कह्यां हे ते छपचय (वृद्धि) कर्रनारा प्रह्ना वारने विषे करवामां आवे हे, पण अपचय (हानि) करनारा प्रह्ना वारने विषे करवामां आवतां नथी, कारण के ते वारमां करेखें कार्य कोइ पण प्रकारे सिद्ध अर्तु स्थी. आगळ कहेवामां आवता गोचरादिक विधिए करीने ज्यारे जे प्रह जेने अनुकूळ हं ते प्रह तेनो ते वखते छपचय करनार कहेवाय हे अने प्रतिकूळ होय तो ते अपचय करना कहेवाय हे

हवे वारोने आश्रीने काळहोरा कहे हे.— होराः पुनर्रकसित्रज्ञचन्द्रशनिजीवज्रमिपुत्राणाम् । सार्थघटीद्रयमानाः खवारतस्तास्तु पूर्णफलाः ॥ १९ ॥

श्रर्थ—श्रदी घमीनी एक होरा होय है. तेमां जे दिवसे जे वार होय तेनी पहेली होरा जाएवी. पढी पोताना वारशी जे उठी वार होय ते वारनी बीजी होरा, तेनाशी जे उठी वार होय तेनी त्रीजी होरा जाएवी. कहां हे के—"श्रकीसतक्षवन हानिजीव-जूमिपुत्राएां" "रिवशी उठो शुक्र हे, तेथी उठो बुध हे, तेथी उठो सोम हे, तेथी उठो शिव, तेथी उठो गुरु श्रमे तेथी उठो मंगळवार हे." ए प्रमाणे एक शहोरात्रिमां चोवीश होरा श्रावे हे. जेमके रिववारथी उठो शुक्र हे, तेनाथी उठो बुध हो श्रने तेनाथी उठो सोम हे, ए प्रमाणे गणवुं. एटले के रिववार पहेली होरा रिवनी, बीजी शुक्रनी, त्रीजी बुधनी, चोशी चंद्रनी, पांचमी शिवनी, उठी गुरुनी, सातमी मंगळनी श्रने श्रावे हो सातमी संगळनी श्रावे होता होरा श्रावे हे. तेने पण उठा उठा वारनी होरा थाय. ते ज प्रमाणे सोमवार पहेली चंद्र होरा श्रावे हे. तेने पण उठा उठा वारनी होरा ए प्रमाणे चोवीश सुधी गणवुं. मंगळवारे पहेली होरा मंग-

ळनी आवे हे. ए प्रमाणे साते वारनी होरा जाणवी. आगळ अधीं राशिने होरा नामधी कहेवामां आवशे, माटे आनुं नाम काळहोरा कहेवाय हे. आ काळहोरानां नाम चोघ-भीयां प्रमाणे जाणवां एम नारचंदमां लख्युं हे. आहीं घंटालाला न्याये करीने वार शब्दनो बन्नेमां संबंध होवाशी पोताना वारने दिवसे ते ज वारनी होराने समये जो कार्य करवामां आवे तो कार्य करनारने पूर्ण फळ एटले के वारनुं पोतानुं पंदर वसा फळ अने पांच वसा होरानुं मळी वीश वसा शुज के आशुज फळ मळे हे. ते विषे लझ कह हो के— "वारफलं होरायां" "वारोनुं फळ होरामां पूर्ण मळे हे." आ होरा कहेवानुं कारण ए हे के—

> "यस्य प्रइस्य वारे यात्किञ्चित्कर्म प्रकीर्तितम् । तत्तस्य काखहोरायां पूर्णं स्यात्तूर्णमेव हि ॥"

"जे ग्रहना वारने विषे जे कार्य करवानुं कह्युं होय ते कार्य ते वारनी काळहोराने प्रखते करवाष्ट्री तेनी शीध सिद्धि थाय हो." एम यतिवक्षज्ञमां कह्युं हो. वळी—

"होराफखवारफखे निन्दो दे श्रिप न जातु गृह्णीत । एकस्मिन् शुजफखदे तयोश्च कार्य शुजं कुर्यात् ॥"

"होरानुं फळ तथा वारनुं फळ ए बन्ने जो निंद्य (श्रशुज) होय तो ते कदापि प्रहण करवां हीं एटखे ते समये कांइ पण कार्य करतुं नहीं, श्रने ते बन्नेमांथी जो एक शुज फळ प्रापनार होय तो ते समये शुज कार्य करवा खायक है." एम व्यवहार प्रकाशमां कहुं है.
हवे वारने विषे कुवेळा कहे है.—

याज्योऽभैयामो वेदा ४ डि ९ हि १ पञ्चा ४ ष्ट ० त्रि ३ षिमतः ६। व्यक्ति कासवेसार्थयामाङ्कारसैकपञ्चमी ॥ १०॥

श्रर्थ—रिववारथी आरंजीने अनुक्रमे चोथो, सातमो, बीजो, पांचमो, आठमो, त्रीजो अने उठो अर्ध प्रहर (चोधनीयुं) शुज कार्यमां तजवा खायक हे. एटखे के रिव-बारे चोथुं चोधनीयुं, सोमवारे सातमुं चोधनीयुं, मंगळवारे बीजुं, बुधवारे पांचमुं, गुरु-वारे आठनुं, शुक्रवारे त्रीजुं अने शनिवारे उद्घं चोधनीयुं शुज कार्यमां वर्जवा खायक हे. आ विषे दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे कह्यं हे के—

"स्रोत १६ म ए दसण ३२ छुग २ इग १ चड ४ चडसडी ६४ अञ्चपहरमज्जपला। जनाइसु अञ्चलमा पुबाई उठ उठ दिसिं॥ १॥"

जे अर्ध प्रहर वारने आश्रीने त्याग करवाना कहा। हे, तेमां ते अर्ध प्रहरनी अनुक्रमे संळ, आह, बत्रीश, बे, एक, चार अने चोसह मध्यम पळो पूर्वादिक हाडी हिशाए यात्रादिक कार्यमां अत्यंत तजवा द्वायक हे. अर्थात् रविवारे चोथा अर्ध प्रहारनी म्थ्यनी सोळ पळ पूर्व दिशामां अत्यंत त्याग करवा द्वायक हे. एटले ते वलते पूर्व दिशागं यात्रादिक करवानो निषेध हे. ए रीते सोमवारे सातमा अर्ध प्रहरनी मध्यनी

काठ पळ पूर्वथी उन्नी दिशाए एटखे वायव्य खूणामां तजता खायक हे, मंगळवारे बीजा अर्थ प्रहरनी बत्रीश पळ वायव्यथी उन्नी दिशाए एटखे दिशाए एटखे ईशान खूणामां तजवा खायक हे. बुधवारे पांचमा अर्थ प्रहरनी वे मध्य पळ तेथी उन्नी दिशाए एटखे ईशान खूणामां तजवा खायक हे, गुरुवारे आठमा अर्थ प्रहरनी एक पळ पश्चिम दिशामां तजवा खायक हे, शुक्रवारे त्रीजा अर्थ प्रहरनी चार मध्य पळ अग्नि खूणामां तथा शनिवारे इन्ना अर्थ प्रहरनी चोसन मध्य पळ उत्तर दिशामां तजवा खायक हे. (हवे श्लोकना उत्तरार्थवके काळवेळा कहे हे—) उपर जे वर्जवा खायक अर्ध प्रहरो कह्या हे, तेमने प्रमुक्तमे मांनीने हेने एकनो खखवो, ते आ प्रमाणे.—४-९-२-ए-ए-३-६-१. पही अर्थ प्रहरना आंकनाथी जे पांचमो अंक आवे ते अर्थ प्रहरने काळवेळा कहे हे. जेमके रिववारे चोयो अर्थ प्रहर हे तेनाथी पांचमो अंक आन हे, तेथी रिववारे आठमा अर्थ प्रहरने काळवेळा जाणवी, सोमवारे सातमो अर्थ प्रहर हे तेनाथी पांचमो अंक त्राह हे, तेथी राववारे चायो, शुक्रवारे सहिमा अंक गणतां मंगळवारे हिन्ते, बुधवारे पहेखो, गुरुवारे चोयो, शुक्रवारे सातमो अने शनिवारे बीजो अर्थ प्रहर काळवेळा कहेवाय हे.

काळवेळाने ज पाठांतरवमे स्पष्ट कहे हे.—

"सूर्यादौ कालवेलाष्ट ए त्रि ३ षट् ६ ह्या १ ब्थ्य ध श्व ७ इग्मिताः ३ ॥"

"रिववारथी आरंजीने अनुक्रमे आठमो, त्रीजो, उठो, पहेलो, चोथो, सार्तमो अने बीजो अर्ध प्रहर काळवेळा जाणवी." आ काळवेळा उपरथी अर्ध प्रहर काळवेला एवी रीत है के—काळवेळाना अंकमां चार नाखी आठे जाग लेवो, जे अंक शेष रहे ते अर्ध प्रहर जाणवो. जेमके रिववारनो आठमो अर्ध प्रहर काळवेळा हे, माटे श्राहमां चार उमेरी आठे जाग लेतां शेष चार रहे हे, तेथी रिववार चोशो अर्ध प्रहर वर्ष्य घयो. ए रीते सोमवारे त्रीजो अर्ध प्रहर काळवेळा हे. तेमां चार उमेरवाथी सात थया आहे जाग चालतो नथी, तेथी वाकी सात ज रह्या, माटे सोमवारे सातमो अर्ध प्रहर थयो. ए रीते सर्व वारमां जाणवं. १०.

हवे कंटक तथा जपकु दिक कहे हे.

कंटकोऽपि दिनाष्टांशे खवारान्मंगछावधौ। बृहस्पत्यवधौ चोपकुछिकस्त्यज्यते परैः॥ १ए॥

श्चर्य—जे दिवसे जे वार होय ते वारशी मंगळवार जेटलामो होय तेटलामो दिनाष्टांश कंटक कहेवाय हे, श्चने पोताना वारशी गुरुवार जेटलामो होय तेटलामो दिन ष्टांश छप-

१ दिवसनो आठमो भाग, अर्थात् चोघडीयुं.

ु लिक कहेवाय है। आ दक्षे दिनाष्टांस सूज कार्यमां अन्य विकासीए वर्जित कह्या है। चदाहरए-रिववारची मंगळवार त्रीजो ठे, माटे रिववारे त्रीजो दिनाष्टांश कंटक कहेवाय बे. सोमवारची मंगळवार बीजो बे. माटे सोमवारे बीजो दिनाष्टांश कंटक कहेवाय बे. मंगळ-वारश्री मंगळवार पहेलो ज हे, माटे मंगळवारे पहेलो दिनाष्टांश कंटक जाएवो, बुधवारथी मंगळवार सातमो होवाथी बुधवारे सातमो दिनाष्टांश कंटक नामा हे. ए रीते गणवाथी गुरु, शुक्र अने शनिवारे अनुक्रमे उठो, पांचमो अने चोथो दिनाष्टांश कंटक नामा कहे-वाय है. जपकुलिक आ प्रमाणे हे-रिववारथी गुरुवार पांचमो है, माटेरिववारे पांचमो दिनाष्टांश जपकुलिक कहेवाय हे. ए रीते गणवाथी सोमवार, मंगळवार, बुधवार, गुरु-बार, शुक्रवार अने शनिवारे अनुक्रमे चोथो, त्रीजो, वीजो, पहेलो, सातमो अने छठो दिनाष्टांश जपकुलिक नामा कहेवाय हे. अन्य विदानोए आवन्ने दिनाष्टांश शुन्न कार्यमां वर्ज्या हे एम कहेवाथी ग्रंथकारे पण तेनो (वर्जवानो) निषेध कर्यो नथी, तेथी ग्रंथकारना मतमां पण आ योग वर्जित समजवा ए प्रमाणे बीजे ठेकाले पण अन्यनो मत बताववाधी ग्रंथकारनी पण संमति जाणवी. दिनाष्टांश एटले दिवसनो आठमो जाग एवुं कह्यं हे, माटे ते अष्टमांश दिनमानने आश्रीने चार घनीथी जी अथवा अधिक यह शके हे. एटले के जधन्य दिनमान होय त्यारे धर्मी ३ पळ १६ विपळ ३०, आटलो अष्टमांश थाय हे, अने जत्कृष्ट दिनमान होय त्यारे घमी ४ पळ १३ विपळ ३० आटखो आष्ट-मांश थाय । आ रीते मध्यम दिनमानमां पण अष्टमांश काढवा. १ए.

हवे कुलिक कहे हे.-

कुलिको द्विष्नशन्यन्तिमिते त्याज्यः स्ववारतः । मुहूर्नेऽह्वि निशि व्येके जागः पञ्चदशस्तु सः ॥ २०॥

अर्थ-पोताना वारथी शनिवार जेटलामों होय तेने बमणा करवाथी जे संख्या आवे तेटलामुं मुहूर्त ते दिवसे कुलिक कहेवाय हे अने रात्रिए ते ज संख्यामांथी एक उहा करवो एटले तेटलामुं मुहूर्त रात्रिए कुलिक कहेवाय हे. जेमके रिववारथी शनिवार सातमों हे. तेने वमणा करवाथी चौदमुं मुहूर्त दिवसे कुलिक थयो, अने रात्रिए तेरमुं मुहूर्त कुलिक थयो, तथा सोमवारथी शनिवार हो हो, माटे हने वमणा करवाथी वार थया, तथी सोमवारे दिवसे वारमुं मुहूर्त कुलिक अने रात्रिए अग्यारमुं मुहूर्त कुलिक कहे- वाय हे. ए रीते बीजा वारोमां पण जाणवुं. अहीं मुहूर्त शब्द आप्यो हे, अने ते मुहूर्त सामान्य रीते वे घमीनुं कहेवाय हे, तोपण आ हेकाणे (कुलिकमां) दिनमान अने रात्रिमानने आश्रीने पंदरमो जाग जाणवो. एटले के जघन्य दिनमान होय त्यारे घमी १ पळ ४४ विपळ ४० अने उत्कृष्ट दिनमान होय त्यारे घमी २ पळ १० विपळ १२ एटलो

काळ पंदरमो श्रंश एटखे मुहूर्त्त कहेवाय हे. एवी ज रीते रात्रिमानने श्राश्रीने पण जधन्य श्चने जत्कृष्ट मानमां पंदरमी श्रंश काढवो. तथा मध्यम मान होय त्यारे पण्ए ज रीते पंदरमो श्रंश काढवो. कुक्षिकमां कांइ पण शुज कार्य करवामां श्रावतं नधी. ते विषे व्यवहार प्रकाशमां कह्यं हे के-"'हिन्नं जिल्लं नष्टं प्रहजुष्टं पन्नगादिजिर्देष्टम् । नाशमुप-याति नियतं जातं कर्मान्यद्पि तत्र ॥ १ ॥" "कुलिकमां हेदायेली, जेदायेली, नासी गयेली, प्रहे (जूत प्रेतादिके) सेवेखी अने सर्पादिके मसेखी चीओ (मनुष्यादिक प्राणी तथा वस्तु) श्रवश्य नाश पामे छे. तथा तेमां बीजुं पण करेलुं कार्य नाश पामे छे." तथा-''सोमे ब्राह्मः कुजे पैत्रः सुराचार्ये च राह्मः। युक्ते ब्राह्मः शनौ रौद्यो महूर्त्ताः कुलिको-पमाः ॥ १ ॥" "सोमवारे बाह्म मुहूर्त्त, मंगळवारे पैत्र मुहूर्त्त, गुरुवारे राह्यस मुहूर्त्त, गुरू-वारे ब्राह्म मुहूर्त्त अने शनिवारे रौप मुहूर्त्त, आटलां मुहूर्त्तो कुलिक जेवां हे." अहीं ब्राह्म एटले ब्रह्मा संबंधी, पैत्र एटले पितृ संबंधी विगेरे ऋर्थ जाएवो. ब्राह्म विगेरे मुहू-र्त्तोनो विज्ञाग छागदा हौरना छिधिकारमां कहेवादो. छा एक मुहर्त्तनो कुखिक दिवसे एक तथा रात्रिए एक मळी वे वार आवे हे, पण अर्ध प्रहरादिक वेळा तो सूर्यने आ-श्रीने श्राय हे, माटे दिवसे ज आवे हे, रात्रिए आवता नथी. आ कुलिक विषे नारचंदमां एम कहां हे के-पोताना वारथी शनिवार जेटलामो आवे तेटलामो दिनाष्टांश कुक्षिक कहेवाय है, तेथी रविवारादिकमां श्रानुक्रमे सातमो, हिंचो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो अने पहेलो दिनाष्टांश कुलिक कहेवाय हे. एम कहां हे. २०.

दिवसे दिनाष्टांश ज कुलिक हे एवं नारचंडतं वचन प्रमाण करवापूर्वक वारोने विषे सुवेळा बतावे हे ---

जानोर्जू १ नयन १ र्तवः ६ सितरुचेः शीतांशु १ पञ्चा ५ एमा ठ जीमस्याब्धि ४ नगा ७ एमाः ० शशितन्जस्य त्रि ३ तर्का ६ एमाः ०। जीवस्य द्वि १ शरा ५ ज्यो ७ भृगुजुवश्चन्द्वा १ ब्धि ४ पष्टा ६ एमाः शौरेस्त्री ३ षु ५ नगा ७ एमा ० श्च दिवसेष्वेतेऽएमांशाः शुन्ताः ॥११॥ अर्थ—रिववारे दिवसे पदेखो, बीजो श्रने उठो श्रष्टमांश (चोघनीयुं) शुन्त वे, श्चर्यात् त्रीजो, चोथो, पांचमो, सातमो श्रने श्राठमो श्रष्टमांश श्चर्य पदराविके करीने दृषित वे. सोमवारे दिवसे पदेखो, पांचमो श्रने श्राठमो श्रष्टमांश शुन्न वे, मंगळवारे चोथो, सातमो श्रने श्राठमो, बुधवारे त्रीजो, उठो श्रने श्राठमो, गुरुवारे बीजो, पांचमो, स्रातमो श्रने श्राठमो श्रष्टमांश शुन्न वे. श्रा श्रष्टमांशो दिवसे ज शुन्न वे. रातिष तेमनी गणतरी करी नथी. श्रहीं पण पूर्वनी जेम श्रष्टमांशनो समय जार घमीथी न्यूनाधिक-दाळो जाणवो. ११.

हवे वारने विषे ज्ञायालग्न कहे जे.--

सिक्ष्माया क्रमादकी दिष्ठ सिक्षिप्रदा पदैः।

रुड़ ११ सार्धाष्ट ए॥ नन्दा ए ष्ट ए सप्तजि ७ श्चन्ड्वह्योः ॥ ११ ॥

अर्थ-रविवारयी आरंजीने अनुक्रमे अगीयार, सामा आठ, नव, आठ, धात तथा बेझा वे वारे चंजनी जेम एटले सामा आठ सामा आठ पगलांए करीने सिद्धि आप-नारी सिष्ठ ज्ञाया कहेवाय हे. अर्थात रविवारे अग्यार पगलां, सोमवारे सामा आह पगतां, मंगळवारे नव, बुधवारे खाठ, गुरुवारे सात छाने शुक्र तथा शनिवारे सामा खाठ सामा आठ पगलांए करीने सिद्ध बाया थाय हे. जेमके रविवारे सूर्य सन्मुख उन्ना रही पोताना शरीरनी ज्ञाया अग्यार पगखां जेटखी होय ते वलते सिद्ध ज्ञाया कहेवाय जे. सोम-वारे सामा आठ पगढां जेटली छाया होय ते वखते सिद्ध छाया कहेवाय हे. ए रीते सर्व वारोमां जाणवुं. अवस्य कार्यनी सिक्षि आपनार होवाथी आतुं नाम सिक्ष बाया कदेवाय है. नरपति जयचर्यामां कहुं हे के-"नक्त्राणि तिथिर्वारास्ताराश्चन्यवर्धं महाः । इष्टोन्यपि शुर्ज जावं जजनते सिज्ज्ञायया ॥ १ ॥" "नक्त्र, तिथि, वार ताराबळ, चं बळ अने प्रहो जो कदाच दूषण्याळां होय तोपण सिम्न ग्रायाएं करीने तें शुज जावने जजे है. (शुज फळ छावे हे.)." छा सिद्ध हायानी समय त्रीश अक्र बोलीए तेटलो हे, एम वृद्ध परंपरा हे. एटले के ज्यारे इष्ट हायानां पगलांनो समय पंदर वर्णना खन्चार काळ जेटलो न्यून होय त्यारे कार्य करवानो आरंज करवो, श्चने इष्ट ग्रायाना समय उपरांत पंदर वर्णना उच्चार जेटलो समय जाय त्यांसुधीमां ते कार्थ पूरुं करतुं. आ प्रमाणे करवाथी सिद्ध द्वाया साधेदी कहेवाय हे, परंतु घणा काळे समाप्त थइ शके एवा कार्यमां तो सिद्ध ग्रायानी आगळ पानळना त्रीश वर्णोचार जेटला समर मां तेनो आरंज करी देवो. पठी कार्यनी समाप्ति बखते कांश् पण मुहूर्त्तनी जरुर नथी. आ सिष्ट ढाया साधवा माटे पुरुषनां पगदांनुं प्रमाण जाण्डुं, परंतु सात आंगळनो शंकु करीने जो सिम्ब ग्राया काढवी होय, तो छपर कहेलां पमलां बदल तेटलां श्रांगळवरे सिष्ठ ठाया काढवी, श्रने जो बार श्रांगळना शंकुवरे सिष्ठ ठाया काढवी होय तो तेनुं प्रमाण आ प्रमाणे जाणवुं--''वीसं सोखस पनरस चडदस तेरस य बार बारे: व । रविमाइसु बारंगुलसंकु बायंगुला सिद्धा ॥ १ ॥" वार छांगळना शंकु-वमे सिद्ध डाया काढवी होय तो रिववारे वीश आंगळे करीने, सोमवारे सोळ आंगळे करीने, मंगळवारे पंदर, बुधवारे चौद, गुरुवारे तेर, गुक्रवारे बार अने शानवारे पण

बार आंगळवरे सिद्ध जाया थाय जे, एटखे के ते ते वारे ते ते आंगळना प्रमाण जेटखी जाया होय ते वखते सिद्ध जाया कहेवाय जे. ११.

॥ इति वारदारम् ॥ २

॥ अथ नक्तत्रद्वारम्॥ ३

हवे त्रीजुं नक्तत्रदार कहे हे. तेमां प्रथम अठ्यावीश नक्त्रोने आश्रीने प्रेकना चार चार पाद आश्री आक्रो कहे हे.—

चुनेनेलाश्विनी १ क्षेया लीलूबेलो जरखय १।

श्वार्क्कए कृत्तिका ३ तु उंवाबीवू च रोहिणी ४॥ १३॥
वेवोकाकी मृगशिर ५ श्वार्का ६ कुघङठा पुनः।
केकोहाहि पुनर्वस्वो ७ हूंहेहोका तु पुष्यजे ७॥ १४॥
कीडूडेनोजिरश्लेषा ए मिममूने मघा १० मता।
मोटाटीटू फल्युनी प्राक् ११ टेटोपापीजिरुत्तरा ११॥ १५॥
हस्तः १३ पुष्पवैर्वेणेश्वित्रा १४ पेपोरिरः पुनः।
करेरोताः स्मृताः खातौ १५ तीतूतेतो विशाखिका १६॥ १६॥
श्वनुराधा १७ ननीनूने स्याज्ज्येष्ठा १० नोययीयुजिः।
श्वनुराधा १७ ननीनूने स्याज्ज्येष्ठा १० नोययीयुजिः।
श्वनुराधा १० ननीनूने स्याज्ज्येष्ठा १० नोययीयुजिः।
श्वनोजाज्युत्तराषाढा ११ जुनेजोखाऽजिजि ११ नमता।
श्वन्यो १३ स्युः खिखूखेखो धनिष्ठायां १४ गगीयुगे॥ २०॥
गोससीस्ः शतनिषक् १५ प्राक् सेसोद्दि जद्भपात् १६।
इशक्योत्तराजदा १० देदोचची तु रेवती १०॥ १ए॥

अर्थ—अहीं अनुक्रमे अठ्यावीश नक्त्रोनां नाम गणाव्यां हे. तेमां सामान्ये करीने साह घरी सुधी एक नक्त्र होय हे, तेथी पंदर पंदर घर्मीनुं एक एक पाद कहेवाय हे. तेमां जेना नामनो प्रथम अक्षर 'चु' होय, तो तेनो जन्म अश्विनी नक्त्रना पहेला पादमां अपेको हे एम जाणवुं. एटले के अश्विनीना पहेला पादमां जन्मेला मनुष्यनुं नाम जेमां पहेलो अक्षर 'चु' आवे एवुं पामवुं जोइए. ते ज नक्त्रना बीका पादमां 'चे', त्रीजामां 'चो', अने चोथा पादमां 'ला' अक्षर पहेलो आवे एवुं नाम कर्वुं जोइए.

अहीं चु अक्रे करीने तेना सजातीय स्वरवाळो चू पण जाएवो. ए ज प्रमाणे चे आहारे करीने चै, अने चो अक्रे करीने चौ पण जाएवो. वळी ला अक्रे करीने ल पण जाएवो. ए प्रमाणे सर्व नक्त्रोना अक्रे होमां पण पोतपोताना सजातीय स्वरवाळा ते ते अक्रे पण जाएवा. एटले के जरणी नक्त्रना पहेला पादमां लि ली, बीजामां लु लू, त्रीजामां ले ले, अने चोथा पादमां लो ली विगेरे. ए प्रमाणे सर्व नक्त्रोमां जाएवं.

नक्त्रोना पादने आश्री श्रक्रो नीचे प्रमाणे जाणवा.—

- १ श्रश्विनी--चु चे चो ला.
- ३ कृत्तिका—आ ई क ए.
- ५ मृगशिर—वे वो का की.
- उ पुनर्वसु--के को हा हि.
- ए अश्लेषा---नी डू ने नो.
- ११ पूर्वाफाहगुनी-मो टा टी टू.
- १३ इस्त--पुषण ठ.
- १५ स्वाति-रु रे रो ता.
- १९ अनुराधी—न नी नू ने.
- १ए मूल- वो जा जी.
- २१ जत्तराष ढा--ने नो जा जी.
- १३ श्रवण—िख खू खे खो.
- ३५ शतिनिष्कु—गो स सी सू.
- २९ उत्तरानाइपद—इ श क थ.

- २ जरणी—सी सू से सो.
- ध रोहिएी-- इं वा वी वू.
- ६ आर्जी—कु घ ङ ह.
- पुष्य—हू हे हो मा.
- १० मधा—म मि मू मे.
- १२ जत्तराफाहगुनी—टे टो पा पी.
- १४ चित्रा--पे पो र रि.
- १६ विशाखा—ती तू ते तो.
- १० ज्येष्ठा—नो य यी यु.
- २० पूर्वाषाढा-- जुधा फ ढ.
- ११ अप्रिजित्—जु जे जो ला.
- 28 धनिष्ठा—ग गी गु गे.
- २६ पूर्वाजाजपद—से सो द दि.
- २० रेवती-दे दो च ची.

अहीं छ परना कोष्टकमां आर्जामां घ ङ अने ठ, हस्तमां प ए ठ, पूर्वापादामां घ फ ढ, तथा उत्तराजाजपदमां रा क थ, आ अक्रो कहेला ठे. ते दरेक अक्रर दशे स्वरवाळा ह एवा. एटले के घ अक्रो करीने घ घा घि घी घु घू घे घे घो घो आ दशे जाएवा. प्रमाणे ङ ठ विगेरे अक्रोमां जाएवं. प ए ठ आ ठेकाणे प अक्रो करीने मूर्यन्य प द श स्वरवाळो लेवो, पए क वर्गनो ख जाएवो नहीं, केमके ते क वर्गनो ख तो अजिि त अने अवएमां कह्यो ठे. ऋ ऋ छ आ अक्रो प्राये करीने नामना आरंज्ञमां आवशा नथी, तोपए ऋषिदत्त, ऋषज विगेरे नामोमां आवे ठे तो तेमां स्वरचक प्रयना आ जिपायथी ऋ ने बदले रि, ऋने बदले री, अने छ ने वदले लि होय एवा धारवा. ब हादत्त, श्रीधर, ध्रव विगेरे नामोमां व, श्री अने धु, ए अक्ररोने पहेला ठे एम जाए वा. कह्यं ठे के—''यदि नाम्नि जवेदणीं संयोगाक्ररलक्षणः। प्राह्मसस्यादिमो

वर्ध इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥ १ ॥" "जो नामनो पहेलो वर्ण संयोग ऋक्रवाळो होय तो तेनो पहेलो श्राहर स्वर सहित ग्रहण करवो. एम ब्रह्मयामलमां कहां हे." वळी श्रानु-स्वार तथा विसर्ग श्रक्रोमां कांइ पण विकार कर्त्ता नश्री, तेथी ते दरेक श्रक्तर साथे खंड शकाय है. (बाळचंड, बिहारीखाख विगेरे नामोमां) ब अक्रने व जेवो जाणवो, केमके ब अने व ए वे अक्रोनी ऐक्यता कहेली है. च वर्गना पांचमा अक्षर अकारने क वर्गना पांचमा श्रक्तर ङकार जेवो गएवो. श्रहीं कोइने शंका श्राय के कोइ पए नामना प्रारं-जमां ङ ज के ए आवता नथी, तेथी ते अकरो शामाटे अहीं लीधा ? तेनो जवाब ए हे जे पूर्वना श्राचार्याए ए श्रक्रो सीधा हे, माटे श्रही पण तेने गणाव्या हे. वसी श्रा श्रक्रो गणाव्यानुं कांइ पण फळ नथी एम धारवुं नहीं, केमके एकाशी पदोवाळा सर्वती-जड़ नामना चक्रमां आ अक्रोवने बहनो वेध थाय हे त्यारे ते ते बहना पादवा-ळाने शरीर पीमा थाय हे एवं तेनुं फळ कहेलुं हे. सर्वतोत्तक चक्रना विवरणमां कहुं वे के-"विध्यन्ते घङका रौदे पण्ठा इस्तगे व्यधेः। फढधाः प्रागपाढायामाहिबुन्ने तु शा-जयाः ॥ १ ॥" "आर्जा नक्त्रमां ध, ङ अने उ ए त्रण अक्ररोनो वेध याय हे, इस्तमां प, ए अने ठनो वेध आय हे, पूर्वाषाढामां फ, ढ अने धनो वेध आय हे, तथा उत्तरा-जाइपदमां रा, त अने घ ए त्रण अहरोनो वेध कहेवाय हे." १३-१५-१५-१६-₹**9**–₹**0**–₹**0**.

हवे श्रजितित् नक्त्रतुं खरूप बतावे हे.—

जत्तराषाढमन्त्यांहिं चतस्त्रश्च श्रुतेर्घटीः ।

वदन्त्यजिजितो जोगं वेधसत्ताद्यवेक्ताणे ॥ ३०॥

श्राटला काळने श्रिजित नक्षत्र कहे है. श्रा नक्ष्त्र वेध, लक्षता, लत्पात विगेरे जोवामां छपयोगी है. श्रहीं छत्तराषाहानो हेहो पाद कहाो है ते सामान्य रीते पंदर ।कीनो होय है, परंतु जो छत्तराषाहा नक्ष्त्रनो जोगकाळ साह धनीश्री न्यूयाधिक होय । ते कुल धनीलना चोश्रा जागने चोश्रो पाद गणवो. "वेध, लक्षा विगेरे जोवामां श्रा श्रिजिन तनो छपयोग है" एम कहेवाश्री श्रन्य स्थळे तेनो छपयोग करवानो नश्री एम श्रश्चीतश्री जाणी लेवुं; तथा वेध, लक्षा विगेरे जोती वखते श्रिजितनी पंदर धनी (श्रश्चा तेश्री न्यूनाधिक धनी (काढी लक्ष्ते वाकी जेटली धनी रहे तेटली धनीनुं छत्तराधाहा गणी तेना पाद कहपवा ए ज रीते श्रवणमांश्री पण श्रिजितनी चार धनी करही बाकी रहेली धनीलं अवण गणी तेना पाद कहपवा ३०.

हवे अञ्चावीश नक्त्रोना स्वामी कहे बे-

नेशास्त्विश्व र यमा १ झबः ३ कमलजू ४ श्चन्डो ५ऽघ रुडो६ऽदिति ७— जीवोठऽहिः ए पितरो रण्जगो १रऽर्यम ११ रवी १३ त्वष्टा रु४ समीर रूप स्तथा। शक्रामी १६ श्रथ मित्र रु७ इन्ड रुठ निर्कृतीरएवारीणि २० विश्वे २१ विधिश्व-वैकुंठो १३ वसवो १४ऽम्बुपो १५ऽजचरणो १६ऽहिर्बुध्न १९ पूषाजिधौ १०॥३१॥

अर्थ-नीचेना कोष्टक प्रमाणे नक्त्रोना स्वामी जाणवा.

नक्त्र स्वामी
१ श्रश्विनी—श्रश्विनोदसः
३ कृत्तिका—श्रश्विः
५ सृगशिर—चंदः
९ पुनर्वसु—श्रदिति (देवोनी माता).
ए श्रश्वेषा—श्रद्धि (सर्प).
११ पूर्वाफाहगुनी—न्नग (योनि).
११ प्र्वाफाहगुनी—न्नग (योनि).
११ स्ताति—समीर (वायु).
१५ स्वाति—समीर (वायु).
१५ श्रत्याम् मित्र (सूर्यनो न्नेद).
१ए मूळ—निर्वती (राक्त्सोनी माता).
११ जत्तराषांडा—विश्व नामना तेर देवो.
१३ श्रवण—वैकुंठ (विष्णु).
१५ शतिन्यव् —श्रंबुप (वरुण्).
१९ जत्तरान्य इपद—श्रदिर्बुप्त (सूर्यविरोष).

स्वामी. नक्षत्र २ जरणी--यम. ध रोहिली-कमखजू (ब्रह्मा). ६ आर्जी-रुज (शंकर). ण पुष्य—जीव (गुरु-बृहस्पति). १० मघा---पित्र. १२ जत्तराफाइगुनी-श्चर्यमा (सूर्यनो जेद). १४ चित्रा—त्वष्टा (विश्वकर्मा). १६ विशाखा—शक (इंघ) तथा अप्रि. १० ज्येष्ठा---इन्द्र. २० पूर्वाषाढा<u>चारि</u> (जळ). २२ छाजिजित्—विधि (ब्रह्मा). २४ धनिष्ठा--वसु(वसु नामना श्राठ देवो). १६ पूर्वीचाइपद—श्रजचरण(रुइनो चेद). २७ रेवती-पूषा (सूर्यनो जेद).

समजुती - अश्विन तथा जदस्र ए बे देव हो. विशाखा नक्षत्रना प्रथम अर्था जागमां शक्त तथा बीजा अर्था जागमां अग्नि देवता हो, तेथी आ नक्षत्र विदेवत (बे देवता-वालुं) एवा नामश्री तथा मिश्र नामश्री जंखवाय हो, मूळ नक्षत्रनो स्वामी नैर्कती कहाो हो, ते नैर्कती राक्सोनी माता हो तथी राक्सोने पण ते नक्षत्रना स्वामी जाखवा, अने तथी करीने ज मूळ ए रक्षोनक्षत्र एटले राक्सनुं नक्षत्र एवा नामथी जंळखाय हो. नक्ष्तिना स्वामी कहेवानुं फळ ए हो जे ते ते देवना नामश्री ते ते नक्षत्रोनो ज्यवहार करनवामां आवे हो, तथी तेमना स्वामी कह्या हो. ३१.

हवे अध्यावीश नहत्रोना तारार्जनी संख्या कहे हे.— त्रित्रयंगजूतजगदिन कुकृति त्रितर्कें-व्वक्ति दिपञ्चकुकुवेद युगा प्रिरुद्धैः । वेदाब्धिराम गुणवेद शत दिक दि-दनतेश्च तत्समति थिन शुजा जतारैः ॥ ३१ ॥

अर्थ-अश्वनी नक्त्रना त्रण तारा हे १, जरणीना त्रण तारा हे २, ए प्रमाणे अनु-क्रमे श्रंग एटले ह ३, जूत-पांच ४, जगत्-त्रए ५, इंड-एक ६, कृत-त्रए ७, त्रए तर्क-उ ए, इषु-पांच १०, श्रक्ति-वे ११, वे १२, पांच १३, कु-एक १४, कु-एक १५, वेद-चार १६, युग-चार १७, अग्नि-त्रण १०, रुष-अग्वार १ए, वेद-चार २०, श्रिब्ध-चार २१, राम-त्रण २२, गुण-त्रण २३, वेद-चार २४, शत-सो २५, वे २६, वे १७, तथा रेवती (१०) ना दंत-बत्रीश ताराच हे. आ प्रमाणे अनुक्रमे १० नक्षत्रोना तारानी संख्या जाएवी. ऋहीं तारानी संख्या कहेवानुं प्रयोजन ए हे जे आ तारार्जनी संख्यानी समान तिथि अशुज है. एटखे के अश्विनी नक्त्रना त्रण तारा है तेथी त्रीजने दिवसे अश्विनी नक्षत्र होय तो ते दिवसे शुज कार्य करातुं नथी. ए रीते जिर्णी विगे-रेमां पण तारानी संख्या प्रमाणेनी तिथि शुज कार्यमां वर्जवानी कही हे. शतजिएक नक-त्रना सो ताराचे कह्या हे, तेमां सोनी साथे पंदेरे जाग खेतां बाकी दश रहे हे, माटे दश-मने दिवसे शतिषक् नक्षत्र होय तो ते दिवस शुज कार्यमां तजवा योग्य हे. ए ज रीते रेवतीना बन्नीश तारा होवाथी पंदरे जाग खेतां वे वधे हे, माटे दितीया यक्त रेवती तजवा योग्य हे. खह्न कहे हे के--"दग्धा तिहिननकत्रतारातुख्या तिथिर्जवंत्" "ते दिव-सना नक्त्रना ताराने तुख्य-समान एवी तिथि दग्ध तिथि कहेवाय हे." आ प्रमाणे सामान्य वचन कहीने ते ज खद्ध आ प्रमाणे विशेष कहे हे के—''तारासमैरहोजिर्मासै-रब्दैश्च धिष्एयफखपाकः" "ताराने तृष्ट्य एवा दिवस, मास छाने वर्षे करीने नक्तत्रनं फळ परिपक्क थाय." ३२.

नक्त्रोनी ज चर, ध्रव विगेरे बीजी संज्ञा कहे हे.—
चरमाहुश्रद्धं खातिरादित्यं श्रवणत्रयम् ।
खघु क्त्रिपं च हस्तोऽश्विन्यजिजित्पुष्य एव च ॥ ३३ ॥
मृष्ठु मैत्रं मृगश्चित्रानुराधा चैव रेवती ।
ध्रुवं स्थिरं च वैरंचमुत्तरात्रितयान्वितम् ॥ ३४ ॥

१ तिथि पंदर छे माटे.

दारुणं तीदणमश्लेषा मृलमार्जा महेन्द्रजम्। अरुमुयं च जरणी तिस्रः पूर्वा मद्यान्विताः॥ ३५॥ मिश्रं साधारणं च दे विशाखाकृत्तिकाजिधे। ईटङ्नाम्नोचिते धिष्णये निर्मितं कर्म शर्मणे॥ ३६॥

श्रर्थ—स्वाति, पुनर्वसु अने अवणादि त्रण एटले अवण, धनिष्ठा अने शतिष्क् ए पांच नहातो चर तथा चल कहेवाय हे. हस्त, अश्विनी, अजिजित अने पुष्य ए चार नहातो लुघु तथा हिप्र कहेवाय हे. मृगिशर, चित्रा, अनुराधा अने रेवती ए चार नहातो मृद्ध तथा मेत्र कहेवाय हे. रोहिणी, त्रण उत्तरा एटले उत्तराफाहगुनी, उत्तराफाढा अने उत्तराजाइपद ए चार नहातो ध्रुव अने स्थिर कहेवाय हे. अश्वेषा, मूळ, आर्का अने ज्येष्ठा ए चार दारुण तथा तीहण कहेवाय हे. जरणी, मधा, त्रण पूर्वा एटले पूर्वाफाहगुनी, पूर्वाषाहा अने पूर्वाजाइपद ए पांच नहातो करूर तथा उत्र कहेवाय हे. तथा विशाला अने कृतिका ए वे नहातो मिश्र तथा साधारण कहेवाय हे. अर्थात् आ वे नहातो स्थिर, चळ, तीहण तथा मृद्ध विगेरे कांइ पण कहेवातां नथी. आ चर विगेरे नामे करीने उचित एवा नहातमां करेलुं कार्य सुखने माटे थाय हे, एटले के जेबुं नहात्रनुं नाम होय तेबुं कार्य तेवां नहात्रोमां करवाथी कार्यनी सिद्धि थाय हे. ३३—३४—३५—३६.

श्रा चरादिक नक्त्रोमां केवां कार्य करवा योग्य हे ते ज कहे है.--

कुर्यात्त्रयाणं खघुनिश्चरैश्च मृडुधुवैः शान्तिकमाजिमुप्रैः । व्याथित्रतीकारमुशन्ति तीक्णैर्मिश्रैश्च मिश्रं विधिमामनन्ति ॥३॥

अर्थ—लघु तथा चर नक्त्रमां प्रयाण, करीयाणं, अलंकार, कळा, मेथुन, औषध, कान, विकान, वाहन, छद्यान विगेरे संबंधी कार्य करवामां आवे हे. मृष्ठ तथा ध्रुव नक्त्रमां शांति, बीज, घर, नगर, अजिषेक, बाग बगीचा, जूरण (आलंकार) वस्त्र, गीत, मंगळ तथा जित्र विगेरे संबंधी कार्य तथा स्थिर कार्य करवामां आवे हे. छप्र नक्त्रमां खनाइ, वंचना (हेतरबुं ते), विष, घात, बंधन, छहोदन, शस्त्र अने अग्नि विगेरे संबंधी कार्य करवामां आवे हे. तीहण नक्त्रमां व्याधिनो प्रतीकार (दवा विगेरे छपाय), जूत, यक्त, मंत्र अने निधिनी साधना तथा जेदकर्म विगेरे संबंधी कार्य करवामां आवे हे. तथा मिश्र नक्त्रमां मिश्र कार्य एटले सुवर्ण, रूपुं, तांबुं, लोढुं विगेरे सर्व अग्निकर्म तथा वृषोत्सर्ग अने अग्निनो परिग्रह विगेरे कार्य करवामां आवे हे. दिनशुष्टि ग्रंथमां कहां हे के—"लहुचरे सुहारंजो छग्गरिस्के तवं चरे। ध्रुवे पुरपवेसाई मिस्से संधिकियं करे॥१॥" "लघु अने वर नक्त्रमां शुज कार्यनो आरंज करवो, छग्न नक्त्रमां तप आचरवो,

ध्रुव नक्षत्रमां पुरप्रवेशादिक करवा, तथा मिश्र नक्षत्रमां संधि विगेरे कार्यो करवां." वळी कह्यं हे के—''तीहणोमजोक्तं विदधीत मिश्रे कूरोदितं दारुणजेषु कुर्यात् । तीहणोमिन-श्रैर्यदिहोदितं तन्मृञ्छवेः किपचरैर्न कुर्यात् ॥ १ ॥" "तीइए तथा छय नक्त्रमां करवा खायक कार्य मिश्रमां पण करी शकाय हो, ऋर नक्षत्रमां करवा खायक कार्य दारुण नक्ष-त्रमां करी शकाय हे, परंतु तीक्षण, छद्य अने मिश्रमां करवा खायक कार्य जे अहीं कह्यां बे, ते कार्य मृद्ध, भ्रुव, किय अने चर नक्षत्रमां करवा लायक नथी." वळी कड्डं बे के-"प्रायः शान्ते कार्ये न योजयेत् कृत्तिकास्त्रिपूर्वाश्च । वारुणरौदे च तथा दिदैवतं याम्य-मश्खेषाम् ॥ २ ॥" "प्राये करीने शांत कार्यमां कृत्तिका तथा त्रण पूर्वा एटले पूर्वाफाह्युनी, पूर्वापाढा अने पूर्वाजाइपद ए चार नक्त्र खेवा लायक नथी. तथा वारुण एटखे शत-जिषक, रीड एटखे श्रार्डा, दिदैवत एटखे विशाला, याम्य एटखे जराए। श्रमे श्रश्खेषा श्रादक्षां नक्षत्रो पण खेवा खायक नथी.'' श्रा चरादिक संज्ञार्च वारने श्राश्रीने पण प्रंथां-तरमां आ प्रमाणे कही हो.—"चरः १ स्थिर १ स्तथोग्र ३ श्र मिश्रो ४ खुघु ५ रथो मृद्धः ६ । तीहणश्च ७ कथिता वाराः प्राच्यैः सूर्योदयः क्रमात् ॥ १ ॥" "पूर्वाचार्योप रविवारयी आरंजीने अनुक्रमे चर, स्थिर, जय, मिश्र, लघु, मृष्ड अने तीहल एवी संज्ञार्ज कहेखी हे. अर्थात् रविवार चर, सोमवार स्थिर, मंगळवार छत्र विगेरे." आ वारनी संज्ञा श्चापवानुं प्रयोजन ए हे जे चर नक्षत्रमां करवानुं कार्य चर वारमां श्चावे तो ते विदोष सिद्धिकारक हे. ए रीते एक ज संज्ञावाळा नक्षत्र तथा वारमां ते ते करवा खायक कार्यो विशेष फळदायक थाय हे. ३५.

हवे चंज संक्रांतिने आश्री सत्यावीश नक्षत्रोनी मुहूर्त संख्या कहे हे.— जेषु क्षणान् पञ्चदशैन्जरीजवायव्यसार्पान्तकवारुणेषु ।

त्रिष्ठान् विशाखादिति त्रश्रुवेषु होषेषु हा त्रिंशतमामनित ॥ ३०॥ श्रर्थ—एन्ड (ज्येष्ठा), रीड (आर्डा), वायव्य (स्वाति), सार्प (अल्डेषा), श्रंतक (जरणी) तथा वारुण (शतिषक्) आ व नक्षत्रो पंदर मुहूर्त्त एटले आर्च दिवसना जोगवाळां वे अर्थात् पंदर मुहूर्त्तीयां कहेवाय वे. विशाखा, आदिति (पुनर्वसु), ध्रुव एटले रोहिणी, उत्तरापाढा, उत्तराफाहगुनी अने उत्तराजाडपद आ व नक्षत्रो पीला-खीश मुहूर्त्त एटले दोढ दिवसना जोगवाळां वे एटले पीलालीश मुहूर्त्तीयां वे, बाकीनां एटले अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, मधा, पूर्वाफाहगुनी, हला, चित्रा, अनुराधा, मूळ, पूर्वापाढा, अवण, धनिष्ठा, पूर्वाजाडपद अने रेवती आ पंदर नक्षत्रो त्रीश मुहूर्त्तीयां वे एटले एक दिवसना जोगवाळां वे. आ प्रमाणे प्राचीन ज्योतिष् शाल्त्रमां नक्ष्त्रं ने एक एक दिवसना जोगवाळां वे. आ प्रमाणे प्राचीन ज्योतिष् शाल्त्रमां नक्ष्त्रं ने प्रक्तिराशि कहेखी वे, परंतु हाल्रमां तो सर्वे नक्त्रो एक एक दिवसना ज जोगवाळां

एटखे दरेक नक्षत्र सामान्य रीते साठ घनी जोगवे के एम श्रीमत आवश्यक बृहछ-त्तिना टिप्पनकमां कह्यं हे. श्रा मुहूर्तीयां नक्त्रोनी संज्ञानो जपयोग नवा खदय पामेखा चंदर्द्शनमां हे ते विषे रक्षमाळामां कहां हे के-- ''बृहत्सु धान्यं कुरुते समर्घ्य जधन्य-धिष्एयेऽज्युदिते महार्घ्यम् । समेषु धिष्एयेषु समं हिमांगुः शुक्दािद्वीयाज्युदयी विद्वोक्यः ॥ १ ॥" "सुदि बीजने दिवसे छदय पामता चंद्रने जोवो. जो ते वखते बृहत् नक्त्र एटखे पीस्तालीश मुहूर्तीयुं नहत्र होय तो धान्य सस्तुं श्राय एम जाएवुं, जघन्य एटखे पंदर मुहूर्तीयुं नक्त्र होय तो धान्य मोंघुं थहा एम जाएवं, स्त्रने जो सम एटले त्रीश मुहू-त्तींयुं नक्त्र होय तो धान्यना जाव समान रहेशे एम जाणुवं. ए प्रमाणे दरेक मासना जाव जाएवा. कयां कयां नक्षत्रो चंद्रनी आगल, पाठल छने साथे होय हे ? ते माटे आ प्रमाणे कहुं हे के-"'युज्यन्ते षड् दादश नव चेति निशाकरेण धिष्ण्यानि । प्राग्मध्य-पश्चिमार्थैः पौष्णैशाखंकलादीनि ॥ १ ॥" "षौष्ण एटले रेवतीथी आरंजीने उ नक्त्रो चंदनी आगळ चाखनारां हे तेथी तेलं पूर्वयोगी कहेवाय हे, तथा ऐश एटखे आदीथी श्चारंजीने बार नक्षत्रो मध्यजागयोगी कहेवाय हे श्चर्यात ते नक्षत्रो चंजनी साथे रहे-नारां हे, तथा आखंगल एटले ज्येष्ठाथी आरंजीने नव नक्त्रो चंद्रना पश्चिमार्ध योग-वाळां हे, एटखे के ते नक्षत्रो चंदनी पाहल चालनारां हे." आ पूर्वयोगी विगेरे नक्ष-त्रोनी संज्ञानुं फळ स्त्रा प्रमाणे हे.-- "पूर्वार्धयोगिषूढस्त्रीणामतिवद्वजो जवेज्ञर्ता। पश्चार्ध-योगिषु स्त्रीप्रेम मिथ्रो मध्ययोगिषु ॥ २ ॥" "पूर्वार्धयोगी नक्षत्रमां विवाह थया होय तो स्त्रीने जर्ता जपर घणी प्रीति होय, पश्चार्थयोगीमां विवाह श्रया होय तो पुरुषने स्त्री चपर घणो प्रेम होय, अने मध्ययोगीमां विवाह श्रया होय तो बन्नेने परस्पर समान प्रीति रहे हे." श्रा ज प्रमाणे सेवा, मित्राइ विगेरेमां पण फळ जाण्डुं. एटखे के पूर्वयोगी नक्षत्रमां सेवा (नोकरी विगेरे) तथा मित्राइनो आरंज थयो होय तो जे मुख्य (होठ विगेरे) होय ते गौष (नोकर विगेरे) ने छालंत प्रेमवाळो रहे हे, पश्चार्थयोगीमां आ-रंत्र थयो होयं तो जे गौण होय ते मुख्यने घणी श्रीत जिल्वाळो थाय हे, तथा मध्य-योगीमां आरं र कर्यो होय तो परस्पर शीति रहे हे.

नक्त्रोनी आकृति नीचे प्रमाणे होय हे.-

हयवदन १ जग २ क्कर ३ शकट ४ मृगशिरो ५ मणि ६ गृहे ९ ९ ० चक्राणाम् ए। माकार १० शयन ११ पर्यंक १२ हस्त १३ मुक्ता १४ प्रवालानाम् १५॥ १॥ तोरण १६ मणि १९ कुंमल १० सिंहविकम १ए स्वपन २० गजविलासानाम् ११। शृंगाटक १२ त्रिविकम १३ मृदंग १४ षृत्त १५ दियमलानाम् ॥ १६॥ १॥ पर्यंक १९ मुरज २० सहशानि ज्ञानि किश्रतानि चाश्विनादीनि। श्रिश्वनी नक्त्रश्री श्रारंत्रीने श्रमुक्रमे हयवदनादिक श्राकारवाळां नक्त्रों कहें हैं. एटवे के श्रिश्वनी नक्त्र श्रश्वना मुखना श्राकारवाळुं हे १, त्ररणी त्रग (योनि)ना श्राकारवाळुं हे १, कृत्तिका कुर (श्रस्त्र)ना श्राकारवाळुं हे १, ए प्रमाणे श्रमुक्रमे शक्ट (गार्मु) ४, मृगर्मु मस्तक ए, मणि ६, घर ७, वाण ए, चक्र ए, किल्लो १०, शयन ११, पर्यक १२, हाश्र १३, मोती १४, परवाळा १५, तोरण १६, मणि १७, कुंक्ळ १७, सिंहनां पगलां १ए, स्वपन (शय्या) २०, हस्तिनी चाल २१, शृंगाटक २२, त्रिविक्रम २३, मृदंग २४, वृत्त (गोळ) २५, दियामल २६, पर्यक १७ श्रमे मुरज (वाजित्र विशेष) २७. श्रावा श्राकारवाळां कहेलां हे.

दिशार्जनो कम आ प्रमाणे हे.—चित्रा श्चने स्वाति नक्त्रना उदयना मध्य जागमां पूर्व दिशा है, ते बन्नेना श्चस्तना मध्यमां पश्चिम दिशा है, भ्रवनो तारो ज्यां होय ते उत्तर दिशा है श्चने तेनी सन्मुखनी दिशा दिशा है.

जे जे नक्षत्रों जे जे दिशामां चालनारां हे ते कहे हे.— दक्षिणमार्गेऽश्टेषा १ ब्राह्मत्रय ४ करयुगे ६ दिपतिषद्भम् १६। छत्तरतः पुनरजिजित्त्रय ३ मश्वित्रय ६ यौनयुगलानि ए॥ १॥ आजपाद्घयं १० स्वात्या ११ दित्ये १६ चेति च्रमन्ति खे। मध्यमार्गे शतिजिषक् १ पुष्य १ पौष्ण ३ मघा ४ इति ॥ १॥

श्रश्लेषा, रोहिणी, मृगशिर, आर्जा, इस्त, चित्रा, विशाखा, श्रनुराधा, ज्येष्ठा, मूळ, पूर्वाषाढा, जत्तराषाढा आ बार नक्त्रो दिल्लेण मार्गमां चाले हे. अजिजित्, अवण, धिनष्ठा, अश्विनी, जरणी, कृत्तिका, पूर्वाफाटगुनी, जत्तराफाटगुनी, पूर्वाजाजपद, जत्तराजाजपद, स्वाति, पुनर्वसु आ बार नक्त्रो जत्तर मार्गमां चाले हे. तथा शतिजयक्, पुष्य, रेवती, मधा ए चार नक्त्रो मध्य जागे चालनारां हे (आ सर्व हकीकत व्यवहार प्रकाशमां हे).

चंत्रथी कइ कइ दिशामां नक्षत्रों रहेखां हे ते कहे हे.— वे फग्गुणि २ जद्दवया ४ सवण ५ घणित्रा ६ य रेवइ ७ जरणी ७। श्रांसिणि ए सयजिस १० साई ११ श्राजिजु १२ त्तरजोइणो चंदे ॥ १॥ पुणवसु १ रोहिणि २ चित्ता ३ मह ४ जित्र ५ णुराह ६ कत्तिश्र ७ विसाहा ७। चंदस्स छजयजोगा श्रह दिक्णि जोइणो चंदे ॥ २॥

पूर्वाफाहगुनी, जत्तराफाहगुनी, पूर्वाजाइपद, जत्तराजाइपद, अवण, धनिष्ठा,रेवती, जरणी, अश्विनी, शतजिपक्, स्वाति अने अजिजित् आ बार नहात्रो चंडणी जत्तर तरफ रहे हे, एटखे आ नहात्रोधी दिहण तरफ रहीने चंड गति करे हे. पुर वेसु, रोहि-णी, चित्रा, मघा, ज्येष्ठा, अनुराधा, कृत्तिका अने विशाला ए आह नहात्रो चंडनी बन्ने

एटखे जत्तर तथा दक्षिण बाजुए रहे हो, एटखे के कोइ वखत दक्षिण तरफ अने कोइ वखत जत्तर तरफ रहे हे तथा वाकीनां एटखे पूर्वाषाढा, जत्तरापाढा, इस्त, मूळ, अश्लेषा, मृगशिर, आर्घा अने पुष्य ए आह नक्षत्रो चंदशी दक्षिणमां रहे हे.

तिथि तथा नक्त्रनुं संपूर्ण बळ कइ वखते होय हे ते कहे हे.--

तिथिधिंबायं च पूर्वार्चे बलवहुर्वतं ततः।

नक्त्रं बलवजात्री दिने बलवती तिथिः॥ १॥ (ब्यवहारसार)

दिवसना पूर्वीर्ध जागमां तिथि तथा नक्तत्र संपूर्ण बळवान् होय हे, अने त्यारपही इबैळ थाय हे. रात्रिए केवळ नक्तत्र जं बळ होय हे, अने दिवसे केवळ तिथि ज बळ-वान् होय हे.

॥ इति नक्त्रघारम् ॥ ३ ॥

॥ अय योगद्वारम् ॥ ४ ॥

रिव विगेरे वारने विषे तिथि तथा नक्त्रने आश्रीने शुज तथा अशुज योग कहे हे. तेमां प्रथम रिववारे शुज योग कहे हे.—

> भानौ जूत्यै करादित्यपौष्णबाह्यमृगोत्तराः । पुष्यमूलाश्विवासव्यश्चेकाष्टनवमी तिथिः॥ ३७॥

श्रर्थ—रिवारे इस, पुनर्वसु, रेवती, रोहिएी, मृगशिर, जत्तराफाहगुनी, जत्तराषाहा, जत्तराजाहपद, पुष्य, मूळ, श्रन्थिनी श्रने धनिष्ठा नक्षत्र होय तथा पनवो, श्राठम श्रने नोम तिथि होय तो ते शुज्ज योगने माटे हे. श्रहीं वार श्रने तिथि, तथा वार श्रने नक्षत्र एम नो योग होय तो दिक शुज्ज योग जाएवो, श्रने वार, नक्षत्र तथा तिथि ए त्रणे मळ होय त्यारे त्रिक शुज्ज योग जाएवो. ए प्रमाणे श्रशुज्ज योगमां पण जाएवं. ३ए. रिववारे श्रशुज्ज योग कहे हे.

न चार्के वारुणं याम्यं विशाखात्रित्यं मधा।

तिथिः षट्सप्तरुद्धा ११ के १२ मर्नु १४ संख्या तथेष्यते ॥ ४०॥ अर्थ-रिववारे वारुण (शतित्रक्), याम्य (तरणी), विशाला, अनुराधा, ज्येष्ठा अने मधा नक्त्र होय, तथा उठ, सातम, अग्यारश, वारश अने चौदश, ए तिथिउनमांनी कोइ पण तिथि होय तो ते इज्ञाती नथी, अर्थात् ते दिवसे अशुज योग जाण्यो. अहीं विशाला त्रितय लख्युं हे तेथी अनुक्रमे जत्पात, मृत्यु अने काण योग थाय है. एटले के रिवारे विशाला नक्षत्र होय तो जत्पात योग, अनुराधा होय तो मृत्यु योग

श्रने ज्येष्ठा होय तो काण योग जाणवो. ए प्रमाणे श्रागळ पण कुयोगना श्लोकमां ज्यां त्रिक शब्द श्रावे त्यां पण जत्पात विगरे त्रण योग श्रनुक्रमे जाणवा. ४०.

सोमवारे शुज योग कहे हे.-

सोमे सिड्ये मृगब्राह्ममेत्राप्यार्यमणं करः।

श्रुतिः शतनिषक् पुष्यस्तिथिस्तु द्विनवानिधा॥ ४१॥

अर्थ—सोमवारे मृगशिर, ब्राह्म (रोहिणी), मैत्र (अनुराधा), आर्यमण (उत्तरा-फाह्युनी), कर (हस्त), श्रुति (अवण), शतिज्ञिषक अने पुष्य नक्षत्र होय तथा बीज के नोम तिथि होय तो ते दिवसे शुज्ज योग जाणवो. ४१.

सोमवारे अशुज योग कहे हे.-

न चन्डे वासवाषाढात्रयार्ड्याश्विद्विवतम्।

सिध्ध्ये चित्रा च सप्तम्येकाद्द्यादित्रयं तथा ॥ ४१॥

श्रर्थ—सोमवारे वासव (धनिष्ठा), पूर्वाषाढा, जत्तराषाढा, श्रनिजित्, श्रार्जा, श्र-श्विनी श्रने दिदेवत (विशाखा) श्रने चित्रा नक्त्र होय, तथा सातम, श्रग्यारश, बारश श्रने तेरश तिथि होय तो ते दिवसे श्रशुज योग जाएवो. श्रहीं षाढात्रय एटखे पूर्वाषाढा, जत्तराषाढा श्रने श्रजितित् नक्त्र होय तो श्रनुकमे जत्पात, मृत्यु श्रने काए योग पए जाएवा. ४२.

मंगळवारे शूज योग कहे हे.--

जौमेऽश्विपौष्णाहिर्बुध्नमूलराधार्यमात्रिजम् ।

मृगः पुष्यस्तथाश्खेषा जया षष्टी च सिद्धये ॥ ४३

श्रर्थ—मंगळवारे श्रश्विनी, पौष्ण (रेवती), आहिर्बुध (जत्तराजा द), मूल, राधा (विशाखा), श्रर्थम (जत्तराफाल्गुनी), श्रिधज (कृत्तिका), मृत्रेर, पुष्य श्रने श्रश्वेषा नक्षत्र होयतथा जया एटले त्रीज, श्राठम श्रने तेरश त उठ तिथि होय तो ते सिद्धिने माटे हे, एटले ते दिवसे शुज योग जाण्वो. ४३.

मंगळवारे अशुज योग कहे हे.---

न जोमे चोत्तराषाढामघार्जावासवत्रयम्। प्रतिपद्दशमी रुद्धप्रमिता च मता तिथिः॥ ४४॥

अर्थ—मंगळवारे जत्तरापाढा, मघा, आर्जा, वासवत्रय एटले धनिष्ठा, शतजिपक् अने पूर्वाचाजपद नद्यत्र होय तथा पमवो, दशम अने अग्यारश तिथि होय तो ते दिवसे अशुज

योग जाणवो. श्रहीं पण वासवत्रय एटले धनिष्ठा, शतिपक् श्रने पूर्वात्राइपद होय तो श्रनुक्रमे जत्पात, मृत्यु श्रने काण योग पण जाणवा. ४४.

बुधवारे शुज योग कहे हे.—

बुधे मैत्रं श्रुतिज्येष्ठापुष्यहस्तामित्रत्रयम्। पूर्वाषाढार्यमर्देः च तिथिर्ज्ञा च जूतये॥ ४५॥

श्रर्थ—बुधवारे मैत्र (श्रतुराधा), श्रवण, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त, श्रिक्षित्र (कृत्तिका) विगेरे त्रण एटले कृत्तिका, रोहिणी श्रमे मृगशिर, पूर्वाषाढा तथा श्रर्थम एटले जत्तरा-फाहगुनी श्रामांनुं कोइ नक्तत्र होय तथा जका एटले बीज, सातम श्रमे बारश एमांनी कोइ तिश्र होय तो ते दिवसे शुज योग जाणवो. ४५.

बुधवारे अञ्चल योग कहे हे.---

न बुधे वासवाश्खेषारेवतीत्रयवारुणम्।

चित्रामृतं तिथिश्रेष्टा जयैकेन्डनवांकिता॥ ४६॥

अर्थ—बुधनारे धनिष्ठा, अश्लेषा, रेवती, अश्विनी, जरणी, वारुण (शतिषक्), षित्रा अने मूट नक्त्र होय, तथा जया एटले त्रीज, आठम अने तेरश, तथा परवो, चौदश अने नोम एमांनी कोइ पण तिथि होय तो ते दिवसे अशुज योग जाणवो. अहीं पण रेवती, अश्विनी अने जरणी होय तो अनुकमे छत्पात, मृत्यु अने काण योग जाणवा. ४६.

गुरुवारे शुज योग कहे हे.-

गुरौ पुष्याश्विनादित्यपूर्वा ३ श्लेषाश्च वासवम्। पौष्णं स्वातित्रयं सिड्हो पूर्णाश्चेकादशी तथा॥ ४७॥

अर्थ-गुरुवारे पुष्य, अश्विनी, पुनर्वसु, पूर्वाफाहगुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाजाइपद, अन्स्रिपा, वासव (धिनष्टा), पौष्ण (रेवती), स्वातित्रय एटले स्वाति, विशासा अने अनुराधा नक्षत्र होय तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूनम तथा अग्यारश होय तो शुज योग जाण्यो। ४९.

गुरुवारे अशुज योग कहे हे.-

न गुरौ वारुणाग्नेयचतुष्कार्यमणद्भयम्।

ज्येष्टा जूरेंगे तथा जड़ा तुर्या षष्ट्यष्टमी तिथिः ॥ ४७ ॥

अर्थ —गुरुवारे वारुण (शतिजवक्), आन्नेयचतुष्क एटले कृत्तिका, रोहिणी, मृग-शिर अने आर्ची, अर्थमण्डय एटले छत्तराफाङ्गुनी अने इस्त, तथा ज्येष्ठा आ नक्ट- त्रोमांथी कोइ एक होय तथा जड़ा एटले बीज, सातम अने वारश, तथा चोथ, ठड अने आठम आमांनी कोइ तिथि होय तो ते दिवसे अशुज योग जाएको. अहीं पए रोहिएी, मृगशिर अने आड़ी होय तो अनुक्रमें जत्पात, मृत्यु अने काए योग जाएका, अने कृत्तिका नद्दत्र होय तो यमघंट नामनो योग थाय हे. ४०.

शुक्रवारे शुक्त योग कहे हे.—

शुक्रे पौष्णाश्विनाषाढा मैत्रं मार्गं श्रुतिद्वयम्। यौनादित्ये करो नन्दात्रयोदस्यौ च सिद्धये॥ ४ए॥

अर्थ—शुक्रवारे पौष्ण (रेवती), अश्विनी, पूर्वाषाढा, जत्तराषाढा, मैत्र (अनुराधा), मार्ग (मृगशिर), अवण, धनिष्ठा, पूर्वाफाहगुनी, पुनर्वसु अने इस नक्त्र होय तथा नंदा एटले पमवो, उठ अने अग्यारश, तथा तेरश तिथि होय तो ते दिवसे शुन्न योग थाय है. ४ए.

> शुक्रवारे अशुज योग कहे हे.— न शुक्रे जूतये ब्राह्म पुष्यं सार्षं मघाजिजित्। ज्येष्टा च फ्रित्रिसप्तम्यो रिक्ताख्यास्तिथयस्तथा॥ ५०॥

अर्थ—शुक्रवारे ब्राह्म (रोहिए।), पुष्य, सार्ष (अश्खेषा), मघा, अजिजित् अने ज्येष्ठा नहात्र होय, तथा बीज, त्रीज, सातम तथा रिक्ता एटखे चोथ, नोम अने चौदश होय तो ते दिवसे अशुज योग जाएवो. अहीं पए पुष्य, अश्खेषा अने मघा होय ते दिवसे अनुक्रमे छत्पात, मृत्यु अने काए योग पए थाय हे. ५०.

हवे शनिवारे शुज योग कहे हे.-

शनौ ब्राह्मश्रुतिद्वन्द्वाश्चिमरुद्धरुमित्रप्तम् ।

मधा शतनिषक् सिद्धे रिक्ताष्टम्यौ तिथी तथा॥ ५१॥

अर्थ शिनवारे ब्राह्म (रोहिणी), श्रुतिदंद एटले श्रवण अने धनिष्ठा, अश्विनी, मरुत् (स्वाति), गुरुज (पुष्य), मित्रज (अनुराधा), मधा अने शतिज्ञ नक्त्र होय तथा रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदश तथा अष्टमी तिथि होय तो ते दिवसे शुज योग थाय हे. ५१.

हवे बेवट शनिवारे श्रशुज योग कहे हे.—

न शनौ रेवती सिद्धे वैश्वमार्यमणत्रयम्।

पूर्वा ३ मृगश्च पूर्णाख्या तिथिः षष्ठी च सप्तमी ॥ ५२ ॥ स्त्रर्थ—शनिवारे रेवती, वैश्व (उत्तराषाढा), स्त्रार्थमणत्रय एटखे उत्तराफाहगुनी, इस्त छने चित्रा, पूर्वाफाहजुली, पूर्वाषाढा, पूर्वाजाइपद क्रमे मृगशिर नक्तत्र होय तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम छने पूनम, तथा उठ छने सातम होय तो ते दिवसे छाशुज योग याय हे. छहीं पण उत्तराफाहगुनी, इस्त छने चित्रा होय तो उत्पात, मृत्यु छने काण योग पण छानुक्रमे थाय हे. ५२.

अहीं विशेष एटखों हे के सुयोगना सात श्लोकोमां जे पहेलां पहेलां नक्त्र आप्यां हे ते नक्त्र जो ते ज वारे होय तो अमृतसिक्ति योग थाय हे. ते विषे कहां हे के.—

"इस्त १ सौम्या २ श्विनी ३ मैत्र ४ पुष्य ५ पौष्ण ६ विरंचितैः ७।

जवलमृतसिद्धाख्यो योगः सूर्यादिवारगैः ॥ १ ॥"

"रिव छादि वारने विषे छानुक्रमे हस्त, सौम्य (मृगिशार), छाश्विनी, मैत्र (छानु-राधा), पुष्य, रेवती छाने विरंचित (रोहिणी) होय तो ते दिवसे छामृतसिद्धि योग धाय हो एटले के रिववारे हस्त नक्षत्र होय, सोमवारे मृगिशिर होय, मंगळवारे छाश्विनी, बुधवारे छानुराधा, गुरुवारे पुष्य, शुक्रवारे रेवती छाने शिनवारे रोहिणी नक्षत्र होय तो ते दिवसे छामृतसिद्धि योग धाय हो." छा योगने विषे कार्य करवाधी छावश्य ते कार्यनी सिद्धि धाय हो, एम रत्नमाळाना जाष्यमां कह्यं हो.

श्री हर्षप्रकाशमां पण कह्यं ने के-

''ञ्रज्ञासंवर्त्तकाद्यैश्वेत्सर्वछ्ष्टेऽपि वासरे । योगोऽस्त्यमृतसिद्ध्याख्यः सर्वदोषद्ययस्तदा ॥ १ ॥"

"ज्ञा अने संवर्त्तक विगेरे अशुज योगोवने दूषण पाम्या इतां पण ते दिवसे जो अमृतसिक्ति योग होय तो सर्व दूषणनो इय थाय हे."

"शुक्रवारे ो रेवती नक्षत्र होय तो ते दिवसे शत्रु योग याय हे, अने उत्तराजाइपद होय तो अमृतसिद्धि योग थाय हे," एम दोकश्री प्रथमां कह्युं हे.

कोइ आचार्य कहे ने के—"शरतिथितः सप्ततिथिष्वेते सप्तापि मृत्युदाः कमशः"। "पांचमधी सात तिथि सुधी अनुक्रमे आ साते अमृतसिक्ति योगोवाळा वारो मृत्यु देनारा ने. एटखे के रिववारे अमृतसिक्ति योग होय, पण ते दिवसे पांचम होय, सोमवारे अमृति सिक्ति योग होय, पण न्न होय, मंगळवारे सातम, बुधवारे आनम, गुरुवारे नोम, शुक्रवारे दशम अने शनिवारे अमृतसिक्ति योग सिहत अग्यारश होय तोपण ते मृत्यु-दायी जाणवा,"

वळी कह्यं वे के-

''विशाखादिचतुष्केषु रविवारादिसप्तके । ज्ञत्पातमृत्युकाणाश्च सिज्ज्योगाश्च कीर्तिताः ॥ १ ॥" "विशाखादिक चार चार नक्षत्रोवके रविवारादिक सात वारने विषे जत्पात, मृत्यु, काण श्राने सिद्धि योग कह्या है. नीचेतुं कोष्टक जुर्ज.—

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक	शनि-
		W.	1	_	रोहिएी	. —	जत्तराफा हगुनी
मृत्यु		जत्तराषा ढा		छश्विनी	मृग(श्रेर	ख्रश् क ेषा	इस्त
_	ज्येष्ठा	अ जिजित्	पूर्वाजाञ्जद	जरणी		मधा	चित्रा
सिद्धि	मूळ	श्रवण	जेत्तराञा डपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाङगुनी	स्वाति

अहीं जत्पात, मृत्यु अने काणने ठेकाणे अनुक्रमे प्रवास, मरण अने व्याधि एवां नाम पण पूर्णजां कहेलां हे.

यमघंट योग आ प्रमाणे थाय हे.-

"मघा १ विशाखा २ र्जा ३ मृद्ध ४ कृत्तिका ए रोहिणी ६ करैः ७ । रज्यादिवारसंयुक्तैर्यमधंटो जुझोऽशुजः ॥ १ ॥

"रिववारे मधा, सोमवारे विशाला, मंगळवारे आर्जा, बुधवारे मूळ, गुरुवारे कृत्तिका, गुरुवारे रोहिणी अने शनिवारे इस्त नक्त्र होय तो ते दिवसे यमधंट नामे योग आय है. ते घणो ज अशुज फळदायक है." आहीं पाकश्री ग्रंथकार हस्त नक्त्रने हेकाणे पूर्वीपाढा तथा उत्तरापाढाने कहे है.

वज्रमुराळ योग आ प्रमाणे याय हे.---

"जर १ चित्तु २ त्तरसाढा ३ घणि ४ जत्तरफग्गु ५ जिन्न ६ रेवङ्ख्या ७ । सूराइजम्मरिका एएईिं वजामुसल पुणो ॥ १ ॥"

"रिववारे जरणी, सोमवारे चित्रा, मंगळवारे छत्तराषाढा, बुधवारे धनिष्ठा, गुरुवारे छत्तराषाढा, बुधवारे धनिष्ठा, गुरुवारे छत्तराषाहगुनी, शुक्रवारे ज्येष्ठा अने शनिवारे रेवती नद्दत्र होय तो बज्रमुशळ नामे अशुज योग याय हे. आ रिव विगेरे महोनां जन्मनद्दत्र हे. आहीं जरणीने हेकाणे खोकश्री मंत्रमां अश्विनी कहेल हे.

श्वरि (शत्रु) योग छा। प्रमाणे थाय हे.--

"जर १ पुस्सु २ त्तरसाढा ३ श्रद्ध ध विसाहा ए य रेवई ६ सजिसा ७। श्रकाङ्श्राणपद्धिं श्ररिजोगा गुरुविणिद्दिना ॥ १॥"

"रिववारे जराएी, सोमवारे पुष्य, मंगळवारे जत्तराषाढा, बुधवारे आर्जा, गुरुवारे वि-शाखा, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे शतिज्ञषक् नक्षत्र होय तो ते अरि योग कहेवाय हे, एम गुरुजने बताब्युं हे." प्रीतिना कार्यमां आ योग वर्जवामां आवे हे.

श्रस्थिर (चर) योग आ प्रमाणे थाय हे.—

"मह १ मृखु २ त्तरसाढा ३ अवद ४ विसाहा य ५ रोहिए। ६ सिनसा ७ । सुकाइआए कमसो जहाकमं अत्थिरो जोगो ॥ १ ॥"

"शुक्रवारे मघा, शनिवारे मूळ, रिववारे उत्तराषाढा, सोमवारे आर्जा, मंगळवारे विशाखा, बुधवारे रोहिए। अने गुरुवारे शतिपक् होय तो ते अस्थिर (चर) योग कहेवाय हे." स्थिर कार्योमां आ योग वर्जवा योग्य हे.

क्रकच (कर्क) योग आ प्रमाणे थाय है.—
"श्रकाइस कको बारसी छ पञ्चक्रमेण जा हरी।
कक्रय नामा जोगो

रविवारादिकमां बारशथी पश्चानुपूर्वीए उठ सुधी आवर्तुं एटले ककच (कर्क) योग याय हे. अर्थात् रविवारे बारश, सोमवारे अग्यारश, मंगळवारे दशम, बुधवारे नोम, गुरुवारे आहम, शुक्रवारे सातम अने शनिवारे उठ होय तो ककच (कर्क) योग याय हे.

बीजी रीते स्त्रा प्रमाणे पण हे.—
"यत्र संख्या युतौ वारितथ्योजीतास्त्रयोदश ।
क्रेयः ऋकचयोगोऽयं हेयश्च शुजकर्मणि ॥ १ ॥"

"रिववारादिक वारनी अने तिथिनी संख्या जेगी करवाथी ज्यारे तेरनी संख्या आय त्यारे तेने ककच योग जाएवो. आ योग शुज कार्यमां वर्ज्य हे. जेमके रिववारनी एक संख्या तेमां वार नाखवाथी तेरनी संख्या थाय हे, माटे रिववारे बारश होय त्यारे ककच योग थाय. ए प्रमाएं गएवाथी पए जपरनी गाथा प्रमाएं मळतुं आवे हे."

संवर्तक योग छा प्रमाणे ---

''पिनवय तिजु बुदेखं छडी जीवेख बिजु सुकेख । सत्तमि सिष्स्रिसुं एए संवद्या जोगा ॥ १ ॥"

"बुधवारे प्रत्वो अथवा त्रीज होय, गुरुवारे उठ होय, शुक्रवारे वीज होय तथा शनि श्रने रिवेष सातम होय तो ते संवर्तक योग कहेवाय हे." हर्षप्रकाश विगेरे प्रंथमां "बुधवारे मात्र पर्मवो ज होय श्रने सातमने दिवसे रिववार ज होय तो संवर्तक योग थाय," एम कह्युं हे. बाकी सर्व छपर प्रमाणे.

प्रथमथी 'प्रारंजीने श्रहीं सुधीना जे जे योगो कह्या तेना पांच वर्ग श्रइ शके हे, ते श्रा प्रमाणे—िरुद्ध योग १, सामान्य योग २, सुयोग ३, सिद्धि योग ४ श्रमे श्रमृत-सिद्धि योग आ योगोमां कार्य करवाशी तेनुं फळ श्रमुतमे श्रा प्रमाणे जाणवुं.—

अत्यंत असिन्धि १, दैवयोगे सिन्धि २, विलंबे सिन्धि २, इत्तित सिन्धि ४ तथा इत्तितथी अधिक सिन्धि ५. आ प्रमाणे त्रिविक्रमे कहां हे.

फरीथी मंथकार बीजा योगो कहे है. तेमां प्रथम कुमार योग कहे है.

योगः कुमारनामा शुजः कुजक्षेन्ड्युक्रवारेषु । श्रश्वाचैर्द्धन्तरितैर्नन्दादशपञ्चमीतिथिषु ॥ ५३॥

श्रर्थ—मंगळ, बुध, सोम श्रने शुक्र, एमांना कोइ वारे श्रश्विनीशी आरंजीने वे श्रांतरावाळां नक्त्र एटले श्रश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, हस्त, विशाखा, मूळ, श्रवण श्रने पूर्वाजाइपद, एमांनुं कोइ एक नक्त्र होय, तथा नंदा एटले पम्तो, उठ श्रने श्रांचारश, तथा पांचम श्रने दशम, एमांनी कोइ पण तिथि होय तो कुमार नामनो शुज योग थाय के श्रा योग स्थिर कार्यमां एटले मैत्री, दीक्षा, व्रत, विद्या श्रने शिहपनुं महण करतुं विगेरे कार्यमां तथा गृहपवेशादिकमां विशेषे करीने शुज के; परंतु ते वखते विरुद्ध योग होवो न जोइए. श्रश्वीत् मंगळवारे दशम श्रने पूर्वाजाइपद, सोमवारे श्राचारश श्रने विशाखा, बुधवारे पम्त्रो श्रने मूळ श्रथवा श्रश्विनी तथा शुक्रवारे रोहिणी होय तो ते दिवसे कुमार योग पण शुजकारक नथी, कारण जे ते ते दिवसोमां कर्क, संवर्तक, काण श्रने यमधंट योगनी उत्पत्ति होय के श्रा प्रमाणे श्रीहरिजइसूरिकृत लग्नशुद्धि प्रकरणमां कहेलुं के ए३.

हवे राज योग कहे हे.— राजयोगो जरएयाचैर्छ्यन्तरेंजैंः शुनावहः । जडातृतीयाराकासु कुजक्रमृगुनानुषु ॥ ५४ ॥

श्रर्थ—मंगळ, बुध, शुक्र श्रने रिव, श्रामांना कोइ वारे तथा जड़ा एटले वीज, सातम श्रने वारश तथा त्रीज श्रने पूनम, एमांनी कोइ पण तिथिए जरणी विगेरे वे श्रांतरा-वाळां नद्दत्र एटले जरणी, मृगशिर, पुष्य, पूर्वाफाहगुनी, चित्रा, श्रनुर बा, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा श्राने जत्तराजाड़पद, एमांनुं कोइ पण नद्दत्र होय तो शुज्रकारक राज योग थाय छे. श्रा योग मांगलिक कार्यमां, धर्मकार्यमां, पौष्टिकमां, श्रतंकार पहेरवामां तथा केत्रना श्रारंजादिक कार्यमां विशेषे करीने श्रेष्ठ छे. "श्रा योग तरुण योग नामे पण कहेवाय छे." एम पूर्णजेड़े कहां छे. श्रा योग पण विरुद्ध योग न होय त्यारे लेवो एम संजवे छे, तथी रिवचारे सातम श्रथवा वारश श्रने जरणी होय, मंगळवारे धनिष्ठा होय, बुधवारे जरणी के धनिष्ठा होय श्रने शुक्रवारे बीज के सातम तथा पुष्य होय, ते दिवसे राज योग होय तोपण इष्ट (शुज्रकारक) नथी, केमके ते ते दिवसोमां संवर्तक, कर्ट, वज्रमुशळ, जत्पात तथा काण विगेरे कुयोगनी जत्पत्ति श्राय छे. एध.

हवे स्थिर (स्थविर) योग कहे हे.— स्थिरयोगः ग्रुजो रोगोहोदादौ शनिजीवयोः। त्रयोदश्यष्टरिक्तासु द्व्यन्तरैः कृत्तिकादिजिः॥ ५५॥

श्रर्थ—गुरुवारे अथवा शनिवारे तेरश, श्राठम के रिक्ता एटले चोथ, नोम श्रने चौदश होय, तथा कृत्तिकादिक छांतर नक्षत्र एटले कृत्तिका, श्रार्फा, श्रश्लेषा, जत्तरा-फाटगुनी, स्वाति, ज्येष्ठा, जत्तराषाढा, शततारका के रेवती होय तो ते रोगादिकना नाशमां शुज्जकारक एवो स्थिर योग थाय है आ योगनुं फळ पाकश्री ग्रंथमां श्रामाणे कह्यं हे.—

"श्राणसण खिख वाहि रिएं रिज रण दिवं जखासए वंधो। कायबो थिरजोगे जस्स य करएं पुणो नस्थि॥ १॥"

"जे कार्यनुं फरीथी करवापणुं नथी एवां कार्य जेवां के स्थनशन, क्षेत्रशुद्धि, व्याधि-हरण, क्रण (देणुं) देवुं, शत्रुनो वध, दासाइ, दिव्य करवुं, जळाशय बंधावबुं, ए विगेरे (मंत्रहेद, स्नेहहेद विगेरे) कार्यो स्थिर योगमां कराय हे." ५५.

हवे यमल तथा त्रिपुष्कर योग कहे हे.— यमलाख्यो छिपादकें त्रिपादकें त्रिपुष्करः । जीवारशनिवारेषु योगो जडातिथौ स्मृतः ॥ ५६ ॥

अर्थ—गुरुँ, मंगळ अने शनिवारे बीज, सातम के बारश होय अने जो िपाद नक्त्र एटले मृगशिर, चित्रा अने धनिष्ठा होय तो ते दिवसे यमल नामे योग कहेवाय है. तथा ते ज तिथि बारने विषे त्रिपाद नक्त्र एटले कृत्तिका, पुनर्वसु, जत्तराफाहगुनी, विशाखा, जत्तरापाढा अने पूर्वाजाइपद होय तो त्रिपुष्कर नामनो योग कहेवाय है. ५६. हवे पंचक कहे है.—

प के वासवान्त्यार्धातृणकाष्ट्रगृहोद्यमान् । य व्यदिगामनं शय्यां मृतकार्यं च वर्जयेत् ॥ ५७ ॥

श्चर्य—धिन छाना पश्चार्धथी एटले वे पाया गया पठी रेवतीना श्चंत सुधी पंचक कहे-वाय हे. तेमां तृण, काष्ट, गृहारंज, दिहाण दिशामां गमन, नवी शब्या (पढांग विगेरे) तथा प्रेत कार्य वर्ष्य कहेलां हे. ते विषे व्यवहारसारमां कहां हे के—

> "धनिष्ठा धननाशाय प्राणझी शततारका । पूर्वायां दंक्येजाजा छत्तरा मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥ स्रिदाहश्च रेवत्यामित्येतत्पंचके फलम् ।"

१ नारचंद्रमां गुरुवारने स्थाने रविवार कहेल छे.

धनिष्ठामां कार्य करवाधी धननो नाश थाय, शततारकामां करवाधी प्राणनो नाश थाय, पूर्वाजाइपदमां करवाधी राजदंग थाय, उत्तराजाइपदमां करवाधी निश्चे मरण थाय, धने रेवतीमां करवाधी ख्रिक्षेदाह थाय. ए प्रमाणे पंचकनुं फळ जाणवुं. उपर मृतकार्य करवानो निषेध कर्यो छे, परंतु कोइ अकस्मात् पंचकमां ज मरण पामे तो ते मृतकना हाथ पग छेदीने बांधवा एम लक्षे कह्यं छे, पण गरुम पुराणमां तेने दहन करवानो विधि छा प्रमाणे कह्यो छे.—दर्जनां चार पूतळां करीने शबनी साथे राखवां, पढी ते शबनी साथे ज पूतळां पण बाळवां. एम न करे तो पुत्र अथवा बीता सगी- त्रीनो नाश थाय. ५७.

पंचक विषे मतांतर कहे हे.—
पञ्चकं श्रवणादीनि पञ्च ऋकाणि निर्दिशेत्।
केचित्पुनर्धनिष्ठादिपञ्चकं पञ्चकं विद्धः॥ ५०॥

श्रर्थ—श्रवण्यी आरंजीने पांच नक्षत्र सुधी पंचक कहे हुं. तथा कोइक आचार्य धिनष्टायी आरंजीने पांच नक्षत्रने पंचक कहे हे. (सर्वेना मतमां रेवतीने श्रंते पंचक समाप्त थाय हे.) नारचंड श्रंथमां श्रवण श्रने रेवतीमां सर्व दिशाए गमन करवानी श्रनुमित श्रापीने दिश्ण दिशामां पण गमन करवानुं स्त्रीकार्युं हे. ते आ प्रमाणे.—

"सर्वदिग्गमने इस्तः श्रवणं रेवती दयम् । मृगः पुष्यश्च सिद्ध्यै स्युः कालेषु निखिलेष्वपि ॥ १ ॥"

"इस, श्रवण, रेवती इय एटले रेवती अने अश्विनी, मृगशिर तथा पुष्य आटलां नक्षत्रो सर्व काळे सर्व दिशामां गमन करवाने खायक हे अर्थात् सिद्धि आपनारां हे." एए.

यमल, त्रिपुष्कर श्रमे पंचक, एवां नामो सार्थक हे एटले के नाम प्रमाणे फळ-दायक हे. ते कहे हे.—

> हानिवृद्ध्यादिकं सर्वं योगे स्याद्यमले द्विशः। त्रिशस्त्रिपुष्कराख्ये तु पञ्चशः पञ्चकेऽपि च॥ ५ए ॥

अर्थ-यमल योगमां करेलुं हानि वृद्धिवालुं सर्व कार्य बमणुं थाय हे, तिपुष्कर योगमां करवाथी त्रण गणुं थाय हे अने पंचकमां करवाथी पांच गणुं थाय हे, तेथी आ योगोमां इष्ट कार्य ज करवा लायक हे, अनिष्ट कार्य करवा लायक नथी ए आनो अन्तिपाय हे. ५ए.

हवे गंनांत योग कहे हे.—

गंमान्तं च त्यजेन्नेधा लग्न ४-७-१२ तिथ्यु ५-१०-१५-डुषु ए-७-१५ त्रिषु । प्रत्येकं त्रित्रिजागांतरर्देकि दिघटी मितम् ॥ ६०॥

अर्थ- लग्न गंमांत, तिथि गंमांत धाने नहत्र गंमांत ए दश प्रकारनी गंमांत योग सर्व शुन्न कार्यमां तजवा योग्य हे. ते त्रणे प्रकारनो गंमांत पोतपोताने त्रीजे त्रीजे नागे श्चनुक्रमे श्वर्ध घरी, एक घरी श्वने वे घरीना प्रमाणवाळो हे. एटले के खन्न (राज्ञि) बार है तेने त्रीजे त्रीजे जागे चोछं कर्क, आहमुं वृश्चिक छने बारमुं सन्न मीन छावे. तेमां कर्कनी छेड़ी पंदर पळ तथा सिंह खग्ननी प्रथमनी पंदर पळ ए बन्ने मळी त्रीश पळ एटले अर्ध घनी गंनांत योग याय हे. ए रीते वृश्चिकनी हेही पंदर अने धननी पहेंखी पंदर पळ तथा मीननी छेड़ी पंदर अने मेषनी पहेंखी पंदर पळ गंकांत योग जाएवो. आ खग्न गंनांत कहेवाय हे. तिथि पंदर हे, तेनो त्रीजो त्रीजो त्राग गएतां पांचम, दशम अने पूनम आवे हे. तेमां पांचमनी हेड्डी अर्ध घरी अने इन्ती पहेखी अर्ध घरी मळीने एक घनीनो गंनांत योग जाएवो. ए रीते दशमनी हेब्बी ऋषे घनी ऋने अग्या-रशनी पहेली अर्ध घमी तथा पूनमनी छेल्ली अर्ध घमी अने पमवानी पहेली अर्ध घमी गंमांत योग जाएवो. आ तिथि गंमांत कहेवाय हे. नक्षत्र सत्यावीश हे. तेनो त्रीजो त्रीजो जाग गएतां नवमुं अश्खेषा, अदारमुं ज्येष्ठा अने सत्यावीशमुं रेवती हे, तेथी अश्खेषानी बेही एक घनी अने मघानी पहेली एक घनीने गंमांत योग जाएवो. ए ज रीते ज्येष्ठानी होड़ी घनी अने मूळनी पहेली घनी तथा रेवतीनी होड़ी घनी अने अश्वि-नीनी पहेखी घरी एम बबे घरीनो गंकांत योग जाएवो. आ नक्षत्र गंकांत योग कहे-वाय हे. जन्म, गर्जाधान, यात्रा, विवाह, व्रत, गृहनो श्रारंज तथा प्रवेश, श्रने हीर विगेरे सर्व कार्यमां आ योग अशुज कहेखो है. ६०.

"आ त्रणे गंनांत जपर कह्याथी बमणा बमणा प्रमाणवाळा हे" एम श्रीपित कहे हे. सारंग कहे हे के—"नक्षत्र गंनांत आह घनीनो हे." केशवार्क कहे हे के—"नक्षत्र गंनां-तनी जरीते विष्क्रजादिक सत्यावीश योगने मध्ये रहेखो गंनांत पण पांच पांच घनीनो हे."

गंनांत योगनुं फळ नीचे प्रमाणे कह्युं हे.—

"नद्दत्रो मातरं हन्ति तिथिजः पितरं तथा ।

खग्नस्थो बाद्धकं हन्ति गंनान्तो वाद्धदूषकः ॥ १ ॥"

"बाळकनो जन्म नक्त्र गंकांतमां थयो होय तो ते माताने हुए हे, तिथि गंकांतमां थयो होय तो पेताने हुए हे, अने खग्न गंकांतमां थयो होय तो ते वाळकनो ज हुए-नार थाय है."

> "जातो न जीवति नरो मातुरपथ्यो जवेत्स्वकुछहन्ता । यदि जीवति गंमान्ते बहुगजतुरगो जवेद्भूपः ॥ १ ॥"

"गंगंतमां जन्मेखो मनुष्य जीवतो नथी अने माताने अहितकारक तथा पोताना

कुळनो नाश करनार थाय हे, परंतु जो कदाच ते वाळक जीवे तो घणा हाथी घोमा-वाळो राजा थाय हे."

> "नंघ न खब्रइ इत्य छाहिदछो न जीवई। जार्ज वि मरई पायं पत्थिज न निस्थत्तई॥ १॥"

"गंनांतमां खोवायेजी वस्तु पाठी आवती नथी, सर्पदंश थयो होय तो ते मनुष्य जीवे नहीं, जन्में खंबाळक पण प्राये मरण पामे हे, तथा तेमां प्रयाण कर्यु होय तो ते पण प्राये पाठो आवतो नथी."

विवाह षृंदावनमां संधि नामनो पण दोष कह्यो है. ते आ प्रमाणे —
"नक्षत्रयोगतिथिसंधिषु नामिकैका तिथ्यष्टविंशतिपलैः सहितोजयत्र"।

"सर्वे नहात्र, योग अने तिथिनी संधिने विषे बन्ने बाजु अनुक्रमे एक घमी छपर पंदर, आठ अने वीश पळ सहित एक एक घमी संधिदोष कहेवाय छे एटले के नहा- त्रोनी संधिमां पहेला नहात्रना अंतनी एक घमी अने पंदर पळ तथा पळीना नहात्रनी आरंजनी एक घमी अने पंदर पळ मळी कुल अढी घमीनो संधिदोष कहेवाय छे. ए रीते बे योगनी संधिमां पूर्व योगना अंतनी एक घमी अने आठ पळ तथा पळीना योगनी पण आरंजनी एक घमी अने आठ पळ मळी बे घमी अने सोळ पळ संधिदोष कहेवाय छे. ए रीते बे तिथिनी संधिमां पूर्व तिथिनी अंतनी एक घमी अने वीश पळ तथा पळीनी तिथिनी आरंजनी एक घमी अने वीश पळ तथा पळीनी तिथिनी आरंजनी एक घमी अने वीश पळ तथा पळीनी तिथिनी आरंजनी एक घमी अने वीश पळ मळी बे घमी अने चाळीश पळनो संधिदोष कहेवाय छे. आ संधिदोष मांगलिक कार्यमां तजवा योग्य छे."

संधिदोष विषे विक्रमनो मतांतर छा प्रमाणे हे.-

"नक्त्रराश्यो रिवसंक्रमे स्यु,-रर्वाक् परत्रापि रसेन्छ १६ नाड्य। एका घमी परपद्धसंयुतेन्दो,- नीड्यश्चतस्रः सपद्याः कुजस्य ॥ १॥ बुधस्य तिस्रो मनवः १४ पद्यानि, सार्धाश्चतस्रः पद्यसप्त जीवे। ह्यशीतिनाड्यः पद्धसप्त शोरेः, शुक्रस्य हेयाः सपद्याश्चतस्रः ॥ । ॥"

नक्त अथवा राशिने आश्रीने सूर्यनुं संकमण होय एटले एक नक्त्र विजा नक्त्र अथवा एक राशिथी बीजी राशिमां सूर्यनुं संकमण होय तो पूर्व नक्त्र अथवा राशिनी अंतनी सोळ घर्मी तथा पठीना नक्त्र अथवा राशिनी प्रारंजनी सोळ घर्मीने संधि नामनो दोष कहे हे. ए रीते चंजना संक्रमणमां एक एक घर्मी अने ह ह ए पळ, मंगळना संक्रमणमां चार चार घर्मी अने एक एक पळ, बुधना संक्रमणमां त्रण त्रण घर्मी अने चौद चौद पळ, गुरुना संक्रमणमां सार्मी चार चार घर्मी अने सात पळ, शिना संक्रमणमां ज्याशी घर्मी अने सात सात पळ, शिना संक्रमणमां ज्याशी ब्याशी घर्मी अने सात सात पळ अने शुक्रनी संक्रांतिमां

चार चार घमी अने एक एक पळ सुधी संधिदोप कहेवाय हे. आ दोप पण सर्व शुज कार्यमां वर्ज्य हे.

हवे वज्रपात योग विषे कहे हे.--

वज्रपातं त्यजेद्वित्रिपश्चषद्रसप्तमे तियौ।

मैत्रे १ ऽथ त्र्युत्तरे ३ पैत्र्ये ५ ब्राह्मे ६ मूखकरे ७ कमात् ॥६१॥

अर्थ—बीजने दिवसे मैत्र (अनुराधा) होय, त्रीजने दिवसे त्रण छत्तरा एटखे जत्तराफाहगुनी, छत्तरापाढा के उत्तराजाइपद होय, पांचमने दिवसे पैत्र्य (मधा) होय, उन्ने दिवसे बाह्म (रोहिणी) होय, अने सातमने दिवसे मूळ के हस्त होय तो वज्र-पात नामनो योग थाय है. ते शुज कार्यमां तजवा लायक है. ६१.

"वज्रपात योगमां कार्य कर्युं होय तो उ मासमां कार्यकर्तानुं मरण थाय है" एम हर्ष-प्रकाशमां कह्यं हे. वळी "तेरशने दिवसे चित्रा के स्वाति नक्त्र होय तोपण वज्रपात योग थाय है" एम नारचंजनी टिप्पणीमां कह्यं हे. वळी "सातम ने जरणी, नोम ने पुष्य तथा दशम ने श्रश्लेषा होय ते पण तजवा योग्य है" एम कह्युं हे.

वळी नारचंद्रनी टिप्पणीमां काळमुखी नामनो योग आ प्रमाणे कह्यो छे.—
"चन रुत्तर पंच मधा कत्तिस्र नवमीइ तक्स्य आणुराहा।
अन्नि रोहिणिसहिस्रा कालमुही जोगि मास छगि मच्च ॥ १॥"

"चोथने दिवसे त्रए उत्तरा होय, पांचम ने मधा होय, नोम ने कृतिका, त्रीज ने अनुराधा तथा आठम ने रोहिए। होय, तो ते काळमुखी नामनो योग कहेवाय ठे. आ योगमां कार्य करे तो ठ मासे कर्तानुं मरए थाय."

दिनशुक्ति ग्रंथमां नक्तत्र मृत्युयोग आ प्रमाणे कहेत हे.—
"मूलद्दसाइचित्तात्र्यसेसस्यित्तस्यकत्तिरेवइआ।
नंदाए जद्दाए जद्दाया फग्गुणी दो दो ॥ १ ॥
विजयाए मिगसवणापुस्सऽसिणिजरणिजिह रित्ताए।
आसादक्षा विसादा अणुराह पुण्वसु महा य ॥ २ ॥
पुन्नाइ कर धिण्हा रोहिणि इस्रमयगडवत्यनस्कत्ता।
नंदिपइहापमुहे सुहकक्षे वक्नए महमं ॥ ३ ॥"

"नंदा तिथिए एटले पनवो, ठठ अने अग्यारशे मूळ, आर्झा, स्वाति, चित्रा, अश्लेषा, शतिनपक्, कृत्तिका अने रेवती होय, जड़ा एटले बीज, सातम अने बारशे पूर्वाजाड़पद, कृत्तिका अने रेवती होय, जड़ा एटले बीज, सातम अने बारशे पूर्वाजाड़पद, कृत्तिका अर्वे अने जत्तराफाहगुनी होय, विजया एटले बीज, आठम अने तेरशे मृगशिर, अवण, पुष्य, अश्विनी, जरणी अने ज्येष्ठा होय,

रिक्ता एटले चोथ, नोम अने चौदशे पूर्वापाढा, उत्तरापाढा, विशाला, अनुराधा, पुन-र्यस अने मधा होय, तथा पूर्णा एटले पांचम, दशम अने पूर्णिमाए इस्त, धनिष्ठा अने रोहिणी नक्षत्र होय तो ए मृतक अवस्था नक्षत्र कहेवाय हे, माटे नंदि प्रतिष्ठा आदि सुज कार्यमां बुद्धिवान पुरुषोए तजवा योग्य हे."

तथा अवला नामे योग आ प्रमाणे थाय हे.—
"कत्तियपन्निई चडरो सणि बुहि सिस सूर वार जुत्तकमा।
पंचिम विइ एगारसि वारिस अवला सुहे कक्रे॥ १॥"

"कृतिका आदि चार एटले कृतिका, रोहिणी, मृगिशर अने आर्जी नक्तत्र शिन, बुध, सोम अने रिववारे अनुक्रमे होय, तथा ते दिवसे अनुक्रमे पांचम, बीज, अग्यारश अने बारश होय तो अवला नामनो योग थाय हे. आ योग सर्व कार्यमां अशुज हे."

पाकश्री यंथमां ऋतुने आश्रीने शुज तथा श्रशुज योग श्रा प्रमाणे हे.--

"कत्ति च मग्गसिरे वि ऋ पंचिम गुरुवार पुणवसू चेव। सुदया च हुंति सरए श्रदा दसमी कुजे ऋसुद्दा॥ १॥"

"कौतिंक अने मार्गशीर्ष मासमां पांचम, गुरुवार अने पुनर्वसु ए त्रणे एक दिवसे होय तो ते दिवसे शुन्न योग कहेवाय छे. तथा शरद् ऋतुमां (कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मासमां) आर्झा, दशम अने मंगळवार ए त्रणे एक ज दिवसे होय तो ते अशुन योग जाण्वो. १."

"पोले माहे ठडी जिगुत्तराफग्गु श्र कक्ककरा । श्रमुह इगारसि गुरुएा फग्गुएि पुवा य हेमंते ॥ २ ॥"

"पोप तथा माघ मासमां उठ, शुक्रवार खने जत्तराफाइगुनी एक ज दिवसे होय तो ते दिवसे कार्यनी सिष्टि थाय हे खर्थात् शुज हे. तथा हेमंत ऋतुमां (पोप खने माघमां) ख्राग्यारश, गुरुवार खने पूर्वीफाइगुनी एक ज दिवसे होय तो ते खराज हे. २."

"फग्गुण चित्ते मासे तेरिस सफला विसाह बुहवारी। वारिस सुके साइ वसंतकाले वि विज्ञिज्ञा।। ३॥"

"फाहगुन तथा चैत्र मासमां तेरश, विशाखा अने बुधवार एक ज हिवसे होय तो ते सफळ (शुज) हे. तथा वसंतकाळे (फागण अने चैत्रमां) वारश, शुक्त अने स्वाति एक ज दिवसे होय तो ते वर्ज्य हे. ३"

"वइसाह जिष्ठ सूरो पिनवय मूखो ऋ जत्तराफग्गू। सह गिम्ह ऋसुह तेरसि सणिवारे सवणनस्कत्तं॥ ध ॥"

१ अहीं मासनी गणतरी पूनमीया महीना प्रमाणे करवी. एटले के कार्तिक मास गुजराती प्रमाणे लेवो होय तो आश्विन वद तथा कार्तिक शुद जाणवो.

"वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमां रिववार, पमवो अने मूळ के जत्तराफाहगुनी एक ज दिवसे होय तो ते शुज हे. तथा बीष्म ऋतुमां (वैशाख तथा ज्येष्ठमां) तेरश, शिन-वार अने अवण नक्त्र एक ज दिवसे होय तो ते अशुज हे. ध."

> "श्रासाढ सावण विश्रा जत्तरज्ञद्दवय चेंददिण सुह छ । पाजसि श्रसुहो ज बुहो चजदिस पुवा य जहवया ॥ ५ ॥"

"श्राषाढ तथा श्रावण मासमां वीज, उत्तराजाइपद अने सोमवार एक ज दिवसे होय तो ते शुज हे. तथा प्रावृड्ड ऋतुमां (श्राषाढ तथा श्रावणमां) बुधवार, चौदश श्रने पूर्वाजाइपद एक ज दिवसे होय तो ते श्रशुज जाणवो. ५."

> "जह व आसो मासे सत्तमि सिणवार रोहिणी सफला। वासारते असुहा रवि कत्तिअ पुत्रमासी आ॥ ६॥"

"जादरवा तथा छाशो मासमां सातम, शनिवार छने रोहिणी एक ज दिवसे होय तो ते सफळ (शुज) हे. तथा वर्षा ऋतुमां रिववार, कृत्तिका छने पूर्णिमा एक ज दिवसे होय तो ते छाशुज हे. ६."

आ उए गायामां ऋतु अने मासना नाममां विपर्यय हो, कारण के नाममाळा विगेरे ग्रंथोमां आश्विन अने कार्तिक विगेरे बने मासनी शरद विगेरे ऋतु कही हे अने अहीं तो कार्तिक अने मार्गशीर्ष विगेरे बने मासनी ऋतुओं कही है. तथा आ गायाओं मां शिशिर ऋतु विख्कुख दीधी ज नथी अने वर्षा ऋतु तथा प्रावृड् ऋतु एक ज हतां वे जूदी जूदी ख़श्ने ह ऋतुनां नाम पूरां कर्या है. आ सर्व विपर्यास ते ग्रंथकर्ताए ज करेखों है, माटे तेमनो एवो ज मत हशे एम जलाय है.

हवे मूळ यंथकार रिव योग कहे हे.-

योगो रवैर्जात्कृत ४ तर्क ६ नन्द ए, दिग् १० विश्व १३विंशोशण्डुषु सर्व सिद्ध्ये। श्राचे १ न्डिया ५ श्वष्ठिप ए रुड्र ११सारी १५,राजो १६डुषु प्राणहरस्तु हेयः ६१

श्रर्थ सूर्यनुं जे नक्त्र चालतुं होय ते नक्त्रश्री गणतां ते दिवसनुं नक्त्र जो चोशुं होय तो चोशो रिव योग जाणवो उद्घं होय तो उठो रिव योग, नवमुं होय तो नवमो, दशमुं होय तो दशमो, तेरमुं होय तो तेरमो अने वीशमुं होय तो वीशमो रिव योग जाणवो. आटला रिव योग सर्व सिद्धिकारक ठे, एटले के आ योगने दिवसे करेखुं कार्य सिद्ध थाय ठे; परंतु सूर्यना नक्ष्त्रश्री ते दिवसनुं नक्त्र पहेलुं, पांचमुं, सातमुं, आठमुं, अग्यारमुं, पंदर गुं के सोळमुं होय तो ते योग प्राण्ने हरण करनारो ठे तेथी ते सर्व कार्यमां तजवा योग्य ठे. ६१.

आ रिव योग विषे हर्षप्रकाशमां कहां वे के.—

"एआए फलं कमसो विज्ञ सुरकं ४ जयं च सत्तूर्ण ६।

लाजं ए च कज्जसिष्ठी १० पुत्तुष्पत्ती १३ आ रज्जं २० च॥ १॥"

"आ रिव योगतुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे हे.—चोथा रिव योगे कार्य करवाथी घणुं सुख थाय हे, हुई होय तो शत्रुने जीताय हे, नवमे खाज थाय हे, दशमे कार्यसिद्धि थाय हे, तेरमे पुत्रनी छत्पत्ति थाय हे खने वीशमे राज्य मळे हे."

शुष्त लग्ननुं जेवुं बळ होय हे, तेवुं बळ आ रिव योगनुं होय हे. एम यतिवञ्चलमां कशुं हे. वळी कहुं हे के—

> "इकस्स जए पंचाणणस्स ज्ञङ्काति गयघमसहस्सा । तह रविजोग पण्ठा गयणम्मि गहा न दीसंति ॥ १॥"

"एक सिंहना जयथी सहस्र हाथीर्जनो समूह नासी जाय हे, तेम रिव योगथी नाश पामेर्ला यहा आकाशमां देखाता नथी अर्थात् जो रिव योग सारो बळवान् होय तो बीजा कुयोगो नासी जाय हे."

> "रविजोग राजजोगे कुमारजोगे श्रसुद्ध दिश्रहे वि । जं सहकक्षं कीरइ तं सबं बहुफक्षं होइ ॥ १ ॥"

"अशुज दिवसे पण जो रवियोग, राज योग के कुमार योग होय अने ते दिवसे जे शुज कार्य कर्युं होय ते सर्व कार्य वहु फळदायक थाय हे."

श्चा रिव योगमां श्रिजितित् नक्षत्र गणेखुं नथी, कारण के ग्रंथांतरोमां सत्यावीश रिव योगोनुं ज फळ कहेखुं हे. श्चा योगमां बीजो, त्रीजो, वारमो, सत्तरमो, ह्यीशमो श्चने सत्यावीशमो, श्चाटला रिव योग विषे कांइ कह्यं नथी तथा तेनो निषेध पण कयों नथी, तेथी तेटला योगो मध्यम जाणवा. वाकीना रिव योगोनुं शुजाशुजपणुं श्चहीं पण केट-लाकनुं साकात् कह्यं हे, श्चने केटलाकनुं फळ छपग्रहपणाए करीने हमणां ज कहेशे.

हवे सत्यावीश रिव योगोनी मध्ये जेमनी जपप्रह संज्ञा हे, ते कहे हे.— नोपप्रहास्तु जूत्ये जूता ५ कि ७ फणी ए न्झ १४ तिथि १५ धृति १० युगक्षे १ए। रिवजात्त्रथैकविंशादिषु पञ्चसु ११-११-१३-१४-१५ चरति जेबिन्दौ ॥ ६३ ॥

श्चर्य—सूर्यना नक्त्रथी चंद्रनुं (ते दिवसनुं) नक्त्र पांचमुं, सातमुं, श्रावमुं, चौदमुं, पंदरमुं, श्रावमुं, श्रोगणीशमुं, एकवीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं, चोवीशमुं के पचीशमुं होय तो ते नक्त्र जपमह कहेवाय हे. श्रा बार जपमहो श्रावा ीने माटे नश्री श्रशीत् श्रशुच है.

आ वार जपप्रहोमांना आठनी संज्ञा तथा तेमनुं विवाहादिक कार्यमां जे फळ थाय ठे ते नारचंदमां आ प्रमाणे कह्यं ठे.—

"विद्युन्मुल १ शुद्धा २ शनि केतू ४ हका ५ वज्र ६ कंप ७ निर्घाताः । ङ ५ ज ० ढ १४ द १० घ १एफ २२ व २२ ज २४ संख्ये रविपुरत जपग्रहा धिष्ण्ये॥१॥ फलमंगज १ पतिमरणे २ दशमदिनान्तस्तयाऽशनि निपातः ३ । सानुजपति ४ घननाशौ ५ दौःशीह्यं ६ स्थान ७ कुलघातौ ॥ २ ॥"

"पांचमा जपग्रहनुं नाम विद्युनमुख हे, आहमानुं शूल नाम हे, चौदमानुं अशिन, आहारमानुं केतु, ओगणीशमानुं हिस्का, वावीशमानुं वज्र, त्रेवीशमानुं कंप अने चोवीशमानुं केतु, ओगणीशमानुं हिस्का, वावीशमानुं वज्र, त्रेवीशमानुं कंप अने चोवीशमानुं केतु, ओगणीशमानुं हिस्का, वावीशमानुं वज्र, त्रेवीशमानुं कंप अने प्रत्याधी पुत्रनुं मरण थाय, श्रश्लिमां करवाथी दश दिवसनी अंदर वज्रपात थाय, केतुमां करवाथी नाना जाइ सिहत पितनो नाश थाय, हिस्कामां करवाथी धननो नाश थाय, वज्रमां करवाथी छःशीलपणुं थाय, कंपमां करवाथी स्थाननो नाश थाय अने निर्धातमां करवाथी कुळनो घात (नाश) थाय."

बाकीना चार छपग्रहो सामान्य रीते अनिष्ट फळने आपनारा हे. एकाशी पद नामना वेधचक्रादिकमां पण आ रीते ज छपग्रहोनुं फळ जाण्वुं.

हवे प्रसंगोपात्त आमल नामनो योग कहे हे. तेमां श्रजिजित् नक्त्र गणवानुं हे. एटले के श्रद्यावीश नक्त्रोनी गणतरीए जाणवो.—

"ित २ हया ७ क्के ए न्द्र १४ जूपै १६ क २१ ज्य २३ प्रयुग्विंशति २० प्रमे । सूर्यजाचन्द्रजे स्यादामलस्त्याज्यः सदा बुधैः ॥ १ ॥"

"सूर्यना नक्त्रथी चंष्रतं नक्त्र जो बीजे, सातमे, नवमे, चौदमे, सोळमे, एकवीशमे, त्रेवीशमे के श्राञ्यावीशमे होय तो ते श्रामल योग कहेवाय हे. श्रा योग शुज कार्यमां माह्या माएसे त्याग करवा लायक हे. "मलो यात्रासु रोधकृत्" श्राबुं चोथुं पाद प्रत्यं-तरमां हे. तेनो श्रर्थ ए हे के—"श्रा श्रामल योग यात्राने विषे रोध करनार हे."

श्रामल योग जाणवानो सहेलो जपाय नरपतिजयचर्यामां स्ना प्रमाणे कह्यो हे.—

"सूर्यजान्नु एयेन्दोर्ज सप्तजिर्जागमाहर । शुन्यं दौ वा न शेषौ चेदामलो नास्ति निश्चितम् ॥ १ ॥"

''सूर्यना नक्त्रथी चंदनुं नक्त्र गणवुं. पढ़ी तेने साते जाग लेवो. तेमां जो शून्य श्रथवा वे शेष न रहे तो श्रामल योग नथी एम निश्चे जाणवुं श्रर्थात् जो शून्य के वे शेष रहे तो श्रवस्य श्रामल योग होय हे." (आ आमस योग प्राये छत्तर दिशामां विशेष छपयोगी है.) आ छपरथी ए सिद्ध थयुं के नवमो रवियोग (शुन हे तोपण) यात्रादिकमां सारो नथी.

हवे दररोज थनारा आनंदादिक खपयोगो कहे छे.-

जपयोगास्त्वश्वि र मृगा २ श्खेषा ३कर ४ मैत्र ५ वेश्व ६ वारुणतः ७। रव्यादिषु तिहनत्रप्रमिताः क्रमतोऽित्रधानफलाः ॥ ६४ ॥

श्रर्थ—रिववारे श्रश्विनी नक्षत्रथी गणतां ते दिवसे (रिववारे) जेटलामुं नक्षत्र हाथ तेटलामो जपयोग ते दिवसे छे एम जाणवुं. सोमवारे मृगिशिरश्री गणवुं, मंगळवारे श्रश्येषाश्री, बुधवारे इस्तश्री, गुरुवारे श्रमुराधाश्री, शुक्रवारे जत्तराषाढाश्री श्रमे शिन-वारे शतिषक्षश्री गणवुं. ते रीते गणतां ते दिवसनुं जेटलामुं नक्षत्र होय तेटलामो जपयोग ते दिवसे जाणवो. श्रहीं श्रिजिजित् नक्त्र गणवानुं छे. ते जपयोगोनां नाम प्रमाणे तेमनुं फळ जाणवुं.

ते जपयोगोनां नामो स्त्रा प्रमाले हे.

श्रानन्दः १ कालदंमश्र १ प्राजापत्यः ३ सुरोत्तमः ४। सौम्यो ५ घ्वांको ६ घ्वजश्चेव ७ श्रीवत्सो ० वज्र ए मुक्तरौ १०॥६५॥ छत्रं ११ मित्रं ११ मनोक्षश्च १३ कंपो १४ खुंपक १५ एव च। प्रवासो १६ मरणं १७ व्याधिः १० सिक्षिः १ए शूखा १० मृतो११तया ॥६६॥ मुसखो ११ गज १३ मातंगौ १४ राक्तसोऽय १५ चरः १६ स्थिरः १७। वर्धमानश्चेति १० नाम्ना स्युरष्टाविंशतिः क्रमात्॥६९॥

अर्थ-आनंद, काखदंक, प्राजापत्य, सुरोत्तम, सौम्य, ध्वांक, ध्वज, श्रीवत्स, वज्र, सुद्दगर, ठत्र, मित्र, मनोक्ष, कंप, खुंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, सिद्धि, शूद्ध, श्रमृत, मुसळ, गज, मातंग, राक्स, चर, स्थिर तथा वर्धमान, श्रा अठ्यावीश जपयोगोनां श्रनु- क्रमे नाम जाणवां.

यानंदादिक योगनुं कोष्टक.

योगनाम	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुऋ	शनि
१ श्वानंद १ काळदंक ३ प्राजापत्य ४ सुरोत्तम	श्रश्विनी जरणी कृत्तिका रोहिणी	ञ्चार्जा पुनर्वस्	अश्लेषा मधा पूर्वाफा ॰ उत्तराफा ॰	इस्त चित्रा स्वाति विशाखा	ज्येष्ठा मुळ	श्रवण	शतजिया पूर्वाजाड ० उत्तराजा० रेवती

योगनाम	रवि	सोम	मंग ळ	बुध	गुरु	शुक	शनि
५ सौम्य	मृगशीर्ष	ऋश्वेषा	इस्त		जन्तरा षाढा	शत्त्रिपा	श्चिती
६ ध्वांक	्र श्राज्य	म्घा	चित्रा	ज्येष्ठा	श्रजिजित्	पूर्वाञाः	न्रूरणी
९ ध्वज	पुनर्वस्	पूर्वाफा¤	्स्वाति	मुळ	श्रवृष	जन्तरा ना•	कृत्तिका
ट श्रीव त्स	पुष्य	उत्तराफा ॰	विशाखा	पूर्वापाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
ए वज्र	ऋश्वेषा	इस्त	अनुराधा	जन्तरापा -	शत्त्रिषा	अश्विनी	मृगशीर्ष
१० मुद्गर	मधा	चित्रा	ज्येष्ठा	ऋजिजित्	पूर्वाञा०	जुरणी	স্ত্রা
११ उन्ने	पूर्वाफाण	स्वाति	मूळ	श्रुवण	उत्तराजा •		पुनर्वसु
१२ मित्र	जैत्तराफा ०	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
१३ मनोक्त	इस्त	ऋनुराधा	जे सराषाढा	शतनिषा	छा श्विनी	मृगशीर्ष	ऋश्लेषा
१४ कंप	चित्रा	ज्येष्ठा	अ जिजित्	पूर्वाजाः	जुरखी	স্থাহা	मघा
१५ द्धंपक	स्वाति	मूळ		जे सराजा ॰	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफा॰
१६ प्रवास	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	जत्तराफा ॰
१७ मरण	श्चनराधा	जत्तरा षाढा	शतित्रिपा	ऋश्विनी	मृगरीर्ष	अ श्लेषा	इस्त
१० व्याधि	ज्येष्ठा	श्रजिजित्	पूर्वाञाङ्	जरएी	ऋार्जा	मुधा	चित्रा
रए सिक्रि	्मूळ	श्रवण	जेत्तरात्रा ॰	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाण	्रस्त्राति
२० शुळ	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिएी	पुष्य	जत्तराफा ०	विशाखा
२१ अमृत	जेत्तरा षाढा	•	ऋश्विनी	मृग३ीर्ष	अ श्लेषा	इस्त	श्चनुराधा
११ मुसळ	अजिजित्		न्नरएी	स्त्रार्डा	म्घा -	चित्रा	ज्येष्ठा
१३ गज	श्रवण	जसराजा ः	_	पुनर्वसु	पूर्वाफाण	स्वाति	मूळ
२४ मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिएी	पुघ्य	जसराफा □	विशाखा	पूर्वाषाढा
२५ राक्स	शतिजपा	श्चिनी	मृगशीर्ष	ऋश्लेपा	इस्त		जसराषा ०
२६ चर	पूर्वाचाङ्	न्नरणी	ञ्चाद्रां	मघा	चित्रा	ब्ये धा	छा निजित्
१७ स्थिर	<u>ज</u> सराजा •	_	पुनर्वसु	पूर्वाफाः	स्वाति	मुळ	श्रुवण
२० वर्धमान		रोहिणी	पुष्य	उसराफा ॰	विशाखा	पूर्वाषादा	धनिष्ठा

आ योगोनुं फळ तेमनां नामवेम ज जणाय तेवुं ने तेथी जूंड कहेता नथी। केटलाक आचार्य प्राजापत्य, सुरोत्तम, मनोक्ष, कंप, खंपक, प्रवास, मरण, व्याधि, शूळ अने अने गज, ए दश योगने स्थाने अनुक्रमे धूम्र, प्रजापित, मानम, पद्मा, खंबक, जत्पात, मृत्यु, काण, शूज अने गद, एवां नामो पण कहे ने आ जपयोगो विष्कंजादिक दर-रोजना योगोनी साथे ज सर्वदा रहेला होवाथी सार्थक नामवाळा ने

हवे कुयोगोने विषे अपवाद कहे हे.— यस्त्रातिकूट्यं वाराणां तिथिनक्षत्रसंजवम् । हृणवंगखसेष्वेव तत्त्यजेदिति केचन ॥ ६०॥ श्चर्य—संवर्तक श्चने कर्क विगेरे तिथिथी जत्पन्न थयेख तथा जत्पात, मृत्यु, काण श्चने जपयोगादिकने विषे नक्त्रथी जत्पन्न थयेख वारोनुं प्रतिकूळपणुं हूण देश, वंग देश श्चने खस देशमां ज त्याज्य हे एम केटलाक कहे हे. तात्पर्य ए हे के लास जरूरीश्चात कार्य न होय तो बीजा देशोमां पण श्चा योगो वर्जवा योग्य हे.

हवे शुज श्रते श्रशुज योगना संकरमां शुज योगनुं प्रवळपणुं कहे हे.— सिद्धियोगः कुयोगश्च जायेतां युगपद्यदि । कुयोगं तत्र निर्जित्य सिद्धियोगो विजुंजते ॥ ६ए॥

अर्थ—जो कदाच एकी वखते सिद्धि योग अने कुयोग जेळा थया होय, तो तेमां कुयोगने जीतीने सिद्धि योग छहास पामे हे (प्रवळ याय हे). अहीं सिद्धि योग शब्दनो यौगिक अर्थ होवाथी सर्वे शुज योगो जाणवा.

हवे दिवसना (दररोजना) विष्कं जादिक योगो कहे हे.-

विष्कं जः १ प्रीति १ रायुष्मान् ३ सौजाग्यः ४ शोजन ५ स्तथा। श्रितगं मः ६ सुकर्मा ९ च धृतिः ए शूलं ए तथेव च ॥ ९० ॥ गं मो १० वृद्धि ११ ध्रुव ११ श्रेव व्याघातो १३ हर्षण १४ स्तथा। वज्रं १५ सिद्धि १६ व्यंतीपातो १९ वरीयान् १० परिघः १ए शिवः १० ॥ १॥ सिद्धः ११ साध्य ११ शुनः १३ शुक्लो १४ ब्रह्मा १५ चैन्डो १६८थ वैधृतः १९। इति सान्वयनामानो योगाः स्युः सप्तविंशतिः ॥ ९१ ॥

श्रर्थ—विष्कंत १, प्रीति २, श्रायुष्मान् ३, सौनाग्य ४, शोजन ४, श्रितगंत ६, सकर्मा ४, धृति ए, शूल ए, गंको १०, वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्याघात १३, हर्पण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १५, वरीयान् १०, परिघ १ए, शिव २०, सिद्ध २१, साध्य २२, शुन २३, शुक्ल २४, ब्रह्मा २५, इंड २६ श्रमे वैधृत २५. श्रा सत्यावीश योगो श्रम्वर्थ संज्ञावाळा एटले पोतपोतानां नाम प्रमाणे फळ श्रापनारा हे.

आ योगोनां फळ माटे नारचंदनी टिप्पणीमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो है.-

"विस्कंज १ सूल २ गंमे २ श्राइगंमे ४ वका ए तह य वाग्याए ६। वइधिइ व सूराइकमा श्राइका मूलजोगार्च ॥ १॥"

"रिववारे विष्कंत्र होय, सोमवारे शूळ होय, मंगळवारे गंम होय, बुधवारे छितिगंम होय, गुरुवारे वज्र होय, शुक्रवारे व्याघात होय छाने शनिवारे वैधृति होय तो ते मूळ योगो अत्यंत छष्ट हे." धा सत्यावीश योगोनी मध्ये जेटला इष्ट योगो हे, तेमां पण जेटली इष्ट घनी है, ते कहे हे.--

व्यतिपातवेधृताख्यो सकलो परिघस्य पूर्वमर्ऊं च । प्रथमः पादोऽन्येष्वपि विरुद्धसंङ्गेषु हातव्यः ॥ ७३ ॥

अर्थ—व्यतीपात अने वैधृत नामना योगो समय (आला) तजवा खायक हे, परि-धनो पहेलो अर्ध जाग त्याच्य हे, अने वाकीना विरुद्ध (अशुज) नामवाळा योगोमां प्रथम पाद वर्जवा योग्य हे. आ योगोनो अर्ध जाग तथा एक पाद पंचांगमां खलेखी धनीचेने अनुसारे समजवा विरुद्ध नामवाळा योगो विष्कंज, गंम, अतिगंम, शूळ, व्याघात तथा वज्रपात जाणवा

हपर जे प्रथम पाद वर्जवानुं कहां हे, तेमां वीजो प्रकार कहे हे.— त्यजेद्या पञ्च विष्कंत्रे षट्र तु गंगातिगंगयोः। घटिकाः सप्त शुक्षे तु नव व्याघातवज्रयोः॥ ९४॥

अर्थ—अथवा तो विष्कंज योगमां पहेली पांच धमी तजवी, गंम अने अतिगंममां पहेली उ उ धमी, शुळमां प्रथमनी सात धमी अने व्याघात तथा वज्ज योगमां प्रथमनी नव नव धमी वर्जवा योग्य हे.

विष्कं जादिक छष्ट योगोमां एकार्गखवेध नामना योगनी जत्पत्ति श्राय हे ते कहे है.—

एकार्गतः क्रयोगेषु चन्द्रेऽकें च परस्परात्। गते साजिजिदोजकै लाज्यः पादान्तरो न चेत्॥ ७५॥

अर्थ—इष्ट योगने दिवसे अजिजित् सहित अठ्यावीशे नक्त्रोमांना विषम नक्त्रमां परस्पर (सामसामा) चंड अने सूर्य रह्या होय तो ते एकार्गत कहेवाय हे, ते तजवा योग्य हे; परंतु जो एकार्गत योग पादना आंतरावाळो न होय तो ज तजवा तायक हे. आ एकार्गत योग इष्ट योगोमां आय हे एम कहां हे, माटे प्रीति, आयुष्मान् विगेष्टे शुज योगमां ते थतो ज नथी एम सूचवन कर्यु हे. कुयोग हतां पण आ योगनो जंजव क्यारे याय हे? ते छपर चंड अने सूर्यनी स्थिति दर्शावी हे. अहीं अजिजित् तक्षेत्रं होवाथी अठ्यावीश नक्त्रो जाणवां. आ प्रमाणे तत्ताना श्लोकमां पण समजवं. आ शही-कनो समय जावार्थ आ रीते हे.—आगत कहेवामां आवे ए रीते एकार्गत चक्क करी तेमां अनुक्रमे अठ्यावीश नक्त्रो तक्त्रों तक्त्वां, पही जो चंड्यी सूर्य अने सूर्यशी चंड एक बीजाथी नियम नक्त्रे एक ज लीटीमां रहेता होय तो एकार्गत थाय हे। अने ते सर्व

त्रण, पांच, सात, नव इत्यादि एकी नश्चत्र विषम कहेवाय छे.

कार्यमां तजवा योग्य हो, एटले के जे नक्त्रमां एकार्गल पमेलो होय ते नक्त्र शुज कार्यमां तजवा योग्य हो, परंतु सूर्ये तथा चंडे आक्रमण करेलां नक्त्रोनां पादोनो आंतरो एटले परस्पर सन्मुल नहीं रहेवारूप विशेष न होय अर्थात् तेमनां पादो पासे पासे ज होय तो ते एकार्गल अवश्य वर्जवा योग्य हे अने पादना आंतरावाळो होय तो त्याग करवो वा न करवो.

श्रा एकार्गख योगने ज स्थापनादिकना विधिए करीने विशेष प्रकारे कहे हे.-

तिर्यक्त्रयोदशोर्द्धंकरेखे खर्जूरके त्यजेत्। क्रयोगे शीर्षजादर्कचन्डावेकार्गवर्द्दगौ॥ ७६॥

अर्थ—तेर रेखा (वींटी) आमी अने एक रेखा छनी ए रीते खजुरीनुं वृक्ष करतुं. तेना मलक (शिखर) पर आगख कहेवामां आवशे ए रीते नक्षत्र मूकतुं (खखतुं). पठी दिक्षण बाजुशी अनुक्रमे पठीनां सत्यावीश नक्षत्रो दरेक रेखाए मूकवां. पठी एक रेखाए अर्गवने ठेमे रहेलां बन्ने नक्षत्रोने विषे जो चंद्र अने सूर्य रह्या होय तो ते एकार्गक्ष कहेवाय ठे. तेमां पण सन्मुख रहेलां बन्ने नक्षत्रोनां बन्ने पादमां ते सूर्य चंद्र रहेला होय तो ते आंतरा रहित एटले संपूर्ण एकार्गल थाय ठे ते आ प्रमाणे.—

"श्राद्येन विध्यते तुर्यो दितीयेन तृतीयकः। तृतीयेन दितीयस्तु तुर्येण प्रथमस्तथा॥१॥"

"पहेला पादवमे चोथा पादनो वेध थाय है, वीजा पादवमे त्रीजा पादनो वेध थाय है, त्रीजा पादवमे वीजा पादनो वेध थाय है, त्रीजा पादवमे वीजा पादनो वेध थाय है, त्रीजा पादवमे विज्ञा पादनो वेध थाय है, त्री चोथुं छने पहेलुं तथा बीजुं छने त्रीजुं पाद, ए परस्पर छांतरारहित कहे- वाय है एम समजबुं. छाथी विपरीतपणे जो सूर्य चंद्र रह्या होय तो ते पादना छांतरा- वाळो कहेवाय है छने तथी ते दोषरहित है, जेम कोइ धनुर्धर निशानने विंधवा लाग्यो, है वखते जो तेनी दृष्टि निशानथी जरा पण चूके तो ते निशान विंधातुं नथी. तेम वेध पण जो पादना छात्र जागथी छष्ट थयो होय तो ते फळदायक नथी. ते विषे यतिवक्ष- जमां क खं हे के—

"बाणायदृष्टिपाताद्यदृष्ट्रयं जिनस्ति धानुष्कः । तदसमदृष्टिगतो वेधो धिष्णयं प्रदूषयति ॥ १ ॥"

"जेम धनुष्धारी बाणना श्रम्न जाग पर दृष्टि राखीने खद्दय (निशार) ने विधे हे, तेम सम (सरंखी) दृष्टिमां रहेखो वेध नक्त्रने दृषित करे हे." (श्रा प्रमाे वीजा वेधोमां पण जाणवुं.) हवे खज़रीना मस्तक पर कयुं नहात्र मूक्त तेनी रीत वतावे हे.— खर्जूरकस्य शिषक्तमानमेकार्गक्षे मतम् । योगांकः सैक र्जजोऽन्यः साष्टाविंशतिर्द्धितः ॥ ५७ ॥

श्चर्य—इष्ट दिवसे विष्कंत्रादिक योगोमांनो जेटलामो योग होय ते जो विषम होय तो तेमां एक जमेरवो, अने सम होय तो तेमां श्रठ्यावीश जमेरवा पढ़ी ते क्लेने श्चर्धा करवा जे संख्या आवे ते संख्यावाळुं (तेटलामुं) नक्षत्र खजुरीने मस्तके मूकवुं. ए प्रमाणे खजुरीना मस्तकना नक्षत्रनुं प्रमाण एकार्गलमां कहेलुं हो

एकागेल	[यंत्र
चन्द्र सृ	गशीर्ष रवि
रोहिणी	आर्द्री
कृत्तिका ———	पुनर्वसु
भरणी———	पुच्य
अश्विनी	अश्चेषा
रेंबती	सघा
उत्तराभाः	——पूर्वाफा०
पूर्वाभा०	उत्तराफा०
शतभिषा	 हस्त
धनिष्ठा——	———चित्रा
श्रवण	स्वाति
अभिजित्——	—— विशाखा
उत्तराषाढा	अनुराधा
पूर्वापाडा	ज्येष्टा
स्	्ळ

1	गद	रेध	यंत्र
चंद्र		₹	वि
ધ— રૂ—			—ং —থ
হ—			—₹
? —			—ъ

समजुती—इष्ट दिवसे शूळ योग नवमो हो, तेथी तेमां एक वधारी दश कर्या, तेनो अर्ध करवाथी पांच आव्या, तेथी पांचमुं नक्षत्र मृगशीर्प हो माटे ते नक्षत्र मसक पर आवे. एरीते इष्ट दिवसे गंम योग होय तो ते दशमो होवाथी तेमां आठ्यावीश जमेरी अर्ध करवाथी जंगणीश आवे हो, तेथी जंगणीशमुं मूळ नक्षत्र मसक पर मूक्दुं. ए रीते वीजा कुयोगोमां पण जाणवुं.

मस्तकनुं नक्तत्र खाववा माटे खद्य कहे हे के—
"शूखे मूर्जि मृगो मघा च परिघे चित्रा पुनर्वेधृते
व्याघाते च पुनर्वसू निगदितौ पुष्यश्च वन्ने स्मृतः।
गंमे मूखमश्चाश्विनी प्रथमके मैत्रोऽतिगंमे तथा
सार्पश्च व्यतिपात इन्छतपनावेकार्गखस्थौ यदा॥ १॥"

आ॰ ८

"जो शूळ योग होय तो मस्तक पर मृगशीर्ष नक्तत्र आवे, परिघ योग होय तो मघा आवे, वैधृत होय तो चित्रा, व्याघात योग होय तो पुनर्वसु, वज्य योग होय तो पुष्य, गंम होय तो मूळ, विष्कंत्र होय तो अश्विनी, अतिगंम होय तो अनुराधा अने व्यतिपात होय तो अश्विमी, अतिगंम होय तो अनुराधा अने व्यतिपात होय तो अश्विमा नक्तत्र मस्तक पर आवे. ए प्रमाणे नक्तत्रो स्थापी पढी चंज तथा सूर्य जे नक्तत्रना होय ते नक्तत्र जिप्त आपवो."

हवे सात शलाकाना चकवमे वेध योग कहे हे.— वेध ऊर्ध्वतिरः सप्तरेखे पूर्वादितोऽग्निजात् । जस्य रेखायगे खेटे हेयश्चेन्न पदान्तरम्॥ ९०॥

श्चर्य—छन्नी तथा श्चामी सात सात रेखाने विषे पूर्वादिक दिशाना क्रमे स्थापन करेक्षां कृत्तिकादिक नक्ष्त्रश्ची इष्ट दिवसना नक्ष्त्रनी रेखाना श्चय्न आगमां जे नक्ष्त्र हे तेमां
कोइ यह होय तो वेध श्राय हे. ते त्याग करवा लायक हे, पण जो पादनुं श्चांतरुं न होय
तो त्याग करवा लायक हे. एटले के—छन्नी तथा श्चामी सात सात रेखा करवी, पह्नी
तेमने हेमे पूर्वादिक दिशाना क्रमे कृत्तिकाथी श्चारंत्रीने सात सात नक्ष्त्रों (श्वितित्त्
सहित) स्थापवां. पह्नी जे जे यह जे जे नक्ष्त्रमां होय, ते ते यह ते ते नक्ष्त्रनी पासे
मूकवो. पह्नी जे रेखाने हेमे इष्ट दिवसनुं नक्ष्त्र श्चाव्युं होय, ते रेखाने बीजे हेमे जो
कोइ यह श्चाव्यो होय तो ते यहवमे ते इष्ट नक्ष्त्रनो वेध श्र्यो जाणवो. ते वेध त्याग
करवा खायक हे, कारण के "क्रूर वेध होय तो मृत्यु ज श्वाय हे श्चने सौम्य वेध होय तो
सर्वथा खुलनो नाश श्वाय हे." श्चा वेधनो श्चपवाद कहे हे.—जो ते वेध पूर्वनी रीते
पादना श्चांतरावाळो होय तो त्याग करवो या न करवो. एटले के इष्ट नक्ष्त्रना जे पादमां
कार्य करवुं होय, श्चने तेनी सन्मुखना नक्ष्त्रना पादमां जो ते यह न होय, परंतु पादने
श्चांतरे होय तो श्चा यह वेध पादांतित श्चा, तेथी ते दूषणवाळो नश्ची. ते विषे
पूर्णज्ञ कहे हे के—

"विद्ध पादं परित्यज्य कुर्यात्कार्यमशंकितः। सर्पदष्टाङ्कुखिन्नेदे विषवेषोप्तवः कुतः॥ १॥"

"वेधवाळा पादनो त्याग करीने निःशंक रीते कार्य करबुं, केमके सर्पे मसेली आंगुलीनो बेद कर्या पढ़ी विषना प्रवेशनी छत्पत्ति क्यांथी होय ?"

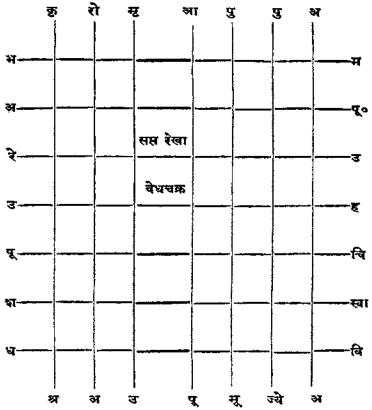
केशवार्क तो पादांतिरत यह वेधने पण यहण करवानो निषेध करे है. ते कहे है के—
"विश्लेषमायाति यथासुनिः स्वैरेणः शरेणैकिदिशि इतोऽि ।
तथांद्विधादिप तारकाणां क्रूरस्य नश्येद्वलसत्त्वसंपत् ॥ १॥"
"जेम मृग शरवके एक जागमां हणायो होय तोपण पोताना प्राणवके वियोग पामे हे

एटखे मरी जाय हे, तेम क्र घहवमे नक्त्रना पादनो वेध खवाथी पण वळ, सत्त्व छने संपत्तिनो नाश थाय हे."

श्रीपति कहे हे के—
"कदं सौम्यग्रहैविंदं पादमात्रं परित्यजेत्। क्रूरैस्तु सकदं त्याज्यमिति वेधविनिश्चयः॥ १॥"

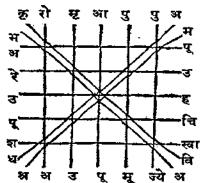
"जो नक्षत्रनो सौम्य महवमे वेध थयो होय तो मात्र ते पादनो जत्याग करवो, अने ऋर महवमे वेध थयो होय तो ते आखुं नक्षत्र तजबुं ए प्रमाखे वेधनो निश्चय (व्यवस्था) हे "





हवे विवाहमां विचारवा योग्य बीजो वेध योग पांच शलाका चक्रवेक बतावे है.— विवाहे पूर्ववत्पञ्च रेखा है है तु कोणके । लिखित्वाऽग्निजतो जानि वेधं तत्रापि चिन्तयेत् ॥ ५० ॥ श्चर्थ—विवाहने विषे पूर्वनी जेम एटले छन्नी तथा स्नाही पांच पांच रेला तथा चारे खुणाश्रोमां वने रेखा करीने कृत्तिका नक्त्रत्रत्री आरंजीने आठ्यावीश नक्त्रोने स्थापन करी तेमां पण वेधनो विचार करबो.

पंच रेखा भक्र



अहीं मूळ श्लोकमां "तत्रापि" ए पदमां "अपि"

पू शब्द आप्यो हो, ते अव्यय हो, अने अव्ययोना अनेक
अर्थ होवाथी अहीं अपि शब्दनो अर्थ अवधारण एटले
ह निश्चय जेवो करवानो हो, तेथी एवो अर्थ थाय हे के—
च पूर्वे कहेलो सात रेखावाळो वेध प्रतिष्ठादिक सर्व कार्योमां
चा जोवो, अने विवाहमां तो आ पंच रेखावाळो ज वेध जोवो
विवाह हंदावनमां कहां हे के—"विवाह

सिवाय बीजा कार्यमां सात रेखावाळा यंत्रनो वेध जोवो." आ वेधमां पण पूर्वनी जेम पादांतरितनी व्यवस्था जाणवी. आंतरा रहित घहनो वेध होय तो तेनुं फळ आ प्रमाणे कहुं हे.—

"रिव विहवा कुजि कुखलय बुहि वंब्रा जिगु श्रपुत्तं सिए दासी। गुरुवेहेण तवस्सिणि विद्यासिणी राहुकेकाहिं॥ १॥"

"रिवना वेधमां खन्न करवाथी स्त्री विधवा थाय है, मंगळना वेधमां करवाथी कुळनो इय थाय, बुधना वेधमां करवाथी वंध्या थाय, शुक्रना वेधमां करवाथी पुत्र रहित थाय, शनिना वेधमां करवाथी दासी थाय, गुरुना वेधमां करवाथी तपस्विनी थाय, तथा राहु अने केतुना वेधमां करवाथी विखासवाळी थाय."

श्रा वेध दिशामां पण जोवो एम पूर्णज्ञ कहे हे. ते कहे हे के.—
"सूरिपयाइसु सत्तसदायं वयगहणाइसु पंचसदायं।
कत्तिश्रमाइ हविका हु चकं जोश्रह सिसणो तो गहवेहं॥ १॥"

"श्राचार्यपद तथा जपाध्यायपदादिकनी प्रतिष्ठादिकमां कृत्तिकादिक नक्त्रोनुं सप्त शद्धाका चक्र स्थापी ते मध्ये चंद्रमानो प्रहोनी साथे वेध जोवो, अने दीक्रामां पांच शद्धाका चक्र स्थापी चंद्रमानो प्रहोनी साथे वेध जोवो."

हवे बत्ता योग कहे हे.-

सत्ता वज्येंष्टजस्याकीदीनां साजिजिदीयुषाम्।

भृत्या १० कृत्यु २२ हु २० सप्ता ७ ईत् २४ पञ्चा ८ कृत्यं २२ क एसंख्याम् ए० अर्थ—इष्ट नक्त्रथी अदारमा नक्त्रने विषे रहेलो सूर्य इष्ट नक्त्रने लातवने हणे

हे, इष्ट नक्त्रथी बाबीशमा नक्त्रे रहेलो चंड इष्ट नक्त्रने खातवमे हणे हे, ए रीते सत्यावीशमे रहेलो मंगळ, सातमे रहेलो बुध, चोबीशमे रहेलो गुरु, पांचमे रहेलो शुरू, बाबीशमे रहेलो शिन छाने नवमे रहेलो शहु इष्ट नक्त्रने हणे हे. छाहीं छाजित्सहित छाठ्यावीश नक्त्रो लेवानां हे. खात (खत्ता) एटले पादनो प्रहार कहेवाय हे, छाने ते छात्वादिकनी जेम प्राये पाइळथी मारे हे, माटे छा प्रमाणे कहुं.

हवे जोशीर्रने नक्त्रोनी गणतरी सहेलाइथी थवा माटे आगळथी लत्तर मारे ते पाठांतरवमे बतावे हे.—

बत्तयन्ति जमकीयाः खर्कतः साजिजित्कमात्।

श्वर्का १२ ष्टा ए मि ३ विकृत्यं २३ ग ६ तत्त्वा २५ ष्ट ए प्रकृति २१ प्रमम् ए१ (सूर्या १२ ष्ट ए नि ३ त्रयोविंश २३ षद् ६ तत्त्वा २५ ष्टै ए कविंशकम् २१, पाठान्तरं)

श्रर्थ — सूर्य पोताना नक्षत्रथी बारमा नक्षत्रने आगळनी खात मारे हे, चंद्र आहमा नक्षत्रने, मंगळ त्रीजा नक्षत्रने, बुध त्रेवीशमा नक्षत्रने, गुरु ह्या नक्षत्रने, शुरू पचीशमा नक्षत्रने, शनि आहमा नक्षत्रने आने राहु एकवीशमा नक्षत्रने खत्ता मारे हे. आहीं पण अत्रिजित् सहित नक्षत्रो गणवां.

पान्नजनी खत्ता तथा त्रागळनी खत्ता ए बन्ने रीते गणतां एक ज ऋषे त्रावे हे. जेमके इष्ट नक्तत्र ऋष्विनी नक्तत्र हे, त्यांथी ऋढारमुं नक्तत्र ज्येष्ठा हे, ते ज्येष्ठामां रहेलो सूर्य ऋष्विनीने पान्नळथी जात मारे हे, तथा सूर्यनुं पोतानुं नक्तत्र ज्येष्ठा हे, त्यां रहेलो सूर्य आगळना वारमा नक्तत्रने एटले ऋष्विनीने जात मारे हे. ए रीते सर्वत्र जाणुं.

श्रहीं कोई शंका करे के—इष्ट दिवसनुं जे नक्षत्र होय ते ज नक्षत्र चंछनुं पण होय हो, श्रमे त्यां रहेलो चंछ जो पाछळना बावीशमा अथवा आगळना आगणा नक्ष्त्रने लात मारे तो तेमां इष्ट नक्ष्त्रने शुं आव्युं ? कांइ ज नहीं, तेथी इष्ट नक्ष्त्रने चंछनी लक्षानो विचार करवो व्यर्थ हो. आ शंकानुं समाधान ए हो जे चंछ परिपूर्ण (पूर्णिमानो) थइने ज नक्ष्त्रने लक्षा मारे हो, पण बीजो चंछ लक्षा मारतो नथी. ते विषे श्रीपित कहे हे के—"धाविंशं परिपूर्णमूर्तिरुपुणः संतापयेक्षेत्तरः" "परिपूर्ण मंमळवाळो चंछ पाछळना बावीशमा नक्ष्त्रने संतापे हो, पण बीजो अपरिपूर्ण चंछ संतापतो नथी." तेथी करीने गइ पूर्णिमा जे नक्ष्त्रमां समाप्त श्रइ होय ते ज चंछनुं नक्ष्त्र धारीने त्यांथी गण्तरी करवी. यतिवञ्चन्रमां पण कह्यं हे के—

"चकार यत्र नक्त्रे राकान्तं रजनीकरः। तत्रश्राष्ट्रमनक्त्रं स पुरो हन्ति खत्तया॥१॥" "चंद्रे जे नक्त्रमां पूर्णिमानो श्रंत कर्यो होय, ते नक्त्रथी श्राठमा नक्त्रने ते श्राग-ळनी खातवने हणे हे."

> हवे बत्ताने विषे श्रन्य श्राचार्यनो मत पण बतावे हे.— श्रमतो नवमे राहोः सप्तविंशे शृगोस्तु से । केचिज्ज्योतिर्विदः प्राहुर्बत्तां तामपि वर्जयेत् ॥ ठ१ ॥

अर्थ-राहु पोताना नक्तत्रथी नवमा नक्तत्रने अने शुक्र सत्यावीशमा नक्तत्रने आग-ळनी खात मारे हे, एम केटलाक ज्योतिर्विद कहे हे, माटे ते खत्ता पण वर्जवा योग्य हे.

त्रिविकम तो एम कहे वे के—"नख २० संख्यं तमो हन्ति" "राहु पोताना नक्ष-त्रश्री वीशमा नक्त्रने खत्ता मारे वे."

खत्तानुं फळ पौर्णजब ज्योतिषमां आ प्रमाणे कह्युं हे.—
"अणुजविणासे १ नासो २ कजानावा २ जयं ४ विहवहेर्छ ए।
गुरु १ बुह २ सि अ ३ सिस ४ रवि ५ हयरिरकेषु मरणमन्नेसु ॥ १॥"

"गुरुए हणेखा नक्त्रमां कार्य करवाथी नाना जाइनो नाश थाय, बुधथी हणायेखा नक्त्रमां कार्य करवाथी पोतानो नाश थाय, शुक्रथी हणायेखा नक्त्रमां कार्यनो नाश थाय, चंके हणेखा नक्त्रमां जय छपजे, अने रिवए हणेखा नक्त्रमां कार्य करवाथी वैजवनो नाश थाय, तथा बीजा (मंगळ, शिन तथा राहु) ग्रहोए हणेखा नक्त्रमां कार्य करवाथी मरण थाय."

श्रहीं वृद्धों कहें है के—''सौम्य ग्रह्मी बत्ता श्रह्य दोष करे है, केमके ते बत्ता नक्षत्रनी खर्बळता ज करे है, श्रमे क्र्र ग्रह्मी खत्ता तो मरण श्रमे दारिद्य विगेरे श्रमर्थने करे है." केशवार्क पण कहे है के—

"चरुनि निर्देखिते शुजलत्तया न फलमस्ति बलस्य गलत्तया। श्रशुजलित्रमत्ति तदूढयोर्धनसुतानसुतापकरं परम्॥ १॥"

"शुज प्रहनी लत्तावमें हणायेला नक्षत्रमां कार्य करवाथी बल रहित होवाथी कांइ पण श्रशुज फळ थतुं नथी, पण श्रशुज यहनी लत्तावमे हणायेलुं नक्षत्र तो तेमां पर-णेला दंपतीना धन तथा पुत्रनो नाश करे हे श्रने जीवने संतापकारक थाय हे."

वळी अंथांतरमां आ प्रमाणे कहां हे.—

"सौम्यखत्ताहतं पातोपग्रहाद्येश्च दृषितम् । जपादं वर्जयेदेव जं च केन्द्रे न चेह्युजाः॥ १॥"

"जो कदाच तत्काळ कार्य करवानुं होय, अने केंद्रमां शुज ग्रहो होय तो सीम्य ग्रहनी खत्ताथी हणायेखा तथा पात अने उपग्रहादिकवमे दूषित थ्रयेखा नक्षत्रनुं ते पाद ज त्याग करतुं, परंतु केंडमां शुज ग्रह न होय तो सौम्य ग्रहनी खत्ताथी पण हणायेखुं आखुं नक्षत्र तजवा योग्य हे."

हवे पात योग कहे हे.-

पातः सूर्यर्कतोऽश्लेषा मघा चित्रानुराधिका।

श्रुतिः पौष्णं च यत्र स्युस्त्याज्यस्तत्संख्यन्नेऽश्विनात् ॥ ७३ ॥

अर्थ—सूर्यना नक्षत्रथी अश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा, अवण अने रेवती ए नक्त्रों जेटली संख्यावाळां अश्विनीथी गणतां होय तेटली संख्यावाळां नक्त्रमां पात योग जाणवो, अने ते योग शुन्न कार्यमां वर्जवा योग्य हे (आ योगने त्रिश्ळपात पण कहे हे) जावार्थ ए हे के ज्यारे सूर्य ज्येष्ठा नक्त्रमों होय त्यारे ज्येष्ठा नक्त्रश्री अश्लेषा अोगणीशमुं हे, मघा वीशमुं हे, चित्रा चोवीशमुं हे, अनुराधा सत्यावीशमुं हे, अवण पांचमुं हे, अने रेवती दशमुं हे. तेथी ते दिवसे अश्विनीथी गणतां ओगणीशमुं मूळ हे, वीशमुं पूर्वाषाढा हे, चोवीशमुं शतिषक् हे, सत्यावीशमुं रेवती हे, पांचमुं मृगशीर्ष हे, अने दशमुं मघा हे, तेथी करीने आटलां नक्त्रोमां पात योग हे एम जाणवुं. ए रीते बीजुं पण जाणवुं. आ पात योगमां अन्निजित् गणवुं नहीं.

श्रहीं सहेखाइने माटे श्राम्नाय कहे हे.— पातं शूखस्य गंमस्य हर्षेण्व्यतिपातयोः । साध्यवैधृतयोश्चान्ते धिष्ण्यं यत्तत्र वर्जयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ — शुळ, गंम, हर्षण, व्यतिपात, साध्य अने वैधृत, ए ज योगने अंते जे नक्त्र होय, ते नक्षत्रमां पात योग होय जे, अने ते पात योग वर्जवा योग्य जे.

ते उपात योगनां नाम नरपितजयचर्यामां श्रानुक्रमे श्रा प्रमाणे कह्यां छे.—
"पवनः १ पावकश्चेव २ कालः ३ किंकर ४ एव च।
मृत्युकृत् ५ क्रयकृचेति ६ पाता नामसद्दक्रफलाः ॥ १॥"

"पवन, पावक, (श्रिप्ति), काळ, किंकर, मृत्युकृत् श्रने क्ष्यकृत् ए छ पात योगो पोतानां नाम प्रमाणे फळ श्रापनारा छे."

॥ इति योगदारम् ॥

॥ इति श्रीमति आरंजसिष्टिवार्त्तिके तिथि १ वार २ ज ३ योग ४ परीकात्मकः प्रथमो विमर्जाः ॥

। अथ हितीयो विमर्शः।

हवे राशिदार कहे हे.—

राशिरय तत्र मेषोऽश्विनी च जरणी च क्रिकापादः।

हषजस्तु क्रिकांद्वित्रयान्विता रोहिणी समार्गार्क्षा ॥ १ ॥

मिथुनो मृगार्क्षमार्क्षा पुनर्वस्वोश्वांद्वयस्त्रयः प्रथमे।

कर्की च पुनर्वस्तोः पादः पुष्यस्तयाऽश्वेषा ॥ १ ॥

सिंहस्तु मघाः पूर्वाः फल्युन्यः पाद उत्तराणां च।

कन्योत्तरात्रिपादी हस्तश्चित्रार्धमायं च॥ ३ ॥

तौली चित्रान्लार्क्ष खातिपादत्रयं विशाखायाः।

स्याद्वश्चिको विशाखाचतुर्थपादोऽनुराधिका ज्येष्टा ॥ ४ ॥

धन्वी मूलं पूर्वाषाढाऽपि च पाद उत्तराषाढः।

स्यान्मकर उत्तराषाढांहित्रितयं श्रुतिर्धनिष्टार्क्षम् ॥ ५ ॥

कुंजोऽन्लधनिष्ठार्धं शततारा पूर्वजाङपात्त्रपदी।

मीनो जाङपदांद्विस्तयोत्तरा रेवती चेति ॥ ६ ॥

अर्थ-वार राशिखं तथा तेमां आवतां नक्त्रोनां पाद आ प्रमाणे .--

- १ मेष राशिमां ऋश्विनी, जराएी तथा कृत्तिकानुं प्रथम पाद आवे हे.
- २ वृषत्र राशिमां कृत्तिकानां बेहां त्रण पाद, रोहिणी अने मृगशीर्ष अर्धु आये बे.
- ३ मिथुन राशिमां मृगशीर्ष हेलुं अर्धु, आर्जा अने पुनर्वसुनां प्रथम त्रण पाद.
- ध कर्क राशिमां पुनर्वसुनुं बेहुं पाद, पुष्य अने अश्खेपा.
- ए सिंह राशिमां मघा, पूर्वाफांहगुनी अने जत्तराफाहगुनीनुं प्रथम पाद.
- ६ कन्या राशिमां जत्तराफाट्युनीना अंतनां त्रण पाद, हस्त तथा चित्रा पहेलुं छार्धु.
- **७ तूल राशिमां चित्रा छेलुं ऋर्धु, स्वाति तथा विशालानां प्रथम त्रण पाद**े
- **७ वृश्चिक राशिमां विशाखानुं चोशुं पाद, श्रनुराधा श्रने** ज्येष्ठाः
- ए धन राशिमां मूळ, पूर्वापाढा ऋने उत्तरापाढानुं प्रथम पाद-
- १० मकर राशिमां जत्तरापाढानां हेद्वां त्रण पाद, श्रवण श्रने धनिष्ठा ऋर्धुः

११ कुंज राशिमां धनिष्ठा हेहुं छार्धु, शततारका तथा पूर्वाजाइपदनां प्रथम त्रण पाद. १२ मीन राशिमां पूर्वाजाइपदनुं हेहुं एक पाद, जत्तराजाइपद खने रेवती.

राशिनी व्यवस्थामां अजिजित नक्षत्र लेवानुं नथी, तेथी सत्यावीश नक्षत्रोंने विषे दरे-कनां चार चार पाद होवाथी कुल एकसो ने आठ पाद थाय हे, ते पाद अक्रोंना नियम कहेवावमें प्रथम सूचवन कयों हे. तेमांनां नव नव पादोए करीने एक एक राशि थाय हे. एम बार राशि कहेली हे, तेथी करीने पुरुषादिकनां नाम पामवामां राशिनी कहपनाए नक्षत्रना पादमां नियत करेला वर्णो (अक्र्रो) ने जाणीने नामादिकना अक्रों करवा. (तेवा अक्र्रथी शरु अनुं नाम पामवुं.) अजिजित् नक्षत्रनां त्रण पादना अक्रों हत्तराषाढाना हेक्षा (चोथा) पादमां अंतर्गत थाय हे, अने अजिजितना हेक्षा पादना आक्रों अवणना प्रथम पादमां अंतर्गत थाय हे.

> हवे मेषादिक बार राशिजना वर्ष कहे हे.— मेषाञ्चोणार्जुनहरिङक्तश्चेतैतमेचकाः। पिंगपिंगसकटमाषकमालमसिना रुचः॥ ९॥

श्रर्थ—मेषश्री आरंजीने शोए (रातो), अर्जुन (श्वेत), हरित (पीठो—सीखो), रक्त (रातो), श्वेत, एत (काबरिवजो), मेचक (काळो), पिंग (पीठो—रातो,) पिंगल (पीठो—रातो), कहमाष (काबरिवजो), कमाल (पीठो) अने मिलन (मत्स्यनी जेवो मेलो), आ प्रमाणे वारे राशिंजना वर्ण जाएवा. श्रा वर्ण कहेवानुं प्रयोजन विशेषे करीने नवांशमां आवशे ते एवी रीते के धातु,मूळ तथा जीवरूप पदार्थ नवांशशी ज जाएय हो. कह्युं हे के—''श्रंशकाज्ज्ञायते ज्ब्युं" "नवांशश्री ज्व्यनुं ज्ञान थाय हो." तथी करीने धातु श्रने मूळ विगेरे वस्तु चोराइ होय अथवा लोवाइ होय, तेना प्रश्नमां श्रा वर्णयमे ते वस्तुना वर्णनुं ज्ञान थाय हो.

हवे राशिष्ठनां स्वरूप कहे हे.—
जयद्घोषवतीगदं नृमिथुनं नौस्थाऽग्निसस्यान्विता,
कन्या ना च तुलाधरो धृतधनुर्धन्व्यश्वपश्चार्धकः।
एणास्यो मकरः कुटांकितशिराः कुंजो विलोमाननं,
मीनो मीनयुगं च नामसदृशाः प्रोक्ताः परे राशयः॥ छ॥

अर्थ — जेना हाथमां वीणा हे एवी स्त्री तथा जेना हाथमां गदा हे एवो पुरुष ए बन्ने सामसामां वेठां होय ते मिथुन राशिनो खाकार जाणवी. नाबा हाथमां ख्रिप्त खने जम-णा हाथमां धान्य धारण करीने वहाणमां वेठेडी कन्याने खाकारे कन्या राशि हे, हाथमां तुड़ा (त्राजवा) राखीने वेठेला पुरुपने ष्याकारे तुला राशि ठे, कटीनी नीचेनो जाग प्रश्वनी जेवो एटले चार पगवाठो अने शरीरनो उपरनो जाग पुरुप जेवो, वळी जेना हाथमां धनुप ठे एवा पुरुपने ख्याकारे धन राशि ठे, मृगना जेवा मुखवाठा मगरने ख्याकारे मकर राशि ठे, मस्तक पर कुंज रहेलो होय एवा पुरुपने ख्याकारे कुंज राशि ठे. ("खांध पर खाली घमो रह्यो होय," एम बृहक्षातकमां कहां ठे.) एक बीजाना पुछनी सन्मुख जेनां मुख रहेलां ठे एवा वे मत्स्यने ख्याकारे मीन राशि ठे, तेथी करीने ज ख्या राशिनो उदय मस्तक खने पीठथी थाय ठे. वाकीनी राशि एटले मेष, वृष, कर्क, सिंह खने वृशिक नामनी पांच राशि पोतपोतानां नामने समान रूपवाळी जाणवी. तेमज बारे राशि उनी चेष्टा तथा स्थान विगेरे पण पोतपोतानां नामनी सहश ज जाणवां एवो संप्रदाय ठे. ते विषे सारंग कहे ठे के—

"भेषो दैन्यमुपैति गर्वति वृषो नानामतिर्मन्मश्रः, शूरः कर्कटको धृतिश्च वनपे कन्या च मायाविनी । सत्यं रज्जुतुलास्वलौ मिलनता चापश्च पापाशयो, मोखर्य मकरे घटे चतुरता मीने च घीरा मितः॥ १॥"

"मेष दीनताने पामे हे, वृष गर्विष्ठ श्राय हे, मन्मश्र (मिश्रुन) नाना प्रकारनी बुद्धि-वाळी होय हे, कर्क शूरवीर होय हे, सिंह हिंमतवान होय हे, कन्या कपटी होय हे, तुला सत्य श्रने रक्कुनी जेम सरळ होय हे, वृश्चिक मिलन होय हे, धनुष (धन) पाप-प्रकृतिवाळी होय हे, मकर वाचाळ होय हे, कुंज चतुर होय हे श्रमे मीन धीर बुद्धि-वाळी होय हे."

तेमज मेप अने वृप दिवसे अराज्यमां रहेनारी अने रात्रिए गाममां रहेनारी होय हे, मिश्रुन गाममां रहेनार हे, कर्क अने मीन जळमां रहे हे, सिंह अराज्यमां रहे हे, कन्या अने तुला गाममां रहे हे, वृश्चिक प्रवासी हे, धन अने कुंज गाममां रहे हे, तथा मकरनो पहेलो (मुखनो) जाग अराज्यवासी हे अने बीजो जाग जळचर हे.

चोरायेली के लोवायेली वस्तुना प्रश्न वलते चोरनी चेष्टा तथा स्थान जोवा माटे श्रा जपयोगी हे. ते ते लग्नमां जिनत कार्य करवा माटे दैवक्षवद्वाज एवं कहे हे के— ''राज्याजिषेक, विरोध, साहस, कूट कर्म विगेरे तथा धातुनी लाण विगेरे संबंधी कार्य मेप लग्नमां करवाथी सिद्ध थाय हे. विवाह, गृहप्रवेश, कन्यानो संबंध (वाग्दान) विगेरे ध्रुव कर्म तथा केत्रनो आरंज अने पशु वेचवा लेवानां कार्यो वृष लग्नमां करवामां आवे हे. वृष लग्नमां कहेलां कार्य जपरांत विद्या, शिष्टप अने अलंकार संबंधी कार्यो मिश्रुन लग्नमां सिद्ध थाय हे. सेवा, जोग, मृष्ड शुज कर्म, पौष्टिक कर्म, तथा वाव कूवा-

दिक जळ संबंधी कार्य कर्क लग्ननां सिद्ध थाय हे. मेप लग्ननां कहेलां कार्य छपरांत वेपार, राजसेवा तथा शत्नुनी संधि विगेरे कार्यों सिंह लग्नमां करवाथी सिद्ध थाय हे. शिह्प, श्रीपध, जूपण, वेपार विगेरे चर श्रने स्थिर कार्य कन्या लग्नमां सिद्ध थाय हे. खेती, सेवा, यात्रा विगेरे तथा कन्या लग्नमां कहेलां सर्व कार्यों तुला लग्नमां सिद्ध थाय हे. ध्रुव कर्म, राजसेवा, चोरी विगेरे दारुण छग्न कार्य वृश्चिकमां सिद्ध थाय हे. यात्रा, युद्ध, व्रत विगेरे सत्कार्यो धनुपमां सिद्ध थाय हे. केत्रनो आश्रय तथा जळमार्गे यात्रा विगेरे चर कार्य तथा नीच कार्य मकरमां सिद्ध थाय हे. जळमार्गे थात्रा, वद्दाण तैयार करवुं, बीज वाववुं, दंज, जेद, व्रत विगेरे तथा नीच कर्म कुंजमां सिद्ध थाय हे. विद्या, श्रतंकार, शिह्प, पशुकर्म, वहाणनी यात्रा, श्रजिषेक विगेरे तथा सर्व मंगिलक कार्य मीन लग्नमां सिद्ध थाय हे.

"एतान्युक्तानि संसिद्धिं यांति शुद्धेष्वजादिषु । ऋराणि ऋरयुक्तेषु शुजानि सशुजेषु तु ॥ १ ॥"

"मेषादिक खग्न शुद्ध होय तो ए कहेलां कार्यो सिद्धिने पामे छे. कूर ग्रहोवमे युक्त होय तो कूर कार्य सिद्ध थाय अने शुज्र ग्रह सहित होय तो शुज्ञ कार्य सिद्ध थाय छे."

हवे राशिष्ठोतुं दिक्स्वामित्व तथा स्वजाव कहे हे.—

पूर्वादिदिक्क मेषाद्याः पतयः स्युः पुनः पुनः । चरस्थिरिक्कजावाः कूराकूरा नरस्त्रियः॥ ए॥

श्रर्थ—"पुनः पुनः" "फरी फरीने" ए पद दरेक विशेषण साथे जोमवाथी श्रा प्रमाणे अर्थ थाय हे — अनुक्रमे पूर्विदिक दिशाओना मेपादिक स्थामी हे हे एटखे पूर्व दिशानो मेप, दिल्ला गृप, पश्चिमनो मियुन अने छत्तरनो कर्क स्वामी हे ए रीते सिंह विगेरे चार तथा धन विगेरे चार अनुक्रमे चार दिशाना ईश कहेवा. एटखे दरेक दिशाना त्रण त्रण स्वामी श्राय हे, आनुं प्रयोजन यात्रादिकमां हे, तथा चोरायेखी के खोवायेखी वस्तुना प्रश्नमां वस्तु कर दिशाए हे ते जाण्वा माटे हे तथा मेप राशि चर हे, वृप स्थिर हे अने मियुन दिस्वत्राव हे, कारण के तेनी पहेखां वृप हे ते स्थिर हे माटे मियुननो प्रथम अर्थ त्राग स्थिर हे, अने तेनी पही कर्क हे ते चर हे माटे मियुननो वीजो अर्थ त्राग चर हे ए रीते दिस्वत्राव जाण्वो. एम जातक वृत्तिमां कर्छ हे. "पुनः पुनः" नो संबंध होवाथी कर्क चर हे, सिंह स्थिर हे, कन्या दिस्वत्राव हे. ए रीते अनुक्रमे बारे राशितं चरादिकपणुं जाण्डुं. आनुं प्रयोजन ए हे जे चर राशिमां जन्मेलां वाळको ते ते स्वत्राववाळां श्राय हे तथा मेपने आरंतीने अनुक्रमे कूर अने अक्तूर तथा पुरुष अने स्थी एमांनी एक एक संक्षा पण आपवी. एटखे के मेप कूर

अने पुरुष हो, वृष अकृर अने स्त्री हो, मिछुन कृर अने पुरुष हो विगेरे वारे राशि सुधी अह जतां मेप, मिछुन विगेरे ह एकीवाळी राशिक्रो क्र्र तथा पुरुष हे छाने वृष, कर्क विगेरे वेकीवाळी राशिक्षं अकृर (सौम्य) अने स्त्री हो. आनं फळ ए हे के क्रूर अने पुरुष राशिमां जन्मेलां वाळको क्रूर अने तेजस्वी थाय हो, तथा सौम्य अने स्त्री राशिमां जन्मेलां वाळको सौम्य अने मृष्ड (कोमळ) थाय हो; पण रत्नमाळामां कहां हे के— ''मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर अने कुंज ए पांच राशिक्षं क्रूर स्वामीवाळी होवाथी क्रूर हे अने वाकीनी सात राशिक्षं सौम्य स्वामीवाळी होवाथी सौम्य हे." वळी क्रूर राशि पण सौम्य अहमी दृष्टि पमती होय तो ते सौम्य थाय हे, अने सौम्य राशि पण क्रूर मह सहित होय अथवा तेना पर क्रूर महनी दृष्टि पमती होय तो ते सौम्य थाय हे, अने सौम्य राशि पण क्रूर मह सहित होय अथवा तेना पर क्रूर महनी दृष्टि पमती होय तो ते क्रूर थाय हे. ते विषे दैवक्षवृञ्चज कहे हे के—

"श्रहयोगेक्णाच्यां स्याजाशेर्जावो श्रहोज्ञवः । राशिः स्वजावमाधत्ते श्रहयोगेक्णोब्रितः ॥ १ ॥"

"ग्रह्ना संबंधथी तथा दृष्टियी राशिनो जाव ग्रह जेवो थाय है, पण ग्रहना संबंध तथा दृष्टियी रहित होय तो राशि पोताना जावने धारण करे हे."

हवे राशिस्रोना बळ तथा जदय विषे कहे हे.--

षड् निशाबिनोऽजोक्तयुग्मकर्कधनुर्मृगाः।

पृष्ठेनोचन्त्ययुग्मास्ते शीर्षेणान्ये द्विधा जषः ॥ १०॥

श्रर्थ—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनुष श्रने मकर ए उ राशिड रात्रिए वळवान् ठे. श्रर्थात् वाकीनी सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंच श्रने मीन ए उ दिवसे बळवान् ठे एम जाएवं. खोवायेली श्रथवा चोरायेली वस्तुनो समय जाएवा माटे श्रानुं प्रयोजन ठे. तेमज दिवसे बळवान् राशिना लग्न वस्ते दिवसे यात्रादिक करवा शुजकारी ठे, श्रने रात्रिए बळवान् राशिना लग्नमां रात्रे यात्रादिक करवा शुज ठे. तेथी विपरीतपणुं इष्ट मथी. श्रा रात्रिनी वळवान् ठ राशिड मांश्री मिशुन विनानी पांच राशिड पृष्ठयी छदय पामे ठे एटले छदय समये तेमनुं पृष्ठ प्रथम देखाय ठे. तथा वीजी मिशुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक श्रने कुंच ए ठ राशिड मस्तकथी छदय पामे ठे श्रर्थात् छदय वखते प्रथम मस्तक देखाय ठे. तथा मीन राशि वन्नेथी छदय पामे ठे एटले के तेना छदय वखते एकी वखते पृष्ठ तथा मस्तक देखाय ठे. श्रानुं प्रयोजन ए ठे जे यात्रादिकमां शीर्पना छदयवाळा लग्नमां जय थाय ठे, श्रने पृष्ठ छदयना लग्नमां निष्फळ थाय ठे विगेरे. हये राशिडनां छन्च स्थान कहे ठे.—

श्रकां गुचान्यज १ वृष १ मृग ३ कन्या ४ कर्क ५ मीन ६ विणजो ७ डंशैः। दिग १० दहना ३ ष्टाविंशति २० तिथी १५ पुपनक्तत्र २७ विंशति जिः २० ॥११॥ श्रर्थ—मेष १, वृष १, मकर ३, कन्या ४, कर्क ४, मीन ६ श्रने तुला ९ ए सात राशिल श्रनुक्रमे दश, त्रण, श्रठ्यावीश, पंदर, पांच, सत्यात्रीश श्रने वीश श्रंशे करीने श्रनुक्रमे स्यादिकनां लच्च स्थानों हे. श्रश्चांत्र मेष राशिना पहेला दश त्रिंशांशों रिवेनुं लच्च स्थान हे, वृष्णना पहेला त्रण त्रिंशांशों चंक्नुं लच्च स्थान हे. मकरना पहेला श्रष्ट्याचीश त्रिंशांशों मंगळनुं लच्च स्थान हे विगेरे. श्रहीं संप्रदाय एवा हे के—"श्राली मेष राशिमां सूर्य लच्च हे, तेमां पण दश श्रंशों सुधी तो परम लच्च हे, श्रने त्यारपही मात्र लच्च क हे विगेरे." श्रा संप्रदाय लोकश्री तिगेरे ग्रंथोंना श्रित्रायने मळतों हे, परंतु लघु श्रने बृहत् जातक तथा नारचंद्र विगेरे ग्रंथोंनो श्रित्राय तो श्रा प्रमाणे हे.—"मेष राशिमां सूर्य लच्च हे, पण तेना ज दशमा त्रिंशांशे परम लच्च हे. चंद्र वृष राशिमां लच्च हे, पण तेना ज त्रामा त्रिंशांशे परम लच्च हे. चंद्र वृष राशिमां लच्च हे, पण तेना ज त्रामा त्रिंशांशे परम लच्च हे, पण तेना ज त्रामा त्रिंशांशे परम लच्च हे, पण तेना ज श्रव्यावीशमें श्रंशे परम लच्च हे विगेरे." ताजिक ग्रंथमां तो परम लच्च एवी संज्ञा ज नथी, परंतु "मेष राशिमां पहेला दश जाग सुधी सूर्य लच्च हे, पण पही तेजहीन हे." एम कह्यं हे. ए ज प्रमाणे वृषादिकमां चंदादिकनुं लच्चपणुं जाणवुं.

राशिजंतुं नीच तथा त्रिकोण स्थान कहे छे.

खोचतः सप्तमं नीचं त्रिकोणान्यथ जानुतः।

सिंहो ५ क्त १ मेष १ प्रमदा ६ धनु ए घट ९ घटाः ११ कमात् ॥ ११ ॥ अर्थ—पोतपोताना उच्च स्थानधी सातमुं सातमुं स्थान नीच जाएवं इवे रिव आदि यहोनुं अनुक्रमे सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला अने कुंज ए राशिन विकोण स्था कहेवाय है.

जे जे यहनुं जे जे जच्च स्थान होय ते थकी जे जे सातमुं स्थान होय ते ते ते (प्रह)नुं नीच स्थान जाण्डुं. ऋहीं पण दश, ऋण, ऋट्यावीश, पंदर, पांच, सत्यावीश ऋने वीश ए प्रमाणे ऋंशनी संख्या जे पूर्वे कही हो, ते पण लेबी. तेथी करीने उच्चनी जेम नीचमां पण तेवी ज रीते ऋथीं करवों. जेमके मेपथी सातमी नुखा राशि हो, तेना पहेखा दश तिंशांशो रिवनुं नीच स्थान जाण्डुं. वृष राशिथी सातमी वृश्चिक राशि हो, तेना पहेखा ऋण तिंशांशो चंकनुं नीच स्थान जाण्डुं विगेरे. ऋहीं पण संप्रदाय एवो हो के— "नुखामां रिव नीच हो, तेमां पण दश ऋंश सुधी परम नीच ऋने त्यारपही मात्र नीच जाण्यों. ए प्रमाणे चंकादिकमां पण कहे हुं." ऋा संप्रदाय पाकश्री विगेरे मंथों साथे मळतो हो, परंतु जातक छने नारचंक विगेरे मंथों ना ऋजिप्राय तो आ प्रमाणे हे.— 'नुखामां सूर्य नीच हो, तेमां पण दशमा तिंशांशे परम नीच हो, ए प्रमाणे चंकादिकमां

पण जाए हुं." ताजिकमां तो परम नीच एवी संज्ञा ज नशी, परंतु "तुद्धा राशिमां पहेखा दश स्त्रंशो सुधी चंद्र नीचनो हे." एम कहां हे. ए प्रमाणे चंद्रादिकमां पण जाए हुं विशेष स्त्रा प्रमाणे हे.—

"कन्या रादुगृहं घोक्तं राहूचं मिथ्रुनः स्मृतः। रादुनीचं धनुर्वणीदिकं शनिवदस्य च॥१॥"

"राहुनुं घर (स्थान) कन्या राशि है, राहुनुं छच्च स्थान मिथ्रुन राशि कही है, राहुनुं नीच स्थान धन राशि है, तथा आ (राहु) ना वर्णादिक शिन प्रमाणे जाणवा." परम छच्चपणुं तथा परम नीचपणुं साह विक्षाना प्रमाणवाळा ते ते अंशना मध्य जागे जाणवुं अर्थात् त्रीश विक्षाए करीने जाणवुं. परम छच्चता अने परम नीचताना सम-यने जाणवानो छपाय आ प्रमाणे है.—

"मासं रविबुधगुक्राः २ सार्धे ज्ञौम ४ स्त्रयोदशाचार्यः ए । त्रिंशन्मन्दो ६ ऽष्टादश राहु ७ श्चन्द्रः ७ सपाददिवसयुगम् ॥ १ ॥"

"एक राशिमां सूर्य, बुध अने शुक्र एक एक मास रहे हे, मंगळ दोढ मास रहे हे, गुरु तेर मास रहे हे, शनि त्रीश मास रहे हे, राहु अढार मास रहे हे, तथा चंद्र सवा बे दिवस रहे हे."

> "त्रिंशांशे क्रार्कशुक्राणां दिनं ३ सार्धचतुर्घटि । इन्दोः ४ कुजे सार्धदिनं ५ मासमेकं शनैश्चरे ६ ॥ १ ॥ स्त्रष्टादशदिनी राहो ७ स्त्रयोदशदिनी गुरोः ए ।

"बुध, सूर्य अने शुक्रनो त्रिंशांश एक एक दिवसनो है, चंद्रनो त्रिंशांश सामी चार मी है, मंगळनो त्रिंशांश दोढ दिवस है, शनिनो त्रिंशांश एक मास, राहुनो त्रिंशांश अढार दिवस अने गुरुनो त्रिंशांश तेर दिवसनो है."

श्राथी करीने श्रा प्रमाणे जावार्थ थयो के—मेपनी संक्रांतिमां नच दिवस पठी एक दिवस परम छच्चनो सूर्य कहेवाय. वृषमां नव घमी पठीनी सामी चार घमी सुधी चंड परम छच्च थयो. मकरमां सामी चाळीश दिवस पठी दोढ दिवस सुधी मंगळ परम छच्च छे. कन्यामां चौद दिवस पठी एक दिवस सुधी वुधं परम छच्च छे. कर्कमां वावन दिवस पठी तेर दिवस सुधी गुरु परम छच्च छे. मीनमां ठवीश दिवस पठी एक दिवस सुधी शुक्र परम छच्च छे. तथा तुलामां श्रोगणीश मास पठी एक मास सुधी शनि परम छच्च छे. ए रीते परम नीचनी पण जावना जाणवी. श्रा प्रकार सामान्यताथी बताव्यो छे एम जा- णवुं, कारण के मंगळ विगेरे घहो प्राये वक तथा श्रातिचारवाळा श्राय छे. ते वखते श्रा

१ घडीः

परम उच्चनो तथा परम नीचनो समय न जाणवो, परंतु वक्र गतिवाळा तथा श्रितिचार-वाळा प्रहोनी खागळ कहेवाशे ते रीते स्पष्टता कर्या पठी उपर कहेला खंशो प्रमाणे उच्च नीचनी जावना करवी. खा कहेलो समय तो सहज गतिवाळा प्रहोने माटे ज समजवो

यहोना जच नीचपणानुं फळ छा प्रमाणे हे.---

''इक्को जइ जचत्थो हवइ गहो जन्नई परं कुण्ड । किं पुण वे तिन्नि गहा कुणंति को इत्थ संदेहो ॥ १ ॥''

"जो कदाच एक पण ग्रह जच स्थाने रह्यो होय तो परम जन्नतिने करे हे, तो पही जच्च स्थाने रहेला वे त्रण ग्रहो परम जन्नतिने करे तेमां शो संदेह ?"

जन्मने विषे उच्च प्रहतुं फळ आ प्रमाणे हे ---

''त्र्युचैर्नृपः पञ्चित्रिरर्श्वचकी चक्री च षकुचैर्मुनिजि । साधाईन् ।"

"जन्मसमये त्रण ग्रह उच्च होय तो ते राजा थाय, पांच ग्रह उच्च होय तो वासु-देव थाय, उ उच्च होय तो चक्रवर्ती थाय अने सात ग्रह उच्चना होय तो अरिहंत (तीर्थंकर) थाय." वळी कहां ठे के—

> "त्रिजिनींचैर्जवेदासिस्त्रजिरुचैर्नराधिपः। त्रिजिः स्वस्थानगैर्मेत्री त्रिजिरस्तमितैर्जनः॥१॥ स्रम्धं दिगंवरं मूर्लं परपिंनोपजीविनम्। कुर्यातामति नीचस्थौ पुरुषं चन्द्रजास्करौ॥१॥॥"

"जेना जन्मसमय त्रण ग्रह नीचना होय तो ते दास थाय हो, छाने त्रण ग्रह उद्यना होय तो ते राजा थाय हो, त्रण ग्रहो स्वस्थाने रह्या होय तो ते मंत्री थाय हो, छाने त्रण ग्रह छात पाम्या होय तो ते जम थाय हो. (१) चंड छाने सूर्य जो नीच स्थाने रह्या होय तो ते पुरुषने छांध, दिगंवर (वस्त्र रहित-गरीब), मूर्ख छाने जिह्यावृत्तिथी छाजीविका करनार करे हे. १."

जपर मूळ श्लोकमां जे त्रिकोण संक्षा आपी हे, ते मूळ त्रिकोण पण कहेवाय है. त्रिकोणनुं फळ ए हे जे "त्रिकोणमां रहेला यहो जच्च यहना जे बुं ज अथवा तथी कांइक न्यून फळ आपनारा है." एम पाकथी ग्रंथमां कहां है. प्रश्न शतक वृत्तिमां त्रिकोण विगेरेने त्रिंशांशनी स्पष्टतावमे आ प्रमाणे कह्या हे.—"सिंह राशिमां वीश त्रिंशांशो त्रिकोण हे अने वाकीना दश त्रिंशांश सूर्यनुं गृह (घर-स्थान) हे. वृषज राशिमां वे त्रिंशांशो जच्च हे, त्रीजो परम जच्च हे, अने वाकीना चंद्रनुं त्रिकोण हे. मेषमां बार त्रिंशांशो त्रिकोण हे, वाकीना अंशो मंगळनुं गृह हे. कन्यामां चौद त्रिंशांशो जचना हे, पंदरमो परम जच्च हे, तेनी पहीना पांच त्रिकोण हे अने वाकीना दश बुधनुं गृह

है. धनुषमां दश त्रिंशांशो त्रिकोण है श्वने वाकीना गुरुतुं गृह है. तुलामां पंदर त्रिंशांशो त्रिकोण है, श्वने वाकीना शुकतुं गृह है. कुंजमां वीश त्रिंशांशो त्रिकोण है श्वने वाकीना दश शनितुं घर है."

हवे राशिजना संबंधवाळा बार जावोने कहे हे.-

बग्नाज्ञावास्तनु र प्रव्य २ जातु ३ बन्धु ४ सुता ४ रयः ६ ।

स्त्री 9 मृत्यु ए धर्म एकर्मा १० य ११ व्यया १२ श्र द्वादश स्मृताः ॥१३॥ श्रर्थ—लग्नथी एटले प्रथम स्थानथी श्रतुक्रमे तनु १, इन्य २, जातृ ३, बंधु ४, सुत ५, श्रि ६, स्त्री ७, मृत्यु ७, धर्म ए, कर्म १०, श्राय ११, व्यय १२, श्रा रीते बार जावो कहेला हे.

प्रश्न वखते, जन्म वखते श्रथवा यात्रादिकने समये जे कोइ राशि छदयमां होय ते राशिने खग्न नामे जाण्वी. तेने बार श्रारावाळा चक्रनी श्राकृति करीने तेनी वच्चेना विवरमां मुख्य स्थाने स्थापन करवी. बाकीनी श्रापीयार राशिखं मावी वाजुनां श्रानुक्रमे श्रापीयार स्थानकोमां मूकवी. ए रीते कुंमळी थाय हे. ते श्रा प्रमाणे—

2 2	रूझ रूझ	22	
8	श्री	30	
2.6	y	ر م	

श्रहीं लग्ननी तनु जाव संज्ञा ने एटले इष्ट माण्सना शरीर विषे ए तनु जावने श्राधारे विचार करवो. त्यारपन्नी माबी बाजुना क्रमथी श्रमीयार स्थानोने विषे रहेला बीजा विगेरे स्थानोमां रहेली राशि-छंनी संज्ञा श्रमुक्रमे ज्ञ्य जाव २, जातृ जाव २, बंधु जाव ४, विगेरे जाण्वी तेथी इष्ट माण्सनुं ज्ञ्य, जाइ विगेरे संबंधी ते ते

स्थानोने श्रनसारे विचारवां. कह्यं हे के—

"यो यो जावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्थात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः। पाँपरेवं तस्य तस्यास्ति हानिर्निर्देष्टव्या पृञ्चतां जन्मतो वा ॥ १ ॥"

"जे जे जाव स्वामीए जोयेको होय के युक्त होय श्रथवा सौम्य ग्रहोए जोयेको के युक्त होय तो ते ते जावनी वृद्धि थाय हे. ए जरीते जो पाप ग्रहोए युक्त के जोयेको होय तो ते ते जावनी हानि थाय. ए प्रमाणे पूहनारने तेनी जन्मकुंक्छी परथी कहेवुं."

विशेष ए हे जे हका छिर जावमां जेम कूर यहो छिर जावने हणे हे तेमज सौम्य यहो पण हणे हे ज, पण पुष्ट करता नथी, छने व्ययस्थान तथा छाहमा स्थानमां पण जेम सौम्य यहो व्यय (सर्च)ने तथा मृत्युने पोषे हे तेम कूर यहो पण पोषे ज हे, परंतु तेने हणता नथी. कहां हे के—"सौम्याः षष्ठेऽरिन्नाः सर्वे नेष्टा व्ययाष्टमगाः"। "हके स्थाने रहेला सौम्य यहो छिरिने हणे हे, तथा व्ययस्थाने छने छाहमा स्थाने रहेला सौम्य हो छिरिने हणे हे, तथा व्ययस्थाने छने छाहमा स्थाने रहेला सर्वे यहो छिनिष्ट है." यवनेश्वर तो कहे हे के—"छष्टमे सौम्य छायुई किकराः" "छाहमे स्थाने सौम्य

महो होय तो ते आयुष्यनी वृद्धि करनारा हे." जातृ जावमां बहेन संवंधी विचार पण् करवो. बंधु एटखे स्वजन हे तेथी बंधु जावमां मातानो पण विचार करवो. सुत जावलां शिष्यो पण जाणवा. स्त्री एटखे जायी, तेना जावमां गमन आगमन पण जाणवा. आहमा स्थानमां रोगादिक पण जाणवा. धर्म जावमां वंशपरंपराए आवेली विद्या अपूर्व विद्या तथा अचिंतव्यो धनलाज विगेरे जाणवा. दशमा स्थानमां कर्म एटखे वेपार, ते स्थानमां पिता, जाग्य, आहा, ऐश्वर्य विगेरे संबंधी विचार करवा. लाज स्थानमां नाश पामेलानी पण प्राप्तिनो विचार करवो. तथा व्यय स्थानमां सत् तथा असत् बन्ने जातना खर्च विगेरेनो विचार करवो.

जेम खग्नथी आरंजीने बार जाव कहा। तेम चंड्यी पण बार जाव जाणवा. तेथी करीने खग्न अने चंड्नी मध्ये जे बळवान् होय तेनाथी बार जाव विचारवा एवी आन्नाय हे.

चारे जावोनां बीजां नामो बतावे हे.--

सुहृन्मंदिरपातासहिबुकाम्बुसुखानिधम् । चतुर्थमष्टमं विद्रं चतुरस्रे उन्ने पुनः ॥ १४॥

श्रर्थ—सहर्, मंदिर, पाताख, हिनुक, श्रंनु श्रने सुल ए चोश्रा स्थाननां नामो हे, हिड ए श्राहमा स्थाननुं नाम हे. चतुरस्र ए चोश्रा तथा श्राहमा ए वे स्थाननुं नाम हे. सहत् राब्दे करीने मित्रज्ञवन, मंदिर शब्दवमे गृह ज्ञवन, पाताख शब्दवमे रसातख इत्यादिक पर्याय नामो पण अत्र क्षेवाय हे. ए प्रमाणे श्रागळ पण सर्वत्र जाणवुं. तथा पूर्वे कहेला तनु विगेरे बार जावोने स्थाने पण शरीर विगेरे पर्याय शब्दोनो पण ब्यवहार करवो. श्राहमुं मृत्यु स्थान श्रानायु नामनुं पण कहेवाय हे.

त्रित्रिकोणं च नवमं त्रिकोणे नव पश्चमे । सप्तमं कामजामित्रयुनयुनास्तसंज्ञकम् ॥ १५॥

अर्थ—नवमुं स्थान त्रित्रिकोण कहेवाय हे. नवमुं अने पांचमुं स्थान त्रिकोण कहे-वाय हे अने सातमुं स्थान काम, जामित्र, द्युन, द्युन अने अस्त नामे पण कहेवाय हे, अहीं काम एटले कामदेव हे, जामिने एटले बहेनने त्याग करे ते जामित्र कहेवाय हे, एटले के ते विवाहनो पर्याय शब्द हे. तथा सर्व कोइ श्रह जे राशिमां छदय पामे हे, तेनाथी सातमी राशिमां अस्त पामे हे, तथी सातमा स्थानने अस्त नामे पण कहां.

स्यातां तृतीये छश्चिक्यविक्रमे पश्चमे तु धीः। मध्यमेषूरणव्योमान्याहुर्दशमधामनि॥ १६॥

श्रर्थ—त्रीजा स्थाननुं नाम इश्चिक्य श्रने विक्रम कहेवाय हे, पांचमुं स्थान धी (बुद्धि) नामनुं कहेवाय हे, दशमा स्थानमां मध्य, मेषूरण श्रनें न्योम एवां नामो कहेवाय हे, अहीं जे चोथा स्थाननी पाताख अने अंबु संज्ञा कही है तथा दशमा स्थाननी मध्य अने न्योम संज्ञा कही है, ते जाले जनी रीते कही है एम जाल बुं. जाले जने मत एको है के—"सूर्य पातःकाळे पूर्व दिशामां छदय पामीने दिशा वाजुए करतो करतो मध्याह समये दशमा स्थानरूप न्योम (आकाश)ना मध्य जागमां आवीने सायंकाळे सातमे स्थाने अस्त पामे है, अने ते ज प्रमाणे रात्रिए पण करतो करतो मध्य रात्रिए चोथा स्थानरूप पाता-ळमां थइने पाहो प्रातःकाळे पूर्व दिशामां छदय पामे हे." आ रीते कह्यं हे. वळी पाताळ अंबुनुं (जळनुं) स्थान हे ए प्रसिद्ध हे.

जपान्त्यं सर्वतोज्ञडमन्त्यं रिष्यमुदीरितम्।

वदन्त्युपचयाह्राँस्त्रिपङ्दशैकादशान् पुनः ॥ १७ ॥

श्रर्थ—श्रगीयारमुं स्थान सर्वतोज्ञ कहेवाय हे, केमके ते स्थाने रहेलो प्रह सर्वधा शुजकारक हे बारमुं स्थान रिष्य कहेवाय हे लग्नथी तथा चंड्यी गएतां त्रीजुं, हर्डं, दशमुं श्रने श्रगीयारमुं स्थान छपचय नामे कहेवाय हे, केमके ते स्थानोमां रहेला पाप प्रहो पए शुज फलदायक थाय है बाकीनां स्थानो श्रपचय एटले हानि करनारां हे, एम समजबुं. तेनुं फल श्रा प्रमाणे कहां हे.—

"कार्य यक्तं तक्तपैति सिद्धिं वारे ग्रहे चोपचयर्क्तजाजि । ्नीचर्रुसंस्थेऽपचयस्थिते च यक्ते कृते चापि जवत्यसाध्यम् ॥ १ ॥"

"जे कार्य करवानुं कहां होय ते जपचय स्थानवाळी राशिमां रहेख ग्रहमां तथा वारमां सिद्धिने पामे हे, श्राने नीच राशिमां तथा श्रापचय स्थानमां ग्रह रह्यो होय तो यह कर्या हतां पण ते कार्य श्रासाध्य श्राय हे एटखे सिद्ध श्रुतं नथी."

केन्डचतुष्टयकंटकनामानि वपुः १ सुखा ४ स्त ७ दशमानि १० । स्युः पणफराणि परत १-५-७-११ स्तेज्योऽप्यापोक्सिमानीति ३-६-७-११ ॥१०॥

अर्थ—पहें खुं, चो खुं, सात मुं अने दश मुं ए चार स्थानो केन्छ, चतुष्टय अने कंटक नामे कहेवाय हे, ते दरेकनी पहीनां एट खे बी खुं, पांच मुं, आह मुं अने आगीयार मुं ए चार स्थानो पएफर नामे कहेवाय हे. तथा तेनी पहीनां एट खे त्री खुं, ह छुं, नव मुं अने बार मुं ए चार स्थानो आपोक्खिम नामे कहेवाय हे. केंछने विषे रहे खा सर्वे छहो संपूर्ण परा- कमी होय हे, पएफरमां रहे खा महो अर्ध पराक्रमी होय हे, अने आपोक्खिमने विषे तेथी अर्ध एट खे चतुर्थाश पराक्रमवाळा होय हे. एम त्रे खोक्यमका मां कहां हे. विशेष ए हे जे—संका वे प्रकारनी होय हे, एक अन्वर्थ अने बी जी याह कि की (रू ढिवाळी). तेमां छि बिय, हि बुक, त्रिकोण, द्युन, ह्यू, त्रित्रिकोण, चतुरस्र, मेषूरण, रिष्य, केंछ, चतुष्टय, कंटक, पणफर तथा आपोक्खिम अने कहेवामां आवशे एटी होरा, छे हाण विगेरे

ंक्षार्च सार्थक नहीं होवाथी याद शिकी कहेवाय हे, ते संक्षार्च यवनाचार्यना महमां रूढ होवाथी छाई। कही हे. तथा विक्रम, सुख, वेइम, धी, जामित्र छाने हिन्न विगेरे संक्षार्च छन्वर्थ हे, तथी करीने इष्ट मनुष्यनां विक्रम, सुख, घर, बुन्नि, विवाद छाने हानि विगेरे छानुक्रमे ते ते स्थानोधी विचाराय हे. ए ज रीते खान्नथी छारंजीने प्रथम विगेरे स्थानोनी तनु विगेरे संक्षार्च नियमित कहेवी हे, तथी तेने छानुसारे करीने ज छागळ पर पण सर्व हेकाणे प्रथम छादि स्थानोने हेकाणे तनु छादि शब्दनो ह्यवहार जाणी खेवो.

हवे राशिर्जनां गृह (घर-स्थान), होरा, देष्काण, नवांश, दादशांश स्थाने त्रिंशांश नामना a वर्गनुं स्वरूप बतावे के.—

मेषादीशाः कुजः १ शुक्रो १ बुध ३ श्चन्द्रो ४ रवि ५ र्बुधः ६ ।

शुक्रः उ कुजो ए गुरु ए मन्दो १० मन्दो ११ जीव १२ इति क्रमात्॥१ए॥ अर्थ-आ व वर्गना अधिकारमां राशि हों "गृह" एवं नाम के तेथी करीने मेष राशि (गृह)थी अनुक्रमे मंगळ १, शुक्र २, बुध २, चंड ४, रिव ए, बुध ६, शुक्र ७, मंगळ ए, गुरु ए, शिन १०, शिन ११ अने गुरु १२, आ बार स्वामी हे के आनुं फळ "यो यो जावः स्वामिद्दष्टो युतो वा" विगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे हे.

होरा राक्यर्कमोजर्केंऽर्केन्द्रोरिन्द्रक्योः समे ।

ड्रेक्नाणा जे त्रयस्तु स्व १ पश्चम ८ त्रित्रिकोणपाः ए॥ १०॥ श्र्य आर्थ—राशिनो अर्ध जाग होरा कहेवाय हो, तेथी एक एक राशिमां वने होरा होय हो. तेमां मेप विगेरे विषम राशिमां पहेखी होरा रिवनी अने बीजी होरा स्वनी होय हे. तथा वृष विगेरे सम राशिमां पहेखी होरा चंजनी अने बीजी होरा सूर्यनी होय हे. होरानुं फळ ए हे जे—"सूर्यनी होरामां जन्मेखां वाळक तेजस्वी याय हे, अने चंजनी होरामां जन्मेखां मृड (कोमळ) याय हे हत्यादि" ए प्रमाणे जेष्काण विगेरेमां पण क्रूर तथा सौम्य स्वामीने अनुसारे क्र्रणणुं अने सौम्यपणुं समजवुं. दरेक राशिमां जण अण जेष्काण होय हे. तेमां जेपोतानी जराशिनो ईश होय ते प्रयम जेष्काणनो ईश होय हे, तथा नवमी राशिनो जे स्वामी होय ते बीजा जेष्काणनो ईश होय हे, तथा नवमी राशिनो जे स्वामी होय ते बीजा जेष्काणनो ह्या होय हे. हिरजज्ञत खग्नशुक्तिमां पण कह्यं हे के—

"दिकाणो छ तिजागो सो पढमो निश्रयरासिश्रहिवङ्णो । बीर्ड पंचमपहुँणो तङ्ड पुण नवमगिहवङ्णो ॥ १ ॥"

"दरेक राशिनो त्रीजो जाग देव्काण कहेवाय है. तेमां पोतानी राशिना श्रिधिपतिनो पहेलो देव्काण, तेथी पांचमी राशिना स्वामीनो बीजो देव्काण श्रने नवमा गृहना स्वामीनो त्रीजो देव्काण समजवो."

बृहत् जातकमां पण कहां हे के—''केष्काणाः स्युः स्वजवनसुतित्रिक्रोणिधिपानां'' पोताना स्थानना, पांचमा स्थानना छने नवमा स्थानना स्वामीर्छना एम त्रण केष्काणो होयहे." केटलाएक छाचार्यो राशिर्छना सप्तांश पण कहे हे, तथा तेना स्वामीर्छ पण कहे हे, ते होरामकरंदमां छा प्रमाणे कहाा हे.—''स्वक्तिं जे युग्मजे चूनगेहाफण्यासाकः सप्तमांशाः क्रमेण' विषम (एकी राशिमां) पोतानी राशिश्री सप्तमांशो गणवा. सम (बेकी राशिमां) पोतानी राशिश्री सातमी राशि जे होय त्यांश्री सप्तमांशो गणवा. एटले मेष राशिमां पहेलो मेषनो सप्तमांश जाणवो, बीजो वृषजनो यावत् सातमो तुलानो छने वृषज राशिमां पहेलो वृश्चिकनो, बीजो धननो यावत् सातमो वृषजनो सप्तमांश जाणवो. छा प्रमाणे तेना जाणकार पुरुषोए सप्तामांश गणवा."

हवे नवांशो कहे हे.

नवांशाः स्युरजादीनामजैणतुखकर्कतः । वर्गोत्तमाश्चरादौ ते प्रथमः पश्चमोऽन्तिमः ॥ ११ ॥

श्रर्थ—मेषथी आरंजीने दरेक राशिमां नव नव नवांशे। होय हे. तेमां मेष राशिना नवांशो मेषने आदि ख़श्ने नव सुधी गएवा, (एटखे के मेष राशिमां पहेंखो नवांश मेपनो, बीजो नवांश वृपनो, त्रीजो नवांश मिश्रुननो, ए रीते नव सुधी गएतां नवमो नवांश धननो आवे हे.) ए रीते वृपना नवांशो मकरथी गएवा, मिश्रुनना नवांशो तुखाथी गएवा, तथा कर्कना नवांशो कर्कथी ज गएवा. ए जप्रमाणे सिंहना नवांशो मेपथी गएवा एटखे के मेपनी ज जेवा, कन्याना वृपनी जेम, तुखाना मिश्रुननी जेम, श्रने वृिध-कना कर्कनी जेम गएवा. ए ज रीते धन, मकर, कुंज श्रने मीनना नवांशो पए श्रनुक्रमे मेप, वृप, मिश्रुन श्रने कर्कनी जेवा ज गएवा. श्रा नवांशोनं फळ पूर्णज श्रा प्रमाणे खले हे.—

"ति पण चन सत्त नवमा रासीण नवंसया सुद्दा जम्मे । पढम छ छाठम छादमा निर्ण पुण मिक्समो नेर्च ॥ १ ॥"

"जन्मने विषे राशिर्छनो त्रीजो, पांचमो, चोथो, सातमो स्रने नवमो ए पांच नवांशो सुलकारक एटले उत्तम जाएवा, पहेलो, बीजो स्रने स्राठमो ए त्रए नवांशो स्रधम (स्रशुज) जाएवा, तथा उठो नवांश मध्यम जाएवो."

वर्ग एटले समूहने विषे जे जत्तम ते वर्गोत्तम कहेवाय हे, तेमां घर राशिर्डमां पहेलो नवांश वर्गोत्तम जाएवो, स्थिर राशिर्डमां पांचमो नवांश वर्गोत्तम जाएवो, स्थने दिख- जाव राशिर्डमां हेलो एटले नवमो नवांश वर्गोत्तम हे. स्थात् स्था रीते गएवासी सर्वे राशिर्डमां पोतपोताना नामनो नवांश वर्गोत्तममां स्थावे हे. वर्गोत्तमनुं फळ ए हे जे— "वर्गोत्तममां जत्पन्न स्थला मनुष्यो पोताना कुळमां प्रधान स्थाय हे विगेरे." हेल्लो नवांश पए स्थान स्थाय हे. नहीं तो ते हेल्लो

नवांश अमाह्य (तजवा योग्य) अइ जाय. ते विषे पूर्णजंद कहे हे के—"खप्नखाद्यन्त-मध्येषु वलं पूर्णाद्यमध्यमं" "आदि, अन्त अने मध्यने विषे लग्ननुं वळ (फळ) अनु-क्रमे पूर्ण, अद्य अने मध्यम हे." हर्षप्रकाशमां पण कह्यं हे के—"वग्गुत्तमं विणा दिजा नेव चरमं नवंसगं कहवि" "वर्गोत्तम विना कोइ पण वखत हेह्यो नवांश प्रहण करवो नहीं." वर्गोत्तमना नवांशमां रहेलो ग्रह पण वर्गोत्तम कहेवाय हे अने ते (ग्रह)अत्यंत बळवान् हे. ते विषे दैवज्ञवङ्गजमां कह्यं हे के—

> ''बलवानुदितांशस्थः शुक्तं स्थानफलं ग्रहः । दद्यादर्गोत्तमांशे च मिश्रं शेषांशसंस्थितः ॥ १ ॥''

"जदयना अंशमां रहेखो तथा वर्गोत्तमना अंशमां रहेखो बह बळवान् हे अने ते स्थाननुं फळ शुष्ट (पूर्ण) आपे हे, अने बाकीना अंशमां रह्यो होय तो ते मिश्र फळ आपे हे."

"यतो य एव राशिः स्थात्स एव च नवांशकः। प्रोक्तं स्थानफलं शुद्धमतोऽस्मिन् सोपपत्तिकम्॥ २॥"

"कारण के जे राशि होय हे ते ज नवांशक होय हे (अर्थात् ते राशिना नामनो नवांशक ज वर्गोत्तम होय हे) तेथी करीने आ नवांशने विषे स्थानफळ जे शुक्र कर्धुं ते युक्ति युक्त हे."

हवे घादशांश तथा त्रिंशांशनुं स्वरूप बतावे हे.

स्युर्घादशांशाः खरहादयेशास्त्रिशांशकेष्वोजयुजोस्तु राश्योः। कमोत्कमादर्थ ५ शरा ५ ष्ट ० शैक्षे ७ न्डियेषु ५ जीमार्किग्रहज्ज्ञाकाः ११

श्रर्थ—पोताना गृह (स्थान) श्री बार बार दादशांशो होय हे. पटले के जे नामनी राशि होय ते नामनो पहेलो दादशांश जाणवो, बाकीना श्रामीयार दादशांशो तेनी पढ़ीनी श्रामीयार राशिना नामवाळा जाणवा. जेमके मेष राशिमां पहेलो दादशांश मेषनो, बीजो वृषनो, श्रीजो मिश्रुननो, ए रीते गणतां हेल्लो (बारमो) दादशांश मीननो श्राये. वृष राशिमां पहेलो दादशांश वृषनो, बीजो मिश्रुननो, ए रीते श्रुनक्रमे गणतां हेल्लो मेषनो श्रावे. ए रीते मिश्रुन राशिमां पहेलो मिश्रुननो, बीजो कर्कनो, ए रीते गणतां हेल्लो वृषनो श्रावे. या दादशांशोना ईशो जे मेषादिकना ईशो हो ते ज जाणवा. हवे दरेक राशिमां त्रीश त्रिशांश होय हे. तेना ईशो श्रा प्रमाणे जाणवा—मेष, मिश्रुन विगेरे विषम (एकी) राशिमां पांच, पांच, श्राह, सात श्राहे पांच त्रिशांशोना स्वामी श्राहुक्रमे मंग्रह, श्रीन, ग्रुर, बुध श्राने शुक्र जाणवा, श्राहे सम (बेकी) राशिमां ते श्रंशो तथा ते स्वामी उत्कमथी एटले पश्चानुपूर्वीए जाणवा. एटले के वृष, कर्क विगेरे सम राशिमां पांच, सात, श्राह, पांच श्राने पांच, त्रिशांशोना स्वामी श्रुक्र, बुध, ग्रुर, श्रीन श्राने मंगळ जाणवा.

छ धर्मनी स्थापना (यंत्र)

युद्दाणि	गुहैसाः	होस	E	A.	द्रेकाणेशाः	<u> </u>		İ	 	1 1	नवशिषाः				li			Es	द्वाद्धांत्रेशाः	- F			:			मियांहोशाः	锺	
퓼	मंगळ	43	-B2.	मंगळ	#	तुर	#•	\$ 3	रिक्	- 10	109	(4 <u>4</u>	.#±	(73	.#.	इंदर	ফিট	चा•	(57) +⊷	(S)	. म•	(જાં	(대 작	ا، بو		91	9° 9
<u>च</u>	8	मु	#	F	157 167)	यसि	k	ᆔ	 (≒1	#	\$9	বা:• কো	.m	to?	ক্র	107	न्धु •	₩	ක	म•	त्न च	k	i∓.	# (#			なって	₹ 5°
मिधुन	17 (18)	Œ	म् स	जिस	18	श्राप्त	539	• ;∓	~م جا	#=	स्था स्व	म: (च	(A)	167	109	· t	₩	दर्भ एका	#·	41	₩	5	‡ *?	स: स:	5 7 -1	107 5° 1		
• 8	. jb. jrz.	. jur	de de	- [2	मंगळ	ر ة م	चा-	مردور فروا	tar)	元 (表)	#. %#	## ***	₽	1=7	-फ	₩	107	मः इत	লে	₩	₩	₽ ?	T.	(න (ක්				あつ グ
H.	#	स्बि	- in	a	(1	मंगळ	#	ଲ	यां. एस	16/ 1877	छि	為	*#	1= ?	_ *	187	নে	म• •म•	न्त्र (न	<u>ज्</u> र	(대 교	•‡∓	নি	प्।∙ (छा	\$30 5° °.	-		e 5
100 He	द्ध (ख	स	di di	ja (07)	म	(원 (원	1	स्र	ਸ਼. (ਜ਼	स्त	107	षां•	**	টি ?	107	নে	-#	t= 9	i.	ন অ	#.	নো 	তৈ	₫. ~•			≒ 9 ∨	187 -5m
तुका	## 27)	क्	म् प	ক ক	श्रीन	हुत (107)	ক	-12-	kn′ I⊋9	ক	17 17	मं: (न	নে	139	539	#:	1. 7	₩.	(च क	≖ '	ನಾ	रिड?	नां •	(70 te	納か		رط در	e 4
मुश्रिक	मंगळ	.p.	क्	मंगळ	त्में स्म	. jp	া	I.	रत रव		. #.	₩ (#1)	~되	1 =7	ां	F7	- ₹	रम् स्ट	र्मः एन	\$ 3	(60)	বা-	127	ন্ধে খো		e 4	127 V	
व	E 5	俚	·lu·	Ę,	मंगळ	電	# 1 *	in)	म्ब्र* एज	•	छि ?	<u>ක</u>	#	#7 • • •	F 7	₩.	정	म: (न	(점 ***	109	-(p	,	भवर रहा	मः स्त्र	াং কো			e 4
म	आसि	न्छ. ची	龟	#	es H	র খ্যো	- T	i .	∓i∙ °ः	ন্ধে	187 150	*107	16 -	(B7)	_ #	ন	ংন ংন	(ह्य मः	(0) (c)	طآ.		खि	(m)	त्म. सः			٧ (ت	187 2
# @	能	俚	य.	या	रूर रेक	18	50	٠ ټټ	k₹?	₹ ₹	(≒	#	5 3)	ক্তি	5	₩?	*i∓	रहा स्त्रि	*137	₩	107	ক্র	· it	₹		_		e 75
뜵	শ্ৰ	-ip	स्क	(च	. N	मंगळ	٠١٦	to:	स्थ १९७	₩.	লে 	~하	재	₩	I= 7	-ia-	in)	प्रं⁺ एक	- 	187	(元	*#*	#*°	<u>자</u>	<u>की दिस</u> -	ল ৩ <i>ল</i>	 ع د دع	मू ५ ल्ब
						`					1	1	1		┛	Ì	I	1		ţ	İ		1	1	"		- 1	-

हवे यहोना तथा खग्नना स्पष्टीकरण माटे तेनी शिक्तिने जपयोगी सर्व पड्वर्गनुं साधारण विद्यामान कहे हे.—

षडुर्गेऽष्टादश१७०० नव ए०० षड् ६०० हे २०० सार्क्ष शतानि षष्टिश्च ६०। कमशो एइहोरादौ खिप्ताः स्युः प्रजुरिह नवांशः॥ १३॥

अर्थ— व वर्गनी मध्ये मेषादिक गृहों (स्थानो)मांना दरेकने छादासो छादासो किसार के, होरानी विसार नवसों के, केमके गृहश्री अर्धी होरा के केष्काणनी विसार कसों के, कारण के गृहश्री त्रीजे जागे केष्काण के, एरीते नवांशोनी बसें विसार , हादशांशनी दोढसो विसार छाने त्रिंशांशनी साठ विसार के साठ विविसा (पळ)नी एक विसार (धनी) याय के एतुं आगळ कहेशे. आ व वर्गनुं फळ एके जे— "तिथि विगेरेना बळधी चंकनुं बळ सो गणुं के, तेनाथी क्षप्त हजार गणुं वधार बळवान के, तेनाथी पण होरा विगेरे सर्वे जत्तरोत्तर पांच पांच गणा वधारे बळवान के." ए प्रमाणे बृहत् जातक वृत्तिमां कहां के हवे आ कए वर्गमां नवांशनुं ज प्रधानपणुं के ते कहे के — आ कए वर्गमां प्रतिष्ठा, विवाह विगेरे सर्वे कार्योने विषे नवांश ज वधारे समर्थ (बळवान्) के. ए विषे विक्ष कहे के के—

"स्वार्के नक्तत्रफलं तिथ्यर्धे तिथिफलं समादेश्यम् । होरायां वारफलं लग्नफलं त्वंशके स्पष्टम् ॥ १ ॥"

"नकत्रनुं फळ पोताना अर्ध जागमां स्पष्ट हे, तिथिना अर्ध जागमां तिथिनुं फळ स्पष्ट हे, होराने विषे वारनुं फळस्पष्ट हे,तथा लग्ननुं फळ श्रंशकमां (नवांशमां)स्पष्ट हे."

छहो नवांशनुं केवुं प्राधान्य हे ? दैवक्षवद्वजे कह्यं हे के-

"लग्ने शुजेऽपि यद्यंशः ऋरः स्यान्नेष्टसिष्टिदः । स्रो ऋरेऽपि सीम्यांशः शुजदोऽंशो बली यतः ॥ १ ॥"

"लग्न शुन होय बतां जो छांश (नवांश) क्र होय तो ते इष्ट सिद्धिने छापतो नधी, छने लग्न क्र होय बतां छांश सीम्य होय तो शुनकारक हे, कारण के छांश ज बळ-वान हे." तेमज "क्र् छांश (नवांश)मां रहेलो सीम्य ग्रह पण क्र् थाय हे, छने सीम्य छांशमां रहेलो क्रू ग्रह पण सीम्य थाय हे." एम लग्न कहे हे. "क्रू छांशमां रहेला सीम्य श्रहनी हिष्ट पण शुन शहनी हिष्ट पण शुन (सीम्य) थाय हे." तथा ग्रहगोचरनी शुद्धिना विचारने समये "राशिना गोचरणी ग्रह शुन होय तो ज ते शुन थाय हे." इत्यादि छन्न तथा श्रीपति कहे हे.

़ हवे यह पोताना वर्गमां रहेखो हे के बीजा वर्गमां रहेखो ? ते कहे हे.

षषां त्र्यादिषु वर्गेषु यो ग्रहः खेष्ववस्थितः। स खवर्गगतो क्षेय एवमेवान्यवर्गगः॥ १४॥

अर्थ—कोइ पण यह उ वर्गमांना कोइ पण पोताना त्रण, चार अथवा जत्कृष्टथी पांच वर्गमां रहेलो होय, तो ते स्ववर्गमां रहेलो हे एम जाणवुं, अने एवी ज रीते एटले त्रण, चार के पांच वर्गमां रहेलो होय, पण ते बीजाना वर्गमां रहेलो होय तो ते अन्य वर्गमां रहेलो जाणवो.

कोइ पण गह जत्कृष्टथी पांच वर्ग सुधी ज आवी शके हे, परंतु कदापि हए वर्गमां आवी शकतो नथी, कारण के सूर्य अने चंड ए वे यही तिंशांशमां आवता ज नथी, तथा मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शिन ए यही होरामां आवता ज नथी. आ प्रमाणे जे यह पो-ताना पांच वर्ग सुधीमां आवतो होय ते स्ववर्गमां आवेदो होवाशी ज वळवान् हे, अने अन्य वर्गमां आवेदो होय तो ते निर्वळ हे. विशेष ए हे जे—''जे नवांशमां ह, पांच के चार ग्रहादिक मध्ये सौम्य महस्वामी मळे तो ह वर्गनो, पांच वर्गनो के चार वर्गनो ते नवांश सौम्य होवाशी प्रतिष्ठादिकना लग्नने विषे विशेषे करीने महण करवा लायक हे. ते सौम्य महनो आ रीते निश्चय करेदो हो.—

"सत्तमनवमा मेसे १ पंचमतज्ञ्या विसे २ मिहुणि छठो ३। पढमतज्ञ्या य कके ४ सिंहे छठो ए कणी तज्ञ्जं ६॥१॥ श्राच्यमनवमा य तुले ७ विद्यियलगो चलत्थ्य नवंसो छ। धणुलग्गि छठसत्तमनवमा ए मयरंमि पंचमर्ज १०॥ २॥ छठनमा य कुंत्रे ११ पढमो तज्ञ्जं श्रामीण लग्गम्मि। चलपणवग्ग छ वग्गो एएसु नवंसएसु सुहो॥३॥"

"मेष खग्नमां सातमो अने नवमो नवांश, वृषमां पांचमो अने त्रीजो, मिधुनमां छहो, कर्ममां पहेलो अने त्रीजो, सिंहमां छहो, कन्यामां त्रीजो, तुलामां आठमो अने नवमो, वृश्चिक खग्नमां चोथो नवांश, धन लग्नमां छहो, सातमो अने नवमो, मकरमां पांचमो, कुंजमां छहो अने आठमो तथामीन लग्नमां पहेलो अने त्रीजो, आटला नवांशोमां चार वर्ग, पांच वर्ग के छवर्ग होय ते शुज हे." आटला नवांशोमां चार वर्गनी शुक्ति तो सर्वने हे, परंतु पांच अने छ वर्गनी शुक्ति तो केटलाएक नवांशोमां संपूर्ण रीते हे, अने केटलाएकमां केटलेक अंशे ज हे. तेनी स्पष्टता आ अंथना हेला श्वीकरी हितामां लखेली है, त्यांशी जाणी लेवी. केटलाएक आचार्यो त्रण ज वर्गनी शुक्तिए करीने अने बीजा

केटलाक नवांशनी ज प्रजाताने लीधे एक तेने ज सौम्यने खड़ने वाकीना वर्गनी शुद्धि विना पण खग्ननो आदर करे हे. तेथी करीने आहीं तत्त्व ए हे जे खग्नने विषे आवश्य महण करवा खायक नवांशनी शुद्धि कर्या पही जेम जेम वधारे शुन्न वर्गनो खान आय तेम तेम प्रतिष्ठादिक शुन्न कार्यमां तेनुं विशेषे करीने महण करवुं.

दिशार्छना स्त्रामी तथा यहोनी सौम्यता ऋरता कहे छे.—

प्रहाः स्युरेन्द्राद्यधिपा दिनेश र शुक्राश्र र राह्वाधर्कि ५ शशि ६ इछ जीवाः छ। पापाः क्रशेन्द्रकेतमोऽसितारास्तैः संयुतो इक्ष परे तु सौम्याः॥ १५॥

अर्थ—पूर्व दिशानो अधिपित सूर्य हे, अग्नि कोणनो शुक्र, दिश्णनो मंगळ, नैर्क्रत्यनो राहु, पश्चिमनो शिन, वायव्यनो चंद्र, उत्तरनो वुध अने ईशाननो अधिपित गुरु
हे आनुं प्रयोजन ए हे जे—"केंद्रमां रहेला बळवान् ग्रहने अनुसारे चोरादिक कर दिशामां गया हे तेनुं ज्ञान थाय हे." कृश चंद्र, (एटले विद चौदशयी त्रण दिवसमां चंद्र
कळा रहित होय हे, माटे ते कृश चंद्र कहेवाय हे) सूर्य, राहु, शिन अने मंगळ एटला
ग्रह पापी—क्रूर हे, तथा आटला ग्रहे करीने युक्त एटले आमांना कोइ पण ग्रहनी साथे
एक स्थानमां रहेलो बुध पण क्रूर हे, अने वाकीना एटले पुष्ट (कळावाळो) चंद्र, क्रूर
ग्रह्थी जूदो रहेलो बुध, गुरु छने शुक्र एटला ग्रहो सौम्य हे. आनुं फळ ए हे जे क्रूर
अने सौम्य ग्रहना विषष्ठपणाने लीधे (अनुसारे) उत्पन्न थयेला बाळकना स्वजाव
विगेरेनुं ज्ञान थाय हे. विशेष आ प्रमाणे हे.—

"रक्त स्थामो जास्करो १ गौर इन्छ २ र्नात्युचांगो रक्तगौरश्च वकः ३। छर्वा स्थामो क्रो ४ गुरुगौरगात्रो एस्थामः शुको ६ जास्करिः कृष्णदेहः ७॥१॥" "सूर्य रक्त तथा स्थाम वर्णवाळो ठे, चंद्र गौर वर्णवाळो ठे, मंगळ रक्त तथा गौर ठे अने अत्यंत जंचा शरीरवाळो नथी, बुध छर्वा (ध्रो) जेवो स्थाम ठे, गुरु गौर गात्र-वाळो ठे, शुक्र स्थाम ठे अने शनि कृष्ण देहवाळो ठे."

आतुं फळ पण ए ज ठे के बळवान् महना जेवी वाळकनी मूर्ति (वर्ष) होय हे, अथवा खन्नमां ते ज वस्तते जे नवांश होय तेना स्वामीना जेवी तेनी मूर्ति (वर्ष) होय हे. हवे केतुना स्थाननो निर्णय करे हे.

पृत्वादिष्वपरे केतुं तमसः सप्तमं विद्यः। शुक्रेन्द्र योषितौ मन्द्बुधौ क्लीबौ परे नराः॥ १६॥

अर्थ केटलाएक आचार्यो प्रश्नादिकमां केतुने राहुना स्थानथी सातमे स्थाने कहे है. प्रश्नादिक कहेवाथी जातकमां, ग्रहगोचरमां तथा प्रतिष्ठादिकना लग्नमां केतुनो तेवा प्रकारनो छपयोग नथी एम सूचव्युं हे. केतुना स्थानना निर्णय माटे छवनदीप-कमां कहुं हे के--

> "राहुद्वाया स्मृतः केतुर्यत्र राशौ जवेदयम्। तस्मात्सप्तमके केतू राहुः स्याद्यन्नवांशके॥ १॥ तस्मादंशे सप्तमे स्थात्केतु(तो)रंशो नवांशकः।"

"केतुने राहुनी ग्रायारूप कहेलों ग्रे, तेथी करीने राहु जे राशिमां होय टे राशिष्ठी सातमी राशिए केतु होय ग्रे वळी राहु जे नवांशकमां होय ग्रे, तेथी सातमे नवांशे केतुनो नवांशक होय ग्रे छानो जावार्थ ए ग्रे जे राशिमा जेटलामा नवांशकमां राहु होय, ते राशिष्ठी सातमी राशिना तेटलामा ज नवांशकमां केतु पण होय ग्रे, परंतु राहुनी स्थितिन वाळा नवांशयी गणीए तो केतुनी स्थितिवाळो नवांशक सातमो ज छावे. जेमके मेषना पहेला मेष नामना नवांशकमां राहु होय त्यारे तुलाना पहेला तुला नामना नवांशमां केतु होय ग्रे, तेथी मेष नामना नवांशयी गणतां तुला नामनो नवांश सातमो ज ग्रे. वळी मेपना नवमा धन नामना नवांशमां राहु होय तो तुलाना नवमा मिथुन नामना नवांशमां केतु होय, तेथी धनुष (धन) नामना नवांश्यी गणतां मिथुन नामनो नवांश सातमो ज ग्रे. इत्यादि.

हवे मूळ श्लोकना उत्तरार्धनो अर्थ आ प्रमाणे हे—शुक्र अने चंद्र स्त्रीरूपे हे, शिन अने बुध नपुंसक हे, अने बाकीना एटले रिव, मंगळ अने गुरु पुरुष हे. शिन अने बुध पण स्त्री ज हे एम कोइ आचार्य कहे हे. आनुं फळ ए हे जे जन्मना विचारमां अथवा गयेली वस्तुना विचारमां जे यह बळवान् होय तेने अनुसारे स्त्री विगेरे पोताना वर्गनो बोध थाय हे.

हवे बाह्मणादिक वर्णीना स्वामी कहे हे.-

वर्णानां जीवसितौ र रविजीमा १ विन्छ ३ रिन्छुज ४ श्रेशाः। संकरजानां तु शनिर्जीव र सिता १ रें ३ छुजाश्च ४ वेदानाम्॥ १९॥

श्रर्थ—वर्णोनी मध्ये ब्राह्मणोना स्वामी गुरु श्रने शुक्र हो, क्षत्रियोना रिव श्रने मंगळ स्वामी हो, वैश्यनो स्वामी चंद्र हो, श्रने शूद्धनो स्वामी वुध हो. संकरज एटले मूर्धाविस-कथी श्रारंजीने रथकार (सुथार)नी जाति सुधीना निषंदुमां कहेला तेर जेदोवाळी मिश्र जाति श्रर्थात् गमे तेवी वे जातिथी छत्पन्न थयेला माणसो संकर कहेवाय हो, ते सर्वनो स्वामी शिन हो, ऋग्वेदनो स्वामी गुरु हो, यजुर्वेदनो स्वामी शुक्र हो, सामवेदनो स्वामी मंगळ हो अने श्रथ्वेदनो स्वामी बुध हो, श्रानुं फळ ए हो जे—गुरु विगेरेना छदय तथा श्रस्तमां ते ते वेदवाळाने सुख इःखादिकनी प्राप्ति श्राय हो.

हवे यहोनां स्थान, दिशा, काळ, चेष्टा, दृष्टि तथा स्वाजाविक बळ ए नामनां इ प्रकारनां बळने कहे हो. तेमां प्रथम स्थानवळ कहे हो.

ते स्थानबिबनो मित्रखग्रहोच्चनवांशगाः। स्त्रीराशिष्वन्छभृगुजौ पुंराशिषु पुनः परे॥ १०॥

अर्थ — ते सर्वे यहो मित्रना घरमां, पोताना घरमां, पोताना उच्च स्थानमां (मित्रना उच्च स्थानमां, मित्रना नवांशमां) अने पोताना नवांशमां रह्या होय तो ते बळवान् हे. स्वी राशिमां चंद्र अने शुक्र बळवान् हे, तथा बीजा पांच यहो पुरुष राशिमां बळवान् हे. अहीं गृह (घर) शब्दना छपखक्षणथी मूळ त्रिकोण पण खेवानो हे. ते विषे त्रैखोन्यमकाशमां कह्यं हे के—"मित्र ए स्वर्क्ष १० त्रिकोणो १ए चे २० फखं दत्तेऽहिवृद्धितः" "मित्रना स्थानमां रहेलो यह एक पादनुं एटले विंशोपकनी अपेकाए पांच वसानुं फळ आपे हे, पोताना स्थानमां रहीने वे पादनुं एटले दश वसानुं फळ आपे हे, त्रिकोणमां रह्यो होय तो त्रण पादनुं एटले पंदर वसानुं फळ आपे हे, अने उच्च स्थानमां रह्यो होय तो चारे पादनुं एटले वीशे वसानुं फळ आपे हे. "आगल कहेवामां आवनार अधिमित्रां-शमां वर्गोत्तमांशमां अथवा खग्नना छिदतांशमां रहेलो ग्रह बळवान् हे, एतो स्फुटज हे.

। इति स्थानबद्धं । १

हवे दिग्वळ कहे हे.-

खग्नायु(छ्यु)त्क्रमकेन्डाख्यदिक्क प्राच्यादिषूद्द्वाः । जीवक्षी र जास्करक्षाजौ १ शनिः ३ सितसितयुती ४॥ १ए॥

अर्थ—खग्नथी आरंजीने जत्कम (पश्चानुपूर्वीना कम) श्री केन्क नामनी पूर्वादिक दिशाजेमां अनुक्रमे गुरु अने बुध, रिव अने मंगळ, शिन, तथा शुक्र अने चंक्र बळवान् हे. जावार्थ ए हे के—जत्कमथी केंक्र स्थान होतां पहेलुं, दशमुं, सातमुं अने चोशुं स्थान आहे. तेथी पहेलुं (ह्या) स्थान ए पूर्व दिशा थर, तेमां गुरु अने बुध बळवान् हे. दशमुं स्थान दिशा, तेमां रिव अने मंगळ बळवान् हे. सातमुं स्थान पश्चिम दिशा, तेमां शिन बळवान् हे, तथा चोथुं स्थान जत्तर दिशा, तेमां शुक्र अने चंक्र बळवान् हे. आ केन्क्र स्थानना आंतरामां के अगीयारमुं अने वारमुं विगेरे बहे स्थानो रह्यां हे तेने अग्नि खूणा विगेरे चार विदिशालं जाणवी अने तेमनुं पूर्वादिकनी जेवुं ज फळ जाणवुं, केमके विदिशालं दिशालंने ज अनुसरे हे.

। इति दिग्वलं । २

ह्ये काळवळ कहे हे.--

बिनोऽह्यि ग्रुहिताकाः सदा बुधो निशि तु चन्डकुजमन्दाः। खिद्नादिषु च सितासितपद्घितयेषु ग्रुजकूराः॥ ३०॥

अर्थ—गुरु, शुक्त अने रिव ए त्रण ग्रह दिवसे वळवान् हे, बुध रात्रि दिवस बळ-वान् हे, तथा चंद्र, मंगळ अने शिन ए त्रण ग्रहो रात्रिए बळवान् हे. पोताना दिव-समां, पोताना वर्षमां, पोताना मासमां अने पोतानी काळहोरामां ते ते दिनादिकना स्वामीरूप ग्रहो बळवान् हे. ते अधिपति (स्वामी) छ आ प्रमाणे.—

> "यस्य वारस्य मध्ये स्यात् शुक्खप्रतिपदो मुखम् । तन्मासेशः स विक्षेयश्चैत्रे वर्षाधिपः पुनः ॥ १ ॥"

"जे वारना ग्रहमां शुक्ल प्रतिपद्नो प्रारंज होय ते ग्रह ते मासनो स्वामी होय हे, परंतु वर्षनो जे स्वामी होय ते चैत्र मासनो स्वामी होय हे."

वर्षनो स्वामी जाणवा माटे व्यवहारसारमां आ प्रमाणे हे.—
"चैत्रादिमेषसंक्रान्तिकर्कसंक्रान्तिवासराः।
प्रतिवर्षे क्रमाज्झेया राजानो मंत्रिसस्यपाः॥ १॥"

"चैत्र मासना पहेंद्वा वारने वर्षनो राजा (स्वामी) जाएवो, मेष संक्रांतिना वारने वर्षनो मंत्री जाएवो अने कर्क संक्रांतिना वारने वर्षनो सस्याधिप (धान्येश) जाएवो। एम दरेक वर्षे जाएवं."

दिवसनो स्वामी ते दिवसनो वार ज जाखवो, छने काळहोराना स्वामी तो प्रथम कह्या हे ते जाखवा. छानुं फळ मुहूर्ससारमां कह्यं हे के—

''वर्षमासद्युहोरेशैर्वृद्धिः पत्रोत्तरा फले।''

"वर्षनो स्वामी (ग्रह) आखा वर्ष सुधी एक पादनुं फळ एटखे पांच वसा फळ आपे हे, मासनो स्वामी आखा मासमां दश वसा फळ आपे हे, दिवसनो स्वामी आखो दिवस पंदर वसा फळ आपे हे, अने होरानो स्वामी पोतानी होरामां पोताना वारना योगने खीधे पूर्ण एटखे वीशे वसा फळ आपे हे."

शुक्लपक्तमां सौम्य महो वळवान् हे अने कृष्णपक्तमां क्रूर महो बळवान् हे.

। इति कालवलं । ३ हवे चेष्टावळ कहे हे.—

रविचन्डावुदगयने विपुलक्षिग्धाश्च वक्रगाश्चान्ये। बलिनो युधि चोत्तरगा व्यर्केन्ड्यताश्च चेष्टाजिः॥ ३१॥ श्रर्थ—रिव श्रने चंद्र ए वे ग्रहो जत्तरायणमां वळवान् हो, एटले के मकर विगेरे ह राशिमां वळवान् हो, पण कर्क विगेरे ह राशिमां वळवान् नथी, श्रने बीजा पांच ग्रहो विपुल, स्निग्ध श्रने वक्र गितवाळा होय त्यारे ते बळवान् हो. विपुल एटले घणा दिवसधी जदय पामेला श्रने विशाळ स्थूळ विंववाळा होय, पण बाळक, वृद्ध के श्रस्त पामेला न होय. श्रहीं जदय थया पही श्रहोनुं बाळपणुं कहेवाय हो, श्रने श्रस्त थया पहेलां वृद्धत्व कहेवाय हो. सप्तर्षि कहे हे के "बाह्यावस्थामां तथा वृद्धावस्थामां सर्वे ग्रहो सात सात दिवस निर्वेळ होय हो." वळी ते पांचे ग्रहो क्लिग्ध होय एटले के स्पष्ट किरणवाद्या श्रर्थात् श्राकाशमां देखाता होय, श्रा स्निग्धपणुं सूर्यथी श्रत्यंत इर होय त्यारे होय हे. वळी ते पांचे ग्रहो वक्र गितवाळा होय तो ते बळवान् होय हो. पांकशी ग्रंथमां कहां हे के "वक्र गितमां सर्वे ग्रहोनुं बळ मूळ त्रिकोणनी जेटलुं होय हो." परंतु हर्षश्रकाशमां तो एखं कहां हे के—"वक्षी पावो बली सुनो सिग्धो" "वक्षी श्रयेलो बळवान् ग्रह छुष्ट हे, श्रने स्निग्ध बळवान् ग्रह शुन हे." मंगळ विगेरे पांचे ग्रहोनी गित प्रश्नशतक वृत्तिमां श्रा ग्रमाणे हे.—

"सूर्येजु(मु)का खदीयन्ते शीघा श्वर्के दितीयगे। समं तृतीयगे यान्ति मन्दा जानौ चतुर्थगे॥ १॥ वक्राः पञ्चमपष्ठेऽकें तेऽतिवक्रा नगाष्टगे। नवमे दशमे मार्गाः सरवा वाज ११ रिष्यगे १२॥ २॥"

"सर्वे (पांचे) ग्रहो सूर्ये जोगव्या पांची एटखे सूर्यथी बूटा थया पांची छदय पामे हो, सूर्य बीजी राशिमां जाय त्यारे तेर्च शीघ्र गतिवाळा थाय हो, सूर्य त्रीजे स्थाने होय त्यारे तेर्च सम गित करे हो, सूर्य चोथे होय त्यारे मंद गितवाळा होय हो, सूर्य पांचमे तथा होय त्यारे तेर्च खारे होय त्यारे तेर्च खारे तेर्च मार्गगामी थाय हो, तथा सूर्य खारारमे खाने बारमे होय त्यारे तेर्च सरदा गतिवाळा (सीधा) होय हो." अहीं सूर्य पांचमे हो होय एम जे कहां ते शिन, मंगळ खाने गुरुने खाशीने कहां हो, केमके बुध खाने शुक्र तो सूर्यनी समीपे रहीने ज वक थाय हो. ए ज रीते मार्गगामीमां, पण जाणवं. एटखे के शिन, मंगळ खाने गुरुने खाशीने ज जाणवं.

आकाशमां एक ज नक्त्रना पादमां परस्पर तारार्छ श्रने यहनो जे योग श्रवो ते युद्ध कहेवाय है. तेथी करीने युद्धमां सूर्य रहित श्रने चंद्र सहित एवा सर्वे यहो छत्तरमां गति करनारा होय तो तेर्छ चेष्टाए करीने बळवान् हे. एटले के छत्तर गामी यहोनो जय भाय हे माटे ते बळवान् हे, श्रने दिक्षण गामीनो पराजय थाय हे माटे ते निर्बळ हे.

दराहना मतमां तो शुक्रने दिएए गामी होय तो बळवान् कह्यो है. ते विषे वराह-संहितामां कह्यं हे के—

"सर्वे बितन छदक्स्या दिक्णिदिक्स्यो वली शुकः।"

"सर्वे महो उत्तरमां रह्या होय तो बळवान् हे, अने शुक्र तो दक्षिणमां रह्यो होय तो ते बळवान् हे । इति चेष्टावलं । ध

हवे दृष्टिवळ कहे हे.---

सीम्यैर्देग्बलिनो दृष्टा बले नैसर्गिके पुनः। मन्दारक्रेज्यग्रुकेन्ड्रजास्कराः स्युर्बलोत्तराः॥ ३१॥

श्चर्य—सौम्य ग्रहोए तथा जपलक्षणथी मित्र ग्रहोए पण एक पाद, बे पाद, त्रण पाद के चार पादनी दृष्टिए जोयेला होय तो ग्रहो श्चनुक्रमे तेटलां पाद एटले तेटला वसा बळवान् कहेवाय हो. । इति दृग्बलं । ए

ज्यारे वे अथवा तेथी वधारे महोनुं बीजा महनी सरखुं बळ थाय त्यारे स्वाजाविक वळ करीने ज सबळपणुं अने निर्वळपणुं जणाय हो. तेथी करीने स्वाजाविक वळ कहे हो.—स्वाजाविक वळनो विचार करीए तो शनि, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्त, चंड अने सूर्य ए महो छत्तरोत्तर अधिक बळवान हो, एटले के शनिश्री मंगळ वधारे वळवान्, ते-नाथी बुध वधारे बळवान् विगेरे. राहु तो सूर्यथी पण वधारे बळवान् हे.

। इति स्वाजाविकवलं । ६

जपर जे सौम्य बहोए जोयेला होय एम दृष्टिबळमां कहां तेमां दृष्टिनो प्रकार कहे छे.— पश्यन्ति पादतो बुद्ध्या ज्ञात ३ व्योम्नी १० त्रित्रिकोणके ५-ए । चतुरस्रे ४-७ स्त्रियं ७ स्त्रीवन्मतेनाया ११ दिमा १ विष ॥ ३३ ॥

अर्थ—सर्वे यहो पोतपोताना स्थानथी त्रीजा तथा दशमा स्थानने एक पाद विंशो-पक्ती अपेकाए पांच वसा दृष्टिए जुए हे, नवमा अने पांचमा स्थानने वे पाद एटले दश वसा दृष्टिए जुए हे, चोथा अने आहमा स्थानने त्रण पाद एटले पंदर वसा दृष्टिए जुए हे, खोन सातमा स्थानने चारे पादनी संपूर्ण (वीशे वसा) दृष्टिए जुए हे. कोइ आचार्यनो एवो मत हे के पहेला (पोताना) अने आगीयारमा स्थानने पण स्त्रीनी एटले सातमा स्थाननी जेम पूर्ण दृष्टिए जुए हे. वाकीनां एटले वीजुं, हां अने बारमुं ए त्रण स्थानोने विखकुल जोता नथी. एम अर्थापत्तिथी सिद्ध थयुं. ज्यां जेटला वसा दृष्टि होय त्यां तेटला वसा फळ पण जाणी लेवुं.

अहीं कोइ रांका करे वे के—"शुं सर्वे ब्रहोनी सातमा स्थानमां ज पूर्ण दृष्टि वे ? के कोइने बीजे स्थाने पण पूर्ण दृष्टि वे ?" ते पर कहे वे.—

परयेत्पूर्णं शनिर्ज्ञातृव्योन्नी धर्मधियौ ग्ररः । चतुरस्रे कुजोऽर्केन्डबुधशुक्रास्तु सप्तमम् ॥ ३४॥

श्रर्थ—शनि त्रीजा श्रने दशमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए हे, गुरु नवमा अने पांचमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए हे, मंगळ चोश्रा श्रने श्राह्मा स्थानने संपूर्ण दृष्टिए जुए हे, तथा सूर्य, चंज, बुध श्रने शुक्र तो सातमा स्थानने पूर्ण दृष्टिए जुए हे.

जावार्थ—जीजा अने दशमा स्थान जपर बीजा बहोनी एक पाद दृष्टि के, पण शनिनी तो पूर्ण दृष्टि के, अने नवमा तथा पांचमा पर, चोथा तथा आवमा पर अने सातमा पर जेम बीजा बहोनी दृष्टि अनुक्रमें वे पाद, त्रण पाद अने संपूर्ण दृष्टि के, ते ज रीते शनिनी पण के, तथी करीने शनिनी एक पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. तथा नवमा अने पांचमा स्थान पर अन्य बहोनी वे पाद दृष्टि के, पण गुरुनी तो पूर्ण दृष्टि के, अने जेम बीजा ब्रहोनी दृष्टि जीजा तथा दशमा स्थान पर, चोथा तथा आठमा स्थान पर अने सातमा स्थान पर अनुक्रमे एक पाद, त्रण पाद अने पूर्ण (चार पाद) के तेम गुरुनी पण तेटली ज दृष्टि के, तथी करीने वे पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. तथा चोथे अने आठमे स्थाने अन्य बहोनी त्रण पाद दृष्टि के, परंतु मंगळनी तो पूर्ण दृष्टि के. जेम त्रीजे तथा दशमे स्थाने, नवमे तथा पांचमे स्थाने अने सातमे स्थाने अन्य बहोनी अनुक्रमे एक पाद, वे पाद अने चारे पाद (पूर्ण) दृष्टि के ते ज रीते मंगळनी पण के, तथी करीने मंगळनी त्रण पाद दृष्टि कोइ पण स्थाने नथी एम सिद्ध थयुं. सूर्य, चंड, बुध अने शुक्र ए चार बहो तो सातमा स्थानने ज पूर्ण दृष्टिए जुए के, वीजा कोइ पण स्थानने पूर्ण दृष्टिए जोता नथी. जे स्थानोने पादादिक दृष्टिए जुए के, ते प्रथम कही गया के.

ज्योतिषसारमां तो आ प्रमाणे कहुं वे के—''सर्वे यहोनी (कोइ पण यहनी) वीजे अने वारमे स्थाने दृष्टि पमती नथी, वृष्ठे अने आवमे स्थाने एक पाद दृष्टि पमे वे, त्रीजे अने अगीयारमे स्थाने वे पाद दृष्टि पमे वे, नवमा अने पांचमा स्थाने त्रण पाद दृष्टि पमे वे अने कें अने केंड्नां चारे स्थानो उपर पूर्ण दृष्टि पमे वे." वळी ताजिकमां तो वीजुं, वारमुं, वृष्ठं अने आवमुं ए चार स्थाने विज्ञकुत दृष्टि इञ्ची नथी.

स्थानवळ कहेती वखते मित्र स्थान छाने पोतानुं स्थान ए विगेरे जे कह्यं हे तेथी स्थान मैत्र्यादिक कहे हे.—

रवेः शुक्रशनी शत्रू इः समः सुहृदः परे । चन्डस्यार्कबुधौ मित्रे कुजगुर्वादयः समाः ॥ ३५ ॥

श्चर्य-शुक्र श्वने शनि रिवना शत्रु है, बुध सम (नहीं शत्रु तेम नहीं मित्र) है, श्वने बीजा (चंद्र, मंगळ, गुरु) मित्रो है. चंद्रना सूर्य श्वने बुध मित्र है, श्वने बाकीना मंगळ, गुरु विगेरे सम है. (शत्रु कोइ नथी.)

> कुजस्य को रिपुर्मध्यो शनिशुकौ परेऽन्यथा। बुधस्य मित्रे शुक्राकौँ शत्रुरिन्छः समाः परे॥ ३६॥

अर्थ-मंगळनो रात्र बुध हे, रानि अने शुक्र मध्य हे, अने बीजा मित्र हे. बुधना मित्र शुक्र अने सूर्य हे, चंद्र रात्रु हे, अने बीजा सम हे.

> जीवस्याकित्रयो मित्राएयार्किर्मध्यः परावरी । कवेरमित्रे मित्रेन्ट्स मित्रे क्लार्की समावुजी ॥ ३७ ॥

अर्थ-गुरुना रिव, चंड अने मंगळ ए त्रण मित्रो हो, शिन मध्य (सम) हे तथा बीजा (बुध अने शुक्र) शत्रु हो. शुक्रना सूर्य अने चंड शत्रु हो, बुध अने शिन मित्र हे तथा मंगळ अने गुरु सम हो.

मंदस्य इसितौ मित्रे गुरुर्मध्यः परेऽरयः।

तस्काखसुहृदो दि २ त्रि ३ सुख ४ लाजा ११ न्त्य ११ कमी १० गाः ॥३७॥ अर्थ—शनिना बुध अने शुक्र मित्र हे, गुरु सम हे, अने बीजा एटले सू^९, चंड्र अने मंगळ ए त्रण शत्रु हे.

शत्रु, मित्र छाने समनुं वंत्र.

गृहाणि	रवि	चन्द	मंगळ	बुध	्र गुरु	যু ক	। शनि
शत्रवः	शु. श्.	•	बु.	चं.	લુ. શુ.	र, चं.	र. चं. मं.
	चं. मं. गु.	र. बु.	र.चं. गु.		र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
मध्यस्थाः	बु.	मं. गु. शु.	য়ু. হা.	मं. गु. श.	হা-	मं. गु.	गु.
		্ব হা.	<u> </u>		}		

जन्ममां अथवा प्रश्नादिकना लग्नमां कोइ पण स्थाने कोइ पण ग्रह होय तेनाधी वीजे, त्रीजे, चोथे, अगीयारमे, बारमे के दशमे स्थाने जे कोइ बीजो ग्रह होय तो ते तेटला वलत सुधी एटले वे विगेरे स्थाने रह्यो होय त्यांसुधी तेनो मित्र थाय हे. आ तारकालिक मैत्री कहेवाय हे.

हवे तात्कालिक मैत्रीनुं फळ कहे हे.— मित्रमध्यारयो येऽत्र निसर्गेणोदिताः क्रमात् । श्रिधिमत्रसुहृन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालमैत्रयतः ॥ ३० ॥

अर्थ - अहीं जे मित्र, मध्य अने शत्रु स्वजावे करीने कहेला है, ते अनुक्रमे तत्काल मैत्री अकी अधिक मित्र, मित्र अने मध्य शाय है.

अर्थापत्तिथी ज मित्र स्थानयकी अन्य जे पहेलुं, पांचमुं, ठाडुं, सातमुं, आठमुं अने नवमुं एदलां स्थानो ते तत्काळ वैरी स्थानो ययां. तेमनुं फळ आ प्रमाणे हे.—

"येऽत्रारिमध्यमित्राणि निसर्गेणोदिताः क्रमात्। अधिशत्रुदिषन्मध्यास्ते स्युस्तत्कालवैरतः॥ १॥"

"अहीं जे स्वजावे करीने अरि, मध्य अने मित्र कह्या है, ते अनुक्रमे तत्काल वैर-पणाथी अधिक रात्र, रात्र अने मध्य याय है."

ख्यनदीपकमां तो महोना मित्र अने शत्रु एवा ने ज पक् कह्या है. ते आ प्रमाणे हे.—

"रवीन्छ्जीमगुरवो इशुक्रशनिराहवः। स्वस्मिन् मित्राणि चत्वारि परस्मिन् शत्रवः स्मृताः॥१॥ राहुरव्योः परं वैरं गुरुजार्गवयोरिष । हिमांशुबुधयोवैरं विवस्वन्मन्दयोरिष ॥ १॥ स्रतिमैत्री राहुशन्योरिन्छगुर्वोः कुजार्कयोः। सित्रक्रयोः"

"रिवि, चंड, मंगळ अने गुरु ए चारे परस्पर मित्रो हे, अने बीजाना शतु है. तथा बुध शुक्र, शिन अने राहु ए चारे परस्पर मित्र हे, अने बीजाने विषे शतु है. (१) राहु अने रिविने परस्पर आत्यंत वैर हे, गुरु अने शुक्रने पए परस्पर आत्यंत वैर हे, चंड अने बुधने तथा सूर्य अने शिनिने पए परस्पर आत्यंत वैर है, चंड आने गुरुने, मंगळ अने सूर्यने तथा शुक्र अने बुधने परस्पर आत्यंत मित्रजाव है."

श्रा प्रमाणे प्रहोने मित्र स्थान अने पोतानुं स्थान जो जच स्थान होय तो ते विशेषे करीने हुष तथा दीप्तिने देनारां हे. जेम रिवने मित्रनुं गृह मेष राशि हे अने ते जच हो, बुधने पोतानुं घर कन्या है अने ते जच हो. इत्यादि, पण शत्रुनां घरो तो जच होय तोपण प्रजाने आपनारां हे, पण अंदरश्री सुल आपनारां नथी. जेम शुक्रने मीन स्थान जच हतां शत्रुनुं घर हे, अने मित्रनां घर नीच हतां कांइक प्रजाने आपनारां हे. जेम चंडने वृश्चिक स्थान नीच हे, तथा शत्रुनां घर नीच होय तो नाना प्रकारना अनर्थने तथा प्रजानी हानिने करनारां याय हे. एम जुवनदीपक वृत्तिमां कह्युं हे.

हवे यवनाचार्य कहेलो राशिमां रहेला ब्रहोनो परस्पर वेध कहे हे.— स्याफोचरेणात्र शुजोऽपि विद्धः खेटोऽन्यखेटैरशुजः क्रमेण। छुष्टोऽपि चेष्टश्च स वामवेधानिमयो न वेधः पितृपुत्रयोस्तु॥ ४०॥

श्चर्य — श्वर्हीं गोचरवने शुन्न थयेलो ग्रह पण कहेवाशे एवा क्रमे करीने बीजा ग्रहोए विंधावाथी श्वशुन थह जाय हे, श्वने गोचरवने छष्ट थयेलो ग्रह पण कहेवाशे एवा श्वनुक्रमे वाम वेधथकी इष्ट (शुन्न) थाय हे; परंतु पिता श्वने पुत्रने परस्पर वेध थतो नथी। एटले के रिव श्वने शिन पिता पुत्र हे तथा चंद्र श्वने बुध पिता पुत्र हे, तेनो परस्पर वेध नथी।

श्रहीं त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेखा सूर्यने नवमा विगेरे स्थानमां रहेखा श्रन्य प्रहोन वने जे कहेवामां श्रावशे ते वेध कहेवाय हे, श्रने नवमा विगेरे स्थानमां रहेखा सूर्यने त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेखा श्रम्य प्रहोवने जे कहेवाशे ते वाम वेध कहेवाय हे. एटखे के त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेखा सूर्य शुज हे, पण जो नवमा विगेरे स्थानमां रहेखा बीजा प्रहोवने तेनो वेध न श्रतो होय तो ते शुज हे. तथा नवमा विगेरे स्थानमां रहेखो सूर्य श्रशुज हे, हतां जो त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेखो सूर्य श्रशुज हे, हतां जो त्रीजा विगेरे स्थानमां रहेखा श्रम्य प्रहोवने तेनो वेध श्राय तो ते शुज हे. ए प्रमाणे बीजा प्रहो पण जाणवा. यतिवह्नजमां कह्यं हे के—

"एजिर्वेधैर्विद्या विफखाः स्युर्गोचरे ग्रहाः सर्वे । विपरीतवेधविद्याः पापा श्रपि सौम्यतां यान्ति ॥ १ ॥"

"गोषरमां रहेला सर्वे प्रहो स्त्रा वेधवमे विंधाया होय तो निष्फळ (स्रशुज) हे, ध्रने विपरीत-वाम (स्रवळा) वेधश्री विंधायेला छट प्रहो होय तो ते सीम्यताने पामे हे-शुज स्राय हे."

रतमाला जाष्यमां कहां हे के-"'जे कोइ स्थाने रहेला प्रहे इष्ट प्रहनो वेध कर्यो होय तो ते त्यां रहीने ज पोतानुं शुज अथवा अशुज फळ आपे हे. ए खरुं तत्त्व हे."

जेर्ड गोचरना फळने ज प्रमाणहप गणीने वेधना विषयमां मध्यस्थपणा (उदासी-नता)नो आश्रय करे हे, तेमनो मत घणा आचार्योने संमत नथी. ते विषे सारंग कहे हे के—

> "यत्र गोचरफखप्रमाणता तत्र वेधफखिमध्यते न वा। प्रायशो न बहुसम्मतं त्विदं स्थूखमार्गफखदो हि गोचरः॥ १॥"

"जे कार्यमां गो वरना फळनी प्रमाणता है, ते कार्यमां वेधनुं फळ गणवुं अथवा तो न गणवुं. तेमां जेवी इक्षा, परंतु प्राये करीने आ वात घणाने संमत नथी, कारण के गो- चर तो स्थूख़ मार्गे फळने आपनार है."

यतिवद्वजमां पण कह्यं हे के—
"श्रकात्वा वेधविधिं ग्रहगोचरपाकजातगुणदोषम्।
ये निर्दिशन्ति मृदास्तेषां विफलाः सदादेशाः॥ १॥"

"जे मूढ पुरुषो वेधना विधिने जाएया विना महगः चरना पाकथी जत्पन्न थयेखा गुण दोषने कहे हे, तेमना आदेशो सदा निष्फळ हे."

वाम (नावो) श्रने श्रवाम (जमणो) ए वे प्रकारनो वेध जन्मनी राशिष्ठी ज गणवो. हवे वेधनो प्रकार कहे हो.

वेधस्त्रिषड्गगनसाजगतस्य ३-६-१०-११ जानोः,
स्वेटैः क्रमेण नवमान्त्यसुखात्मजस्थैः ए-११-४-ए।
इन्दोस्तनौ त्रिरिपुमन्मचखायगस्य १-३-६-९-१०-११,
धीधमिरिष्यधनबन्धुमृतौ ए-ए-११-१-४-७ स्थितेश्च ॥ ४१ ॥
स्यान्मंगसस्य सहजिद्धवदायगस्य ३-६-११,
सौरेस्तथा व्ययतपःसुखगैश्च ११-ए-४ वेधः।
चान्द्रेः स्वबन्धुरिपुमृत्युखसाजगस्य १-४-६-७-१०-११,
पुत्रत्रिधमतनुनिर्व्यवनांस्यगैश्च ए-३-ए-१-७-११ ॥ ४२ ॥
वावस्पतेः स्वतनयास्तनवायगस्य १-५-९-ए-११,
वेधस्तयान्त्यसुखविकमस्वाष्टगैश्च ११-४-३-१०-७ ।
ग्रुक्तस्यषद्खमदनान्यज्ञुषो १-१-३-५-५-ए-ए-११--११ ष्टससाग्राकाशधमतनयायतृतीयपष्टैः ७-९-१-८०-ए-५१-३-६॥ ४३॥
श्रर्थ—त्रीजे, ठि, दशमे श्रने श्रगीयारमे स्थाने रहेला सूर्यनोश्चनक्रमे नवमा, वारमा,
बोधा श्रने पांचमा स्थाने रहेला श्रन्य ग्रहोवने वेध श्राय हे.

पहेंखे, त्रीजे, उन्ने, सातमे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेला चंदनो अनुक्रमे पांचमे, नवमे, बारमे, बीजे, चोखे अने आठमे रहेला प्रहोवमे वेध आय हे.

त्रीजे, उर्चे अने अगीयारमे स्थाने रहेखा मंगळनो तथा शनिनो अनुक्रमे बारमे, नवमे

बीजे, चोथे, उठे, आठमे, दशमे अने अगीयारमे स्थाने रहेखा बुधनो अनुक्रमे पांचमे, बीजे, नवमे, पहेखे, आठमे अने बारमे स्थाने रहेखा ग्रहोवके वेध आय हे. वीजे, पांचमे, सातमे, नवमे अने अगीयारमे स्थाने रहेखा गुरुनो अनुक्रमे वारमे, चोथे, त्रीजे, दशमे अने आठमे रहेखा ग्रहोवमे वेध शाय हे.

पहें हो जी जे, जी जे, चो थे, पांचमे, आठमे, नवमे, अगीयारमे अने बारमे रहे दा शुक्रनो अनुक्रमे आठमे, सातमे, पहें हो, दशमे, नवमे, पांचमे, अगीयारमे, जी जे अने उठे स्थाने रहे दा ग्रहोवमे वेध आय हो.

यहोनो वेध यंत्र

₹	वेः		चन्	रस्य	नौम	शन्योः	बु	धस्य	1	<u> उ</u> रोः	शुक	स्य
३	10	<u>.</u>	₹.	ए	३	१ २	হ	Ų	হ	१२	1	U
ξ	₹:	হ	3	ψ	ξ	Ų	Я	३	પ	ម	হ	3
₹ □	B		Ę	१२	₹ ₹	Я	ξ	Į (Ų	9	ą	₹ .	*
33	ં પ		3	হ			ס	- ₹	TV.	₹ □	ы	₹□
-		-	₹७	ង			\$ 0	0	११	ប	ų	l lin
			११	ប			११	१श			ប	Ų
		1					· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·				עי	23
											₹ ₹	३
											१६	६

। इति राशिदारम्। ए

हवे उपर जे "गोचरवने" एम कह्यं हतुं तेथी तथा क्रमे करीने पण प्राप्त थयेखुं होवाथी गोचरदार कहे हे.—

श्रेयान् गोचरतो इमानुषचये ३-६-१०-११ चन्डस्तु साचयुने ३-६-१०-११-१-७ वकार्की त्रिषमायगा ३-६-११ वथ युधस्त्व-न्त्यान्ययुग्लाजगः १-४-६-७-१०-११। जीवः स्त्रीधनधर्मलाजसुतगः ७-१-ए-११-५ गुक्रोऽरिखास्तान्यगो १-१-३-४-५-७-ए-११-११ जन्मेन्दोर्भहणे तमोऽप्युषचये ३-६-७-१०-११। ऽन्येषां स्वनायेन्डवत ३-६-७-१०-११॥ ४४॥

श्चर्थ-गायोनी चरवानी जूमिने गोचर कहे हे, तेथी लक्षणए करीने प्रहोने पण चालवानी जूमि गोचर कहेवाय हे. जन्मना चंड्यी आरंजीने त्रीजे, हुहे, दशमे अने ध्यमीयारमें सूर्य रह्यों होय तो ते गोचरनी रीते शुज हे, जन्मनी राशिना चंड्यी र-६-१०-११-१-९ आटले स्थाने चंड्र होय तो ते पण शुज हे, जन्मना चंड्यी २-६-११ में स्थाने मंगळ तथा शनि रह्या होय तो ते शुज हे, हुध १-४-६-७-१७-११ में स्थाने होय तो शुज हे, गुरु 9-१-७-११-५ में स्थाने रह्यों होय तो शुज हे, शुरु १-९-३-४-५-७-११-११ में स्थाने होय तो शुज हे, (पूर्णजड़े आहमुं स्थान वर्ज्य कह्यं हे.) राहु प्रहणने दिवसे ज ३-६-१०-११ में स्थाने होय तो शुज हे, बीजा आचार्यना मते पहेला स्थान विना चंड्रनी जेम राहु कह्यों हे, एटले के ३-६-१०-११-९ में स्थाने रहेलो राहु शुज कह्यों हे.

श्रहीं जपर जे जन्मनो चंड कह्यों हे ते इष्ट पुरुषना जन्मसमये जे राशिमां चंड होय हे ते तेना जन्मनो चंड कहेवाय है. यहण एटले सूर्य तथा चंड नुं बन्ने नुं यहण क्षेतुं. यहण शब्द कहेवायी एतुं जणाव्युं हे के यहण विना बीजे दिवसे राहुनो गोचर गणातो नथी, परंतु "नक्षत्र गोचरने खाश्रीने तो श्रन्य दिवसे पण राहुनो गोचर गणाय है." एम ज्योतिषसारमां कह्युं हे. रह्ममाला जाष्यमां कह्युं हे के—"जन्मना लग्नयी पण जपर कहेलां स्थानोमां ज रहेला यहां शुज हे." जन्मनी राशिश्री तो शुज हे ज.

गोचरनुं फळ वराहसंहितामां श्रा प्रमाणे कहां छे-

"स्थानचंदा १ जय २ श्री ३ परिजव ४ दैन्या ५ रिइति ६ पद्यां ७ गार्तीः छ। कान्ति क्षय ए सिद्धि १० धन ११ व्ययांश्च १२ जन्मादिगो रविः कुरुते ॥ १ ॥"

"जन्मना प्रथम स्थानमां रहेखो रिव स्थानथी अष्ट करे हे, बीजे स्थाने होय तो जय करे हे, त्रीजे खहमी, चोथे पराजव, पांचमे दीनता, हुछे शत्रुनो पराजय, सातमे पंथ (प्रयाण), आहमे शरीरनी पीमा, नवमे शांतिनो नाश, दशमे कार्यसिद्धि, आगीयारमे धनमाधि अने बारमे रह्यो होय तो खर्च करावे हे."

"तुष्ट्या १ धि २ धना ३ ज्य ४ श्रीजंश ५ श्री ६ सार्श्रयुवति ७ मृति ० जीतीः ए। सुख १० जय ११ सरुग्धनक्य १२ मिन्छुर्जनमादिगो दत्ते॥ २॥"

"जन्मना प्रथमादिक स्थानमां रहेलो चंत्र श्रानुक्रेम तृष्टि १, मननी पीका २, धन ३, स्नकाइ ४, धननाश ५, लहमी ६, धन सहित स्त्रीनो लाज ७, मृत्यु ७, जय ए, सुख १०, जय ११, रोग सहित धननो इय १२, श्राटलां वानां करे हे."

"रुग् १ घननाश १ घना ३ रिज्य ४ र्थक्य ५ घन ६ शुग ७ स्त्रघाता ए त्तीः ए। शुग् १० द्वाज ११ विविधक्तः स्वानि १२ दिशति जन्मादिगो वक्तः ॥ ३ ॥" "जन्मना प्रथमादिक स्थानमां रहेखो मंगळ श्रमुकमे रोग १, धननो नाश १, धननी माप्ति र, रामुधी जय ४, धनक्य ५, धनवाज ६, शोक ७, रास्त्रधात ७, रारीरनी पीना ए, शोक १०, खाज ११, तथा विविध प्रकारनां छःखो १२ आपे हे."

"बन्धा १ र्थ १ वधा ३ र्थ ४ इति ५ स्थान ६ वपुर्वाध ७ धन ० महापीडाः ए। सौरूया १० र्थ ११ वित्तनाक्षाः १२ स्युर्क्षे जन्मादिगे ऋमशः॥ ४॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां बुध रह्यों होय तो अनुक्रमें बंधन १,धन २,वध ३, धन ४, हरण ५, स्थान ६, शरीरपीना ७,धन ०, महापीना ए, सुख १०,धन ११ अने धननो नाश १२, प्राप्त थाय हे."

''रोगा १ र्थ २ क्लेश २ व्यय ४ सुल ५ जी ६ तृपमान ७ धनागम ७ श्रीदः ए। श्राप्रीति १० लाज ११ हृद्दुःखदश्च १२ जन्मादिगो जीकाः॥ ५॥"

"जन्मची प्रथमादिक स्थानमां रहेलो गुरु अनुक्रमे रोग १, धन २, क्लेश ३, कर्ष ध, सुल ५, जय ६, राजसन्मान ७, धनप्राप्ति ०, लहमी ए, अप्रीति १०, लाज ११ अने हृदयना पुःख १२ ने देवावाळो याय हे."

"श्चरिनाशा १ र्थ १ सुल ३ श्री ४ सुता ५ रिवृद्धि ६ शुग ७ र्थ ० वस्त्राणि ए । असुसा १० य ११ साज १२ मुशना सनापि जन्मादिगस्तनुते ॥ ६ ॥"

"जन्मथी प्रथमादिक स्थानमां रहेको शुक्र श्रानुक्रमे शत्रुनो नाश १, धन २, सुख ३, खदमी ४, पुत्र ५, शत्रुवृद्धि ६, शोक ७, धन ८, वस्त्र ए, श्रासुख १०, श्रावक ११ तथा खाज १२ ने सदा विस्तारे वे-श्रापे वे."

"श्रस्थान १ धनगमा २ र्था ३ रिवृद्धि ४ सुतनाश ए खाज ६ छःखजरान् ७। पीना ए र्थगमा ए तिं १० श्री ११ छःखानि १२ शनिस्तनोति जन्मादौ ॥ ७ ॥"

"जन्मधी प्रथमादिक स्थानमां रहेलो शनि श्रानुक्रमे श्रास्थान (स्थानच्रंश) १, धन-नाश २, धनप्राप्ति २, शत्रुवृद्धि ४, पुत्रनाश ५, लाज ६, छःखना समूह ७, पीना ०, धननाश ए, पीना १०, लदमी ११ श्राने छःखो १२ ने विस्तारे हे."

ज्योतिषसारमां राहुनुं रूप आ प्रमाणे कह्यं हे.—

'गहणे तमरासीचं नियरासी ति चन अविगार सुहा।

पण नव दहंऽंत मिस्रम ह सत्त इग इन्नि अइअहमा॥ १॥"

"प्रहणने दिवसे राहुनी जे राशि होय तेनाथी पोतानी राशि त्रीजे, चोथे, आठमें के अमीयारमें होय तो ते शुन्न हो, पांचमें, नवमें, दशमें अने बारमें होय तो मध्यम हो, अने हो, सातमें, पहेंखें तथा बीजे होय तो अति अधम हो."

तथा ''याहरोन राशांकेन संक्रान्तिर्जायते रवेः । तन्मासि ताहरां प्राष्टुः शुजाशुजकखं नृणाम् ॥ १ ॥" "जेवा चंत्रवमे सूर्यनी संकांति थती होय ते मासमां मनुष्योने तेवा प्रकारनं शुजा-शुज फळ थाय ने एम कहे ने."

श्राधी करीने कदाच सूर्य बारमा, श्राटमा विगेरे श्रशुज स्थानमां रह्यो होय तोपण गोचरवमे, ताराबळवमे तथा शुज श्रवस्थादिके करीने शुज एवा चंद्रतुं बळ होय स्यारे तेनी संक्रांति थइ होय तो ते शुज ज हे. एम रत्नमाखा जाष्यमां कह्यं हे.

तथा लझ कहे ने के-

"सितपहादौ चन्द्रे शुजे शुजः पहाकोऽशुजे त्वशुजः । बहुखे गोचरशुजदे न शुजः पहोऽशुजे तु शुजः ॥ १ ॥"

"शुक्लपह्ना प्रारंत्रमां एटले प्रतिपद् बेसे ते वसते जो चंद्र शुत्र होय तो ते आखुं पखनारीयुं शुत्र जाण्वुं, अने जो चंद्र अशुत्र होय तो आखा पह्नने अशुत्र जाण्वो. कृष्णपह्मां तो प्रतिपद्नी शरुआतमां जो चंद्र शुत्र होय तो ते आखा पह्नने अशुत्र जाण्वो, अने जो चंद्र अशुत्र होय तो आखा पह्नने श्रिशुत्र जाण्वो, अने जो चंद्र अशुत्र होय तो आखा पह्नने शुत्र जाण्वो."

तथा "याहरोन महेणेन्दोर्युतिः स्यात्ताहरो। हि सः" "जेवा महनी साथे चंदनो योग होय, तेवा ज महनी जेवो ते चंद्र थाय हे." एम दैवक्षवञ्चनमां कहां हे, तथा दैवक्षवञ्च-त्रमां ज कहां हे के—

> "श्रञ्जोऽपि शुजश्चन्द्रः सौम्यमित्रगृहांशके। स्थितोऽश्रवाधिमित्रेण बक्षिष्ठेन विलोकितः॥ १॥"

"श्रशुज चंद्र पण सौम्य महना के मित्र महना स्थानना नवांशमां रह्यो होय तो ते शुज है. श्रथवा बुळवान् श्रधिक मित्रे जोयेखो होय तोपण ते चंद्र बळवान् है."

सर्व महोतुं साधारण फळ दैवज्ञवञ्जनां च्या प्रकाणे हे— ''असत्फलोऽपि यः सीम्यैर्द्दष्टो यः सत्फलोऽपि वा । कृरेण दृष्टोऽरिणा वा स न किञ्चित्फलप्रदः॥ १॥"

"जे कोइ अशुज फळदायक मह सौम्य महे जोयेखों होय, अथवा जे कोइ शुज फळवाळों मह कर महे अथवा राशु महे जोयेखो होय, ते मह कांइ पण फळने देनारो नथी."

खद्म कहे हे के—''नीचेऽस्तेऽरिगृहे वापि निष्फलो ग्रहगोचरः" "नीचमां, श्रासमां के शत्रुना घरमां रहेलो ग्रहगोचर निष्फळ हे."

हवे चन्द्रगोचर फळ कहे है.

चन्डो जन्मत्रिषद्सप्तदशैकादशगः शुजः। द्विपञ्चनवमोऽप्येवं शुक्खपद्दे बखी यदि ॥ ४५॥ अर्थ-चंद्र १, २, ६, ७, १० अने अगीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते शुन है, तथा शुक्सपद्यमां जो बळवान् होय तो बीजे, पांचमे अने नवमे स्थाने पण शुन है.

नारचंद्र टिप्पाधीमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो है .-

"यात्रा १ युद्ध २ विवाहेषु ३ जन्मेन्दौ रोगसंजवे ४ । क्रमेण तस्करा १ जंगो २ वैधव्यं ३ मरणं ४ जवेतु ॥ १ ॥"

"जन्मना चंद्रमां यात्रा करवाथी चोरनो छपदव थाय, युद्ध करवाथी पराजय थाय, विवाह करवाथी विधवापणुं थाय, अने रोग छत्पन्न थयो होय तो मरण पाय."

अहीं कोई शंका करे के चंडगोचर तो पहेलाना (धा मा) श्लोकमां कही गया है, माटे अहीं फरीथी कहेवामां आव्युं, तेथी पुनरुक्त दोष थयो. तेनो जवाब ए हे जे—ते वात खरी हे, परंतु चंडनुं प्राधान्य बताववाधी ते दोष नथी, केमके जेम मननो छपयोग होय तो ज सर्वे इंडियो पोतपोताना विषयोने यहण करवामां समर्थ थाय है, अन्यथा थती नथी, ते ज प्रमाणे चंड शुज होय तो ज बीजा प्रहो शुज फळ दे हे, अन्यथा देता नथी. व्यवहारप्रकाशमां कहां हे के—"चंड शुज होय तो बीजा प्रहो शुज फळ देनारा ज प्राये होय हो, पण अशुज फळ आपनारा होता नथी." हर्षप्रकाशमां पण कहां हे के—"चंदस्तेव बलाबलमासका गहा कुणंति सुहमसुहं" "चंडना ज बळ अब-ळने पामीने बीजा ग्रहो शुजाशुज करे हे."

मूळ श्लोकमां बीजे, पांचमे श्राने नयमे चंद्र रह्यो होय तो ते पण शुज हे, परंतु ते चंद्र शुक्लपक्षमां श्राने वळी बळवान् होय तो ज. ए प्रमाणे विशेष विधान करेखें हो-वाधी पुनरुक्त दोष नथी. शुक्लपक्ष कहेवाधी वृद्धि पामतो चंद्र जाणवो, पण कृष्ण-पक्षमां क्य यतो होवाधी ते लेवो नहीं. बळवान् कहेवाधी शुक्लपक्षमां कुश होय तो ते बीजे, पांचमे श्राने नवमे शुज नथी श्राने कृष्णपक्षमां चंद्र पुष्ट होय तोपण बीजे, पांचमे श्राने नवमे शुज नथी एम जाणवं. रक्षमाला जाष्यमां पण कहां हे के—"बीजो, पांचमे श्राने नवमो गुरु जेवुं शुज फळ श्रापे हे तेवुं वृद्धि पामतो शुक्लपक्षनो पुष्ट चंद्र पण बीजे, पांचमे श्राने नवमे स्थाने रह्यो होय तो शुज फळ श्रापे हे.

जपरना श्लोकमां जो चंद्र बळवान् होय एम कहुं, तेथी चंद्रनुं बळाबळ कहे हे.

हीनमध्योच्चबखता तिथिवत्तुहिनयुतेः । बलहानाविदं त्वस्य याद्यं ताराबलं बुधैः ॥ ४६ ॥

अर्थ — चंड्रतुं हीन बळपणुं, सम बळपणुं अने उच्च बळपणुं तिथिनी जेम जाणवुं. तथा चंड्रना बळनी हानिने बखते विद्यानीए आगळ कहेवामां आवशे एवुं ताराबळ अहण करवुं, कारण के ते बखते ताराना बळे करीने तेनुं बळवान्एणुं हे. गुक्स तथा कृष्णपक्षमां पांच पांच तिथिलंने आशीने हीन, मध्यम अने लक्तमता जे प्रमाणे कही है, ते प्रमाणे चंड्रनं पण हीन, मध्यम अने लच्च वळपणुं अनुक्रमे तथा लक्तमे जाणवं. जातक वृत्तिमां तो आ प्रमाणे कहुं हे.—"चंड्र लदय पामे त्यारथी दश दिवस सुधी मध्यम बळवान् हे, बीजा दश दिवस सुधी अधिक वळवान् हे, अने तीजा दश दिवस हीन वळवाळो हे, तथा कृष्ण चतुर्दशी, अमावास्या अने शुक्स प्रतिपद् ए त्रण दिवस तो सर्वथा वळ रहित हे, परंतु चंड्र पर सौम्य प्रहोनी दृष्टि परुती होय तो निरंतर बळवान् हे." अन्य आचार्यो कहे हे के—"कृष्णपक्षनी अष्टमीना अर्था जाग पही अने शुक्स अष्टमीना अर्था जाग पही चंड्र कीण जाणवो, वाकीना समयमां पृष्ट जाणवो." नक्त्र समुच्य प्रथमां तो आ प्रमाणे कहुं हे.—

"जदिते च तथा चन्द्रे शुजयोगे शुजे तिथौ। कृष्णस्य दशमीं यावत्सर्वकार्याणि साधयेत्॥१॥

विशेष ए हे जे—''शुक्खपक्तनी बीजने रोज चंद्र जदय पामवानो हे तोपण दिव-सना जागमां ते तिथि लेवी नहीं, कारण के प्राये करीने दृष्टिना विषयनो जाव (होवा-पणुं) अने अजावे (नहीं होवापणुं) करीने बीजनो व्यवहार करवामां आवे हे. ते विषे विवाहनृंदारकमां कधुं हे के—

> "चदेति चायं प्रतिपत्समाष्ठौ कृशोऽपि वर्ष्विष्णुतया प्रशस्तः। दीपान्तरस्थो विफल्लस्तु तावद्यावन्न पृथ्वीनयनाध्वनीनः॥ १॥"

''आ चंड प्रतिपद्नी समाप्तिमां जदय पामे हे. ते कृश हतां पण वृष्टि पामवानो होवाथी प्रशस्त हे. तथा बीजा दीपमां रहेलो ते चंड ज्यांसुधी जगतना लोकोनी दृष्टिना मार्गमां श्राब्यो न होय, त्यांसुधी ते निष्फळ हे."

जपर जे चंद्रना निर्वळपणामां तारानुं वळ खेवानुं कह्यं ते विषे कह्यं हे के—

"चन्डाद्वखवती तारा कृष्णपके तु जर्त्तरि। विकले प्रोषिते च स्त्री कार्यं कर्तुं यतोऽईति॥ १॥"

"कृष्णपक्तमां तो चंद्र करतां तारा बळवान् हे, कारण के जर्ता विकलांग होय श्रिश्रवा परदेश गयो होय तो स्त्री पोते ज कार्य करवाने योग्य हे."

तेथी करीने--

"कृष्णस्याष्टम्यर्क्षदनन्तरं तारकावलं योज्यम् । प्रतिपत्प्रान्तोत्पन्नं सन्ध्याकाकोदयं यावत् ॥ १ ॥"

आ॰ १३

"कृष्णपद्मनी अष्टमीना अर्ध जाग पत्नी अने शुक्त प्रतिपद्ने अते जत्पन्न अयेला संध्याकाळनो जदय थाय त्यांसुधी तारानुं वळ अहण करवुं." आ प्रमाणे व्यवहार अकाशमां कहां हे.

तारानुं वळ गौण हे, एम धारवुं नहीं; केमके ताराना वळनुं प्रधानपणुं प्रगट ज हे. ते विषे लक्ष कहे हे के—

"तारावले शशिवलं शशिवलसंयुतसंक्रमाद्वलं जानोः। सूर्यवले सति सर्वेऽप्यशुजा छापि खेचराः शुजदाः॥ १॥"

"तारानुं बळ होय तो चंद्रनुं बळ होय हो, चंद्रना बळथी युक्त एवी संक्रांति थवाथी सूर्यनुं बळ होय हो, श्रने सूर्यनुं बळ हते ज सर्वे श्रशुत्र शहो पए शुत्र फळ-दायक थाय हे."

हवे तारार्छ कहे हे.-

जनिजान्नवकेषु त्रिषु जनि १ कर्मा १० धान १७ संक्षिताः प्रथमाः । ताच्यस्त्रि३-१२-११पञ्चथ-१४-१३सप्तमण-१६-१५ताराः स्युर्न हि शुजाः कचन४७

श्चर्य—जेना जन्मने समये जे नक्त्रमां चंद्र होय ते नक्त्र तेनुं जन्मनक्त्र कहे-याय हे. ते जन्मनक्त्रश्री श्चयवा तेनी खबर न होय तो नामना नक्त्रश्री आरंजीने नव नवनी त्रण ओळ करवी. ते त्रणे नवकमां जे पहेली पहेली त्रण तारार्च होय तेनुं नाम श्चनुक्रमे जन्म तारा, कर्म तारा श्वने श्चाधान तारा जाण्डुं. ते त्रणे नवकमांनी त्रीजी त्रीजी एटले २-१२-११, पांचमी पांचमी एटले ५-१४-१२ श्वने सातमी सातमी एटले ९-१६-१५, आटली तारार्च कोइ पण हेकाणे शुज नथी.

जन्म तारादिकनी संज्ञा माटे कहां हे के—"आधानाहशमे जन्म दशमे कर्म जन्म-जात्" "आधाननी ताराथी दशमी तारानी संज्ञा जन्म हे, अने जन्मनी ताराश्री दशमी तारा कर्म नामनी हे."

बीजी, त्रीजी विगेरे तारार्जनी संज्ञा छा प्रमाणे हे.—
"संपिद्धपरहोमसंज्ञा प्रत्यरा साधका मृतिः।
मैत्री परममैत्री च स्युर्दितीयादिमा इमाः॥ १॥"

त्रणे नवकमांनी बीजी बीजी तारानुं नाम संपत् हे, त्रीजी त्रीजीनुं विपत्, चोथीनुं देमा, पांचमीनुं प्रत्यरा, हडीनुं साधका, सातमीनुं मृति, आहमीनुं मेत्री अने नवमीनुं परममेत्री, एवां नामो हे. आमांनी प्रत्यराने बदले यमा एवं पण बीजुं नाम हे.

ताराउंनी स्थापनाः

जन्म	संपत्	विषत्	द्यमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
₹,	য	३	님 :	પ્	६	g	U	્રા પ
कर्भ	संपत्	विपत्	द्यमा	यभा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
₹ a	22	<u> </u> १२	१ ३	₹8	१ ए	१६	₹ 9	१०
ऋाधान	संपत्	विपत्	देमा	यमा	साधना	निधना	मैत्री	परममैत्री
₹ @	হ্চ	२१ े	22	2 इ		ર ૫	२६	६७

आ तारार्चमां चोथी चोथी, उठी उठी अने नवमी नवमी तारार्च श्रेष्ठ है. ते विषे लक्ष कहे है के—

"ककं न्यूनं तिथिन्यूना क्यानाथोऽपि चाष्टमः। तत्सर्वे शमयेत्तारा षद्चतुर्थनवस्थिताः॥ १॥"

"नक्षत्र न्यून एटले अशुज होय, तिथि पण न्यून होय अने चंद्र पण आठमो (अशुज) होय, तोपण उटी, चोथी अने नवमी तारा होय तो ते सर्वने समावी दे हे-"

पहेली, बीजी अने आठमी ए त्रण त्रण ताराउं मध्यम हे, अने त्रीजी, पांचमी, तथा सातमी ए त्रण त्रण ताराउं अधम हे ते तो पूर्वे कहां ज हे.

हवे ते ताराउनो विशेष कहे हे.-

जन्माधानान्वितास्तिस्रस्तास्त्यजेत्कौरयात्रयोः । ग्रुक्सेऽप्यास्तियते रोगे दीर्घक्सेशोऽयवा मृतिः ॥ ४७ ॥

अर्थ—जन्म अने आधान सहित ते त्रण त्रण (त्रीजी, पांचमी अने सातमी) ताराजं कौर तथा यात्रामां तजवा योग्य हे. शुक्लपक्षमां पण आ ताराजंने विषे रोग जरपन्न थयो होय तो चिरकाळ सुधी क्लेश रहे हे, अथवा मरण थाय हे.

त्रण त्रण एटले दरेक छळनी त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी श्राने सातमी सातमी समजवी. श्रशीत् नव जाणवी. वळी लख्न कहे हे के—

"यात्रायुद्धविवाहेषु जन्मतारा न शोजना। शुजाऽन्यशुजकार्येषु प्रवेशे च विशेषतः॥ १॥ जन्मक्षेवदाधानं कर्मसु शस्तेषु शस्तमेव स्यात्। यच्च न जन्मनि कार्य विवर्जनीयं तदाधाने॥ १॥"

"यात्रा, युद्ध स्थने विवाहमां जन्मनी तारा सारी नथी. वीजां शुन्न कार्यमां ते जन्म ारा शुन्न हे, स्थने प्रवेशमां तो विशेष शुन्न हे (१). जन्म तारानी जेवी स्थाधान तारा पए जाएवी. एटले के ते पए बीजां शुज कार्योमां प्रशस्त ज है, श्रमे जे कार्य जन्म तारामां करवानुं नथी, ते कार्य श्राधानमां पए वर्जवा योग्य हे (१)".

जो के शुक्लपक्तमां चंड ज बळवान् हे, ते वलते तारानुं प्राधान्य नथी, कारण के ते विषे कहुं हे के—

''शुक्ले पक्ते बली चन्छस्तारावलमकारणम् । पत्यौ स्वस्थे गृहस्थे च न स्त्री स्वातंत्र्यमहिति ॥ १ ॥"

"शुक्खपक्रमां चंद्र ज बळवान् हे, तेमां तारानुं बळ कारण नथी, केमके पति साजो होय श्रने घेर ज होय तो स्त्री स्वतंत्रताने योग्य नथी."

आश्री करीने शुक्लपक्षमां चंद्रनुं वळ ज प्रधान हो, तोपण जन्मनी, आधाननी तथा त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी अने सातमी सातमी, ए अगीयार ताराजमां जो रोग जत्पन्न थयो होय तो दीर्घ क्लेश अथवा मरण थाय हो. एटले के बीजा बहो प्रतिकूळ न होय तो दीर्घ क्लेश थाय अने बीजा बहो प्रतिकूळ होय तो मरण थाय. ते विषे लक्ष कहे हे के—

"यद्यपि स्याद्वती चन्द्रस्तारा तथाप्यनिष्टदा। जन्माधाने तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा ॥ १॥ शेषासु तु तारासु व्याधिः साध्यो नृषां जवति जातः। व्याधिवदवबोद्धव्याः सर्वारंजाश्च तारासु॥ १॥"

"जो के चंद्र वळवान होय तोपण जन्मनी, आधाननी, त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी खने सातमी सातमी ताराजं अनिष्टने आपनारी हे (१), अने वाकीनी ताराजंमां मनुष्योने जत्पन्न अयेको ब्याधि साध्य आय हे. आ व्याधिनी ज जेम ताराजंने विषे करेखा सर्वे आरंजो जाण्या (१)."

चपर रतमाला जाष्यना प्रमाण्यी कहां हतुं के ''यात्रादिकमां चंद्रने शुज अवस्था-याळो जोवो.'' तेथी करीने हवे चंद्रनी अवस्था कहे हे.

चन्डावस्था प्रोषित १ हृत २ मृत ३ जय ४ हास ५ हर्ष ६ रति ७ निडाः छ। इक्ति ए जरा १० जय ११ सुखिता राश्यंशा द्वादश यथार्थाः ॥ ४ए॥

अर्थ—चंद्रनी आ वार अवस्थाउं हे—प्रोपिता १, हता २, मृता २, जया ४, हासा ४, हर्षा ६, रित ५, निदा ७, जिल्हा ७, जिल्हा १०, जरा १०, जय ११ अने सुखिता १२. आ अवस्थाउं चंद्रनी राशिना दादशांशने विषे अनुक्रमे जाएवी. ते अवस्थानुं फळ ते ते नामने अनुसारे हे.

राशिना घादशांश आ रीते काढवा—एक राशिमां चंघनो जोग जेटली धनी होय ते पंचांगमां जोइने निर्णय करवो. जेम सामान्य रीते एकसो ने पांत्रीश धनी एक राशिनं

जोगकाळ चंजने होय हो, तेथी तेना वार जाग करतां छागीयार घमी छाने पंदर पळ एक एक जागमां छावे हे. हवे इष्ट वखते (कार्य करती वखते) १३५ घमीमांथी जेटली घमी जोगवाइ होय तेने सवा छागीयार घमीए जाग छहने जोगवेलो काळ काढवो, वाकीनी घमीछी जोग्य काळना घादशांशो पण काढवाः पही जेटलामा घादशांशमां कार्य करतुं होय ते घादशांशनुं नाम छानुक्रमे जाणी कार्य करतुं. छाहीं सामान्यवमे कह्यं हे तोपण एम जाणतुं के दरेक राशिमां घादशांशनी रीते चंच बार बार छावस्थान छोगवे हे. ते विषे यतिवहाजमां कह्यं हे के—

"राशौ राशौ घादशामूर्जुक्तेऽवस्थाश्च चन्छमाः। घादशांशकमात्सांहिछाहेनाख्यासदृक्फलाः॥ १॥"

"चंद्र दरेक राशिमां दादशांशना कमथी सवा बे दिवसमां नामने सहश फळवाळी बार बार श्रवस्थाउने जोगवे हे."

जावार्थ ए हे जे—मेष राशिमां रहेखा चंजनी घोषितार्थी आरंजीने बार अवस्थार्थ जाणवी, वृषमां रहेखा चंजनी हताथी आरंजीने बार अवस्थार्थ गणवी, मिथुनमां रहेखा चंजनी मृताथी आरंजीने गणवी विगेरे.

मूळ श्लोकमां "यथार्थाः" एवं कहां हे तेनो श्रर्थ ए हे जे—ते श्रवस्थार्ड पोत-पोतानी संक्षाने सदश फळवाळी हे. तेथी करीने प्रोषिता, हता, मृता, निष्ठा, जरा श्रने जया, ए नामनी ह श्रवस्थार्ड तजवा योग्य हे. एम नारचंद्र टिप्पणीमां कहां हे. तेथी ज दिनशुद्धिमां पण कहां हे के—

"पइरासि वारसंसा असुहार्ड चएजर्ड सुहो वि ससी । एआहिं होइ असुहो सुहाहिं असुहो वि होइ सुहो ॥ १ ॥"

"दरेक राशिमां बार वार दादशांशो (अवस्थार्च) हे, तेमांथी अशुन आंशोने वर्जवा, केमके चंद्र शुन्न होय तोपए ए अशुन अवस्थार्चवमे अशुन आय हे, अने चंद्र अशुन होय तोपए ते शुन्न अवस्थार्चवमे शुन्न थाय हे."

हवे शनि छष्ट हे, मादे तेतुं नहत्र गोचर जूई कहे हे.— मन्दर्कतः प्रथम १ वेद ४ षम ६ विध ४ बाण ५, त्रि ३ द्व्ये १ क १ चन्ड १ मितनेषु यथाक्रमेण । पीडा १ विजूति ५ पथ ११ वन्धन १५ धर्म १० लाज १३, पूजा १५६ जिजूल १६ पमृतीः १० फलमूचुरुचैः ॥ ५०॥

अर्थ के नक्त्रमां शिन रहेखों होय ते नक्षत्र पीमाकारी हे, तेनी पढ़ीनां चार नक्षत्रो ख़हमीने आपनारां हे, त्यारपढ़ीनां ह पंथ करावनारां हे, ते पढ़ीनां चार बंधन करावनारां हे, ते पढ़ीनां पांच धर्म करावनारां हे, ते पढ़ीनां त्रण ख़ाज आपनारां हे, ते पढ़ीनां वे पूजा (सन्मान) आपनारां हे, ते पढ़ीनुं एक पराजव आपनारुं हे, अने ते पढ़ीनुं एक मृत्यु आपनारुं हे. अहीं शनिना नक्त्रश्री पोताना नक्त्र सुधी गण्डुं, तेमां जेटली संख्यावाळुं पोतानुं नक्त्र होय, तेटली संख्यावाळा नक्त्रनुं फळ जे कह्यं हे ते जाण्डुं. आहीं शनिनो आकार पुरुष जेवो हे ते कह्यों नथी, तोपण जाणी खेवो. ते विषे यतिवह्यनमां कह्यं हे के—

"यस्मिन् शनिश्चरित वक्रगतं तदृक्तं चत्वारि दिक्तिणकरेऽहियुगे च पद्गम् । चत्वारि वामकरगाण्युदरे च पञ्च मूर्झि त्रयं नयनयोर्दितयं गुदे च ॥ १॥"

"जे नक्त्रमां शनि चालतो होय ते नक्त्र तेना मुखमां मूक्त , पठीनां चार जमणा हाथमां, पठीनां छ वे पगमां, पठीनां चार माना हाथमां, पठीनां पांच छदर छपर, पठीनां त्रण मस्तक छपर, पठीनां वे नेत्रमां छने पठीनां वे गुदामां मूक्तवां." छहीं वे गुदामां कह्यां तेनुं कारण ए के ज्यारे पट्ट विगरेमां पुरुषनो छाकार चितरीए त्यारे गुदा छने गुह्यनी एकता ज जणाय छे. तेथी करीने छहीं गुदामां ज वे मूक्यां छे. मूळकारे तो ते बन्ने स्थाननी जिन्न विवक्ता करीने बन्ने स्थानमां एक एक नक्त्र कह्यं छे.

शनि नरनी स्थापना.

मुखे	१	पीमा
दक्षिण हाथे	ย	खदमी
वे पगे	६	पंश्र
मावा हाथे	8	वंध्न
खदरे	Ų	धर्म
मस्तके	3	ला ज
वे नेत्रे	ચ	पूजा
गुदाए	?	पराजव
गुह्ये	?	ऋपमृत्यु

रुष्यामल नामना ग्रंथमां नवे ग्रहोनां पुरुषाकारनी स्थापनाए करीने गोचरफळ कह्यां है. तेमां रिव नरनुं स्वरूप मूळ ग्रंथकार ज जातकाधिकारमां कहेशे. बाकीना ग्रह नरो नीचे प्रमाणे.—

ह्य ३ वाहुयुग्म ६ वक्त्रेषु २ जानां प्रत्येकतस्त्रिकम् १२ । हृदि सप्तं १ए तथा गुह्ये चतुष्कं २३ पञ्चकं पदोः २० ॥ १ ॥ वक्त्रे पीमां जृशं चक्कर्हदयेषु शुजं सुखम् । वाह्योर्जानं मृतिं गुह्ये च्रमं दत्ते पदोः शशी ॥ २ ॥ चंद्र नरनी दृष्टिमां ३, बे वाहुमां ६, मुखमां ३, हृद्यमां ७, गुह्यमां ४ अने वे पगमां ५ नक्त्रों छे. तेनुं फळ-मुखमां होय तो अत्यंत देहपीमा करे, चक्कुमां होय तो शुज फळ आपे, हृदयमां होय तो सुख आपे, बाहुमां होय तो खान्न आपे, गुह्यमां होय तो मृत्यु आपे, अने पगमां होय तो ज्ञमण (देशाटण) आपे (करावे). अहीं पण चंद्रना नक्त्रश्री पोताना नक्त्र सुधी गणतां जेटलामुं नक्त्र ज्यां होय ते स्थाननुं फळ ते आपे हे.

चंद्र नरनी स्थापनाः १

नेत्रे	इ	গু ন
बन्ने हाथे	ξ	द्या ज
मुखे	₹ .	अ तिपीमा
हृदये	3	सुख
गुह्ये	ម	मरए
बन्ने पगे	પ	ज्रम ण

त्रयं त्रमुंसहक्शिरस्सु ए घयानि वामेतरबाहुकंठे १५। पंचोरिस २० स्युस्त्रितयं च गुह्ये २३ चत्वारि चांहचोः २९ कुजचक्रमेतत् ॥ १॥ कीर्त्ति शिरिस हन्नेत्रे खाजं चरणयोर्ज्ञमम्। गुह्येऽन्यस्त्रीरतिं दत्ते कुजः शेषेषु चाशुजम्॥ २॥

मंगळ नरनां मुख, दृष्टि अने मस्तक पर त्रण त्रण मूकवां ए, माबे हाथे, जमले हाथे अने कंठे बवे मूकवां १५, जरःस्थळ जपर पांच मूकवां १०, गुह्यमां त्रण १३, अने बन्ने पग पर चार मूकवां १७. आ मंगळ नरनुं चक्र अयुं. तेनुं फळ—मस्तक पर होय तो कि जिले अपे, हृदय अने नेत्रमां होय तो लाज आपे, चरणमां होय तो जन्म करावे, गुह्यमां होय तो परस्त्री पर प्रीति आपे, अने वीजां स्थानोमां होय तो ते आशुज हे.

मंगळ नरनी स्थापना २

मुखे	!	३	į	रोग
मुखे नेत्रे	:	3		खान
मस्तके		Ę	:	यश
वाम करे	;	হ	}	रोग
दक्षिण करे	1	হ	ĺ	शोक
कंठे		হ		हिका
हृद्ये	į	Ų		द्या ज
गुह्ये	!	३		परस्त्री रति
बन्ने पगे		ម	ľ	ज्रम ण

वक्त्रनेत्रगढोरस्सु पादयोः पञ्च पञ्च च २५ । बाहुयुग्मे तथा गुह्ये त्रीएयुडूनि २० जबन्ति च ॥ १ ॥ वक्त्रहृद्धाहुषु इप्तिं गुह्यपादेषु संक्यम् । गढो सुस्वरतां दत्ते नेत्रे राज्यं बुधो यहः ॥ १ ॥

बुध नरना मुखमां, नेत्रमां, गळामां, जरःस्थळमां अने बन्ने पगमां पांच पांच मूकवां एटखें पचीश थयां. तथा वे वाहुमां वे अने गुह्यमां एक मूकवां एटखें अठ्यावीश नक्त्रो थयां. तेनुं फळ.—मुख, वाहु अने हृदयने विषे होय तो ज्ञान आपे, गृह्य अने पादने विषे होय तो मृत्यु आपे, गळामां होय तो सारो स्वर आपे, अने नेत्रमां होय तो राज्य आपे.

बुध नरनी स्थापना ३

• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		• • •
मुखे नेत्रे	પ	इान
	ય	राज्य
कंवे	પ	सुस्वरपणुं
हृदये बे पगे	પ્	इशन
वे पगे	પ	क्य
वाम करे	₹	ज्ञान
दक्षिण करे	₹]	श्चान
गुह्ये	₹	क्य
		_

शीर्षे चत्वारि राज्यं युगपरिगणिता सन्यहस्ते च तद्मी-रेकं कंठे विजूतिं मदनशरिमते वक्तसि प्रीतिलाजम् । पिद्धाः पीनांहियुग्मे जलिथपरिमिते वामहस्ते च मृत्युं हग्युग्मे त्रीणि कुर्युन्टेपतिसमसुखं वाक्पतेश्वक्रमेतत् ॥ १ ॥

गुरु नरना मस्तक पर चार नक्त्र मूकवां ते राज्य आपे दिक्षण हायमां चार मूकवां ते सहमी आपे एक कंटे मूकवुं ते विज्ति (धन) आपे ठातीमां पांच मूकवां ते प्रीतिनो साज आपे वे पगमां छ मूकवां ते पीना करे नावा हाथमां चार मूकवां ते मृत्यु आपे, नेत्रोमां त्रण मूकवां ते राजानी जेवुं सुख आपे आ गुरु नरनुं चक्र जाणवुं.

गुरु नरनी स्थापनाः ध

मस्तके	Я	राज्य
जमारो हाथे	ีย	द ाइमी
कंठे	?	धन
हृदये	ય	प्री ति
हृदये बे पगे	६	अ्रसुख (पीना)
माबे हाथे वे नेत्रे	ម	मृत्यु
बे नेत्रे	Ę	सुख

युगं शीर्षे घयं वक्त्रं चतुष्कं हृदयेऽपि च । दश वाह्वोस्त्रयं गुह्ये जान्वंहिषु घयं घयम् ॥ १ ॥ जानुमुष्ककपादेषु छःखं वाह्वोर्नृपार्हणाम् । हृहीर्षे सौम्यतां वक्त्रे मरणं कुरुते सितः ॥ १ ॥

शुक्र नरना मस्तक पर चार, मुखमां वे, हृदयमां चार, वे वाहुमां दश, गुह्यमां त्रण, जानुमां वे छने पगमां वे मूकवां तेनुं फळ—जानु, गुह्य छने पादमां होय तो छःख छापे, बाहुमां होय तो राजसन्मान छापे, हृदय छने मस्तक पर होय तो सौम्यता छापे तथा मुखमां होय तो मरण छापे.

शुक्र नरनी स्थापना ए.

मस्तके	. 8	सौम्यता
मुखे	হ	म्रण
हृदये	8	सौम्यता
हस्तदये	₹ □	राजपूजा
गुह्ये ्	₹	डुःख े
जानुष्ये	घ	<u> इ</u> ःख
पादघये	হ	फुः ख

वक्त्रे त्रीणि जयाय दक्षिणकरे चत्वारि खहम्यै पदोः षड् ज्ञान्त्ये न सुखाय वामककरे चत्वारि हृत्स्थं त्रयम् । खब्ध्ये कंठगमेकमामयकरं शीर्षे त्रयं राज्यदं सौजाग्यं युगलेऽकिंगे मृतिरथो गुह्यदये राहुजात्॥ १॥

राहु नरना मुखमां त्रण नक्त्रो मूकवां ते जय आपे, दक्षिण हाथे चार मूकवां ते खश्मी आपे, वे पगमां ठ मूकवां ते जमण करावे, नावा हाथमां चार मूकवां ते असुख करे, हृदयमां त्रण मूकवां ते खब्धि (खाज) आपे, कंठे एक मूकवुं ते रोग करे, मस्तक पर त्रण मूकवां ते राज्य आपे, वे नेत्रमां वे मूकवां ते सौजाग्य आपे अने गुह्यमां वे मूकवां ते मृत्यु आपे.

राहु नरनी स्थापना ६.

₹	जय
ъ	खदमी
६	च्रमण
ย	क्खेश
₹	क्षाज
₹	रोग
इ	राज्य
इ	सौजाग्य
হ	मरण
	១៩៦≈≁ជជ

आ॰ 🚜

वक्त्रे हे जयदे जयाय शिरिस स्यात्पञ्चकं पश्चकं जीत्ये तत्फणगं जयाय करयोर्थग्मे चतुष्कं स्थितम्। श्रंह्योः पञ्च सुखाय हत्स्थयुगलं शोकाय कंठे व्यथा-जीत्ये स्याच चतुष्टयं फलमिदं केती तदाकान्तजात्॥१॥

केतु जे नक्त्रमां होय ते नक्त्र तथा तेनी पठी तुं एम वे नक्त्रो तेना मुखमां मूकवां ते जय आपनारां छे, पठीनां पांच मस्तके मूकवां ते जय आपे, पठीनां पांच फणा एपर मूकवां ते जय आपे, पठीनां चार वे हाथमां मूकवां ते जय आपे, पठीनां पांच वे पगमां मूकवां ते सुख आपे, पठीनां वे हृदयमां मूकवां ते शोक करावे, पठीनां चार कंठे मूकवां ते पीना तथा जय करावे.

केतु नरनी स्थापना उ

मुखे	হ	जय
मस्तके	પ	जय
फुले	પ	न्नय
बे हाथे	ย	जय
वे पुगे	પ	सुख
हृद्ये कंठे	ध	शोक
ਕਰੇ	법	पीमा, जय

अहीं कोइ शंका करे के—आ प्रमाणे अन्य अन्य ग्रह नरोना शुजाशुज फळनो जेद होवाथी ग्रह संबंधी ग्रहगोचर फळनो निर्णय शी रीते अइ शके? तेनो जवाव ए छे जे— इष्ट समये जे ग्रह सर्वथी अधिक वळवान् होय, ते ग्रह ते वखते शुजाशुज फळ आपे छे. आ सर्वे ग्रह नरोने जन्मसमये ज केटलाक आचार्यो विचारे हो.

इवे प्रहगोचर श्रशुज होय तो तेने निष्फळ करवा माटे श्रष्टकवर्गने कहे हे.

गोचरेण प्रहाणां चेदानुकूष्ट्यं न दश्यते । जन्मलप्तप्रहेन्योऽष्टवर्गेणालोकयेत्तदा ॥ ५१ ॥

अर्थ — जो महोतुं गोचरवमे अनुकूळपणुं न देखातुं होय तो जन्मथी, लग्नथी अने प्रहोधी अष्टवर्गे करीने जोवुं.

अहीं बहोने सामान्य रीते कहा। हो, तोपण "रिव, चंड अने गुरु ए त्रण बहोनुं ज अनुकूळपणुं न देखाय तो" एवो अर्थ करवो. नारचंडमां पण कहां हे के—

'रिविशशिजीवैः सब्द्धैः शुजदः स्याक्तोचरोऽय तदजावे । माह्याष्टवर्गशुद्धिर्जननविद्यसम्बेज्यस्तु ॥ १ ॥" "बळवान् रिव, चंद्र अने गुरुए करीने गोचर शुनदायी थाय है, अने ते (शुन्न गोचर) ने अनावे जन्मथी, खन्नथी अने महोथी अप्टवर्गनी शुद्धि महण करवी."

अष्टवर्ग एटले राशिमां चालता प्रह्नो बीजा उ प्रह्नां स्थानोधी, पोताना स्थानधी अने लग्नना स्थानधी जे विचार करवो ते विचार अप्टवर्ग कहेवाय हे.

ते ज कहे हे.---

श्रकः स्वमन्दज्ञौमेज्यो नवद्व्यायाष्टकेन्द्रगः ए,४,४,०,४,५,५,०। त्रिकोणायारिगो ए,५,११,६ जीवाञ्चकादन्त्यारिकामगः १२,६,७॥ ५२॥ चन्द्राज्ञपचयस्यो ३,६,१०,११,ज्ञाद्धीधर्मोपचयान्त्यगः५,ए,३,६,१०,११,१२,। पातालोपचयान्त्येषु ४,३,६,१०,११,१२ लग्नाच तरणिः ग्रुजः॥ ५३॥

अर्थ—सूर्य पोताना स्थानथी, शनिथी अने मंगळथी ए,१,११,७,१,४, ७ अने १० में स्थाने रह्यों होय, गुरुथी ए,५,११ अने ६० स्थाने रह्यों होय, शुरुथी १२,६ अने ७ में स्थाने रह्यों होय, चंडथी २,६,१० अने ११ में स्थाने रह्यों होय, बुधथी ५,ए,३,६,१०,११ अने १२ में स्थाने होय, तथा लग्नथी ४,३,६,१०,११ अने १२ में रह्यों होय तो ते सूर्य शुज हे, एटले अष्टवर्गथी तेनी शुद्धि जाएवी

॥ इति सूर्योष्टकवर्गः ॥ १

चन्द्रश्चोपचये ३,६,१०,११, ब्रग्नाङ्गानोः साष्टस्मरे स्थितः ३,६,१०,११,०,७ । स्वात्साद्मिसमे ३,६,१०,११,१,७, ब्वारात्सद्भव्य-

नवमात्मजे ३,६,१०,११,२,ए,५ ॥ ५४ ॥

विद्वत्रिलाचात्मजकेन्द्रगो ७,३,११,५,१,४,७,१० बुधा-

जुरोस्तु रिष्याष्टमखाजकेन्द्रगः १२,७,११,१,४,७,१०।

शुकात्त्रिपंचास्तनवायखांबुगः ३,५,७,७,४,११,१०,४

शुजः शनेः षद्त्रिसुतायगः ६,३,५,११ शशी ॥ ५५ ॥

अर्थ—चंद्र खग्नथी ३,६,१० अने ११ मे होय, सूर्यथी ३,६,१०,११,० अने सातमे होय, पोताना स्थानथी ३,६,१०,११,१ अने ७ मे रह्यो होय, मंगळथी ३,६,१०,११,१ १,७ १,० अने १० मे होय, युक्थी ०,३,११,५,१,५,७ अने १० मे होय, युक्थी ११,०,११,१,७ अने १० मे होय, तथा शनिधी ६,३,५, अने अगीयारमे होय तो ते चंद्र शुद्र हे.

॥ इति चन्डाप्टकवर्गः ॥ २

कुज इन्दोरुपचयने ३,६,१०,११ सादो ३,६,१०,११,१ लग्नात्सपञ्चमे ३,६,१०,११,५ सूर्यात् । ह्यायाष्ट्रकेन्ड्रगः १,११,७,१,४,७,१० स्वात्सौम्यात्त्रिसुतारिखानस्थः ३,५,६,११ ॥ ५६॥

जीवात्खान्त्यायारिषु १०,१२,११,६ शुक्राक्षिद्धान्त्यखाजरात्रुगतः०,१२,१७,६। मन्दाल्लाजनवाष्टमकेन्द्रस्थः ११,७,०,१,४,७,१० शोजनो जोमः॥ ५९॥

अर्थ—मंगळ चंजयी ३,६,१० अने ११ मे स्थाने होय, खग्नथी ३,६,१०,११ अने १ से स्थाने होय, सूर्यथी ३,६,१०,११ अने ५ मे होय, पोताना स्थानथी २,११,७,१, ४,९ अने १० मे होय, बुधयी ३,५,६ अने ११ मे होय, गुरुषी १०,१२,११ अने ६ हे होय, तथा शनिषी ११,७,०,१,५,९ अने १० मे होय तो ते मंगळ शुज हो.

॥ इति जीमाष्टकवर्गः ॥ ३
बुधोऽर्कतोऽन्त्यायनवारिधीषु १२,११,७,६,५
स्थितः स्वतः सित्रदशादिमेषु १२,११,७,६,५,३,१०,१।
दिषद्दशायाष्टसुखेषु २,६,१०,११,७,४ चन्द्रात्
सम्रानु तेष्वाद्ययुतेषु २,६,१०,११,७,५,१ शस्तः ॥ ५०॥
कुजशनितो व्यन्त्यारिषु १,२,३,५,५,७,७,७,११,११।

शुकादापुत्राष्ट्रमनवमायस्थो ४,२,३,४,५,०,७,११ बुधः शुक्रदः ॥ ५७ ॥

अर्थ—बुध सूर्यथी १२,११,ए,६ अने ५ मे रह्यो होय, पोताना स्थानथी १२,११, ए,६,५,३,१० अने १ खे रह्यो होय, चंड्यी २,६,१०,११,० अने ४ थे रह्यो होय, खग्नथी २,६,१०,११,०,४ अने १ खे रह्यो होय तो प्रशस्त हो, तथा मंगळ अने शिनथी १,२,३,४,५,७,७,७,१० अने ११ मे होय, गुरुथी ६,०,११ अने १२ मे होय, तथा शुक्रथी १,२,३,४,५,०,ए अने ११ मे होय तो बुध शुज फळदायक हे.

॥ इति बुधाष्टकवर्गः । ध

ग्रुरुः केन्झस्वरन्धाये ४,४,७,४०,२,७,४१ ष्वारात्स्वात्सत्रिषुत्तमः ४,४,७,४०,२,७,१४,३ । श्रकीत्सित्रिनवस्ति १,४,५,१०,२,६,१,३,ए न्दोः स्वधीकामनवायगः १,५,५,ए,११ ॥ ६० ॥ स्वादिखायसुखधीतपोऽरिषु १,१,१०,११,४,५,ए,६ इाफुरुः स्मरयुतेषु १,१,१०,११,४,५,ए,६,७ खम्नतः । स्वत्रिकोणरिपुखायगः १,ए,५,६,१०,११ सितात् ज्यन्स्यधीरिपुषु ३,११,५,६ मन्दतः शुजः ॥ ६१ ॥

अर्थ—गुरु मंगळथी १,४,९,१०,२,० अने ११ मे होय, पोताना स्थानथी १,४,९,१०,२,०,११ अने ३ जे होय, सूर्यथी १,४,९,१०,२,०,११,३ अने ए मे होय, चंजशी २,५,९,ए अने ६ रे होय, खग्नथी २,१,१०,११,४,ए,ए अने ६ रे होय, खग्नथी २,१,१०,११,४,ए,ए,६ अने ६ मे होय, गुक्रथी २,ए,५,६,१० अने ११ मे होय, तथा शनिथी ३,१२,५ अने ६ रे होय तो ते गुरु गुज हे.

॥ इति गुर्वष्टकवर्गः ॥ ५

शुक्रो बन्नादासुत्रधर्मायाष्ट्रसु २,१,३,४,५,ए,११,७

मतः खतः साद्रः १,२,३,४,५,७,११,७,१०।

शशिनः सान्त्यः १,२,३,४,५,७,११,७,११

शनितः खायतपश्चिसुखधी सृतिषु १०,११,७,३,४,४,७॥ ६२॥

श्चा<mark>यव्ययाष्ट्र</mark>गोऽर्का ११,११,७ हुधाञ्चिकोणाय-

षट्त्रिगः ए,५,११,६,३ शुन्नदः ।

ध्यापोक्खिमासिषु ५,३,६,७,११,११ क्रजाजुरो-

स्त्रिकोणाष्ट्रखायगः ए,५,०,१०,११ शुक्रः ॥ ६३ ॥

अर्थ—शुक खग्नथी १,२,३,४,५,ए,११ अने ए में होय, पोताना स्थानथी १,२,३, ४,५ १,० अने १० में होय, चंड्यी १,२,३,४,५,ए,११,० अने १२ में होय, शनिष् ०,११,ए,३,४,५ अने ए में होय, सूर्यथी ११,१२ अने ए में होय, बुधथी ए,५,११,३ अने ३ जे होय, मंगळथी ५,३,६,ए,१२ अने ११ में होय, तथा गुरुशी ए,५,०,१० अने ११ में होय तो ते शुक्र शुज्र हे.

॥ इति शुकाष्टकवर्गः ॥ ६

शितः स्वात्त्र्यायपुत्रारि ३,१४,५,६ व्वारात्सव्ययकमेसु ३,१४,५,६,१४,८,० केन्द्राष्ट्रायार्थगः ४,४,५,४०,०,४४,६ सूर्याचन्द्रात् षट्ट्र्यायगो ६,३,४४ मतः ६४ आद्यांच्यच्ये समात् ४,४,३,६,४०,४४ कवेरायव्ययारिषु ४४,४१,६ । धरोः सभीषु ४४,४१,६,५ साञ्चाष्टभर्मेषु ४४,४१,६,१०,०,० इत्विनिर्मतः ॥६५॥

अर्थ-शिन पोताना स्थानथी ३,११,५ छने ६ हे होय, मंगळथी ३,११,५,६,१२ छने १० मे होय, सूर्यथी १,४,५,१०,०,११ छने २ जे होय, चंडथी ६,३ छने ११ मे होय, लग्नथी १,४,३,६,१० छने ११ मे होय, शुक्रथी ११,१२ छने ६ हे होय, गुरुथी ११,१२,६ छने ५ मे होय, तथा बुधथी ११,१२,६,१०,० छने ए मे होय तो ते शुज मानेलो हे.

श्रा चौद श्लोकोनो जावार्थ ए हे जे—पहेला श्लोकमां जे श्रर्क (सूर्य) शब्द हे ते ज्यारे यात्रादिक करवानी इहा होय, ते समये जे राशिनो सूर्य होय ते तात्कालिक सूर्य कहेवाय हे श्रने "स्वमन्द" ए हेकाणे जन्मकाळनो सूर्य प्रहण करवानो हे. ए जरीते शनि, मंगळ विंगरे पण जन्मकाळना ज लेवाना हे. तेथी करीने तात्कालिक सूर्य विंगरे जो जन्मकाळना सूर्य, शनि विंगरेशी नवमा, बीजा विंगरेमांना कोइ पण स्थाने होय तो ते शुज हे. ते सर्व शुज स्थाने रेला "।" श्रापे हे एवी परिजापा हे. तेथी करीने जेटला लग्नना प्रहोशी कहेलांमांनां कोइ पण स्थानोमां तात्कालिक सूर्यादिक पमाय, तेटली रेलार्च देवी, श्रने जेटला लग्नना प्रहोशी कहेलां स्थानोमांनां जेटलां स्थान न पमाय तेटलां शून्य—मींमां "॰" देवां ए रीते करवाशी दरेक प्रहने श्राश्रीने श्राह श्राह रेलार्च संज्ञवे हे. तेमां जो चार के तेथी छंडी के तेथी वधारे रेलार्च पामीए तो श्राहुकमे ते मध्यम, श्रधम श्रने श्रेष्ठ जाण्वी, श्रने तेम करवाशी जे प्रहनी रेलार्च घणी होय ते प्रह कदाच गोचरवके श्राह्यज्ञ होय तोपण श्रुज जाण्वो, श्रने शून्य—मींमांचं घणां होय तो गोचरवके श्रुज श्रह पण श्राहुज जाण्वो.

केटल श्राचार्यों कहे ने के—"कार्य वसते अष्टकवर्गनी रेखार्ड मेळवाती नथी— मळती नथी; परंतु गमे ते वसते जन्मकुंमळीने ज सात वार जूदी जूदी स्थापन करीने पन्नी पहेसी कुंमळीमां जे स्थाने सूर्य रह्यो होय, त्यांथी नवमा विगेरे श्राने स्थानोमां श्रान रेखार्ड देवी (दरेक स्थानमां एक एक रेखा काढवी). ए ज प्रकारे शनि श्राने मंगळथी पण दरेकमां श्रान श्रान रेखार्ड देवी. गुरुथी चार रेखा देवी, शुक्रथी त्रण, चंज्रथी चार, बुधधी सात श्राने खग्नथी न रेखा देवी. श्रा प्रमाणे ते सूर्यना श्रष्टक- वर्गनी कुंमळीमां सर्व मळीने सूर्यनी ४० रेखां यइ. ए ज प्रमाणे वीजी, त्रीजी विगेरे खंडादिकना श्रष्टकनी कुंमळीलंमां श्रमुक्रमें सर्व रेखां करवी. तेथी चंडनी कुंमळीमां ४ए, मंगळनी कुंमळीमां ४०, बुधनी कुंमळीमां ५०, गुरुनी कुंमळीमां ५६, शुक्रनी कुंमळीमां ५६, श्रक्रनी कुंमळीमां ५०, श्रमें श्रीनिनी कुंमळीमां ३ए रेखां कुंख श्राय हे." कहां हे के—

"वसुवेदौ १ नन्दवेदौ २ खवेदौ २ वसुसायकौ ध। षड्वाणौ ५ दिशरौ ६ नन्दवह्वी ७ रेखा इनादिजाः॥ १॥"

"सूर्यथी आरंजीने अनुक्रमे ४०,४ए,४०,५०,५६,५२ अने ३ए रेलार्ज थाय हे."

श्रा प्रमाणे एक एक ग्रहना श्रष्टकवर्गनी कुंमळीमां बारे राशिनां स्थानोमां जेम संज्ञवे तेम एक एक रेखा देवी (करवी), श्रने वाकीनां स्थानोमां शुन्य मुकवी। एम करवाधी एक ग्रहने स्थाने जत्कृष्टी श्राञ रेखानो संज्ञव श्राय है। त्यारपही कार्य वखते जे ग्रह जे राशिमां होय, ते स्थान जोवुं. ते स्थानमां जो रेखानुं श्रिधकपणुं होय तो ते ग्रहण करवुं श्रेष्ठ हे, शुन्यनुं श्रिधकपणुं होय तो श्रशुज जाणवो.

श्रा बन्ने मतनुं तस्व सरखुं ज हे. ते रेखार्जनो जपयोग श्रा प्रमाऐ.— ''चतूरेखे मध्यफलं हीने हीनं ततोऽधिके श्रेष्ठम् । विफलं गोचरगणितं त्वष्टकवर्गेण निर्दिष्टम् ॥ १ ॥"

"चार रेखा आवे तो मध्यम फळ, तेथी उंडी आवे तो हीन फळ अने तेथी अधिक आवे तो श्रेष्ठ फळ जाएवं, अने आ श्रेष्ठ फळ अष्टकवर्गे बताब्युं होय त्यारे गोचरश्री गऐखुं गोचरफळ निष्फळ आय डे."

श्रा सर्व एक ग्रहने आशीने कहां हे. तात्काद्यिकना सर्व ग्रहोनी रेखार्ड मेळवीए तो सोळशी र्डही रेखा कदापि न याय, पण सत्तरथी आरंजीने छत्कृष्टी ५६ रेखार्ड सुधी थाय हे. ते वखते सत्तरथी हवीश सुधीनी श्रशुज जाण्वी, सत्यावीश होय तो मध्यम, श्राने श्राचावीशथी आरंजीने हप्पन सुधी उत्तरोत्तर शुज, शुजतर श्राने शुजतम जाण्वी. कहां हे के—

"रेखाधिक्यं शस्तं शून्याधिक्यं तथाऽधमं कथितम् । एतत्संयोगे स्युः पर्पञ्चाशञ्च जातु स्रधिकास्ताः ॥ १ ॥"

"अधिक रेखा होय तो प्रशस्त ने अने शुन्य अधिक होय तो अधम कहां ने. ए सूर्यादिक सर्वनी रेखार्जने एकनी करीए तो जप्पन थाय ने, पण तथी अधिक थती नथी, कारण के सूर्यादिक सात प्रहोनी दरेकनी आन आन रेखार्ज मेळववाथी जप्पन ज थाय ने." विशेष ए ने जे—"जो के "चतूरेखं मध्यफलं" "चार रेखा मध्य फळवाळी ने" एम पूर्वे कहां ने, तोपण जे प्रहना अष्टकवर्गनी शुद्धित वखते जोवाती होय, ते

शिक्ता स्वामीरूप ग्रहनी रेखार्छ जो पोताथी ज जत्पन्न थयेखी मळती होय तो चार रेखार्छ आवे ते पण श्रेष्ठ हे, अने तेम न होय तो (पोताथी जत्पन्न थयेखी रेखार्छ न होय तो) पड्रवर्ग विगेरेना वळवाळा पोताना मित्ररूप शहनी पोताथी ज जत्पन्न थयेखी रेखार्ड मळे तोपण चार रेखार्ड पशस्त हे, तेम पण न होय तो ते ज शुक्तिनो स्वामीरूप ग्रह जो वामवेधे करीने शुन्न होय तोपण चार रेखा प्रशस्त हे. आ त्रणे प्रकारमांनो कोइ पण न होय तो चारथी अधिक रेखावाळो ग्रह पण शुन्न नथी." एम न्यवहार-प्रकाशमां कहां हे.

वळी जपर जे ५६ रेखार्ज जत्कृष्ट कही है, ते "राहुनी रेखा विलक्कुल नथी" एवा मते करीने कहां है, पण केटलाक तो राहुनी पण रेखार्ज कहे है, ते आ प्रमाणे.—

"केन्डाष्टिजिगः १,४,६,१०,०,६,३ सूर्याडाहू रेखाप्रदः स्मृतः।
इन्दोस्तनुत्रिधीस्त्र्यष्टधर्मकर्मव्यये १,३,५,९,०,७,१,१०,१६ स्थितः॥ १॥
जीमात्तनुत्रिधीरिष्ये १,३,५,११ स्वांबुक्ष्यष्टान्तिमे १,४,९,०,११ बुधात्।
जीवात्सप्रथमे २,४,९,०,११,१ शुकादरिद्यूनायरिष्यगः ६,९,११,११॥ १॥
श्वानेस्त्रिधीवधूदाचे ३,५,९,११ सम्राडाहुस्तु शोजनः।
त्रिपञ्चसप्तनवमान्त्येषु ३,५,९,७,११ रेखाऽस्य न स्वतः॥ ३॥
त्रिचत्वारिंशदेव स्यू रेखा राह्वष्टवर्गगाः।"

"राहु सूर्यथी १,४,५,१०,०,२ अने ३ जे स्थाने होय तो ते रेखाने आपनारो (शुज) कहाो हो, चंड्यी १,३,५,५,०,०,ए,१० अने १२ में होय, मंगळथी १,३,५ अने १२ में होय, बुधथी २,४,५,० अने १२ में होय, गुरुश्री २,४,५,०,१२ अने १ से होय, शुक्रथी ६,५,११ अने १२ में होय, शनिथी ३,५,७ अने ११ में होय अने समयी राहु ३,५,५,७,ए अने १२ में रहाो होय तो ते सारो हे आ राहुने पोताना स्थानथी रेखा आवती नथी. आ प्रमाणे राहुना अष्टकवर्णमां कुछ रेखाई ४३ अवश्य छत्कृष्टी थाय हे."

हवे कया कार्यमां कयो ग्रह वळवान लेवो ? ते कहे हे.— सर्वत्रेन्छः कुजः संख्ये बोधे इः स्यापने ग्रहः । याने ग्रुकः शनिमौंड्ये बली जानुर्नृपेक्षणे ॥ ६६ ॥

अर्थ—सर्व शुज्ज कार्यमां कार्य करनारनो चंज वळवान् जोवो जोइए, युद्धमां मंगळ, इानमां बुध, स्थापना (पदवी, प्रतिष्ठा, विवाह विगेरे) मां गुरु, प्रयाणमां शुक्र, मुंक-नमां (दीहामां) शिन अने राजाना एटले उपरीना दर्शनमां सूर्य वळवान् क्षेवो जोइए. आ सर्वनुं गोचरादिक वळ जोवुं. कह्यं हे के—

"एग १ चन १ छान्न ३ सोलस ४ वत्तीसा ए सिन ६ सयगुण ७ फलाई।
तिहि १ रिक २ वार ३ करण ४ जोगो ए तारा ६ ससंकवलं ७ ॥ १ ॥"
"तिथिनुं वळ एक गणुं हे, तेनाधी नद्यत्रनुं वळ चार गणुं हे, तेनाधी वारनुं बळ
छान गणुं हे, तेनाधी करणनुं वळ सोळ गणुं हे, तेनाधी योगनुं वळ वत्रीश गणुं हे,
तेनाधी तारानुं वळ साह गणुं हे छाने तेनाधी चंद्रनुं वळ सो गणुं फळदायक हे."
तेथी करीने ज कह्यं हे के—

"कर्तुरनुकूलयोगिनि शुजेिक्ते शशिनि वर्कमाने च। तारायोगेऽजीष्टे सर्वेऽर्थाः सिक्रिमुपयान्ति ॥ १ ॥"

"कर्ताने अनुकूळ योगवाळो, शुज यहे जोयेल अने वृद्धि पामतो चंद्र होय तथा ता-रानो योग सारो होय तो तेनां सर्व कार्यो सिद्धिने पामे हे."

तेमां पण आ प्रमाणे विजाग हे.

"ग्रामे नृपतिसेवायां संग्रामञ्यवहारयोः । चतुर्षु नामनं योज्यं शेषं जन्मनि योजयेत् ॥ १ ॥"

"गाममां, राजसेवामां, संशाममां श्रने व्यवहार (वेपार)मां, ए चार कार्यमां नामनुं नक्त्र क्षेत्रं, श्रने वाकीनां दीका, प्रतिष्ठा, विवाहादि कार्यमां जन्मनुं नक्त्र क्षेत्रं." श्रा नरपति जयचर्यामां कहां हे.

तात्काखिक खग्नमां पण सर्वे कार्योमां चंड्रनुं बळ श्रवस्य खेवुं. तेने माटे सारंग कहे हे के-

प्राणे नष्टे देहेघात्वङ्गनाशो, यत्नेनातश्चन्यवीर्यं प्रकह्प्यम् ॥ १ ॥"

"सम्र ए शरीर हे, पडूवर्ग ए अंगो हे, चंड ए माए हे अने (सात) महो ए (सात) धातुर्च हे, माए नाश पामवाधी देह, धातु अने अंग पए नाश पामे हे, तेथी भयत्वमे पए चंड्र वळ दोबुं जोइए."

मूळ श्लोकनो जावार्थ ए हे जे—ज्यारे ते ते कार्यो लग्नना वळवानपणाथी करवामां आवे, त्यारे तेना भ्रहोनुं उदयपणाए करीने अथवा लग्नमां रहेवापणाए करीने अथवा लग्नमां रहेवापणाए करीने अथवा लग्नमां रहेवापणाए करीने अथवा वा उपकार विगेरेना बळवने करीने सबळपणुं लग्नमां करवुं, अने कार्य करनारने ए महोनुं गोचरबळ लेवुं. ज्यारे कार्थ केवळ मुहूर्त्तना बळथी ज करवुं होय त्यारे ते महोनुं गोचरबळ तथा वार होरादिक लेवां.

हवे राशिमां आवेलो कयो घह क्यारे फळदायक होय ? ते कहे हे.— क्रोऽखिखे फलदो राशावादावादित्यमंगली । मध्ये सुरासुराचार्यों प्रान्ते त्विन्छशनेश्वरौ ॥ ६५ ॥

कां॰ १५

अर्थ—बुध आर्खी राशिमां फळदायक हे, सूर्य अने मंगळ आदिमां, गुरु अने शुक्र मध्यमां अने चंद्र तथा शनि अंत जागमां फळ देनारा हे.

फळदायक एटले शुन गोचरमां रहेलो यह शुन फळ छापे, छने छशुन गोचरमां रह्यो होय तो छशुन फळ छापे हे. बुध छाली राशिमां फळ छापे हे एटले के जे राशिने पोते छाकमण करी होय ते छाली राशिमां. छादिमां एटले पहेला डेष्काणमां, मध्यमां एटले बीजा डेष्काणमां छने छांते एटले त्रीजा डेष्काणमां. छा नियम सहज (सरल) गतिमां वर्तता ग्रहोने छाश्रीने कह्यो हे, पण ज्यारे वकताए करीने तथा छातिचारपणाए करीने ते ग्रहो बीजी राशिमां गया होय त्यारे छा प्रमाणे जाणबुं.—

"पद्यं १ दशाहं २ मासं च ३ दशाहं मासपञ्चकम् । वक्रेऽतिचारे जीमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः ॥ १॥"

"मंगळ वक्र गतिमां के अतिचार गतिमां होय तो पंदर दिवस सुधी पूर्वनी राशिनुं फळ आपे हे, ए प्रमाणे बुध दश दिवस, गुरु एक मास, गुक्र दश दिवस अने शिन पांच मास सुधी फळ आपे हे. अहीं पूर्वनी राशि एटले के वक्री होय तो पढ़ीनी राशिनुं अने अतिचारी होय तो पहेलानी राशिनुं फळ आपे हे, एम जाणवुं.

प्रश्न प्रकाशकर तो आम कहे हे .---

"वक्रेऽतिचारे जौमाद्याः पूर्वराशिफलप्रदाः। जीवः शनिश्च यत्रस्थौ तस्य राशेः फलप्रदौ॥ १॥"

"मंगळ विगेरे यहो वक्री के अतिचारी होय तो पूर्वराशिना फळने आपे हे, परंतु गुरु अने शनि तो जे राशिमां रह्या होय ते ज राशिना फळने आपे हे." विशेष आप्रमाखे-

> "राज्यन्तगतः खेटः परजावफलं ददाति पृञ्जासु । अन्त्यघटीं यावदसावासीनफलं विवाहादौ ॥ १ ॥"

"प्रश्नने विषे राशिना श्रंत जागमां रहेलो यह पठीना स्थानना फळने आपे हे, अने विवाहादिकमां तो ते यह अन्त्यनी घमी सुधी ज्यां रहेलो होय ते ज स्थाननुं फळ आपे हे." अहीं राशिनो श्रंत्य एटले हेलो त्रिंशांश लेवो.

ग्रहगोचर विरुद्ध (अशुप्त) होय तो माण्से विशेषे करीने सत्कर्ममां (धर्मकार्यमां) तत्पर रहेडुं, अने अत्यंत दूरनी यात्रा, अश्वक्रीमा, विकाळे फरबुं अने साहस कार्य विगेरे कार्यनो त्याग करवो.

आ प्रमाणे (विरुष्ट प्रहगोचरमां) यात्रादिक कर्या विना निर्वाह श्रइ शके नहीं, तेथी ते प्रहोनी शांतिने माटे कहे हे.— ध्यकीरयो १ ईस्य १ ग्ररोः ३ सितेन्द्रो ४-र्मन्दस्य ५ राहुरगयोश्च ६ तुष्ट्यै। सदा वहेद्विडुम १ हेम १ मुक्ता ३-रूप्याणि ४ लोहं च ५ विराटजं च ६॥ ६०॥

अर्थ—सूर्य अने मंगळनी तृष्टि माटे विद्वमने धारण करवां, बुधनी शांतिने माटे सुवर्ण पहेरवुं, गुरुनी शांति माटे मोती पहेरवां, शुक्त अने चंद्रनी शांति माटे रूपुं पहेरवुं, शनिनी शांति माटे खोढुं पहेरवुं (पासे राखवुं) अने राद्व तथा केतुनी शांति माटे राजावर्त नामनो मणि पहेरवो.

श्रदीं कोइ शंका करे हे के—सात प्रहोनुं तो सर्वदा गोचरफळ विचारवानुं कहुं हे श्रमे दिवस, मास, वर्ष तथा होरानुं स्वामीपणुं पण सात प्रहोने ज हे, तो श्रहीं राष्टु श्रमे केतुनुं प्रहण केम कर्युं रितथा तेमनुं प्रतिकूळ गोचरपणुं पण शी रीते घटे रे के जेथी करीने तेमनी शांतिने माटे विराटज मिलने वहन करवानुं कहेवुं पड्युं रे श्रमो जवाब ए हे जे—राहु श्रमे केतुनुं दिवसादिकनुं स्वामीपणुं जले न होय, परंतु प्रहपणुं तो हे ज, केमके जो तेल पह न होय तो राशि विगरेमां तेमनी संचार शी रीते घटे रे तथा राहु गोचर पण प्रहणने दिवसे विचारवानुं कह्युं ज हे, तेथी तेना प्रतिकूळपणामां तेनी शांतिनो जपयोग थइ शके हे, श्रमे केतु पण ज्यारे जदय पाम्यो होय त्यारे तेनाधी जत्यन थयेला जपवनी शांतिने माटे तेनो शांतिक जपाय जपयोगी हो.

यहोनी शांति माटे बीजो प्रकार कहे हे.—
पूषादितोषाय च पद्मराग १—
मुक्ता २ प्रवालानि ३ सगारुडानि ४।
सपुष्परागं ५ कुलिशं ६ च नील ५गोमेद ७ वैद्धर्य ए मणीन् वहेत ॥ ६ए॥

श्रर्थ—रिवनी तुष्टि माटे पद्मरागे धारण करतो, चंद्र माटे मुक्ता, मंगळ माटे पर-वाळां, बुध माटे सगारुक (मरकत मणि), गुरु माटे पुष्पराग, शुक्र माटे कुलिश (वज्र), शनि माटे नील मणि, राहु माटे गोमेद जातना मणि, श्रने केतुनी शांति माटे वेडूर्य मणिने धारण करवा.

प्रहोनी शांतिने माटे स्नानो कहे हे.--

एलाशिलापद्मकयध्यशीरसुराह्मकश्मीरजशोणपुष्पैः। श्रकें विधो कैरवपञ्चगव्यैः सशंखग्रुक्तिस्फटिकेजदानैः॥ उ०॥ श्चर्य — सूर्य विरुद्ध (श्वराज) होय तो एखायची, मणशीख, कमळ, जेठीमध, सुगंधी वाळो, देवदार, केसर श्वने राता कणेरनां पुष्पोधी स्नान करवुं एटखे के श्वा सर्व वस्तु पाणीमां नाखी तेवने स्थान करवुं. तथा ते स्नान पण ते ते ब्रह्मा वारने दिवसे करवुं. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. चंद्र विरुद्ध होय तो शंख, ठीप, स्फटिक श्वने हाथीना मद सहित पोयणा (कमळ) श्वने पंचगव्यवमे स्नान करवुं. पंचगव्य माटे पराशर श्वा प्रमाणे कहे हे.—

''कृष्णाया गोमयं मूत्रं नीलायाः कपिलाघृतम् । सुरजेर्दधि शुक्लायास्तामायाः क्षीरमाहरेत् ॥ १ ॥"

"काळी गायनुं जाण, खीखी गायनुं मूत्र, पीळी गायनुं घी, घोळी गायनुं दहीं अने राती गायनुं छुघ लेबुं."

जोमे बलाहिंगुलबिब्वकेसरैमांस्या फलिन्याऽहणपुष्पचन्दनैः। सुवर्णमुक्तामधुगोमयाद्दतैः सरोचनामूलफलेर्बुधे पुनः॥ ११॥

अर्थ—मंगळ विरुष्ठ होय तो बळदाणा, हींगळोक, बीलानुं फळ, बकुलनुं फळ, मुर-मांसी, प्रियंगु, रातां पुष्प (जवाकुसुम) अने लाल चंदनवमे स्नान करनुं बुध विरुष्ठ होय तो सुवर्ण, मोती, मध, गायनुं ठाण, अक्त, गोरोचंदन अने नारंगीनुं फळ, एटली वस्तुवमे स्नान करनुं

> जीवे सजातिकुसुमैः सितसर्षपयष्टिमङ्खिकापन्नैः । मूखफखकुंकुमैखामनःशिखाजिस्तु दैत्यगुरी ॥ ७१ ॥

श्चर्य—गुरु श्रशुज होय तो जाइनां पुष्प, घोळा सरसव, जेठीमघ श्चने मिस्नका (विचिकित)नां पांनदांए करीने स्नान करवुं. शुक्र श्चशुज होय तो बीजोरं, केसर, एसायची श्चने मण्डीसवरे स्नान करवुं.

कृष्णतिलाञ्जनलाजैः शतपुष्पीरोधमुस्तकवलाजिः।

तरणितनये च गोचरविरुद्धराशिस्थिते स्नायात् ॥ ७३ ॥

शनि गोचर विरुद्ध राशिमां रह्यो होय तो काळा तल, सौवीरांजन (सोयरो), लाजा (शेकेला बीहि), शतपुष्पी (सोश्रा), लोधर, मोथ अने बळ नामनी औषधिए करीने स्नान करतुं.

राहु केतुनी शांति माटे जास्कर छा प्रमाणे स्नान कहे हे. "रोधगर्जतिखपत्रकमुस्ताहस्तिदानमृगनाजिपयोजिः। स्नानमेतदपरोधति राहोः साजमूत्रमिदमेव च केतोः॥ १॥" "क्षोधरनो गर्ज, तखनां पांदमां, मोध, हाथीनो मद छने कस्तूरीना जळवमे स्नान करवाथी राहुनी पीमा रोकाय हे, छने ते ज स्नान वकराना मूत्र सहित करवाथी केतुनी पीमा रोकाय हे."

> "सिव्यंगुरजनीष्यमांसीकुष्ठलाजसितसर्षपचन्धैः। वारिजिः सहवचैः सहरोधैः स्नानमत्ति निखिलयहपीडाम्॥ २ ॥"

"प्रियंगु (कांग), हळदर, जटामांसी, कुष्ठ (एक जातनी वनस्पति), खाजा, धोळा सरसव अने कपूर सहित तथा वज अने खोध सहित जळवने स्नान करवाथी समग्र प्रहोनी पीमा नाश पामे हे."

श्चा स्नानो राजादिकने ज जिनत है. श्रम्य जने तो श्चा प्रमाणे करखुं.— "रत्तं १ सेश्चं २ रत्तं २ नीखं ध पीश्चं ५ सिश्चं ६ तिसु किन्हं ए। पृश्चं बिंदं च कुक्का सुराईणं विरुद्धाणं॥ १॥"

"सूर्यादिक विरुद्ध होय तो तेनी शांति माटे श्रनुक्रमे राता १, श्वेत २, राता ३, दीला ४, पीळा ४, श्वेत ६ श्रने बेल्ला त्रण एटले शनि, राहु श्रने केतुनी शांति माटे काळा ए पदार्थोश्री (पुष्पादिक, धान्यादिकश्री) पूजा तथा बळिदान करवां." श्रा प्रमाणे हर्षप्रकाशमां कहां हे.

। इति गोचरदारम् । ६

॥ इति श्रीमति श्रारंत्रसिद्धिवार्तिके राशि १ गोचर २ परीक्षात्मको दितीयो विमर्शः॥ २

श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोनिं शेषशिष्यात्रणी-गेक्वेन्द्रः प्रजुरत्तशेखरगुरुर्देदीप्यते सांप्रतम् । तिक्वप्याश्रवहेमहंसरिचतस्यारंजसिद्धेः सुधी-

श्रृंगाराज्ञिधवार्त्तिकस्य किल हक् २ संख्यो विमर्शोऽज्ञवत् ॥ २ ॥

श्रीमान् सूरीश्वर सोमसुंदर गुरुना समय शिष्योमां श्रय्नेसर श्रने गञ्जना नायक एवा पूज्य श्री रत्नशेखर गुरु हालमां देदीप्यमान वर्ते हे. तेमना शिष्य हेमहंसे रचेली श्रारंत्र-सिद्धिना सुधीशृंगार नामना वार्तिक (वृत्ति)नो श्रा बीजो विमर्श पूर्ण श्रयो.

। अथ तृतीयो विमर्शः।

हवे कार्यदार कहे हे.--

कार्यं वितारेन्छबक्षेऽपि पुष्ये, दीक्षां विवाहं च विना विदध्यात्। पुष्यः परेषां हि बलं हिनस्ति, बलं तु पुष्यस्य न हन्युरन्ये॥१॥

श्रर्थ—तारा श्रने चंद्रनुं बळ नहीं छतां पण दीका श्रने विवाह सिवायनां बीजां शुज कार्यो पुष्य नक्त्रमां करवां, कारण के पुष्य नक्त्र बीजार्जना बळने हणे छे, पण पुष्यनुं बळ बीजार्ज हणी शकता नथी.

गोचरवने श्रथवा श्रष्टकवर्गवने चं विरुद्ध होय, तथा तारार्छ जन्म, यम श्रने निधनादिकमां रहेखी होय, तोपण पुष्यमां कार्य करतुं. चं श्र श्रने तारानुं वळ होय तो तो विशेषे करीने पुष्यमां करतुं. मूळमां "श्रपि" शब्द खख्यो हे ते परश्री श्रा प्रमाणे जाण्तुं.—पुष्य नहात्र पांच रेखाना के सात रेखाना चक्रमां छष्ट (श्रशुज्ज) प्रहवेन विधायुं होय, श्रथवा पाप प्रहवेने श्राक्रमण करायुं होय, जोगवायुं होय श्रयवा जोगव-वानुं होय, श्रथवा पश्चिम के दक्षिण दिशामां जतां वच्मां परिधदंम श्रने पात-वमे ते दिशामां विवरीत होय तोपण पुष्य नहात्रमां चं जुं वळ होय त्यारे श्रयवा पुष्यमा छदयसमये पुष्यना ज मुहूर्तमां प्रतिष्ठा, यात्रा, श्रीर, श्रव्यप्राशन, छपनयन, विद्यारंज, श्वेत वस्त्र परिधान (पहेरतुं ते) विगेरे सर्व शुज्ज कार्य करवां, एम रक्ष-माला जाण्यमां कह्यं हे.

मूळ श्लोकमां दीका श्रने विवाह ए वे कार्य वर्ग्या छे तेना छपलक्षणथी कन्यानो संबंध पण पुष्य नक्षत्रमां वर्जवो. श्रा कार्यो वर्जवानुं कारण ए छे जे—पहेलां प्रजापित पुष्य नक्षत्रमां पोतानी स्त्रीने परण्यो हतो. ते वस्तते पुष्य नक्षत्रना प्रप्रावशी ते श्रत्यंत कामनी पीकायी पीकायो. ते पीकाने सहन करवामां श्रशक्तिमान् श्रवाशी तेणे पुष्यने शाप श्राप्यो के—"श्ररे पापी! श्राज पठी तुं विवाहनां कार्योमां श्रधिकारी नहीं था." श्रा प्रमाणे श्रुति छे, ते विषे विवाहनृंदावनमां पण कहां छे के—

<mark>''पुष्यः स्म पुष्यत्य</mark>तिकाममेव, प्रजापतेः प्राप स शापमस्मात् ।''

''पुष्ये प्रजापितना कामने ज श्रात्यंत पोषण कर्युं, तेथी ते पुष्य ते (प्रजापित)थी भापने पाम्युं."

कामने पोष्ण करनार दोवाथी ज दीक्षामां पण पुष्य अनिधकारी हे, तेथी ते त्याच्य हे, एम जाणी खेवुं. मूळ श्लोकमां कह्यं के "पुष्य नक्षत्र बीजार्जना बळने हणे हे" एटखे के कुतिथि, कुवार अने कुयोगादिकना बळने हणे हे, पण ते कुतिथि, कुवार विगेरे पुष्यना वळने हणता नथी. ते कुवारादिक जेम पुष्यना वळने हणता नथी, ते ज रीते शहवेघ, विरुद्ध तारापणुं ए विगेरे पुष्यना दोपने पण हणता नथी. श्रर्थात् पुष्य पोतानी जाते ज पोताना दोपने हणे हे. तथी करीने कहां हे के—"सिंहो यथा सर्वचतु-ष्पदानां तथैव पुष्यो वलवानुडूनाम्"। "जेम सिंह सर्व पशुर्चमां वळवान् हे, तेम पुष्य सर्व नक्षत्रोमां वळवान् हे.

हवे कार्यना जेदने खीधे नक्त्रोना अधोमुख विगेरे जेदो कहे हे.--

श्रधोमुखानि पूर्वाः स्युर्मूखाश्र्वेषामघास्तथा । जरणीकृत्तिकाराधाः सिद्ध्यै खातादिकर्मणाम् ॥ २॥

श्चर्य—त्रणे पूर्वा, मूळ, श्रश्सेषा, मघा, जरणी, कृत्तिका श्चने विशाखा ए नव नक्ष्ति अधोमुख (नीचा मुख)वाळां हे तेथी तेलं खात विगरे कार्यनी सिद्धि करनारां हे. श्चादि (विगरे) शब्दश्री वाय, कूवा, तलाव, खाइ विगरे खोदवामां तथा निधान खोदवामां (नाखवामां), द्यूत रमवामां, गुफामां प्रवेश करवामां, धातुकर्ममां, राजानी साथे लक्षाइमां तथा गिलतना श्चारंजमां विगरे कार्यमां श्रेष्ठ हे.

तिर्जी मुखवाळां नक्त्रो आ प्रमाणे हे.-

तिर्थग्मुखानि चादित्यं मैत्रं ज्येष्टा करत्रयम्। अश्विनीचान्डपौष्णानि कृषियात्रादिसिद्धये॥ ३॥

ऋर्य—पुनर्वसु, अनुराधा, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अश्विनी, मृगशीर्ष अने रेवती, ए नव नद्दत्रो तिर्छा मुखवाळां हे, तेर्ज खेती, यात्रा विगेरे कार्यने सिद्ध कर-नारां हे. अहीं पण आदि (विगेरे) शब्दणी अश्व, हस्ती अने बळद विगेरेने दमवामां, वेपार, राजा साथे संधि, वहाण कराववुं, वहाण रस्ते जवुं, वहाणने प्रथम हांकवुं, गारुं, रख अने यंत्रने प्रथम चलाववां विगेरे कार्यमां पण श्रेष्ठ हे.

हवे कर्ध्व मुखवाळां कहे हे.—

कर्ध्वास्यान्युत्तराः पुष्यो रोहिणी श्रवणत्रयम् । स्रार्जा च स्युर्ध्वजन्नत्राजिषेकतरुकर्मसु ॥ ४ ॥

अर्थ-न्त्रण उत्तरा, पुष्य, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतिजवक् स्रने स्वार्धा, ए नव नक्त्रो कर्ध्व (उंचा) मुखवाळां हे. तेर्ड ध्वज, हन्न, स्विजिक स्रने वृक्त्नां कार्योमां शुज हे. कर्म (कार्य) शब्द बहुवचनमां हे, तेथ्री हुर्ग, प्राकार, तोरण, उद्यान, पट्टाजि-वेक विगेरे कार्य करवामां शुज हे. श्रा प्रमाणे सामान्य रीते कार्य कहीने हवे पोतपोताने स्थाने नामनो प्रकाश करवापूर्वक केटलांक छपयोगी कार्यों कहे हे.—

क्रत्वाद्ययुचतुष्टयवर्जी विषमासु रात्रिषु न योषाम् । सेवेत पुत्रकामः पौष्णमघामूलजेष्वपि च ॥ ५ ॥

श्चर्य-पुत्रनी इल्लावाळा पुरुषे रुतुना प्रथमना चार दिवस वर्जीने विषम (एकी) रात्रिजेमां स्त्रीने सेववी नहीं, तथा रेवती, मधा श्चने मूळ नक्षत्रमां पण सेववी नहीं.

विषम रात्रिने वर्जवा विषे विवेकविद्यासमां कह्यं हे के— "निज्ञाः पोक्ता नारीणामृतुः स्थात्तासु चादिमाः। तिस्रः सर्वैरिप त्याज्याः प्रोक्ता तुर्यापि केनचित्॥ १॥"

"स्त्रीर्डने सोळ रात्रि सुधी रुतु होय हे, तेमां प्रथमनी त्रण रात्रिर्ड सौने वर्जवा योग्य हे. कोइए चोथी रात्रि पण वर्ज्य कही हे."

> "चतुर्थ्या जायते पुत्रः स्वह्पायुर्गुणवर्जितः। विद्याचारपरिच्रष्टो दरिष्ठः क्लेशजाजनम्॥ २॥"

"चोथी रात्रिए पुत्र छत्पन्न थयो होय तो ते ऋश्प आयुष्यवाळो, गुण रहित, विद्या अने आचारथी च्रष्ट, दरिष्ठ अने क्लेशना स्थानरूप याय हे."

विषम रात्रिमां स्त्री प्रत्ये गमन न करवा विषे कहां हे के—"समायां निशि पुत्रः स्या-दिषमायां च पुत्रिका"। "सम रात्रिए स्त्रीगमन करवाधी पुत्र धाय हे, छने विषम रात्रिए पुत्री धाय हे." मूळ श्लोकमां "विषम रात्रिए गमन न करवुं" एम जे निषध मुखे कहां हो, ते वचन गुधिनुं सत्यापन करवा माटे कहां हो. ए रीते छागळ पण निषध मुखनी छक्तिमां जाणी क्षेत्रं. रेवती विगेरे नक्षत्रो मूळ श्लोकमां वर्जवानां कहां हो, ते विषे कहां हे के—

"गर्जाधाने मधा वर्ज्या रेवत्यपि यतोऽनयोः। पुत्रजन्मदिने मूखाश्क्षेषे सास्ते च छःखदे॥ १॥"

"गर्ज धारण करवामां मधा अने रेवती वर्ज्य हे, कारण के आ वे नक्त्रमां गर्ज रहे तो पुत्रना जन्मने दिवसे अनुक्रमे मूळ तथा अश्लेपा नक्त्र आवे हे, तेथी ते मूळ अने अश्लेपानो जन्म अत्यंत इःखदायी हे. मूळ तथा अश्लेपामां जन्म थवानुं प्रमाण— "आधानाहशमे जन्म" "आधानशी दशमा नक्त्रमां जन्म आय हे," ए वचन हे.

रक्षानीव प्रशसेऽहि जाताः स्युः सूनवः शुजाः। श्रतो मूखमपि त्याच्यं गर्जाधाने शुजार्थिजिः॥ २॥ "प्रशस्त दिवसे जत्पन्न श्रयेखां वाळको रत्तनी जेम शुजकारक श्राय हे, तेथी शुजने इहनार पुरुषोए गर्जाधानमां मूळ नक्तत्रनो पण त्याग करवो."

हवे स्त्रीना सीमंतनुं मुहूर्त्त कहे हे.—

सीमन्तः स्याक्रृवारेषु मासि षष्ठेऽष्टमेऽपि वा । इस्तमूलमृगादित्यपुष्यश्चतिषु योषिताम् ॥ ६ ॥

अर्थ—स्त्रीर्जनुं सीमंत कार्य पुरुष वारमां एटले रवि, मंगळ अने गुरुवारे उठे अथवा आउमे मासे अने इसा, मूळ, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य अने श्रवण एटलां नक्त्रमां शुन्न हे.

त्रिविक्रम सीमंत कार्यने पुरुष नक्त्रमां करवानुं कहे हे तेमां पण आ ज नक्त्रो आवे हे, केमके आ नक्त्रो ज (बाकीनां स्त्रीरूप होवाथी) पुरुषरूपे हे.

"अवीग्विवाहकादाच पितृचन्द्रवर्तं सदा।

स्त्रीएां सीमन्त छघाहे प्राह्ममन्यत्र तत्पतेः ॥ १ ॥"

"विवाह कर्या पहेलां (कन्याने) पिताना चंद्रनुं बळ सदा शुन्न हे, स्त्रीतंना चंद्रनुं बळ सीमंत तथा विवाहमां बळवान् हे, अने बीजां कार्योमां पितनुं चंद्र बळ शुन्न हे." एम व्यवहारप्रकाशमां कहुं हे.

> विष वाळकनी उत्पत्ति कहे हे---विषकोमारजनम स्याद्वितीयाशनिसार्पजैः। सप्तम्यारशतकेंश्चिद्धाद्वस्यकीक्षिजैस्तथा॥ ७॥

अर्थ-वीज, शनि अने अश्लेषाए करीने, सातम, मंगळ अने शतिषके करीने, तथा वारस, रविवार अने कृतिकाए करीने विष कुमार (संतति)नो जन्म याय हे. एटखे के आवा योगमां जो कोइ बालक जल्पन याय तो ते विष कन्या के विष पुत्र याय हे. तेनुं फळ.-

"विषकन्याख्या प्रथमं दिन्नोर्वेशक्यंकरी । इन्ति पश्चात्पतिं श्वश्चं श्वशुरं देवरं तथा ॥ १ ॥"

"विष कन्या प्रथम (कुमारिका अवस्थामां) माता अने पिताना वंशनो नाश करे है, अने पही (परण्या पही) पितनो, सासुनो, ससरानो अने दीयरनो नाश करे है." विशेषमां व्यवहारप्रकाशमां कहां है के—"अजितित नहत्रमां करें सुं सर्व कार्य शुज है, पण तेमां उत्पन्न अयेलुं वाळक प्राये जीवतुं नथी.

हवे मूळ विगेरे नक्त्रमां जत्पन्न थयेखा बाळकने आश्रीने कहे हे.— मूखस्यां द्विचतुष्के पितृ १ मातृ १ ड्रव्यनाश ३ सौख्यानि ४। बाखस्य जन्मनि स्युः क्रमतः सार्थस्य तूर्क्रमतः ॥ ७॥ ऋर्थ—मूळना पहेला पादमां वाळक जत्पन्न घाय तो पितानो नाश याय, बीजामां जन्मे तो मातानो नाश थाय, त्रीजामां जन्मे तो इव्यनो नाश थाय अने चोथामां जन्मे तो सुख धाय. अश्लेपामां वाळक जन्मे तो तेनुं जत्कमधी फळ जाणवुं, एटले के अश्लेपाना पहेला पादमां जन्मे तो सुख धाय, बीजामां जन्मे तो इव्यनो नाश, त्रीजामां मातानो नाश अने चोथा पादमां जन्मे तो पितानो नाश थाय.

वराह तो मूळना चोथा पादमां जन्मेखा बाळकतुं फळ आ प्रमाणे कहे हे.—
"क्षेत्राधिपसंद्रष्टे शशिनी नृपस्तत्सुहिं क्रियंपतिः ।
केष्काणांशकपैर्वा प्रायः सौम्यैः शुन्नं नान्यैः ॥ १ ॥"

"आ तात्का तिक जन्म त्रिमां विचारवानुं हो.—होत्राधिपे देखे ता चंडमां एट ते के ते वखते (जन्म समये) जे राशिमां चंड होय ते राशिमों स्वामी जो चंडमें जोतो होय तो मूळना चोथा पादमां जन्मे तो बाळक राजा थाय अने ते राशिमा मित्रोए ते चंडमें जोयो होय तो धनपित थाय तथा चंडे आक्रमण करे ता डेष्काणनो अथवा नवांशनो स्वामी जो सौम्य होय अने ते चंडमें जोतो होय तो ते शुज हे अने अन्य एट ते कूर स्वामी जोतो होय तो अशुज है."

केटलाक आचार्यो कहे हे के-

"मूजस्यां हिचतुष्के क्रमेण पशुनाशिनी १ सुलकरी च २। पितृपद्यमत्र द्वपयति ३ मातुलपद्यं च ४ जाता स्त्री॥ १॥"

"मूळना पहेला पादमां छत्पन्न थयेली कन्या पशुनो नाश करे हे, बीजा पादमां जन्मी होय तो सुख करनारी थाय हे, त्रीजा पादमां जन्मी होय तो पिताना पक्तो नाश थाय हे श्रने चोथा पादमां जन्मी होय तो माताना पक्तो नाश थाय हे."

"मूले जातोऽधमः स्थाना स्त्री तु पुण्यवती जवेत्। ज्येषा मधा विपरीताऽश्लेषा तफ्जयेऽधमा ॥ २ ॥"

"मूळमां जन्में पुरुष श्रधम थाय हे, श्रने स्त्री जन्मी होय तो ते पुण्यवती थाय हे, ज्येष्ठा श्रने मघामां जन्मे तो तेथी विपरीत थाय हे, एटखे के पुरुप जन्मे तो पुण्य-वान् श्रने स्त्री जन्मे तो श्रधम थाय हे, श्रने श्रश्लेपामां जन्मे तो बन्ने श्रधम थाय हे."

"तृतीया दशमी कृष्णा शनिजीमक्संयुता। शुक्लचतुर्दशी मूलजातः संहरते कुलम्॥ ३॥"

"शनि, मंगळ श्रने बुधवारे करीने सहित कृष्णपक्षनी त्रीज के दशम होय श्रयवा शुक्लपक्षनी चीदश होय ते दिवसे मूळ नक्त्र होय तेमां छत्पन्न श्रयेखी पुरुष कुळनो क्षय करे हे." श्रश्खेपामां जन्मेलानुं फळ श्रा प्रमाणे कह्यं हे.—
"सापाँशे प्रथमे राजा दितीयांशे धनक्यः।
तृतीये जननीं हन्ति चतुर्थे पितृघातकः॥ १॥"

"अश्लेषाना पहेला अंशमां (पादमां) जन्मे तो राजा श्राय, बीजा श्रंशमां जन्मे तो धननो रूय श्राय, त्रीजा श्रंशमां जन्मे तो माताने हणे श्रने चोश्रामां जन्मे तो पिताने हणे." हवे मूळ नक्षत्रनुं पुरुषस्वरूप कहे हे.—

मूर्धा १ स्य १ स्कंध ३ बाहा ४ कर ५ हृदय ६ कटी उग्रह्म ७ जानु ए ऋमेषु १०, स्युर्घट्यः पञ्च ५ पञ्चो ५ रग ७ कर टिण्कराश्ष्ट ७ हि १ दि १० क्तर्क ६ तर्काः ६। बालश्वत्री १ पितृन्नो १ ंसलहृढबलवान् ३ राक्त्सो ४ ब्रह्मघाती ५, राजा ६ नाशी ७ खसौख्यावह ७ इह चपलो ए नश्वर १० श्वासु जातः ॥ए॥

अर्थ — मूळ पुरुषना मस्तक पर पांच घनी मूकवी, मुखमां ए, वे स्कंध पर ए, वे बाहुमां ए, वे हाथमां २, हृदय पर ए, कटी पर २, गुह्य पर १०, बन्ने जानुए ६ अने बन्ने पंगे ६ घनी मूकवी. अहीं वे स्कंध पर आठ मूकवानी कही हे तेमां दरेक पर चार चार मूकवी. ए ज प्रमाणे बाहु विगेरेमां पण व वे जागे मूकवी. वीजे हेकाणे पण यथायोग्य आ प्रमाणे ज जाण्तुं. आ घनीलेने विषे छत्पन्न थयेतो वाळक अनुक्रमे राजा १, पितृ-धाती २, दृढ खांधना बळवाळो २, राक्षस ४, ब्रह्महत्यारो ए, राजा ६, नाशवंत ७, सुखी ए, चपळ ए, अने नाशवंत (अहपायुवाळो) आय हे अर्थात् मस्तक परनी पांच धनीलं जन्म थयो होय तो राजा थाय, मुखनी पांच धनीमां जन्म थयो होय तो पितृघाती थाय, ए रीते अनुक्रमे जाण्वुं.

मूळ पुरुषनी स्थापनाः

-• •	•	
मस्तके	પ	राजा
मुखे वे स्कंधे	Ų	पितृहंता
वे स्कंध	ប	खांधवाळो
वे वाहुए	U	राइस
व हाथ	ą	त्रह्मघाती
हृद्ये	្រ	राज्यधर
केट्रीए	3	अस्पायु
गुह्ये वे जानुए वे पगे	₹ 0	सुखी
वे जानुए	६	चपळ
वे पर्ग	६	अ ख्पायु

कोइ श्राचार्य श्रा प्रमाणे कहे हे.—
"ब्रह्महत्याकरः पाणौ यद्या मानुखघातकः ।
गुद्धजातो धनं हत्याद्वृद्धत्वे च सुखी जवेत् ॥ १ ॥
न जीवेद्यामजंघायां पांशो वा जायते नरः ।
दक्षिणस्यां तु जंघायां जातकः स्यान्महाधनी ॥ २ ॥
कृत्व्यक्षीवित वांमेर्डही दक्षिणे धनपुण्यवान् ॥"

"मूळ नक्त्रनी हाथनी घनीमां जत्पन्न थयो होय तो ब्रह्महत्या करनार थाय, अप्रवा मामानो घात करे, गुह्म स्थाननी धनीमां जन्म्यो होय तो धननो नाश करे अपने वृद्ध-पणामां सुखी थाय, वाम (माबी) जंघानी घनीमां जन्म्यो होय तो जीवे नहीं अपने जीवे तो पंथिक थाय, जमणी जंघानी घनीमां जन्म्यो होय तो महा धनवान् थाय, माबा पगनी घनीमां जन्म्यो होय तो महा कष्टे जीवे, अपने जमणा पगनी घनीमां जन्म्यो होय तो धनवान् तथा पुण्यवान् थाय."

केटलाएक मूळने वृद्यस्पे कहे हे, ते श्रा प्रमाणे.—

"पात् १ स्तंब १ ह्यद्वि ३ शाला ४ दल ५ कुसुम ६ फले ७ स्युः शिलायां एच घट्यो,

मूलडोर्नार्डि ४ सप्ता ७ ष्टक दशक १० नवे ए व्वं ५ ग ६ रुड़ ११ प्रमाणाः।

मूला १ र्थ १ ज्ञातृ ३ मातृः क्षपयित ४ पतित ५ प्रौढमंत्री ६ नृपश्च ७,

स्यादेतासु प्रसुतः श्रयित कुशतरं चायुरेतिहिलायाम् ए॥ १॥"

"मूळ वृक्ता मूळमां ४ घनी मूकवी, अनमां ७, ठालमां ७, शालामां १०, पत्रमां ७, पुष्पमां ५, फळमां ६, तथा शिला (टोच) छपर ११ घनी मूकवी. आ धनी छमां जन्मेलानुं फळ अनुक्रमे आ प्रमाणे—मूळनो नाश करे १, अर्थनो नाश करे १, जाइनो नाश करे ३, मातानो नाश करे ४, पोते नाश पामे ५, मोटो मंत्री आय ६, राजा आय ७, अने शिलामां नक्त्र होय तो अह्पायु आय ७." केटलाक आचार्यों कहे के के शिलामां नक्त्र होय तो मोटा आयुष्यवाळो थाय.

ᄑᆓ	तक्र⊐ी	स्थापना.
4100	प दाना	-स्थापनाः

~~		
मूळे	В	मूळ्पात
अमे	3	मूळ्पात अथहानि
ਗಡੇ	G	ञ्रातृनाश
शाखाए	₹ □	मातृनाश
पत्रे	Ų	मरण
पुष्पे	પ	मंत्री थाय
फुळे	६	राज्यप्राप्ति
शिखए	??	श्रहपायु

श्चन्य शास्त्रमां मूळ पुरुपथी विपरीत अश्खेषा पुरुप पण श्चा प्रमाणे कहारे हे.—
"अश्खेषाघटिकाषष्टिरेवं स्थाप्या नराकृतिः ।
आदौ पादघये पञ्च जान्वोः पञ्च गुदेऽष्ट च ॥ १ ॥
नाजावष्टौ हृदि घौ च पाण्योरष्टौ घयं जुजे ।
स्कन्धयोर्दशकं वक्रे षद् शीर्षे पिनति क्रमात् ॥ १ ॥
मृति १ र्ज्रमः १ सुखं २ न्याधी ४ राज्यं ५ हत्या ६ च दैत्यता प ।
स्कन्धिकः ए पितृहा ए नेता १० फलं क्षेयं यथाक्रमम् ॥ ३ ॥"

"श्रश्लेषा नक्त्रनी ६० धनी श्रा श्रमाणे नरनी श्राकृतिए स्थापवी—श्रथम ने पगमां ए धनी मूकवी, पठी श्रमुकमे ने जानुमां ए, गुदामां ए, नाजिमां ए, हृदयमां २, ने हाश्रमां ए, ने नालुमां २, ने स्कंध लपर १०, मुखमां ६ श्राने मस्तक पर ६. तेनुं फळ श्रमुक्त पगश्री श्रा प्रमाणे जाणवुं मरण १, ज्रमण २, सुख ३, न्याधि ४, राज्य ए, हत्या करनार ६, राक्सपणुं ७, खांधवाळो ए, पितानो घाती ए, राजा १०."

अश्लेषा पुरुषनी स्थापनाः

बे पग	4	मरख	📗 🗎 वे हाथ 📗	U	हत्या करनारो
बे जानु	પ	ज्रम ण	बे बाहु	इ	राक्स
गुदाए	ū	सुख_	वे स्कंधे	१ ७	खांधवाळो
नाजिए	5	<u> च्याधि</u>	मुखे	દ્	पितृघाती
हृदये	হ	राज्य	मस्तके	६	राजा

ए जरीते मूळ वृक्ष्यी विपरीत अश्लेषा वृक्ष पण अन्य शास्त्रमां कहेतुं जाणवुं. विशेष एके घनीनो कम मूळ वृक्ष्मी जेम ज लेवो.

ऋश्लेषा वृक्षनी स्थापनाः

शिखाए	B	श्रहपायु
फळे	2	राज्यप्राप्ति
पुष्पे	σ	मंत्री थाय
पन्ने	१०	मृत्यु
शाखामां	ુ છ	मातृनाश
डा खमां	પ	चातृनाश
थर्भ	ફ	अर्थहानि
मूळे	* *	मूळनाश

विवेकविद्यास विगेरे प्रंथोमां तो मूळ अने अश्लेषानां मुहूर्त्तीए करीने जन्मेद्धानुं फळ आ प्रमाणे कहेलुं हे.—

"श्राद्यः पष्टस्त्रयोविंशो वितीयो नवमोऽष्टमः । श्रष्टादशश्च मूलस्य मुहूर्त्ता जुःखदा जनौ ॥ १ ॥ त्रयोविंशपञ्चविंशो वाविंशोऽष्टत्रयोदशौ । एकोनतिंशत्रिंशो च सार्पे स्युरशुजाः कृणाः ॥ २ ॥"

"मूळ नहत्रना पहेला, उठा, त्रेवीशमा, वीजा, नवमा, आठमा अने अहारमा मुहू-र्त्तमां जन्म थाय तो ते छःखदायी हे. तथा अश्लेषाना त्रेवीशमा, पचीशमा, बावीशमा, आठमा, तेरमा, जंगणत्रीशमा अने त्रीशमा मुहूर्त्तमां जन्म थाय तो ते पण अशुज (छःखदायी) हे." आनुं कारण ए हे जे आ मुहूर्त्तोना स्वामी कूर हे, मादे ते अशुज हे. ते स्वामी आ प्रमाणे.—

"राक्तसो १ यातुधानश्च ६ सोमः ३ शकः ४ फणिश्वरः ए।

पितृ ६ मातृ ७ यमाः ० कालो ए वैश्वदेवो १० महेश्वरः ११॥१॥

साध्यदेवः ११ कुवेरश्च १३ शको १४ मेघो १ए दिवाकरः १६।

गंधवीं १७ यमदेवश्च १० ब्रह्मविष्णुमय १ए स्ततः॥ १॥

ईश्वरो १० विष्णु ११ रिन्डाणी ११ पवनो २३ मुनय १४ सत्था।

पएमुखो १५ चृंगिरीटी १६ च गौरी १७ मातृ १० सरस्वती १ए॥३॥

प्रजापति २० श्च मूलस्य त्रिंशन्मुहूर्त्तनायकाः।

विपरीताः पुनर्शेया अश्लेषाजातवालके॥ ४॥"

"मूळ नक्त्रनां त्रीश मुहूर्त्तोना नायको अनुक्रमे आ प्रमाणे हे.—

राह्म १, यातुधान (राह्म) १, सोम ३, शक्र ४, नागें ५ ५, पितृ ६, मातृ ७, यम ०, काळ ए, वैश्वदेव १०, महेश्वर ११, साध्यदेव ११, कुवेर १३, शक्र १४, मेघ १५, दिवाकर १६, गंधर्व १७, यमदेव १०, ब्रह्माविष्णु १ए, ईश्वर २०, विष्णु ११, ईश्वाणी ११, पवन १३, मुनिर्ज १४, पण्मुख (कार्त्तिकस्वामी) १५, जृंगिरीटी १६, गौरी १७, मातृ १०, सरस्वती १ए स्त्रने प्रजापित ३०. स्त्राधी विपरीत (एटले बेह्नेधी स्त्रनुक्रमे) स्त्रश्लेषानां मुहूर्जोना नायको जाणवा. तेमां जत्पन्न स्रयेखा बाळकनं पण ते प्रमाणे (नायक प्रमाणे) फळ जाणवं."

हवे मूळ नक्षत्रमां जन्मेला वाळक माटे शांतिनो विधि कहे हे.—
त्यजेल विक्तित समाष्टकं वा, वालं पिता मूलविकारशान्त्ये।
शतौषधीमूलमृदम्बुरत्तेः, स्नायाच्च हुत्वा सिश्युप्रसूकः॥ १०॥
श्चर्य—मूळना विकार (दोष)नी शांति करवा माटे पिताए ते वाळकनो त्याग करवो, एटखे के पोताना घरथी इर राखवोः श्चथवा स्नाठ वर्ष सुधी ते वाळकने जोवो नहीं. पठी शांतिनो होम करीने सो उपधीनां मूळ, सात प्रकारनी माटी, तीथोंनां जळ ध्रमे पंच रलधी वाळक तथा तेनी माता सहित पोते स्नान करतुं. उपधीउंनी साथे पंचगव्य, हाथीनो मद, बीज सहित पंचक्षाय अने सवौंपधी पण दोवी, एटके के सुवर्णमय मूळ नहत्रनुं राह्मरूप करावतुं. पठी सो जिष्णवाळा धमामां ते राह्म तथा सर्वे उपधी विगेरे नाखतुं अने तेनी विधिने जाणनार विदान पासे होम कराववापूर्वक स्नान करतुं. अश्खेषामां जन्मेद्धा वाळकनो पण आ ज विधि हो, परंतु सुवर्णना राह्मरने बदसे सुवर्णना सर्पनुं रूप बनावतुं. आ मूळ विधान तथा अश्खेषा विधान विस्तारथी गृहस्थ-धर्मसमुच्चय विगेरे अधोमां आप्युं हो. ते बहु दोष युक्त होवाथी अहीं तेनो विस्तार कर्यो नथी. बहु सावद्य आरंजना पापथी जय पामनार पुरुषे तो मूळ अथवा अश्लेप्पामां बाळकनो जन्म थाय त्यारे सर्व नहात्रोना जोगवनार नव ग्रहोए पण जेनां चरणकाळ सेवातां हो एवा श्रीमान् अरिहंतनी तथा विशेषे करीने मूळ नहत्रमां ज जत्पन्न थयेद्धा श्रीसुविधि स्वामीनी अष्टोत्तरशत प्रकारी स्नात्र पूजा शास्त्रोक्त विधि प्रमाणे महोत्सवपूर्वक जणाववी. एम करवाथी पण समग्र हुड छपड़वोनी शांति अयेद्धी सर्वत्र साहात् जोवामां आवे हो.

श्रहीं केटलाक कहे हे के—
"विष्कंत्रादिक्रयोगेषु कुलिके सत्रिपुष्करे ।
संक्रान्तौ छुर्दिने विष्टौ मूलाश्लेषाजवालके ॥ १ ॥
गणकेनैव कर्त्तव्यं पौष्टिकं मूलसार्पयोः ।"

"विष्कंजादिक कुयोगमां, कुलिकमां, त्रिपुष्करमां, संक्रांतिमां, खराव दिवसे, विष्टिमां, मूळमां स्राने स्रश्लेषामां वाळकनो जन्म थयो होय तो मूळ श्राने स्रश्लेषानुं पौष्टिक कर्म गणकनी (जोशीनी) पासे ज कराववुं."

जन्मादिकमां जपयोगी नक्तत्रोना कुट्यादिक जेदो कहे है. कुट्यजान्यश्विनी पुष्यो मधा मूलोत्तरात्रयम् । द्विदेवतं मृगश्चित्राकृत्तिकावासवानि च ॥ ११ ॥ जपकुष्टयानि जरणी ब्राह्मं पूर्वात्रयं करः । ऐन्डमादित्यमश्खेषा वायव्यं पौष्णवैष्णवे ॥ ११ ॥

श्चर्य—श्वनी, पुष्य, मधा, मूळ, जत्तराफाहगुनी, जत्तरापाढा, जत्तराजाषपद, विशाला, मृगशीर्ष, चित्रा, कृत्तिका श्वने धनिष्ठा ए वार नक्त्रो कुह्य कहेवाय हे (११) जरणी, रोहिणी, पूर्वाफाहगुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाजाष्यद, हस्त, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, श्वश्लोषा, स्वाति, रेवती श्रने श्रवण ए बार नक्त्रो जपकुह्य कहेवाय हे.

कुट्यादिक नक्षत्रोतुं फळ कहे हे.— पूर्वेषु जाता दातारः संग्रामे स्थायिनां जयः । श्रन्येषु त्वन्यसेवार्ता यायिनां च सदा जयः ॥ १३॥

अर्थ—पूर्व एटले कुह्य नक्त्रमां जन्म थयो होय तो ते दातार थाय हे, श्रने ए नक्त्रोमां जो संग्राम (युद्ध) थयुं होय तो स्थायिनो एटले पोताने स्थाने रहेला राजानो जय थाय हे, श्रर्थात् चनी श्रावेला राजानो पराजय थाय हे. तथा श्रन्य एटले जप-कुह्य नक्त्रमां जेनो जन्म थयो होय ते जीजानी (राजादिकनी) सेवा—नोकरी करनारा थाय हे, श्रने ते नक्त्रोमां जो युद्ध थयुं होय तो चनी श्रावनारनो जय थाय हे श्रर्थात् स्थानमां रहेलानो पराजय थाय हे.

हवे कुस्योपकुस्य नक्त्रों कहे हे.— कुल्योपकुस्यन्नान्यार्झाऽनिजिन्मैत्राणि वारुणम् । फलन्त्येतानि पूर्वोक्तद्वयसाधारणं फलम् ॥ १४ ॥

अर्थ—आर्जा, अजिजित, अनुराधा अने शततारका ए चार नहात्रो कुह्योपकुह्यक है. आ नहात्रो पूर्वे कहेला बन्नेनुं साधारण फळ आपे हे, एटले के ते नहात्रोमां जन्मेला दातार पण थाय हे, अने अन्यना सेवको पण थाय है; अने युद्ध थयुं होय तो संधि थाय है. कहुं है के—"कुह्योपकुह्यने सन्धिः" "कुह्योपकुह्य नहात्रमां युद्ध थाय तो संधि थाय."

हवे वारोना कुट्यादिक नेदो कहे हे.— गुर्वकीर्कीन्द्रवः कुट्या उपकुष्ट्यः कुजः सितः । तमश्राय बुधो मिश्रस्तत्र नक्तत्रवरफलम् ॥ १५॥

श्चर्य—गुरु, सूर्य, शिन श्चने चंद्र ए चार वारो कुट्य हे, मंगळ श्चने शुक्र ए वे छप-कुट्य हे, तथा राहु श्चने बुध मिश्र एटखे कुट्योपकुट्य हे. ते सर्वेनुं फळ नक्त्रो प्रमाखे जाण्डुं. श्वरीं राहु वार नथी, तोपण प्रहोनो प्रसंग होवाथी तेने लीधो हे.

केटलाएक आचार्यो तिथि, वार, समय अने राशिना योगे करीने कुट्य योग आ प्रमाणे कहे हे.—

"सूर्योदये कुजस्याहि नन्दा वृश्चिकमेपयोः १। कुलीरयुग्मकन्यानां जन्ना यामे बुधाहिन २॥१॥ चापसिंहघटानां च मध्याहे वाक्पतौ जया २। विश्वात्वपत्रयो रिक्ता त्रियामान्ते स्रुगोर्दिने ४॥ २॥ सूर्यास्ते शनिवारे तु पूर्णा स्थानकमीनयोः ए। कुखजास्तिययो वारे वेद्धायां राशिषु क्रमात्॥ ३॥" "मंगळवारने दिवसे सूर्योदय वखते वृश्चिक अथवा मेष राशि होय अने नंदा तिशि होय, बुधवारने दिवसे पहेला पहोरने अंते कर्क, मिश्रुन के कन्या राशि होय अने राशा तिथि होय, गुरुवारे दिवसे मध्याह समये धन, सिंह के कुंज राशि अने जया तिथि होय, शुक्रवारे दिवसे नध्याह समये धन, सिंह के कुंज राशि अने जया तिथि होय, शुक्रवारे दिवसे त्रण पहोरने अंते तुला के वृष राशि अने रिका तिथि होय, तथा शनिवारे सूर्यास समये मकर के मीन राशि अने पूर्णा तिथि होय, आ प्रमाणे अनुक्रमेवार, वेळा अने राशिने विषे तिथि होय तो ते तिथि कुंख्य कहेवाय हे, अने तेथी करीने ज ते तिथि ते ते वखते जत्तम हो

हवे रवि पुरुष कहे छे.--

मूर्का ३ त्यां ३ त १ जुजा १ करो १ र ५ जदरा १ घोजाग १ जानु १ कमे ६, व्वित्रिह्मियमह्मित्र अकुहक्तर्केषु जेष्वर्कजात् ।

त्रूपः र स्वाह्रशनो २ ंसलो ३ऽधिकवल ४ श्रीरो ५ धनी ६ शीलवान् ७, जारः ए स्वात्पथिकश्च ए जिक्क रण रपि चोत्पन्नः क्रमाह्यालकः ॥ १६॥

अर्थ—सूर्यना नक्त्रधी पहेलां त्रण नक्त्रो सूर्य पुरुषना मस्तक पर मूकवां, पढीनां ३ मुखमां, पढी खना छपर ३, छजा पर ३, हाथमां २, हृदय छपर ५, छदर पर १, अधोन्नागे (गुह्ये) १, जानुए ३ अने पगमां ६ मूकवां. ते ते नक्त्रमां छरपन्न थयेखा वाळकिने आ प्रमाणे अनुक्रमे फळ जाणवुं.—राजा १, मिष्ट जोजनवाळो २, खांधवाळो ३, अधिक बळवान् ४, चोर ५, धनवान् ६, शीळवान् ७, परस्त्रीरत ७, पश्चिक ए अने निक्कुक १०. वे बाहुए होय तो स्थानच्रष्ट थाय एम कोइ वेकाणे कह्यं हे.

रवि नरनी स्थापनाः

3	राजा
₹	मिष्टजोजी
হ	<u>खांधवाळो</u>
্হ	वळवान्
হ	चोर
પ	धनवान्
₹	सुशीख
₹	परस्त्री पर आसक्त
হ	पुरदेशगमन
Ę	जि द्याचारी

भाः १७

विशेष ए वे जे स्था परथी स्थायुष्यनुं झान पण श्राय वे.—
"शतं मूर्झि मुखे स्कन्धे चाशीतिर्जुजहस्तयोः।
सप्तसप्तिवर्षाणि हुझाञ्योरष्टपष्टिका।। १॥
गुह्ये पष्टिसाया जान्वोरष्ट पर् पादयोस्तया।
रिवचके क्रमेणैवमायुईयं विचक्तणैः॥ १॥"

"रिवना चक्रमां विदानोए आ प्रमाणे अनुक्रमे आयुष्य जाण दुं.— मस्तक पर नक्षत्र होय तो सो वर्षनुं आयुष्य आय, मुल अथवा स्कंध पर होय तो एंशी वर्ष, बादु अथवा हाथमां होय तो ५० वर्ष, हृदय अथवा नाजि पर होय तो ६० वर्ष, गुह्ये होय तो ६० वर्ष, जानु पर होय तो ए वर्ष अने पगमां होय तो ठ वर्षनुं आयुष्य जाण दुं."

इवे जातकर्मादिकने आश्रीने कहे हे .--

स्याजातकर्म चरलघुमृङ्धवर्द्धेष्वमीषु नामापि।

तचाविरुद्धमुजयोयोंनी र गण २ राशि ३ तारका ४ वर्गैः ५ ॥१९॥

श्चर्थ—चर, खघु, मृष्ड श्चने ध्रुव नक्षत्रोमां जातकर्म करबुं. नाम पण श्चा नक्षत्रोमां पामबुं श्चने ते नाम बन्नेना (दंपतीना) थोनि, गण, राशि, तारा श्चने वर्गे करीने श्चविरुद्ध पामबुं.

जातकमें करीने षष्टीजागरणादिक पण आ चरादिक नक्षत्रोमां ज करबुं. चरादिक नक्षत्रो पण शुज चंडवमे युक्त खेवां अथवा ते नक्षत्रो जदयसमयनां खेवां, अथवा ते नक्षत्रो संबंधी मुहूर्त्तमां कार्य करबुं. आ त्रण प्रकारमांथी पूर्व पूर्वने अजावे जत्तर जत्तर प्रकार खेवो एटखे के चंडवळ न होय तो जदयवळ खेवुं अने जदयवळ न होय तो मुहूर्त्त क्षेत्रुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्यं हे के—

"धिष्ण्यानां मौहूर्त्तिकमुद्यात्सितरिमयोगाच्च । श्रिधिकवर्षं यथोत्तरिमति"

"नक्त्रोनुं मुहूर्त्त बळवान् हे, ते करतां छदयबळ वधारे बळवान् हे श्रने ते करतां पण चंत्रबळ वधारे बळवान् हे एम छत्तरोत्तर वधारे बळवान् हे."

जो ते ज दिवसनुं नहत्र होय अने ते ज नहत्रना मुहूर्त्तमां कार्य कराय तो ते अत्यंत शुज हे. ते विषे शौनक कहे हे के—"नहत्रवत्हणानां वलमुक्तं दिगुणितं स्वनहते ।" "मुहूर्त्तोनुं बळ पण नहत्रना जेटलुं ज कहुं हे. तेमां पण पोताना नहत्रमां बमणुं कहुं हे." ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं.

ते वाळकतुं नाम पण दंपतीने अविरुद्ध करवुं. ते साथे गुरु शिष्य अने स्वामी सेवक विगेरेने पण अविरुद्ध समजवुं. हवे श्रठ्यावीश नक्त्रोनी योनि कहे हे.

जडूनां योन्योऽश्व १ द्विप १ पशु ३ जुजंगा ४ हि ५ शुनको ६-त्व ७ जा ७ मार्जारा ए खुद्धय १०, ११ वृष ११ मह १३ व्याघ १४ महिषाः १५। तथा व्याघे १६ णै १७ ण १० श्व १एकपि १० नकुलद्धन्द्व ११, ११ कपयो १३ इरि १४ वीजी १५ दन्तावलरिपु १६ रजः १७ कुञ्जर १० इति ॥ १०॥

अर्थ—अश्विनीथी आरंजीने नक्त्रोनी योनि एटले जत्पत्तिस्थान अनुक्रमे आ प्रमाणे के — अश्व १, हाथी २, पशु (वकरो) २, जुजंग (सर्प) ४, छहि (सर्प) ५, कूतरो ६, बिलामो ७, वकरी ०, बिलामो ए, पछी वे नक्त्रोनी जंदर १०, ११, बळद १२, पामो १२, वाघ १४, पामो १५, व्याघ १६, मृग १७, मृग १०, कूतरो १ए, वानर २०, पछी वे नक्त्रोनी नोळीयो २१, २२, वानर २३, सिंह २४, घोमो २५, सिंह २६, वकरो २९ अने हाथी २०. गुरु, शिष्य अने दंपती विगेरेना योगने माटे पूर्वाचार्योए आ योनिनी कहपना करी के, पण सत्य नथी. ए प्रमाणे रक्तमाला जाष्यमां कहेल के.

श्रेणं हरीजमहिबच्च पशुप्लवंगं, गोव्याघमश्वमहमोतुकमृषिकं च । लोकात्तथाऽन्यदिष दम्पतिजर्तृज्ञत्ययोगेषु वैरसिह वर्ज्यमुदाहरन्ति ॥१ए॥

हवे योनिवैर कहे हे.

अर्थ—कृतराने अने मृगने परस्पर वैर हे. ए ज रीते सिंह अने हाथी, सर्प अने नोळीयो, बकरो अने वानर, बळद अने वाध, धोमो अने पामो तथा विलामो अने लंदर, ए सर्वेने परस्पर वैर हे. आ सिवाय पण वाध अने मृग, कृतरो अने विलामो इत्यादि लोकपचलित वेरो पण जाणवां. स्त्री पुरुप अने स्वामी सेवक विगेरेना योगमां आ वैर वर्जवानुं कह्यं हे. लपलक्षणथी गुरु शिष्य विगेरेमां पण वैर वर्जवुं. अर्थात् एकनुं जन्मनद्दत्र अश्विनी होय तो कृतरानी योनि थइ, बीजाना जन्मनद्दत्रनी योनि मृग होय तो ते परस्पर वैर कहेवाय हे. व्यवहारपकाद्यमां विशेष आ प्रमाणे हे.—

"विहाय जन्मजं कार्थे नामजं न प्रमाखयेत्। जन्मजस्यापरिकाने नामजस्य प्रमाखता॥ १॥"

"कार्यमां जन्मना नक्त्रनो त्याग करीने नामना नक्त्रने प्रमाण करबुं नहीं, परंतु जन्मनक्त्रनी खबर न होय तो नामना नक्त्रने प्रमाण करबुं." तेमज

"घयोर्जन्मजयोर्मेलो घयोन्।मजयोस्तथा।

जन्मनामजयोर्नेखो न कर्तव्यः कदाचन ॥ २ ॥"

"बन्नेनां जन्मनक्त्रनो योग करवो, अथवा बन्नेनां नामनक्त्रनो योग करवो

परंतु एकतुं जन्मनक्त्र श्रने बीजातुं नामनक्षत्र ए वेनो योग कदापि करवो नहीं." श्रशीत् एकना जन्मनक्त्रनी खबर न होय तो बन्नेनां नामनक्त्रो ज खेवां. ए जप्रमाणे गण, राशि विगेरेमां पण जाणवुं.

हवे सत्यावीश नक्त्रोना गणो कहे वे— दिव्यो गणः किल पुनर्वसुपूष्यहस्त-स्वात्यश्विनीश्रवणपौष्णमृगानुराधाः । स्यान्मानुषस्तु त्ररणी कमलासनर्क-पूर्वोत्तरात्रितयशंकरदेवतानि ॥ २०॥ रक्तोगणः पितृत्तराक्तसवासवेन्द्र-चित्राद्विववरुणात्रिज्ञजंगन्नानि । प्रीतिः स्वयोरति नरामरयोस्तु मध्या वैरं पक्षादसुरयोर्मृतिरन्त्ययोस्तु ॥ ११॥

अर्थ—पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अश्विनी, अवण, रेवती, मृगशीर्ष अने आतुराधा, ए ए नक्त्रो देवगण हे. जरणी, रोहिणी, त्रण पूर्वा, त्रण उत्तरा अने आड़ी ए ए नक्त्रो मनुष्यगण हे. (१०) मघा, मूल, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, चित्रा, विशाला, शत-जिपक्, कृत्तिका अने अश्लेषा ए नव राक्त्सगण हे. आमां बन्नेनो एक ज वर्ग होय तो अल्वंत प्रीति रहे, एकनो देववर्ग अने बीजानो नरवर्ग होय तो मध्यम प्रीति रहे, राक्त अने देववर्ग होय तो मृत्यु आय. कहां हे के—

"स्वकुले परमा बीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः। देवराक्तसयोवैंरं मरणं मर्त्यरक्तसोः॥ १॥"

"पोताना वर्गमां आत्यंत प्रीति रहे, देव अने मनुष्यने मध्यम प्रीति रहे, देव अने राक्ष्सने वैर थाय, अने मनुष्य तथा राक्ष्सने मृत्यु थाय, अर्थात् ते वे वर्गमां होय तो मरण थाय." अनिजित् नक्षत्र एकज विद्याधरना गणमां ने एम केटलाक कहे ने.

विशेष ए वे जे—वर विगेरे मुख्य माणसनो राक्षसगण होय अने वहु विगेरे गौण माणसनो मनुष्यवर्ग होय तोपण ते बन्नेने शुज राशिकूट होय, तेना स्वामीनी मैत्री होय, योनिनी शुद्धि होय तथा नामीवेधनी शुद्धि होय तो ते योग शुज वे. ते विषे गर्ग कहे वे के—

"रक्षोगणो यदा पुंसः कुमारी नृगणा जवेत्। सज्जकूटं १ खगप्रीति २ योंनिशुद्धि ३ स्तदा शुजम् ॥ १॥" "ज्यारे पुरुषनो राक्सगण होय अने कुर्मारीनो मनुष्यगण होय त्यारे शुज राशि-कूट, महनी मैत्री अने योनिनी शुद्धि होय तो ते शुज हे."

> हवे राशिकूट तथा राशिडां परस्पर वैर श्वने मित्रपणुं कहे हे.— राशेरोजान्मृतिः षष्टे सर्वाः स्युः संपदोऽष्टमे । राशो द्विद्वादशे नैःस्ठयं खामिमैठ्ये पुनः श्रियः ॥ ११ ॥

अर्थ—विषम राशिथी उठे मरण थाय, आठमे सर्व संपत्ति थाय, दिदाँदश (बीजे बारमे) राशिमां निधनपणुं थाय, ध्रने स्वामीनी मैत्रीमां खक्की प्राप्त थाय हे.

विस्तरार्थ—ज्यां बेनी (स्त्री पुरुपनी अथवा गुरु शिष्य विगेरेनी) राशि परस्पर ठिडी श्राठमी होय तो ते बन्नेनुं पमष्टक ए नामनुं राशिकूट कहेवाय हे. ए प्रमाणे बीजुं बारमुं श्रने नवमुं पांचमुं विगेरे पण जाणवुं. मेष, मिथुन विगेरे विषम राशिथी हिडी राशि होय तो ते शत्रु पमष्टक कहेवाय हे, केमके ते राशिडोने परस्पर वैर हे. तेमां जेनी श्रा-टमी राशि होय तेनुं मरण थाय हे एम रत्तमाला जाष्यमां कहां हे, श्रने विषम राशिथी ज आठमी राशि होय तो ते प्रीति पमष्टक कहेवाय हे, केमके ते राशिडोना स्वामीडोने परस्पर मैत्री हे. तेथी करीने तेनुं आ प्रमाणे तात्पर्य हे.—

"मकरवृषमीनकन्यावृश्चिककर्काष्टमे रिपुत्वं स्यात् । अजिमेश्चनधन्विहरिघटतुलाष्टमे मित्रताऽवदयम् ॥ १ ॥"

"मकर, वृष, मीन, कन्या, वृश्चिक अने कर्कना अष्टकमां शत्रुपणुं याय, अने मेष, मिथुन, धन, सिंह, कुंज अने तुलाना अष्टकमां अवस्य मित्रता याय."

अहीं कोई शंका करे के—वैर अने मैत्री विगेरे वन्ने दंपत्यादिकना जन्मना खग्नमां विचारवा योग्य हे, केमके जन्मखग्न ज सर्वत्र वळवान् हे, तो अहीं जन्मराशिने आश्रीने केम वैर मैत्री कही ? आनो जवाव ए हे जे—

"जन्मलग्नमिदमङ्गमङ्गिनां, मेनिरे मन इतीन्छ्मंदिरम्। सौहृदं च मनसोर्न देहयोर्मेलकस्तदयमिन्छ्गेहयोः॥ १॥"

"जे जनमलग्न हे ते प्राणी हैं छंग-शरीर माने हुं हे, छने चंद्र हुं स्थान (राशि) प्राणी हैं मन माने हुं हे, तेथी मननी ज मित्राइ होय है, शरीरनी होती नथी. तेथी करीने छा चंद्रनी राशिनों मेलाप युक्त है."

शंका—ज्यारे एम हे त्यारे राशिने आश्रीने मैत्री विगेरेनो विचार जले हो, परंतु ए स्थूळ विचार हे. तेथी करीने जन्मनी राशिमां रहेला नवांशोने विषे ते मैत्र्यादिकनो

१ आ बीया बारमुं भाषामां कहेवाय छे.

विचार करवो योग्य है, केमके—"प्रजिरिह नवांशः" "ऋहीं नवांशो प्रजु—समर्थ है" एम प्रथम कही गया है.

जवाब—एम नथी, कारण के आ स्थळे पूर्वाचार्योए आ स्थूळ विचारने ज प्रमाण्हण मान्यों हे. जो एम न होय तो कर्क संक्रांतिमां मकरना नवांशो पण आवे हे, तो ते नवांशोमां रहेला सूर्यने केम जत्तरायणनो नथी कहेता ? तथा विधान करेला नक्षत्रनो दिवसना जानगां अजाव होय त्यारे पण तेना जदयमां अथवा तेनां मुहूर्त्तोमां जेम जातकर्म, कौरकर्म विगेरे थाय हे तेम पाणिग्रहण (विवाह) पण केम नथी करातुं ? तेथी अहीं स्थूळनुं ज प्रमाणपणुं हे. आथी करीने सूक्ष विचार अप्रमाण हे एम न जाण्डुं,कारण के कहां हे के-

"जिन्नजिन्नफलजाग्जुवि जूयानेकधिष्ण्यदिनजोऽपि जनोऽयम् । सूक्त्रतापि ननु तेन गरिष्ठा, किं तु मूलमनुरुध्य विधेया ॥ २ ॥"

"एक नक्षत्रमां, एक दिवसमां तथा एक ज खग्नमां पण जत्पन्न थयेखा श्रा जीवो पृथ्वी पर जिन्न जिन्न फळने जोगवनारा घणा ज हे, तेथी करीने सूक्कता पण मोटी (प्रमाण-जूत) हे, परंतु मूळ (पूर्वाचार्योना प्रमाण) ने अनुसरीने ते सूक्कतानो जपयोग करवो." खग्नमां नवांशो, घादशांशो, त्रिंशांशो, कळा, विकळा विगेरे जत्तरोत्तर सूक्क होवाथी जिन्न जिन्न फळनो संजव हे. तेथी करीने—

श्रात्यन्तसूक्मः स कवैकदेशो, येनाखिलानां जिन्तरा फलर्दिः। नास्मादृशां दृग्विषयः स तस्मान्मूलानुकूला व्यवहारसिद्धिः॥ ३॥

"ते कळानो एक विजाग अत्यंत सूक्ष ठे के जे विजागे करीने सर्वनी फळसंपत्ति जेदवाळी ठे-जिन्न जिन्न फळदायक ठे, पण ते कळानो विजाग आपणी दृष्टिना विषयमां आवतो नथी, तेथी करीने मूळने अनुकूळ एटले पूर्वाचार्यना प्रमाणने अनुकूळ व्यवहारनी सिद्धि करवी." तेथी करीने जन्मादिकना लग्नमां कळा, विकळा सुधी विचार कराय ठे. ते ज रीते पूर्वाचार्योप प्रमाण करेलुं ठे. इत्यलं ।

षमष्टकनी स्थापनाः

शत्रु पमष्टक	
६	Ū
वृ ष्	धन
कर्क	कुंज
कन्या	मेष
वृश्चिक	मिथ्रुन
मकर	सिंह
मीन	तुखा

प्रीति पमष्टक	
६	ם
मेष	वृश्चिक
मिथ्रुन मकर	
सिंह	मीन
तुखा	वृष्
धनु	कर्क
ক্তুস	कन्या

मूळ श्लोकमां जे विवादश एटले बीजुं बारमुं कहुं ते स्वजावथी ज दारिद्यकारक हो, तोपण ते दंपती विगेरेना राशिना स्वामीर्जनी जो परस्पर मैत्री होय अथवा जप- खरूणथी राशिना स्वामी एक ज होय, त्यारे विवादशक अत्यंत शुज जाणवुं. जो बे-मांथी एक स्वामी मध्यस्थ (जदासीन) होय अने बीजो मैत्रीवाळो होय तोपण विवाद-शक शुज ज जाणवुं. अवशिष्ट एटले के जो राशिजना स्वामीजने परस्पर वैर होय अथवा एक नुं मध्यस्थपणुं अने बीजानुं वैरपणुं होय, अथवा बन्नेनुं मध्यस्थपणुं होय तो ते विवादशक अशुज जाणवुं. ते विषे सारंग कहे हे के—

"प्रीतिरायुर्मिथो मैत्र्यां सुलं स्यात्समित्रयोः। घयोः समत्वे न स्नेहो न सुलं समवैरिखोः॥ १॥"

"राशिना बन्ने स्वामीने परस्पर मैत्री होय तो प्रीति तथा आयुष्य घणुं होय, एक मध्यस्थ अने एक मित्र होय तो सुख थाय, बन्ने मध्यस्थ होय तो प्रीति न होय, तथा एक सम अने एक वेरी होय तो सुख न होय."

विवादश (बीजुं बारमुं)नी स्थापना. (१) (१) (🗦) श्रेष्ठ दिदादशक शुज विदादशक. **बिदादशक** श्चगुत्र ą Ş १३ १२ Į १२ मेष मीन सिंह कन्या वृश्चिक तुखा मिथ्रन मकर सिंह कके मीन कस्या तुखा वृप वृश्चिक धनु (ย) कुंज मकर श्रग्रुजतर दिदादशक १२

श्रामांना पहेला यंत्रमां प्रश्नमनां पांच विवादशकमां ग्रहोने परस्पर मैत्री हो, श्रने हिंचामां बन्नेनो स्वामी एक ज हो. बीजा यंत्रमां एक राशिनो स्वामी मध्यस्थ हे श्रने बीजानों स्वामी मित्र हो, तेथी करीने श्रा बन्ने यंत्रों प्रीतिकारक हो. त्रीजा यंत्रमां चारेना स्वामी परस्पर मध्यस्थ हो. चोथा यंत्रमां एक मध्यस्थ हे श्रने बीजो वैरी हे श्रथवा "चंब श्रने बुधने परस्पर वैर हे" ए मत लड़ए तो बन्ने वैरी हो. तेथी करीने श्रा बन्ने यंत्रोनां पांचे बीया बारमां शत्रु हो. त्रिविकम पण कहे हे के—"सिंह राशि सिवाय बीजी सर्व विषम राशिशी बीजी राशि श्रावे एवां बीया बारमां श्रशुज हो, श्रने सम

राशिथी तथा सिंह राशिथी बीजी राशि छावे एवां बीया वारमां छावे ते शुज्ज है. केटखाएक कहे हे के—"नामी बिगेरे चारनी छानुकूछता होय तो परस्पर मध्यस्थपणा-बाळां बीया बारमां पण सारां हे." ते विषे सारंग कहे हे के—

> "नामी १ योनि २ र्गणा २ स्तारा ४ चतुष्कं शुजदं यदि । तदौदास्येऽपि नाथानां जकूटं शुजदं मतम् ॥ १ ॥"

"जो नानी, योनि, गण अने तारा, ए चार शुज होय तो राशिना स्वामी नं छदा-सीनपणुं (मध्यस्थपणुं) छतां पण राशिकूट शुजदायी माने छुं छे." नानी अने तारानुं स्वरूप आगळ कहेशे. "सिंहना बीया बारमा सिवाय बीजां सर्वे बीया बारमां अशुज छे" एम व्यवहारप्रकाशमां कहां छे.

इवे राशिनुं नव पंचम कहे हे.-

श्रेयो मैत्र्यात्परे त्वादुः कलिकृत्रवपश्चमम् । एकक्के च जिन्नांशे श्रेयः शेषेषु च द्वयोः ॥ १३ ॥

अर्थ—नव पंचम राशिना स्वामीर्जनी मैत्री होय तो शुज हे, केटलाक कहे हे के क्लेशकारक हे. एक राशिमां जिन्न अंशमां पण शुज हे, अने बाकीनां राशिकूटोमां बन्नेने शुज हे.

"नव पंचम स्वजावधी ज क्लेशनो हेतु हो, तेमां विवाह धयो होय तो संतितने हानि करनार हो" एम व्यवहारसारमां कहां हो. केटलाएक कहे हो के-वक्षेनी राशिजने परस्पर मैत्री होय ते नव पंचम शुज हो, ध्राने एकनी मैत्री तथा बीजानुं मध्यस्थपणुं होय तो ते मध्यम हो.

नव पंचमनी स्थापना.

शुज नव पंचम	
Q	પ
मेष	सिंह
वृष	कन्या
मिथुन	तुद्धा
सिंह	धनु
तुद्धा	कुंच
वृश्चिक	मीन
धनु	मेष
मकर	वृष

मध्यम	नव पंचम
Ų	Ų
कुंच	मि्थुन
मीन	कर्क
कर्क	वृश्चिक
कन्या	मकर

विशेष ए हे जे प्रीति (शुज) नवपंचमधी प्रीति बीया बारमुं श्रेष्ठ हे श्रने तेथी पण प्रीति षमष्टक सारुं हे. वळी नारचंड टिप्पणीमां कहां हे के—

"श्चासन्नस्तु वरो याह्यो नासन्ना कन्यका पुनः । मृतैकमातापितरं संयाह्यं नवपंचकम् ॥ १ ॥"

"आसन्न (नजीक)नो वर ग्रहण करवो, पण नजीकनी कन्या ग्रहण करवी नहीं, एटखे के जो कन्यानी राशिष्ठी गणतां वरनी राशि समीपे होय अने वरनी राशिष्ठी गणतां कन्यानी राशि इर होय तो नवपंचम विगेरे सर्व राशिकूट शुज हे, पण कन्यानी राशिष्ठी गणतां वरनी राशि इर होय तो ते शुज नथी। तोपण जो वर के कन्या वेमांथी एकनां माता पिता मरण पाम्यां होय तो नवपंचम शुज ज हे."

मूळ श्लोकमां "एक रुक्त" कहां हो, त्यां रुक्तनो श्रर्थ "राशि" एवो हो, तेथी जो बेजनी एक ज जन्मराशि होय तो नवांशना जेदथी ते शुज हो, श्रने बेजनुं जन्म-नक्षत्र एक होय तो ते शुज नथी. त्रिविकम कहे हे के—

"एकर्र्हा जायते यत्र विवाहे वरकन्ययोः।

मूखवेधस्तु स प्रोक्तो महाइष्टफलप्रदः ॥ १ ॥"

"जो विवाहमां वर कन्यानुं एक ज (जन्म) नदात्र होय तो ते मूळवेध कहेवाय हे, ते महा हुष्ट फळने आपनार हे." बहा पण कहे हे के—

"एकनक्षत्रजातानां परेषां प्रीतिरुत्तमा । दम्पत्योस्तु मृतिः पुत्रा च्रातरो वार्थनाशकाः ॥ १ ॥"

"एक नहत्रमां छत्पन्न स्रयेखा बीजार्जने छत्तम प्रीति रहे हे, परंतु स्त्री पुरुपनी तो मृति (मरण्) ज स्राय हे. स्रय्या तेना पुत्रो स्त्रने जाइर्ज धननो नाश करनार स्राय हे." तेमां पण एटखे एक नहत्रमां पण पादनो जेद होय एटखे जूदा जूदा पादमां जन्मेखा होय तो ते शुज ज हे, पण एक ज पादमां जन्म्या होय तो ते शुज नथी. कह्यं हे के—
"नहत्रमेकं यदि जिन्नराश्योरजिन्नराश्योरपि जिन्नमृहम्।

मीतिस्तदानीं निविमा नृनार्योश्चेत्कृत्तिकारोहिणिवन्न नामिः ॥ १ ॥"

"जो नक्षत्र एक होय अने राशि जिल्ल होय, अथवा राशि एक होय अने नक्षत्र जिल्ल होय तो ते स्त्री पुरुषने अत्यंत प्रीति रहे, परंतु कृत्तिका अने रोहिणी जेवी एक नामी (नामीवेध) न होवी जोइए एटखे के जेम कृत्तिका अने रोहिणीने नामीवेध के, तेवो नामीवेध न होवो जोइए "तथा—

''नाग्निर्दहत्यात्मतनुं यथा वा षष्टा स्वदृष्टेर्न हि दर्शनीयः। एकांशकत्वे समतेव तषत्र जर्तजार्याव्यवहारसिक्षिः॥ १॥"

''जेम ऋग्नि पोताना देहने बाळतो नथी, अने जेम ष्रष्टा पोतानी दृष्टिए जोवा खायक भा• १८ नथी (पोतानी दृष्टिए पोताने जोइ शकतो नथी), तेम एक ज श्रंशमां जन्म्या होय तो समानपणुं श्राय हे, माटे वर वहुना व्यवहारनी सिद्धि श्रञ् शकती नथी." एक पाद हतां पण शुज हे, एम केटलाक कहे हे—

> "पराशरः स्माह नवांशजेदादेकर्छराश्योरिप सौमनस्यम् । एकांशकत्वेऽपि वसिष्ठशिष्यो नैकन्नपिंने किल नामिवेधः ॥ ३ ॥"

"पराशर कहे ने के नवांशनों जेद होय तो एक नक्षत्र अने एक राशिमां पण प्रीति होष ने विशष्टनों शिष्य कहे ने के एक अंश होय तोपण एक शरीरमां अर्थात् एक नक्षत्रमां नामीवेध अवश्य न होय."

मूळ श्लोकमां "शेषेषु च घयोः" एवं हे. तेमां शेष एटले बाकीना एटले के सातमे सातमे, दशमे चोथे, त्रीजे अगीयारमे राशिकूट होय तो ते श्रेष्ठ हे, कारण के आ स्थानोमां राशिचने ज परस्पर मैत्री हे, तेथी तेना स्वामीनी मैत्री विचारवानी नथी. ते विषे गदाधर कहे हे के—

"राशिकूटे शुजे लब्धे ग्रहमैत्रीं न चिन्तयेत्। अलाजे राशिकूटस्य ग्रहमैत्रीं तु चिन्तयेत्॥ १॥"

"राशिकूट शुज प्राप्त खयुं होय तो प्रहनी मैत्री विचारवी नहीं, अने राशिकूट शुज मळशुं न होय तो प्रहनी मैत्री विचारवी."

तेमां पण एटले सप्तम सप्तम विगेरेमां एक ज स्वामीपणुं होय तो श्रत्यंत श्रेष्ठ जाणुनुं. सर्वे बाकीनां राशिकूटोनी स्थापना.

गुज तृतीयैकादश		
3	११	
मेष	कुंच	
मृष	मीन	
मिूधुन	मेष	
कर्क	ब ृष	
सिंह	मिथ्रुन	
कन्या	कर्क	
तुखा	सिंह	
वृश्चिक	कन्या	
धन	तुखा	
मकर	वृश्चिक	
कुंन	धन	
मीन	मकर	

सप्तम	सप्तम
_ 3	9
मेष	तुद्धाः
वृष ।	वृश्चिक
मिष्रुन	धन
कर्क	मकर
सिंह	कुंप
कन्या	मीन

दशम चतुर्थ श्रेष्ठतर	
१०	ध
वृष	कुंन
कर्क	मेष
वृश्चिक	सिंह
मकर	तुला
कन्या	मिथुन
मीन	धन

दशम चतुर्थ श्रेष्ठ	
₹□	ਬ
मेप	मकर
मिथ्रन	मीन
सिंह	वृष्
लु खा	कर्क
धनु	कन्या
कुंच	वृश्चिक

श्रहीं सप्तम सप्तममां तथा त्रण श्रगीयारमां स्वामीनी मैत्रीनी चिंता (विचार) कर-वानी नथी. दशम चतुर्थ (१०-४) मां तो पहेला चारमां मैत्री हे, श्रने हेझा बेमां एक ज स्वामी हे, तेथी ए हए राशिकूट श्रत्यंत श्रेष्ठ हे. बीजा दशम चतुर्थनां हए कूट स्वजावथी ज श्रेष्ठ हे.

तात्पर्य ए वे जे—प्रथम नक्तत्र योनि विगेरेनी शुद्धि वळवान् वे, तेनाथी राशिनुं वशपणुं बळवान् वे, तेनाथी पण्राशिना स्वामी जे यहो तेमनी मैत्री बळवान् वे, तेनाथी पण्राशिना स्वामी जे यहो तेमनी मैत्री बळवान् वे, तेनाथी पण्राशिजनी स्वाजाविक मैत्री बळवान् वे. ते विषे कह्यं वे के—

"स्वजावमैत्री १ सिलता स्वपत्यो २ विशित्व ३ मन्योन्यज्ञयोनिशुद्धिः ४। परः परः पूर्वगमे गवेष्यो हस्ते त्रिवर्गी युगपद्यतिश्चेत्॥ १॥"

"राशिडनी स्वाजाविक मैत्री, तेमना स्वामीडनी मैत्री, तेमनुं वशवर्त्तिपणुं तथा परस्पर नक्तत्र योनिनी शुद्धि, पूर्व पूर्वना आजावे पर परनी गवेषणा करवी, यथा स्वाजा- विक मैत्रीना आजावे तेमना स्वामीडनी मैत्री, तेना आजावे वशवर्त्तिपणुं इत्यादि; जो एक साथे स्वाजाविक मैत्री, तेमना स्वामीडनी मैत्री आदि होय तो धर्म, आर्थ आने काम त्रणे वर्ग तेना हाथमां जाणवा, परंतु तारामैत्री अने नामीवेध शुद्धि तो सर्वत्र जोवानी ज है. केटलाएक नवीन गाममां वसवा माटे आ प्रमाणे कहे हे.—

"जन्मराशिस्थितो ग्रामिस्त्रपष्टः सप्तमोऽपि वा । स्वकीयो ज्ञ्यनाशाय आपदा च पदे पदे ॥ १ ॥ चतुर्थोऽप्टमको ग्रामो ज्ञादशो यदि वा ज्ञवेत् । यत्रैवोत्पद्यते अर्थस्तत्रैवार्थो विद्यीयते ॥ २ ॥ पश्चमो नवमो ग्रामो ज्ञितीयो यदि वा ज्ञवेत् । दशमैकादशश्चैव ग्रुजदः स फलप्रदः ॥ ३ ॥"

"पोतानी जन्मराशिमां रहेख ग्राम तथा जन्मराशिथी त्रीजे, उठे के सातमे होय तो जन्यनो नाश थाय तथा मगले मगले आपित प्राप्त थायः जन्मराशिथी चोथे, आउमे के बारमे जो होय तो अर्थ ज्यां पेदा थाय त्यांज नाश पामे. नवमे, बीजे, दशमे के अगीयारमे शुजकारी फळनो आपनार डे.

इवे तारार कहेवी है. तेमां प्रथम तेनी साथे संबंध होवाथी नामीवेध कहे है.

चके त्रिनाडिके धिष्एयमेकनाडिगतं शुनम्। गुरुशिष्यवयस्यादेर्न वधूवरयोः पुनः॥ १४॥

श्चर्य-त्रण नामीवाळा चक्रमां एक नामीमां रहेखुं नक्षत्र होय ते गुरु शिष्यने तथा

मित्रादिकने आदि शब्दथी स्वामी जृत्यादिक सर्व इंदोने शुजकारी हे, परंतु वहु वरने शुज नथी, एटखे के जेर्डनां जन्मनक्त्रो अथवा नामनक्त्रो एक नामीमां रह्यां होय तो ते नामीवेध कहेवाय हे, अने जिन्न जिन्न नामीमां रह्यां होय तो नामीवेध नथी एम जाणुतं.

त्रिनामी चक्र स्थापना---



दंपतीना संबंधमां आ नामीवेध शुज नथी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कहां हे के-

"सुश्रसुहिसेवयसिस्साघरपुरदेस सुह एगनामी श्रा । कन्ना पुण परिणीश्रा हण्इ पइं ससुरं (च) सासुं च ॥ १ ॥"

"पुत्र, मित्र, सेवक, शिष्य, घर, नगर अने देश, ए सर्वे एक नामीमां एटले नामी-वेधमां होय तो श्रेष्ठ हे, परंतु एक नामीमां रहेली कन्या जो परणी होय तो ते पतिने, ससराने तथा सासुने हणे हे." विशेष ए हे जे—"पुत्र, मित्रादिकने नामीवेध होय तो विरुद्ध योनिवाळा नक्तत्रनो योग पण अशुद्ध नथी."

वर वहुने नामीवेध होय तो तेनुं फळ छा प्रमाणे कह्यं हे.—
"हन्नामिवेधतो जर्तुर्मध्यनामीव्यधे हयोः।
पृष्ठनामीव्यधे नार्या मृत्युः स्यान्नात्र संशयः॥ १॥
समासन्ने व्यधे शीघं इरवेधे चिरेण च।
वेधान्तरजमानेऽत्र वर्षे छष्टं प्रजायते॥ १॥"

"हृदयनी नाभीनो (पहेखा नक्षत्रनी नाभीनो) वेध होय तो पितनुं मरण थाय है, मध्य (बीजी) नाभीनो वेध होय तो वन्नेनुं मरण अने पृष्ठनी (त्रीजी) नाभीनो वेध होय तो स्त्रीनुं मरण याय हे. आ वात निःसंदेह है. तेमां पण पासेनो वेध होय तो शीव्रताषी अशुज थाय है, इर वेध होय तो चिरकाळे अने वचमां वेध होय तो नक्ष-त्रनी संख्या प्रमाणे (तेटखे) वर्षे अशुज थाय हे."

कदाच नक्त्रवेधनो त्याग न थर शके तो पादवेधनो श्रवश्य त्याग करवो. ते विषे नरपतिजयचर्यामां कह्यं वे के—

> "एतच्चकं समाखिख्य श्रश्विन्याद्यंहिपंक्तितः। वेधो बाबशनामीजिः कर्तव्यः पतिकन्ययोः॥ १ ॥

एवं निरन्तरो येपां दम्पतीनां ज्ञवेदेधः । तेषां मृत्युर्न संदेहः सान्तरस्त्वहपडुःखदः ॥ १ ॥ "

"श्रिश्वनीना पहेला पादनी पंक्तिथी आरंजीने बार नामी (रेला)ए करीने आ चक आळेखवुं, तेमां वर बहुनो वेध जोवो. तेमां जे दंपतीनो वेध आंतरारहित होय तो अवश्य तेमनुं मृत्यु धाय अने जो आंतरा सहित एटले इर होय तो अहप इःलदायी थाय." वळी ते ज यंथमां "दंपतीनी जेम देवता, मंत्र तथा गुरु शिष्यना योगमां पण नामी-

वेध अग्रुज हे," एम कहूं हे. ते आ प्रमाणे.-

"एकनामीस्थिता यत्र गुरुमैत्रश्च देवता। तत्र घेषं रुजं मृत्युं क्रमेण फलमादिशेत्॥ १॥"

"ज्यां गुरु, मंत्र श्रने देवता एक नामीमां रह्या होय त्यां श्रनुक्रमे देष, ब्याधि श्रने मृत्युरूप फळने कहेबुं."

प्रथम कहेखा सर्वे मैत्रीना प्रकारोमां छा नाक्तियेध बळवान् छे. ते विषे कह्युं छे के—
"सदा नाशयत्येकनाकीसमाजो जक्टादिकान् सर्वजेदान् प्रशस्तान्"।
"नक्षत्र, (राशि) कूट विगेरे सर्व शुज जेंदीनो एक नाक्तियेध ज नाश करे छे."
हवे तारामैत्री कहे छे.—

द्रयेषु गुरुशिष्यादेः प्रीतिहेतोः परस्परम् । त्रिपञ्चसप्तमीं तारां सर्वत्र परिवर्जयेत् ॥ १५ ॥

श्रर्थ—परस्पर प्रीतिना हेतुरूप गुरु शिष्यादिकनां इंदोने परस्पर त्रीजी, पांचमी श्रमे सातमी तारा सर्वत्र वर्जवी. एटखे के बेमांश्री एकनी पण तारा त्रीजी, पांचमी के सातमी होय तो तेमनी तेवी (सारी) प्रीति श्रती नश्री. (नव नव तारानी त्रण छंळी प्रथम कही हे ते श्रहीं जाणवी.)

तेमां पण विशेषे करीने गुरु, वर, राजादिक स्वामी विगेरेनी तारा त्रीजी, पांचमी के सातमी न ज होवी जोइए. कह्युं हे के—

"जीरुजादचल 9 पश्च ए तृतीया ३ शौकवैरविपदे वरताराः"। "स्त्रीना नक्षत्रथी वरनी तारा सातमी, पांचमी के त्रीजी होय तो ते स्रतुक्रमे शोक, वैर स्नने विपत्तिने माटे हे."

श्रा तारामैत्रीनुं प्रधानपणुं हे. ते विषे दैवज्ञवञ्चत्रमां कद्युं हे के—
"पुंस्रीराशीशयोमैत्र्यामेकेशत्वे च वश्यते ।
षमष्टमादिष्विप स्यात्तारामैत्र्या करप्रहः ॥ १ ॥"
"वर कन्यानी राशिना स्वामीजनी मैत्री हतां, श्रथवा तेमनुं एक स्वामीपणुं हतां,

तथा वस्यपणुं उतां, तेमज षमष्टक विगेरे इतां पण तारामैत्रीए करीने पाणिप्रहण करवामां आवे हे."

हवे वर्गमैत्री कहे हे.--

चत्वारोऽकचटा वर्गाः क्रमात्तपयशास्तथा । यत्नतो वर्जनीयाः स्युरितरेतरपञ्चमाः ॥ १६ ॥

अर्थ—अकारादिक स्वरोनो अ वर्ग, कादि पांचनो क वर्ग, च विगेरे पांचनो च वर्ग, प रीते ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, यरखवनो य वर्ग, तथा शपसहनो श वर्ग एम आठ वर्ग जाएवा. आ वर्गोमांथी परस्पर पांचमो पांचमो वर्ग यल्यी वर्जवा योग्य हे. एटखे के वर वहु विगेरेना नामना पहेला पहेला आहर जे जे वर्गमां आवता होय ते वर्ग एक बीजाथी पांचमो होय तो तेमना स्वामी हों जातिवैर होवाथी ते तजवा योग्य हे.

वर्गना स्त्रामी इर्षप्रकाशमां आ प्रमाणे कहेला हे.—
"वैनतेयों १ तु २ सिंह ३ श्वा ४८हि ५ मूषक ६ मृगो ७ रणाः छ ।
कमादकचटादीनां स्वामिनोऽमी स्मृता बुधैः ॥ १ ॥"

"छा, क, च विगेरे आहे वर्गोना स्वामी आतुक्रमे गरुम १, विलामो २, सिंह ३, कूतरो ४, सर्प ५, जंदर ६, मृग ९ अने घेटो ७, आ प्रमाणे पंक्तिरोए कहेला है. आमां दरेकथी पांचमा पांचमा साथे वैर है."

विशेष ए छे जे—योनि १, गण १, राशि ३, ताराशुद्धि ४ छाने नाडीवेध ७, छा पांच बावतो जन्मनक्त्रनी खबर होय तो ते जन्मनक्त्रे करीने ज जोवी. खबर न होय तो नामना नक्त्रवमे जोवी, पण वर्गमैत्री छाने खेणादेणी तो प्रसिद्ध नामना नक्त्रे करीने ज जोवी.

वर्ग कहेवानी साथे संबंध होवाथी परस्पर खेलादेली जालवानी रीत वतावे हे.— नामादिवर्गांकमथैकवर्गे, वर्लांकमेव क्रमतोऽक्रमाच ।

न्यस्योत्रयोरष्टह्नतावशिष्टेऽर्थिते विशोपाः प्रथमेन देयाः ॥ १७ ॥

श्चर्य—वेजनां नामना श्चादि श्रक्तरवाळा वर्गना श्चंक (संख्या) ने श्चयवा एक ज वर्गनां होय तो ते नामना पहेला श्चक्तरोनी संख्याने जोने जोने मूकवी पठी तेने श्चाठे प्रांगी जे श्ववशेष रहे तेनुं श्चर्ध करतुं. जे श्चावे तेटला वसा पहेला श्चंकना वर्गवाळो बीजा वर्गनो देवादार ठे एम जाएवुं. ए शीते क्रम श्चने जत्कमवने जेम घटे तेम लेएं श्चने देणुं यथायोग्य वाळवुं, श्चने बाकीनुं देणुं निश्चित करतुं, श्चने जो परस्पर लेणुं के देवुं न श्चाथे तो बेमांथी एकने जेने श्चावे तेनो निर्णय करवो

जदाहरण-कणाद गुरु अने वहमीक शिष्य है. तेमनां नामना वर्गनी संख्या अनु-

कमे मूकी त्यारे २९ सत्यावीश थया. तेने आठे जाग खेतां त्रण शेष रह्या, तेने अर्ध कर्या त्यारे दोढ रह्यो, माटे कणाद गुरु वहमीकनो दोढ वसानो देवादार थयो. इवे (कणाद वहमीक पासे केटखुं मागे ते जाणवा माटे) ते ज आंकने उत्कमे मूकतां ७२ बोंतर थया, तेने आठे जाग खेतां कांइ पण शेष रह्यं नहीं, तेथी वहमीक गुरुनो कांइ पण देवादार न थयो, परंतु गुरु ज शिष्यनो देवादार थयो. आ योगनिधान प्रंथमां कहें छुं उदाहरण कहुं ठे. इवे बीजुं उदाहरण आपीए ठीए.—आदिनाथ अने श्रीदत्तना वर्गना खंक मूकवाथी १० अडार थया. तेने आठे जाग खेतां वे वध्या, तेनुं अर्ध करतां एक आव्यो. तेथी एक वसो आदिनाथ श्रीदत्तना देवादार थया. इवे ते ज अंको उत्कमे स्थापवाथी ७१ थया. आठे जाग्या त्यारे एक अवशेष रह्यो. तेने अर्ध करवाथी अर्ध आव्यो, तेथी श्रीदत्त आदिनाथनो अर्धो वसो देवादार थयो. परस्पर खेणदेण वाळवाथी बाकीनो अर्धो वसो आदिनाथ श्रीदत्तना देवादार थया. ए निर्णय थयो. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. "देवा खेवामां सहेखुं पने माटे खेणादेणी थोनी होय ते सारी," एम नारचंद टिप्पण्मां कहुं ठे.

अहीं गर्गाचार्ये कहेलो संग्रह श्लोक आ प्रमाणे हे.—

"राशि १ ग्रहमेत्री २ गण २, योनी ४ तारे ए कनाश्रता ६ वरयम् ९।

स्त्रीप्टर ए नामियुति ए वर्ग १० खच्य ११ वर्ण १२ युजयो १३ घयेषूद्धाः ॥१॥"

"गुरु शिष्य, वर वहु विगेरे घंघोमां राशि १, ग्रहमेत्री २, गण ३, योनि ४, तारा ए, एक स्वामीपणुं ६, वर्यपणुं ७, स्त्रीप्टर ए, नामीवेध ए, वर्ग १०, खेणादेणी ११, वर्ण १२ अने युजि १३, आटखी १३ बाबतो जोवी. जावार्श्व आ प्रमाणे जाणवो.—

केचनी राशिजेनी स्वाजाविक मेत्री त्रण अगीयार, दश चार अने सप्त सप्तममां (राशि-क्टमां) जोवी. ग्रहमेत्री, प्रीति षमष्टक, प्रीति विघादशम अने प्रीति नवपंचममां जोवी. तथा गण, योनि, तारा, एक स्वामीपणुं, नामीवेध, वर्ग अने खेणादेणी, ए सर्वे कही दीधा हे माटे स्फुट हे वश्यपणुं आगळ कहेशे. स्त्रीप्टर एटखे वहुनी राशि वरनी राशिषी प्टर होय तो सारी अर्थात् वहुनी राशिषी वरनी राशि पासे होय तो सारी-वर्ण एटखे मीनथी आरंजीने चार चार राशिना त्रण विज्ञाग करवा. तेमां दरेक विज्ञागमां अनुक्रमे बाह्मण, क्त्रिय, वैश्य अने शुष्ट वर्ण जाणवा. एटखे के मीन बाह्मण, मेष क्त्रिय, वृष वैश्य अने मिथुन शुष्ट ए रीते कर्क ब्राह्मण विगेरे. आ वर्णविज्ञाग सारा-वळीमां कह्यो हे. तेनं फळ आ प्रमाणे कह्यं हे.—

"यत्र वर्णाधिका नारी तत्र जर्त्ता न जीवति । यदि जीवति जर्त्ता स्थात्तदा पुत्रो न जीवति ॥ १ ॥" "जे इंडमां नारी उंचा वर्णवाळी होय, ते इंडमां पित जीवे नहीं. जो कदाच पित जीवे तो पुत्र न ज जीवे," एम महादेव कहे छे."

युजि पण पूर्वे "पूर्वार्क्ष योगीमां परणेखी स्त्रीने तेनो जर्त्ता आत्यंत वहज थाय हे." ए विगेरे कहेलुं हे."

विशेष ए हे जे जिनबिंब करावनार धनिकने छानुकूछ प्रतिमा स्थापवामां तथा शिष्यनुं नाम पामवामां मुनिर्छए नक्ष्त्रनी योनि विगेरेनो विशेष छपयोग करवो तेमां शिष्यना नाममां नामीवेध श्रेष्ठ हे. ते जिनेश्वरना नाममां तजवा योग्य ज हे, छने तारानो विरोध प्राये करीने जिनबिंबना छाधिकारमां विचारवानो नथी. कहां हे के—

"योनि १ गए २ राशिजेदा २ लज्यं ४ वर्गश्च ५ नामिवेधश्च ६। नृतनिवंबविधाने षड्विधमेतिदिलोक्यं हैं:॥ १॥"

"योनि १, गण १, राशिजेद, २, लेणादेणी ४, वर्ग ५ अने नामीवेध ६, आ उ प्रकारनुं बळ पंमितोए नवीन जिनबिंब कराववामां जोवुं."

तेमां जिनेश्वरना जन्मनक्त्रनी जेम जे धनिकना जन्मनक्तत्रनी खबर होय तेना जन्मनकत्र साथे योनि, गण, राशि श्रने नामीवेध, श्रा चार वाबत जोवी, पण वर्ग श्रने क्षेणादेणी ए वे बाबत जोवी नहीं, केमके वर्गनुं परस्पर पांचमापणुं तथा परस्पर खेणादेणी ए बेज बाबत जिनेश्वरनी ज जेम ते धनिकने पण प्रसिद्ध नामवेम ज जीवाय हे. आ रीत सर्वत्र खेवी, परंतु जन्मनक्त्रनी खबर न होय तो तेनी योनि विगेरे सर्व प्रसिद्ध एवा नामना ज नक्षत्रवमे जोवुं. तेमां प्रथम तो जिनेश्वर तथा धनिकनुं योनि, गण श्चने वर्ग संबंधी परस्पर वैर अवश्य तजवुं. अथवा वैर इतां पण धनिकनी योनि विगेरे जो देवनी योनि विगेरेची बळवान् होय तो ब्रहण करवामां हरकत नची. एटखे के श्रहप वळवानवमे वधारे बळवाननो पराजव थइ शकतो नथी. आ अजिपाये करीने धनिकनी योनि बिलामो (बळवान्) होय अने देवनी योनि छंदर (निर्वळ) होय, एटलाधी कांइ दोष नथी, अने जातिवैर न होय तो धनिकनां योनि अने वर्ग अहप बळवाळां होय तो-पष कांइ विशेष दोष नथी, कारण के शास्त्रमां योनि ष्यने वर्गनां जातिवैरने ज वज्यां हे. खोकमां पण ते ज प्रमाणे आदरवामां आवे हे. तथा जेमां देवनी राशिथी धनिकनी राशि समीपे दोय, अने धनिकनी राशिश्री देवनी राशि घर होय एवं प्रीति पमष्टक विगेरे प्रहण करवुं. ते सिवाय बीजुं एटखे श्रपीतिवाळुं प्रहण न करवुं. तथा तेवा प्रका-रनं बीजुं को इशुष्य न मळे तो ते पण एटखे अप्रीतिवाळुं पण प्रहण करबुं. देव राक्स-रूपी गणवैर पण ए ज रीते जाणवुं, केमके खोकमां पण वर कन्यादिकना संबंधमां बीजी शुक्रिने अजावे देव राक्सरूप गणवैर पण आदर करातुं जोवामां आवे हे. शिष्यनां

नाम पानवामां तो गुरु शिष्यनो परस्पर ताराविरोध तथा शश्च पमप्टक विगेरे सर्व (राशिकूटना) अशुजनो त्याग करवो. योनिनो विरोध पण तजवो, परंतु नामीवेध होय तो आ योनिविरोध अशुज नथी. ते विषे दर्षप्रकाशमां कहां हे के—

"डबारस नवपंचम जकात्रग तिपणसत्तमी तारा। अनुत्रं गुरुसीसाणं नामकरणे विविक्षित्रा॥ १॥ गुरुसीसाण करिक्षा नामं न विरुद्धजोणिए रिस्के। जइ हुक्ष न तं रिस्कं आरूढं एगनामीए॥ १॥"

"नाम करवामां गुरु शिष्यनुं परस्पर बीया बारमुं, नवंपचम, षमष्टक तथा त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा, आटखां वानां वर्जवां. गुरु शिष्यना परस्पर विरुद्ध योनि-वाळा नक्षत्रमां नाम करबुं नहीं, परंतु जो ते नक्षत्र एक नामी पर आरूढ अयुं न होय तो—नामीवेधमां न होय तो अर्थात् नामीवेधमां ते नक्षत्र होय तो विरुद्ध योनिवाळा नक्षत्रनो दोष नथी."

गण अने वर्गनो विरोध तो तजवा योग्य ज है. लेणादेणी पण परस्पर जोवा योग्य हे. परस्परनी राशिमैत्री विगेरेनो अजाव होय तो राशिनुं वश्यपणुं प्रहण करवुं, केमके वश्यपणुं होवाथी शत्रु पमष्टकादिकनो पण विशेष दोष संजवतो नथी. पुत्र विगेरेना नामने विषे पण प्राये सर्व बाबत शिष्यना नाम प्रमाणे ज जाणवी. पूर्णज्ञ पण कहे हे के-

> "जीवेन्द्रकेंषु बिखु त्रिषु गोचरशुद्धितः। नामप्रथमवर्णस्य नृषां नाम विधीयते॥ १॥"

"पहेला अक्तरनी गोचरशुक्तिथी गुरु, चंज अने सूर्य ए त्रण बळवान् होय त्यारे माण्सनुं नाम करवामां आवे हे. जावार्थ ए हे जे—नाम पामनार आचार्यदिकने जेटला वर्णो (अक्तरो) मैत्रीने जजनारा हे, ते वर्णोमांथी जे वर्णना गुरु, चंज अने सूर्य गोचर-शुक्तिवमे बळवान् होय, ते वर्णने प्रथम (नामनी आदिमां) राखीने इष्ट (शुज) दिवसे शिष्यादिकनुं नाम पामनुं."

हवे कर्णवेधनुं मुहूर्त्त कहे हे.

कर्णवेधोऽह्वि सोम्यस्य मार्गे मैत्र्ये श्रुतिद्वये । इस्तचित्रोत्तरा ३ पोष्णाश्विनादिलद्वये शुनः ॥ १०॥

श्चरी—बुधवारे दिवसमां मृगशीर्ष, श्चनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, इस्त, चित्रा, त्रणे इत्तरा, रेवती, श्रिश्वनी, पुनर्वसु श्चने पुष्य नद्दत्रमां कर्णवेध करवो शुन्न हे. गुरुवारे पण करवानुं व्यवहारसारमां कह्युं हे.

भा॰ ३४

हवे बाळकने प्रथम चलाववानुं तथा प्रथम जोजननुं मुहूर्त्त कहे हे.— श्राचाटनं प्राथमकहिपकस्य, मृङ्धुविक्तप्रचरेषु जेषु । पूर्वाशनं मासि शिशोश्च षष्ठे, जं वारुणं स्वातिमितश्च मुक्त्वा ॥१ए॥

श्रर्थ—वाळकने तथा नवा दीहित साधुने मृड, ध्रुव, हिप अने चर नक्त्रोमां प्रथम हिंग्न तथा गोचरीनी चर्या शुन्न हो. अहीं वार कहा नथी तोपण मंगळ अने शिन सर्व कार्यमां त्याग करवा. बाळकने पहेंद्धं अशन (खवराववुं ते—अबोटण) हु महीने कराववुं, अने पूर्वनां मृड विगरे नक्त्रोमांथी शततारका अने स्वाति विनानां बीजां सर्व नक्त्रो खेवां. "पुत्रीने पांचमे मासे पहेंद्धं अशन कराववुं." एम जोज कहे हो. "पुत्रीने माटे मासनो नियम नथी" एम हिर कहे हो. तिथिमां रिक्ता तिथिनो सर्व कार्यमां त्याग करवो. विशेष ए हो के—

"शशिशुके च मन्दाग्निः शनिजीमे बखक्यः। बुधार्कगुरुवारेषु प्राशनं तु हितावहम्॥१॥"

"चंद्र अने शुक्रवारे अन्न प्राशन कराववाथी अग्नि मंद थाय हे, शनि अने मंगळ-वारे बळनो इत्य थाय हे, तेथी बुध, सूर्य अने गुरुवारे अन्न प्राशन कराववुं शुज्र हे."

हवे नवां पात्रो वापरवानुं मुहूर्त्त कहे छे.—

पात्रजोगोऽश्विनीचित्रानुराधारेवतीमृगे । हस्ते पुष्ये च गुर्विन्डवारयोश्च प्रशस्यते ॥ ३० ॥

अर्थ-अश्विनी, चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशीर्ष, इस्त अने पुष्य नक्त्रमां तथा गुरु अने चंद्रना वारे नवां पात्रो वापरवां शुप्त हे.

क्षौरनुं मुहूर्त्त कहे हे.--

कौरं ग्रुजस्याहिन तारकाबसे, तिथौ च रिक्ताप्टिमषष्ट्यमोज्जिते। चित्राचरैन्डाश्विनपुष्यरेवतीहस्तैन्दवैस्तुष्टयपतौ क्षणेऽथवा॥ ३१॥

अर्थ—शुज वारने दिवसे तारानुं वळ होय त्यारे रिका तिथि, आठम, उठ अने अमावास्या सिवायनी बीजी कोइ तिथिए चर नक्षत्रो, चित्रा, ज्येष्ठा, अश्विनी,पुष्य, रेवती, हस्त तथा मृगशीर्ष नक्षत्रमां अथवा तो आ नक्षत्रोना पित जेमां होय तेवा मुहूर्समां वाळकनुं प्रथम मुंकन अथवा नवीन साधुनो प्रथम लोच करवो. वाकीनां—पठीनां मुंकनो तो वार तथा मात्र नक्षत्रनी शुद्धिए करीने ज याय हे. मुंकनमां शुज वार एटले अक्रूर वार लेवो. ते विषे व्यवहारसारमां आ प्रमाणे लक्ष्युं हे.—

"कौरे मार्स इनोत्यकों जोमोऽष्टो सप्त सूर्यजः। पद्र प्रीणातीन्हरष्टौ क्रो गुरुनेव जुगुर्दश॥ १॥"

"रिववारे क्षीर कराववाथी एक मास सुधी इःख याय हे, मंगळे आठ मास अने शनिवारे मुंकन कराववाथी सात मास इःख याय हे. सोमवारे मुंकन कराववाथी हा मास प्रसन्नता रहे हे, बुधवारे आठ मास, गुरुवारे नव मास अने शुक्रवारे दश मास प्रसन्नता रहे हे."

हौरमां तारावळ अवस्य जोवं जोस्ए, केमके "तारासुद्धं खडरं" "ताराए करीने शुद्ध दिवसे होर कराववं" एम हर्षप्रकाशमां पण कहां हो. चंद्रवळ पण अवस्य खेवं एम व्यवहारप्रकाशमां कहां हो. जो कहें खां नहत्रों न मळतां आवे, अने होर अवस्य करवं होय तो कहें खां नहत्रों नो स्वामी होय, ते ज जे हणनो स्वामी होय ते हणे हीर कराववं. हण एटखे मुहूर्त्त नामनो रात्रि दिवसनो पंदरमो जाग (बेबमी). ते हन्णोना स्वामी आ प्रमाणे हो.—

"शिव १ जुजग २ मित्र ३ पितृ ४ वसु ५ जल ६ विश्व ७ विरंचि ७ पंकजप्रज्ञवाः ए। इन्डा १० म्नीन्ड ११ निशाचर १२ वरुणा १३ वीम १४ योनय १५ श्राह्मि ॥ १ ॥"

"दिवसना १५ इत्योना अधिपतिष्ठं अनुक्रमे आ प्रमाये हे.—शिव १, जुजग २, मित्र ३, पितृ ४, वसु ५, जल ६, विश्व ७, विरंचि ७, पंकजप्रत्नव (ब्रह्मा) ए, इंड १०, अग्नीन्द ११, निशाचर १२, वरुण १३, अर्यमा १४ अने योनि १५." "रुद्धा १ जा २ हिर्बुधाः ३ पूषा ४ दस्रा ५ न्तका ६ ग्नि ७ धातारः ७।

इन्द ए दिति १० गुरु ११ हरि १२ रवि १३ त्वष्ट्र १४ नदाख्याः १५ हणाधिपा रात्री २"

"रात्रिए क्षोना अधिपो अनुक्रमे आ प्रमाणे हे.—रुष्ठ १, अज २, छिर्द्धिघ ३, पूरा ४, दस्र ५, अन्तक ६, अग्नि ७, धाता ७, इंड ए, अदिति १०, गुरु ११, हिर १२, रवि १३, त्वष्टा १४ अने अनल १५."

क्रणोनां नामो आ प्रमाणे हे.--

"आर्जा १ श्लेषा २ नुराधा ३ च मघा ४ चैव घनिष्ठिका ए।
पूर्वाषाढो ६ त्तराषाढे ७ श्राजिजि ० जोहिए। ए तथा ॥ ३ ॥
ज्येष्ठा १० विशालिका ११ मूलं १२ नक्त्रं शततारकम् १३।
जत्तर १४ पूर्वे १५ फट्युन्यो क्षणस्तिथिसमा दिने ॥ ४ ॥"

"अनुक्रमे दरेक तिथिने दिवसे पंदर क्षणोनां नामो आ प्रमाणे हे.—आर्ज १, अश्लेषा २, अनुराधा ३, मघा ४, धनिष्ठा ५, पूर्वाषाढा ६, जत्तराषाढा ७, अनिजित् ए, रोहिणी ए, ज्येष्ठा १०, विशाखा ११, मूळ १२, शततारका १३, जत्तराफाहगुनी १४ अने पूर्वाफाहगुनी १४.

"दिक्तिणदिसि मुत्तु गमं दिस्क पङ्घा गमागमाङ्कयं । जं तं सबं सुद्दयं श्रजिजिमुदुत्तंमि श्रष्ठमए॥ ॥ ॥"

"आ पंदरे मुहूर्त्तों (ऋषो)मां दिक्षण दिशाना गमन (प्रयाण)ने मूकीने बाकीनां दीहा, प्रतिष्ठा अने गमन आगमन विगरे सर्व कार्य आठमा अन्निजित् मुहूर्त्तमां शुन्न-कारी है." कहां है के—

"जप्पायविष्ठि वञ्चायदृष्ठतिहि पावगह विहिऋदोसे । मञ्जूष्हगर्ज सूरो सबे ववाणीय सुरककरो ॥ ६ ॥"

"जत्पात, विष्टि, व्यतिपात, दग्ध तिथि तथा पाप यहोथी थयेल सर्वे दोषोने इर करीने मध्याह्नकाळनो सूर्य सुलकारक हे." आ प्रमाणे हर्षप्रकाशमां हे.

पूर्णजड पण कहे ने के-

''ग्रसते ग्रहचक्रमसौ रविरुद्ये यावदेव यामयुगम् । जदमति वमनकाखे वान्तं तिद्वस्तीजवति ॥ १ ॥"

"आ रिव (सूर्य) जदयसमये वे प्रहर सुधी ग्रहोना समूहने गळे हे अने पही वमन-काळे तेमने वमे हे, अने वमेलुं एवं ते ग्रहचक विह्वळ शाय हे. अर्थात् मध्याह्न-समये विह्वळ शाय हे."

> "विह्वखतामुपगतवति तस्मिन् विजयाह्वयो जवति योगः। यस्मिन् विहितं कार्यं न चलति कथमपि युगान्तेऽपि॥ १॥"

"ज्यारे ते महत्तक विह्वळताने पामे हे त्यारे विजय नामनो योग धाय हे. तेमां करेह्नं कार्य युगना श्रंतमां पण कोइ पण प्रकारे चळतुं नथी."

लझ पण कहे ने के-

"रवौ गगनमध्यस्थे मुहूर्त्तेऽन्निजिदाह्वये । विनत्ति सकखान् दोषाँश्वकमादाय माधवः ॥ १ ॥"

"रिव गगनना मध्य जागमां रह्यो होय त्यारे श्रिजितित् नामनुं मुहूर्त्त कहेवाय हे, ते वखते माधव (कृष्ण) चक्र खड़ने सर्व दोषोने हणे हे."

श्रा विजय मुहूर्त्त माटे केटलाएक श्रा प्रमाणे कहे हे.— "डपहरघिनश्राकणे डपहरघिनएगश्रहिश्र मञ्जलहे। विजयं नाम मुहुत्तं पसाहगं सबकजाणं॥ १॥"

"मध्याह्नसमये वे प्रहरमां एक घनी उंडी होय त्यारे तथा पड़ीना वे प्रहरनी एक घनी अधिक (अर्थात् मध्याह्न पड़ीना वे प्रहरमांनी पहेखी एक घनी अने पड़ीनी एक घनी) कुख आ वे घनीनुं विजय नामे मुहूर्त्त कहेवाय है, ते सर्व कार्यने साधे हे." सायंकाळनी संध्याना समये पण विजय योग थाय हे. ते विषे ह्र्पप्रकाशमां श्रा प्रमाणे कहां हे.—

"ईसिसंब्रामइकंतो किंचि चप्रिन्नतारचं। विजर्च नाम जोगोऽयं सवकज्जपसाहर्च॥ १॥"

"कांड्क संध्याने छद्धंघन करी गयेखो तथा कांड्क तारार्ड जेमां छत्पन्न श्रया है एवो जे समय ते विजय नामनो योग कहेवाय है. ते सर्व कार्यने साधे हे."

क्षक्षे प्रातःकाळनी संध्यामां पण यात्रा करवानुं इन्न हुं हे कहुं हे के —
"श्चावश्यके तथा याने सौम्येऽस्ते निधनेऽपि वा ।
वजेदकोंदये वाऽपि मध्याह्ने वाऽविशंकितः ॥ १ ॥"

"तथा अवश्य यात्रा (प्रयाण) करवानी होय तो सूर्योदयसमये अथवा मध्याह्न-समये तात्काळिक खन्नकुंकळीमां सातमे अथवा आठमे स्थाने सौम्य प्रह रह्यो होय तो-पण निःशंकपणे प्रयाण करवं."

प्रातःकाळनी संध्यानी "उषा" श्रने "त्रितार" एवी पण संज्ञा है. ते विषे पूर्णज्ञक् कहे है के—

"जपाजिधानं वरयोगमेवं, त्रितारमादुर्भुनिवृन्दवन्द्याः।"

"मुनिर्चना समूहने पण वांदवा योग्य एवा महात्मार्ड छषा नामना श्रेष्ठ योगने त्रितार नामे पण कहे हे." वळी—"छषां प्रशंसयेफर्गः" "गर्ग कहे हे के छषा योग प्रशस्त हे."

श्रा सर्वे वचनोतुं तात्पर्थ ए थयुं के त्रणे संध्याचे प्रशस्त हे. तथा-

"रात्रावार्का १ तथैवाष्टी पूर्वज्ञषपदादयः ए।

आदित्य १० पुष्य ११ श्रुतयो १२ हस्ताद्याश्च त्रयः १५ कमात् ॥ १ ॥"

"रात्रिए अनुक्रमे पंदर क्षों (मुहूर्सों) आ प्रमाखे जाणवा—आर्जा १, पूर्वाजाड-पदधी आठ एटखे पूर्वाजाडपद २, जत्तराजाडपद ३, रेवती ४, अश्विनी ४, जराणी ६, कृत्तिका ७, रोहिणी ७, अने मृगशीर्ष ए, आदित्य (पुनर्वसु) १०, पुष्य ११, अयण १२, इस्तादिक त्रण एटखे इस्त १३, चित्रा १४ अने स्वाति १५."

> "यस्मिन् धिष्ण्ये यच कर्मोपदिष्टं, तहैवकैस्तन्युहूर्तेऽपि कार्यम् । दिक्शूखाद्यं चिन्तनीयं समस्तं, तद्दंमः पारिषश्च ऋणेषु ॥ २ ॥"

"जे नक्त्रमां जे कार्य करवानुं कहुं हे, ते कार्यने ज्योतिषना जाणनाराउंए ते मुहू-र्त्तमां पण करवुं, परंतु ते मुहूर्त्तीमां पण नक्त्रनी ज जेम दिक्शूळ विगेरे एटखे नक्त्र दिक्शूळ अने कीखा विगेरे कहेवामां आवशे ते सर्वनो विचार करवो. एटखे के जे दिशामां ते दिक्शूखादिक जत्पन्न थयुं होय ते दिशामां प्रयाण न करवुं. तथा चर, स्थिर विगेरे नक्त्रना सात प्रकारों कथा है ते आ नक्त्र संबंधी क्रणने विषे पण इष्ट कार्यने अनुसरीने विचारवा तथा परिघदं के जे आगळ कहेवामां आवशे ते पण नक्त्रनी ज जेम विचारीने यात्रादिव कार्य करवां." आ प्रमाणे रक्षमाक्षा जाप्यमां कहां है.

पोराणिक ऋणोनां नामो तो आ प्रमाणे कहेतां हे.—

"रौदः १ श्वेतो १ मैत्र २ श्वारजटः ४ पञ्चमस्तु सावित्रः ए।

वैराजो ६ गान्धर्व ७ स्तथाजिजि ० दोहिए ए बतौ १० च॥ १॥

विजयो ११८थ नैर्ऋताख्यो १२ माहेन्द्रो १२ वारुणो १४ जगश्चैव १ए।

एते पुराणकथिता दिवसमुहूर्त्तास्तथाजिजित्कुतपः॥ २॥

अजिजि १ दिजयो २ मैत्रः २ सावित्रो ४ बत्नवान् ए सितः ६।
वैराजश्चेति ७ सप्त स्युः ऋणाः सर्वार्थसाधकाः॥ २॥

"पुराणमां कहेखा दिवसना ऋणोनां नामो आ प्रमाणे हे.—रौड १, श्वेत २, मैत्र ३, चारजट ४, पांचमो सावित्र ५, वैराज ६, गांधव ७, अजिजित् ७, रोहिण ए, बल १०, विजय ११, निर्ऋत १२, माहेंड १३, वारुण १४ अने जग १५ तथा अजि-जित् कुतप एटले आहमुं मुहूर्त हे आ सर्वे ऋणोमां अजिजित् १, विजय २, मैत्र ३, सावित्र ४, बळवान् (बळ) ५, सित (श्वेत) ६ अने विराज ७, ए सात ऋणो सर्व कार्यना साधक हे."

"रोड़ो १ गन्धर्वो २ ८र्थप ३ श्चारणाख्यो ४, वायु ५ वृद्धी ६ राष्ट्रसो ७ धातृ ७ सौस्यो ए। ब्रह्मा १० जीवः ११ पौष्ण १२ विष्णू १३ समीरो १४, रात्रावेते नैर्ऋताख्यः १५ क्लोडन्यः ॥ ४॥"

"रात्रिना क्ष्णो अनुक्रमे आ प्रमाणे हे.—रोंद १, गंधर्व १, अर्थप ३, चारण ४, वायु ५, विह्यु ६, राक्ष्स ७, धाता ७, सौम्य ए, ब्रह्मा १०, जीव ११, पांच्या १६, विद्यु १३, समीर १४ अने नैकेंत १५." आ प्रमाणे वहु उपयोगी होवाथी क्षणनो विचार विस्तारथी कह्यो

प्रथमतं श्रने पठीनां पण कौरने श्राश्रीने वर्ष्य वसत कहे हे.— श्रन्यक्तस्ताताशितन्नृषितयात्रारणोन्मुखैः कौरम् । विद्यादिनिशासन्ध्यापर्वेसु नवमेऽह्य च न कार्यम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-अन्यंजन (तैलमर्दन विगेरे) करेलुं होय, स्नान करेलुं होय, जोजन कर्युं होय, आजूषण पहेर्यो होय, तथा यात्रामां अने रणसंप्राममां तैयार थयो होय, आवा माणसे हार करावतुं नहीं. तथा विद्यारंजने दिवसे, रात्रिसमये, त्रणे संध्यासमये, दीवाळी विगरे पर्व दिवसे तथा नवमे दिवसे एटले पूर्वे कौर कराव्युं होय ते दिवसथी गणतां नवमे दिवसे कौर कराव्युं नहीं. अहीं "नवम" शब्दे करीने नोम तिथिनो अर्थ करवो नहीं, कारण के नोम रिका तिथि हे अने रिका तिथिनुं वर्जन तो प्रथम कही गया हे, तेथी जे दिवसे पूर्वे कौर कराव्युं होय ते दिवसथी गणतां जे नवमो दिवस आवे ते दिवसे बीजी वारनुं कौर कराव्युं नहीं. आ नवमा दिवसनो निषेध केवळ कौरमां ज हे एम नथी, परंतु गृहप्रवेशादिकमां पण नवमा दिवसनो निषेध ने. ते विषे लक्ष कहे हे के—

"निर्गमान्नवमे चाह्नि प्रवेशं परिवर्जयेत्। शुने नक्त्रयोगेऽपि प्रवेशादापि निर्गमम्॥ १॥"

"प्रयाण करवाना दिवसथी गणतां नवमे दिवसे नक्तत्र योग शुन्न इतां पण पुरप्रवे-शादिक करवो नहीं, तेमज प्रवेश कर्या पढ़ी नवमे दिवसे प्रयाण पण करवुं नहीं."

आ नियम मांगळिक (सामान्य) कौरने माटे कह्यो हे. श्रमांगळिक (सूतक विगे-रेनुं) कौर तो नवमे दिवसे पण थाय हे. "नीचे आसन नाख्या विना कौर करावतुं नहीं" एम लक्ष कहे हे.—

षट्रकृत्तिकोऽष्टवैरञ्चस्त्रिमैत्रश्चतुरुत्तरः । पञ्चपैत्रः सक्रन्मूखः क्रोरी वर्षं न जीवति ॥ ३३॥

अर्थ-लगोलग व कृत्तिकामां कौर करावनार, ए जरीते आव रोहिणीमां, त्रण अनु-राधामां, चार जत्तरामां, पांच मघामां अने एक मूळ नक्त्रमां कौर करावनार माणस एक वर्ष सुधी जीवे नहीं.

गणिविद्यामां तो कृतिका, विशाखा, मघा अने जरणी ए चार नक्षत्रोमां ज द्योच-

''सर्वदापि शुजं कौरं राजाज्ञामृतिसूतके । वन्धमोके मखे दारकर्मतीर्थव्रतादिषु ॥ १ ॥"

''राजानी आज्ञाए, मृत्युसूतकमां, बंधनथी मुक्त थयो होय त्यारे, यज्ञमां, स्त्रीना कार्यमां, तीर्थमां अने व्रतादिकमां (व्रतादिकना प्रारंजमां) द्यौरकर्म कराववुं ए सर्वदा एटखे सर्वे वार अने नद्यत्रोमां शुज हो." अहीं स्त्रीना कार्यमां जे कह्यं हो ते कोइना कुळनो आचार हो, एटखे के जेना कुळनो रीवाज होय तेने आश्रीने हो.

हवे राजाने आश्रीने होरकर्म कहे हे.

श्मश्रुकर्म नरेन्द्राणां पश्चमे पश्चमेऽहिन । कौरनेषु नखोद्वेखो व्यर्के कूरे विशेषतः ॥ ३४ ॥ श्रर्थ—हौरनां नक्त्रोने विषे त्रीजी, पांचमी अने सातमी तारा विगेरे न होय त्यारे करूर वार (सूर्य, शनि, मंगळ) ने दिवसे पण शुज ग्रहनी काळहोराने विषे पांचमे पांचमे दिवसे राजार्डण इमश्रुकर्म (दाढी मुद्धनुं हौर) कराववुं नख कपाववामां पण आ ज समय खेवो, पण एक रविवार तजवो, अने शनि तथा मंगळ अने तेनी होरा विशेषे करीने ग्रहण करवी.

इवे विद्यारंत्रतुं मुहूर्त्त कहे हे.--

विद्यां सुराध्यापकराजपुत्रसितार्कवारेषु समारजेत । पूर्वाश्विनीमूलकरत्रयेषु, श्रुतित्रये वा मृगपञ्चके वा ॥ ३५ ॥

अर्थ-गुरु, बुध, शुक्र अने रिववारे त्रणे पूर्वी, अश्विनी, मूळ, इस्त, चित्रा, स्वाति, अवण, धिनष्ठा, शततारका, मृगशीर्ष, आर्जा, पुनर्वसु, पुष्य अने अश्लेषा, आटलां नक्त्रोमां विद्यानो आरंज करवो श्रेष्ठ है. अहीं अवण, धिनष्ठा अने शततारका एत्रणने बद्दे केटलाक एक अवण ज लेवानुं कहे है. धिनष्ठा अने शततारकानो निषेध करे है.

विद्यारंजमां वारोनुं फळ ब्यवहारसारमां श्रा प्रमाणे कह्यं हे.—
"विद्यारंजे नृषां वाराः कुर्वते जास्करादयः ।

श्रायु १ जीं इयं २ मृतिं ३ त्वक्षीं ४ बुद्धिं ए सिद्धिं ६ च पश्चताम् ५॥१॥"
"विद्याना श्रारंजमां मनुष्योने सूर्यादिक वारो श्रा प्रमाणे श्रनुक्रम फळ श्रापे हे--रिववारे विद्यारंज कर्यों होय तो श्रायुष्य, सोमे जरुता, मंगळे मरण, बुधे त्वक्री, गुरुए
बुद्धि, शुक्रे सिद्धि श्रने शनिए मरण."

हवे नंदीतुं (नांद मांमवातुं) मुहूर्त्त कहे हे.— नियमालोचनायोगतपोनन्द्यादि कारयेत् । मुक्तवा तीक्षोग्रमिश्राणि वारो चारशनेश्चरो ॥ ३६॥

श्चर्य-नियम एटखे समिकत श्रयवा बार वर्तो विगेरे जचरवां ते, श्राक्षोचना एटखे धर्मगुरुनी पासे प्रायिश्चर्त मागवा माटे पोतानुं पाप प्रकाश हुं ते, योग श्रुतनुं श्चाराधन करवा माटे विशेष प्रकारनो तपविधि, तप एटखे सिद्धांतमां कहेला श्रेषी श्चादिक उपकारना तप, श्चा सर्वे नियमादिकनी नंदी विगेरे एटखे नांद मांमवी श्चयवा बीजं कांइ पण धर्मोत्सवादिक कार्य करतुं ते तीहण, जय श्चने मिश्र नक्त्रोने वर्जीने बीजां नक्त्रोमां तथा मंगळ श्चने श्चिनने वर्जीने बीजा वारोमां करतुं. विशेष ए हे जे-

"शान्तिकं पौष्टिकं कार्य क्रेज्यशुक्रार्कवासरे । कन्याविवादनक्त्रे पुष्याश्विश्रवणे तथा ॥ १ ॥" "बुध, गुरु, गुक्र अने रिववारे तथा कन्याविवाहनां नक्षत्रो उपरांत पुष्य, अश्विनी अने अवण नक्षत्रमां शांतिक तथा पौष्टिक कार्यो करवां."

हवे प्राये करीने ब्राह्मणादिक वर्णीने श्राश्रीने पंदर श्लोकोवने संस्कारो कहे हैं। तेमां प्रथम मींजीबंध (कटिमेखळावंध एटले जपनयन) नो संस्कार कहे हें.—

> मौञ्जीबन्धोऽष्टमे गर्जाज्ञन्मतो वाऽयजन्मनाम्। राज्ञामेकादशे च स्याद्यत्सरे द्वादशे विशाम्॥ ३७॥

अर्थ—मौंजीबंधनुं कर्म ब्राह्मएने गर्जथी अथवा जन्मथी आठमे वर्षे थाय है. क्षित्रयने अगीयारमे वर्षे अने वैश्यने बारमे वर्षे थाय है. ब्राह्मएने दशमे वर्षे पण मौंजी-बंध करवामां आवे हे, तेमां जे प्रमाणे कुळाचार होय ते प्रमाणे करतुं.

शाखाधिषे बलोपेते केन्डस्थेऽहि च तस्य वा। बले सूर्येन्डजीवानां वर्णनाये बलीयिस ॥ ३०॥ माघादौ पश्चके मासां पौष्णाश्चिन्योः करत्रये। श्रुतिद्वये मृगादिलपुष्येषूपनयः श्रिये॥ ३७॥ युग्मम्॥

श्चर्य—शालाधिप (वेदाधिप गुरु, गुक्र, मंगळ श्चने सूर्य) छ प्रकारादिकथी बळवान् होय तथा केंडस्थानमां रह्यो होय त्यारे छपनय (यङ्गोपवीत) संस्कार करवो, केमके शालाधिप निर्वळ होय तो वर्णसंकर प्रजा थवानो संजव छे. तथा ते शालाधिपना ज वारमां छपनय संस्कार करवो. श्चर्ही "तस्य वा" ए ठेकाणे वा शब्द कह्यो छे तेथी एवं सूचवन कर्युं के—जो खग्नना बळथी छपनयन करातुं होय तो शालाधिपना वारमां खग्न प्रहण करवुं. एटले के खग्नकुंकळीमां शालाधिप बळवान् श्चर्न केंडमां रहेलो करवो, श्चने जो मात्र दिनशुद्धिवेक ज संस्कार करवो होय त्यारे पण वार तो शालाधिपनो ज लेवो. तथा सूर्य, चंड श्चने गुरु बळवान् होय त्यारे श्चर्यवा वर्णनो नाथ (गुरु श्चने शुक्र) बळवान् होय त्यारे छपवा तो "सूर्य, चंड श्चने गुरु बळवान् होय त्या सूर्य, चंड श्चने गुरु बळवान् होय तो सर्वे वर्णना नाथो बळवान् ज छे" एम दैवङ्गवङ्गनमां कह्यं छे. श्चा संस्कार माघ विगेरे पांच मास (जेठ सुधी)मां करवो. तथा रेवती, श्वश्वनी, इस, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशीर्थ, पुनर्वसु श्चने पुष्य नक्षत्रमां करवो गुज छे.

पराजितेऽरिवेइमस्थे नीचस्थेऽस्तंगते गुरो । सितेऽपि चोपनीतः स्याष्ट्रतिस्मृतिबहिष्कृतः ॥ ४० ॥ अर्थ—ने महोनो योग थयेथी जे यह दक्षिण दिशा तरफ जतो होय ते पराजित कहे। वाय हो. तेमां पण "एक शुक्र तो उत्तरमां जतो होय तो ते पराजित कहेवाय हो," एम वराह कहे हो. तेथी करीने गुरु अने शुक्र पराजित स्थानमां रह्या होय, शब्रुना स्थानमां रह्या होय, नीच स्थाने रह्या होय अथवा अस्त पाम्या होय अने तेवा समये जो उपनयन संस्कार कर्यों होय तो ते श्रुति अने स्मृतिथी बहिष्कृत (रहित) थाय हो.

क्रमादंशेषु सूर्यादेः कूरो र मन्दो श्ऽतिपातकी ३। पदु ४ र्यज्वा ५ च यज्वा ६ च मूर्ख ९ श्रोपनयाङ्गवेत्॥ ४१॥

श्चर्य-- लग्नमां सूर्यनो नवांश रह्यो होय श्चने जपनयन कर्यु होय तो ते कूर थाय छे, चंद्रनो नवांश होय तो ते मंद थाय छे, मंगळनो नवांश होय तो श्चत्यंत पापी थाय, बुधनो होय तो हुशियार थाय, गुरुनो होय तो यज्वा (यह करनार) थाय, शुक्रनो होय तोपण यज्वा थाय श्चने शनिनो नवांश लग्नमां होय तो ते मूर्ल थाय छे.

चतुष्टयेऽकंदिषु राजसेवी १ स्याद्धेश्यवृत्तिः २ क्रमतोऽस्त्रवृत्तिः ३। श्रध्यापकः ४ कर्मसु षद्सु विद्वान् ५ विद्यार्थयुक्तो ६८न्त्यजसेवकश्च ५॥ ४१॥

श्चर्य—केंद्रस्थानमां सूर्य होय तो ते राजसेवक थाय हे, चंद्र होय तो वैश्य वृत्ति-वाळो एटले कृषि, पशुपाल विगेरे वृत्तिवाळो थाय हो, मंगळ होय तो शस्त्रनी वृत्ति-वाळो थाय हे. बुध होय तो अध्यापक थाय, गुरु होय तो ह कर्ममां विदान थाय, शुक्र होय तो विद्यावान अने धनवान थाय तथा शनि होय तो अंत्यजनो (चंनाळनो) सेवक थाय. केंद्रमां एकथी वधारे यह होय तो जे यह अधिक वळवान होय तेनुं फळ कहेतुं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

लग्ने ग्ररी त्रिकोणे सिते सितांशे विधी च वेदङाः। जवति यमांशे ग्ररुसितलग्नेषु जमो विशीलश्च ॥ ४३॥

श्चर्य—सम्मां गुरु होय, त्रिकोणमां शुक्र होय तथा शुक्रना श्रंशमां चंद्र होय एटसे के गमे ते स्थाने रहेसो चंद्र शुक्रना नवांशमां रह्यो होय, तो ते वेदने जाणनारो याय हे, तथा गुरु, शुक्र श्चने सम शनिना श्रंशमां रह्या होय तो ते जम (मूर्ख) श्चने शीळ रहित तथा कृतभी थाय हे.

विधिगुरुशुकैः सार्केर्धनगुणद्दीनः कुजान्वितः कूरः । सबुधेर्बुधः सर्वोरैः स्याड्डपनीतोऽलसो विग्रणः ॥ ४४ ॥

श्चर्य—चंद्र, गुरु श्चने शुक्र जो सूर्य साथे रह्या होय श्चने जपनयन कर्ये होय तो ते क्र श्चन शुक्र याय, मंगळनी साथे रह्या होय तो ते क्र श्वाय, बुध साथे

रह्या होय तो विदान थाय, अने शनि साथे रह्या होय तो ते आळसु अने गुणहीन थाय हे. आ श्लोक राज्याजियेकना लग्नमां पण लागु पने हे.

> चन्डे षष्टाष्टमे मृत्युमूर्वत्वमथवा बटोः। वतमोद्देऽथ केशान्ते चौसे चैवंविधो विधिः॥ ४५॥

श्चर्य—चंड उठे के आउमे होय तो बहुकनुं मरण थाय अथवा ते मूर्ल रहे. व्रतना मोक्तमां (मौंडीबंधन डोक्वामां), केशान्त (मुंक्त)मां अने चौद्य कर्मां के जे पोतपोताना कुळना आचार प्रमाणे पहेले अथवा त्रीजे वर्षे करवामां आवे डे तेमां पण आ प्रमाणे ज (एटले उपरना सामा आठ श्लोकमां कह्या प्रमाणे ज) विधि जाणवो. हवे अग्निस्थापन (अग्निहोत्र)नुं मुहूर्त्त कहे डे.

वहेः परित्रहं प्राहुः कृत्तिकारोहिणीमृगैः। जत्तरात्रितयज्येष्ठापुष्यपौष्णिद्विदैवतैः॥ ४६॥

अर्थ-कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, त्रण उत्तरा, ज्येष्ठा, पुष्य, रेवती अने विशाखा नक्षत्रमां अग्निनुं स्थापन कह्यं हे.

> केन्द्रोपचयधीधर्मेष्वर्केन्ड्जसुराचितैः । सोषैस्त्रिषद्भदशायस्थैरादध्याज्ञातवेदसम् ॥ ४९ ॥

अर्थ-सूर्य केंद्रस्थानमां (१-४-७-१०) रह्यो होय, चंद्र छपचय (३,६,१०,११) स्थानमां रह्यो होय, बुध पांचमे रह्यो होय, गुरु नवमे रह्यो होय, अने बीजा यहो (मंगळ, शुक्र, शिन) त्रीजे, उठे, दशमे अने अगीयारमे रह्या होय त्यारे अश्वि स्थापन करवो.

जदयेऽय नवांदो वा राशीनां जलचारिणाम्। जदयस्थे च शीतांशोर्वह्यिरहाय शाम्यति॥ ४७॥

अर्थ — जळचर राशिजना (कर्क, मकर, कुंज, मीन) जदयमां अथवा नवांशमां अने चंद्रना जदयमां अग्नि तरत ज बुजाइ जाय हे.

कूराः कुर्युर्धने निःस्वमाट्यं सन्तोऽन्नदं विधुः । हन्युश्विद्धे महाः सर्वे लग्ने च क्षयमौ द्विजम् ॥ ४ए॥

श्रर्थ—श्रिश्राधाननी कुंमळीमां जो बीजा स्थानमां ऋर मह रह्या होय तो ते ब्राह्मणने निर्धन करे हे, श्वने सीम्य यह रह्या होय तो धनाड्य करे हे, तथा चंज रह्यो होय तो ते ब्राह्मणने श्वन्नदातार करे हे. वळी श्वाहमा स्थानमां कोइ पण मह रह्यो होय तो तेतुं मरण श्राय हे, तथा खग्नमां के चंजनी साथे बुध श्वने शनि रह्या होय तो पण ते ब्राह्मण मरण पामे हे एम रलमाला जाप्यमां कहां है. श्राहमा स्थाने रहेला महो विषे श्रा प्रमाणे विशेष जाणवं के—श्राहमे स्थाने चंद्र रह्यो होय तो ते ब्राह्मण्मी स्त्रीनं मरण थाय, गंगळ होय तो ब्राह्मण्नंज मरण थाय, रिव, गुरु के शिन होय तो वे ब्राह्मण श्रसाध्य रोगधी पीमा पामे, श्राने बुध के शुक्र रह्या होय तो कांइ पण फळ थाय नहीं. लक्ष तो लग्नमां रहेला ग्रह विषे श्रा प्रमाणे कहे हे के—"लग्नमां श्राध्य चंद्रनी साथे बुध के शिन रह्यो होय तो लोकाग्निनी साथे ते श्राप्तिनो संग थाय हे. श्राप्तीत् श्राप्ति चत्रन थाय हे."

जितेरस्तमितैर्नीचशत्रुक्तेत्रगतेरि । सोमजीमसुराचार्येराहितासिर्न नन्दति ॥ ५०॥

अर्थ—सोम, मंगळ अने गुरु जो पराजय पाम्या होय, अस्त पाम्या होय, नीच स्थाने रह्या होय के शत्रुना घरमां रह्या होय तो अग्नितं आधान करनार सुखी यतो नथी.

चन्डेऽकें वा त्रिशत्रुस्थे लग्ने धनुषि वा गुरौ।

मेषस्थे खा १० स्त ७ गे वारे यज्वा स्थादात्तपावकः ॥ ५१ ॥

अर्थ-अग्निआधाननी कुंमळीमां चंद्र के सूर्य त्रीजे के उठे स्थाने रह्यो होय, दाप्तमां के धन राशिमां गुरु रह्यो होय, अने मंगळ मेप राशिमां के दशमा अथवा सातमा स्थानमां रह्यो होय तो अग्निनुं आधान करनार ब्राह्मण याज्ञिक थाय डे.

। इति विप्राद्यधिकारः।

हवे नवां वस्त्र पहेरवानुं मुहूर्त्त कहे हे.— नववाससः प्रधानं वासवपौष्णाश्विनादितिद्वितये । करपञ्चकध्रवेषु च बुधग्रुरुशुक्रेषु परिधानम् ॥ ५१ ॥

श्रर्थ—बुध, गुरु श्रने शुक्रवारे धनिष्ठा, रेवती, श्रश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, इस्त, चिन्ना, स्वाति, विशाखा, श्रनुराधा, तथा ध्रव एटले रोहिणी, उत्तराषाढा, उत्तराफाहगुनी श्रने उत्तराजाइपद, श्रा नक्षत्रोमांथी कोइ पण नक्षत्र होय, ते दिवसे नवां वस्त्र पहेरवां शुज के कहुं हे के—

"नष्टप्राप्ति १ स्तदनुमरणं २ विह्नदाहो ३८र्घिसिक्ति ध-श्राखोर्जीति ५ मृतिरथ ६ धनप्राप्ति ७ रथीगमश्च ७ । शोको ७ मृत्यु १० नरपतिजयं ११ संपदः १२ कर्मसिक्ति १३-विद्यावाप्तिः १४ सदशन १५ मथो वह्मजत्वं जनानाम् १६ ॥ १ ॥ मित्राप्ति १७ रम्बरहृतिः १० सिल्लिप्सुतिश्च १ए, रोगो २०ऽतिमिष्टमशनं २१ नयनामयश्च २२ । धान्यं २३ विषोज्ञयन्तयं २४ जलन्ती २५ धेनं २६ च, रलाप्ति २७ रम्बरधृतेः फलमिन्नात् स्यात् ॥ २ ॥"

"नवां वस्त्र धारण करवामां अश्विनी नक्षत्रश्री नीचे प्रमाणे अनुक्रमे फळ थाय हे श्रिश्विनी नक्षत्रमां वस्त्र धारण करे तो नाश पामेखी वस्तुनी प्राप्ति थाय हे १. जरणीमां धारण करे तो तरत ज मरण थाय २, कृत्तिकामां अग्निदाह थाय २, रोहिणीमां अर्थनी सिद्धि थाय ४, मृगशिरमां उंदरनो जय थाय ५, आर्जामां मरण थाय ६, पुनर्वस्तमां धननी प्राप्ति ७, पुष्यमां अर्थनी (धननी) प्राप्ति ७, अश्लेषामां शोक ए, मधामां मृत्यु १०, पूर्वाफाहगुनीमां राजानो जय ११, उत्तराफाहगुनीमां संपत्तिनी प्राप्ति १६, इस्तमां कार्यसिद्धि १३, चित्रामां विद्यानी प्राप्ति १४, स्वातिमां सारं जोजन १५, विशाखामां माणसोनी प्रीति १६, अनुराधामां मित्रनी प्राप्ति १७, ज्येष्ठामां वस्त्रनी चोरी १०, मूळमां जळमां कुवे १ए, पूर्वाषाहामां रोग २०, उत्तराषाहामां अत्यंत मिष्ट जोजन ११, श्रवणमां नेत्रनो व्याधि २२, धनिष्ठामां धान्यनी प्राप्ति २३, शतिषकमां विषनो जय २४, पूर्वाजाजपदमां जळनो जय २४, उत्तराजाजपदमां धननीप्राप्ति २६, अने रेवतीमां नवुं वस्त्र पहेरवाथी रत्ननी प्राप्ति थाय हे २९."

व्यवहारप्रकाशमां कहां हे के—"केवळ श्वेत वस्त्रने माटे ज आ नियम नथी, पण् रातां वस्त्रने माटे पण जपर गणावेलां ज नक्त्रो शुज हे." व्यवहारसारमां तो एम कहां हे जे—"रातां वस्त्र धारण करवामां पुरुषने पण जे नक्त्रो स्त्रीर्जने माटे कहेवामां आवशे ते ज शुज हे, अने आ जपर गणावेलां नक्त्रो तो श्वेत वस्त्रने ज आश्रीने हे." हवे वारने आश्रीने आ प्रमाणे फळ जाणवं.—

> "नवाम्बरपरी जोगे कुर्वन्त्यकी दिवासराः। जीर्णे १ जलार्षे २ शोकं २ च धनं ४ ज्ञानं ए सुखं ६ मलम् ७॥ १॥"

नवां वस्त्र धारण करवामां रिव विगेरे वारो श्रानुक्रमे जीर्ण १, जैंदाई २, शोक ३, धन ४, ज्ञान ५, सुख ६ श्राने मल (मेलापणुं) ७, श्रा प्रमाणे फळ श्रापे हे." नवो कंबल धारण करवामां रिव पूण शुज हे एम कहेलुं हे. केटलाक श्राचार्यों कहे हे के—

"व्यापार्यते रवौ पीतं बुधे नीखं शनौ शितिः।
गुरुजार्गवयोः श्वेतं रक्तं मंगखवासरे॥ १॥"

१ वहेलुं फाटी जाय. २ निरंतर भीनुं ज रहे.

"रिववारे पीछुं वस्त्र पहेरबुं शुज हो, बुधवारे खीखुं, शनिवारे काछुं, गुरु आने शुक-वारे श्वेत तथा मंगळवारे रातुं वस्त्र पहेरबुं शुज हो."

हवे स्त्रीर्चने नवां वस्त्र तथा श्राखंकार विगेरे पहेरवानुं मुहूर्त्त कहे हे.— योषिद्धजेत करपञ्चकवासवाश्चिपौष्णेषु वक्रग्रहग्चक्रदिनेशवारे । मुक्ताप्रवाखमणिशंखसुवर्णद्नतरक्ताम्बराण्यविधवात्वमतिः सती चेतु॥५३॥

श्चर्य—विधवा अवानी इज्ञा न होय एवी सती स्त्रीए मोती, प्रवाळा, मणि, शंख (शंखदा), सुवर्ण, दांत (हाथीदांत) तथा रातां वस्त्रोने हस्त, चित्रा, स्वाति, वि-शाखा, श्रनुराधा, धनिष्ठा, श्वश्विनी श्राने रेवती, ए नक्त्रोमां तथा वक (मंगळ), गुरु शुक्र श्रने रविवारे धारण करवां शुच्न हे.

विशेषमां स्ना प्रमाणे जाणवुं.—
"पुष्यं पुनर्वसुं चैव रोहिणीं चोत्तरात्रयम् ।
कोसुंने वर्जयेषस्त्रे जर्तृघातो जवेद्यतः ॥ १ ॥"

"कुसुंबा (रातां) वस्त्र धारण करवामां तथा प्रवाळा, सुवर्ण, शंख विगेरे धारण कर-वामां पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, जत्तराफाहगुनी, जत्तरापाढा श्रमे जत्तराजाइपद, ए नक्षत्रो श्रवश्य वर्जवां, कारण के ते नक्षत्रोमां धारण करवाथी तेना पतिनो नाश थाय है."

> वासः प्राप्तं विवाहादौ राङ्गा दत्तं च यन्मुदा । विरुद्धेऽपि हि वारहीं तद्यसीताविशंकितः ॥ ५४ ॥

श्चर्य—विवाहादिकमां मळेखं वस्त्र तथा राजाए हर्षथी जे (वस्त्र) श्चाप्युं होय, ते वार श्चने नक्षत्र विरुद्ध (श्वशुज) होय तथा चंद्रादिक प्रतिकूळ होय तोपण शंका रहित धारण करतुं.

हवे फाटेखां तथा बळेखां वस्त्रने आश्रीने कहे हे.—
कृतनवजागे वासिस कोणेषु सुरास्तथान्तयोमनुजाः ।
आसुरास्तु मध्ययोः स्थुर्मध्यतमो राक्तसो जागः ॥ ५५ ॥

अर्थ-वस्त्रना नव जाग पानीने तेना चारे खूणामां देव स्थापवा, वे डेमे मनुष्य स्थापवा, मध्यना वे जागमां असुर अने बरावर वच्चे राक्सने स्थापवो. ते आ रीते.—

देव	श्चसुर	देव
मनुष्य	राक्स	मनुष्य
देव	श्रसुर	देव

पठी तेनुं फळ आ रीते जाएवं.-

सुर १ नर १ दनुज ३ पलादाः ४ श्रेष्ठतम १ श्रेष्ठ १ हीन ३ हीनतमाः ४ श्रन्ताः सर्वेऽप्यग्रुजा एवं शयनासनाचेऽपि ॥ ५६ ॥

अर्थ—जो ते वस्त्र देवना जाग (अंश)मां फाट्युं के बळयुं होय तो अत्यंत श्रेष्ठ, मनुष्यना अंशमां श्रेष्ठ, असुरना अंशमां अधम (अशुज) अने राक्सना अंशमां फाट्युं के बळयुं होय तो अत्यंत अधम—अशुज जाण्तुं. तेमां पण जो ते ते देवादिकना अंशना अंत जागने विषे फाट्युं के बळयुं होय तो ते सर्वे पण अशुज ज हे. आ रीते ज शय्या तथा आसन विगेरेमां पण जाण्तुं.

लक्ष कहे हे के-

"रुग् राक्तसांशेष्वश्रवापि मृत्युः, पुंजन्म तेजश्च मनुष्यजागे । जागेऽमराणामश्च जोगवृद्धिः, प्रान्तेषु सर्वत्र जवत्यनिष्टम् ॥ १ ॥"

"राह्मना श्रंशमां वस्त्र फार्श्यं के बळ्युं होय तो ते वस्त्रना मासिकने रोग श्रयवा मृत्यु थाय, मनुष्यना जागमां फार्श्यं के बळ्युं होय तो तेना मासिकने पुत्रजन्म तथा तेज थाय, श्रने देवना श्रंशमां फार्श्यं के बळ्युं होय तो तेना मासिकने जोगनी वृद्धि थाय, परंतु ते सर्वना श्रंतना जागमां फार्श्यं के बळ्युं होय तो ते श्रयुज हे. श्रहीं राह्मसे करीने श्रसुर पण समजी देवो, श्रने तेने माटे ज रोग श्रथवा मरण ए वे फळ कह्यां हो. एटले के श्रसुरना श्रंशमां रोग श्रने राह्मसना श्रंशमां मरण थाय एम समजवुं."

श्रीवृहत्कहपसूत्र नामना ठेदग्रंथनी वृत्तिमां कहां ठे के—'श्री गुरु तथा गञ्चने लायक एवा वस्त्रनी एषणाने माटे नीकळेला साधुने जो प्रथम तेवा प्रकारना (एटले फाटेला के बळेला) वस्त्रनो लाज थाय तो त्यां पण नव जागनी कहपना करीने था प्रमाणे निमित्त ज्ञान कहां ठे के—

"देवेसु जत्तमो लाजो माणुसेसु श्र मिश्रमो । श्रसुरेसु श्र गेलन्नं मरणं जाण रकसे ॥ १ ॥"

"जो ते वस्त्र देवना श्रंशमां फाटेखुं के बळेखुं होय तो जत्तम खाज श्राय, मनुष्यना श्रंशमां मध्यम खाज श्राय, श्रसुरना श्रंशमां रोग श्राय, श्रने राक्तसना श्रंशमां फाट्युं के बळचुं होय तो मरण श्राय."

फाटेला तथा बळेला बखने खाश्रीने ज विशेष कहे हे.— किते दग्घेऽय लिसेऽस्मिन् गोमयाञ्जनकर्देमैः । खानुके जूरि जुक्तेऽल्पं फलमेतहुचाग्रुजम् ॥ ५५॥ अर्थ-कोरं वस्त्र ठाए, अंजन के कादववने खींपाय, काटे के दाजे तो तेनुं शुज्ज के आशुज फळ वधारे छे अने जोगवेल वस्त्र ठाए, अंजन के कादववने खींपाय, काटे के दाजे तो तेनुं शुज्ज के अशुज फळ अहप छे.

विशेष आ प्रमाणे हे.-

"वेदाकृतिः श्रिये स्यान्नत्रादिसमा गतापि रह्योऽंशे । काकोलकादिसमा न देवजागाश्रिताऽपि पुनः ॥ १ ॥"

"ते वस्त्रना छेद (फाटेखा के बळेखा)नी आकृति छत्र विगरेना जेवी होय तो ते राक्सना जागमां होवा छतां पण खद्मीने माटे छे-शुज छे, अने कागमा के घुवमना जेवी आकृति होय तो ते देवना जागमां रह्या छतां पण अशुज ज छे."

हवे कया मुहूर्त्तमां गयेखुं इब्य पाइं सुखन थाय हे ? श्रिश्रवा कया मुहूर्त्ते थाएए विगेरे करवी ? ते कहे हे.—

सुखत्रं स्वं प्रवेश्यस्तं निखातं दत्तमेव वा । मृडुश्रुतित्रयादित्यखद्यतेषु ग्रुनेऽहिन ॥ ५०॥

श्चर्य—मृष्ठ (चित्रा, श्चनुराधा, रेवती, मृगशिर), श्रवण, धनिष्ठा, शतिजिषक, पुनर्वसु श्चने लघु (पुष्य, श्चिजित्, हस्त, श्चिनी), ए नक्षत्रोमां तथा शुज दिवसे एटले मंगळ श्चने शिन विनाना बीजा वारे धननो न्यास कर्यो होय (एटले श्वापणमां के वेपार विगेरेमां मूक्युं होय), पृथ्वी विगेरेमां दाव्युं होय, व्याजे श्चाप्युं होय तथा श्वजाणतां खोवाइ गयुं होय तो ते धन पाढुं फरीने सुलज हे, एटले फरीथी मळी शके हे.

विशेष ए हे जे—"कणदानमयादानं किप्रधिष्णयैविधीयते ।" कण देवुं अने क्षेवुं ए किप्र (पुष्य, अजिजित्, इसा अने अश्विनी) नक्षत्रमां शुज हे. वळी कह्युं हे के—

"निधिलिब्धियनविवर्छनमादित्याद्वाहातः करात् पौष्णात्। दितये श्रवणत्रितयोत्तरासु मित्राधिदेवे च ॥ १ ॥"

''निधिनी प्राप्ति अने धननी वृद्धि पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिर, इसा, चित्रा, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा, शतिषक्, जत्तराफाहगुनी, जत्तराषाढा, जत्तरापाड-पद, अनुराधा अने अजिजित् ए नक्त्रोमां शुजकारक है."

इवे गयेखी वस्तु पाछी मळशे के नहीं ते कहे है.-

नष्टं चतुर्तिरन्धाचैर्गष्ठेरपूर्वादिषु क्रमात्।

तचाप्यते सुखा १ यहा १ तद्वात्तीव ३ न सापि च ॥ ५ए॥ अर्थ-अंधादिक चार नक्त्रोमां गयेली चीज अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां गइ हे

एम जाण्डुं, श्रने ते चीज सुखेथी मळे, यलथी मळे, तेनी खबर मळे श्रने खबर पण न मळे, ए रीते श्रनुक्रमे तेनुं फळ जाण्डुं.

सुलेथी मळे एटले समीपे ज ते वस्तु रही छे, इर गइ नथी एम जाण्वुं. "आंधळां नक्षत्रमां गयेली वस्तु वधी पाठी मळे छ छने काणां नक्षत्रमां गयेली छाधीं पाठी मळे छे" एम केटलाक कहे छे. वळी बीजा केटलाक कहे छे के—"छांधळुं नक्षत्र पण जो बे पाद के चार पादनुं होय तो गयेली वस्तु छाले करीने पाठी मळे छे, पण जे नक्षत्रा त्रण पादवाळां छे एटले एक पादे लंगमां छे तेयां देखतां नक्षत्रोमां पण गयेली वस्तु पाठी मळी शके छे."

हवे आंधळां काणां विगेरे नक्त्रोनी संज्ञा कहे हे.— रेवत्यादिचतुष्केषु नामानि प्रतिपं जगुः।

श्चन्ध १ माकेकरं २ चिल्लं ३ सुलोचन ४ मिति क्रमात् ॥६०॥ श्चर्थ—रेवती नक्षत्रथी चार चार नक्षत्रोमां दरेक नक्षत्रनां नाम श्चनुक्रमे श्चांधळुं, श्चाकेकर (काणुं), चिल्ल (चीपमावाळुं) श्चने सुलोचन (देखतुं) ए प्रमाखे कह्यां हे.

श्चांधळां, काणां विगेरे संज्ञा तथा तेमां गयेखी वस्तुनी दिशा तथा ते वस्तु मळशे के नहीं ते जाणवानुं कोष्टक.—

संज्ञा.	l							दिशाः	∫फळ.
		रोहिणी			विशाखा	[पूर्वीषाढा	भनिष्ठा	पूर्व	शीघ्र मळे
	1	मृगिशिर		L 2'			शत्भिषक्		यवधी मळे
	भरणी				ज् ये छा	अभिजित्	पूर्वाभाद्यद	पश्चिम	खबर मळे
देखतां	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाका०	स्वाति	भूळ	श्रवण	उत्तराभाद्मपद	उत्तर	खबर पण न मळे.

दिनशुष्टिकार आ प्रमाणे कहे हे.—
"रविरिक्ता ह बाला वारस तरुणाय नव परे थेरा।

तरुषेहिं जाइ थेरोहिं न जाइ बाखे जमइ पासे ॥ १ ॥"

"रैविना नक्षत्रथी उ नक्षत्र बाळक हे, त्यारपढीनां बार नक्षत्र जुवान हे अने त्यार-पढीनां नव नक्षत्रो वृद्ध हे. तेमां जुवान नक्षत्रमां गयेखी वस्तु जाय-पढी आवे नहीं, वृद्ध नक्षत्रमां वस्तु जाय नहीं एटखे पाडी आवे खरी, अने बाळ नक्षत्रमां गयेखी वस्तु पासे ज जमे हे एटखे के छूर जती नथी."

> हवे प्रेत (मरेखानं) कर्मनं मुहूर्त्त कहे हे. न प्रेतकर्म कुर्वीत यमसे सन्निपुष्करे। कूरमिश्रध्नवार्जासु तथा मूखानुराधयोः॥ ६१॥

१ सूर्य जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्रथी इष्ट दिवसतुं नक्षत्र छ सुधीमां होय तो बाळक. भा॰ २१

श्रर्थ—प्रेतकार्य श्राटलां नक्त्रोमां करबुं नहीं.—यमखयोगमां, पंचकमां, त्रिपुष्कर-योगमां,कूर (जरणी, त्रणे पूर्वा अने मघा)मां, मिश्र (विशाला अने कृत्तिका)मां, ध्रुव (त्रण उत्तरा अने रोहिणी)मां, श्रार्जामां, मूळमां तथा अनुराधामां. वळी "रवि तथा मंगळ-वारनो पण त्याग करवो" एम दिनशुद्धिमां कह्यं हे.वळी अन्य प्रंथमां आ प्रमाणे कह्यं हे-

> "पुष्याश्विनी स्वातिहस्ता ज्येष्ठा श्रवणरेवती । एषु प्रेतक्रिया कार्या रविवारं विना बुधैः ॥ १ ॥

"पुष्य, श्रश्विनी, स्वाति, इस्त, ज्येष्ठा, श्रवण छाने रेवती, श्राटलां नक्त्रोमां रविवार विना बीजा वारे माह्या पुरुषोए प्रेतिकया करवी."

मृते साधी पञ्चदशमुहूर्त्तैर्नेव पुत्रकः । एकस्त्रिंशन्मुहूर्त्तेस्तु द्वेप्यः शेषेस्तु जैरुजी ॥ ६१ ॥

अर्थ—पंदर मुहूर्त्तवाळां नहत्रमां साधुए काळ कर्यो होय तो पुत्रक करवी नहीं, (अजिजितमां पण करवो नहीं), त्रीश मुहूर्त्तवाळांमां काळ कर्यो होय तो एक पुत्रक करवो, एटखे एक पुत्रक करीने साधुनी पासे राखवो, अने संस्कारसमये तेने मध्यमां नाखवो एवी रीत हे, तथा वाकीनां पीस्ताळीश मुहूर्त्तवाळां नहात्रोमां काळ कर्यो होय तो वे पुत्रक करवा.

मूलार्जाजरणीयुग्ममघाश्लेषाद्विदैवतैः ॥ ६३ ॥

श्चर्य—मूळ, श्चार्जा, जरणी, कृतिका, मघा, श्चश्चेषा श्चने विशाखा नक्त्रमां सर्प-मंश श्रयो होय तो तेनी गरुम रक्षा करे तोपण ते जीवे नहीं, श्चने बीजां नक्त्रतोमां सर्पमंश श्रयो होय तो ते जीवे छे.

विवेकविद्धासमां तो छा प्रमाणे कहां हे —

'मूद्धाश्लेषामधाः पूर्वात्रयं जरणिकाश्विनी।
कृत्तिकार्जा विशाखा च रोहिणी दष्टमृत्युदाः॥१॥
तिथयः पञ्चमी षष्ठ्यप्टमी नविमका तथा।
चतुर्दश्यप्यमावास्याऽहिना दष्टस्य मृत्युदाः॥१॥
दष्टस्य मृतये वारा जानुजीमशनैश्वराः।
प्रातःसन्ध्यास्तसन्ध्या च संकान्तिसमयस्तथा॥३॥"

"मूळ, अश्लेषा, मघा, त्रणे पूर्वा, जरणी, अश्विनी, कृत्तिका, आर्जा, विशाखा अने

रोहिणी, आटखां नक्त्रोमां सर्पमंश थयो होय तो ते मरण पामे हे (१) तथा पांचम, हफ, आहम, नोम, चौदश अने अमावास्या, आ तिथिछंमां सर्पमंश थयो होय तो ते मरण पामे हे (१) रिव, मंगळ अने शिनवारे तथा प्रातःकाळनी संध्या, सायंकाळनी संध्या अने संकांतिना समये सर्पमंश थयो होय तो ते मरण पामे हे." इत्यादि.

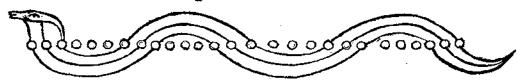
हवे मांदो माण्स जीवशे के नहीं ? ते विषे कहे हे.— जातरोगस्य पूर्वार्जास्वातिज्येष्ठाहिं नैर्मृतिः । जवेन्नीरोगता रेवत्यनुराधासु कष्टतः ॥ ६४ ॥ मासान्मृगोत्तराषाढे विंशत्यहां मघासु च । पद्रेण तु द्विदैवत्ये धनिष्ठाहस्तयोस्तया ॥ ६५ ॥ जरणी वारुणश्रोत्रचित्रास्वेकादशाहतः । श्रश्चिनीकृत्तिकारकोनक्तेषु नवाहतः ॥ ६६ ॥ श्रादित्यपुष्याहिर्बुधरोहिण्यार्यमणेषु तु । सप्ताहादिह ताराया यदि स्यादनुकूष्टता ॥ ६९ ॥

श्रर्थ—त्रणे पूर्वी, श्रार्डी, स्वाति, ज्येष्ठा श्रने श्रश्लोपामां रोग जत्पन्न श्रयो होय तो रोगीनुं मरण श्राय छे. रेवती श्रने श्रनुराधामां रोग जत्पन्न श्रयो होय तो कष्टश्री नीरोगी श्राय. मृगिशर श्रने जत्तरावादामां रोग श्रयो होय तो एक महीने सारुं श्राय. मधामां श्रयो होय तो वीश दिवसे नीरोगी श्राय. विशाखा, धनिष्ठा के हस्तमां श्रयो होय तो वं पंदर दिवसे सारुं श्राय. श्रदीं वृद्धो कहे छे के—"जत्तरापादामां रोग श्रयो होय तो वे मासे मृत्यु श्राय श्रने श्रिजीजितमां श्रयो होय तो वे मासे नीरोगी श्राय." जरणी, शत-जिषक, श्रवण श्रने चित्रामां ज्याधि जत्पन्न श्रयो होय तो श्रगीयार दिवसे सारुं श्राय. श्रिवनी, कृत्तिका श्रने मूळमां श्रयो होय तो नव दिवसे सारुं श्राय. प्रनर्वस, पुष्य, जत्तराजाइपद, रोहिणी श्रने जत्तराफाहगुनीमां श्रयो होय तो सात दिवसे सारुं श्राय. श्रा सर्व श्रेळे तारानी श्रनुक्ळता होय तो सारुं श्राय एम जाणवुं. "शुक्खेडण्यास्त्रिते रोगे दीर्घक्खेशोऽश्रवा मृतिः" "शुक्खपक्ते विषे पण त्रीजी, पांचमी के सातमी तारार्जमां रोग जत्यन्न श्रयो होय तो घणो क्लेश पामे श्रयवा मृत्यु पामे" एम कह्यं हो.

अहीं प्रसंगथी मृत्युनुं ज्ञान खले हे.--

"श्राइचाइ धरे वि जुर्ख्रगह, पनरहमाहिठवेविणु ख्रंगह । बारह बाहिरि तस्स य दिकाइ, जीवियमरण फुर्म जाणिकाइ ॥ १ ॥" "त्रण नामीवाळो सर्प करवो. तेमां सूर्य जे नक्त्त्रमां होय ते नक्त्त्र प्रथम मूकवुं, श्वने त्यारपढ़ी श्वनुक्रमे बीजां नक्त्रो मूकवां (श्वजिजित् गण्वुं नहीं). तेमां पंदर नक्त्रो नामी उपर श्वावे श्वने बार नक्त्रो वहार रहे ए रीते सर्प करीने जीवित श्रथवा मरण स्पष्ट रीते जाण्वुं.

ञ्जंगनी स्थापनाः



श्रहीं जे जे प्रहों जे जे नहत्रोमां होय, ते ते प्रहों ते ते नहत्र जपर मूकवा. पढ़ी सूर्यना नहत्रथी रोगीना नामनहत्र सुधी गण्डुं तेमां जो पहेली नामीमां एटले पहेले, नवमे, तेरमे, एकवीशमें के पचीशमें रोगीनुं नहत्र होय तो मरण थाय, जो बीजी नामीमां एटले बीजे, श्राठमें, चौदमें, वीशमें के जवीशमें रोगीनुं नहत्र होय तो घणुं कष्ट थाय, श्राने रोगीनुं नहत्र त्रीजी नामी जपर एटले त्रीजे, सातमें, पंदरमें, जंगणीश्यमें के सत्यावीशमें होय तो थोहुं कष्ट थाय. बाकीनां बार नहत्रों जपर रोगीनुं नहत्र होय तो श्रारोग्य थाय. श्रहीं शुजाशुज प्रहना वेधथी पण शुजाशुज फळ विशेष प्रकारे कहेतुं."

्यतिवश्चनमां तो आ प्रमाणे ज जुजंगचक्रने स्थापवानुं कह्यं हे, पण तेमां आर्जा नहत्र प्रथम मूकवानुं कहे हे. ते आ प्रमाणे.—

"आर्डाद्येः पञ्चदशनिस्त्रीणि त्रीण्यन्तरा त्यजन्।

त्रिनािनचके चन्दा १ के २ जन्म २ वेधे न जीवति ॥ १॥"

"आंतरे आंतरे त्रण त्रण नक्त्रोने तजीने आर्जा नक्त्रथी पंदर नक्त्रोने त्रिनासीना चक्रमां स्थापवां. तेमां जो चंज, सूर्य अने रोगीना नामना नक्त्रनो (ए त्रऐनो) वेध याय तो ते रोगी जीवे नहीं."

त्रिनामी चक्रनी स्थापना.



व्याधि थवाने समये जो चंद्रतुं, सूर्यतुं श्रने रोगीतुं नक्षत्र एक नामी पर होय तो रोगीतुं मर्ण नीपजे.

दिनशुष्टि मंथमां तो त्रण त्रण नक्तत्रनो त्याग कर्या विना ज आर्जायी आरंजीने त्रिनामी चक्रनी स्थापना तथा फळ आ प्रमाणे कहे हे.— "आई आहा मिगं अंते मझे मूखं पर्शिक्यं। रवीं इजम्मनरकत्तं तिविद्यो न हु जीवह ॥ १ ॥"

"प्रथम आर्जा, अंते मृगशिर अने मध्ये मूळ ए रीते मूकीने त्रिनामी चक्र करतुं. तेमां सूर्यनुं, चंजनुं अने जन्मनुं नक्षत्र जो वीधाय एटले एक नामी पर आवे तो रोगी माणस जीवे नहीं."

त्रिनामी चक्रनी स्थापनाः



"रवींङ्रजम्मनस्कत्तं एगनामीगया जया। तया दिने जवे मच्च नन्नहा जिएजासिश्चं॥१॥"

"सूर्यनुं, चंद्रनुं अने जन्मनुं ए त्रणे नक्तत्रो ज्यारे एक नामी पर आवे, ते दिवसे रोगीनुं मरण थाय हे. जिनेश्वरनुं वचन अन्यथा धतुं नथी."

> श्रहीं कोइ श्राम पण कहे छे के— ''रोगिणो जन्मकद्वस्य एकनाड्यां यदा रविः।

यावदृक्तं रवेजोंग्यं तावत्कष्टपरंपरा ॥ १ ॥"

"रोगीना जन्मनक्षत्रनी एक (सरखी) नामी छपर ज्यारे सूर्य होय स्रमे जेटखुं नक्षत्र सूर्यने जोगववानुं होय तेटला बखत सुधी रोगीने कप्टनी परंपरा रहे हे."

> "रोगिणो जन्मकृष्ट्य एकनाड्यां यदा शशी। तदा पीमां विजानीयादष्टप्राहरिकीं ध्रुवम् ॥ २ ॥"

"रोगीना जन्मनक्त्रनी एक (समान) नामी उपर ज्यारे चंद्र होय त्यारे आठ पहोर सुधीनी अवस्य पीमा जाणवी."

"क्रूरग्रहास्तदाऽन्ये तु यदि तत्रैव संस्थिताः । तदा काले जवेन्मृत्युः सत्यमीशानजापितम् ॥ ३ ॥"

"ते वसते बीजा कर महो जो त्यां ज रहेला होय, तो ते ज वसते मृत्यु थाय है. एवं ईश्वरनं वचन सत्य हे."

श्रा श्रने बीजा प्रकारोवने विचारीने ऋर ग्रह, दशा, चंड्रनी प्रतिकूळता, तिश्रि विगेरे, हेद विगेरे वने श्रास्तायमां कह्या प्रमाणे जोड्रने रोगीना मृत्युना समयनो निर्णय करवो.

हवे श्रौषध खावानुं मुहूर्त्त कहे हे.--जैषज्यमिष्टं मृगवारुणानुराधाधनिष्टाश्चतिरेवतीषु । पुष्याश्विनीराक्तसहस्तचित्रापुनर्वसुखातिषु देहपुष्ट्ये ॥ ६० ॥

अर्थ-प्रथम श्रीषध लावानुं नीचेनां नक्त्रोमां देहनी पुष्टिने माटे इन्नेखं हे.-मृगशिर, शतनिषक्, अनुराधा, धनिष्ठा, अवल, रेवती, पुष्य, अश्विनी, मूळ, इस्त,

चित्रा, पुनर्वस छने स्वाति.

श्रहीं वार विषे कांइ कहूं नथी तोपण सर्वत्र सौम्य वारो ज यहण करवा, श्रने श्चहीं तो रविवार पण कहेलो होवाथी लेवानो हे. ए ज रीते श्चश्व, गजकर्म, पशुविधि, नाटक, वाव, कूवा, खद्यान, बाळकनुं नाम स्थापन, गृह करवुं, श्रश्वने प्रथम चलाववो, बीज वाववुं, नगरादिकनां तोरण चमाववां, तथा देवपूजा विगरे सर्व मांगळिक कार्योमां पण वारने माटे कांइ विशेष कह्यं न होय तो सौम्य वारो तथा रविवार पण जाणी खेवा.

हवे रोगीने माथे पाणी रेमवानुं मुहर्त्त कहे हे.-

स्नानमुह्नाघनस्येष्टं वारयोर्नेन्ड्युक्रयोः। ब्राह्मपौष्णोत्तराश्लेषादित्यस्तातिमघासु च ॥ ६ए ॥

श्चर्य-नीरोग थयेखा माणुसने प्रथम स्नान चंड अने शुक्रवारने वर्जीने बीजा वारोमां तथा रोहिएी, रेवती, त्रणे जत्तरा, श्रश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाति श्रने मधाने वजीने बीजां नक्तत्रमां इबेखं बे. पूर्णज्ञमां "बुध छाने गुरुवार" तथा हर्षप्रकाशमां "शिन-वारने" वर्जवानुं कह्यं हे.

हवे अन्यंग स्नाननुं मुहूर्त्त कहे हे.--

अन्यंगमर्कक्रजजीवसितेषु पर्व-

संकान्तिविष्टिषु विवर्जितयोगयुग्मे ।

क्वचीद्वि २ षट् ६ जुजग ७ दिक् १० तिथि १५ शक्त १४ विश्व-

संख्ये तिथौ च न कदाचन जूतिकामः ॥ ५० ॥

अर्थ-रिव, मंगळ, गुरु अने शुक्रवारे तथा पर्वमां एटले सूर्य चंद्रनुं बहण अने दीवाळी विगेरेमां, सूर्यनी संक्रांतिने दिवसे, वर्जित योग न्यतिपात अने वैधृति योगने दिवसे तथा बीज, उठ, खाठम, दशम, पूनम, चौदश खने तेरश, ए तिथिने दिवसे आबादीने इन्नता पुरुषे कदापि अन्यंग स्नान एटले तेल चोळवापूर्वक स्नान करबुं नहीं.

ब्रण (ब्याधि)थी मुक्त थयेखाने तो ब्यतिपात थाने विष्टिमां पण स्नाननो निषेध नथी कह्यं वे के-

"रविमन्दारवारेषु विष्टौ वा व्यतिपातके । स्नातव्यं व्रणमुक्तेन शशिन्यशुक्रतारके ॥ १ ॥"

"रिव, शिन अने मंगळवारे विष्टि के व्यतिपातमां अशुज तारा अने चंद्र होय तो-पण त्रणथी मुक्त थयेखाए स्नान (अन्यंग स्नान) करवुं."

हवे नवुं अनाज खावानुं मुहूर्त्त कहे हे.-

जुङ्गीतान्नं नवं दस्वा ग्रुनेऽहि ध्रुवचान्ड्रने । पुनर्वसुकरश्रोत्ररेवतीनां द्वयेषु च ॥ ७१ ॥

अर्थ-शुन दिवसे रोहिणी, त्रणे उत्तरा अने मृगशिर नक्त्रमां तेमन पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अवण, धनिष्ठा,रेवती अने अश्विनी ए नक्त्रोमां नवुं अनाज दान दश्ने खावुं.

राजादिक स्वामीना दर्शननुं मुहूर्त्त कहे छे.--

राजावलोकनं कुर्यानमृङ्कित्रध्रुवोद्धितः। वासवश्रवणात्र्यां च सुधीः सर्वार्थसिद्धये॥ ७२॥

अर्थ-मृड, किप्र तथा धुव नक्षत्रमां तेमज धनिष्ठा अने अवण नक्षत्रमां बुद्धिमान् पुरुषे सर्व प्रयोजननी सिद्धिने माटे राजानुं दर्शनुं करवुं. राजाए करीने पोतपोताना स्वामी-छपरी समजवां.

हवे हसी तथा श्रम्बना कर्म विषे कहे हे.— गजवाजिकमें नेष्टं रौंडे पूर्वो ३ त्तरा ३ विशाखासु । जरिषित्रितयाश्लेषाद्वितयज्येष्टाद्वयेषु तथा ॥ ७३॥

श्रर्थ—श्रार्जा, त्रणे पूर्वा, त्रणे उत्तरा, विशाखा, जरणी, कृत्तिका, रोहिणी, श्रश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा श्रने मूळ, ए नक्त्रोमां इस्तीनुं कर्म एटले गजशांतिक, दांत कापवा विगेरे तथा वाजिकमे एटले श्रश्वनी शांति, श्रारती विगेरे करतुं इष्ट—शुज नथी श्रश्चीत् बीजां नक्त्रोमां शुज हे. श्रहीं सामान्य रीते कह्या हतां पण श्रा प्रमाणे विशेष जाणवुं.— "श्रश्वनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा श्रने स्वाति ए नक्त्रोमां हस्तीनुं कर्म शुज हे, तथा श्रश्वनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, धनिष्ठा, शतजिषक् श्रने रेवती ए नक्त्रोमां श्रश्वनुं कर्म शुज हे."

हवे गायो विगेरेनां बंधनस्थानादिकनुं मुहूर्त्त कहे हे.— गवां स्थानं च यानं च प्रवेशश्च न शस्यते । तिथौ जूताष्टदर्शाख्ये श्रोत्रचित्राध्ववे च जे ॥ ५४ ॥ अर्थ-गायो तथा जपलक्षणथी हस्ती, अश्व, जेंस विगेरेनुं स्थान एटखे बांधवानुं वेकाणुं नवुं करवुं ते, यान एटखे प्रथम चरवा लड़ जवुं ते, तथा प्रवेश एटखे गृहादि-कमां प्रथम प्रवेश कराववो ते कार्थमां आठम, चौदश अने अमावास्या तथा अवण, चित्रा अने ध्वन मक्त्रो प्रशस्त-शूज नथी.

हवे गायो विगेरेने वेचवानुं तथा खरीद करवानुं मुहूर्त कहे हे.— अयविकयो न हि गवां हस्तज्येष्ठाश्विनीधनिष्ठाच्यः। अन्यत्र पौष्णवारुणराधादित्यद्वचेच्यश्च ॥ ७५ ॥

श्रर्थ—इस्त, ज्येष्ठा, श्रश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, शतिषक्, विशाखा, पुनर्वसु श्रने पुष्य, श्राटखां नक्त्रो सिवाय बीजां नक्त्रोमां गायो विगेरेनो क्रय विक्रय शुज नथी। श्रर्थात् इस्तादिक नक्त्रोमां ज शुज है। वळी खब्ल कहे हे के—

"तीक्ष्णेषु पशुं दमयेदारण्यं न ध्रुवेषु संप्राह्मम् । पशुपोषण्ं विधेयं चरेषु दीक्षारतं मृद्धषु ॥ १ ॥"

"ती हण नक्षत्रोमां पशुनुं दमन करतुं योग्य हे, ध्रुव नक्षत्रोमां श्वरण्यनां पशु श्रहण् करवां योग्य नथी, चर नक्षत्रोमां पशुनुं पोषण् करतुं योग्य हे, श्रने मृष्ड नक्षत्रोमां दीका तथा मैथुन योग्य हे."

हवे हळ जोमवानुं मुहूर्त कहे हे.—

हसस्य वाहनारंत्रं न हि कुर्वीत किहैचित्। पूर्वासु कृत्तिकासार्यज्येष्टाक्रीत्ररणीषु च ॥ ५६ ॥

अर्थ-इळनुं प्रथम वहन त्रणे पूर्वा, कृत्तिका, अश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्घा अने जर-णीमां कदापि करवुं नहीं. अर्थात् बीजां नकत्रो शुज हे.

केत्र लेमवाना आरंजने दिवसे कयुं नकत्र ग्रहण करवा योग्य हे ? तेने माटे हळ-चक कहे हे.—

> हखचकेऽर्कमुक्ताद्भात्त्रयं नेष्टं शुजं त्रयम् । त्यजेन्नव शुजाय स्युः कृषौ जानि त्रयोद्श ॥ ९९ ॥

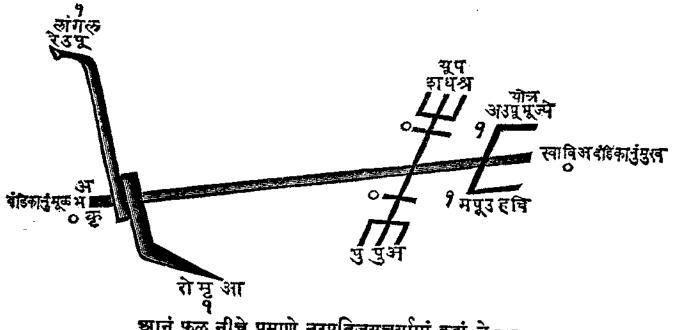
श्चर्य—हळचक्रने विषे सूर्ये जोगवीने मूकी दीधेखा नक्षत्रश्ची गणतां पहेखां त्रण्य मक्त्रो (एटखे दंडिकाना मूळमां रहेखां) श्रशुज हे, त्यारपहीनां एटखे हळ (खांगख)-नी नीचेनां त्रण शुज हे. पही दंक्तिकाना मुखनां त्रण तथा यूपना बन्ने हेमानां त्रण तथा मळीने नव नक्त्रो तजवा योग्य हे, श्वने बाकीनां एटखे बे योत्रनां मळीने दश तथा इळना मस्तकनां त्रण, ए तेर नक्त्रो खेतीना आरंजमां सारां हे. (कुख अठ्यावीश नक्त्रो खेवानां हे.)

> हळचक्रने स्थापन करवानी रीत आ प्रमाणे हे.— "क्षांगलं दंनिका यूपं योत्रहयसमन्वितम्। हलं न्यस्य लिखेज्ञानि रिवणा जुक्तिधिण्यतः॥ १॥ दंनिकाहलयूपानां हिन्न्यन्तेषु त्रयं त्रयम्। योत्रयोः पञ्चके न्यस्य गणना चक्रलांगले॥ १॥"

"लांगल, दंिनका, यूप अने वे योत्र सहित हळने स्थापन करीने सूर्ये जोगवेखा (जोगवीने मूकी दीधेला) नक्त्रश्री आरंजीने अनुक्रमे नक्ष्त्रो मूकवां. तेमां दंिनका, हळ (लांगल) अने यूप ए त्रणेना व वे लेका जपर त्रण त्रण तथा वे योत्रमां पांच पांच नक्त्रो मूकीने हळचक्रनी गणतरी करवी."

अहीं जरणीमां सूर्य रहेलो होय त्यारे अश्विनी नक्षत्र जोगवेलुं थयुं, तेथी अश्वि-नीने आरंजीने इळचकती स्थापना करी हे.

इळचकनी स्थापनां.



आनुं फळ नीचे प्रमाणे नरपतिजयचर्यामां कहां हे.— "दंभिकास्थे गवां हानिर्यूपस्थे स्वामिनो जयम्। खदमीर्खीगखयोत्रस्थे केत्रारंजदिनक्के ॥ १॥"

१ चक्रमां १ ए शुभनी नीशानी छे अने० ए अशुभनी नीशानी छे. आ॰ २२

"होत्र खेमवाना आरंजना दिवसनुं नक्त्र जो दंमिकामां रह्यं होय तो वळदनी हानि थाय, यूपमां रह्यं होय तो तेना स्वामी (खेडूत)ने जय थाय, अने खांगल के योत्रमां रह्यं होय तो लहमी प्राप्त थाय."

व्यवहारप्रकाशमां पण कह्यं हे के—

''पूष्णो जुक्तजतस्त्रयं न शुजदं श्रेष्ठं चतुर्धात्रयम् ,

न श्रेष्ठं त्रितयं च सप्तमजतो दिग्जाह्युजं पञ्चकम् ।

सीरेऽध्यं त्रितयं न पञ्चदशतोऽप्यष्टादशात् पञ्चकं,

श्रेष्ठं नैव शुजं त्रयं च विकृतेः २३ पिंड्रंशतेः सत्रयम् ॥ १ ॥"

"हळचक्रमां सूर्ये जोगवेला नक्षत्रथी प्रथमनां त्रण शुज नथी, त्यारपा चोथाथी त्रण सारां हे, त्यारपा सातमाथी त्रण सारां नथी, त्यारपा दशमाथी पांच सारां हे, त्यारपा पंदरमाथी त्रण सारां नथी, त्यारपा छाउपायी पांच सारां हे, त्यारपा विविद्यासाथी त्रण सारां हे, त्यारपा है विविद्यासाथी त्रण सारां है."

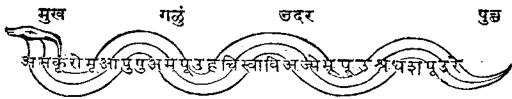
हवे बीज वाववानुं मुहूर्त्त कहे हे.— बीजोसौ प्रतिषिद्धानि पूर्वा जरणीष्ट्रयम् । सार्पादित्यश्चतिज्येष्टाविशाखावारुणान्यपि ॥ ५७ ॥

श्रर्थ—बीज वाववामां पूर्वी ३, जरणी, कृत्तिका, श्रश्लेषा, पुनर्वसु, श्रवण, ज्येष्ठा, विशाला श्रने शतिषक्, श्राटलां नक्त्रो निषिद्ध हे, एटले श्रशुज हे. ते सिवायनां वीजां सर्वे शुज हे; परंतु "छपर कहेला हळचक्रमां शुज होय एषुं नक्त्र लेषुं" एम रक्तमाला जाष्यमां कहां हे. विशेष श्रा प्रकारे हे.—

"स्थाप्योऽहिः सूर्यमुक्ताफ्राज्ञिनाड्येकान्तरक्रमात्। मुखे त्रीणि गते त्रीणि जानि घादश चोदरे॥१॥ वेदाः पुन्ने बहिः पञ्च दिनजाच फल्नं वदेत्। इवेममञ्जनमन्नाप्तिः कमान्निष्कणतेतिजीः॥१॥"

तिनामीवाळो सर्प स्थापवो. तेमां सूर्ये जोगवीने मूकेला नक्षत्रथी आरंजीने अनुक्रमे एक एक आंतरावाळां नक्षत्रो मूकवां. तेमां मुलमां त्रण, कंठमां त्रण, छदरमां बार, पृज्ञमां चार अने पांच वहार. पठी इष्ट दिवसे जे नक्षत्र होय तेने आश्रीने आ प्रमाणे फळ कहेतुं. तेमां जो इष्ट नक्षत्र मुलनां त्रण नक्षत्रमांथी होय तो ते दिवसे वावेलुं विष याय एटले धान्यनी वृष्टि थाय नहीं, गळानां त्रणमांथी होय तो अंजन एटले आंगारनी वृष्टि थाय, छदरनां बारमांथी होय तो अञ्चनी वृष्टि थाय, पृञ्जनां चारमांथी होय तो कण रहितपणुं (वगसर) थाय एटले के अनाज पाके नहीं, अने वहारनां पांच नक्षत्रोमांथी होय तो मूक्नादिक ईतिनो जय थाय.

त्रिनामीक सर्प स्थापनां.--



आ प्रमाणे रतमाला जाष्यमां कह्यं हे. तेमज व्यवहारप्रकाशमां पण कह्यं हे के ——
"अर्केलुकाष्टमात्रीणि घादशाच त्रयं शुजम्।

बीजोसी पोनशाश्रीणि एकविंशात्तथा त्रयम् ॥ १ ॥"

"सूर्ये जोगवेदा नक्तत्रथी गणतां आठमा नक्तत्रथी त्रण नक्त्रो शुज हे, बारमाथी त्रण शुज हे, सोळमाथी त्रण अने एकवीशमाथी त्रण सारां हे. अर्थात् आ बार नक्त्रो शुज हे. बीजां अशुज हे."

कृषिने माटे ज नक्तत्र आश्री शुजाशुज फळ कहे हे.— कृषिरूचे सूर्यक्तीदिषु एकु १ रसे ६ न्छ १ श्रि ३ जू १ रसे ६ न्छु १ युगैः ४। असुख १ सुख १ मध्य ३ खाजाध रति एरति६ मध्या १ र्था छः खए कुरकम शः छए

श्रर्थ—सूर्यना नक्त्रश्री आरंजीने प्रथमनां पांच नक्त्रोमां कृषि करी होय तो ते कृषि श्रसुखकारक छे, त्यारपछीना एक नक्त्रमां करी होय तो ते सुखकारक छे, त्यारपछीनां छ नक्त्रमां मध्यम छे, त्यारपछीनुं एक नक्त्र लाजकारक छे, त्यारपछीनां त्रण नक्त्रत्रों श्ररित (श्रसुख)कारक छे, त्यारपछीनुं एक नक्त्रत्र रित (सुख)कारक छे, त्यारपछीनुं एक लक्ष्मी श्रापनार छे, श्रमे त्यारपछीनां चार पु:खकारक छे.

श्रहीं कृषिना चक्रमां शनि नरनी जेम नरनो आकार नथी कहाँ। तोपण जाणवी, तेथी सूर्यना नक्षत्रथी श्रारंजीने मुख विगेरे नव अवयवीमां श्रठ्यावीश नक्षत्रो श्रा प्रमाणे स्थापवां.

कृषि नरनी स्थापना .---

मुखें	પ	श्रमुख
दक्तिण करे	₹	सुख
पादघये	६	मध्यम
वाम करे	\$	बाज
जदरे	₹	अरति

१ भरणी नक्षत्रमां रहेला सूर्यनी कल्पना करी छे, तेथी अश्विनी भुक्त थयुं, माटे अश्विनीथी आरंभ कर्यों छे.

मस्तके १ रति नेत्रदये ६ मध्यम गुदे १ खदमी गुह्ये ४ छःख

जळाशय नवुं करवानुं मुहूर्त्त कहे हे ---

जलाशयं न कुर्वीताश्विनीत्ररणीमिश्रजैः। श्राजपादश्रुतिस्वातित्राग्यदारुणजैस्तथा॥ ए०॥

अर्थ—वाव, कूवा, तळाव विगेरे जळाराय खोदाववानुं मुहूर्त अश्विनी, जरणी, मिश्र (विशाखा अने कृत्तिका), पूर्वाजाइपद, श्रवण, स्वाति, पूर्वाफाहगुनी अने दारुण पटखे अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूळ अने श्रार्जा, ए नक्षत्रोमां करतुं नहीं.

हवे वृक्ष वाववानं मुहूर्त्त कहे हे.—
न वृक्षरोपणं कुर्यात्कृरार्ज्ञादित्यवह्निजैः ।
अश्लोषामारुतज्येष्ठाधनिष्ठाश्रवणैरिष ॥ ७१ ॥

अर्थ-कूर नक्त्रो (त्रण पूर्वी, तरणी अने मघा), आर्थी, पुनर्वसु, कृत्तिका, अश्ले-षा, स्वाति, ज्येष्ठा, धनिष्ठा अने श्रवण, आ नक्त्रोमां वृक्तनुं आरोपण् क्रवुं नहीं.

इवे नृत्य करवानुं तथा शीखवानुं श्रने मदिरापाननुं मुहूर्त्त कहे हे .-

नृत्तं मैत्रे स्याक्षिनिष्ठाद्वये वा, इस्तज्येष्ठापुष्यपौष्णोत्तरे ३ वा । संधानाद्यं नाचरेत् किं च मुक्त्वा, धिष्ण्यं कृरं दारुणं वारुणं वा ॥ एर ॥

अर्थ-श्रनुराधा, धनिष्ठा, शर्तिषक्, इस्त, ज्येष्ठा, षुष्य, रेवती श्रने त्रण जत्तरा, श्राटलां नक्षत्रमां नृत्य (नाटक) करवानो तथा शीखवानो आरंज कराय हे. तथा जरणी, त्रण पूर्वा, मधा, अश्लेषा, ज्येष्ठा, मूळ, आर्जी अने शतिज्ञपक्, आ नक्ष्त्रो सिवाय बीजां नक्षत्रोमां मदिरा विगेरेनुं आचरण (पान) न करनुं.

आ त्रीजा विमर्शमां आटलां जपयोगी कार्योना नामपूर्वक तेमनां मुहूर्त्तों कह्यां. आ सिवाय बीजां पण शुजाशुज कार्यों हे, तेमनुं संदोपथी वर्णन पूर्णजडना मतने अनुसारे करीए हीए.—

"रित्ततिहि असुहजोगे कूरविद्यागाइ कूरवारे अ । आयरह कसिष्परकं असुहे अन्नत्य विवरीस्रं ॥ १ ॥"

अञ्चल कार्यो रिक्ता तिथिमां, अञ्चल योगमां, कूर क्षग्नादिकमां, कूर वारमां अने कृष्णपक्षमां करवा खायक हे, अने अन्यत्र एटले शुन्न कार्योमां एथी विपरीत जाणवं. [']जे खग्न ऋर **च वर्गवाळं, ऋर घहे छाध्यास करे**खं, छाथवा कर घहे जोये<mark>खं होय</mark> तेमज (आदि शब्द होवाथी) तीहण, जग्र अने मिश्र नक्त्रो कर ग्रहे अध्यास करेलां होय, श्रयवा पात श्रने जपग्रहादिकवमे हणायेलां होय तेवा समये श्रशूज कार्य करवामां आवे हे. मूळ गाथामां "कूरवारे ख्र" ख्रहीं च शब्द होवाथी कूर वारमां, जूर होरामां तथा कूर करण एटले विष्टि विगेरेमां, ए रीते जाणवुं. श्रन्यत्र विपरीत जाणवुं. एटले के शुज कार्यमां तिथि विगेरे सर्वे शुज ज लेवानां हे. लग्न पए शुज ह वर्गवालुं, शुज बहोए श्रध्यासित श्रने शुज प्रहोए जोयेखुं खेबुं. नक्त्रो पण कार्यने श्रनुसारे चर, खघु, मृड श्रने भ्रव तथा सौम्य ब्रहोए अध्यासित दोवानां हे. आ कार्योमां खप्ननो कांइ आबह नथी, केमके-"'खग्नं विवाहे दीक्षायां प्रतिष्ठायां च शस्यते" "विवाहमां, दीक्षामां अने प्रतिष्टामां क्षय्न क्षेत्रुं शुज हे." एम आगल कहेवाना हे, परंतु जेर्ड आ जपरनां शुज कार्योमां पण खन्ननो छादर करवा इन्ने हे, तेमने माटे ज छा (त्रीजा) विमर्शमां मौजी-बंधनथी आरंजीने अग्निना आधान पर्यतनां कार्योमां तथा आवता (चोथा) विमर्शमां थात्रामां श्रने गृहनुं निवेशन तथा प्रवेश करवामां सूत्रकारे ज (मूळ प्रंथकारे ज) खग्ननं बळ खेवानं कहां हे. अने जे कार्योमां खग्ननं बळ खेवानं कहां नथी, तेर्डमां आ प्रमाखे जाखवं.—

प्रथम गर्जाधान विषे कहे हे.—
शुक्रेज्ययोर्बेखवतोः शेषेण्वबलेषु पुंप्रसवयोगे ।
दिपदे लग्ने शीर्षोदयिनि च गुरुशुक्रयुतदृष्टे ॥ १ ॥
यदा त्रिकोणकेन्द्रस्थितयोरनयोः स्वजन्मलग्ने वा ।
लग्नोपचये चन्द्रे ऋतौ सुतार्थी जजेद्रार्याम् ॥ २ ॥

शुक्र श्रने गुरु बळवान होय, बीजा ग्रहो बळवान न होय, पुंपसव नामनो योग होय, लग्न बेपादनुं (मिथुन कन्या तुला धन कुंज) तथा शीर्षोदयी (मीन) होय श्रने गुरु तथा शुक्र सहित होय श्रथवा गुरु श्रने शुक्र देखता होय श्रथवा गुरु श्रने शुक्र त्रिकोण के केन्छमां रह्या होय श्रथवा पोताना जन्मना लग्नमां रह्या होय, श्रने चंछ लग्नमां के छपचयस्थानमां रह्यो होय त्यारे पुत्रना श्रथीं पुरुषे ऋतुना दिवसोमां (प्रथमना चार दिवस वर्जीने) स्त्री प्रत्ये गमन करवुं.

पुंप्रसव नामनो योग जातकमां श्रा प्रमाणे कह्यो हे.— विषमर्के विषमनवांशसंस्थिता गुरुशशांकलग्नाकीः। पुंजनमकराः समजेषु योषितां समनवांशगताः॥ १॥ बितनी विषमेऽर्कगुरू नरं स्त्रियं समगृहे कुजेन्डिसिताः। खग्नादिषमोपगतः शनैश्वरः पुत्रजनमकरः ॥ २ ॥

पुरुषना गुरु, चंद्र श्रने खग्ननो सूर्य विषम नक्त्रमां श्रने विषम नवांशमां रहेला होय तथा स्त्रीना (गुरु, चंद्र अने खग्ननो सूर्य) सम नक्त्रमां श्रने सम नवांशमां रह्या होय तो ते पुत्रना जन्मने करनारा हे. श्रशीत् श्रा पुंपसव योग कहेवाय हे. (१) पुरुषने खग्नश्री विषम स्थाने रहेला सूर्य श्रने गुरु बळवान् हे, श्रने स्त्रीने सम स्थानमां रहेला मंगळ, चंद्र श्रने शुक्र बळवान् हे, (श्रशीत् पुत्रने छत्पन्न करनारा हे,) श्रने खग्नश्री विषम स्थाने रहेलो शनि पण पुत्रना जन्मने करनारो हे.

्। इति गर्जाधानम् । १

इवे सीमंत विषे कहे हे.--

सीमन्तकर्म पुरुषे लग्नेडंशे च त्रिकोणकेन्द्रस्थे। जीवे त्रिकोणकेन्द्रव्ययाष्टमेष्वशुक्तरहितेषु॥ ३॥

पुरुष खग्नमां (विषम खग्नमां) तथा पुरुष (विषम) नवांशमां, त्रिकोणमां के केंद्र-स्थानमां गुरु रह्यो होय तथा त्रिकोणमां, केंद्रमां, बारमा के आठमा स्थानमां कोइ अशुज ग्रहो न होय त्यारे सीमंतकर्म कराय ठे.

। इति सीमन्तः । १

हवे जातकर्म तथा नाम करण विषे कहे है.-

गुरी जुगौ वा केन्डस्थे मिश्रतीहणोप्रवर्जिने । जातकर्म शिशोः कुर्यान्नामविन्यसनं तथा ॥ ४ ॥

मिश्र, तीरण अने उम्र नक्त्र वर्जित अन्य नक्त्रमां, तथा गुरु अथवा शुक्र होय त्यारे बाळकनुं जातकर्म तथा नाम करण थाय हे.

। इति जातकर्म ३ नामस्थापने ४। इवे कर्णवेधनुं मुहूर्त्त कहे हे.—

कर्णवेधः शुन्ने लग्ने सौम्यग्रहविलोकिते।

ऋरोज्जिते च लाजत्रिसंस्थैः सौम्यग्रहैः शुजः॥ ए॥

सौम्य प्रहोए जोयेखा तथा ऋर प्रहे रहित एवा शुज खप्तमां तथा सौम्य प्रहो श्रामीया-रमा के त्रीजा स्थानमां रह्या होय त्यारे बाळकनो कर्णवेध श्राय हे.

। इति कर्णवेधः । ए

हवे श्रन्न प्राशननुं मुहूर्त्त कहे हे.— श्रन्नप्राशनलग्ने मूर्स्यादिस्थे यहे फलमेवम् । द्यीणे चन्छे जिद्धः संपूर्णे सत्रदश्च यज्वा स्यात् । क्षेज्यसितैर्क्षग्नस्थैनीरुक् कूरैर्महान्याधिः ॥ ६ ॥ निधनत्रिकोणकेन्डान्त्यगैः फखं तद्यदेव तनुगेषु । खग्नात् षष्ठाष्टमगश्चन्डोऽनिष्टः शुज्रयुतोऽपि ॥ ७ ॥

श्चन प्राश्नना खन्नमां प्रथमादिक स्थानमां रहेखा यहोनुं फळ श्चा प्रमाणे हे.—खन्नमां हीण चंड होय तो ते (बाळक) जिक्कुक थाय, संपूर्ण चंड होय तो दातार तथा यह करनार याक्षिक थाय, खन्नमां बुध, गुरु श्चने शुक रह्या होय तो नीरोगी थाय, कर यह रह्या होय तो महाव्याधि थाय, सर्वे यहो (कोइ पण यह) श्चाहमें स्थाने, त्रिकोणमां, केंड्रमां के बारमा स्थानमां रह्या होय तो तेनुं फळ तनु जुवन (खन्न) नी जेवुं ज जाणवुं. तथा खन्नथी हुछे तथा श्वाहमें स्थाने रहेलों चंड्र शुज यहे युक्त होय तोपण ते श्वनिष्ट हे.

। इति स्रन्नप्राशनम्। ६

हवे हौरनुं मुहूर्त्त कहे हे.-

कौरं शुजकरिमष्टैः केन्ज्रस्थैनीं शुजं यहैः ऋरैः। दादशधनिवकोणाष्टगैर्जवेदसुखवृद्धिकरम्॥ ण॥

केंड्रस्थानमां सौम्य यहो रह्या होय तो तेमां कौर करावतुं शुजकारक हे, अने कूर यहो केन्ड्रमां रह्या होय तो ते अशुज हे. तथा सर्व यहो बारमुं, बीजुं, त्रिकोण अने आहमुं, आटखां स्थानमां रह्या होय तो असुख (इःख)नी वृद्धि करे हे.

। इति झौरम् । उ

हवे चौखकर्मनुं मुहूर्त्त कहे हे.-

चूका ग्रुजाय क्रुरकर्मजेषु, सौम्येषु केन्द्रे स्नियते कुजेऽस्नात्। कृषि क्यायोकुपती ज्वराय, जानुः सुतस्तस्य च पंगुतास्य ॥ ए॥

हौरकर्मनां नहात्रोमां तथा सौम्य ग्रहो केन्द्रस्थानमां रह्या होय ते वलते चूनाकर्म शुन्न हो, केंद्रस्थानमां मंगळ रह्यो होय तो शस्त्रधी मरण थाय, केंद्रमां हीण चंद्र रह्यो होय तो ते ह्य (नाश) ने माटे हो, केंद्रमां सूर्य रह्यो होय तो ते ज्वरने माटे हो, श्रने केंद्रमां शनि रह्यो होय तो ते पंगुपणानी प्राप्तिने माटे हो.

। इति चौलकर्म । ए

हवे विद्या तथा शिह्पना श्रारंजनुं मुहूर्त्त कहे हे .— सौम्बैर्दशमोपगतैर्क्षेग्ने चन्द्रात्मजे गुरौ वापि ।

विद्याशिष्ट्पारंजी जीवेन्डजवर्गगे चन्छे॥ १०॥

सौम्य प्रहो दशमा स्थानमां रह्या होय, बुध अथवा गुरु खन्नमां रह्या होय, तथा

गुरु के बुधना वर्गमां चंद्र रह्यो होय त्यारे विद्या श्रने शिष्टपनो श्रारंत्र करवो श्रुत्र हे.

हवे नाटक तथा काव्यना आरंज विषे कहे हे.— बुधे विखग्ने शशिनि इराशी गुरुवीकिते। हिबुकस्थैः शुजैर्नृत्यं काव्यं चारज्यते बुधैः॥ ११॥

खन्नमां बुध रह्यो होय, बुधनी राशिमां चंद्र रह्यो होय अने तेना पर गुरुनी हिष्ट पनती होय तथा शुज महो चोथा स्थानमां रह्या होय त्यारे माह्या पुरुषो नृत्य तथा काव्यनो आरंज करे हे.

> ॥ इति नाट्य ११ काव्यारंजी १२ ॥ हवे मंत्रादिक ग्रहण करवानो समय कहे हे — शीतांशी बुधराशिस्थे शुजेषूदयवर्तिषु । मंत्रादिग्रहणं कार्यं हित्वा पापग्रहोदयम् ॥ १२ ॥

चंद्र बुधनी राशिमां रह्यो होय, शुज बहो उदयमां वर्तता होय, अने पाप ब्रहनो उदय न होय त्यारे मंत्रादिक ब्रह्ण करतुं.

॥ इति मंत्रादिग्रहणं १३॥
इवे वेताखमंत्रादिकना साधवानुं मुहूर्त्त कहे हे.—
पित्र्येशयाम्यमूखेन्छ्रतेषु शुद्धेऽष्टमेऽपि च।
वेताखसिद्धिः पाताखे जुगौ हो कुंजलग्रगे ॥ १३॥

मघा, जरणी, मूख अने मृगशिरमां आठमुं स्थान शुद्ध होय त्यारे तथा घोथा स्थानमां शुक्र होय अने कुंज खग्नमां बुध रह्यो होय त्यारे वेताल मंत्रादिक सिद्ध थाय हे.

॥ इति वेताखमंत्रादिसाधनम् ॥ १४

हवे धर्मना आरंजनुं तथा नंदी मांग्वानुं मुहूर्त्त कहे हे.— हिबुकेऽकें गुरौ खग्ने धर्मारंजो रवेर्दिने। गुरुक्तखग्नवर्गे वा गुजारंजास्तयोवेखे॥ १४॥

सूर्य चोथा स्थानमां रह्यो होय अने लग्नमां गुरु रह्यो होय त्यारे रिववारने दिवसे धर्मनो आरंज करवो, अथवा गुरु, बुध अने लग्नना वर्गमां अथवा ते (रिव अने गुरु)- नुं बळ होय त्यारे शुज कार्यना आरंज करवा.

श इति धर्मारंज १५ नन्द्यादिके ॥ १६ हवे दीकानुं मुहूर्त्त कहे हे.— मोकार्थिनां च दीका स्थिरोदये कर्मगे त्रिदशपूज्ये पापैर्धर्मप्राप्तिर्वेदहीनैः प्रव्रजितयोगे ॥ १५ ॥

स्थिर जमना छदयमां गुरु दशमे स्थाने रह्यो होय, पाप महो नवमा स्थानमां रह्या होय स्थने बळहीन (निर्वळ) होय तथा प्रविज्ञत योग होय त्यारे मोहना अर्थाए दीहा महण करवी. चार, पांच के तेथी पण वधारे महो एक स्थानमां रह्या होय त्यारे प्रवन्तित योग कहेवाय है. तेमज जन्मवखते जे राशिमां चंद्र होय, ते राशिना स्वामीने बीजा महो जोता न होय, पण ते (स्वामी) शनिने जोतो होय, त्यारे प्रविज्ञत योग श्राय है. स्थयवा तो ते राशिना स्वामीने शिन जोतो होय त्यारे पण प्रवज्या योग कहेवाय है.

। इति दीका । १७

हवे आयुष्यनां कार्यो आश्री कहे हे.-

पूर्णे चन्डे वेश्म ४ गेडर्केडम्बर १० स्थे, जीवे लग्ने वाक्पतेर्वासरे च । श्रीमन्त्यायुष्याणि कार्याणि कार्याण्युक्तस्तस्मिन्नेव राज्याजिपेकः ॥ १६॥

परिपूर्ण चंड चोथा स्थाने रह्यो होय, सूर्य दशमे स्थाने रह्यो होय अने गुरु अग्नमां रह्यो होय त्यारे गुरुवारने दिवसे अझीवाळां आयुष्यनां कार्यो करवां, अने आ मुहूर्समां ज राज्याजिषेक करवानुं पण कह्यं छे.

। इति स्रायुष्यकार्याणि । १० हवे वस्त्र महण करवानुं मुहूर्त्त कहे हे.— वस्त्रमहणं कुर्यात् कृरैस्त्यक्ताष्टमान्तिमैर्छग्ने । उपचयजेषु च सिर्झिष्टेष्विन्दावुपचयस्थे ॥ १७॥

क्र महो आठमा के बारमा स्थानमां रहेखा न होय, खग्नमां आने छपचयस्थानमां रहेखा महो जपर शुज महोनी दृष्टि पमती होय तथा चंद्र छपचयस्थानमां रह्यो होय त्यारे नवा वस्त्रनुं महण करवुं.

। इति वस्त्रव्यापारः । १ए श्रौषधनो श्रारंत्र करवा विषे कहे हे.— श्रौषधसेवा विहिता शुजाय बद्धवत्सु सौम्यखेटेषु । निधनान्त्यसप्तमरिपुत्यक्ते ऋरे विना रिष्टम् ॥ १०॥

सौम्य प्रहो बळवान् होय, कूर प्रहो छाउमे, बारमे, सातमे छाने उछे स्थाने रह्या न होय, तथा रिष्ट योग न होय त्यारे छौषधनुं सेवन कर्युं होय तो ते शुजकारक है. (रिष्ट योगो जातकमां कह्या है, ते जाणवा.)

। इति स्त्रीपधंसेवा । २०

हवे रोगथी मुक्त थयेलाने स्नान करवानुं मुहूर्त्त कहे हे.— लग्ने चरे केन्द्रगते च जीवे, क्रूरे दिने रिक्तिथी कृशेन्दी। केन्द्रिकोणोपगतेश्च पापैः, स्नानं हितं रोगविमुक्तिकाले॥ १ए॥ चर लग्नमां केंडमां गुरु रह्यो होय, कूर वार होय, रिक्ता तिथि होय, चंड कृश होय अने पाप ग्रहो केंड अने त्रिकोण (नवमुं अने पांचमुं स्थान)मां होय त्यारे रोगथी मुक्त थयेलाने स्नान करवुं हितकारक हे.

> । इति नीरुक्सानम् । २१ नृपादिकनी सेवा करवानुं मुहूर्स कहे हे.—

जौमे दिवाकरे वा दशमायगते शुज्जबह्विखग्ने । विद्यायुधोपजीवी योनिवशादाश्रयेदीशम् ॥ २० ॥

मंगळ श्रथवा रिव दशमा के श्रगीयारमा स्थानमां होय अने लग्नमां कोइ शुज ब्रह होय त्यारे प्रथम कहेला योनिवैरनो त्याग करीने विद्याजीवी तथा शस्त्रजीवीए स्वामीनो श्राक्षय करवो

> । इति नृपादिसेवा । २२ हवे पशुकर्म विषे कहे हे.— लग्नस्थिते शुजे शुद्धेऽष्टमे धिष्णये स्वयोनिके । रक्ता वृद्धिः क्रयश्चापि पशूनां शोजनो जवेत् ॥ २१ ॥

सग्नमां शुज ग्रह होय अने आठमुं स्थान शुक्ष होय (कोइ ग्रहो न होय) त्यारे पो-तानी (पशुनी) योनिवाळां ज नक्त्रमां पशुर्जनुं रक्षण, वृद्धि अने ऋय पण शुज-कारक थाय हे

। इति पशुकर्म । २३

हवे खेतीकर्म तथा बीज अने वृक्षना वाववा विषे कहे हे.— दौर्बहये पापानां शुक्रेन्छवले गुरौ विलयस्थे। चन्छे जलराशिस्थे कुर्यात्कृषिकर्मवीजवृक्षोधीः॥ १२॥

पाप (ऋर) ग्रहो छर्बल होय, शुक्र स्त्रने चंद्र बळवान् होय, गुरु लग्नमां रह्यो होय स्त्रने चंद्र जळ राशि (कर्क, मकर, कुंच, मीन)मां रह्यो होय त्यारे कृपिनुं कर्म, बीजनुं स्त्रने वृद्धनुं स्त्रारोपण करदुं शुज्र हे

> । इति कृषिकर्म २४ बीज २५ वृक्षोप्तयः २६ । जळाशयोनां कार्य करवा विषे कहे छे.—

तोयानां कर्माणि प्रोक्तानि बुधोक्तमे गुरोरुदये। चन्द्रे जखचरराशौ ख १० स्थमिते दुर्वक्षैरशुक्तैः॥ १३॥

बुध अने गुरुनो छदय होय, चंद्र जळचर राशिमां रह्यो होय, शुक्र दशमा स्थानमां

रह्यो होय अने अशुज महो दुर्वळ होय त्यारं वाव, कूवा, तळाव विगेरे जळाशयोनां कार्यो करवां शुज हे.

। इति जलाश्रयादि । १९ डुकान मांम्यानुं मुहूर्त्त कहे हे.— शुजदा यद्योमचरैः सौम्यैर्धग्राज्जवित्तलाजगतैः । कूरैर्व्ययाष्टवर्ज विपणिः सेन्दौ सिते लग्ने ॥ १४॥

सौम्य बहो लग्नमां, दशमा, बीजा अने अगीयारमा स्थानमां होय, कूर बहो बारमा के आठमा स्थानमां न होय अने चंज तथा शुक्र लग्नमां रह्या होय त्यारे नवी जिकान मांमवी शुजदायक हो।

। इति विपण्टिः । २०

धनने निधानमां मूकवुं ऋथवा कोइने देवुं ए विगेरे धनना प्रयोगनुं मुहूर्त्त कहे हे.— वित्तप्रयोगकालश्चरोदये पुत्रधर्मकेन्द्रेषु ।

शुज्यकेष्वय निधने यहरहिते शोजनः प्रोक्तः ॥ १५॥

चर खग्नमां पांचमुं, नवमुं अने केन्प्रस्थान शुज यहोए युक्त होय अने आठमुं स्थान यह रहित होय त्यारे वित्त (धननो) प्रयोग (न्यासादिक) शुज कह्यो हे.

। इति वित्तप्रयोगः । १एं

द्वे करीयाणांना क्रय विक्रयनुं मुहूर्त्त कहे हे.— दशमैकादशे लग्ने वित्तकेन्बित्रकोणगैः। श्रुत्तैः पण्यस्य कर्मोकं वर्जियत्वा घटोदयम्॥ १६॥

पोतानी जन्मराशिष्ठी श्रथवा जन्मलग्नथी दशमे, श्रगीयारमे लग्ने, बीजे, केंब-स्थाने श्रने त्रिकोए एटले नवमे तथा पांचमे स्थाने श्रुप्त ग्रहो रह्या होय त्यारे पएय—प्रांम (करीयाएां) नो क्रय विकय श्रुप्त हे, परंतु एक कुंप्त लग्ननो त्याग करवो. (कुंप्त लग्न न होवुं जोइए.)

। इति ऋयविक्रयौ । ३०

हवे रसना संग्रह करवा विषे तथा चोरी करवा विषे कहे हे.— चन्डोदये तिहवसे केन्डेज्ये रससंग्रहः। स्तेयस्य समयो लग्ने बुधे जीमे नजास्थिते॥ १९॥

लग्नमां चंद्र रह्यो होय अने गुरु केंद्रस्थानमां रह्यो होय त्यारे रस (घी, तेल विगेरे)नो संग्रह करवो शुजकारक हे. लग्नमां बुध होय अने दशमा स्थानमां मंगळ होय त्यारे चोरी करवाथी लाज थाय हे.

। इति रससंग्रह ३१ स्तेये ३२।

हवे साम्। हाँ रीते कहे हे.--

व्ययनैधनसंशुक्षौ सह्हित्र ेरिये । सर्वारंत्रेषु संसिक्तिश्चन्द्रे चोपचयस्थिते ॥ १०॥

बारमुं अने आठमुं स्थान शुद्ध होय (कोइ ग्रहो न होय) तथा इष्ट पुरुषना जन्म-क्षप्नथी अथवा जन्मनी राशिशी जपचयस्थानमां एटले ३-६-१० अने ११ मा स्थान-मां रहेली राशिजं लग्नमां रही होय तथा जपचयस्थानमां चंद्र रह्यो होय त्यारे आरंजेखां सर्व शुज कार्यनी सिद्धि श्राय हे.

> प्रायः शुन्ता न शुन्नदा निधनव्ययस्था, धर्मान्त्यधीनिधनकेन्द्रगताश्च पापाः । सर्वार्धसिद्धिषु शशी न शुन्नो विद्यप्ते सौम्यान्वितोऽपि निधनं न शिवाय द्वप्तम् ॥ १ए॥

श्रावमा श्रमे वारमा स्थानमां रहेला शुज ग्रहो पण प्राये करीने शुज फळने देनारा नथी, तथा नवमा, वारमा, पांचमा, श्रावमा श्रमे केंज (१-४-७-१०) स्थानमां रहेला कूर ग्रहो पण शुजदायक नथी. तथा चंज शुज ग्रहो सहित होय तो पण ते लग्नमां सर्व कार्यनी सिद्धमां शुजकारक नथी. तेमज श्रावमुं स्थान लग्न होय एटले के इष्ट पुरुषना जन्म- लग्नथी श्रथवा जन्मराशिश्री श्रावमुं लग्न होय तो ते कोइ पण कार्यमां लेवा योग्य नथी.

हवे क्र्र कार्यने आश्रीने कहे हे.— श्रानिचारविधिर्वेद्धवांश्चन्द्रे क्र्रस्य योगवर्गस्थे। रिपुनिधने द्धग्रस्थे रिष्टयोगे बुधे वद्धिनि॥ ३०॥

हणवाने रुझेला शत्रुना जन्मलग्नथी अथवा जन्मराशिषी आठमी राशि लग्नमां रही होय, रिष्ट योगमां बुध बळवान् होय अने चंद्रने कूर ग्रहनो योग होय अथवा कूर ग्रहना वर्गमां चंद्र रहेलो होय त्यारे अजिचारनो प्रयोग बळवान् (सिद्धिकारक) हे. इत्यादि.

आ दारनां सर्व कार्योमां जेटलां निरवद्य (पाप रहित) कार्यो हे, तेटलां कार्यो शुजने इन्नता पुरुषोए आदरवा योग्य हे, अने जेटलां कार्यो धर्मने बाधा करनारां हे, तेटलां पापथी जय पामनार पुरुषोए त्याग करवा योग्य हे. तथा पाप ब्यापारमां प्रवर्तेला पुरुषो पासे तेवां कार्योनी प्ररूपणा पण करवी नहीं.

। इति कार्यदारम् । उ

॥ इति श्रीमति श्रारंत्रसिष्टिवार्त्तिके कार्यपरीक्षात्मकस्तृतीयो विमर्शः॥ ३

१ मंत्रादिकना प्रयोगधी शत्रुनो नाश करवो ते.

। अय चतुर्थो विमर्शः।

। श्रथ गमदारम् । ए हवे गमदार कहे हे, तेमां प्रथम प्रस्थान विधि कहे हे.— प्रस्थानमन्तरिह कार्मुकपञ्चशत्याः, प्राहुर्धनुर्दशकतः प्रतश्च प्रूत्ये ।

मामान्य र मांमिलक र जूमिचुजां क्रमेण,

स्यात् पश्च १ सप्त २ दश ३ चात्र दिनानि सीमा ॥ १॥

श्रर्थ—प्रस्थान एटले यात्राना मुहूर्त्तने साधवा माटे आगळथी जे करवामां आवे हे ते (पत्तानुं), आ प्रस्थान दश धनुषथी छपरांत अने पांचसो धनुषनी अंदर, एटलुं छूर करवाथी शुन्न हे. तेना समयनी सीमा सामान्य माणसोने १, मांमिलक राजाने १ तथा पृथ्वीपितने अनुक्रमे पांच, सात अने दश दिवसनी हे.

यात्रामां जे तिथि, वार अने नक्त्र कहेवामां आवशे, ते ज आ प्रस्थानमां पण् जाण्वां. ते प्रस्थान राजा तथा आचार्य विगेरेए पोतानी जाते ज करवानुं छे. तेमां छत्र, धनुष, खङ्ग, शय्या, आसन, आयुध, बख्तर, दर्पण् विगेरे प्रस्थाननी वस्तुचं तथा अक्ष्माळा अने पुस्तक विगेरे वस्तुचं चंदनपूजादिक पूर्वक स्थापवी. श्वेत वस्त्रादिक पण् स्थापवां, परंतु काळुं वस्त्र, जीर्ण वस्त्र विगेरे स्थापवुं नहीं. तेमज शंख, मिदरा, औषध, खवण, तेख, गोळ, जोमा विगेरे तथा बीजी पण् जीर्ण वस्तुचं स्थापवी नहीं. ते प्रस्थान नजीकमां नजीक दश धनुष चपर अने वधारेमां वधारे पांचसो धनुष सुधीमां मूकवुं. अहीं चोबीश आंगळनो एक हाथ, अने चार हाथनुं एक धनुष ए धनुषनुं प्रमाण जाण्वुं. वृद्ध परंपरा एवी छे के प्रस्थान दिक्षण बाजुए मूकवुं. आ प्रस्थान पृथ्वीपतिने—मोटा राजाने दश दिवस सुधी पहोंचे छे, एटखे के प्रस्थान कर्या पछी एक स्थान दश दिवसनुं छद्वंघन न करवुं, पण दश दिवसनी अंदर आगळ प्रयाण करवुं. ते ज प्रमाणे मांक- खिक राजाए सात दिवसनी अंदर प्रयाण करवुं, अने बीजा सामान्य मनुष्योए पांच दिवसनी अंदर प्रयाण करवुं. कदाच कोइ कारण्यी वधारे वखत एक स्थाने रहेवुं पर्ने अथवा प्रस्थाननी वस्तु राखी मूकवी पर्ने तो फरीथी बीजुं मुहूर्त खड़ने प्रस्थान करेखा स्थाननी अगळ चाववुं, पण प्रथमना मुहूर्त्तना बळ्यी चाववुं नहीं.

विशेष ए हे जे कोइक स्थाने एटले शत्रु राजादिकना स्थाने जवाना छद्देश (इरादा)-ष्टी ते स्थान प्रत्ये सारा खग्न मुदूर्से चालेला राजा विगेरे घणां प्रयाणो चालीने पडी (यचमां) कोइ एक प्रदेशमां वधारे मुदत रहे तो ते वावतमां अन्यना मतो आ प्रमाणे हे.—"जो कोइ स्थाने त्रण दिवस सुधी रहे तो पत्नी आगळ सारा मुहूर्त्तमां वळ खड़ने ज चालवुं." एम गौतम कहे हे. "पांच दिवस रहे तो फरीथी मुहूर्त्त लेवुं." एम अति कहे हे. "सात दिवस रहे तो वींजुं मुहूर्त्त लेवुं." एम वामन कहे हे. लक्ष पण कहे हे के—

"योधानामवि(नु)रोधेन तोयेन्धनवद्येन वा । ज्यादिरात्रोषितां सेनां पुनर्जाञ्जेण योजयेतु ॥ १ ॥"

"योधार्जना श्रानुसरवावमे करीने (तेर्जनी इन्नाथी) श्राथवा जळ श्राने इंधनना कार-एथी त्रए, पांच के सात दिवस सुधी रहेली सेनाने फरीथी कटयाए साथे जोमबी एटले के प्रयाए वखते फरीथी शुज मुहूर्त्त लेवुं."

परंतु आ सर्वे मतो अयोग्य हे, केमके "प्रथम सारुं मुहूर्त्त निश्चय करीने चाले पही घेर न आवे त्यांसुधी तेनुं ते ज लग्न-मुहूर्त्त चाले हे एम घणानो मत हे." ए प्रमाणे रक्षमाला जाष्यमां कहां हे. तथा एक सारा मुहूर्त्ते तथा शुज लग्ने चालेलाए एक ज यात्रा करीने पाहा फरबुं, पण प्रथमना लग्न मुहूर्त्तना बळे करीने ज बीजी यात्रा पण न करवी. ते विषे लग्न कहे हे के—"संसाध्यकां यात्रां वीर्यादवहीयते ग्रहः सर्वः" । "एक यात्राने सिद्ध करीने सर्व ग्रहो बळहीन थाय हे." वहाणना प्रस्थानने आश्रीने व्यवहार-सारमां आ प्रमाणे लख्युं हे.—

"रेवत्यां तु समुत्थानं श्रेष्ठं स्वामिहितावहम् । श्रिष्टित्यां गतगामित्वं नौर्जवेद्धहुरत्वजृत् ॥ १ ॥ श्रिक्यापामृगे चैव धनिष्ठाहस्तवैष्ण्वे । प्रस्थापयेत्ततो नावं सर्वकामसमृद्धये ॥ १ ॥ पूर्वाफहगुनिसौम्ये च हस्तचित्रासु वैष्ण्वे । वादित्रमंगलैश्चापि पोतं संचारयेकाले ॥ ३ ॥"

"रेवती नक्त्रमां वहाण तैयार करवुं श्रेष्ठ हे तथा स्वामीने हितकारक हे. अश्वि-नीमां ते (वहाण)मां करीयाणां जरवाथी वहाण घणां रत्नोथी पूर्ण थाय हे, अनु-राधा, मृगशिर, धनिष्ठा, हस्त, श्रवण, एटखां नक्त्रोमां वहाणनुं प्रस्थान करवुं ए सर्व कामनी सिद्धिने माटे हे, तथा पूर्वाफाहगुनी, मृगशिर, हस्त, चित्रा, अने श्रवण नक्त्रमां वाजित्र मंगळे करीने वहाणने जळमां चलाववुं ए शुजकारक हे." मूळ श्लोकमां सीमा शब्द खख्यों हे तथी पांचमे विगेरे दिवसे चालवुं ज जोइए एवो नियम कर्यों हे.

हवे यात्रामां शुज एवां नव नक्षत्रोमांनां कयां नक्षत्रोमां प्रस्थान करेखो पुरुष पांच दिवस पहेखां पण चाली शके ? ते कहे हो.—

श्रुतौ तदहरन्येयुर्धनिष्टापुष्यपौष्णने । तृतीये मैत्रमृगयोर्हस्ते तुर्येऽहनि वजेत् ॥ १ ॥

श्रर्थ—जो अवण नक्षत्रमां प्रस्थान कर्यु होय तो ते ज दिवसे प्रस्थानना स्थानश्री श्रागळ चालबुं, धनिष्ठा, पुष्य श्रने रेयतीमां प्रस्थान कर्युं होय तो बीजे दिवसे प्रयाण करवुं, श्रनुराधा के मृगशिरमां प्रस्थान कर्युं होय तो त्रीजे दिवसे प्रयाण करवुं, श्रने हस्त नक्षत्रमां प्रस्थान कर्युं होय तो चोथे दिवसे चालबुं. श्रवशेषथी श्रिश्वनी श्रने पुनर्व-सुमां प्रस्थान कर्युं होय तो पांचमे दिवसे श्रवश्य चालबुं जोइए. ए ज प्रमाणे सात दिवस श्रने दश दिवसने विषे पण संप्रदाय प्रमाणे श्रागळना दिवसोमां प्रयाणनो नियम करी द्वेवो.

हवे प्रयाखना समयनी शुद्धि कहे हे.---

यात्रा दिनतिथितारावलगुद्धौ मृगकरानुराधासु । आश्विनपौष्णधनिष्ठाश्चत्यादित्यद्वये श्रेष्ठा ॥ ३ ॥

अर्थ—दिवस, तिथि अने ताराबळनी शुद्धि होय तथा मृगशिर, हस्त, अनुराधा, अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा, अवण, पुनर्वसु अने पुष्य, ए नक्त्रोमांनुं कोइ एक होय त्यारे यात्रा (प्रयाण) श्रेष्ठ हे.

दिवसनी शुद्धि हर्षप्रकाशमां आ प्रमाणे कही हे.—
"रयज्ञन्न १ मप्रज्ञन्नं २ पर्यमपवर्णं ३ तहासनिग्घायं ४ ।
सुरधणु ५ परिवेस ६ दिसादाहाइ ९ जुस्रं दिणं छुछं॥ १॥"

"आकारा धूळथी न्याप्त होय १, आकारा वादळांथी न्याप्त होय १, प्रचंम पवन वातो होय २, वज्रधात थतो होय (गमगमाट थता होय) ४, आकारामां इंद्रधनुप खेंच्युं होय ५, चंद्र तथा सूर्यने फरतुं कुंमाळुं थयेल होय ६, तथा दिशाचे बळती होय ७, तो ते दिवस इष्ट ने एम जाण्डुं. अहीं वर्षाऋतु विना आवां चिह्नो थतां होय तो ज इष्ट दिवस जाण्डों. एम सर्वत्र जाण्डुं. आ चिह्नोथी रहित एवो दिवस शुद्ध जाण्डों."

अथवा तो सौम्य वारोए करीने दिवसनी शुद्धि जाणवी. ते विषे व्यवहारसारमां कह्यं हे के—

"गमनेऽर्कादयो वाराः क्रमशः कुर्वते फलम् । नैःस्व्यं १ धनं २ रुजं ३ ड्रव्यं ४ जयं ५ चैव श्रियं ६ वधम् ७ ॥ १ ॥" "प्रयाणने विषे रिव विगेरे वारो स्त्रनुक्रमे स्त्रा प्रमाणे फळने स्त्रापे हे.—निर्धनता १, धन २, रोग ३, धन ४, जय ५, लक्की ६ स्त्रने वध-नाश ७."

"राजादिकने प्रयाणमां रिववार पण शुज हे," एम व्यवहारप्रकाशमां कह्यं हे. तथा

हर्षप्रकाशमां कहेल हे के—"पिनवइनवमरुमिचलदसीसु गमणंकरे न बुहवारे" एकम, नोम, श्रातम अने चौदसे गमन करवुं, पण बुधवारे गमन न करवुं. अथवा वारनी शुद्धि यतिवक्षजमां आ प्रमाणे कही हे.—

"चैत्राद्या ित्रुणा मासा वर्त्तमानिदनैर्युताः। सप्तजिस्तु हरेज्ञागं यञ्चेषं तिहनं जवेत्॥१॥ श्रीदिनः १ कलहश्चैव १ नन्दनः ३ कालकर्णिका ४। धर्मः ५ क्यो ६ जय ९ श्चेति दिना नामसदक्फलाः॥ १॥"

"चैत्रादिक मासथी गणतां जेटलामो मास चालतो होय तेने बमणा करवा, तेमां रिव-वारादिकथी गणतां चालतो दिवस जेटलामो होय तेटला छमेरवा. पढ़ी तेने साते जागवा. जेटला शेष रहे तेटलामो ते दिवस अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवो—श्रीदिन १, कलह १, नंदन २, कालकर्णिका ४, धर्म ५, क्य ६ अने जय ७. आ दिवसोनुं शुजाशुज फळ पोताना नाम प्रमाणे जाणवुं."

तिथिमां पक्त, छिद्र, श्रवम, फह्गु, दग्ध श्रने क्र्रं ए नामनी तिथिनो त्याग करवाशी तिथिनी शुद्धि कहेवाय छे, पूर्णिमा पण त्याज्य छे. ते विषे व्यवहारसारमां कह्यं छे के— "पूर्णिमायां न गन्तव्यं यदि कार्यशतं जवेत्" "सो कार्य होय तोपण पूर्णिमाने दिवसे प्रयाण करतुं नहीं.

तारानी शुष्ति माटे "जन्म तारा श्राधान तारा" विगेरे प्रथम कहां हे, ते प्रमाणे जा-एवं. यात्रामां तारानं बळ श्रवश्य प्रहण करवा योग्य हे. नक्षत्रोमां श्राजित् पण् यात्रामां श्रेष्ठ हे. ते विषे लक्ष कहे हे के—"श्राजिति कृतप्रयाणः सर्वार्थान् साधये-न्नियतं" "श्राजितिमां प्रयाण करनार सर्व कार्यने श्रवश्य साधे हे.." वळी दिनशुद्धिमां श्रा प्रमाणे विशेष कहां हे के—

> "दसमि तेरिस पंचिम बीअगो, जिगुसुर्छ गमणेऽतिसुहावहो। गुरु पुणवसु पुस्स विसेसर्छ, सयजिसा अणुराह बुहे तहा॥ १॥"

"गमनमां दशमी, तेरस, पांचम, बीज ने शुक्रवार स्त्रति शुजकारक हे. पुनर्वसु, पुष्य स्त्रने गुरुवार विशेषे करीने शुजकारक हे. तथा शतजिषक् स्त्रने स्ननुराधा बुधवारे शुजकारक हे."

तथा चंघ संबंधी गोचरनुं, शिव जुजग स्रादि दिवस रात्रि मुहूर्त्तोनुं, स्राने खग्नवख होय तो मुहूर्त्त ब्रहण करनुं.

> "पहि कुसलु लिंग तिहिं कजासिष्टि लाजं मुहुत्तर्र होइ। रिकोणं आरुग्गं चंदेणं सुरकसंपत्ती॥ १॥"

"शुज लग्नथी मार्गमां कुशल होय. शुज तिथिथी कार्यसिष्ठि याय. शुज मुहूर्तथी खाज याय. शुज नक्षत्रथी खारोग्य याय. अनुकूल चंद्रथी सुखप्राप्ति याय." तथा "शुज सम्ने करीने सर्वे तिथ्यादिकना गुणो पमाय हे." एम लक्ष कहे हे.

हुत्र क्षप्त करान सर्व ।तथ्या।दकना गुला पमाय छः एम क्रम हुने प्रयाणमां मध्यम छाने निंद्य नक्षत्रो कहे छेः—

मध्या तु ध्रुवपूर्वाज्येष्ठाद्वयवारुणेषु यात्रा स्यात् । निन्दाद्वातरणीद्वयचित्रात्रयसार्पपेत्रेषु ॥ ४ ॥

श्चर्य—ध्व नक्षत्र (रोहिणी श्चने त्रणे जत्तरा), पूर्वा त्रणे, ज्येष्ठा, मूळ श्चने शत-तिषकमां यात्रा मध्यम फळवाळी हो, श्चने श्चार्का, जरणी, कृत्तिका, चित्रा, स्वाति, विशाखा, श्वश्लेषा श्चने मघा, श्चाटखां नक्षत्रोमां यात्रा करवी निंध-श्चशुज हो. "श्चा निंध नक्षत्रोमां प्रयाण कर्युं होय तो ते कदापि पाहो श्चावतो नश्ची," एम व्यवहार-सारमां कद्यं हो. नारचंद्रमां तो श्चा प्रमाणे कद्यं हो के—"व्येष्ठा श्चने मूळमां यात्रा करवी श्रेष्ठ हो, चित्रा, स्वाति, श्रवण श्चने धनिष्ठामां मध्यम हो, तथा त्रण जत्तरामां निंध हो." विशेष श्चा प्रमाणे जाणवुं.—

> "श्रशुजे जे शुजे घस्ने दिवा यात्रादि साधयेत्। शुजे जे त्वशुजे घस्ने रात्री यात्रादि साधयेत्॥ १॥"

"श्रशुज नक्तत्र होय श्राने शुज दिवस होय तो दिवसने विषे प्रयाणादिक करतुं, तथा नक्तत्र शुज होय श्राने दिवस श्रशुज होय तो प्रयाणादिक रात्रिए करतुं," कारण के—"नक्तत्रं बलवजात्रों दिने बलवती तिथिः"। "रात्रिए नक्तत्र बळवान् होय हो, श्राने तिथि दिवसे बळवान् होय हो," एम लक्ष कहे हो.

हवे नक्षत्रने श्राश्रीने यात्रामां दिनांशनो नियम कहे हे.— न दिवाचे ध्रुवमिश्रैस्तीक्णैर्मध्येऽय लघु जिरन्त्येऽंशे । अंशेष्वित रात्रेरिप मैत्रो १ प्र १ चरै ३ ने जैर्यात्रा ॥ ५॥

ऋर्य—दिवसना त्रण जाग करवा, तेमां पहेला जागमां ध्रुव ऋने मिश्र नक्त्र होय तो यात्रा न करवी, बीजा जागमां तीइण नक्त्र होय छने त्रीजा जागमां लघु नक्त्र होय तो यात्रा न करवी. ए ज रीते रात्रिना पण पहेला जागमां मैत्र नक्त्र होय, बीजामां छग्न होय छने त्रीजामां चर नक्ष्त्र होय त्यारे यात्रा (प्रयाण) न करवी. तेना फळ विषे लक्ष कहे ने के—

> "धनहानिर्मृत्युर्वा नियतो जंगः पराजयश्चैव । यस्मादेजिः काद्धैः प्रायेण विवर्जयेत्तस्मात् ॥ १ ॥"

"जेथी करीने स्था छपर कहेला काळे प्रयाण कर्युं होय तो प्राये करीने धननी हानि,

मृत्यु, श्रवश्य जंग श्रयवा पराजय थाय हे,तेथी करीने ए नक्षत्रो ए काळे वर्जवा योग्य हे." श्रा छपर कहेला काळे पण प्रयाण थड़ शके, तथा श्रागळ कहेवाशे एवा परिघमां पण प्रयाण थड़ शके. एवां नक्षत्रो कहे हे.—

> सर्वदिग्द्वारको पुष्यहस्तो मैत्राश्विनीयुतो। तावेव सर्वकाखीनो मृगश्रुतिसमन्वितो॥६॥

श्चर्य—पुष्य, हस्त, श्रनुराधा श्चने श्वश्विनी, ए नक्त्रो सर्व (श्वाठे) दिशामां दार (मुल)वाळां ठे, एटले के श्वा नक्त्रोमां परिघ के नक्त्र दिक्शूळ होतो नथी. नार-चंद्रमां कह्यं ठे के श्रवण श्चने रेवती पण सर्व दिशामां दारवाळां ठे. पुष्य, हस्त, मृग-शिर श्चने श्रवण, ए नक्त्रो सर्वकालीन (सर्व काळवाळां) ठे, एटले के श्वा नक्त्रोमां छपरनो (पांचमो) श्लोक गणवो नहीं श्वर्शात् श्चा नक्त्रो होय तो छपरनो श्वशुन काळ पण शुन गणवो.

दिनशुद्धिमां तो दिग्यात्रामां छ नक्त्रोने सर्व दिशामां सर्वकालीन कह्यां छे.— "सबदिसि सबकालं रिद्धिनिमित्तं विहारसमयम्मि ।

पुस्सस्सिणि मिग इत्था रेवइ सवणा गहेखा ॥ १ ॥"

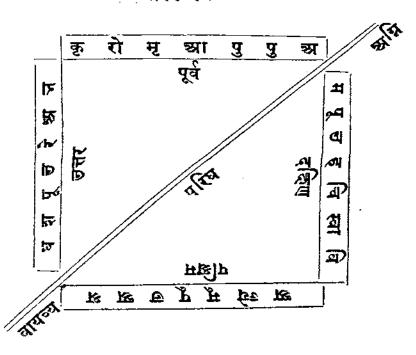
"पुष्य, श्रश्विनी, मृगशिर, इस्त, रेवती श्रने श्रवण, ए छ नक्त्रो सर्व दिशामां सर्व काखीन छे, तेमने विहारसमये समृष्टिना निमित्ते ग्रहण करवां, एटखे के ए नक्षत्रोमां प्रयाण करवाथी समृष्टि मळे छे."

हवे यात्रामां दिशानी शुद्धि कहेवा माटे परिध कहे हे.— सप्त सप्त गमने वसुक्रहाड्यराप्रजृतिदिक्त शुजानि ।

विद्वायुपरिघोऽत्र न खंघ्यो, मध्यमानि तु मिथः खदिशोः स्युः प्र अर्थ— छत्तर दिशायी आरंजीने चारे दिशामां धनिष्ठा नक्त्रयी सात सात नक्त्रो गमन करवामां शुज बे. आ गमनमां अग्नि अने वायव्य कोणनो परिघ छद्यंघन करवा योग्य नथी अने पोतानी ने दिशार्छनां नक्त्रो परस्पर स्व कहेवाय बे, ते गमनमां मध्यम बे.

धनिष्ठा नक्षत्रथी आरंजीने सात सात नक्ष्त्रो छत्तर विगेरे चारे दिशामां गमन कर-वाने विषे शुज हे, एटखे के आ सात सात नक्ष्त्रो छत्तरादिक दिशाना घारवाळां हे.— धनिष्ठाथी सात नक्ष्त्रो छत्तर घारवाळां हे, तेथी ते नक्ष्त्रोमां छत्तर दिशानुं प्रयाण शुज हे. ए रीते चारे दिशामां जाणवुं. स्थानांग सूत्र अने चंद्रप्रक्षिति वृत्ति विगेरेमां खख्युं हे के—"धनिष्ठानी जेम कृत्तिकाथी आरंजीने, मधाथी आरंजीने अने अनुराधाथी आरंजीने सात सात नक्ष्त्रो अनुक्रमे पूर्व, दिक्षण अने पश्चिम दिशाना घारवाळां हे, तेथी ते ते नक्ष्त्रोमां ते ते दिशामां यात्रा करवी शुज हे." अहीं सप्त रेखावाळा चक्रनी जेम पूर्वीदिक चार दिशामां कृत्तिकाथी सात सात नक्त्रो स्थापवां, अने अग्नि तथा वायव्य खूणामां खांबो परिघ करवो.

परिघ यंत्र.



श्रा श्रिप्त श्रने वायव्य खूणानी वच्चेनो रेखारूप परिघ छद्यंघन करवा योग्य नथी, एटखे के धनिष्ठा विगेरे चौद नक्त्रोमां छत्तर श्रने पूर्वमां ज जबुं, श्रने मघा विगेरे चौद नक्त्रोमां दक्षिण श्रने पश्चिममां ज गमन करबुं, पण छत्तर श्रने पूर्वना द्वारवाळां नक्त्रमां दक्षिण के पश्चिममां गमन न करबुं इत्यादि. तेमां पण परस्पर स्वजनरूप नक्त्रों के जे परिधना एक जागमां (छत्तर पूर्वमां श्रमे दिहण पश्चिममां) जे नक्त्रों रहेखां हे तेनी बन्ने दिशानां ते ते नक्त्रों यात्रामां मध्यम हे, एटखे शुज पण नथी तेमज श्रशुज पण नथी. तात्पर्य ए हे जे धनिष्ठादिक सात नक्त्रोना कृत्तिकादिक सात नक्त्रों स्वजन हे, श्रने ते (स्वजन)नी दिशा पूर्व हे, तेथी ते (पूर्व)मां गमन करवामां धनिष्ठादिक सात नक्त्रों स्वजन हे श्रने तेनी दिशा छत्तर हे, तेथी छत्तरमां गमन करवामां कृत्तिक सात नक्त्रों स्वजन हे श्रने तेनी दिशा छत्तर हे, तेथी छत्तरमां गमन करवामां कृत्तिक सात नक्त्रों स्वजन हे श्रने तेनी दिशा छत्तर हे, तेथी छत्तरमां गमन करवामां कृत्तिक सात नक्त्रों सध्यम हे. ए रीते ज बीजी वे दिशामां जाणी खेतुं.

अहीं कोइ शंका करे के-आ परिध कहेवाथी दिशाई आश्री नक्त्रनी नियम कह्यो।

पण विदिशा (खूणा) छंमां गमन करवा विषे नक्षत्रनो शो नियम थयो ? तेनो जवाब ए छे जे—पूर्व घारनां नक्षत्रोमां अग्नि कोण तरफ गमन करवुं, दिक्षण घारनां नक्षत्रोमां नैर्फत्य खूणामां गमन करवुं, पश्चिम घारवाळामां वायच्य तरफ अने छत्तर घारवाळामां ईशान तरफ गमन करवुं. आ रीते विदिशाचे दिशाचेने अनुसरे छे, माटे तेने आश्चीने पण नियम प्रगट ज छे. दैवक वह्मज पण कहे छे के—''यायात पूर्वघारजैरिशकाष्टां प्राद-किएयेनैवनाशाविपूर्वाः" ''पूर्व घारनां नक्षत्रोमां अग्नि खूणा तरफ जवुं, ए रीते बीजी विदिशाचे पण प्रदक्षिण कमे करीने जाणवी." पूर्णज्ञ तो आ नियम साथे आ प्रमाणे विशेष कहे छे.—

"स्वामिनः सप्त जौमाद्याः क्रमतः कृत्तिकादिषु । प्राच्यादौ तत्सनाथेषु जेषु यात्रा महाफला ॥ १ ॥"

"कृत्तिकादिक सात नक्षत्रना अनुक्रमे मंगळथी आरंजीने चंड पर्यंत सात स्वामीछे हो. ए रीते मघादिक विगेरेमां पण मंगळथी आरंजीने ज स्वामीछे जाणवा तेमां कृत्तिका आने मंगळवारे पूर्व दिशामां गमन करबुं एम ते ते नक्षत्रोमां ते ते वारे ते ते दिशामां गमन करवाथी महाफळ प्राप्त थाय हे."

"प्राच्यादिषु चरन् जानुः सप्तके कृत्तिकादिके । वितनोति दिशामस्तं यात्रा तासु कृता श्रिये ॥ २ ॥"

"कृत्तिकादिक सात सात नक्त्रोमां पूर्वीदिक दिशाउने विषे चाखतो सूर्य दिशाउने श्रस करे हे, तेथी ते दिशाउमां करेखी यात्रा (गमन) खक्कीने माटे हे."

हवे परिघनो अपवाद तथा नक्तत्र शूळ कहे हे.

ज्ञांच्यः परिघोऽपि लग्नबलतः शूलं तु जानां सदा, हेयं तच्च पुनः सुरेश्वरदिशि ज्येष्ठाम्बुविश्वोद्धिनः । राधावैष्णववासवाजपदेजैर्याम्यां प्रतीच्यां पुन— ब्राह्या मूलयुजा तथोत्तरदिशि स्यादर्यमर्द्शेण च ॥ ७ ॥

श्रर्थ—खग्नना बळथी परिघनुं पण उद्घंघन करवुं, एटले के शत्रुसैन्यनुं श्रागमन विगेरे एकांतिक (श्रावश्यक) कार्योमां गमन करवानी दिशानुं मुख शुद्ध होय—यात्रानुं खग्न महना बळथी युक्त होय त्यारे परिघनुं उद्घंघन करवामां दोष नथी, परंतु नक्त्त्र शूळ सदा त्याग करवा लायक हे, एटले के शूळ नक्त्त्र होय तो लग्ननी शुद्धि हतां पण गमन न करवुं, कारण के नक्त्त्र शूळनो दोष शुद्ध लग्नथी पण नाश पामतो नथी ते विषे व्यव- ह्यारप्रकाशमां कह्यं हे के—"त्यजेक्षग्नेऽपि शूल्वर्ष्ट् शूल्वर्ष्ट्टं नास्ति निर्वृतिः।" "खग्न शुद्ध

बतां पण् शूळ नकत्र वर्जवा योग् हे, केमके शूळ नक्त्रमां गमन करवाश्री पाइं अवातुं

नथी." ते नक्तत्र शूळ च्या प्रमाणे हे.--

ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा अने जत्तराषाढा ए पूर्व दिशामां नक्षत्र शूळ छे. दिक्षणमां विशाखा, श्रवण, धिनष्ठा अने पूर्वाजाइपद ए नक्षत्र शूळ छे. पश्चिममां रोहिणी अने मूळ नक्षत्र शूळ छे. तथा जत्तर दिशामां जत्तराफाहगुनी नक्षत्र शूळ छे. (आ नक्षत्र दिक्शूळ कहेवाय छे.)

पूर्णज्ञ तो आ प्रमाणे नक्तत्र दिक्शूळ कहे छे.— "पूबाइ जिन्डसाढा धणिन पुबजह दाहिण दिसाए। रोहिणि मूलडवराए विसाह पुबफग्गुणुत्तरन ॥ १॥"

"पूर्व दिशामां ज्येष्ठा, पूर्वापाढा अने जत्तरापाढा नहत्र श्ळ हे, दिल्एमां धनिष्ठा अने पूर्वापाडपद नहत्र श्ळ हे, पश्चिममां रोहिए। अने मूळ नहत्र श्ळ हे, तथा जत्तरमां विशाखा अने पूर्वापाइगुनी नहत्र श्ळ हे." "पश्चिम दिशामां पुष्य अने जत्तरमां हस्त नहत्र श्ळ हे," एम नारचंडमां कहां हे. यतिवञ्चनमां तो नहत्र कील आ प्रमाणे कहे हे.—

नक्त्र कील विषे.

"ज्येष्ठा १ जजपदा पूर्वा २ रोहिएयु २ त्तरफहगुनी ४।
पूर्वादिषु क्रमात्कीला गतस्यैतेषु नागतिः ॥ १॥
श्रीत्सुक्याद्यदि पूर्वोक्तदंगलंघनवर्जने।
श्रसमर्थस्तदावस्यं दिक्कीलान् वर्जयेदिमान्॥ २॥"

"पूर्वमां ज्येष्ठा, दक्षिणमां पूर्वाजाइपद, पश्चिममां रोहिणी अने जत्तरमां जत्तरा-फाहगुनी, ए नक्त्र कील कहेवाय है आ नक्त्र कीलमां जो गमन करे तो तेपाहो आवे नहीं. जो कदाच कार्यनी जत्सुकताथी पूर्वे कहेला दंमना जहांघनने वर्जी न शके तो अवस्य आ दिक्कीलने वर्जवा."

खोकमां तो आ प्रमाणे कहेवाय है.—
"जत्तर हत्या दिकण चित्ता, पुवा रोहिणि सुणि रे पुत्ता।

पश्चिम सवाणा म करिस गमणा, हरि हर बंज पुरंदर मराणा ॥ १ ॥"

"हे पुत्र ! सांजळ. हस्त नक्षत्रमां उत्तर तरफ, चित्रामां दक्षिण तरफ, रोहिणीमां पूर्व तरफ अने श्रवणमां पश्चिम तरफ गमन करीश नहीं, केमके तेमां गमन करवाथी हरि, हर, ब्रह्मा अने इंज जेवानुं पण मरण थाय."

हवे वारने आश्रीने दिक्शूळ तथा विदिक्शूळ कहे हे.— शूलं सोमे शनौ च प्राग्युरौ दिक्णतस्यजेत्। रवौ शुक्रे च वारुण्यामुत्तरेण कुजक्योः॥ ए॥

श्चाप्रेयादिविदिक्शूखं क्रमादादित्यजीवयोः १।

द्यीतां शुशुक्रयो २ जों ममन्दयो ३ ईस्य ४ च त्यजेत् ॥ १०॥ छर्थ-सोम छने शनिवारे पूर्व दिशामां शूळ होय, गुरुवारे दक्षिणमां, रिव तथा शुक्रवारे पश्चिममां छने मंगळ तथा बुधवारे उत्तरमां दिक्शूळ होय. दिक्शूळ सन्मुख होय तो त्यां गमन करवुं नहीं. रिव छने गुरुवारे छित्रमां शूळ होय, सोम छने शुक्र- बारे नैक्श्त्यमां शूळ होय, संगळ छने शनिवारे वायव्यमां शूळ होय, तथा बुधवारे ईशानमां शूळ होय. छा विदिक्शूळ कहेवाय हे.

दिक्शूळनुं कोष्टक

विदिक्शूळतुं कोष्टक.

पूर्व सोम, शनि. दक्षिण गुरु. पश्चिम रवि, शुक्र. छत्तर मंगळ, बुध.

श्रिप्ति रिव, गुरु. नैर्कत्य सोम, शुक्र. वायव्य मंगळ, शिन. ईशान बुध

अवश्यना कार्य माटे दिक्शूळ तथा विदिक्शूळमां जदुं पमे तो तेने माटे

दिक्शूलध्वंसि वन्देत चन्दनं १ दिध १ मृत्तिकाम् ३। तैलं ४ पिष्टं ५ च सर्पिश्च ६ खलं ७ चार्कादिषु क्रमात्॥ ११॥

श्चर्य—रिव विगरे वारमां श्चनुक्रमे चंदन १, दहीं २, माटी २, तेल ४, श्चाटो ५, घी, ६ श्चने खोळ ७, ए चीजोनुं वंदन (तिलक) करबुं, तेथी दिक्शूळ तथा विदिक्-शूळनो नाश थाय छे, एटले के रिववारे चंदननुं तिलक करबुं, सोमवारे दहींनुं तिलक करबुं विगरे

हवे योगिनी कहे हे.—
स्याद्योगिनी शक र कुवेर १ विह्न ३रक्तो ४८न्तका ५ प्पत्य ६ निसे ९ शदिक्क ।
यातुर्न जव्या प्रतिपन्नवम्यादितो विना पश्चिमवामजागी ॥ ११ ॥

छर्थ-परवाथी (एकमथी) आरंजीने तथा नोमथी आरंजीने अनुक्रमे पूर्व १, एतर २, अप्नि ३, नैर्ऋत्य ४, दक्षिण ५, पश्चिम ६, वायव्य ५ अने ईशान, ए दिशा-

डमां योगिनी होय हे. ते योगिनी जनार माणसने जे दिशामां जबुं होय ते तरफ जतां पहवाने अथवा नाबी बाजुए रहेती होय तो सारी, अने सन्मुख तथा जमणी बाजु आवती होय तो ते अशुज जाणवी.

श्रदीं पमवाशी आरंजीने एक एक तिथि खेतां आठम सुधीमां एक आवृत्ति श्राय हे, बीजी आवृत्ति नोमशी खेतां पखवामीयाना आंत सुधी खइए तो सात ज तिथि रहे हे, अने दिशार्ज तो आठ हे, तो ते शी रीते करवुं १ तेनुं समाधान ए हे जे नोमशी पूर्णिमा सुधीनी सात तिथि छं अने आठमी अमावास्थानी तिथि खेवी, तेशी पूर्णिमाए वायव्यमां अने अमावास्थाए ईशानमां योगिनी होय. एम बीजी आवृत्तिमां पण दरेक दिशामां एक एक तिथि आवी जाय हे. पूर्णिज पण कहे हे के—

"पूर छ २ आ २ नै ४ द ५ प ६ वा उ ई छ दिसिसु पिनवइ नवमी छ जो इणि आ। वायवि पुन्निमाए ईसाणे अमावसाइ तहा ॥ १ ॥"

"पूर्व १, उत्तर २, आग्न ३, नैर्कत्य ४, दिक्तिए ४, पश्चिम ६, वायव्य ७ अने ईशान ७, ए आउ दिशार्डमां अनुक्रमे पमवेथी अने नोमथी तिथिर्डने विषे योगिनी याय छे, तेमां पूर्णिमाए वायव्य खूणामां अने अमावास्थाए ईशान खूणामां योगिनी आवे छे."

योगिनीनं कोष्टक					
_दिशा	तिथि.				
पूर्व	१ए				
जेत्तर	2-10				
छ न्नि	३−११				
नैर्ऋत्य	出 —१२				
दक्षिण	५-१३				
पश्चिम	६-१४				
वायञ्य	ुप-१५				
ईशान	ए –३०				

मतांतरे योगिनीनुं कोष्टक.						
दिशा.	कृष्णपद्यनी तिथि	शुक्खपक्तनी तिथि.				
पूर्व	१६११	१—६—११				
दक्षिण	\$ - \$ - \$	श — 9—१ श				
पश्चिम	₹ - ঢ− १ ३	₹-5-१३				
उत्तर	৪ –্ড- १ ৪	ধ – ए– १ ধ				
अधो दिशि	₹ □	ų – ? ų				
क धर्व दिशि	ų – † ų	१०				

केटलाएक आचार्यों आ प्रमाणे योगिनी कहे छे—कृष्णपक्षनी एकमथी चौथ सुधी पूर्वादिक चार दिशामां योगिनी होय छे, अने पांचमे कर्ध्व दिशामां होय छे, छन्छी नोम सुधी पूर्वादिक चार दिशाजंमां अने दशमे अधो दिशामां होय छे, अगीया-रशयी चौदश सुधी पूर्वादिक चार दिशामां अने अमावास्याए कर्ध्व दिशामां योगिनी होय छे. ए ज रीते शुक्लपक्षमां पण जाण्छुं. तफावत एटलो छे के शुक्लपक्षमां पांचमे अधो दिशामां, दशमे कर्ध्व दिशामां अने पूर्णिमाए अधो दिशामां योगिनी होय छे.

(ते कोष्टक पण छपर श्राप्युं हे.) जे दिवसे जे दिशामां योगिनी होय ते दिशा, तथा ते दिशानी दिशा बाजुनी विदिशाना हाथमां कातर हे तथी ते विदिशा, तथा तेनी माबी बाजुनी विदिशाना हाथमां खपर हे तथी ते विदिशा, तथा देनी दिकानी विदिशाना हाथमां खपर हे तथी ते विदिशा, तथा उद्यानिक पहिला होय तो ज ते शुज है. व्यवहारप्रकाशमां पण कहां हे के—

"योगिनी देवी पृष्ठे दक्तिणवामे स्थिता विजयदात्री। संमुखसंस्था युद्धे पराजयं नाशमाधत्ते॥ १॥"

"योगिनी देवी पछवाने, दक्षिण वाजुए तथा नावी वाजुए रही होयतो ते युद्धमां विजयने आपनारी हे, अने सन्मुख रही होय तो ते पराजयने तथा मृत्युने आपे हे." गमनादिक कार्य अवश्यनं होय तो गमन वखते योगिनीनी मात्र दृष्टिने ज सन्मुख तजवी. तेनी सन्मुख दृष्टि नारचंद्धमां आ प्रमाणे कही हे.—

"कर्ष्वे तिथिमित १५ नाड्यो दश चाघो १० वाम १० दक्षिणे १० पार्श्वे। घटिका पञ्चदशापि १५ च योगिन्याः संमुखी दृष्टिः॥ १॥"

"योगिनी कर्ध्व दिशामां पंदर घमी हे, अधो दिशामां दश घमी हे, वाम (माबी) बाजुए दश घमी हे, जमणी बाजुए दश घमी हे, अने सम्मुख दृष्टि पंदर घमी हे."

वळी तत्काळयोगिनी पण अवस्य त्याग करवा खायक हे ते तत्काळयोगिनी दिन-शुद्धिमां आ प्रमाणे कही हे.—

> "दिएदिसि धुरि चलघित्रा पुरल पुबुत्तदिसिसु श्रणुकमसो । तकालजोश्णी सा वक्तेश्रवा पयसेणं ॥ १ ॥"

"दिवसनी दिशामां प्रथमनी चार धनी योगिनी रहे हो, अने पही अनुक्रमे पहीनी दिशालमां चार चार धनी रहे हो, ते तत्काळयोगिनीने प्रयत्नवमें वर्जवी, एटले के— जो दिवसे जो तिथि होय ते तिथिनी जो दिशा कही होय ते दिशामां प्रातःकाळे चार धनी सुधी योगिनी रहे हो, अने त्यारपडी लपर कहेला अनुक्रम प्रमाणे वाकीनी दिशालमां योगिनी रहे हो, जोमके—एकमने दिवसे पूर्व दिशामां पहेली चार धनी (अर्ध प्रहर) योगिनी रहे हो, बीजी चार धनी लत्तरमां, जीजी चार धनी अग्नि खूणामां, ए रीते अनुक्रमे ईशान खूणा सुधी अर्ध अर्ध प्रहरो गणवाः वीजने दिवसे पहेलो अर्ध प्रहर लत्तर दिशामां, बीजो अर्ध प्रहर अग्नि खूणामां, ए रीते गणतां आठमो अर्ध प्रहर पूर्व दिशामां आवे हो. ए प्रमाणे राजि दिवसमां थहने आहे दिशामां बने वखत योगिनी फरे हो.

हवे पाश तथा काळनुं स्वरूप कहे हे.—

पाशो मासस्येष्टस्तिथिरष्टहृतावशिष्ट ऐन्द्रादौ । तत्संमुखस्तु कालः स तु दक्षिण एव सौख्याय ॥ १३॥ अर्थ—मासनी तिथिजने आठे जाग खेतां वाकी जे वधे ते (तिथि)ने पूर्वमां मूकवी लारपढीनी तिथिज अनुक्रमे आश्चि विगेरे दिशाजमां मूकवी ते तिथिए ते दिशामां पाश हे एम जाण्वुं, अने ते (पाश)नी सन्मुख काळ जाण्वो. ते काळ जमणी बाजुए शुज हे.

श्रदीं कृष्णपक्षनी एकमथी मासनो श्रारंज जाणवों मासनी तिथि त्रीश हे, तेथी कृष्णपक्षनी उठने दिवसे पूर्व दिशामां पाश तेनो श्राठे जाग वेतां बाकी उवधे हे, तेथी कृष्णपक्षनी उठने दिवसे पूर्व दिशामां पाश हे, सातमे श्रिप्त खूणामां पाश जाणवों, एम श्रानुक्रमे गणतां चौदशे कर्ष्व दिशिमां श्राने श्रामावास्याए श्रधो दिशिमां पाश जाणवों पही शुक्ख एकमे पूर्वमां, ए रीते गणतां शुक्ख दशमें श्रधो दिशिमां, पाठो श्रामीयारशे पूर्वमां, ए रीते गणतां कृष्णपक्षनी पांचमे श्रधो दिशिमां पाश श्रावे हें श्रा प्रमाणे त्रण वखत श्रावर्तन करवाथी मास पूर्ण थाय हें

। पाशनी स्थापना ।

। पूर्व	श्रम	दक्तिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायञ्य	ज त्तर	ईशान	कध्व	छ धः	1
				₹▫	2.2	१२	१ ३	₹8	३०	l
शुक्ख १	হ			ય	६	9	ច	ŪΨ	१०	l
??	१इ	1 2 =	₹8	१ए	कृष्ण १	2	₹	H H	} પ્	

पाशनी सन्मुखनी दिशाए काळ जाएवो, एटखे कर्ध्व अने अधः ए वे दिशा विना बाकीनी आठ दिशामां पोतपोतानी पाश दिशाधी पांचमी पांचमी दिशाए काळ होय हो. ज्यारे कर्ध्व दिशिए पाश होय त्यारे अधो दिशिए काळ जाएवो, अने ज्यारे अधो दिशिए पाश होय त्यारे अधो दिशिए पाश होय त्यारे कर्ध्व दिशिए काळ जाएवो, केमके ए वे दिशानुं सन्मुखपणुं ए ज प्रमाएं होय हो. दिनशुद्धिमां कह्यं हे के—

"पुबाइ दस दिसाहिं कमेण सिद्य पिनवयाइ हुइ पासो । तस्संमुहो ऋ कालो गमणे छन्नि वि संमुह वज्जे ॥ १ ॥"

"पूर्वादिक दश दिशार्छमां श्रानुक्रमे शुक्लपक्षनी एकमथी श्रारंत्रीने पाश होय हे, श्राने तेनी सन्मुख काळ होय हे. ते बन्ने गमनमां सन्मुख वर्जवा योग्य हे."

। काळनी स्थापना ।

पश्चिम	वायञ्य	उ त्तर	ईशान	पूर्व	∫श्रक्ति	दक्षिण	नैर्रुत्य	श्रधः	क्रध्व	}
कृष्ण ६ शुक्त १ ११	9	ច	ŢŲ.	१०	2.3	१२	१ ३	₹8	₹ 0	ļ
शुक्ल १	হ	₹	ង	પ	Ę	3	Ū	ſŲ	₹ ¤	1
**	१२	१ ३	? 원	१५	कृष्ण १	হ	3	ម	Ų	
े आ	० ३५			•				'	•	1

गमन करनारनी काबी बाजुए पाश होय अने जमणी बाजुए काळ होय तो ते शुन हे. ते विषे दिनशुद्धिमां कह्यं हे के—

"कुजा विहारि वामो पासो काखो अ दाहिएछ"

"विहार (गमन)मां पाशने माबी बाजु करवो छने काळने जमणी बाजु करवो." वास्तुशास्त्रना विदानो तो छा प्रमाणे कहे हे.—"शुक्लपद्यनी एकमणी चार तिथि छमां पूर्व, छिन विगरे चार दिशामां पाश होय हे छने पांचमे कर्ध्व दिशिमां पाश होय हे. त्यारपढी उच्छी चार तिथि सुधी पिश्चम, वायव्य विगरे चार दिशामां पाश होय हे छने दशमे छाधो दिशिए होय हे. त्यारपढी छमीयारशाशी चार तिथि सुधी पूर्व, छिन विगरे चार दिशामां पाश होय हे, छने पूर्णिमाए कर्ध्व दिशिए होय हे. पढी खुण्णपद्यनी एकमधी चार तिथि सुधी पिश्चम, वायव्य विगरे चार दिशामां पाश होय हे, ए ज प्रमाणे त्रीजी वार पण गण्तुं, छने पाश होय हे, छने पांचमे छाधो दिशिए होय हे. ए ज प्रमाणे त्रीजी वार पण गण्तुं, छने पाश श्वामी सन्मुख दिशामां सदा काळ रहेलो हे." छा प्रमाणे तेर्जनो मत होवाथी पूर्णा तिथिए गृहादिकनुं खात मुहूर्त्व छने ध्वजारोपण विगरे तेर्ज करवाने इञ्चता नथी, कारण के छाधो दिशिए छथवा कर्ध्व दिशिए पाश के काळ छवदय होय ज हे.

वार आश्रीने पाश तथा काळ ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कह्या हे.-

"दिएवारं पुद्याई कमेख संहारि जत्य ठाखि सखी । कादं तत्थ विश्राणसु तस्संमुद्र पास जल्द इगे ॥ १ ॥"

जे दिवसे जे वार होय ते वारणी आरंजीने अनुक्रमे साते वारो पूर्वादिक दिशार्डमां अनुक्रमे मूकवा. तेमां जे दिशामां शनिवार आवे ते दिशामां काळ छे एम जाण्डुं, अने तेनी सन्मुखनी दिशामां पाश जाण्वो, एम केटलाक कहे छे. अहीं ईशान विनानी सात दिशार्ड गण्वानी छे, कारण के ते ईश्वरनुं घर छे, माटे त्यां काळनो प्रवेश यह शकतो नथी, एम तेर्ड कहे छे. आर्डना मतमां वार आश्रीने ज काळ तथा पाश थाय छे, पण तिथिने आश्रीने थता नथी.

हवे राहुचार कहे हे.— राहुरसंमुखवामोऽष्टसु यामार्क्षेष्वहर्निशं चुमुखात् । क्रमशः षष्ट्यां षष्ट्यामिष्टः प्राच्यादिषु प्रचरन् ॥ १४॥

श्रर्थ—दिवसना प्रारंत्रथी एटले सूर्योदयथी आरंत्रीने दिवस अने रात्रि आठ आठ अधे प्रहरोमां अनुक्रमे पूर्वोदिक उठी उठी दिशाए फरतो राहु असन्मुख अने वाम त्रागे रहेलो इष्ट-शुत्र के अर्थात् गमन करनारनी पढवाने अथवा नावी बाजुए होय तो ते शुत्रकारक के राहु रात दिवस चाले के ते प्रातःकाळथी आरंत्रीने पूर्वादिक उठी उठी दिशामां

चाले हे, एटले के पहेला अर्ध प्रहरे पूर्व दिशामां चाले हे, बीजा अर्ध प्रहरे तेना कि हिना कि दिशामां एटले वायव्य खूणामां चाले हे. जीजा अर्ध प्रहरे तेनाथी हिन एटले दिशाए चाले हे. ए प्रमाणे आह अर्ध प्रहर सुधी हिना हिशा लेवी. तेवी ज रीते रात्रे पण आह अर्ध प्रहरमां पण हिना हिशा जाणवी. ते विषे हर्षप्रकाशमां कहां है के—

"जामके राहुगई पूर वा २ दा ३ ई ४ प ए ऋ ६ छ ७ ने ० दिसिसु"॥ "सूर्योदयस्री आरंजीने ऋर्ध ऋर्ध प्रहरे राहुनी गति अनुक्रमे पूर्व १, वायन्य २, दक्षिण ३, ईशान ४, पश्चिम ए, अग्नि ६, जत्तर ७ अने नैर्ऋत्य ० दिशामां होय हे."

पूर्वादिक दिशार्र अवळी प्रदिक्षणात्री गणीए तो चोत्री चोत्री दिशाए राहुनी गित जाणवी. ते विषे नारचंदमां कह्यं हे के—

"श्रष्टासु प्रथमाचेषु प्रहरार्द्धेष्वहार्निशम्। पूर्वस्था वामतो राहुस्तुर्यो तुर्यो व्रजेहिशम्॥ १॥"

"प्रथमादिक आठ अर्ध प्रहरोमां रात दिवस पूर्व दिशायी माबी बाजुने कमे चोथी बोजी दिशामां राहु गति करे हो, एटले के पहेला अर्ध प्रहरे पूर्वमां, बीजा अर्ध प्रहरे तेथी अवळी चोथी दिशा वायव्यमां, त्रीजे अर्ध प्रहरे तेथी अवळी चोथी दिशाए एटले दक्षिणमां राहुनी गति हो. ए रीते आठे अर्ध प्रहर गणवा तथा ए ज रीते रातना पण आठे अर्ध प्रहर गणवा.

राहुचार स्थापना---

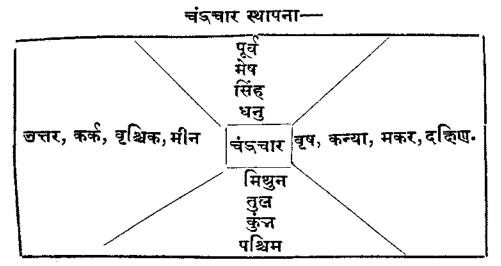
ईशान	पूर्व १ अर्ध प्रहर	श्रद्भि ६ दक्तिण
जत्तर प्र वायव्य	५ अ.५ ७ पश्चिम	र. २.७ ३ नैर्ऋत्य
२ अर्ध प्रहर	Ų	0

हवे चंजचार कहे हे ---

चन्डश्चरति पूर्वादौ क्रमात्रिर्दिक्चतुष्टये। मेषादिष्वेष यात्रायां संमुखस्त्वतिशोजनः॥ १५॥

अर्थ—चंद्र मेषादिक बारे राशिलंमां पूर्वादिक चार दिशालंमां अनुक्रमे त्रण वार चाले हे. आ चंद्र प्रयाणमां सन्मुल होय तो ते अत्यंत शुज हे.

मेव राशिमां रहेलो चंड पूर्वमां होय हो, वृषमां रहेलो चंड दिहिएमां, मिथुननो चंड पश्चिममां अने कर्कनो चंड जत्तरमां होय हो. ए प्रमाणे सिंहादिक चार अने धनादिक चार राशिना चंडने पण पूर्वादिक चारे दिशिमां अनुक्रमे जाएवो.



दिनशुद्धिमां तो शुक्रनी जेम चंद्रनुं पण त्रण प्रकारे सन्मुखपणुं ग्रहण करवानुं कहुं हे.—
" जदयवसा १ श्रहवा दिसि २ दारजवसर्ज ३ हवइ ससी समुहो ।
सो श्रजिमुहो पहाणो गमणे श्रमिश्राई वरिसंतो ॥ १ ॥"

"चंद्र जे दिशामां जदय पामे हे ते जदयना वशयी १ अथवा जे दिशामां जाय हे ते दिशाना वशयी २ अथवा जे दिशाना दारवाळा नक्त्रने पाम्यो होय ते दिशादार नक्त्रना वशयी २, आ त्रण प्रकारे सन्मुख होय हे. ते सन्मुख तथा जमणो गमनने विषे अमृतने वरसतो एवो प्रधान अति शोजाकारक हे."

नारचंदमां चंद्रचारनुं फळ आ प्रमाखे कहां हे.— "जयाय दक्षिणो राहुर्योगिनी वामतः स्थिता। पृष्ठतो दयमप्येतचन्द्रमाः संमुखः पुनः॥ १॥"

"जमणो राहु जयने माटे हे, माबी बाज़ रहेखी योगिनी पण जयकारक हे, ते बन्ने पहवाने रह्या होय तो शुज हे, अने चंद्रमा सन्मुख होय तो शुज हे."

मूळ श्लोकमां "अतिशोजनः" "घणो सारो" एम कह्यं हे, तेथी जमणी बाजुमां रहेलो पण चंद्र शुज हे एम सूचवन करे हे. ते विषे नारचंद्र टिप्पणीमां कह्यं हे के-

"संमुखीनोऽर्घलान्ताय दक्तिणः सर्वसंपदे । पश्चिमः कुरुते मृत्युं वामश्चन्द्रो धनक्त्यम् ॥ १ ॥"

''गमन करतां चंद्र सन्मुख होय तो द्रव्यनो खात्र थाय, जमणी वाजु होय तो सर्व संपत्ति मळे, पाछळ होय तो मृत्यु करे अने माबी बाजुए रह्यो होय तो धननो इय करे."

्हेंचे रिवचार कहे हे.— रिवद्धी द्वी तु पूर्वादी यामी राज्यन्त्ययामतः।

यात्रासिन् दक्षिणे वामे प्रवेशः पृष्ठगे घ्रयम् ॥ १६ ॥

श्चर्य-सूर्य रात्रिना छेद्वा पहोरथी आरंजीने वबे पहोर पूर्वादिक चार दिशामां चाले हे, तेमां प्रयाणसमये सूर्य जमणी बाजुए होय तो शुज हे, माबी बाजुए होय तो

प्रवेशमां शुज हे, ऋने पाछळ होय तो प्रयाण तथा प्रवेश बन्नेमां शुज हे.

रात्रिनो हेक्षो प्रहर तथा दिवसनो पहेलो प्रहर ए वे प्रहर सुधी सूर्य पूर्व दिशामां चाले हे. दिवसना मध्यना वे पहोर सुधी दिलाए दिशामां रहे हे, दिवसनो हेड्डो प्रहर श्चने रातनो पहेलो पहोर ए वे पहोर सुधी पश्चिममां चाले हे, तथा रात्रिना मध्यना वे पहोर सुधी जत्तर दिशामां रहे हे.

नारचंडमां तो सर्व यहोने जदयसमयथी आरंजीने जमण करवाना वशथी (ग-

तिने आश्रीने) आठे दिशानी स्पर्श कहेलो छे. ते आ प्रमाणे.-

"स्वस्योदयस्य समयात्प्रवयामा(म्या)दितः कमात्। संचरित प्रहाः सर्वे सर्वकालं दिगष्टके ॥ १ ॥"

"सर्वे प्रहो पोतपोताना जदयसमयथी आरंजीने पूर्व, दक्षिण विगेरेना क्रमे करीने सर्वदा आठे दिशाओमां गति करे हे."

सूर्य जमणी बाजुए रह्यो होय तो ते समयनुं प्रयाण शुजकारक हे. ते विषे ख कहे हे के-

"न तस्याङ्गारको विष्टिर्न शनैश्वरजं जयम्। व्यतिपातो न प्रव्येच यस्याकों दक्षिणस्थितः ॥ १ ॥"

"जेना प्रयाणमां सूर्य जमणी बाजुए रह्यो होय तेने अंगारक नमतो नथी, विष्टिनो पण दोष खागतो नथी, शनिथी छत्पन्न अयेखी जय खागतो नथी, तथा व्यतिपात पण डिषित करतो नथी."

तेथी करीने ज नकत्रसमुचयमां पण कह्यं ठे के—

''पूर्वाह्ने चोत्तरां गञ्जेत्प्राच्यां मध्यंदिने तथा। दक्षिणामपराह्ये तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥ १ ॥"

"दिवसना पहेला जागमां उत्तर दिशा तरफ प्रयाण करवुं, मध्याह्समये पूर्व दिशामां प्रयाण करवुं, सायंकाळे दक्षिणमां प्रयाण करवुं, अने अर्था रात्रिए पश्चिममां प्रयाण करवुं." आ रीते प्रयाण करवाथी सूर्य जमणी बाजुए ज रहे हे ए आ श्लोकतुं तात्पर्य हे.

सक्ष फरीथी पण चंज अने सूर्यना वारनी अनुकूळता ज कहे हे के—
"रिवशिकरप्रदीष्ठां मकरादावुत्तरां च पूर्वो च ।
यायाच कर्कटादौ याम्यामाशां प्रतीचीं च ॥ १ ॥
अयनानुकूलयानं हितमर्केन्द्रोदयोरसंपत्तौ ।
युनिशं प्रगृह्य यायादिपर्यये क्लेशवधवन्धाः ॥ २ ॥"

"मकरादिकमां सूर्य अने चंदनां किरणोथी प्रदीष्ठ अयेखी जत्तर तथा पूर्व तरफ प्रयाण करवं, अने कर्कादिकमां दक्षिण तथा पश्चिम दिशामां प्रयाण करवं. चंद्र ए बेंग्रनी अप्राप्ति होय तो अयनने अनुकूळ प्रयाण हितकारक हे, एटखे रात्रि दिवसने घ्रहण करीने गमन करवुं. तेथी छखदुं करवाथी क्लेश, वध श्राने बंधन श्राय हे." श्रहीं जावार्थ ए हे जे—"ज्यारे सूर्थ श्रने चंद्र मकरादिक ह राशिमां एटखे हत-रायखमां होय त्यारे पूर्वमां तेमज जत्तरमां सर्वदा (रात दिवस) गमन करवुं, अने ज्यारे कर्कादिक छ राशिमां एटले दिख्णायनमां होय त्यारे दिख्ण अने पश्चिममां सर्वदा गमन करतुं, पण सूर्य अने चंद्र जो एक अयनमां न होय तो अनुक्रमे दिवसे अने रात्रिए गमन करबुं, एटले के ज्यारे सूर्य जत्तरायणमां होय त्यारे दिवसना जागमां जत्तर तथा पूर्वमां गमन करवुं, श्रने ज्यारे सूर्य दक्षिणायनमां होय त्यारे दिवसना जागमां दिक्तेण अने पश्चिममां गमन करवं. ए ज प्रमाणे चंद्र उत्तरायणमां होय त्यारे रात्रिए ज्तर तथा पूर्वमां गमन करवुं अने दक्षिणायनमां होय त्यारे रात्रिए दक्षिण अने पश्चि-ममां गमन करतुं. एथी चलदुं करवाथी श्रशुन हे, एटले के सूर्य श्रने चंद्र मकरा-दिकमां रह्या होय त्यारे जो दक्षिण अने पश्चिममां गमन करे, तथा कर्कादिकमां रह्या होय त्यारे जो जत्तर स्थने पूर्वमां गमन करे, तथा सूर्य मकरादिकमां रह्यो होय त्यारे दिवसना जागमां जो दक्षिण अने पश्चिममां गमन करे, अने चंद्र कर्कादिकमां रह्यो होय त्यारे जो रात्रिए जत्तर के पूर्वमां गमन करे तो गमन करनारने वध, बंध विगेरे दोष प्राप्त थाय हे.

हवे रिवचारने ज हंस (वायु)नी गित (स्वरोदय)वर्भ विशेष प्रकारे कहे हे.— हंसेऽन्तरा विश्वति दक्षिणतोऽय पृष्ठे, कृत्वा रिवं प्रवहनामिपदं पुरश्च। सिद्ध्ये वजेदय विजेतुमना विपक्ष-पक्षं स्वतस्तु विद्धीत वितानपक्षे॥ १९॥ अर्थ—प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय ते वखते सूर्यने (सूर्यनी दिशाने) जमणी बाजुए अथवा पज्जामे राखीने जे नासिकानी नामी वधारे चालती होय ते तर-फनुं पगलुं प्रथम मूकीने प्रयाण करवुं ते सिक्चिने माटे छे. शत्रुने जीतवानी रहावाळाए पोतानी जे तरफनी नामी वहेती न होय ते तरफ शत्रु पक्षने करवो.

अध्यात्मशास्त्रनी रीते हंस ए प्राण वायु कहेवाय है. ते प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय त्यारे प्रयाण करतुं, पण वहार नीकळतो होय ते वखते प्रयाण करतुं, नहीं. प्राण वायुनी गति आगति विषे अध्यात्मने जाणनारा आ प्रमाणे कहे है.—

"षद्शताच्यधिकान्याद्यः सहस्राण्येकविंशतिम् । अहोरात्रे नरे स्वस्थे प्राण्वायोर्गमागमः ॥ १ ॥"

"मनुष्य स्वस्थ होय त्यारे एक रात्रि दिवसमां थइने प्राण वायुनुं गमन आगमन (श्वासोङ्गास) एकवीश हजार अने उसो थाय हे, एम कहे हे."

जे तरफनी नामी चालती होय ते तरफनुं पगलुं एटले मावी चालती होय तो माबुं ध्रमें जमणी चालती होय तो जमणुं पगलुं आगळ करीने कार्यनी सिद्धि माटे गमन करवुं. ते विषे विवेकविलासमां कहुं हे के—

"दक्षिणे यदि वा वामे यत्र वायुर्निरन्तरः। तं पादमग्रतः कृत्वा निस्सरेन्निजमन्दिरात्॥१॥ न हानिकलहोदेगाः कंटकैर्नापि जिद्यते। निवर्त्तते सुलेनैव कुद्रोपद्मववर्जितः॥१॥ द्यरदेशे विधातव्यं गमनं तुहिनसुतौ। श्चन्यर्णदेशे दीप्ते तु तरणाविति केचन॥३॥"

"जमणी अथवा माबी जे नासिकामां वायु निरंतर संचार करतो होय ते तरफनो पग आगळ करीने पोताना घरमांथी नीकळवुं. (१) ते रीते प्रयाण करवाथी हानि, क्षेत्रा के छदेग थता नथी, कंटकवमे पण जेदातो नथी एटखे के मार्गमां कांटो सरखो पण वागतो नथी, तथा कुड़ छपड़वो रहित सुखेथी ज पाठो फरे छे—आवे छे. (१) केटखाएक कहे छे के छूर देशमां जवुं होय तो चंड्र नामी एटखे माबी नासिका चाखती होय त्यारे ते तरफनो पग आगळ करीने चाखवुं, अने समीप देशमां जवुं होय तो सूर्य नामीने आगळ करीने जवुं एटखे जमणी नासिकामां प्राण वायु चाखतो होय त्यारे जमणो पग प्रथम मूकीने चाखवुं. (३)(माबी नासिकाने चंड्र नामी कहे छे, जमणी नासिकाने सूर्य नामी कहे छे तथा बन्ने समान चाखती होय तो सुष्मणा नामी कहे छे.)

स्वरोदयने जाणनारा आचार्यो आ प्रमाणे विशेष कहे हे के — "जमणी नांकीमां प्राण

वायु प्रवेश करतो होय त्यारे विषम (१-३-५-७-ए) पगते चालवुं स्तरे पश्चिम तथा दिक्कण दिशामां न चालवुं, स्तरे माबी नामी प्राण वायुवमे पूर्ण स्नड् होय त्यारे सम (१-४-६-७-१०) पगते चालवुं, स्तरे ते वखते पूर्व तथा उत्तर दिशा तरफ न जवुं."

आ प्रमाणे प्राण वायु विगेरेनी शुद्धि होय त्यारे जिनेश्वरनी प्रदक्षिणा करीने जवाथी विशेषे करीने सर्व कार्यनी सिद्धि श्राय हो. ते विषे यतिवह्यज्ञमां कह्यं हे के—

"प्राणप्रवेशे वहनामिपादं, कृत्वा पुरो दक्षिणमर्कविम्वम् । प्रदक्षिणीकृत्य जिनं च याने, विनाप्यहःशुद्धिमुशन्ति सिद्धिम् ॥ १ ॥"

"प्राण वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय त्यारे जे तरफनी नामी चालती होय ते तरफनो पग श्रागळ मूकीने तथा सूर्यने (सूर्यनी दिशाने) जमणी वाजु राखीने तथा जिनेश्वरनी प्रदक्षिणा करीने प्रयाण करे तो दिवसनी शुद्धि नहीं छतां पण कार्य- सिद्धि थाय छे."

प्रयाणना जपलक्षणथी प्रवेश करवामां पण आ सर्व विधि ज जाणवो. ते विषे दिन-शुक्रिमां कहां हे के—

> "पुत्रनामि दिसा पायं अपने किचा सया विक । पवेसं गमएं कुका कुएंतो साससंगहं ॥ १ ॥"

"श्वासनो संग्रह करीने एटले पाए वायु नासिकामां प्रवेश करतो होय त्यारे पूर्ण नामी तरफना पगने आगळ करीने विदान पुरुषोए सर्वदा प्रवेश अने गमन करतुं."

शतुने जीतवानी इञ्चावाळाए पोताना वायुसंचारवाळा पार्श्वथी माबी वाजुए शतुने राखवो, एटखे के जे तरफ वायु चालतो न होय ते तरफ शतुने राखवो के जेथी ते युखेथी जीताय है. श्रर्थात् इष्ट जन होय तो तेने पूर्ण श्रंग तरफ राखवो, एटखे के जे तरफ श्वास चालतो होय ते तरफ इष्ट जनने राखवो. ते विषे विवेकविलासमां कहां हे के-

"श्चरिचौराधमर्णाद्या श्चन्येऽप्युत्पातविग्रहाः । कर्त्तव्याः खब्ज रिक्तांगे जयलाजसुखार्थिजिः ॥ १॥ गुरुवन्धुनृपामात्या श्चन्येऽपीप्सितदायिनः । पूर्णांगे खब्ज कर्त्तव्याः कार्यसिद्धिमजीप्सता॥ १॥"

"शत्रु, चोर, देणदार विगेरे तथा बीजा पण छत्पात करनाराने जय, खाज अने मुखने इन्नता पुरुषोए रिक्तांगे करवा, एटखे जे तरफ प्राण वायु चाखतो न होय ते तरफ करवा- (१). अने कार्यसिद्धिने इन्नता पुरुषे गुरु, बंधु, राजा, प्रधान विगेरे तथा बीजा पण इष्ट वस्तुने आपनार जनोने पूर्णोंगे करवा, एटखे जे तरफनी नाडी चाखती होय ते तरफ

करवा."(२) श्राहीं पण "सूर्यने (सूर्यनी दिशाने) जमणी बाजु अथवा पठवाने राखवो." ए श्रार्थ समजवो. ते विषे यतिवहानमां पण कह्यं ठे के—

> "बहनामिगतो वाच्यो दक्तिलेऽर्केऽर्यक्षव्धये। रिक्तनामीगतः शत्रुजीयते पृष्ठगे रवी॥१॥"

"सूर्यने जमा। वाजुए राखीने चालती नाभी तरफनो प्रथम पग मूकी गमन करे तो जन्यनी प्राप्ति थाय, अने सूर्यने पठवामे राखीने शत्रुने रिक्त (खाली) नाभी तरफ राखे तो ते शत्रुनो पराजय थाय हे."

हवे शुक्रचार कहे हे.---

शुक्रस्तु यत्रोदयति ज्रमन् वा, यां याति यहारकमेति जं वा।

इत्वं त्रिधा ति हिश संमुखः स्याच्याज्यस्तु तत्रोदयसंमुखीनः ॥ १० ॥

अर्थ—शुक्र ने दिशामां खदय पामे ने अथवा फरतो फरतो ने दिशामां जाय ने, अथवा ने दिशाना घारवाळा नक्त्रने पामे ने ते दिशामां सन्मुख होय ने, एटले के ते शुक्र आ त्रण रीते सन्मुख कहेवाय ने. तेमां (ते त्रणमां) खदय सन्मुख शुक्र तजवा खोग्य ने.

शुक्र पूर्व श्रथवा पश्चिम जे दिशामां जदय पामे हे ते दिशामां जनारा मनुष्यने ते सन्मुख होय हे. श्रथवा जेम सूर्यने फरवाना (गितना) वशथी चारे दिशानो स्पर्श कह्यो हे, तेम शुक्र पण जमतो जमतो जे जे दिशामां जाय हे ते ते दिशामां जनार माणसने ते शुक्र सन्मुख होय हे. श्रथवा जे मेपादिक चार चार राशिश्चो श्रने पूर्वादिक चार चार दिशालं, तेमने विषे जमण करतां प्राप्त थयेखो शुक्र ते ते दिशामां जनार ते सन्मुख होय हे. श्रथवा परिघचक्रमां कहेखी रीत प्रमाणे जे दिशामां जाता दारवालुं नक्षत्र होय, ते नक्षत्रमां श्रावेखो शुक्र पण ते ते दिशामां जनारने सन्मुख होय हे. श्रावेखो शुक्र पण ते ते दिशामां जनारने सन्मुख होय हे. श्रावेखो शुक्र पण ते ते दिशामां जनारने सन्मुख होय हे. श्राव होय हे तो पण शुक्रनी जदयनी दिशा के जे पूर्व के पश्चिम ख होय हे ते ज त्याग करवा योग्य हे. विशेष ए हे जे जमणी वाजुए रहेखो पण शुक्र तजवा योग्य हे. ते विषे नारचंदमां कहां हे के—

"श्रमतो खोचनं हन्ति दक्षिणो ह्ययुज्जपदः। पृष्ठतो वामतश्चैव शुक्रः सर्वसुखावहः॥ १॥"

"शुक्र सन्मुख होय तो नेत्रनो नाश थाय, जमणी वाजुए होय तो श्रशुज फळ श्रापे, तथा पाठळ श्रथवा माबी बाजुए होय तो सर्व सुखने करनार थाय हे."

केटलाक आ प्रमाणे कहे हे.-

'पौष्णाश्विनीपादमेकं यदा वहति चन्छमाः। तदा शुको जवेदन्धः संमुखं गमनं शुजम्॥१॥"

क्षा॰ २६

"रेवती (आखुं) अने अश्विनीना पहेला पाद सुधी ज्यारे चंदमा होय हे त्यारे शुक्र अंध होय हे, माटे ते वखते सन्मुख शुक्र होय तोपण ते दिशामां गमन करबुं शुज हो." केटलाएक आ श्लोकनुं पूर्वार्द्ध आ प्रमाणे कहे हे—'अश्विन्या विह्नपादान्तं याव- चरित चन्द्रमाः"। "ज्यारे अश्विनी, जरणी तथा कृत्तिकाना पाद सुधी चंद्रमा होय हे त्यारे शुक्र अंध हे विगेरे."

तथा लझ कहे हे के-

"काश्यपेषु विसिष्ठेषु ज्रुग्वत्र्याङ्गिरसेषु च । जारदाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्तं न विद्यते ॥ १ ॥ एकग्रामे पुरे वापि छुर्जिके राष्ट्रविज्रमे । विवाहे तीर्थयात्रायां वत्सशुक्तौ न चिन्तयेत् ॥ २ ॥ स्वज्वनपुरप्रवेशे देशानां विज्रमे तथोदाहे । नववध्वागमने च प्रतिशुक्तविचारणा नास्ति ॥ ३ ॥"

"काइयप, विसिष्ठ, चृगु, श्रित्र, श्रांगिरस, जारदाज श्रमे वत्स ए सात क्षिण्ठीना भतमां त्रणे प्रकारना शुक्रनो निपेध नथी. एक गाममां, पुरमां, प्रकाळमां, राज्यना छप- द्रित्रमां, विवाहमां श्रमे तीर्थयात्रामां, श्राटले स्थळे वत्स श्रमे शुक्रनो विचार करवो नहीं. पोताना धरमां एटले स्वाजाविक रीते घरमां प्रवेश करवो होय त्यारे सन्मुख शुक्रनो विचार करवो नहीं, पण नवा घरमां प्रवेश करवो होय त्यारे तो त्रणे प्रकारना शुक्रनो त्याग करवो जोइए एम आगळ कहेशे. तथा पुरप्रवेशमां, देशावरोमां जाव श्राव करवामां, विवाहमां, नवी बहुने तेसी लाववामां, श्राटले स्थळे त्रणे प्रकारना शुक्रनो विचार करवो नहीं. श्रश्रीत् सन्मुख शुक्रनो त्याग करवो."

तथा शुक्रनी बाड्यावस्थामां, वृद्धावस्थामां, नीचपणामां, ख्रस्तपणामां, वक्रगतिपणामां ख्रने बीजा ब्रह्मी पराजय पामेलो होय त्यारे ए विगेरेमां यात्रा करवी ख्रशुज हे, केमके—"यात्रामां शुक्र बळवान् खेवो"एम कह्यं हे. तथा रह्माळामां पण कह्यं हे के—

"नीचगे ब्रह्जितेऽथ विद्योमे, जार्गवे कद्धिषतेऽस्तमिते वा । प्रस्थितो नरपतिः सवद्योऽपि, द्यिपमेव वशमेति रिपूणाम् ॥ १ ॥"

"शुक्र नीच स्थानमां रह्यो होय, बीजा ग्रहवमे जीतायो होय, वक्र थयो होय, कलुष थयो होय एटखे वाळ के वृद्ध होय, तथा श्रस्त पाम्यो होय, ते वखते जो राजाए प्रयाण कर्यु होय तो ते बळवान् छतां पण तत्काळ शत्रुने वश थइ जाय छे."

शुक्रना **चदय अने अस्तना** दिवसनी संख्या स्वाजाविक रीते आ प्रमाणे नारचंछ टिप्पणीमां कहेली हे.— "प्राच्यां न्रुगुर्जलिधितत्त्व १५४ दिनानि तिष्ठे-त्तत्रास्तगस्तु नयनाि ७२ दिनान्यदृश्यः । तिष्ठेच षोमशकृतिं १५६ दिवसान् प्रतीच्या-मस्तं गतस्त्विह सयक् १३ दिनान्यदृश्यः ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशामां जदय पामेलो गुक्र १५४ दिवस सुधी रहे, त्यारपठी श्रस्त पामे, ते ९२ दिवस सुधी ऋदश्य रहे. त्यारपठी पश्चिम दिशामां जदय पामे, ते १५६ दिवस सुधी रहे, ऋने त्यारपठी ऋस्त पामे, ते १३ दिवस सुधी ऋदश्य रहे."

"पोताना जन्मनक्षत्रनो स्वामी श्रस्त पाम्यो होय ते वसते पण यात्रा करवी श्रशुज हे," एम दैवज्ञवञ्चलमां कहां हे.

हवे शुक्रचारना फळमां मतांतर कहे हे.—
प्रतिशुक्तं त्यजन्त्येके यात्रायां त्रिविधं बुधाः ।
तस्मात्प्रतिकुजं कष्टं ततोऽपि प्रतिसोमजम् ॥ १ए॥

अर्थ—केटलाएक पंकितो यात्रामां त्रणे प्रकारची सन्मुख (प्रतिकूळ) शुक्रनो त्याग करे हे ते (प्रतिकूळ शुक्र) थकी प्रतिकूळ मंगळ वधारे कष्टकारक हे, तेथी ते पण त्रणे प्रकारनो तज्ञवो, तेनाची पण प्रतिकूळ बुध वधारे कष्टकारी हे, तेथी ते पण त्रणे प्रकारनो तज्ञवो.

आ मत पण आ ग्रंथकार आचार्यने संमत हे, तेथी करीने पूर्व श्लोकमां मात्र उदय सन्मुख शुक्रनो त्याग करवानुं कहां हे, ते उतावळना कार्यमां जाणवुं. घणी जतावळ न होय तो शक्ति प्रमाणे त्रणे प्रकारनुं सन्मुखपणुं तजवा योग्य हे एम जाणवुं. ते विषे दैवक्षवञ्चनमां पण कहां हे के-

"धनिष्ठादिकमश्खेषापर्यन्तं जगणं जृगुः।
यदा चरति नोदीचीं न प्राचीं च तदा व्रजेत्॥१॥
मघादिश्रवणान्तानि जानि शुक्रो यदा चरेत्।
नापाचीं न प्रतीचीं च तदा गहेकिजीविषुः॥ २॥"

"ज्यारे शुक्र धनिष्ठाथी अश्लेषा सुधीना नक्षत्रमां रह्यो होय त्यारे छत्तर अथवा पूर्व दिशामां जीववानी इञ्चावाळाए प्रयाण करवुं नहीं, अने ज्यारे शुक्र मधाथी अवण सुधीनां नक्षत्रमां रह्यो होय त्यारे दक्षिण के पश्चिम दिशामां जीववानी इञ्चावाळाए प्रयाण करवुं नहीं."

शुक्र थकी मंगळ श्रने मंगळथी पण बुध वधारे कप्टकारक हे, ते विषे दैवज्ञवद्वजमां कह्यं हे के—

"प्रतिशुक्रेऽपि निर्गन्नेदनुकूलो बुधो यदि । गतः प्रतिबुधे नान्यैः शक्यते रक्तितुं प्रहेः ॥ १ ॥"

"जो बुध अनुक्ळ होय तो त्रण प्रकारे शुक्र प्रतिक्ळ ठतां पण प्रयाण करबुं, अने जो प्रतिक्ळ बुधमां प्रयाण कर्युं होय तो तेने बीजा प्रहो रक्षण करवाने शक्तिमान नथी." "शुक्रनी ज जेम मंगळ तथा बुध पण सन्मुख रहेखा अथवा जमणी तरफ रहेखा होय तो ते तजवा योग्य ठे" एम त्रिविक्रम कहे ठे. "बुध सन्मुख होय तो ज तेने तजवो" एम रक्षमाखा जाष्यमां कह्यं ठे.

हवे वत्सचार कहे हे.— बत्सः प्राच्यादिषूदेति कन्यादित्रित्रिगे रवौ। प्रवासवास्तुद्वाराचीप्रवेशाः संमुखेऽत्र न ॥ २०॥

अर्थ—कन्या संक्रांतिथी आरंजीने त्रण त्रण संक्रांतिमां रहेलो सूर्य होय त्यारे पूर्वा-दिक चार दिशामां अनुक्रमे वत्स जदय पामे हो, एटले के कन्या, तुल अने वृश्चिक सं-क्रांति होय त्यारे पूर्व दिशामां वत्सनो जदय होय, धन, मकर अने कुंज संक्रांतिमां दक्षिण दिशाए, मीन, मेष अने वृष संक्रांतिमां पश्चिम दिशाए अने मिश्चन, कर्क अने सिंह संक्रांतिमां जत्तर दिशाने विषे वत्सनो जदय होय हे आ वत्स सन्मुख होय एवी रीते प्रवास (प्रयाण) करवो नहीं, घर विगेरेनुं घार मूकवुं नहीं, तथा जिनेश्वरादि प्रति-मानो धनिकना घरमां प्रवेश कराववो नहीं.

नारचंद्र टिप्पणीमां वत्सनुं शरीर छा प्रमाणे कहां हे.—
"वपुरस्य शतं इस्ताः श्टंगयुगं पष्टि संयुता त्रिशती।
पन्नाजिपुन्नशिरसां जूप १६ नव ए त्रि ३ शर ५ करमानम्॥ १॥"

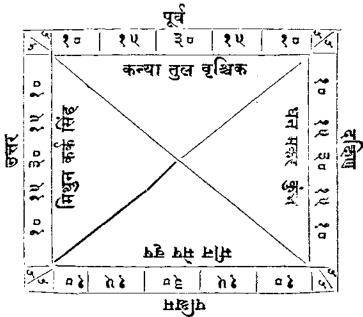
"आ वत्सनुं शरीर सो हाथ छंचुं हो, तेनां बन्ने शींगमां ३६० हाथ खांबां हो, पग सोळ हाथ, नाजि नव हाथ, पूंहमुं त्रण हाथ अने मस्तक पांच हाथनुं हो."

वत्सचार संबंधी विशेष ज्योतिषसारमां ऋा प्रमाणे कहां हे.—
"पंच १ दिक् ६ तिथि ३ सिवेंश ४ तिथि ए दिक् ६ शर ७ वासरान्।

ं वत्सस्थितिर्दिक्चतुष्के प्रत्येकं सप्तजाजिते ॥ १ ॥"

"चारे दिशामांनी प्रत्येक दिशाना सात सात जाग करवा. तेमां पहेला जागमां वत्सनी स्थिति पांच दिवसनी हे, बीजामां दश, त्रीजामां पंदर, चोथामां त्रीश, पांच- मामां पंदर, ब्रांगमां दश अने सातमा जागमां पांच दिवसनी स्थिति हे, एटखे के आ-टखा आटखा दिवस ते ते जागमां अनुक्रमे वत्स रहे हे."

वत्सचार तथा वत्सनी स्थितिनुं चक्र-



श्रा वत्सने केटलाक श्राचार्यों "वास्तु" एवं नामे पण कहे हे.

हवे वत्सचारनुं फळ कहे हे.--

संमुखोऽयं हरेदायुः पृष्ठे स्याद्धननाशनः । वामदक्षिणयोः किं तु वस्सो वाञ्चितदायकः ॥ ११ ॥

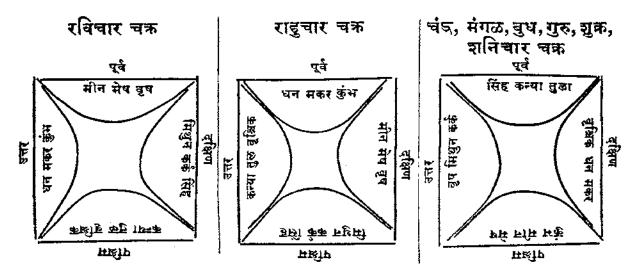
अर्थ-आ वत्स सन्मुख रह्यो होय तो आयुष्य हरे हे, पाहळ होय तो धननो नारा करे हे, पण काबी तथा जमणी बाजु रह्यो होय तो ते वांहितने आपनार आय हे. बीजा आचार्यो वत्सनी ज जेम सूर्य विगेरे सर्वे ग्रहोनां घरो आ प्रमाणे कहे हे.—

"मीनादित्रयमादित्यो वत्सः कन्यादिकत्रये । धन्वादित्रितये रादुः शेषाः सिंहादिकत्रये ॥ १ ॥"

"सूर्य मीनथी आरंत्रीने त्रण त्रण संकांति सुधी अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां रहेलो हे, वत्स कन्या संकांतिथी आरंत्रीने, राहु धन संकांतिथी आरंत्रीने अने वाकीना प्रहो सिंह संकांतिथी आरंत्रीने पूर्वादिक दिशामां रहेला हे.



308



वत्सचार चक्र छपर श्राप्युं हे. अहीं प्रसंगोपात्त शिवचार खखे हे.—

"मेषेऽर्काञ्चत्तरादौ दिशि विदिशि शिवो मासमेकं तथा घौ, संहैत्या संस्थितो विर्ज्जमिति जुशमहोरात्रमध्ये तु सृष्ट्या । अध्यर्धे नामिके घे दिशि विदिशि घटीपञ्चकं चैष तिष्ठन् । चन्द्रादेः प्रातिकूह्यं हरति किरति शं दक्षिणपृष्ठगोऽसौ ॥ १ ॥"

"मेष राशिमां रहेखा सूर्यथी जत्तरादिक दिशामां जिल्कमधी फरे हे. दिशामां एक मास तथा विदिशामां वे मास सुधी रहे हे. ते शिव एक दिवस रातिमां श्रव्ने वे वार श्रमुक्रमें प्रमण करे हे, तथी दरेक दिशामां ते शिव श्राही श्राही ध्रमी रहे हे, श्रमें दरेक विदिशामां पांच पांच धर्मी रहे हे. जावार्थ ए हे के मेपनो सूर्य होय त्यारे प्रथम श्राही धर्मी शिव जत्तर दिशामां होय, पही पांच धर्मी ईशानमां, पही श्राही धर्मी पूर्वमां एम एक श्रहोरात्रमां वे वखत फरे हे. पही वृष तथा मिश्रुनना सूर्य होय त्यारे वे मास प्रथम पांच धर्मी वायव्यमां, पही श्राही धर्मी जत्तरमां एम कमे ज्रमण करे हे. पही कर्कमां प्रथम पश्चिममां श्रा प्रमाणे जाणवं. श्रा शिव जमणी वाजु श्रधवा पाइकना जागमां रह्यो होय तो चंजादिकनी प्रतिकूळतानो नाश करे हे तथा सुख श्रापे हे. चंजादिके करीने तारा- जनी तथा तेनी श्रवस्थार्जनी पण प्रतिकूळतानो नाश करे हे एम जाणवं.

१ उत्क्रमथी. २ क्रमथी. १ डावी वाजुने क्रमे. २ जमणी वाजुने क्रमे.

॥ चतुर्थो विमर्शः ॥

शिवचार चक्र-

ईशान घडी २। ईशान घडी २॥	पूर्व । मकरेऽर्कः घडी २॥	अग्नि घडी २॥ अग्नि घडी २॥
उत्तर मेपेऽर्कः घडी २॥		दक्षिण तुलार्कः घडी २॥
घडी २॥ वायव्य वायव्य घडी २॥	कर्केऽर्कः घडी २॥ पश्चिम	नैकेंस्य घडी २॥ मैकेंस्य घडी २॥

आ शिवचकनी स्थापना स्थूळ प्रमाण्वाळी हे. सूहम प्रमाण्वाळी तो आ प्रमाणे हे—े,

संकान्तेराद्यघन्ने स्वदिशि शर ५ पतान्येष जिन्त्वा जमान्यां, पश्चात्स्रष्ट्या तटस्थां दिशमटित दशैवं पतान्यन्यघन्ने। ष्टुिकः पञ्चोत्तरैवं प्रतिदिवसमहो तावदेतस्य यावत्, संकान्तेरन्त्यघन्ने स्थितिरधिककुत्रं सार्धनामी प्रयं स्थात्॥ १॥

"संकांतिने पहेले दिवसे शिव पोतानी दिशामां वे च्रमणे करीने पांच पळ जोगवे हे, एटले के दिवस अने रात्रिमां अइने शिव वे वार च्रमण करे हे, तेमां पहेला च्रमणमां पोतानी दिशामां अही पळ शिव रहे हे अने बीजा च्रमणमां पण बीजा अही पळ रहे हे. ए प्रमाणे संकांतिने पहेले दिवसे वे च्रमणे करीने शिव पोतानी दिशामां पांच पळ रहे हे. त्यारपडी सृष्टिना कमे बीजी दिशामां जाय हे. ए ज रीते बीजे दिवसे पण बीजी पांच पळो जोगववाथी दश पळ थइ (ए रीते त्रीजे दिवसे पण पांच पळो जोगववाथी दश पळ थइ (ए रीते त्रीजे दिवसे पण पांच पळो जोगववाथी पंदर पळ थइ). एज रीते दरेक दिवसे पांच पांच पळनी वृद्धि करतां हेवट संकांतिने हेल्ले दिवसे एटले त्रीशमे दिवसे शिवने पोतानी दिशामां दोढसो पळ एटले अही घमीनी स्थिति थाय हे." त्यारपडी फरीथी संहारे करीने बीजी दिशामां पण आवेला शिवनो आ प्रमाणे ज कम जाणवो.

शिवचारनुं फळ श्चा प्रमाणे हे.—
"विवादे शत्रुहनने रणे फगटके तथा।
ह्यते चैव प्रवासे वाऽवाम पृष्ठे शिवे जयः॥ ३॥

स्वराश्च शकुना इष्टा जजाग्रहबलं तथा। दिग्दोषा योगिनीमुख्या अजयाः स्युः शुजे शिवे॥ ४॥"

"वादिववादमां, शत्रुने हणवामां, रणसंग्राममां, जगमामां, चूतमां तथा प्रवासमां शिव जमणो श्रयवा पाठळ होय तो ते जय श्रापनार हे. श्रशुज स्वरोदय, श्रशुज शक्त, जाजा, श्रशुज प्रहोनुं बळ श्राने योगिनी विगेरे दिशार्जना दोषो, ए सर्वे शिव शुज होय तो निर्जयकारक हे." तथा—

"सूर्यराक्यादितः सञ्ये लग्नं तत्कालसंज्ञवम् । पृष्ठदक्तिणमं कृत्वा जयेद्युक्ते न संकायः ॥ १ ॥"

"सूर्यनी राशिने आदि करीने एटले सूर्य जे राशिमां होय ते राशिने पूर्व दिशामां सूकीने त्यां सृष्टिने कमे (सवळी-जमणी वाजुने कमे) तत्काळ संजवतुं जे लग्न आवे एटले ते वखते जे लग्न वर्ततुं होय तेने पाउळ अने जमणी वाजुए राखीने युद्ध करे तो जय पामे तेमां कांइ पण संशय नथी."

। इति यात्रायां समयशुद्धिः दिक्शुद्धिश्च । श्चा प्रमाणे यात्रामां समयनी शुद्धि श्चने दिशानी शुद्धि कही. इवे यात्रामां ज चेष्टा निमित्त विगेरेनी शुद्धि कहे हे.

उत्सवमशनं स्नानं प्रगुणं चोपेक्य मंगलमशेषम् । असमापिते च सूतकयुगेऽङ्गनत्तौं च नो यायात् ॥ ११ ॥

श्चर्य— कौमुदी विगेरे जत्सव, जोजन, रोगथी मुक्त थयानुं श्चर्यवा सामान्य स्नान श्चने विवाह तथा पुत्रनुं श्चर्यप्राशन विगेरे सर्व मांगितिक कार्योनी तैयारी होय ते वसते तेनुं छद्वंघन करीने तथा जन्म के मरणनुं सूतक समाप्त कर्या विना तथा क्रतुवाळी जार्या होय त्यारे प्रयाण करनुं नहीं.

श्रवमन्य माननीयान्निर्जत्स्य स्त्रीं च कमि संताड्य। बालमि रोद्यित्वा जिजीविषुर्नैव निर्गष्ठेत्॥ १३॥

अर्थ-जीववानी इक्षा राखनारे मानवा योग्य (पूज्य) मनुष्यनी अवगणना करीने, खीनी तर्जना (तिरस्कार) करीने, कोइने पण तामन करीने (मारीने), तथा बाळकने रोवमावीने गमन करवुं ज नहीं.

श्वहीं लक्ष्मनं श्वा प्रमाणेनं वचन लक्ष्मां राखवा योग्य हे.— प्रमत्तो न्याधितो जीतः श्रान्तः कुट्यो बुद्धितः । श्वभ्वानं न प्रपद्येत क्लीबवेषस्तश्रेव च ॥ १ ॥ रात्रौ तु मैथुनं कृत्वा प्रजाते योऽजिगम्नति । यात्राकाखेऽथवा प्राप्ते मैथुनं यो निषेवते ॥ २ ॥ यो वा प्रस्थानके गत्वा पुनर्गृहमुपागतः । इत्येवमादिचेष्टाजिः सिद्धिनीस्त्यजिगम्नतः ॥ ३ ॥"

"छन्मत्त थयेखो, व्याधिप्रस्त, जय पामेखो, थाकी गयेखो, कोध पामेखो, जूख्यो थयेखो तथा नपुंसकना वेपने धारण करेखो, आवा पुरुषे मार्गमां प्रयाण करेखुं नहीं. रात्रे मैथुन करीने प्रातःकाळे जे प्रयाण करे छे, अथवा प्रयाण करवानो समय प्राप्त थये जे मैथुनने सेवे छे, अथवा जे प्रस्थान करेखे स्थळे जङ्ने पाछो घेर आवे छे, ए विगेरे चेष्टाए करीने प्रयाण करे तेने कार्यसिद्धि थती नथी."

क्कतग्रहकलहुज्वलनौतुयुद्धपुर्वचनवसनसंगाद्यम् । ष्रञ्जुजं यात्रावसरे शुजमपि शकुनागमाद्विन्द्यात् ॥ १४ ॥

अर्थ—ठींक थर होय, घरमां कंकास थयो होय, घरमां अग्नि खाग्यो होय, विखा-मानुं अथवा पामा विगेरेनुं युद्ध यतुं होय, दुर्वचन एटखे "जर्श नहीं, मरी जर्श" एवा अमंगळ शब्द बोलाता होय, वस्त्रनो जेमो बारणा विगेरेमां जराइ गयो होय तथा मस्तक अथमायुं होय, ठेस वागवाथी अथवा बीजा कारणथी गतिनी स्वलना थर होय, आवी चेष्टाचं प्रयाणसमये थर होय तो शुज अथवा अशुजनो विचार करीने प्रयाण करवुं अथवा न करवुं. आ सिवाय शकुनना शास्त्रमांथी कहेली चेष्टा विगेरे जाणवुं.

जास्करव्यवहारमां आ प्रमाणे विशेष कहां हे.--

"रिक्तोऽनुकूलः कुंजोऽम्जःपूरणाय प्रयोजितः । विद्यार्थिचौरवणिजां प्रयाणेऽतीव सिद्धिदः ॥ १ ॥"

"विद्यार्थी, चोर अने विश्वकना प्रयाशमां जो कोइ माश्वस खाद्धी अने अनुकूळ घनो पाणी जरवा छइ जतो होय अने ते माश्वस प्रयाशमां साथे थयो होय तो कार्यनी सिद्धि थाय, एटखे के जेम ते घनो पूर्ण जराइने पाढ़ो आवदो, तेम प्रयाश करनार पण पूर्ण थइने पाढ़ो आवदो एम जाशवुं." तथा रक्षमाळामां कह्यं हे के—

"आद्ये विरुद्धे राकुने प्रतीहय, प्राणाञ्चपः पञ्च च षद् च यायात्। श्रष्टौ दितीये दिगुणास्तृतीये, व्यावृत्त्य नृनं गृहमन्युपेयात्॥ १॥"

"राजाने प्रयाण वसते पहेंद्धं शकुन अशुज धयुं होय तो पांच अने उ एटले अगीयार प्राण सुधी राह जोइने पड़ी प्रयाण करवुं, बीजी वसत पण अशुज शकुन धाय तो भा• २० ित्रुण आठ एटले सोळ प्राण सुधी विलंब करीने पठी चालवुं, अने त्रीजी वार पण अपराकुन थाय तो पाठा फरीने घेर ज आववुं."

आ सिवाय वीजां शकुनो शकुननां आगम (शास्त्र)थी एटले वसंतराज विगेरेनां करेलां शास्त्रोथी जाएवां. अर्थात् वीजा आचार्योए पोतपोताना ग्रंथोमां यात्राना अधिकारमां प्रयाएने योग्य एवां शकुनो पए विस्तारथी कह्यां हे, अमे तो आहीं तेनुं प्रस्तुत (प्रसंग) नहीं होवाने खीधे तथा शकुननां शास्त्रथी पए तेना शाननो संजव होवाथी कह्यां नथी.

ब्राह्मण, क्त्रिय, वैश्य अने शूष्प ए चारे वर्णीने साधारण यात्राना विधिने कहीने हवे शत्रुना विजयना प्रयोजनवाळुं नृपादिकनुं प्रयाण चाळीश श्लोकोयने कहे हे, तेमां प्रथम छष्ट निमित्तोनो परिहार करे हे.—

श्राकालिकीषु विद्युक्तर्जितवर्षासु वसुमतीनाथः। उत्पातेषु च जोमान्तरिक्वदिव्येषु न प्रवसेत्॥ १५॥

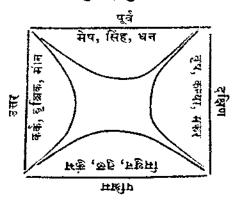
अर्थ—राजाए अकाळे यती एटले गर्ज के वर्गकतु विना यती वीजळी, गर्जना तथा वृष्टिने विषे प्रयाण न करतुं, अहीं राजाए करीने सामंतादिक तथा आचार्यादिक पण जाणवा तथा जौम, अंतरिक अने दिन्य जत्मातोमां प्रयाण न करतुं. अहीं जौम जत्मात एटले ज्ञिमकंप विगेरे, तथा जे चर पदार्थोंनुं स्थिर थवापणुं अने स्थिर पदार्थोंनुं चल स्वजावपणुं अथवा पुष्प फळादिकनो विकार ए सर्व जौम एटले ज्ञिमना जत्मात जाणवा अंतरिक (आकाश) ना जत्मात जहकापात, निर्धात (आकाशमां गम्माट), पवननुं तोफान, गंधर्व नगर, इंडधनुप, रातो ऐरावण हाथी, पंरिवेप, दंम, परिघ विगेरे जाणवा तथा दिव्य जपड्वो एटले चंड के सूर्यनुं प्रहण, प्रह तथा नक्त्रनो विकार अने केतुनुं दर्शन ए विगेरे जाणवा मूळ श्लोकमां च शब्द हे तथी राहु अने योगिनी (जोगणी) विगेरेनो पण विचार करवो. "आवा समयमां सात दिवस सुधी प्रयाण करतुं नहीं" एम दैवक्रवञ्चन कहे हे. "एक दिवस तो अवश्च तज्वो" एम सारंग कहे हे. "केतु जोयो होय तो सोळ दिवस सुधी प्रयाण न करतुं, पण चैत्र के वैशाक मासमां जोयो होय तो ते शुन्न हे" एम वराह कहे हे.

हवे यात्राने योग्य एवं खन्न कहे हे.— यातव्यं दिग्मुखे खन्ने सिड्स्ये शीर्षोदये तथा। एतिक्रलोमयोर्जातु यात्रा यातुर्न सिद्धये॥ १६॥

१ चंद्र सूर्य विगरेनी फरतुं कुंडाळुं.

श्चर्य—मेपादिक राशिन श्रनुक्रमे पूर्वादि चार दिशानिना ईश हे, ते ज प्रमाणे सिंहा-दिक चार तथा धन्वादिक चार राशिन पूर्वादिक दिशानिना ईश हे एम पूर्वे कहां हे ते राशिन ते ते दिशाना मुखवाळी हे एम ज्योतिर्विदो कहे हे, तेथी दिग्मुख लग्नमां तथा शिषांदयी लग्नमां प्रयाण करवाथी कार्यसिष्टि थाय हे अने तेथी जलदुं एटले जत्तर के पूर्व मुखनुं लग्न होय त्यारे श्रनुक्रमे दिश्ण के पश्चिममां गमन करवुं श्रने दिश्ण के पश्चिम मुखवाळा लग्नमां श्रनुक्रमे जत्तर के पूर्वमां गमन करवुं तथा पृष्टोदय लग्नमां गमन करवुं ए सिष्टिने माटे नथी. विशेष ए हे के यात्रामां लग्न प्राये चर ज ग्रहण करवुं.

लग्ननुं दिग्मुख चक्र.



खद्य कहे ने के—"अनिष्टदं दिक्षप्रतिखोमलग्नं, पृष्ठोदये वाञ्चितकार्यनाशः"। "प्रति-खोम (जलटी) दिशामां लग्न होय अने गमन करे तो अनिष्ट फळ मळे तथा पृष्ठोदयी खग्नमां गमन करे तो इञ्चित कार्यनो नाश थायः"

जन्मलग्ने ग्रुजा यात्रा जन्मराश्युद्ये तु न । तयोश्चोपचयस्थेषु राशिष्विष्टा परेषु न ॥ १०॥

अर्थ—यात्रा करनार नृपादिकने जन्मलग्नमां यात्रा करवी शुज हे, आयी करीने एवं सूचन्युं के—प्रथम जन्मनुं लग्न जाणीने पही यात्रानुं लग्न आपवुं जोइए, ते विना लग्न आपवुं नहीं, कारण के जन्मलग्न जाणीने दशा, आयुष्य अने ग्रहनुं वळ जोइने आपेलुं यात्रादिकनुं मुहूर्त्त फळदायक थाय हे. रह्माळामां कह्यं हे के—

"श्रज्ञातजन्मनोऽप्यन्यैर्यानं योज्यमिति स्मृतम् । प्रश्नलग्ननिमत्ताचैर्विज्ञाते सदसत्फले ॥ १ ॥"

"जन्मलग्न जाणवामां न होय तोपण प्रश्नलग्न छाने निमित्त विगेरे छान्य चेष्टाए करीने शुजाशुज फळ जाणीने प्रयाणनुं मुहूर्त्त छापबुं एम कह्युं हे." जन्मराशिना चदयमां यात्रा करवी शुज नथी, एटले के जन्ममां जे नेकाणे चंद्र होय ते जन्मराशि कहेवाय हे. ते जन्मराशिनुं ज लग्न होय तो तेमां यात्रा करवी शुज नथी. रक्तमाळामां तो "जन्मराशिना लग्नमां पण यात्रा करवी शुज हे" एम कहां हे. ते जन्मलग्न श्रमे जन्मराशिनी श्रपेदाए जपचयस्थानमां एटले २-६-१० श्रमे ११ मा स्थानमां रहेली राशिनं यात्रामां शुज हे. ते सिवाय बीजा स्थानमां होय तो तेमां यात्रा करवी शुज नथी. विशेष ए हे जे—"शत्रुनी जन्मराशि के जन्मलग्न श्रथवा ते बन्नेना स्वामी तत्काळना लग्नथी चोथे के सातमे स्थाने होय त्यारे पण यात्रा करवाथी जय थाय हे, श्रमे जो शत्रुनी जन्मराशि श्रमे जन्मलग्ननां चेथे के सातमे स्थाने होय तोपण जय थाय हे," एम रक्तमाळामां कहां हे.

पापैरस्तांबुगेर्देष्टे युते वा जन्मलग्नने । सौम्ययहैस्तु नैवं चेत्तदा यातुः पराजवः ॥ १० ॥

श्रर्थ—जे कोइ स्थानमां रहेखी जन्मखग्ननी राशि यात्राखग्नना सातमा ने चोथा स्थानमां रहेखा पापग्रहोए करीने युक्त होय श्रथवा तेमनी दृष्टि पमती होय, तथा ते ज जन्मखग्ननी राशि सातमा ने चोथा स्थानमां रहेखा सौम्य ग्रहोए करीने युक्त के दृष्ट न होय तो (तेवे वखते) प्रयाण करनारनो पराजव थाय. श्रश्चीत् पापग्रहनी जेम सौम्य ग्रहोए युक्त श्रथवा दृष्ट होय तो पराजव न थाय. विशेष ए वे जे—यात्राने समये जन्मकुंमळी संबंधी श्रावमुं तथा वहुं स्थान ऋर श्रमे सौम्य ग्रहोए सहित होय तो ते श्रशुज वे. ते विषे दैवज्ञवद्वजमां कहुं वे के—"वधः प्रयातुस्त्वरिजिः प्रसूतौ, रंधारिजे ऋरशुजान्विते चेत्"। "जन्मनुं श्रावमुं श्रने वहुं स्थान जो ऋर श्रमे शुज महोए युक्त होय तो ते वखते शत्रु तरफ प्रयाण करनारनो वध थाय वे."

श्रष्टमं स्वेन्डलग्नाच्यां ताच्यां षष्टमथ दिषः। तदाशिनाथयुक्तं वा लग्नं यातुरनर्थकृत्।। १ए॥

अर्थ—जन्मकाळना चंड्यी अने जन्मकाळना लग्नथी जे आठमुं लग्न ते यात्रामां तजवा योग्य हे अने ते बन्नेथी जे हुं लग्न होय ते पण तजवा लायक हे. तथा शत्रुना जन्मलग्नथी अने जन्मराशियी हुं स्थाने रहेली जे राशि ते जो लग्नमां होय तो तेने पण तजवी. तेमज जन्मराशियी अने जन्मलग्नथी जे आठमी अने हुं राशि होय तथा शत्रुना जन्मलग्नथी अने जन्मराशिथी जे हुं राशि होय ते हुए राशिलना स्वामीए करीने युक्त एवं जे लग्न ते पण यात्रामां तजवा लायक है. आ सर्व प्रकारनं स्वामीए करनारने अनर्थकारक है. आ विवे दैवक्षवन्नज्ञां कहां है के—

"जन्मर्क १ लग्नाष्टमराशिलग्ने २, पष्टोदये ४ शत्रुजलग्नतो वा ६ । तज्ञशिनाथै ६ रथवोदयस्थैः, करोतु यात्रां विषज्ञक्तणं वा ॥ १ ॥"

"जन्मराशि तथा जन्मलग्नथी छाउमी राशिनुं लग्न होय, अथवा शत्रुनी जन्मराशि अने जन्मलग्नथी उद्घं स्थान लग्ननुं होय, अथवा ते सर्वेना स्वामीए करीने युक्त लग्न होय तो तेवा समये प्रयाण करो अथवा विषनुं जहाण करो, ते बन्ने समान हे."

कर्कवृश्चिकमीनानामुद्येऽंशे च न व्रजेत्। मूर्त्तिस्थेऽहर्बक्षे रात्रौ रात्रिवीर्येऽहि च यहें॥ ३०॥

श्चर्य—कर्क, वृश्चिक श्चने मीननुं सम्म होय श्चश्चवा तेनो नवांश होय ते वखते प्रयाण करवुं नहीं. तथा यात्राना समां रहेलो मह जो दिवसे बळवान् होय तो रात्रे प्रयाण करवुं नहीं श्चर्यात् दिवसे प्रयाण करवुं श्चने ते मह जो रात्रे बळवान् होय तो दिवसे प्रयाण करवुं नहीं श्चर्यात् रात्रे प्रयाण करवुं.

कर्क छने वृश्चिक ए वे कीट (कीका) है, तेथी तेमनुं यात्रामां छसमर्थपणुं है, माटे ते वे वर्जवा छने मीन लग्नमां प्रयाण कर्युं होय तो वक्र मार्गे जटकी जटकीने कार्य सिद्ध कर्या विना ज पाहो छावे है. ते विषे रत्नमाळामां कह्यं हे के—

"वकः पन्था मीनलग्नेऽंशके वा, कार्यासिक्तौ स्यानिवृत्तिश्च तत्र"।

"मीनना लग्नमां श्रयवा नवांशमां प्रयाण कर्यु होय तो वक्र मार्गमां ज एटले श्रवळे मार्गे जवाय हे, श्रने कार्यनी सिद्धि कर्या विना पाढ़ं श्रवाय हे." तथा "धमो (कुंच) खादी हे, तेथी कुंचनुं लग्न तथा नवांश पण तजवा योग्य हे" एम पण रक्तमाळामां कह्यं हे.

> सिद्ध्ये सौम्येशलग्नानि नौयानं जलनेष्वि । जानीयाल्लोकतश्चात्र राशीनां वस्यतां मिथः ॥ ३१ ॥

अर्थ—सौम्य स्वामीना लग्नमां प्रयाण करवाथी कार्यसिक्ति थाय हे, अने वहाणनुं प्रयाण जळचर राशिना लग्नमां अथवा तेना नवांशमां पण कार्यसिक्तिने माटे हे, अने वहाण पूर्ण थवाथी विञ्चरिहतपणुं तथा लाज ए वन्ने थाय हे. तथा अहीं राशिसनुं परस्पर वशपणुं लोकथी जाणवुं. ते विषे दैवझवल्लजमां कहां हे के—

"चतुष्पदा छ्रंहिवशा विसिंहाः, सरीसृपश्चाम्बुचराश्च जक्ष्याः । सिंहस्य वश्या विसरीसृपाः स्युरूद्धं जनोक्तव्यवहारतोऽन्यत् ॥ १ ॥ श्यद्धाम्बुसंज्ञतसरीसृपाख्या, जवन्ति वश्या विद्यां स्वकानाम् । समा द्युसंस्था विषमान् जजन्ते, वश्या रजन्यां विषमाः समानाम् ॥ ६ ॥" "भेष, कृष, सिंह, धनुषनो पाद्यदो अर्ध जागतथा मकरनो पहेलो अर्ध जाग,श्चाटखां चतुष्पद कहेवाय हे, मिश्रुन, कन्या, तुला, कुंज अने धनुष्नो पहेलो अर्ध जाग, श्राटला मनुष्य हे, कर्क, मीन अने मकरनो पाहलो अर्ध जाग, श्राटलां जळचर हे, अने एक वृश्चिक सरीस्प एटले वृश्चिक अने जळचरो मनुष्यना जह्य (जहण् करवा लायक) हे. वृश्चिक विनाना सर्वे सिंहने वश हे, बीजुं मनुष्यमां कहेला व्यवहारथी जाण् हुं एटले के वृश्चिक मिन्ह पण वश्य हे. सर्वे पुरुष राशिष्ठं कन्याने वश्य हे, तथा धनुष्ने सर्वे वश्च हे विगरे (१). जो बन्ने राशि परस्पर स्थळचर, जळचर के वृश्चिक होय त्यारे ते बन्नेनी मध्ये जे बळवान होय तेने बीजो एटले दुर्बळ वश्य होय हो. जेम मेप वृपने वश्य हे, मीन अने कर्क मकरने वश्य हे. वृश्चिकने वीजो निर्वळ वृश्चिक वश्य होय हे. वन्ने मेप के बन्ने वृष्य होय तो एटले दुर्बळ वश्य होय हे. वन्ने मेप के बन्ने वृष्य होय तो एक ज होय तोपण वृश्चिकनी जेम वळनुं अधिकपणुं विचारीने वश्यपणुं जाण्डुं. इष्ट लग्न दिवसे के रात्रिए होय हो. तेमां जो दिवस होय तो सम राशिष्ठं विषम राशिने वश्य होय हो अने रात्रि होय तो विषम राशिष्ठं सम राशिष्ठंने वश्य होय हे. अनं फळ आनं फळ आगळ कहेशे."

जन्मकाले शुजैर्युक्ता दितीयास्तरणेश्च ये। निष्कृरा निर्विकाराश्च ते लग्ने राशयः शुजाः ॥ ३२॥

श्रर्थ—जे राशिड जन्मकाळे शुज यहोए युक्त होय, तथा जे राशिड रिवधी बीजी होय, श्रा सूर्यथी बीजी राशिनी जातकमां "वेशि" एवी संझा (नाम) कही छे. "सूर्या- द्वितीयमृद्धं वेशिः" "सूर्यथी बीजुं लग्न वेशि कहेवाय छे," एम कहां छे, तथा जे राशिड निष्कूर एटखे जन्मकाळे जे राशिमां कूर यह न होय एवी होय, तथा जे निर्विकार होय एटखे के कूर यहे जोगवेली राशि सविकार श्रने चंद्रे जोगवेली होय ते निर्विकार कहे- वाय छे. जन्मकाळे श्रावी राशिड होय तो ते यात्राना लग्नमां शुज जाएवी.

यच वर्यं खलग्नेन्द्रोनं च वर्यं द्विषस्तयोः। शत्रोरेवाष्ट्रमं ताज्यां लग्नं यातुर्जयावहम्॥ ३३॥

श्चर्य—जे यात्रानुं लग्न पोताना जन्मलग्नने तथा जन्मराशिने वश्य होय, अने शत्रुना जन्मलग्नने तथा जन्मराशिने वश्य न होय, वळी ते यात्रालग्न शत्रुना जन्म- लग्न अने जन्मराशियी आठमे होय, तो ते लग्न यात्रा करनारने जय आपनारुं हे.

श्रा प्रमाणे श्राठ श्लोकोवने यात्राने योग्य लग्न कहां. हवे ''जत्ता ठहग्गसुद्धीए'''यात्रा ठ वर्गनी शुद्धिए करीने करवी योग्य ठे" एम हर्षप्रकाशमां कहां ठे, माटे यात्राने योग्य एवा होरादिक पांच वर्ग कहे ठे.—

विमुक्ताकान्तजोग्यानि राज्यर्क्षान्युष्णरिमना । जर्ध्वतिर्यगधोमुख्यो होराः स्युरुद्याविध ॥ ३४ ॥

श्रर्थ—जे होरा सूर्ये जोगवीने मूकी दीधी होय ते कर्ध्वमुखी कहेवाय हे, जे जोगवाती होय ते तिर्यग्मुखी कहेवाय हे अने जे हज हवे जोगववानी हे ते अधोमुखी
कहेवाय हे. त्यारपद्धीनी बीजी त्रण होराने ए ज रीते अनुक्रमे कर्ध्वमुखी, तिर्यग्मुखी
अने अधोमुखी जाण्वी, त्यारपद्धीनी पण त्रण ए ज रीते जाण्वी. ए प्रमाणे त्रण त्रण
होराने अनुक्रमे छदय सुधी एटखे सूर्योदय सुधी ते ते नामवाळी जाण्वी. अथवा छदय
सुधी एटखे खग्नमां अधिकार करेखी होरा सुधी जाण्वी. आ प्रमाणे त्रण प्रकारनी
होरानी कहपना करवी. तेथी करीने एक दिवस रात्रिमां थइने चोवीश होरा होवाथी
तेमना त्रण त्रण प्रकार गण्वाथी आठ वखत आवृत्ति आय हे.

हवे त्रण प्रकारनी होरानुं फळ कहे हे.— जयमूर्ध्वमुखी होरा विपदस्तिर्यगानना । अधोमुखी रणे यातुर्जङ्गं दिश्चति समगा ॥ ३५॥

अर्थ—लग्नमां रहेली कध्वमुखी होरा युद्धमां जयने आपे हे, तिर्यग्मुखवाळी आप-त्तिने आपे हे, अने अधोमुखी होरा नाशने आपे हे. अर्थात् लग्नमां कर्ध्वमुखी होरा आवे ते वखते प्रयाण करवाथी जय याय हे.

हवे देव्काण विषे कहे हो.--

देकाणः फलरलाख्यः ग्रुजनायः ग्रुजेह्मितः ।

शुजोऽशुजस्तु सास्त्राहिपावकः (पाशकः)पापवी क्तितः ॥ ३६ ॥

श्चर्य—दरेक राशिमां त्रण त्रण घेष्काण होवाधी वारे राशिना मळीने ब्त्रीश घेष्काण होय हे. तेमां जे घेष्काण फळ, रक्ष तथा उपलक्षणथी पुष्प, जांम (वासण) विगेरेधी युक्त होय, सौम्य स्वामीवाळो होय, सौम्य स्वामीए पूर्ण (चार पाद) दृष्टिए जोयेखो होय, तेमज सौम्य श्चाकारवाळो होय, ते घेष्काण जो यात्राना लग्नमां होय तो ते शुज हो, श्चने जे घेष्काण यात्रालग्नमां श्चस्त्र, सर्प श्चने श्विप करीने युक्त होय श्वर्थवा पाश एटले बंधने करीने युक्त होय, तथा क्र्र ग्रहे जोयेखो होय तेमज उपलक्षणथी क्र्र ग्रहे युक्त होय, क्र्र स्वामीवाळो होय श्वर्थवा क्र्र श्वाकारवाळो होय तो ते श्वरुज हो. कह्यं हे के—

"इष्काणाकारचेष्टागुणसदशक्तं योजयेवृद्धिहेतो-ईष्काणे सौम्यरूपे कुसुमफलयुते रक्तजांकान्विते च। सौम्यैर्द्देष्टे जयः स्यात्प्रदरणसहिते पापदृष्टे च जङ्गः, साप्नौ दादोऽस्र वन्धः सञ्जजगनिगमे पापयुक्तेऽपि चाऽश्रीः॥ १॥"

"वृद्धिने माटे देष्काणनुं फळ तेना आकार, चेष्टा अने गुणनी सहश जाणवुं. तेमां जो देष्काण सीम्य आकारवाळो तथा पुष्प, फळ, रल अने जांकथी युक्त होय तथा सीम्य शहे जोयेखो होय तो जय थाय हे. हथियार सहित तथा पाप शहे जोयेखो होय तो जग श्रिश्च सिहत होय तो दाह थाय, सर्प तथा वंधन सहित होय तो बन्धन थाय, अने पाप शहे युक्त होय तो अखक्षी थाय."

बेष्काणोनां रूपो (आकारो) बृहकातकमां आ प्रमाखे कह्यां हे .--

१ मेष राशिमां पहेलो इंक्नाण पुरुषरूपे हो, तेना हाश्रमां परशु हो. श्रने ते तेणे उंचो करेलो हो, वळी ते काळो, रक्त नेत्रवाळो श्रने ऋर हो. १. बीजो इंक्नाण स्त्रीरूपे हो, तेने रातां वस्त्र हो, तेनुं मुख श्रश्वनी जेवुं हो, तेनुं मुख, करू (सायळ) श्रने पग लांवा हो, एक पग-वमे देखाय हो, तथा चतुष्पद जेवुं तेनुं मुख होवाथी ते चतुष्पद हो. १. त्रीजो इंक्नाण पुरुष हो, ऋर, किपल वर्णवाळो, रातां वस्त्रवाळो तथा उंचो करेलो दंम हाश्रमां रालेलो हो. ३.

१ बृष राशिमां पहें दो देन्काण स्त्रीरूपे हे, तेना केश दुंका स्त्रने कपायेदा हे, छदर मोदुं हो, तेनां वस्त्र तथा जूषणो स्त्रियी दग्ध थयेदां हे. १. बीजो देन्काण पुरुषरूपे हो, बकरा जेवा मुखवाळो हो, धान्य, देत्र, वास्तु (धर), हळ स्त्रने गामाना कर्ममां कुशळ हो, तथा ते चतुष्पद हो. १. त्रीजो देष्काण पुरुष हो, तेनुं शरीर तथा पग मोटा हो. ३.

३ मिथुन राशिमां पहेलो डेप्काण स्त्रीरूपे हे. ते डेप्काणरूप स्त्री स्वरूपवान् , दीन प्रजावाळी, जंचा हाथवाळी, ऋतुवाळी तथा श्रादंकारोमां आदरवाळी हे. १. बीजो डेप्काण पुरुषरूपे हे. गरुमनी जेवा मुखवाळो, जद्यानमां रहेलो तथा बखतर अने धनुष वाण धारण करेलो हे, आ लग (पद्यी) हे. २. त्रीजो डेप्काण नररूपे हे. रह्लोथी शोजित, पंमित. तूण (बाण्नुं जाथुं) तथा बखतरने धारण करनार अने धनुर्धारी हे. ३.

ध कर्कमां पहेलो बेष्काण नर हे. हाथीना जेवं शरीर हे, ख्रश्वनी जेवो कंत हे, सूकर (शुंक) जेवं मुख हे, पत्र (पांदकां) तथा मूळने धारण करनार हे, ख्रा चतुष्पद हे. १, बीजो बेष्काण स्त्री हे, जुवान हे, सर्प सहित हे, छाने बनमां रहेनार हे. १. त्रीजो बेष्काण नर हे, ते सर्पथी वींटायेलो हे. वहाणमां बेठेलो हे, तथा सुवर्णना ख्राजरणोथी युक्त हे.३.

५ सिंहमां पहेलो देव्काण नर हे. ते शाहमदी वृक्त पर बेहो हे, गीध, शीयाळ अने क्तरा जेवो तथा मिलन वस्त्रवाळो हे. आ लग तथा चतुष्पद हे. १. बीजो देव्काण नर हे. अश्वनी आकृतिवाळो, काळुं चर्म अने कंबलने धारण करे हे, धनुर्धारी हे, तेनी नासिकानो अप जाग नमेलो हे. आ चतुष्पद हे. १. त्रीजो देव्काण नर हे. तेनुं मुख

रीं जे जें है, वानर जेवी चेष्टा करे है, दाढी मूहवाळों है, दुंका केशवाळों है, तेना हाथमां दंक, फळ श्राने मांस है. श्रा चतुष्पद है. ३.

६ कन्यामां पहेलो देष्काण स्वीरूपे हो. ते देष्काणरूप स्वी पुष्पोथी जरेला धमाधी युक्त हो, मिलन वस्त्रवाळी हो, ते गुरुना कुळनी इन्ना राखे हो. १. बीजो देष्काण नर हो. तेना हाथमां देखण हो, ते रंगे स्थाम हो, तेने वाळ घणा हो, तेनुं मस्तक वस्त्रथी ढांकेलुं हो, तेना हाथमां विस्तारवाळुं धनुष हो. १. त्रीजो देष्काण स्त्रीरूपे हो. ते देष्काणरूप स्त्री गौरवर्णवाळी, लंची, धोयेलां सारां वस्त्रवाळी हो, तेना हाथमां कुंज तथा कमही हो, ते देवालय तरफ जाय हो. ३.

प तुलामां पहेलो देव्काण नर हे. तेना हाथमां त्राजवां हे, ते चौटामां रहेलो हे, मान तथा जन्मान करवामां चतुर हे तथा जांमनी चिंता करे हे. १. बीजो देव्काण नर हे. तेनुं मुख गीध पद्यीना जेवुं हे, ते घट सिंहत हे, जूख्यो तथा तरस्यो हे. श्रा खग हो. १. त्रीजो देव्काण नर हे. ते फळ अने मांसने धारण करनार हे, सुवर्णना तूण (जायो) तथा वखतरने धारण कर्यों हे, वानरनी जेवो हे, रक्षवमे चित्र विचित्र हे, हाथमां धनुष हे तथा ते वनमां मृगोने जय पमामे हे. आ चतुष्पद हे. २.

ण वृश्चित्रमां पहेलो देष्काण स्वीरूपे हे. ते देकाणरूप स्वीनम हे, स्थानथी प्रष्ट थयेली हो, तेना पग सपेथी वांधेला हे, तेनुं रूप मनोहर हो, ते समुद्रमांथी कांहा तरफ आवे हे. १. बीजो देष्काण स्वीरूपे हे. ते पतिने माटे सपेवके पोताना आंगने वींटे हे, तेनी आकृति काचवा अने कुंजना जेवी हो, ते स्थान तथा सुखने इहे हे. १. त्रीजो देष्काण पुरुष हो. सिंह जेवुं तेनुं रूप हो, तेनुं नाक चीवकुं अने मुख काचवा जेवुं हे. आ काचवो तथा चतुष्पद हो. ३.

ए धनमां पहेलों डेब्काण नर है. तेना हाथमां लांबुं धनुष है, ते मनुष्य जेवा मुख-वाळो अने अश्वनी जेवा शरीरवाळो है. आ चतुष्पद है. रे. बीजो डेब्काण स्त्रीरूपे है. तेनुं अंग गौरवर्ण है, ते समुद्रमांथी रह्नो काढे है. रे. त्रीजो डेब्काण नर है. ते गौरवर्ण-वाळो है, हाथमां दंग राखीने बेहेलो है, दाढी मूहवाळो है, रेशमी वस्त्र तथा चर्मने धारण करनारो है. रे.

१० मकरमां पहेलो देव्काण नर हे. तेने शरीरे घणा वाळ हे, तेनी आकृति सूकर (छंक) जेवी हे, तेनी दाढार्ड स्थूळ हे, ते बंधनथी बंधायेलो हे, तेने रौष मुझ हे. आ चतुष्पद हे. १. बीजो देव्काण स्त्रीरूपे हे. ते श्याम, अलंकार सहित तथा कानमां लोहना आज्ञ्षणथी जूपित हे, १. बीजो देव्काण नर हे. तेनुं अंग किन्नर जेवुं हे, तेणे तृण, वस्तर अने धनुषने धारण कर्यों हे, तेणे कंवल धारण कर्यों हे, तथा स्कंध छपर रक्ष जिनत कुंज छपाड्यों हे. ३.

आ॰ २८

- ११ कुंजमां पहेलो देन्काण नर हे. ते चर्मने धारण करनार, गीध पद्यीना जेवा मुख-वाळो तथा कंबल सहित हे. आ खग हे. १. वीजो देन्काण स्त्रीरूपे हे. तेनां वस्त्रो मिलन हे, तेणे मस्तक पर जांक राख्यां हे, अग्निवके शकट (गामी) बळी जवाधी तेमांथी लोढुं अहण करे हे. २. त्रीजो देन्काण नर हे. ते सिंहना जेवो हे, स्वाम हे, तेना कानमां वाळ हे, तेना मस्तक पर मुगट हे, तेणे हाल, पांदकां, रस अने फळ धारण करेलां हे. ३.
- १२ मीनमां पहेलों देष्काण नररूपे है. तेना हाथमां हार, मोती अने शंख है, तेणे आजूषणो पहेर्यों हे, ते नावमां वेहों हे, अने समुद्र तरे हे. १. बीजों देष्काण स्त्री हे. तेनुं अंग गौर हे, ते नावमां वेही हो, अने ते समुद्रमांथी कांटा तरफ जाय हे. १. बीजों देष्काण नर हे. ते नम्म, जीरु अने चोर तथा अग्निथी व्याकुळ थयेलों हे, तेनुं अंग सर्पथी वींटायेलुं हे, ते गर्ता (लामा)नी पासे रहेलों हे. छा देष्काण व्याकुळ हे. ३.

श्रानुं फळ चिंता तथा खोवायेखी वस्तुना प्रश्नमां "केष्काणोए करीने (तेने श्रानु-सरीने) चोरो कहेला हे" ए प्रकारे हे रोगीना प्रश्नमां जो ग्रध, कोल के सर्पनो जिं-शांश लग्नमां होय तो ते रोगीनुं मरण थाय हे वंधनथी हृदवाना प्रश्नमां सर्पनो त्रिंशांश लग्नमां श्रावे तो श्रंखलाथी के पाशथी वंधन थाय इत्यादि यात्राना विषयमां आ केष्काणनो जेवी रीते छपयोग हे ते प्रथम कह्यो है.

इंप्काणना स्वामी प्रथम कह्या है. ते इंप्काण शुज्ज अहे जोयेखी होय एम जे मूळ श्लोकमां कहां हे तेमां एवं समजवं के जे इंप्काण खग्नमां रहेखों हो, ते नामनी राशि यात्रानी कुंमळीमां जे स्थाने होय तेने जो शुज्ज अहे जोयेखी होय तो ते इंप्काण शुज्ज अहे जोयेखों कहेवाय है. जेमके वृपनो बीजो इंप्काण कन्या है, तेनो स्वामी बुध है, ते सौम्य है, तेना छपर बारमा अने पहेखा स्थानमां रहेखा शुक्र अने गुरुनी पूर्ण दृष्टि पमे है. ए ज रीते कूर स्वामीपणुं अने कूरदृष्टिपणुं पण जाणवं. ए ज प्रमाणे आगळ छदयास्तनी शुद्धि विगेरे कहेवाशे, तेमां पण नवांशादिकनुं सौम्य अने कूर स्वामीपणुं तथा सौम्य अने कूर दृष्टिपणुं जाणवं.

शन्यकेन्डकुजाँस्त्यवत्वा शुजोऽन्येषां नवांशकः। खप्नवहादशांशस्तु त्रिंशांशस्तु नवांशवत्॥ ३९॥

अर्थ—रानि, सूर्य, चंड अने मंगळना नवांराने होमीने बीजाना नवांशो शुन्न है. खम्मी जेम दादशांश जायवो, अने नवांशनी जेवो त्रिंशांश जाएवो. दैवहावसनमां कहां है के—

"लग्नेऽर्कस्य नवांशे वाहननाशः कुजस्य वह्नित्रयम् । इन्दोः प्रतापहानिः शनेर्नवांशे मरणमेव ॥ १॥"

"खग्नमां सूर्यनो नवांश होय तो वाहननो नाश थाय, मंगळनो होय तो अग्निनो जय थाय, चंडनो होय तो प्रतापनी हानि थाय, अने शनिनो नवांश होय तो मृत्यु ज थाय." लग्ननी जेम दादशांश जाएवो, एटखे के "यातव्यं दिग्मुखे लग्नेव"श्लोक (१६ मा) थी आरंजीने "यच वश्यं स्वलग्नेन्दोव" श्लोक (३३ मा) सुधीना आठ श्लोकोमां खग्न संबंधी जे जे कह्यं हे ते सर्व दादशांशमां पए समजवुं. त्रिंशांशने नवांशनी जेम जाएवो, एटखे के शनि अने मंगळ विना बीजा प्रहोनो त्रिंशांश शुज हो, सूर्य अने चंडने तो त्रिंशांश ज हो नहीं.

। इति पडुर्गशुद्धिः।

आ रीते षड्वर्गनी शुद्धि कही. हवे यात्राने विषे वार जावोने कहे हे.— तनुः र कोशो २ जटो ३ यानं ४ मंत्रो ५८रि ६ वेरमे ७ जीवितम् ७। सनः ए कर्मा र० जना रर मंत्री रश जावाः स्युरुदयाद्यः ॥ ३७॥

अर्थ-तनु १, कोश २, जट २, यान ४, मंत्र ए, अरि ६, वर्त्म (अध्या-मार्ग) ७, जीवित ७, मन ए, कर्म (जाग्य-व्यापार) १०, अर्जन ११, मंत्री १२. आ उदया-दिक बार जाव जाएवा आ बार स्थानोनुं शुजाशुज फळ ग्रहना बळथी विचाराय हे.

अहीं पूर्वे कहेली बार जावोनी विचारणा प्राये करीने सरखी ज हे, पण विशेषे करीने तो यात्रामां बार जावोने आश्रीने ग्रहनो विचार छा प्रमाणे कहे हे.—

> हन्ति योधायकर्मान्यानसौम्यः कर्म चासितः। सौम्योऽप्यरिं सितोऽध्वानं चन्द्रश्च तनुजीविते॥ ३७॥

अर्थ-कूर यह त्रीजा, अगीयारमा अने दशमा जात विनाना बीजा सर्व जावोने हुए हे. अर्थात् ३-११-१० जावोने पुष्ट करे हे. तेमां पण शिन दशमा जावने पण हुए हे, अर्थात् बीजा जावोने तो हुए हे ज. केवळ त्रीजा अने अगीयारमा जावने ज पुष्ट करे हे. सौम्य यह पण एटले गुरु, शुक्त, बुध अने चंद्र हुण जावने हुए हे, अने बीजा सर्व जावोने पुष्ट करे हे. कूर यह तो कूर होवाथी हुण स्थानने हुए हे ज एम अपि शब्दथी ज सिद्ध आय हे. अर्ही कोइ शंका करे हे के सर्व सौम्य यहो हुण जाव सिवाय बीजा सर्व जावोने पुष्ट करे हे के तेमां कांइ विशेष हे ? ते छपर कहे हे के—एक शुक्त सातमा जावने पण हुए हो हो, अने चंद्र पहेला तथा आहमा जावने पण हुए हो हो, शुक्त अने चंद्र हुण जहें ते तो कहां ज हे, तथी करीने आ प्रमाणे जावार्थ थयों.—

"ख १० स्थशनिवर्जमुपचयगाः ऋराः सर्वगाः शुन्नाः सौम्याः। हित्वाऽस्ते ९ सितमष्टम ए अग्न १ गशशिनं च यात्रायाम्॥ १॥"

"यात्राने विषे दशमा स्थानमां रहेला शनि विनाना सर्वे कर प्रहो जपचयस्थानमां (२-६-१०-११) रह्या होय तो ते शुज के अर्थात् एक शनि दशमा स्थानमां शुज नथी। सातमा जावमां रहेला शुक्रने तथा आठमा जावमां अने लग्नमां रहेला चंडने कोमीने सर्वे सौम्य प्रहो सर्व जावमां रहेला शुज्ज के."

श्रा रीते यात्रानी कुंमळीमां सामान्ये करीने बार जावोनो विचार कर्यो. हवे खग्नमां रहेला प्रहोनो विचार करे छे.—

जन्मन्यनिष्टः सौम्योऽपि न खग्नस्थः शुन्तो यहः । तत्रेष्टदस्तु पापोऽपि यात्रालग्नस्थितः शुन्तः ॥ ४०॥

श्चर्य—सौम्य ग्रह पण जो जन्मसमये श्चाठमे बारमे स्थाने रहेवाए करीने श्चशुज होय, श्चने ते यात्राना लग्नमां पहेला स्थानमां रह्यो होय तो ते शुज नथी, श्चने जे क्रूर ग्रह पण जन्मसमये उठे श्चगीयारमे स्थाने रहेवाए करीने शुज होय, श्चने ते यात्राना लग्नमां पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते शुज डे. जन्मसमयना शुजाशुज ग्रहो विस्ता-रथी जातकमां श्चाप्या डे, त्यांथी जाणवा संदेपथी तो श्चा प्रमाणे जाणवुं.—

"कूरास्त्रिषमायस्थाः सितेन्छगुरवोऽन्तिमाष्टरिपुवर्जाः । द्व्यष्टान्तिमरिपुवर्जो बुधः प्रशस्यो जननसमये ॥ १ ॥"

"जन्मसमये कूर महो त्रीजे, उठे अने अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुन हे. शुक्र, चंद अने गुरु ए त्रण महो बारमा, आठमा अने उठा स्थान सिवाय वीजे कोइ स्थाने रह्या होय तो ते शुन्न हे. तथा बीजा, आठमा, बारमा अने उठा स्थानने वर्जीने बीजा कोइ पण स्थानमां रहेलो बुध शुन्न हे."

पापोऽप्यजीष्टदो जन्मलग्नर्क्स्वामिनोः सुहृद् । मूर्त्तिस्थितः शुजोऽपि स्याद्शुजोऽरातिरेतयोः ॥ ४१ ॥

श्चर्य—पहेखा स्थानमां रहेखो पापग्रह पण जो जन्मलग्नना स्वामीनो तथा जन्म-राशिना स्वामीनो मित्र होय तो ते शुज हे, श्चने शुज ग्रह पण जन्मखग्नना स्वामीनो तथा जन्मराशिना स्वामीनो शत्रु होय तो ते श्चशुज है.

सुहृद्दशापतेः १ सद्यः सफलो १ जनने बली ३। कूरोऽपि त्रिविधो जडस्तनो सौम्योऽपि नेतरः ॥ ४१॥ ष्ट्रार्थ—यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो पापवह पण जो दशापतिनो मित्र १, सद्यः सफळ २ श्राने जन्मनो वळवान् २, ए त्रण प्रकारमांनो कोइ पण होय तो ते सारो हे. ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण सारो नथी.

यात्राने समये जे ग्रहनी दशा चालती होय ते ग्रह दशापित कहेवाय हे, तेनो जे मित्र ते दशापितनो मित्र कहेवाय हे. विशेष ए हे जे यात्राने समये दशापित पण बळ-वान होवो जोइए. ते विषे लक्ष कहे हे के—

"यात्रा नैव दशापताबुपहते नैवास्तगे नाबले, नीचस्थे न च नैव विक्रिण नृणां देया कदाचिद्धधैः।"

"दशापित हणायेखों (पराजय पामेखों) होय, अस्त पाम्यो होय, वळहीन होय, नीच स्थाने रह्यो होय तथा वक्री थयो होय तो ते वखते पंक्तिए मनुष्योने यात्रानं मुहूर्स देवं नहीं."

दशानों कम, तेनुं प्रमाण तथा तेनो विजाग विगेरे स्वरूप जातकादिक ग्रंथोथी जा-णवुं. ऋदीं तेनुं प्रस्तुत नहीं होवाथी तथा ते स्वरूप ऋत्यंत विस्तारवाळुं होवाथी ऋदीं सखता नथी, परंतु ते स्थान (विषय)ने शून्य न राखवाने माटे एक वर्षनी दिनदशानुं प्रमाण ऋदीं स्थूळ दृष्टिए बतावीए ठीए.—

"निजनामराशितः प्रजृति गण्यते वर्त्तमानसंकान्तेः । गतदिवसावध्येवं दिवसदशाः स्युः क्रमादेताः ॥ १ ॥ रवी १ न्छ १ जौम ३ क्ष ४ शनी ५ ज्य ६ राहु ७-सकेतु ० शुक्रेषु ए नखाः १० खवाणाः ५० । श्रष्टाश्वि २० पड्वाण ५६ रसाग्नि ३६ देव ३३-देवा ३३ ति शीत्य ३४ च्रह्या ७० दशाहाः ॥ २ ॥ हानिं १ धनं २ रुजं २ लक्षीं ४ दैन्यं ५ लक्षीं ६ च बन्धनम् ७ । जयं ० श्रियं ए चार्कादीनां दसुर्दिनदशाः क्रमात् ॥ ३ ॥"

"पोताना नामनी राशियी आरंजीने वर्तमान संक्रांतिना गयेला दिवसो सुधी आ प्रमाणे अनुक्रमे दिनदशा गणवी.—रिवनी २० दिवस, चंजनी ५० दिवस, मंगळनी २० दिवस, बुधनी ५६ दिवस, शनिनी ३६ दिवस, गुरुनी ३३ दिवस, राहुनी ३३ दिवस, केतुनी ३४ दिवस अने शुक्रनी ५० दिवस. अहीं एम समजवानुं हे के —पोताना नामनी राशिमां जे दिवसे सूर्यनी संक्रांति बेही होय ते दिवसथी आरंजीने चालता दिवस सुधीना दिवसो गणवा. जेटला दिवसो गया होय तेमां पहेला वीश दिवस रिवनी दिन-दशा जाणवी. ए रीते अनुक्रमे गणतां इष्ट दिवसे जे ग्रहनी दिनदशा आवे ते ग्रह दशापित कहेवाय हे. ते दशापितनुं

फळ छा प्रमाणे हे.—सूर्यनी दिनदशा हानि कर्ता हो, चंड्रनी दिनदशा धन छापनार हे, मंगळनी दशा रोग छापे हे, बुधनी दशा लक्षी छापे हे, शनिनी दशा दीनता छापे हे, गुरुनी दशा लक्षी छापे हे, राहुनी दशा बंधन करावे, केतुनी दशा जय छपजावे छने शुकनी दिनदशा लक्षी छापे हे."

मूळ श्लोकमां सद्यः सफळ ग्रह कह्यों हो, तेनो अर्थ ए हे जे—जे ग्रह इष्ट दिवसे गोचरे करीने अथवा प्रतिकूळ वेधे करीने शुज होय ते ग्रह सद्यः सफळ कहेवाय हो, अने जे ग्रह गोचरे करीने अथवा अनुकूळ वेधे करीने अशुज होय ते सद्यः अफळ कहेवाय हो. तथा मूळ श्लोकमां जन्मनो बळवान् ग्रह कह्यों हो, तेनो अर्थ ए हे जे—जन्मकुंमळीमां जे ग्रह बळवान् एटले सर्वोत्कृष्ट बळवाळो होय ते जन्मनो बळवान् कहेवाय हो. तथा ते सिवायनो सौम्य ग्रह पण एटले के जे ग्रह वर्तमान दशाना ईशनो शत्रु होय, अथवा जे ग्रह ते वखते अफळ होय अथवा जे ग्रह जन्मकाळे निर्बळ होय तो तेवो सौम्य ग्रह पण सारो नथी.

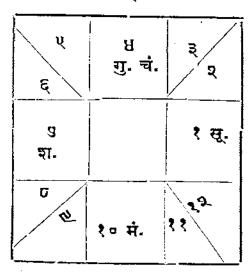
श्रहीं कोई शंका करे के—जन्मनो वळवान् यह ज्यारे सारो हे त्यारे जे सर्वोत्कृष्ट वळवान् यह श्राठमा विगेरे स्थानमां रहेवाए करीने श्रानिष्ट फळने श्रापनार हे ते पण पहेला स्थानमां यहण करवा लायक श्रशे. श्रा शंकानुं समाधान ए हे के—"जन्मन्यनिष्टः सौम्योऽपि" ए जपरना चाळीशमा श्लोकवर्भ ज तेनो निषेध श्राय हे.

तान तथा कारक संज्ञा अने तेनुं फळ कहे हे.— जन्मकाखे विधोर्यद्वाऽन्योऽन्येनोपचयस्थिताः । तानाख्याः सौम्यवत्ऋरा जातकोक्ताश्च कारकाः ॥ ४३ ॥

www.jainelibrary.org

अर्थ — जन्मकुंमळीमां ज्यां चंद्र रह्यो होय त्यांथी छपचय (३-६-१०-११) - स्थानमां जे जे यहो रहेखा होय तेनी चंद्रनी अपेक् ए तान संक्षा कहेवाय छे तथा जन्मकाळे जे जे यहो एक वीजाथी छपचयस्थानमां रहेखा होय तेमनी पण परस्पर तान संक्षा कहेवाय छे, एटखे के पिता पुत्र, गुरु शिष्य विगेरेनी जेम तान शब्द पण संवंधिवाचक छे, तेथी ते संबंध बन्नेमां रहेखो होवाथी दरेकनी तान संक्षा कहेवाय छे, कारण के तान शब्दनो अर्थ एवो थाय छे के "तन्वित विस्तारयंति अन्योऽन्यस्य कार्य इति तानाः" "एक बीजाना कार्यने विस्तारे एटखे करे ते तान कहेवाय छे." ए जममाणे कारक संक्षानुं बन्नेमां रहेवापणुं अने सार्थकपणुं जाणुवुं. ते तान संक्षावाळा यहो कूर होय तोपण सौम्य जेवा जाणुवा. तथा जातकने विषे जे यहोनी कारक संक्षा कहेखी छे ते पण कूर होय तोपण सौम्य जेवा जाणुवा.

जातकमां कारक संज्ञावाळा अहो आ प्रमाणे कह्या छे.—"जे अहो पोतानी राशिमां, पोताना जच स्थानमां अथवा पोताना त्रिकोणमां रह्या होय, ते जो केंद्रस्थानमां होय तो ते सर्वे परस्पर कारक संज्ञावाळा कहेवाय छे. तेमनी मध्ये दशमा केंद्रमां रहेलो प्रह वीजा अहोनो विशेषे करीने कारक होय छे. आ सर्वे अहोनुं लग्नमां रहेल चंद्रनी दृष्टिए करीने बळवानपणुं जाणवुं. जेम कर्कनुं लग्न होय अने लग्नमां चंद्र होय त्यारे सूर्य, मंगळ, गुरु अने शिन, ए अहो पोतपोताना जच्च स्थानमां रह्या सता परस्पर कारक संज्ञावाळा आय छे. तेनी स्थापना आ प्रमाणे.—



तथा खग्नमां जे यह रहेलो होय तेना स्थानधी दशमा अने चोथा स्थानमां रहेलों कोइ पण यह पोताना स्थानमां, पोताना उच्च स्थानमां के पोताना त्रिकोणमां रह्यो न होय तोपण कारक थाय हे. तथा खग्न अने केंज्ञ विना पण कोइ पण स्थाने रहेला यहना स्थानथी जो कोइ पण यह दशमा स्थानने विषे पोतानुं स्थान, पोतानुं उच्च स्थान अने पोतानुं त्रिकोण, एमांना कोइ पण एकने विषे रह्यो होय अने स्वाजाविक अथवा तात्कालिक मैत्रीए करीने युक्त होय त्यारे ते पण तेनो कारक कहेवाय हे. कह्यं हे के—

"स्वर्होच्चगम् स्वित्रेकोणगाः, कंटकेषु यावन्त आश्रिताः । सर्व एव तेऽन्योऽन्यकारकाः, कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ १ ॥ कर्कटोदयगते यथोकुपे, स्वोच्चगाः कुजयमार्कसूरयः । कारका निगदिताः परस्परं १, स्वग्नगस्य सकस्रोऽम्बराम्बुगः ॥ १ ॥ स्वर्हकोणोच्चगः खेटः, खेटस्य यदि कर्मगः । सुहृत्तकुणसंपन्नः, कारकश्चापि संस्मृतः ॥ ३ ॥" "पोताना स्थानमां, पोताना जच्च स्थानमां छने मूळ त्रिकोणमां रहेला जेटला झहो कंटक (१-४-७-१०) स्थानमां रह्या होय ते सर्वे परस्पर कारक कहेवाय छे. तेमां पण दशमे स्थाने रहेला यह विशेषे करीने कारक कहेवाय छे. जेमके कर्कना लग्नमां चंद्र रह्यो होय त्यारे पोताना जच्च स्थानमां रहेला मंगळ, शनि, सूर्य छने गुरु, ए चारे परस्पर कारक कहेला छे. तथा दशमा छने चोथा स्थाने रहेलो सर्व कोइ यह स्वगृह, जच्च के त्रिकोणनो न होय तोपण ते लग्ननो कारक थाय छे. पोताना स्थानमां, त्रिकोणमां के जच्मां रहेलो यह जो दशमा स्थानमां होय तो ते लग्नना यहनो तद्गुणने पामेलो मित्र कहेवाय छे तथा तेने कारक पण कह्यो छे."

जन्मलग्नेशयोस्तानः कारको वापि लग्नगः।

असौम्योऽपि ग्रुजाय स्याद्ध्यस्तः सीम्योऽपि चान्यथा ॥ ४४ ॥

अर्थ-जन्मेरा अथवा बग्नेरानो तान अथवा कारक जो बग्नमां रह्यो होय तो ते असौम्य (कूर) उतां पण शुजने माटे हे, अने ते सिवायनो सौम्य यह पण अशुज हे.

यात्रा करवानी इञ्चावाळा राजादिकना जन्मसमये जे राशिमां चंछ रह्यो होय ते राशिनो ईश जन्मेश कहेवाय छे. ते जन्मेश ग्रहनो ख्रथवा जन्मना लग्नेश ग्रहनो जे ग्रह जन्मपत्रिमां तानरूप अथवा कारकरूप होय अने ते कूर होय तोपण यात्रानी लग्न-पत्रिमां प्रथम स्थाने रहेलो शुज छे, छाने तेथी विपरीत एटले जे साम्य ग्रह पण जन्म-पत्रिकामां जन्मेश के लग्नेशनो तान के कारक न होय ते ग्रह यात्रानी लग्नपत्रिकामां ग्रथम स्थाने रहेलो शुज नथी. अर्थात् यात्रामां तान छाने कारकनुं बळ अवश्य ग्रहण करवुं जोइए. दैव इवस्त्रामां कहुं छे के—

"नायकाः स्युः प्रसृतौ ये रक्तका ये च वर्धकाः। ते क्रूरा श्रपि यात्रायां सग्नस्थाः शुजदा प्रहाः॥ १ ॥"

"जन्मकाळे जे महो नायक होय, जे रक्तक होय अने जे वर्धक एटले वृष्टिकारक होय ते महो क्रूर होय तोपण यात्रामां लग्न (प्रथम) स्थाने रहेला शुज हे." आ नायक, रक्षक अने वर्धकतुं स्वरूप बृहत् जातकमांथी जाणी लेवुं.

> ्रवक्री केन्द्रेऽय तद्वर्गो लग्ने यातुर्जयापदः । गतिप्रमाणवर्णैर्वा विकृतश्च नजश्चरः ॥ ४५ ॥

श्चर्य-वन्नी ग्रह केंड्रमां रह्यो होय अथवा ते वन्नी ग्रहनो वर्ग लग्नमां रह्यो होय तो यात्रा करनारना जयनो नाश करे छे. तथा जे ग्रह गति, प्रमाण श्चने वर्णे करीने विकृत (विकारवाळो) होय ते पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो श्चशुज छे.

 t_1

सूर्य अने चंड वकी होइ शकता नथी, तेथी मंगळ विगेरे कोइ पण यह यात्रासमये वक गितवाळो होय ते एक ज जो यात्रालग्नमां केंडस्थाने रह्यो होय तो ते जयनो नाश करे हे, तो पही वे त्रण वकी यह रह्या होय तेमां तो शुं कहेतुं ? अथवा ते ज वकी प्रहनो वर्ग एटले होरानो असंजव होवाथी गृह (स्थान), डेप्काण अने नवांश विगेरे-रूप वर्ग जो लग्नमां होय तो ते पण अशुज हे, वक गितना दिवसनी अने मार्गगितना दिवसनी संख्या ज्योतिषसारमां आ प्रमाणे कही हे.—

"पणसि ६५ इक्कवीसा २१ बारसऋहियं सयं च ११२ बावझा ५२। चलतीस सयं च १३४ कमा वक्कदिणा मंगलाईणं ॥ १ ॥ सगसयपणाल ७४५ बिणवइ ए२ चुऋालसय १४४ पंचसयचलबीसा ५२४। दो ऋ सया चालीसा २४० मंगलमाईण मगगदिणा ॥ २ ॥"

"मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए पांच ब्रहोना वक्र गतिना दिवसो अनुक्रमे ६५-२१-१११-५२ अने १२४ हे, तथा मंगलादिकना मार्गगतिना दिवसो अनुक्रमे ४४५-ए१-१४४-५२४ अने २४० हे."

गति, प्रमाण अने वर्णे करीने विकृत ग्रह पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेखो शुज नथी. तेमां अतिचारी ग्रह गतिए करीने विकृत कहेवाय हे. अतिचारी ग्रहनुं स्वरूप खंद्रे आ प्रमाणे कहां हे.—

"पक्षं १ दशाहं १ त्रिपक्षी ३ दशाहं ४ मासपट्तयी ५। स्रतिचारः कुजादीनामेष चारस्त्वितोऽपरः ॥ १॥"

"मंगलादिक प्रहोनो श्रातिचार अनुक्रमे पंदर दिवस, दश दिवस, त्रण पद्ध (दोढ मास), दश दिवस श्राने छ मास सुधी छे. त्यारपठीना दिवसो चार कहेवाय छे."

श्रा जपर कहेला प्रमाण्यी जी के अधिक प्रमाणवाळी ग्रह श्राकाशमां जणाती होय तो ते ग्रह प्रमाणे करीने विकृत कहेवाय हे. एज प्रमाणे वर्णे करीने विकृत पण जाणवो.

खद्य तो कहे ने के—''जे प्रहर्नु जन्मनक्त्र ऋर प्रह के जहकापात विगेरेथी पीमा पामतुं होय ते प्रह पण यात्रालग्नमां प्रथम स्थाने रहेलो शुज नथी. प्रहनां जन्मनक्त्र आ प्रमाणे ने.—

"विद्याला १ कृत्तिका १ प्यानि ३ श्रवणो ४ ज्ञाग्य ५ मिज्यज्ञम् ६। रेवती ९ याम्य ० मश्लेषा ए जन्मक्षियर्कतः क्रमात्॥ १ ॥"

१ होरा चंद्र अने सूर्यनीज होय छे, ते प्रथम कही गया छे. * भर १ चित्तु २ त्तरसाहा ३ धिण ४ उत्तरफग्गु ५ जिट्ठ ६ रेवइआ ७ । सुराइ जम्मरिक्खा एएहिं वज्जमुसळ पुणो ॥ १॥ आ प्रमाणे प्रथम विमर्शमां छे तथा प्रथम विमर्श प्रमाणे ज लप्नशुद्धिमां तथा नारचंद्रमां पण कहेल छे, तथी विशाखा इत्यादि उपरनो पाठ मतांतर जाणवो. भा• २९

"रिवनुं जन्मनक्त्र विशाखा है, चंदनुं कृत्तिका है, मंगळनुं पूर्वापाढा है, बुधनुं श्रवण है, गुरुनुं पूर्वाफाहगुनी है, शुक्रनुं ज्येष्टा है, शनिनुंरेवती है, राष्टुनुं त्तरणी है अने केतुनुं जन्मनक्त्र अश्लेषा है."

> उत्तरान्तश्चरो जानोः ग्रुजो नान्यस्तनौ यहः। फल्नेन वर्गो वारश्च तनुगव्योमगोपमः॥ ४६॥

श्रर्थ—जे यह सूर्यनी उत्तरचर श्रथवा श्रन्तश्चर होय ते जो यात्राद्धममां पहें दे स्थाने रह्यों होय तो ते शुज हे. ते सिवायनो शुज नश्ची. श्रहीं एम जाण्डुं के—इष्ट दिवसे जे स्थाने सूर्यनो उदय श्रने श्रस्त श्रतो होय ते स्थान सारी रीते निर्णय करीने ध्यानमां राख्वुं. तथा जे स्थाने विविद्धित (कहेवाने इद्धेदा) यहनो उदय तथा श्रस्त श्रतो होय ते पण ध्यानमां राख्वुं. पृजी ते यह जो सूर्यथी उत्तर दिशामां उदय श्रने श्रस्त पामतो होय तो ते श्रह उत्तरचर कहेवाय हे, श्रने ते यह जो सूर्यने ज स्थाने उदय श्रने श्रस्त पामतो होय तो ते श्रंतश्चर कहेवाय हे. श्रा वे जातना यह यात्रा-द्यममां प्रथम स्थाने रह्या होय तो ते श्रुज हे, श्रने ते सिवायनो वीजो एटदो सूर्यधी दिश्चणचर होय तो ते श्रजुज हे. श्रा प्रथम स्थानना यहनुं स्वरूप जो के श्रहीं यात्राने उद्देशीने कह्यं हे, तोपण विवाहादिक सर्व शुज कार्यना द्यममं पण श्रा रीते ज समजवुं. देवइवद्यन्तमां विशेष श्रा प्रमाणे कह्यं हे.—

"खग्नेऽकीरौ शनेधीम्न शुजावन्यत्र जंगदौ।
शीतांशुरुदयप्राप्तः सर्वकार्येषु नाशदः॥ १॥
जीवशुक्रशिनस्थाने स्थितो खग्ने जयार्थदः।
स्थानेष्वर्केन्डजौमानां शशिमुनुरनर्थदः (कः)॥ १॥
मन्दारबुधसूर्यीणां स्थानेषु शुजदो गुरुः।
शुक्रेन्डस्थानगो खग्ने धनयोधिवनाशकः॥ ३॥
सौम्यस्थाने सितः शस्तो खग्नस्थोऽन्यत्र नेष्टदः।
ग्रायापुत्रो रिवस्थाने प्रीतिदोऽन्यत्र नाशदः॥ ४॥
स्वस्थाने न शुजो मन्दो खग्नेऽन्यत्र शुजावहः।
यात्रायां चन्डमाः शस्तो दिग्वलेन विवर्जितः॥ ५॥"

"यात्राखग्ननी कुंमळीमां सूर्य अने मंगळ जो शनिना स्थानमां रह्या होय तो ते शुज हे, बीजा कोइ स्थानमां होय तो नाशने करनारा हे, चंड उदयना स्थानमां रह्यो होय तो सर्व कार्यमां नाशने आपनारो हे, अने गुरु, शुक्र तथा शनिना स्थानमां रह्यो होय तो जय अने धनने आपनार थाय हे. सूर्य, चंड अने मंगळना स्थानमां बुध रह्यो होय तो ते अनर्थने आपनारों हे. शनि, मंगळ, बुध अने रविना स्थानमां गुरु होय तो ते शुज हो, तथा शुक्र अने चंदना स्थानमां रह्यों होय तो ते धन योष्टानो नाश करे हे. बुधना स्थानमां शुक्र रह्यों होय तो ते प्रशस्त (शुज) हो, अने बीजें कोइ स्थाने रह्यों होय तो ते इष्ट वस्तुने आपनारों नथी (अशुज हे). रविना स्थानमां राहु रह्यों होय तो ते प्रीतिने आपनार हे, अने बीजा कोइ स्थानमां रह्यों होय तो ते नाशने करनारों हे. शिन पोताने स्थाने रह्यों होय तो ते शुज नथी, अने बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यों होय तो ते शुज हो दिक्बळें करीने रहित एवो चंद्र यात्राने विषे प्रशस्त (शुज) हे."

श्रा प्रमाणे सामा उश्योक करीने प्रथम स्थाने रहेला ग्रहोनी व्यवस्था कही. हवे मूळ श्लोकना उत्तरार्धवमे यात्रालग्नमां उवर्ग तथा वारनो नियम कहे छे.—वर्ग एटले पड्वर्ग तथा वार एटले यात्राना दिवसनो वार, ए प्रथम स्थानमां रहेला होय तो तेनुं फळ दशमा स्थाने रहेला ग्रहनी जेवुं जाणवुं, एटले के "जन्मन्यनिष्ट" ए ४० मा श्लोकथी धारंजीने श्रा श्लोकना पूर्वीर्ध सुधीमां कहेली रीते करीने जेवो ग्रह प्रथम स्थानमां शुज श्रथवा श्रशुज कहेलो होय, तेवाज ग्रहना गृह, होरा विगरे छ वर्ग प्रथम स्थानमां रहेला होय तो ते शुज श्रथवा श्रशुज जाणवा, श्रने ए ज रीते यात्राने दिवसे वारनो पण निर्धार करवो. विशेष श्रा प्रमाणे छे.—

"छपचयकरस्य वर्गः क्र्रस्यापि प्रशस्यते खग्ने ।
चन्दो वा तद्युक्तो न तु विपरीतस्य सौम्यस्य ॥ १ ॥
जपचयकरप्रहदिने सिद्धिः क्र्रेडिप यायिनां (नो) जवित ।
सौम्येडिप्यनुपचयकरे न जवित यात्रा शुजा यातुः ॥ १ ॥"

"जपचय करनारा क्रूर ग्रहनो वर्ग पण लग्नमां रह्यो होय तो ते शुज हे, श्रथवा ते ग्रह करीने युक्त चंद्र रह्यो होय तोपण ते शुज हो, पण जपचय करनारो न होय एवो सौम्य ग्रहनो वर्ग लग्नमां होय तो ते शुज नश्री. जपचय करनारा ग्रहनो दिवस (वार) क्रूर होय तोपण ते यात्रा करनारने सिद्धि आपनारो हे, परंतु जपचय करनार न होय एवा सौम्य ग्रहने दिवसे यात्रा करनारनी यात्रा शुजकारक नश्री," एम लक्ष कहे हे. वळी दैवक्षवक्षजमां आ प्रमाणे कहां हो.—

"सौम्योऽपि न शुजं दत्ते रिपोर्वारे विखग्नपः। वारे मित्रस्य पापोऽपि जवेह्यजफलप्रदः॥ १॥"

"लग्ननो स्वामी सौम्य होय तोपण ते शत्रुना वारने विषे शुज नथी, अने मित्रना वारने विषे पाप स्वामी पण शुज फळने आपनारो हे." वळी जेनो वार शुज अथवा अशुज होय तेनी होरा पण तेवी ज शुज के अशुज जाणवी. तेनुं फळ शौनक आ प्रमाणे कहे हे.—

> "रूपं ग्रहस्य वर्गे स्वदिने दिगुणं स्वकालहोरायाम् । त्रिगुणमरिवर्गयोगे फलस्य पात्यस्तृतीयांद्यः ॥ १ ॥"

"ग्रहनुं फळ पोताना वर्गमां सरखुं ज (पूर्ण) हे, पोताने दिवसे बमणुं हे, पोतानी काळहोरामां त्रण गणुं हे, अने शत्रुना वर्गने योगे त्रीजा जागनुं फळ मळे हे."

तथा ख़ख़ कहे हे के-

''बितनः कंटकसंस्था वर्षाधिपमासदिवसहोरेशाः । विगुणशुचाशुचफलदा यथोत्तरं ते परिक्षेयाः ॥ १ ॥''

"वर्षनो स्वामी, मासनो स्वामी, दिवसनो स्वामी अने होरानो स्वामी ए कंटक (केंड्र)-स्थानमां रह्या होय तो ते बळवान् हे, तथा तेर्च उत्तरोत्तर बमणा बमणा शुजाशुज फळने आपनारा हे."

प्रथम स्थानमां रहेखा प्रहो तथा तेना पड्चर्ग विगेरेनी व्यवस्था कही. हवे वाकीना केंद्रादिक स्थानने आश्रीने कहे हे.—

केन्डेषु ग्रह्शून्येषु लग्ने वीर्येण वर्जिते । बलहीनेश्च सौम्येः स्याद्जिषेणयतो जयम् ॥ ४९ ॥

अर्थ — केंद्रस्थान ग्रहवरे शून्य होय, लग्न वीर्यवरे रहित होय तथा सौम्य प्रहो बळहीन होय, ते वखते शत्रु तरफ खरवा माटे प्रयाण करनारने जय खाय हे

केंद्रस्थान ग्रहशून्य होय एटखे प्रथम तो केंद्रना एक पण स्थानमां कोइ पण सौम्य ग्रह होय तो ज यात्रा अथवां बीजां कार्य करवा शुज हे. ते सिवाय शुज नथी. जो कदाच केंद्रना कोइ पण स्थानमां कोइ पण सौम्य ग्रह न होय तो केंद्रनुं एक पण स्थान छपचयकारक कर ग्रहवके सिहत होय तोपण ते शुज हे. केंद्रनां सर्व स्थानो एक पण ग्रह रहित होय तो सर्वथा अनिष्ट थाय. ते विषे रह्माळामां कह्यं हे के—

"पापोऽपि कामं बद्धवान्नियोज्यः, केन्द्रेषु शून्यं न शिवाय केन्द्रम्"।

"पापग्रह पण बळवान् करीने श्रवश्य केंज्मां खाववो जोइए, केमके केंज् शून्य होय तो ते कह्याणने माटे नथी."

विशेष एटख़ुं ने के—केंडमां सीम्य ग्रहो पापग्रहोए करीने सहित रह्या होय तो मोटा कष्टची यात्रा सिट्स थाय ने. ते विषे लक्ष कहे ने के—

"सौम्येश्च पापेश्च चतुष्टयस्थैः, कृत्रेण संसिद्धिमुपैति यात्रा"।
"सौम्य तथा पापप्रदो केंद्रमां रह्या होय तो कष्टे करीने यात्रा सिद्धिने पामे हे."

खग्न वीर्थ रहित होय एम जे मूळ श्लोकमां कहां तेमां एम समजवुं के सौम्य स्वामी तथा सौम्य ग्रहने श्रजावे करीने तथा तेमनी दृष्टिने श्रजावे करीने तेमज कूर ग्रहोना स्वामी श्रने ग्रहोना होवापणाथी श्रथवा तेमनी दृष्टि पमवाथी लग्न वीर्थ रहित थाय हे.

मूळ श्लोकमां सौम्य यहो बळहीन होय एम कहां हे. तेमां यहोनुं बळहीनपतुं जुनन-

दीपकनी वृत्तिमां श्रदार प्रकारे कहां हे ---

"स्व १ मित्रनीचगो २ वकः ३ स्वराश्यस्ता ४ रिवर्गगः ४ । लग्नाद्वादशगः ६ षष्ठः ५ कूरैर्युक्तो ७ ऽथ वीक्तितः ए ॥ १ ॥ याम्यो १० राह्वास्य ११ पुष्ठस्थो १२ वालो १३ वृद्धो १४ ऽस्तगो १५ जितः १६। मुश्चशिले १९ मुश्चरिके पापै १० रित्यवलो घहः ॥ २ ॥"

"पोताना नीच गृहमां रहेखो यह निर्बळ हे १. मित्रना नीच गृहमां रहेखो यह निर्बळ हे २. आ बन्ने जातनो यह नीच नवांशमां रह्यो होय तोपण निर्बळ जाणवो. वक्त अथवा वक्रतामां सन्मुख थयेखो यह निर्बळ हे ३. पोताना गृहनी राशिथी सातमी राशिमां रहेखो यह निर्बळ हे ४. शत्रुरूप अथवा अधि शत्रुरूप यहना गृह, होरा विगेरे ह वर्गमां रहेखो यह निर्बळ हे ५. खप्तथी बारमे स्थाने रहेखो यह निर्बळ हे ७. खप्तथी बारमे स्थाने रहेखो यह निर्बळ हे ७. क्रूर यहे करीने युक्त एवो यह निर्बळ हे ७. क्रूर यहे जोयेखो यह पण निर्बळ हे ७. कर्कीदिक ह राशिक्षप दक्षिणायनमां रहेखो यह निर्बळ हे १०. राहुना मुखमां रहेखो यह निर्बळ हे ११. राहुना पुछमां रहेखो यह

''यत्र कक्षे स्थितो राहुर्वदनं तिक्निर्दिशेत्। मुलात् पञ्चदशे कक्षे तस्य पुञ्जं व्यवस्थितम्॥ १॥"

"जे नक्षत्रमां राष्टु रहेक्षो होय ते नक्षत्र राष्ट्रनुं मुख जाणवुं, श्रने मुखयी पंदरमुं जे नक्षत्र होय त्यां तेनुं पुन्न रहेक्षुं हे."

बाळ एटले घोमा दिवसची जदय पामेलो यह निर्बळ हे १३. वृद्ध एटक्के छस्त यवामां सन्मुख अयेलो यह निर्बळ हे, वृद्ध कहेवाथी छह्प तथा रक्त बिंबवाळो छने कांतिरहित एवो यह पण निर्बळ जाणवो १४. अस्त एटले सूर्यनां किरणोमां प्रवेश करवाथी छस्त पामेलो यह निर्बळ हे १५. जीतायेलो एटले यहोना युद्धमां जे यह दिल्ण गामी होय ते निर्बळ हे, वराइ कहे हे के शुक्र तो जत्तरगामी होय त्यारे जीतायेलो हे १६. मुशुशिख एटले शीध गतिवाळो क्र्र यह मंद गतिवाळा प्रहना एक छंशमां मळ्यो होय छने वळी ज्यांसुधी ते मंद प्रहनी पाठळ रह्यो होय त्यांसुधी ते मुशुशिख कहेवाय हे, तेनुं बीजुं नाम इथिशाख हे. आ मुशुशिख प्रह निर्बळ होय हे १७. ज्यारे शीध गतिवाळो क्र्र यह मंद गतिवाळा प्रहना एक छंशमां मळीने पही ते छंशने छक्कं

धन करीने आगळ जाय त्यारे ते राशि पूरी यतां सुधी मूशिरफ योग कहेवाय है. ते पण निर्वळ हे १०. जेमके कहपनाए करीने गुरु त्रीजा त्रिंशांशमां मंद गतिवाळो हे, ते अंशमां आवेलो सूर्यादिक क्र्र यह ज्यां सुधी ते त्रीजा अंशने छद्यंघन करीने नथी जतो त्यांसुधी मुशुशिल कहेवाय हे, अने ज्यारे ते त्रीजा अंशनो त्याग करीने चोथा अंशमां जाय त्यारे राशिना अंत सुधी मूशिरफ कहेवाय हे. जो शीध गतिवाळो यह क्र्र यहमां आवीने आ वे योगो छत्पन्न करे तो मंद गतिवाळो यह निर्वळ जाणवो."

प्रश्नप्रकाशमां तो नव प्रकारे ज निर्वळता छा प्रमाणे कही हे.—
"पापः शीघः १ शुजो वक्री २ वालो २ वृद्धो ४ ऽरिजा ५ स्तगः ६ ।
नीचः ७ पापान्तरे ० ऽष्टस्थ ए इत्युक्तो बलवर्जितः ॥ १ ॥"

"क्र ग्रह शीधगामी होय १, शुज ग्रह वक्री होय २, बाळक ३, वृद्ध ४, शत्रुना स्थानमां रहेलो ५, अस्त पामेलो ६, नीच स्थाने रहेलो ७, क्र्र ग्रह साथे रहेलो ७, अने समयी आठमे स्थाने रहेलो ए, आ नव प्रकारनो ग्रह निर्बळ कह्यो हे." आ प्रमाणे अन्यत्र पण संजव प्रमाणे प्रविकता जाणवी.

दिगीशः केन्द्रगः श्रेयान् दिग्वली जालगस्तु न । बिलनो जन्मलग्नेशो केन्द्रोपचयगौ शुजी ॥ ४०॥

अर्थ—दिक्पित केंद्रमां होय तो ते शुज हे, पण दिग्वती अने सन्मुख रह्यो होय तो ते शुज नथी. जन्मेश अने लग्नेश बळवान् होइने केंद्र के जपचयस्थानमां रह्या होय तो ते शुज हे.

दिगीश एटले जे दिशामां जबुं होय ते दिशानों स्वामी जे कोइ यह बळवान् थइने यात्राक्षप्तमां कोइ पण केंजना स्थानमां रह्यो होय तो ते शुज हो, परंतु गमन करवा योग्य दिशानो स्वामी यह लग्नमां दिग्बळी होय तो ते शुज नथी. यहोनं दिग्बलीपणुं पूर्वे "खग्नासुत्कमकेन्ज " (दितीय प्रकाश १ए) ए श्लोकमां कह्यं हो, तथा जालग एटले जवा लायक दिशानों स्वामी यह लग्नमां ते ज दिशामां रहेवा वसे करीने जनारने सन्मुख थतो होय तो ते शुज नथी. ते विषे दैवक्षवह्मजमां कह्यं हे के—

"दिगीश्वरो खखाटस्थो यदि वा दिग्वखान्वितः। वधवन्धप्रदो यातुः केन्द्रगस्तु जयार्थदः॥ १॥"

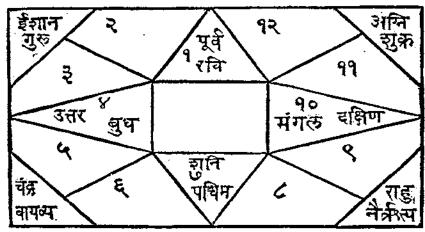
"दिशानो पित सन्मुख रह्यो होय, अथवा दिग्वळे करीने सहित होय तो प्रयाण करनारने वध बंधन करनारो थाय छे, अने केंद्रमां रह्यो होय तो जय तथा धनने आपनार थाय छे."

दिशाना पतिने सन्मुख रहेवानो प्रकार पूर्वाचार्योए आ प्रमाखे कह्यो हे.--

"सप्ते १ जानुर्विय ११ जब ११ गतः शुक्र आरो नजः १० स्थो, राहुर्धर्मा ए ष्टम ए गृहगतः सप्तमस्थो ९ ८र्कपुत्रः । नीहारांशू रिपु ६ तनय ए गो बंधु ४ गः सोमपुत्रो, जीवस्त्रि ३ दि १ स्थित इति ससाटस्थिताः पूर्वतः स्युः ॥ १ ॥"

"लग्नमां (प्रथम स्थानमां) रहेलो सूर्य, बारमा अने अगीयारमा स्थानमां रहेलो शुक्र, दशमा स्थानमां रहेलो मंगळ, नवमा अने आतमा स्थानमां रहेलो राहु, सातमा स्थानमां रहेलो शिन, उठा अने पांचमा स्थानमां रहेलो चंछ, चोथा स्थानमां रहेलो बुध अने त्रीजा तथा बीजा स्थानमां रहेलो गुरु, आ प्रमाणे पूर्वादि दिशाना अनुक्रमे रहेला ग्रहो सन्मुख कहेवाय हे."

यात्रानां लग्नमां सन्मुख रहेला प्रहनुं चक्र-



सन्मुख रहेला ग्रहतुं फळ स्त्रा प्रमाणे हे.—
"शस्त्राग्निजयं १ व्याधि २ र्धनक्तयो ३ वन्धनं ४ मृति ए व्यीधिः ६ ।
हारिः ७ सैन्यविमदीं ए जालगदिगधिपफलं क्रमशः ॥ १ ॥"

"पूर्व दिशानो श्रिधपित सन्मुख रह्यो होय तो शस्त्र अने श्रिशनो जय थाय, श्रिश्च खूणानो स्वामी सन्मुख होय तो व्याधि श्राय, दिश्चणानो स्वामी सन्मुख होय तो धननो स्वय थाय, नैर्ऋत्यनो स्वामी सन्मुख होय तो बंधन श्राय, पश्चिमनो स्वामी सन्मुख होय तो मृत्यु थाय, वायव्यनो स्वामी सन्मुख होय तो व्याधि श्राय, जत्तरनो स्वामी सन्मुख होय तो पराजय श्राय, श्राने ईशाननो स्वामी सन्मुख होय तो सन्य जांगे."

विशेष ए हे जे—"जदय पामेलो केतु श्रम जागेलो नमेलो होय श्रने यात्रानी दि-शामां सन्मुख श्रयो होय तो ते शुज हे. तथा जपचय करनार महनी दिशामां जवुं, पण श्रपचय करनार महनी दिशामां न जवुं." ए प्रमाणे खड़ कहे हे. मूळ श्लोकमां जन्मेश अने खग्नेश बळवान् कहा है ते आ प्रमाणे.—गंकांतमां रहेवुं,
गोचरादिकनी प्रतिकूळता, गित, प्रमाण अने वर्णथी विकृतिपणुं, सूर्यथी दिकृणगामीपणुं, पूर्वे कहेला अदार प्रकारनां प्रबंळपणांनो अजाव, ह प्रकारनां वळथी युक्तपणुं,
तथा शत्रुनो पराजय करवापणुं, आटलांए करीने जन्मेश अने लग्नेश बळवान् कहेवाय है. तथा मूळ श्लोकमां सामान्य रीते केंद्र लख्यो है, तोपण सातमा स्थानने
वर्जीने ज बीजा केंद्रस्थानमां रहेलो लग्नेश शुज है एम जाणवुं. विशेष ए हे जे—
"जन्मेश अने लग्नेश कूर होय तोपण तेमने सर्व कार्यमां बळवान् करीने सौम्य प्रह
जेवा ज जाणवा.

केंद्रादिकमां रहेखा प्रहोनी व्यवस्था कही. हवे यात्रानी कुंमळीमां केवा श्राने कया प्रहोए प्रयाण करनारने कयो छपाय जयकारक छे १ ते कहे छे.—

सितेज्या १ विन्छ १ रार्किक्तमोऽन्त्याः ३ सूर्यमंगलौ ४। सामादिसाधकाः केन्द्रोपचयेषु चलोत्कटाः॥ ४ए॥

अर्थ—यात्राकुंमळीमां शुक्र अने गुरु बळवान् थड्ने केंद्र के छपचयस्थानमां रहा। होय तो साम छपाये करीने जय थाय हे, ए ज रीते चंद्र रह्यो होय तो दान छपाये करीने, शनि, बुध, राहु अने केंतु रह्या होय तो जेद छपाये करीने अने सूर्य तथा मंगळ रह्या होय तो दंम छपाये करीने जय थाय हे.

साम एटखे संधिना चपाये करीने जय थाय हे. श्रहीं करेखों संधि जे प्रकारे निश्चख थाय ते प्रकार कहे हे.—

> "जाग्ये मैत्रे शीतरश्मी स पुष्ये, दादश्यां वा शुक्रदृष्टे च स्रग्ने। श्रष्टम्यां वा तैतिसाख्ये प्रदिष्टा, पूर्वाचार्येरत्र संधानसिद्धिः॥ १॥"

"दशमा तथा चोथा स्थानमां चंज होय, शुक्र खग्नने जोतो होय, बारस अथवा आठमने दिवसे पुष्य नक्त्रमां तैतिख नामा करणमां पूर्वाचार्योए संघाननी सिद्धि कथन करेखी है."

विशेष ए हे जे-ते ते यहोना खग्नमां श्रयवा नवांशोमां तेमज वार होराने विषे पण श्रतुक्रमे कहेला छपाये करीने सर्व कार्यमां सिष्टि थाय हे.

हवे जेवा ग्रहना बळे शत्रुषी पहेखां प्रयाण करतुं के पत्नी करतुं सफळ हे ते कहे हे.पीरा झजीवमन्दाः स्युरपरे यायिनो ग्रहाः ।

सफक्षा यायिजियांत्रा बिलिजः स्थितिरन्यथा ॥ ५० ॥

अर्थ-बुध, गुरु अने शनि ए त्रण प्रहो पौर (स्थायी) कहेवाय हे, अने वाकीना प्रहो याची कहेवाय हे. तेमां जो यायी प्रहो बळवान होय तो शत्रुषी पहेखां ज यात्रा करवी सफळ ठे, अने स्थायी ग्रहो वळवान् होय तो पोताने स्थाने ज स्थिति करवी सफळ ठे, एटखे के राञ्चनी पहेखां पोते प्रयाण न करबुं. विशेष ए ठे जे—"स्थायी अने यायी ग्रहो मिश्र होय एटखे के वन्ने ग्रहोनुं वळवानपणुं होय तो हैधी जाव करवो, एटखे के अर्धु सैन्य स्थायी राखबुं अने अर्धा सैन्यने प्रयाण करावबुं. तथा सौम्य ग्रहो वळवान् होय तो संधि करवी अने कर ग्रहो वळवान् होय तो युद्ध करवाथी जय याय ठे. वन्ने जातना ग्रहो निर्वळ होय तो कोइ जायवान् अन्य राजानो आश्रय करवो." आ सर्व योगयात्रा ग्रंथमां कह्यं ठे.

आ प्रमाणे पचीश श्लोकोए करीने यात्रानी लग्नकुंमळीनुं स्वरूप विस्तारथी कहुं. आ स्वरूप सामान्य रीते राजादिकने माटे जाणवुं, कारण के राजार्ड पण नीचेना श्लोकमां कहेला योगो न मळे तोपण केवळ लग्नना बळथी पण यात्रा करी शके हे. ते विषे लक्ष कहे हे के—

> "ऐकान्तिकगन्तब्ये दैवेन निपीिमते च यातब्ये । केवलविलमयोगादिष याता सिष्टिमामोति ॥ १ ॥"

"दैवयोगे अवस्य एकांते करीने यात्रा करवानी जरूर पनी होय तो केवळ खग्नना बळथी पण यात्रा करनार सिद्धिने पामे छे."

हवे शुज तिथि, नक्तत्र, लग्न विगेरेना बळ विना पण जेवा यहयोगोए करीने राजा-र्जनी यात्रा सफळ थाय हे तेवा मात्र राजाने ज योग्य एवा यात्राने लायक यहयोगो कहेवानी इञ्चाथी कहे हे.—

चौराणां शकुनैर्यात्रा नक्तत्रेश्च दिजन्मनाम् । मुद्रुर्त्तैः सिद्धयेऽन्येषां राज्ञां योगैश्च ते त्वमी ॥ ५१ ॥

श्चर्य—चोरोने शकुनवमे यात्रा करवी सिक्षिने मादे हे, ब्राह्मणोने नक्त्रनी शुक्षिए करीने यात्रा करवी शुन्न हे, बीजा एटले वैश्य, शूक्ष, कारीगरो विगेरेने शुन्न मुहूर्से करीने यात्रा करवी शुन्न हे, श्वने राजार्डने योगोवमे करीने यात्रा करवी शुन्न हे, एटले के तिथि, वार श्वने लग्नादिकनी शुक्षि न होय तोपण राजार्डने श्वा ग्रह्योगोमां यात्रा करवाथी कार्यसिक्षि शाय हे. दैवज्ञवस्ननमां कहां हे के—

"तिथि १ इ.ण १ ज ३ वाराणां ४ साध्यं योगेन सिध्यति । तस्मात्सर्वेषु कार्येषु ब्रह्योगान् सुचिन्तयेत् ॥ १ ॥"

"तिथि, मुहूर्त्त, नक्त्र अने वारोधी साधवा लायक कार्यो योगवर्ने सिद्ध आय है, तेथी सर्व कार्योमां प्रह्योगनो सारी रीते विचार करवो." अहीं कोइ शंका करे के—प्रह्योगनो विचार करवो ते ठीक छे, परंतु लग्न बळवान् छतां पण प्रहोनी सौम्यता अने कूरता यहे करीने विचारवानी छे, अने अहीं तो तेना विचारनो छेश पण कह्यो नथी. तेनो शो हेतु छे ? आनो जवाव ए छे जे—अहीं योगनुं वळ ज प्रधानपणे कह्यं छे. जेम अन्य ओपधिना संयोगथी वत्सनाग विगेरे विष पण रसायणरूप थइने प्राणीजेने जीवामनारुं थाय छे, तेम कूर यह पण योगना वशथी शुजदायी थाय छे. तथा जेम घी तथा मध सरखे जागे मिश्र करवाथी मृत्युने करनारुं एषुं जपविष बन्ने छे एम चरकमां कह्यं छे, ते ज रीते शुज ब्रहो पण योगना वशथी अशुज थाय छे, तथी करीने मास, तिथि, वार, नक्त्र, योग, मुहूर्त्त, चंड्र, तारा अने ख्रानुं विरुद्धपणुं छतां पण आ योगोए करीने यात्रा सफळ थाय छे एम सिद्ध मानबुं रसमाळामां पण कह्यं छे के—

''तिथौ रूखे जे करखे च वारे, योगे विखन्ने हिमगौ नृपाणाम् । पापेऽपि यात्रा सफलात्र योगैः,"

"तिथि, मुहूर्त्त, नक्दत्र, करण, वार, योग, लग्न छाने चंद्र ए सर्वे पाप एटले छाशुप्त होय तोपण राजार्टने योगोवने करीने यात्रा करवी सफळ हे."

श्रा योगोनुं वळ एकांतिक कार्यना विषयमां जाण्वुं, परंतु घणी जतावळ न होय तो मास, तिथि, नक्तत्र विगेरेनुं वळ तथा श्रा योगोनुं वळ एम सर्व वळ जोवुं. ते विषे जास्कर कहे वे के—"श्रवमाधिमासयोर्न प्रतिष्ठतेऽजीष्टसिद्ध्यर्थी । "इष्ट सिद्धिना श्रार्थीए क्य मास तथा श्राधिक मासमां प्रयाण न करवुं." "तथापि हि कुसल्रद्धागि" "तोपण कुशळ (शुज) लग्न जोवुं." इत्यादि.

हवे यहयोगो कहे हो.---

श्रकीर्किशशिनः सिड्ये राङ्गां समा १ रि ६ मध्य १० गाः (१)। सितेज्यमन्दङ्गाराश्च समा १ स्त ७ त्रि ३ सुखा १ रि६ गाः (१)॥ ५१॥ श्चर्य—समां सूर्य, उन्ने स्थाने शनि अने दशमे स्थाने चंद्र रह्यो होय तो ते वसते राजानी यात्रा सिद्धिने माटे हे. (१). सम्मां शुक्र, सातमा जवनमां शुरु, त्रीजे स्थाने शनि, वीजे स्थाने बुध अने उन्ने स्थाने मंगळ रह्यो होय तो ते शुज्ज हे. (१).

र्युरुक्तार्काश्च सम र स्व १ ज्ञातृषु ३ क्रमतः श्चिये (३)। सम्मा र रि६ गो च जीवार्को जयदो व्यष्टमे विधो (४)॥ ए३॥ श्चर्य-सम्मां गुरु होय, बीजा जावमां बुध होय छने त्रीजा जावमां सूर्य होय तो

१ शुकः इति प्रत्यन्तरे.

ते बहमीने माटे हे-शुज हे. (३). खग्नमां गुरु होय, हुण जावमां सूर्य होय श्रने आहमा सिवाय बीजा कोइ पण जावमां चंद होय तो ते पण शुज हे. (४).

मन्दारी त्रया ३ य ११ षद्सु इसितेज्याश्चोत्कटाः श्रिये (५)। केन्द्रे च बितनो क्रेज्याविन्दौ त्वापोक्खिमेऽवले (६)॥ ५४॥

श्रर्थ—शनि श्रने मंगळ त्रीजे, श्रगीयारमे श्रने उठे स्थाने रह्या होय तथा बुध, शुक्र श्रने गुरु वळवान् श्रइने गमे ते स्थाने रह्या होय तो ते लहमीने माटे हे-शुज हे. (ए). हुध श्रने गुरु बळवान् श्रइने केंडमां रह्या होय तथा चंड निर्वळ श्रइने श्रापोक्सिम एटले ३-६-ए-१२ मे स्थाने रह्यो होय तो ते शुज हे. (६).

श्रिये विधुः सुखे ४ उस्ते ७, तु सितझौ (७) व्यत्ययेन वा (७)। याने त्रिकोणकेन्डस्थाः सौम्याः षट् त्र्यायगाः परे (७)॥ ५५॥

अर्थ—चंद्र चोथा जावमां रह्यो होय अने शुक्र तथा बुध सातमा जावमां रह्या होय तो ते बद्धीने माटे हे. (७). अथवा विपरीतपणे होय एटखे के शुक्र अने बुध चोथा जावमां होय अने चंद्र सातमा जावमां होय तो ते पण बद्धीने माटे हे. (०). सौम्य ग्रहो त्रिकोण अने केंद्रमां रह्या होय तथा करूर ग्रहो हो , त्रीजे अने अगीयारमे रह्या होय तो ते पण यात्रामां बद्दमीने माटे हे. (ए).

जयाय मूर्ती र मार्नंडः सौम्याः खे र सप्तमो विधुः (१०)। बृहस्पतिर्वा केन्डस्थः शेषेषु खा १ य ११ वर्त्तिषु (११)॥ ५६॥

अर्थ—प्रथम जावमां सूर्य होय, बीजा जावमां सौम्य ग्रह होय अने सातमा जावमां चंद्र होय तो ते जयने माटे हो. (१०). बृहस्पित (गुरु) केंद्रमां रह्यो होय अने वाकीना ग्रहो (कूर तथा सौम्य सर्वे) बीजा तथा अगीयारमा जावमां होय तो ते पण जयने माटे हे. (११). आ रीते अगीयार योग यया.

यातुः प्राग्दक्षिणयोई सितान्तर्जयकरः सुखे चेन्डुः (११)।

गुरुरेकान्तर आर्के (१३) क्वों वा गुक्राच (१४) जोमाद्वा (१५) ॥ ५५॥ अर्थ--पूर्व अथवा दक्षिणमां यात्रा करनारने चोथा जावमां रहेखो चंज जो बुध अने गुक्रनी मध्ये रह्यो होय तो ते जयकारक हे. (१२). पश्चिम अने उत्तर दिशामां यात्रा करनारने माटे आ योगनी अपेका नथी. शनिथी एकांतर गृह (स्थान)मां गुरु रह्यो होय तो ते गुज हे. (१३). गुक्रथी एकांतर गृहमां रहेखो बुध होय तो ते गुज

१ जे स्थाने शनि होय तेनी पछीना एक स्थानने मूकीने बीजाज स्थानमां रह्यों होय.

हे. (१४). छाने मंगळथी एकांतर गृहमां रहेलो बुध पण शुज हे. (१५). दैवज्ञवह्वजमां पण कह्यं हे के—

"न्तृगुजादथवा महीसुताद्वुध एकान्तरने स्थितो यदा। रविजादथवा गुरुस्तदा, ब्रजतो यान्त्यरयः इत्यं रणे॥ १॥"

"शुक्रथी श्रथवा मंगळथी एकांतर राशिमां जो बुध रह्यो होय, श्रथवा शिनशी एकांतर राशिमां जो गुरु रह्यो होय तो ते समये यात्रा करनारना शत्रुष्ठ युद्धमां इय पामे हे."

गुरुर्जियाय सम्म र स्थः ऋरैर्साज ११ नजो १० गतैः (१६) तथा चन्छेऽष्टमे षष्टे शुक्रे सम्मगतो ग्रुरः (१९) ॥ ५०॥

अर्थ—खग्नमां (पहेला जावमां) गुरु होय, अने ऋर यहो अगीयारमे तथा दशमें स्थाने होय तो ते जयने माटे हो. (१६) चंड आहमा जावमां होय, शुक्र हुछ। जावमां होय खने गुरु खग्नमां होय तोपण ते जयने माटे हे. आ सर्वे मळीने कुल १९ योगो थया.

हवे योगपिंक (योगनो समूह) कहे हे.—

सिद्धौ धी ५ धर्म ए केन्द्रेषु बुधवाक्पतिन्नार्गवैः।

योगो र अधियोगो र योगाधियोग र श्चेक र दिक र त्रिकैः र ॥ ५ए॥

अर्थ—बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणमांथी एक ग्रह जो पांचमा, नवमा के केन्फ्रमांना कोइ पण स्थानमां होय तो ते योग कहेवाय हे. तेवी ज रीते (ते ज स्थानोमां) जो बुध, गुरु अने शुक्रमांना वे ग्रहो रह्या होय तो अधियोग घाय हे, अने ते त्रणे ग्रहो ते ज स्थानोमां रह्या होय तो योगाधियोग थाय हे. आ त्रणेनं फळ दैवइवद्वजमां आ प्रमाणे कहुं हे.—

"योगेन यो याति नृपोऽरिदेशं, सुखेन सोऽन्येत्यधियोगयाता। प्राप्नोति कीर्ति विजयं धनं च, योगाधियोगेन महीमशेषाम् ॥ १ ॥"

"जे राजा योगे करीने शत्रुना देश जपर प्रयाण करे है ते सुखेथी पाहो आवे है, श्रिधयोगमां यात्रा करनार (राजा) कीर्ति, विजय अने धन पामे है, तथा योगाधि-योगे करीने समग्र पृथ्वी पामे है."

अहीं आ प्रमाणे आम्नाय है जो बीजों कोइ यात्रानों योग मळे अथवा न मळे तो-पण जो बुध, गुरु अने शुक्र ए त्रणमांथी कोइ पण यह उपर गणावेदां स्थानोमांथी कोइ पण स्थाने रह्यों होय तो ते ज वखते यात्रा करवी शुन्न है, अने वे अथवा त्रणे यहों उक्त स्थानमां रह्या होय तो ते घणाज उत्तम है.

श्रा त्रण योगो स्थूळ दृष्टिए कह्या हे, पण सूदम दृष्टिए जोतां तो त्रणसो ने बेंता-

लीश ३४२ योगो थाय है. (तेलंनी अत्रे अति आवश्यकता नहीं होवाथी सिल्या नथी. आ यंथनी मोटी टीकामां ते सविस्तर आप्या हे.)

यहनी दृष्टिनी अपेका रहित जपरना योगो कहाा. हवे यहनी दृष्टिनी अपेकाए बे योग थाय हे ते कहे हे.—

शुक्रं ज्या ३या ११ म्बु ४ गं पश्यन् जीवो यात्रासु केन्द्रगः। राज्ञां दत्ते जयं ऋरैः कलन्नादित्रयान्यगैः॥ ६०॥

ऋर्य-यात्रालग्नमां कें इस्थाने रहेलो गुरु त्रीजा, ऋगीयारमा अने चोथा स्थानमां रहेला गुक्रने जोतो होय तथा कर बहो सातमा, आठमा अने नवमा सिवायनां वीजां स्थानमां रह्या होय तो ते समये प्रयाण करनार राजानो जय थाय है.

बुधो वपुः र सुख ४ द्वेषि ६ व्योम १० स्थो वी क्षितः शुनैः। जयाय राक्षां पापेषु खम्ना र स्त ७ व्यय रश् वर्जिषु॥ ६१॥

अर्थ—पहेले, चोथे, उठे के दशमें स्थाने रहेलों बुध शुन्न ग्रहोए जोयेलों होय तथा पापग्रहों पहेला, सातमा अने बारमा सिवायना बीजां स्थानोमां रह्या होय तो ते प्रयाण करनार राजाने जय आपनारा ठे.

इवे सर्व योगोनो सार कहे हे.-

इति सप्तरूपकार्द्धैः सकलश्लोकत्रयेण चोक्तेषु । योगेषु राजयोगेष्विप शुजदा जूजुजां यात्रा ॥ ६२ ॥

श्चर्य—श्चा प्रमाणे सात श्चर्धा श्लोकोए करीने तथा त्रण श्चाला श्लोकोए करीने योगो कह्या. ते सिवाय राजयोगोमां पण करेली यात्रा राजार्जने शुजकारक हे. श्चा राजयोगो बृहत् जातकमां कह्या हे. ते पण यात्रामां छपयोगी हे.

ते राजयोगो सर्वे कार्यमां जपयोगी होवाथी अत्रे कहे हे.—

"वकार्कजार्कगुरुजिः सकलैस्त्रिजिश्च, स्वोच्चेषु पोमरा नृपाः कथितैकलग्ने। छौकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने, स्वदेत्रगे शशिनि पोमश जूमिपाः स्युः॥ १॥"

"शिन, मंगळ, सूर्य अने गुरु ए चारे यहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रहीने तेमांनो एक एक यह खग्नमां रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय हो, ते चारे यहमांना त्रण यहो पोतपोताना उच्च स्थानमां रहीने ते त्रणेमांनो एक एक यह खग्नमां होय त्यारे

वार राजयोग थाय है. आ वन्ने मळीने सोळ राजयोगो थाय है. ते ज रीते ते चार अहो मांहेला वे यहां उच्च स्थानमां रहीने तेमांनो एक एक यह लग्नमां रह्यो होय अने चंद्र कर्कमां रह्यो होय त्यारे वार राजयोगो थाय हे, तथा ते चार प्रहोमांथी एक एक यह उच्च स्थानमां रहीने लग्नमां रह्यो होय अने कर्क राशिमां चंद्र रह्यो होय त्यारे चार राजयोगो थाय हे. आ वन्ने मळीने पण सोळ राजयोगो थाय हे, अने सर्वे मळीने वत्रीश थाय हे." ते नीचे प्रमाणे.—

मेषमां सूर्य, कर्कमां गुरु, तुलामां शिन अने मकरमां मंगळ, बाकीना यहो गमे ते स्थाने होय, आ प्रमाणे प्रह्नी स्थिति होय त्यारे जो मेष लग्न होय तो पहेलो राज-योग थयो, कर्क लग्नमां बीजो राजयोग थयो, तुला लग्नमां त्रीजो अने मकर लग्नमां चोथो राजयोग थयो. हवे त्रण यहो आश्रीने वार राजयोगो आ प्रमाणे के—मेपनो सूर्य, कर्कनो गुरु, तुलानो शिन अने तीजा यहो गमे त्यां होय त्यारे मेपना लग्नमां पहेलो, कर्कना लग्नमां वीजो अने तुलाना लग्नमां त्रीजो राजयोग थयो. जपला चार साथे मेळवतां सात राजयोग थया. हवे मेपनो सूर्य, कर्कनो गुरु, मकरनो मंगळ अने बीजा यहो गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्नमां पहेलो, कर्क लग्नमां बीजो अने मकर लग्नमां त्रीजो राजयोग थयो. कुल १० थया. हवे मेपनो सूर्य, तुलानो शिन, मकरनो मंगळ, बाकीना गमे त्यां होय त्यारे मेष लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो बीजो अने मकर लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थतां कुल १३ राजयोग थया. हवे कर्कनो गुरु, तुलानो शिन, मकरनो मंगळ अने बीजा ग्रहो गमे त्यां होय त्यारे कर्क लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो वीजो राजयोग थतां कुल १३ राजयोग थार कर्क लग्न होय तो पहेलो, तुला लग्न होय तो वीजो अने मकर लग्न होय तो त्रीजो राजयोग थतां कुल १६ राजयोग थार हो

हवे वे यह तथा एक यहने आश्रीने सोळ योगो आ रीते आय हे—कर्कनो चंड, मेवनो सूर्य, कर्कनो गुरु अने वाकीना यहो गमे त्यां होय त्यारे मेव लग्न होय तो पहेलो योग अने कर्क लग्न होय तो बीजो योग. हवे मेवनो सूर्य, कर्कनो चंड, तुलानो शिन, बाकीना यहो गमे त्यां होय त्यारे मेव लग्नमां त्रीजो अने तुला लग्नमां चोत्रो योग थाय. हवे मेवनो सूर्य, कर्कनो चंड अने मकरनो मंगळ होय त्यारे मेव लग्नमां पांचमो अने मकर लग्नमां छहो योग थाय हे. हवे कर्कमां चंड अने गुरु तथा तुलामां शिन होय त्यारे कर्क लग्नमां सातमो अने तुला लग्नमां आहमो योग थाय हे. हवे कर्कमां गुरु अने चंड तथा मकरमां मंगळ होय त्यारे कर्क लग्नमां नवमो अने मकर लग्नमां दशमो योग थाय हे. हवे कर्कमां चंड, तुलामां शिन अने मकरमां

मंगठ होय त्यारे तुला लग्नमां अगीयारमो अने मकर लग्नमां वारमो योग थाय हे. हवे एक ग्रहने आश्रीने चार योगो आ प्रमाणे.—कर्कनो चंक अने मेप लग्नमां सूर्य रह्यो होय त्यारे पहेलो, कर्कना लग्नमां चंक अने गुरु होय त्यारे बीजो, कर्कनो चंक अने तुला लग्नमां शिन होय त्यारे बीजो अने कर्कनो चंक तथा मकर लग्नमां मंगठ होय त्यारे चोथो योग थाय हे. जपरना वार सहित करतां सोठ थाय अने प्रथमना सोठ साथे करतां कुल बनीश राजयोगो थया.

हवे ५२० राजयोगो श्राय ठे ते कहे है.—

"वर्गोत्तमगते लग्ने चन्छे वा चन्छवर्जितैः।

चतुराधैर्प्रहेर्र्ष्टे नृपा छाविंशतिः स्मृताः॥ २॥"

"खग्न अथवा चंज वर्गोत्तममां रह्या होय, अने ते (खग्न अथवा चंज)ने चंज विनाना चार, पांच के ठ प्रहोए जोयेखा होय त्यारे वावीश राजयोग थाय हे."

जे राशि लग्नमां होय ते राशिना ज नामनो जे नवांश ते वर्गोत्तम कहेवाय हे, अने ते ज नवांश लग्नमां आन्यो होय तो ते लग्न वर्गोत्तम कहेवाय हे. ए ज प्रमाणे चंद्रमां पण जाणवं. लग्न के चंड वर्गोत्तमनो होय अने तेना पर चंड सिवाय बीजा चार. पांच के व ब्रहोनी दृष्टि पमती होय तो दरेक लग्नने आश्रीने बावीश बावीश राजयोगो याय हे. ते आ प्रमाणे.--लग्न जपर चार प्रहोनी दृष्टि पनती होय तो पंदर जोद थाय हे, पांचनी दृष्टि पनती होय तो व जेद अने वनी दृष्टि पनती होय तो एक जेद ए रीते वावीश जेद याय वे. एटखे के लग्नने रवि, मंगळ, बुध श्रने गुरुए चार प्रहोए जोयुं होय त्यारे पहेलो योग श्राय हे. रवि, मंगळ, बुध अने शुक्र जोता होय त्यारे बीजो. रवि, मंगळ, बुध अने शनि जोता होय त्यारे त्रीजो. रवि, मंगळ, गुरु अने शुक्र जोता होय त्यारे चोथो. रवि, मंगळ, गुरु अने शनि जोता होय त्यारे पांचमो. रवि. मंगळ, शक अने शनि जोता होय त्यारे बच्चे. रवि, बुध, गुरु अने शुक्र जोता होय त्यारे सातमो. रवि, बुध, गुरु अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे आठमो. रवि, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे नवमो. रवि, गुरु. शुक अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे दशमो. मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्रनी दृष्टि होय त्यारे श्रागीयारमो. मंगळ, बुध, गुरु श्राने शनिनी दृष्टि होय त्यारे वारमो. मंगळ, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे तेरमो. मंगळ, गुरु, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे चौदमो. तथा बुध, गुरु, शुक अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे पंदरमो राजयोग आय है. हवे पांच ग्रहोनी दृष्टिए करीने छ योग छा। प्रमाणे हे-रिव, मंगळ, बुध, गुरु छाने शुक्रनी दृष्टि पर्नती होय त्यारे पहेलो राजयोग श्राय हे. रवि, मंगळ, बुध, गुरु शनिनी दृष्टि होय त्यारे बीजो. रवि, मंगळ, बुध, शुक्र अने शनिनी दृष्टि होय त्यारे

त्रीजो. रिव, मंगळ, गुरु, शुक अने शिनिनी दृष्टि होय त्यारे चोथो. रिव, वुध, गुरु, शुक अने शिनिनी दृष्टि होय त्यारे पांचमो. तथा मंगळ, बुध, गुरु, शुक अने शिनिनी दृष्टि होय त्यारे छो राजयोग थाय छे. तथा छए यहो एटले रिव, मंगळ, बुध, गुरु, शुक अने शिन ए छएनी दृष्टि लग्न छपर पमती होय त्यारे एक राजयोग थाय छे. आ सर्वे मळीने बाबीश राजयोग थया. आ बाबीश योगो मेप लग्ननो वर्गोत्तम होय त्यारे थया. ए रीते वृष, मिथुन विगेरे वारे राशिना लग्नने आश्रीने वाबीश वाबीश राजयोगो थतां कुल १६४ राजयोग थाय छे. ए ज रीते प्रत्येक राशिमां वर्गोत्तम नवांशमां रहेला चंद्रने आश्रीने पण १६४ राजयोग थाय छे. ते बन्ने मळीने कुल ५२० योगो थया.

हवे पांच योगो कहे हे.--

"यमे कुंजेऽकेंऽजे गिव दाशिन तैरेव तनुगैर्नृयुक्सिंहाितस्थैः शशिजगुरुवकैर्नृपतयः।
यमेन्छ् तुंगेऽङ्गे सवितृशशिजौ षष्ठजवने,
तुताऽजेन्छक्तेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ॥३॥"

"कुंजनो शिन होय, मेषमां सूर्य होय, वृषमां चंद्र होय, मिश्रुनमां बुध होय, सिंहनो गुरू होय अने वृश्चिकनो मंगळ होय. आ रीते यहो रहेला होय अने तेमां वळी कुंज लग्न होय तो पहेलो योग, मेष लग्न होय तो बीजो अने वृष लग्न होय तो बीजो राज-योग थाय हो. तथा शिन अने चंद्र पोताना छच्च स्थानना एटले के तुलानो शिन अने वृषनो चंद्र होय अने वळी लग्नमां रह्या होय तथा कन्या राशिमां सूर्य अने बुध होय, तुलामां शुक्र होय, भेषनो मंगळ होय, अने कर्कनो गुरु होय. आ प्रकारनी यहोनी स्थितिमां तुला लग्न होय तो पहेलो योग अने वृष लग्न होय तो बीजो योग. तेने पूर्वना त्रण साथे गणतां पांच राजयोग थाय हे."

हवे त्रण राजयोगो कहे हे.—

"कुजे तुङ्गेऽर्केन्द्रोर्धनुषि यमसग्ने च नृपतिः, पतिर्जूमेश्चान्यः कितिसुतविसम्ने सशिशिन । सचन्द्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे, स्वतुङ्गस्थे जानाबुदयमुपयाते कितिपतिः ॥ ध ॥"

''मकरनो मंगळ होय, धनुष राशिमां सूर्य ने चंद्र होय, कोइ पण राशिमां रहेखो शनि खग्नमां होय त्यारे पहेखो राजयोग थाय हे. आ पहेखा योगमां ज जो खग्नमां भंगळ श्राने शिव तो बीजो योग थाय है. तुलामां चंद्र श्राने शिव, धनुपमां गुरु होय श्राने सूर्य पोताना जच स्थानमां होइने एटले मेत्र राशिनो होइने लग्नमां रह्यो होय श्रार्थात् मेष राशिना लग्नमां सूर्य रह्यो होय त्यारे त्रीजो राजयोग जाएवो."

हवे फरीने बे राजयोगोने कहे हे.— वृषे सेन्दी सम्ने सिवतगुरुतीदणांशुतनयैः, सह ४ जाया ७ ख १० स्थैर्जवित नियमान्मानवपितः। मृगे मन्दे सम्ने सहजिरपुधर्मव्ययगतैः, शशाङ्काद्यैः ख्यातः पृथुगुण्यशाः पुंगण्पितिः॥ ५॥

वृष लग्नमां चंज होय, सिंहनो सूर्य होय, वृश्चिकनो गुरु होय छाने कुंजनो शिन होय त्यारे पहेलो राजयोग थाय हे. मकर लग्नमां शिन होय, मीननो चंज होय, मिथुननो मंगळ होय, कन्यानो बुध होय, धनुषनो गुरु होय छाने शुक्र तथा सूर्य गमे ते स्थाने होय त्यारे बीजो योग थाय हे.

> फरीने त्रण राजयोगो कहे हे.— हये सेन्दी जीवे मृगमुखगते ज्रमितनये, स्वतुङ्गस्थी खग्ने जृगुजशशिजावत्र नृपती । स्रतस्थी वकार्की गुरुशशिसिताश्चापि हिबुके, बुधे कन्याखग्ने जवित हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान ॥ ६॥

धनुषने विषे गुरु अने चंड होय, मकरमां मंगळ होय, आ प्रमाणे प्रहनी स्थिति होय त्यारे जो मीन लग्नमां शुक्र होय तो पहेलो अने कन्या लग्नमां बुध होय तो बीजो योग थाय है. तथा कन्या लग्नमां बुध होय, मकरमां मंगळ अने शनि होय, धनुषमां गुरु, चंड अने शुक्र होय त्यारे त्रीजो गुण्वान् राजयोग थाय है.

फरीथी त्रण राजयोगो कहे हे.—

फर्ष सेन्दी लग्ने घटमृगमृगेन्देषु सहितै—
र्यमाराकैंयींऽजूत्स खल्ल मनुजः शास्ति वसुधाम् ।
अजे सारे मूर्त्ती शशिगृहगते चामरगुरी,
सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योऽपि गुणवान् ॥ ७॥

मीन खग्नमां चंद्र होय, कुंजनो शिन होय, मकरनो मंगळ होय छाने सिंहनो छार्क (सूर्य) होय त्यारे ते माणस पृथ्वीनुं शासन करनार थाय छे. छार्थात् ते राजयोग कहे- वाय छे. मेष खग्नमां मंगळ होय, चंद्रना गृहमां एटखे कर्कमां गुरु होय त्यारे बीजो योग थाय छे. छाथवा कर्क खग्नमां गुरु होय छाने मेषनो मंगळ होय त्यारे त्रीजो राजयोग थाय छे.

भाव ३१

किंकि खन्ने तत्स्थे जीवे चन्डसितक्षैरायमाप्तैः। मेपगतेऽर्के जातं विन्दादिक्रमयुक्तं पृथिवीनात्रम्॥ ए॥

कर्क खग्नमां गुरु होय, वृषमां चंज, शुक्र अने बुध होय तथा मेषमां सूर्य होय त्यारे पराक्रमवर्मे युक्त एवा पृथ्वीनाथने थयेखो जाणवो एटले राजयोग थयो जाणवो.

मृगमुखेऽर्कतन्ये ननु संस्थे, जगकुद्धीरहरयोऽधिपयुक्ताः ।

मिथ्रनतौ बिसहितौ बुधशुकौ, यदि ततः पृथ्रुयशाः पृथिवीशः॥ ए॥

मकर लग्नमां रानि रहेलो होय, मेवनो मंगळ होय, कर्कनो चंद्र होय, सिंहनो सूर्य होय, मिथुननो बुध होय अने तुलानो शुक्र होय त्यारे मोटा यशने करनारो राजयोग थाय हे.

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने जृगौ मेषूरणाश्रिते । सजीवेऽस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोर्मृगे ॥ १०॥

कन्या सम्मां बुध होय, मिथुननो शुक्र होय, मीन राशिमां गुरु श्रमे चंड होय तथा मकर राशिमां शनि श्रमे मंगळ होय त्यारे राजयोग श्राय हे. श्रा सर्वे मळीने ५९ए योगो श्राय हे.

> श्रा प्रथम जांगाना राजयोगोनुं फळ कहे हे.— श्रापि खखकुलजाता मानवा राज्यजाजः, किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तजूपालयोगैः । नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवा वह्यमाणै— र्जवित नृपतितुहयसेष्वजूपालपुत्रः ॥ ११ ॥

श्रा छपर कहेला राजयोगोए करीने सामान्य कुळमां छत्पन्न श्रयेला माणसो पण राज्यने जोगवनारा श्राय हे, तो कत्रिय कुळमां छत्पन्न श्रयेला माणसो राजा श्राय तेमां शुं कहेतुं ? तथा हवे पत्नी कहेवाशे एवा योगोए करीने राजकुळमां छत्पन्न श्रयेला माणसो राजा श्राय हे, श्रने बीजा कुळमां छत्पन्न श्रयेला माणसो राजानी तुस्य (जेवा) श्राय हे.

ते योगो आ प्रमाणे हे.— स्वोचर्रुत्रिकोणगैर्विलिष्ठेस्त्याचैर्जूपतिवंशजा नरेन्जाः।

पञ्चादिजिरन्यवंशजा हीनैविंत्तयुता न जूमिपाद्धाः॥ १२॥

बळवान एवा त्रण के चार प्रहो पोताना छच स्थानमां, पोताना गृहमां के पोताना त्रिकोणमां रहेला होय तो कत्रिय वंशमां छत्पन्न थयेला माणसो राजा थाय हो, अने पांच, ह के सात बळवान प्रहो छपरनां त्रण स्थानोमां रह्या होय तो सामान्य वंशमां छत्पन्न अयेखा माणसो पण राजा थाय हे, परंतु ते यहो पोताना उच्च विगेरे स्थानमां रह्या हतां पण जो बळहीन होय तो तेर्ड धनवान् थाय हे, पण राजा थता नथी. अहीं त्रणथी सात सुधीना पांच राजयोग थाय हे.

> सिंहस्थेऽर्केऽजेन्दी लग्ने जीमे स्वोचे कुंने मन्दे । चापं प्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विद्याद्धमेनीयम् ॥ १३ ॥

मेष लग्नमां चंद्र होय, सिंह राशिनो सूर्य होय, मंगळ पोताना जच स्थाननो होय, कुंत्रनो शनि होय तथा धनुष राशिनो गुरु होय त्यारे राजवंशमां जत्पन्न थयेलो पुत्र क्मिनो नाथ थाय हे एम जाणवुं. अर्थात् राजयोग थाय हे.

> फरीथी वे राजयोगोने कहे हे.— स्वर्दे शुक्रे पाताखस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चन्दे । इश्चिक्यांगप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी जूमेः ॥ १४ ॥

ज्यारे कुंज खग्न होय त्यारे जो पाताल (चोथा) स्थाने एटले वृष राशिमां शुक रह्यों होय, धर्मस्थानमां एटले तुला राशिमां चंज रह्यों होय, छने वाकीना एटले रिव, मंगळ, बुध, गुरु छने शिन ए ग्रहों त्रीजा, पहेला छने छगीयारमा स्थानमां एटले मेप, कुंज छने धनुष राशिमां रह्या होय तो राजयोग धाय हे. वळी ज्यारे कर्क लग्न होय त्यारे जो पाताल (चोथा) स्थाने एटले तुला राशिमां शुक्र होय, मीनमां चंज होय छने बाकीना रिव विगेरे ग्रहों कन्या, कर्क छने वृष राशिमां होय तोपण ते राजयोग कहे- वाय हे. सर्व मळीने छाह राजयोग थया.

सौम्ये वीर्ययुते तनुसंस्थे वीर्याख्ये च सुने सुकृतस्थे । धर्मार्थोपचयेष्वय शेषेर्धर्मात्मना नृपजः पृथिवीशः ॥ १५॥

खग्नमां बुध बळवात् होय, नवमा स्थानमां शुक्त के गुरु बळवात् थइने रह्यो होय स्थने बाकीना महो नवमा, बीजा, त्रीजा, उठा, दशमा स्थाने स्थानमां रह्या होय तो क्तियनो पुत्र पृथ्वीपित स्थाय हे, एटले राजयोग श्राय हे. सर्व मळीने नव राजयोग स्था.

इवे बीजा बे राजयोग कहे हे.-

वृषोदये मूर्त्तिधनारिखाजगैः शशांकजीवार्कसुताऽपरैर्नृपः । सुले गुरौ ले शशितीइणदीधिती यमोदये खाजगतैर्नृपोऽपरैः ॥ १६॥

कृष खग्नमां चंद्र होय, मिश्रुनमां गुरु होय, तुखानो शनि होय अने मीनमां बीजा एटखे रिव, मंगळ, बुध अने शुक्र होय तो राजयोग थाय हे. तथा खग्नमां शनि होय, चोथा स्थानमां गुरु होय, दशमा स्थानमां सूर्य अने चंद्र होय तथा अगीयारमा स्था- नमां मंगळ, बुध अने शुक होय त्यारे पण राजयोग थाय हे. सर्व मळीने अगीयार राजयोग थया.

फरीने बीजा वे राजयोग कहे छे.—

मेषूरणा १० य ११ तनु १ गाः शशिमन्दजीवा, क्वारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्प्रम् । वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या,

होरा १ सुखा ध स्त प शुज्ज ए खा १० वि ११ गताः प्रजेशम् ॥ १प ॥

दशमा स्थानमां चंद्र होय, अगीयारमे शिन होय, लग्नमां गुरु होय, बीजे बुध छने मंगळ होय तथा चोथे स्थाने शुक्र छने रिव होय त्यारे राजयोग थाय है वळी होरामां एटले लग्नमां मंगळ छने शिन होय, चोथे चंद्र होय, सातमे गुरु होय, नवमे शुक्र होय, दशमे सूर्य होय छने छगीयारमे बुध होय त्यारे पण राजयोग थाय है. छा सर्वे मळीने बीजा जांगामां तेर राजयोग है.

हवे प्रसंगने श्रनुसरीने बीजा योगो कहे हे.—
गुरुसितबुधलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे
वियति दिवसनाथे जोगिनां जन्म विद्यात्।
गुजबलयुतकेन्द्रैः कूरजस्थेश्च पापै—
र्वजति शवरदस्युस्वामितामर्थजाक् च॥ १०॥

खन्नमां गुरु, शुक्र के बुध एमांनो कोइ पण होय श्रथता गुरु, शुक्र के बुधनुं लग्न होय एटले के धनुष, मीन, वृष, तुला, मिश्चन के कन्या राशिनुं लग्न होय, तेमज सातमे शिन होय तथा दशमे सूर्य होय, श्रा प्रमाणे योग होय त्यारे ते समये जत्पन्न स्वयेला माणसो जोगवाळा थाय हे. वळी शुज्र प्रहोनी राशिनुं (जपर कही ते ज) बळवान होय तथा केंद्रमां होय श्रने वळी कूर प्रहो कूर प्रहनी राशिमां रहेला होय त्यारे श्रा प्रकारना योगमां जत्पन्न थयेल माणस जीक्षोनो श्रने चोरोनो स्वामी श्राय हे तथा धनवान थाय हे. श्रा प्रमाणे बृहत् जातकमां कहेला राजयोगो कह्या.

इवे बीजा पण राजयोगो स्ना प्रमाणे हे.-

लग्ने शौरिसत्था चन्छिकोणे जीवजास्करौ। कर्मस्थाने जवेज्ञौमो राजयोगस्तदा जवेत्॥१॥

लग्नमां शनि तथा चंद्र होय, त्रिकोणमां गुरु तथा सूर्य होय अने दशमा स्थानमां मंगळ होच त्यारे राजयोग १ स्थाय हे. धने चन्द्रशनी मेषे जीवः खे राहुजार्गवौ । श्रयवा दशमे जीवबुधशुक्रास्तथा शशी ॥ २ ॥

धन राशिमां चंद्र अने शनि होय, मेपनो गुरु होय अने दशमे स्थाने राहु तथा शुक्र होय त्यारे राजयोग थाय हे. २. अथवा दशमे स्थाने गुरु, बुध, शुक्र अने चंद्र होय त्यारे पण राजयोग थाय हे. ३.

> श्रयवा दशमे झार्कों जीमराहू च षष्ठगौ । राजयोगेष्वेषु जाता राजानः स्युर्नरोत्तमाः ॥ ३ ॥

अथवा दशमें स्थाने बुध अने सूर्य होय तथा मंगळ अने राहु उर्छ स्थाने रह्या होय तोपण राजयोग धाय हे. ध. आ राजयोगोमां जत्पन्न थयेला उत्तम माण्सो राजा थाय हे.

> श्चादौ जीवः सितः प्रान्ते यथामध्ये निरन्तरम् । राजयोगं विजानीयाः कुदुम्बबखवर्ष्ट्नम् ॥ ॥ ॥

प्रथम गुरु अने हेरे शुक्र तथा मध्यमां जेम घटे तेम निरंतर प्रहो होय तो ते राज-योग जाएवो. आ राजयोगमां कुटुंब अने बळनी वृद्धि थाय हे.

> सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने यदा सितः। निरन्तरं यहा मध्ये राजा जवित निश्चितम्॥ ए॥

त्रीजे स्थाने गुरु होय, आठमे स्थाने शुक्र होय अने बीजा प्रहो निरंतर (आंतरा रहित) मध्य जागमां होय तो ते अवस्य राजा आय हे. अर्थात् ए राजयोग कहेवाय हे.

श्रादौ जीवः पश्चमे वा दशमे चन्द्रमा जवेत्। राज्यवान् स्थान्महाबुद्धिस्तपस्वी वा जितेन्द्रियः॥ ६॥

पहेंदा अथवा पांचमा स्थानमां गुरु होय अने दशमा स्थानमां चंद्र होय तो ते राज्यवान् अने बुद्धिमान् याय हे, अथवा जितेंदिय तपस्वी थाय हे.

> स्वदेत्रस्था यदा जीवबुधसूर्यसुतास्तदा । जातकस्य सुदीर्घायुः संपदश्च पदे पदे ॥ ९ ॥

ज्यारे गुरु, बुध अने शनि पोतपोताना स्थानमां रह्या होय त्यारे तेवा योगमां उत्पन्न अयेको माणस दीर्घायुष्य याय हे तथा तेने स्थाने स्थाने संपत्ति मळे हे.

दितृतीये सुते धर्में कर्मण्यपि यदा ग्रहाः । राजयोगं विजानीया जातस्तत्रोत्कटो जवेत् ॥ ए ॥

बीजा, त्रीजा, पांचमा, नवमा छाने दशमा स्थानमां ज्यारे ग्रहो रहेखा होय त्यारे ते राजयोग जाएवो. तेमां जत्पन्न थयेखो मनुष्य जत्कृष्ट थाय हे. धने व्यये यदा सम्ने सप्तमे प्रवने महाः । स्रवयोगस्तदा नीचकुस्तोऽपि नृपतिर्जवेत् ॥ ए ॥

बीजा, बारमा, पहेला अने सातमा जवनमां ग्रहो रहेला होय त्यारे उत्रयोग थाय है। तेमां छत्पन्न थयेलो नीच कुळवाळो पण राजा थाय है।

सिंहे जीवसाथा शुक्रः कन्यायां मिथुने शनिः। स्वकेन्ने हिबुके जीमः स पुमान्नायको जवेत्॥ १०॥

सिंह राशिनो गुरु होय, कन्यानो शुक्र होय, मिश्रुननो शनि होय श्रने चोथा स्था-नमां मेष श्रश्यवा वृश्चिकनो मंगळ होय तो तेमां जन्मेखो पुरुष नायक (राजा) श्राय हे.

कन्यायां शौरिचन्द्रौ च मृगे जौमो घटे तमः।

सिंहे जीवो जवेजातो राजा शत्रुक्यंकरः ॥ ११ ॥

कन्या राशिमां शनि स्त्रने चंत्र होय, मकरनो मंगळ होय, कुंत्रनो राहु होय तथा सिंहनो गुरु होय एवा योगमां जत्पन्न स्रयेखो माण्स शत्रुनो क्य करनारो राजा साय हे.

शुको जीवो रविजींमो धने मकरकुंजयोः। मीने च वत्सरे त्रिंशे जातः स्यात्सर्वकर्मकृत्॥ १२॥

धन, मकर, कुंन छाने मीन राशिमां छानुक्रमे शुक्र, गुरु, रिव छाने मंगळ होय तो ते योगमां छत्पन्न घयेछो माण्स त्रीश वर्षनो थाय त्यारे सर्व कार्यने करनारो (समर्थ) थाय छे

> खग्ने सौरिख्या चन्द्रश्चाष्टमे जवने सितः। राजमान्यो महाकामी जोगपत्नीरतस्तथा॥ १३॥

लग्नमां शनि स्रने चंद्र होय तथा आठमा जवनमां शुक्र होय तो ते योगमां उत्पन्न धरोलो मनुष्य राजाने मान्य थाय हे, मोटी कामनावाळो तथा जोग स्रने पत्नीमां स्रासक्त थाय हे.

मिथुने च यदा राहुः सिंहस्थो स्मिनन्दनः।
वृश्चिके च यदा जीवः स पुमान्नृपतिर्जवेत्॥ १४॥

मिथुनमां राहु होय, सिंहमां मंगळ होय छने वृश्चिकमां गुरु होय त्यारे ते योगमां छत्पन्न श्रयेक्षो माण्स राजा श्राय हे.

स्वगृहे च धने जीवस्तुखायां च जवेत्सितः। शौरिर्मकरे मिथुने चन्द्रः स्याद्याजयोगकृत्॥ १५॥

पोताना गृहमां के धन राशिमां गुरु होय, तुलामां शुक होय, मकरमां शनि होय अने मिथुनमां चंद्र होय तो ते राजयोग करनारो हे युग्मे शशी वृषे जीवः सिंहे शौरिर्मृगे कुजः । शुक्रस्तुलायां कन्यायां बुधार्को राज्ययोगदाः ॥ १६॥

मिथुननो चंड, वृष्यत्रनो गुरु, सिंहनो शनि, मकरनो मंगळ, तुलानो शुक्र अने कन्याना बुध तथा सूर्य होय तो ते राजयोगने आपनारा हे

धने शुक्रश्च जीमश्च मीने जीवस्तुखे बुधः। नीचश्चन्द्रो रवेर्युक्तो राजयोगोऽजिधीयते॥ १७॥

धननो शुक्र तथा मंगळ होय, मीननो गुरु होय, तुलानो बुध होय तथा नीचनो चंद्र सूर्ये करीने युक्त होय तो ते राजयोग कहेवाय हे.

मीने शुको बुधश्चान्ते लग्ने सूर्यो धने शशी। सहजे च जवेकीमो राजयोगं प्रचक्तते ॥ १०॥

मीननो शुक्र होय, बारमे बुध होय, खग्नमां सूर्य होय, धनमां चंड होय तथा त्रीजा स्थानमां मंगळ होय तो ते राजयोग कहेवाय हे.

चातृस्थाने यदा जीवो खाजस्थाने शशी जवेत्। जचेषु वा शुजाः केन्द्रे खग्ने वा जीव एककः॥ १ए॥

त्रीजा जवनमां गुरु होय अने अगीयारमा जवनमां चंद्र होय, अथवा उच्च स्थानमां ग्रुज ब्रहो होय अने केंद्रमां के लग्नमां एकलो गुरु होय तो राजयोग थाय है.

श्रयवा.—

सिंहे जीवस्तुद्धाकीटधनुर्मकरकेषु च । महाः स्थाने तदा जातो देशकोगी जवेन्नरः ॥ २०॥

सिंहनो गुरु होय तथा तुला, वृश्चिक, धन श्वने मकरमां पोतपोताना स्थानना यहो होय तेवा योगमां छत्पन्न थयेलो मनुष्य देशनो जोक्ता (स्वामी) थाय हे.

> विद्यास्थाने यदा सौम्याः कर्मस्थाने च चन्त्रमाः । धर्मस्थाने पुनः सौम्यास्तदा राज्यं विधीयते ॥ २१ ॥

पांचमा स्थानमां सौम्य प्रहो होय, दशमा स्थानमां चंज होय श्रने नवमा स्थानमां सौम्य प्रहो होय तेवा योगमां उत्पन्न श्रयेखाने राजयोग कहेखो हे.

> युग्मे वृषे मेषमीने कुंजे च मकरे ग्रहाः। यदा इगुरुशुकेन्द्रराहवः स्युश्चतुष्टये ॥ २२ ॥

मिथुन, वृष, मेष, मीन, कुंज श्रने मकरमां सर्व यहो रहेखा होय अथवा बुध, गुरु, शुक्र, चंज श्रने राहु ए यहो चतुष्टयमां एटखे पहेखा, चोश्रा, सातमा श्रने दशमा स्थानमां रह्या होय तो राजयोग थाय हे.

यदा तुर्वे सितारेन्द्रगुर्वर्कशनयः स्थिताः। योगेष्वेतेषु ये जातास्तेषां स्यादाजयोगिता॥ २३॥

अथवा चोथा स्थानमां शुक्र, मंगळ, चंज्र, गुरु, रवि अने शनि रहेखा होय तो आ योगोमां चत्पन्न थयेखा मनुष्योने राजयोग थाय है.

जन्मचतुर्थे जवने जार्गवरविराद्वचन्द्रजीमेषु।

जातो बुधयुक्तेषु च पृथ्वीपाखो जनतपुरुषः ॥ २४ ॥

जन्मकुंमळीना चोथा जवनमां बुधनी साथे शुक्र, रिव, राष्ट्र, चंद्र के मंगळ रह्या होय तो ते योगमां जत्पन्न थयेलो पुरुष पृथ्वीपाळ (राजा) थाय हे.

> जन्मचतुर्थे जवने जार्गवगुरुचन्द्रजौमशनियुक्तः । जातं विद्धाति रविः पृथ्वीपातं न सन्देहः ॥ १५ ॥

जनमकुंमळीना चोथा जवनमां रविनी साथे शुक्र, गुरु, चंड, मंगळ के शनि रह्यों होय तो ते योग पृथ्वीपाळने करनारो हे. एमां कांइ संदेह नथी.

धने व्ययेऽएमे वष्ठे सौम्यकूरा युता यदि। यक्षात्स पुरुषो रक्षईश्वरः कुलवर्धनः॥ १६॥

बीजा, बारमा, श्राठमा श्रने उठा स्थानमां जो सौम्य तथा क्रूर प्रहो साथे रह्या होय तो ते योगमां जत्पन्न थयेला पुरुषतुं यत्नश्री रक्षण करतुं, कारण के ते कुळने वृद्धि पमा-कनार राजा थाय ठे.

> तृतीये वैकादशे वा त्रिकोणे वा जवेद्यदि । सप्तमे वा जवेजीवः सुरूपो राजमानितः ॥ २९ ॥

त्रीजा, अगीयारमा, त्रिकोण (नवमा, पांचमा) के सातमा स्थानमां गुरु होय तो तेमां छत्पन्न थयेखी पुरुष सारा रूपवाळी अने राजानी मानीती थाय हे.

गुरुर्हिप्ने धने ऋरो व्यये ऋरो जवेत्युनः । सप्तमे जवने ऋरो धनसौजाग्यजातकम् ॥ २० ॥

खग्नमां गुरु, धनमां ऋर, व्ययमां (बारमामां) ऋर छने सातमा जवनमां ऋर यह होय त्यारे ते योग धन छाने सौजाग्यने वृद्धि करनारो हे. छा प्रमाणे बीजा मंथमां कहेला कुख एकत्रीश राजयोगो थाय हे

पूर्णज्ञ ज्योतिषमां बे राजयोगो आ प्रमाणे कह्या हे.—
यदि सर्वप्रहृदृष्टिर्वग्ने परिपतित दैवतवशेन ।
तज्जवित नृपतियोगः कह्याणपरंपराहेतुः ॥ १ए ॥
अन्योन्यस्थोचराशिस्थो यदि स्थातां प्रह्रौ तदा ।
राजयोगं जिनाः प्राहुर्दर्शने तु महाफल्लम् ॥ ३० ॥

को लग्नमां जिवतन्यताना वशायी सर्व घ्रहोनी दृष्टि पमती होय तो कहयाणनी परं-परानो हेतुरूप राजयोग थाय हे. १. परस्परना वन्ने घ्रहो जो उंच राशिमां रहेला होय तो ते योगने जिनेश्वरो राजयोग कहे हे. तेमनुं परस्पर दर्शन तो महा फळवाछुं हे. १.

हवे बीजा छ योगो कहे छे.--

रविवर्जं दादशगैरनुफाश्चन्दाद्वितीयगैः सुनुफाः । जन्नयस्थितेर्द्वरधरा केमद्वममन्यथैतेन्यः ॥ ३१ ॥

जनमपत्रिकामां जे स्थाने चंद्र रह्यो होय ते स्थानथी वारमे स्थाने सूर्य विनानों बीजो कोइ पण यह रहेवो होय तो ते अनुफा नामनो योग कहेवाय हें चंद्रश्री बीजे स्थाने जो रिव सिवाय कोइ पण यह रह्यो होय तो सुनुफा नामनो योग आय हें चंद्रश्री बारमा अने बीजा ए बन्ने स्थानोमां जो रिव सिवाय कोइ पण यह रह्या होय तो ते हरधरा योग कहेवाय हे अने अन्यशा एटले चंद्रश्री वारमे तथा बीजे स्थाने रिव सिवायनो कोइ पण यह रह्यो न होय तो केमद्वम नामनो योग श्राय हे.

सूर्याद्धयगैर्वोशिष्दितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशिः । जन्यस्थैरुन्यचरी राजयोगाः पमप्यमी ॥ ३२॥

जम्मपित्रकामां सूर्य जे स्थाने रहेलो होय ते स्थानथी बारमे स्थाने चंड सिवाय बीजो कोइ यह रह्यो होय तो वोशि नामनो योग थाय हे, अने एज रीते बीजे स्थाने कोइ यह रह्यो होय तो वेशि योग थाय हे, तथा बारमा अने बीजा ए बन्ने स्थानमां चंड सिवायना कोइ यह रह्या होय तो जनयचरी योग थाय हे. आ हए योगो राजयोग कहेवाय हे. अहीं मूळ श्लोकमांज हनी संख्या बतावी होवाथी सातमो केमद्रुम योग (छपरना श्लोकमां कहेलो चोयो योग) अधम एटले अशुज हे एम जाणवुं. चंड छपर सर्व यहोनी हिष्ट पमती होय तो तेज योग जझ केमद्रुम नामनो राजयोग थाय हे. आ साते राजयोगो जातकमां कहेला हे. लक्ष तो कहे हे के—"केंद्रस्थान के चंडां स्थान कोइ पण यहवने युक्त होय तो केमद्रुम योग अतो नश्री." आ प्रमाणे कुल ४० राजयोग थाय हे. यात्राना योगो सहित सर्व योगो मळीने कुल ए०६ योगो थया.

इवे मूळ ग्रंथकार चित्तनी शुद्धि सर्व निमित्तो करतां बळवान् हे ते कहे हे.-

सकखेष्वपि कार्येषु यात्रायां च विशेषतः।

निमित्तान्यप्यतिकम्य चित्तोत्साहः प्रगब्जते ॥ ६३ ॥

श्चर्य-सर्व कार्योमां तथा विशेषे करीने यात्रामां तो सर्व निमित्तोने उद्घंघन करीने चित्तनो उत्साहज श्रिधिक फळदायक छे. जो के निमित्त एटखे शरीरना माबा तथा भार ३२ जमणा अंगनुं फरकवुं विगेरे कहेवाय हे तथा अंगनो स्पर्श विगेरे इंगित कहेवाय है, हुर्गा विगेरे शकुन कहेवाय है अने लग्न विगेरे ज्योतिष कहेवाय है तोपण अहीं अनेद कहपनाए करीने ते सर्वे निमित्त शब्दथीज जाणी खेवां.

हवे यात्रामां दिशानो विज्ञाग बतावे हे.-

ऐन्द्रादि ४ दिक्क मातङ्ग १ रथा २ श्व ३ नरवाह्नैः ४। वजेत्क्रमेण जूपालो दिक्पालोह्नासिमानसः॥ ६४॥

श्रर्थ—राजाए पूर्व दिशामां हस्तीवने, दिश्णमां रश्रवने, पश्चिममां श्रश्ववने श्रने छत्तरमां शिबिकादिकवने दिश्पाद्यनुं मनमां स्मरण करतां प्रयाण करतुं. श्रहीं दिश्पाद्य एटले जवानी दिशानो पति जाणवो. ते दिश्पित श्रा प्रमाणे हे.—"पूर्वनो इंड, श्रिश खूणानो श्रिश, दिश्णनो यम, नैर्ऋत्यनो नैर्ऋत, पश्चिमनो वरुण, वायव्यनो वायु, जत्तरनो कुवेर श्रने ईशान खूणानो स्वामी ईशान हे." श्रामांनी जे दिशामां जवुं होय ते दिशाना स्वामीनुं तथा सूर्यादिक ग्रहोनुं श्रानंदपूर्वक ध्यान करतां प्रयाण करवुं. रक्षमाळामां पण कद्यं हे के—

"ध्यायन्नाशाधीश्वरं हृष्टचेताः, शोणीपालो निर्वित्तम्बं प्रयायात् ।" "हर्षयुक्त चित्तश्री दिशाना स्वामीनुंध्यान करतां राजाए वित्नंब विनाज प्रयाण करतुं."

॥ इति गमदारम्। ए

॥ श्रथ वास्तुदारम्॥ ए

आ प्रमाणे गमदार (यात्रादार) कहां. हवे वास्तुदार कहे हे.-

वास्तु नव्यं विन्नूरयायुःकीर्तिकामो निवेशयेत्।

इात्वाऽऽय १ के २ व्ययां २ शां ४ स्तु चन्ड्र ५ ताराब से ६ श्रिपा। श्रर्थ—संपत्ति, श्रायुष्य श्रने कीर्तिनी कामना(इडा)वाळाए श्राय १, नक्त्र १, व्यय २, श्रंश ४, चंडवळ ५ श्रने ताराबळ जाणीने नवीन वास्तु करतुं.

घर, हाट (फ़्कान) अने प्रासाद विगेरे वास्तु कहेवाय हे. संपत्ति विगेरे शब्दोधी ग्रंथकारे आ प्रमाणे सूचव्युं हे.—

"कार्यसिष्टिसुलायूंषि निमित्तशकुनादिनिः। इात्वा प्रष्टुर्ग्रहारंजे कीर्तयेत् समयं सुधीः॥"

"विदाने (जोशीए) पूजनार गृहस्थनी कार्यसिद्धि, सुख अने आयुष्यादिकने निमित्त तथा शकुन विगेरेवके जाणीने गृहने आरंज करवानो समय कहेवो." श्रहीं "शकुनादिजिः" ए ठेकाणे श्रादि शब्द खखेखों ठे तेथी श्रंगस्पर्शादिक ग्रहण करवा. श्रहीं कोइ शंका करे के श्रंगस्पर्शे करीने शी रीते निर्णय थाय ? ते जपर खघु जातकमां कह्यं ठे के—

"शीर्ष १ मुख २ वाहु ३ हृदयो ४ दराणि ए कटि ६ वस्ति ७ गुह्य ए संझानि । करू ए जानू १० जंघे ११ चरणा १२ विति राशयोऽजाद्याः ॥"

"शीर्ष १, मुख २, बाहु २, हृदय ४, छदर ५, किट ६, बिस्त ६, गुह्य ७, छरू ए, जानु १०, जंघा ११ श्रने चरण १२ श्रा प्रमाणे मेपशी श्रारंजीने मीन पर्यंत बारे राशिनां श्रनुक्रमे श्रंगो जाणवां." श्रहीं मेपने श्रारंजीने एम कहां हे तोपण जे तात्काळिक लग्न होय तेज मस्तक जाणवुं, श्रने त्यारपत्ती श्रनुक्रमे बीजां श्रंगो जाणवां. (एटखें के कोइ गृहस्थ गृहारंजना समयने पूत्रवा श्रावे ते वखते विदाने प्रश्रकुंक्ळी करवी. तेमां जे लग्न श्रावे ते राशिनेज शिर गणवुं श्रने त्यारपत्तीनी राशिचेने श्रनुक्रमे मुख विगेरे चरण पर्यंत गणवां.) त्यारपत्ती—

"काखपुंसो यदङ्गं तत्स्प्रष्टा स्पृश्वति चेच्छुनैः। युक्तं विखोकितं वापि सद्मनिर्माणमादिशेत्॥"

"उपर प्रमाणे थयेला काळपुरुषना जे कोइ खंगने पूजनार स्पर्श करे ते खंग शुज बहोए युक्त होय श्रथवा तेनी दृष्टि पमती होय तो ते प्रमाणे तेने गृहपारंजनो समय कहेवो." आ प्रमाणे दैवज्ञवङ्कजमां कहां हे.

हवे आय विगेरेनेज कहे हे.-

ध्वजो १ धूमो १ हरिः ३ श्वा ४ गौः ५ खरो १ हस्ती १ द्विकः ० क्रमात्। पूर्वादिबक्षिनोऽष्टाया विषमास्तेषु शोजनाः॥ ६६॥

अर्थ—ध्वज १, धूम २, हिर (सिंह) २, श्वा (कूतरो) ४, गो (गाय-बळद) ५, खर (गधेनो) ६, इस्ती ७ अने दिक (कागनो) ए आ आठ आयो अनुक्रमे पूर्वीदिक दिशार्चमां बळवान् हे. तेमांना विषम आयो (एकी आयो) सारा हे.

ें आ आठ आयो पूर्व, अग्नि विगेरे अनुक्रमधी आठ दिशार्जमां बळवान् हे, कारण के तेर्ज सर्वदा ते ते दिशामांज रहेला हे. कहुं हे के—

"ईशानान्ते च दिग्जागे पूर्वादिक्रमतः स्थिताः। श्रन्योऽन्याजिमुखा ह्येते विश्लेया वास्तुकर्मणि॥"

"आ आयो पूर्व विगेरे दिशाना कमथी ईशान खूणा पर्यंत आठे दिशामां रहेखा है, तें वास्तुकार्यमां परस्पर सन्मुख (साम सामा मुखे) रहेखा जाणवा ?'

श्रायोनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

च च	ध्वज १	四州
व स	શ્રી	रू सि
क क	d dd	_ध न

आ आहे आयोमां विषम एटले पहेलो, त्रीजो, पांचमो अने सातमो ए चार आयो सारा हे, तथा विरुद्ध (अशुज) संज्ञाने लीधे त्रिरुद्ध फळ आपनार होवाथी सम आयो एटले वीजो, चोथो, हो अने आहमो ए चार सारा नथी. आ आहे नामो सार्थक हे एटले पोतानां नाम प्रमाणे गुणवाळां हे.

श्रा श्रायोने स्थापन (ग्रहण) करवानी ज्यवस्था विवेकविदासमां श्रा प्रमाणे करी है.—

"वृषं सिंहं गजं चैव खेटकर्वटकोट्टयोः।
दिपः पुनः प्रयोक्तव्यो वापीकूपसरसमु च ॥ १ ॥
मृगेन्द्रमासने दद्याञ्चयनेषु गजं पुनः।
वृषं जोजनपात्रेषु ठत्रादिषु पुनर्ध्वजम् ॥ २ ॥
श्चान्नेवेदमसु सर्वेषु गृहे वह्नचुपजीविनाम्।
धूमं नियोजयेत् केचित् श्वानं म्लेडादिजातिषु ॥ ३ ॥
खरो वेदयागृहे रास्तो ध्वांद्यः रोषकुटीषु च।
वृषः सिंहो गजश्चापि प्रासादपुरवेदमसु ॥ ४ ॥"

"गाममां तथा किल्लामां वृष, सिंह छने गजनो छाय लेवो वाव, कृवा छने तळा-वमां गजनो छाय लेवो. छासनमां सिंहनो छाय देवो शब्यामां गजनो छाय देवो. जोजननां पात्रोमां वृषनो छाय देवो. छत्र विगेरेमां ध्वजनो छाय देवो. छित्रनां सर्व गृहोमां तथा छित्रवमे छाजीविका करनारनां गृहोमां धूम छाय लेवो म्लेड विगेरेनां घरोमां श्वाननो छाय देवो. वेश्याना घरमां खर छाय देवो सारो छे नानी छुंपनी छमां काकनो छाय सारो छे प्राप्ताद (चैत्य-राजमहेल) तथा नगरनां घरोमां वृष, सिंह छने गज ए त्रणे छायो शुज छे."

हवे आयोनो विनिमय एटले एक आयने ठेकाणे बीजा कोइ आय खड़ शकाय के नहीं ? तेनो नियम बतावे हे.—-

१ वृष: सिंहो गजश्रीव कुण्डे कर्कटकीटयोः । इति मुहूर्त्तचिन्तामणिवृत्तौ ।

ध्वजः पदे तु सिंहस्य तौ गजस्य वृषस्य ते। एवं निवेशमईन्ति स्वतोऽन्यत्र वृषस्तु न ॥ ६७॥

अर्थ—सिंहने स्थाने ध्वज, गजने स्थाने ते बन्ने एटले ध्वज अने सिंह, वृषने स्थाने ते त्रणे एटले ध्वज, सिंह अने गज, आ प्रमाणे एकने अजावे बीजा आयो स्थापन करवा योग्य हे, पण वृष आय पोताना स्थानथी वीजे स्थाने लेवो नहीं.

जे स्थाने सिंहनो आय प्राप्त थतो होय त्यां ध्वजनो आय तह शकाय हे अने सिंह पण तह शकाय हे, तेमां कांइ दोप नथी। ए रीते आगळ पण जाणवुं. गजनो आय प्राप्त अयो होय त्यां गजनो अथवा तो ध्वज अने सिंहनो आय पण देवो। वृषनो आय प्राप्त अयो होय तो ते वृषनो अथवा ध्वज, गज अने सिंहनो पण आय दह शकाय हे, पण वृषनो आय प्राप्त थयो होय तोज वृषनो आय देवो। अर्थात् बीजा आय प्राप्त थया होय त्यां वृषनो आय देवो। नहीं.

श्रायादिक लाववानुं करण (रीत) कहे हे.— श्रायो दैर्घ्यान्ययोघीतः फलमष्टहृतेऽधिकः। फलमष्टग्रणं ना १९ ते नं तत्राष्टहृते व्ययः॥ ६०॥

अर्थ—वास्तुनी खंवाइ तथा पहोळाइने गुएतां जे आवे ते फळ कहेवाय है. फळने आहे जाग खेतां जे शेष रहे ते आय जाएवो. फळने आहे गुएीने सत्यावीशे जागतां जे शेष रहे ते नक्षत्र जाएवुं, तथा ते नक्षत्रने आहे जाग खेतां जे शेष रहे ते व्यय जाएवो.

लंबाइ अने अन्य एटले पहोळाइ ए बेनो गुणाकार करीए त्यारे फळ आय हे. ते फळने आहे जाग देतां बाकी जे वधे ते आय जाणवो. ए शब्दार्श अयो. जावार्श आप्रमाणे—लंबाइ तथा विस्तार (पहोळाइ) ए बेने परस्पर गुण्या. गुणाकार करवाथी जे संख्या आवे ते फळ कहेवाय हे. अानुं बीजुं नाम केत्रफळ पण कहेवाय हे. तेज फळना आंकने आहे जागतां जे बाकी शेष रहे ते इष्ट वास्तुनो आय जाणवो, एटले के जो आहे जागतां एक वाकी रहे तो ध्वज आय अने बे बाकी वधे तो धूम आय विगेरे जाणवुं, पण जो शून्य शेष रहे तो हेल्लो ध्वांक (काक) आय जाणवो. अहीं परंपरा आ प्रमाणे हे—ह जवे करीने एक आंगळ थाय हो, चोवीश आंगळनो एक हा अने चार हाथनो एक दंग थाय हे. तेथी करीने ज्यां दंग के हाथवंग क्षेत्र माप कर्युं होय त्यां सर्वत्र अमुक आंगळ वधारीने अथवा ओहा करीने इित आय खाववो, केमके जो दंग के हाथ जपर आंगळ वधारीए नहीं अथवा तेमांथी जहा

करीए नहीं अने आले आला दंग के हायज राखीए तो ते दंग अथवा हायना आंगळ करीने तेने आहे जागीए त्यारे शून्यज शेष रहे, तेथी हेझो ध्वांश (काक) आयज आवे अने ते आय जत्तम जातिनां घरोमां योग्य—शुज नथी. अहीं जावना ए हे जे— खंबाइना अने पहोळाइना आंगळनो गुणाकार करवाथी केत्रफळ थाय हे, एटले के ते वास्तुकेत्रमां सर्व मळीने तेटलाज आंगुलो होय हे, अने आय तो आहज हे, तेथी ते केत्रफळना आंगुलने आहे जागतां जे आंक शेष रहे तेटलामो ध्वजादिक आय आय हो. ते आयमां पण विषम आय श्रेष्ठ हे, पण सम आय श्रुज नथी. तेथी करीने हाथनी छपर अमुक आंगळ वधारीने अथवा अमुक आंगळ छंहा करीने कोइ पण प्रकारे तेवी खंबाइ अने पहोळाइ खेवी के जे प्रकारे केत्रफळने आहे जागतां विषम (एकी) आंक बाकी शेष रहे. ते विषे दैवज्ञवङ्गजमां कहां हे के—

"न इस्तमानेन गुणान्वितं स्याद्यदा तदा तक्ति तोक्तयुक्त्या। प्रदाय हित्वा यदि वाऽङ्गुद्धानि प्रसाधयेत् केत्रफद्धं शुनायम्॥"

"ज्यारे केवळ हाथनाज माने करीने केत्रफळ गुण युक्त न थाय त्यारे तेना गणितनी कहेती युक्तिवने ते हाथमां अमुक अंगुल उमेरीने अथवा तेमांथी अमुक अंगुल उमेरीने अथवा तेमांथी अमुक अंगुल उंगा करीने शुज्ज आयवालुं केत्रफळ साधवुं." अहीं "शुज आयवालुं" एम कहां ते उपलक्षण होवाथी नक्त्रादिक पण ते गृहमां जे प्रकारे अनुकूळ याय ते प्रकारे केत्रफळ साधवुं. नक्ष्त्रना अनुकूळनो प्रकार आगळ "प्रारब्धं संमुखे चन्दे" ए ५४ मा श्लोकमां कहेवामां आवशे. अहीं वास्तुशास्त्रमां आ रीते विशेष कहां हे.—

"गृहेषु कर्मिंहस्तेन मानं स्वामिकरेण वा। देवतानां तु धिष्णयेषु कर्मिंहस्तेन केवलम्॥"

"घरोने विषे कारीगरना हाथे करीने अथवा घरधणीना हाथे करीने मान करबुं, परंतु देवताना घरमां (देवालयमां) तो केवळ कारीगरना हाथे करीनेज एटले कांबिके करीनेज मान करबुं." तथा देवालयने विषे जीतोनुं जामपणुं केत्रफळनी अंदर गणुं अने वीजां घरोमां जीतोने केत्रफळनी वहार गणुं ते विषे व्यवहार-प्रकाशमां कहुं हे के—

"क्षेत्रफलान्तर्जित्तीर्देवगृहेऽपि प्रकारयेविदान् । स्राकम्य वाह्यसूमिं केत्राक्षितीर्नृणां गेहे ॥"

"विदान् पुरुषे देवालयने विषेज जीतोने केत्रफळनी अंदर कराववी अने नजु-ब्योनां घरने विषे केत्रफळनी बहारनी ऋमिने छेळंगीने जीतो कराववी." इति आयाः हवे वास्तुनुं जन्मनक्त्र कहे हे.—सामान्य रीते वास्तुनुं जन्मनक्षत्र कृत्तिका हते तेने माटे व्यवहारप्रकाशमां कह्यं हे के—

> "नाषपदतृतीयायां शनिदिवसे कृत्तिकाप्रथमपादे । व्यतिपाते राज्यादौ विष्टां वास्तोः समुत्पत्तिः॥"

"नाइपद मासनी त्रीज छाने ज्ञानिवारने दिवसे कृत्तिका नक्त्रना पहेला पादमां व्यतिपातना योगमां रात्रिनी छादिमां विष्टिमां वास्तुनो जन्म हे."

इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र आ प्रमाणे आवे हे—फळने आह गुणुं करबुं. मूळ श्लोकमां अधिक शब्द हे तेनो सर्वत्र संबंध करवो. फळने आहे गुणी सत्यावीशे जाग देतां जे श्रिधक शेप रहे, तेटलामुं इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्षत्र जाणवुं. आ जन्मनक्षत्रशीज घरधणीनी साथे एटले घरधणीना जन्मनक्षत्रनी साथे प्रमाष्टक विगेरेनो विचार कराय है.

जपर कहेला नक्त्रना आंकने एटले इष्ट वास्तुनुं जन्मनक्त्र जेटलामुं होय तेटली संख्याने आठे जाग लेतां जे बाकी शेष रहे ते (तेटलामो) व्यय जाणवोः जो आठे जाग न चाले तो ते नक्त्रनो आंकज व्ययनो आंक जाणवोः ते व्यय त्रण प्रकारनो छे—पिशाच, यक्त अने राक्तमः ते विषे सारंग कहे ठे के—

"पैशाचस्तु समायः स्याक्षाक्षसश्चाधिके व्यये । स्त्रायात्तृनतरो यक्षो व्ययः श्रेष्ठोऽष्टधा त्वयम् ॥ शान्तः १ क्रूरः २ प्रद्योतश्च ३ श्रेयान ४ य मनोरमः ए । श्रीवत्सो ६ विजवश्चेव ७ चिन्तात्मको ए व्ययोऽष्टमः ॥"

"जे वास्तुमां व्ययनी समान (जेटलो) आय होय तो ते पैशाच व्यय कहेवाय है, अने आय करतां व्यय अधिक होय तो ते राक्षस व्यय कहेवाय हो, तथा आय करतां व्यय ओहो होय तो ते यक व्यय कहेवाय हो, तेमां आ हेहो यक व्यय अहे है. आ व्यय पण आयनी जेम आह प्रकारनो हो, तेनां नाम आ प्रमाणे— शांत १, ऋर १, प्रद्योत ३, श्रेयान् ४, मनोरम ५, श्रीवत्स ६, विजव ९ तथा आहमो चिंतात्मक ए.

नक्षत्रना आंकने आहे जागतां जे शेष रहे ते व्यय जाणवो एम जपर कहां, तेमां जो एक शेष रहे तो ते शांत व्यय जाणवो, वे शेष रहे तो ऋर व्यय जाणवो. ए रीते गणतां शून्य शेष रहे तो हेहा चिंतात्मक व्यय जाणवो.

हवे छांशोने खाववानो जपाय कहे हे.--

फक्षे व्ययेन वेश्माख्याक्रोश्चाळ्ये त्रिजाजिते ।

अंशाः शका १ न्तक १ द्यापा ३ स्तेषु स्यादधमो यमः ॥ ६ए ॥

श्रर्थ—हेत्रफळना आंकमां व्ययनो आंक तथा घरना नामना श्रहरोनो आंक छमेरवो. पत्नी तेने त्रणे जाग देवो. जागतां जो एक शेष रहे तो शक (इंड) नामनो आंश जाणवो, वे रहे तो श्रन्तक (यम) श्रने श्र्न्य शेष रहे तो हमाप (राजा) नामनो आंश जाणवो. आ त्रणे आंशोमां यम नामनो बीजो आंश श्रथम—आशुज हो.

जपर घरना नामना ऋहरो कह्या, माटे घरोनां नामोने कहे हे .--

धुवं १ धन्यं १ जयं ३ नन्दं ४ खरं ५ कान्तं ६ मनोरमम् ७। सुमुखं ७ धुर्मुखं ए कूरं १० सुपकं ११ धनदं ११ क्यम् १३॥ ७०॥ स्राक्रन्दं १४ विपुलं १५ चैव विजयं १६ चेति षोमश । सम्प्रत्यमीषां पस्त्यानां प्रस्तारः प्रतिपाद्यते ॥ ७१ ॥ युग्मम् ॥

श्रर्थ—ध्रुव १, धन्य २, जय २, नंद ४, खर ५, कांत ६, मनोरम ७, सुमुख ७, धुर्मुख ७, कूर १०, सुपद्ध ११, धनद १२, ध्य १२, श्राकंद १४, विपुत १५ श्रने विजय १६, ए सोळ घरोनां नामो छे. श्रहीं श्रगीयारमा सुपद्यने बदले विपद्ध एवं नाम पण केटलाक कहे छे. हवे ए घरोना प्रसारने कहे छे.

आ ध्रुव विगेरे नामो सार्थक हे, तेथी करीने खर १, छुर्मुख २, कूर ३, क्य ४, आकंद ५, ए नामवाळां घरो अशुल हे. तेने माटे वास्तुशास्त्रमां कह्यं हे के—

"स्थैर्य १ धनं २ जयः ३ पुत्रा ४ दारिद्यं ५ सर्वसंपदः ६। मनोह्वादः ७ श्रियो ७ युद्धं ए वैपम्यं १० वान्धवा ११ धनम् १९॥ इयश्च १३ मृत्यु १४ रारोग्यं १५ सर्वसंपदि १६ ति ऋमात्। ध्रुवादीनां फलं क्षेयं"

ध्रुवादिक सोळ घरोनुं अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ जाणवं.—स्थिरता १, धन १, जय ३, पुत्रो ४, दारिद्य ५, सर्व संपत्ति ६, मननो आहाद (तृष्टि) ७, खक्की ०, युद्ध ए, विषमपणुं १०, बंधुर्ज ११, धन १२, क्य १३, मृत्यु १४, आरोग्य १५ अने सर्व संपत्ति १६.

इवे प्रस्तारनो प्रकार कहे हे.-

गुरोरधो खद्यं न्यस्येत् पृष्ठे त्वस्य पुनर्गुरून् । अप्रतस्तूर्ध्ववद्देयाद्यावत्सर्वछपुर्नवेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ-पहेली पंक्तिमां चारे गुरु लखवा. बाकीनी पंक्तिसमां पहेला गुरुनी नीचे लघु मूकवो, अने त्यारपठी छपरनी जेम एटले गुरु मुकवा, अने जे प्रस्तारमां पाठळ

खादी स्थान रहे ते ते स्थानोमां गुरु स्थापवाः ए रीते करतां करतां बेह्वो जंग सर्व (चारे) खघुनो थाय त्यांसुधी स्थापवाः अर्थात् चार अक्टरवाळा वृत्तनी जातिनी जेम अर्हीं सोळ जंग थाय वे. स्थापना—

अहीं प्रस्तारनीज जेम नष्ट अने छिह्छ विगेरे पांच प्रत्यय पण सुगम हे, परंतु प्रथ घणो मोटो थवाना जयथी तथा अहीं तेनो छुपयोग नहीं होवाथी खखता नथी.

इवे आ सोळ जांगाए करीने घरोनां ध्रुवादिक नामो जत्पन्न आय हे, ते कहे हे.--

पूर्वादितो ग्रह्माराहिक्विलिन्दैर्लघृदितैः। प्रदक्तिणस्थैर्वेशमानि स्युर्धुवादीनि षोमश् ॥ ७३॥

अर्थ—घरना दारथी प्रदिक्तणाने अनुक्रमे पूर्वादिक दिशामां लघुए जलावेला अिंदि दोए करीने ध्रुव विगेरे सोळ घरो थाय हे. अिंदि एटले ओंशरी, गोजार, ओरमी विगेरे घरना नाना जागो जाणवा.

जे दिशामां घरनुं घार होय ते ते घरनी पूर्व दिशा जाणवी. त्यांथी जमणी वाजुनी दिशाने दक्षिण समजवी, तेथी जमणी पश्चिम अने तेथी जमणी जत्तर ए रीते दिशाओं जाणवी. ते विषे विवेकविद्यासमां कहां हे के—

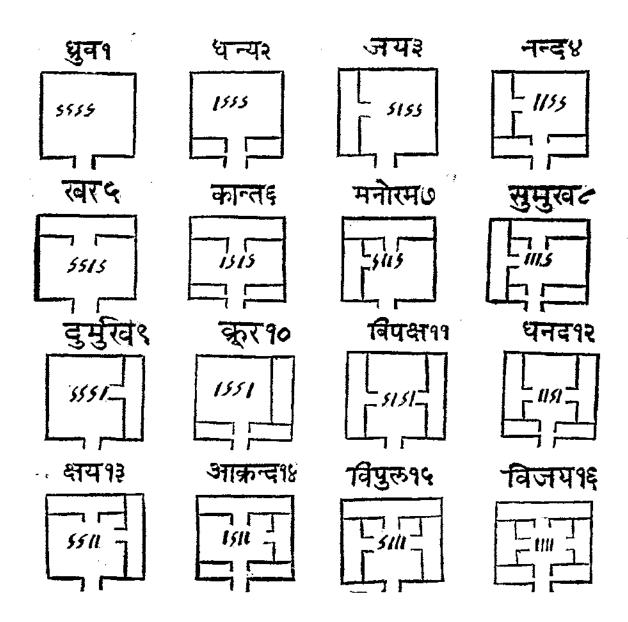
"पूर्वादिदिग्विनिर्देश्या गृहदारव्यपेक्या । जास्करोदयदिक् पूर्वा न विक्रेया यथा क्रुते॥"

"धरना दारनी अपेकाए करीने पूर्वादिक दिशाओं जाणवी, पण सूर्योदयनी दिशाने पूर्व न धारवी. जींकने विषे पण आज प्रमाणे दिशाओं धारवामां आवे जे." दैवहावक्ष-जमां पण कहां जे के—

"गृहस्य मुखतः प्राचीं प्रकष्ट्य तत्प्रदक्तिएम् । पर्यटिक्रिरिखन्दैः स्युः प्रस्तारादेशमनां जिदाः॥"

"घरना मुखथी (घारथी) पूर्व दिशा कस्पीने त्यांथी दक्षिण दक्षिण एटले जमणी जमणी बाजु श्राटन करता श्रालंदीए करीने प्रस्तारने लीचे घरना प्रकारो थाय हे."

श्रद्धी पहेला जांगामां चारे गुरु हे, माटे घरनी पूर्वादिक चारे दिशाओ आवरण रहित जाणवी, एटसे के कोइ पण दिशामां अिंद नथी एम जाणवुं, केमके जे हेकाणे लघु होय तेज दिशामां अिंद होय हे; तेथी करीने ज्यां एक पण खघु नथी त्यां मात्र एक ओरमारूपज घर हे. आ घरनुं नाम धुव हे. ज्यां पूर्व दिशामां अिंद होय ते धन्य नामनुं घर जाणवुं, अने ज्यां दिशामां अिंद होय ते जय नामनुं घर जाणवुं, ए रीते ज्यां ज्यां खघु होय ते ते दिशामां खघु होवाने बीधे एक, वे के त्रण अिंदि होय हे. सोठमा जांगामां तो चार अिंदि होय हे. पहेखा घरमां तो खघु नहीं होवाने बीधे एक पण अिंदि होतो नथी. आ सोठे घरनी स्पष्ट स्थापनाओं आ रीते हे.



आ स्थापनाओं एक ओरमावाळा घरनी हो. वे त्रण विगेरे ओरमावाळां घर करवां होय तो तेना अनेक जेदो याय हो. एक ओरमावाळा घरना पण एकसो ने चार प्रकार संजवे हो, परंतु आहीं तो मात्र दिग्दर्शनने माटे सोळ प्रकारज कह्या हो. रह्ममाखाजाष्यमां कह्यं हो के—

"वेश्मनामेकशालानां शतं स्याचतुरुत्तरम् । दिपञ्चाशद्विशालानां त्रिशालानां दिसप्ततिः ॥"

"एक शाळा(श्रोरमा)वाळां घरोना एकसो चार जेद थाय है. वे शाळावाळा घरना बावन (एकसो वावन) जेद थाय है श्रमे त्रण शाळावाळा घरना बोंतेर (एकसो बोंतेर) जेद थाय है."

हवे वास्तुमां चंद्रनुं बळ कहे हे.—
प्रारब्धं संमुखे चन्द्र न वस्तुं वास्तु कहपते ।
पृष्ठस्थे खात्रपाताय द्वयोस्तेन त्यजेजृही ॥ ९४ ॥

अर्थ—सन्मुख चंद्रने विषे आरंजेलुं वास्तु (घर) वसवा (रहेवा)ने खायक नथी, तथा चंद्र पाठळ उते आरंजेलुं वास्तु खातर पामवा माटे हे, तेथी घरधणीए ते बन्ने चंद्रनो त्याग करवो.

परिघ चक्रनी जेम कृत्तिकाथी आरंजीने सात सात नक्ष्त्रों चारे दिशामां स्थापन करवां. पठी घरनुं जे जनमनक्ष्त्र आवतुं होय ते विचार बुं. तेमां जो ते नक्ष्त्र घरना दारनी दिशामां आवे तो ते घरनी सन्मुख चंद्र छे एम जाए बुं. ते सन्मुख अथे खो चंद्र अशुज हे, कार ए के घरना आरंजमां चंद्र सन्मुख रहे खो होय तो घर करावनार नो तेमां निवास खतो नथी. तथा जो चंद्र पाछळनी जीतनी दिशाए होय तो ते चंद्र घरनी पाछळ हे एम जाए बुं. ते पए अशुज हे, कार ए के घरना आरंजव खते चंद्र पाछळ रह्यो होय तो ते घरमां चोरो घए खातरो पामे हो, परंतु जो बन्ने बाजुनी जीतनी दिशाए चंद्र आवतो होय तो ते सारो हो. अहीं विशेष ए हे जे-प्रासादने विषे सन्मुख चंद्र शुजने माटे हो. ते विषे वास्तुशास्त्रमां कहां हो के—

"प्रासादनृपसौधश्रीगृहेषु पुरतः शशी।"

"प्रासाद (चैत्य), राजमहेख अने खहमीनां घरोने विषे सन्मुख चंत्र सारो हे." आ कारणथीज मूळ श्लोकमां गृही शब्द ब्रख्यों हे.

॥ इति चन्द्रबखम् ॥

प्रीति पराष्ट्रक विगेरे राशिबळ पण तत्त्वथी चंद्रबळज हे. तारानुं वळ श्रहीं जूड़ं कह्यं नश्री, परंतु नक्त्रो कहेवाथी ते ताराबळ पण सारी रीते जणायुं होवाथी सूचवन कर्युं जे एम जाण्वुं ते छा रीते-गुरु शिष्यनी जेम छाहीं पण त्रीजी, पांचमी छाने सातमी तारा तजवा खायक के मात्र त्यां गुरु शिष्यनी परस्पर ताराख्यो गणाय के, छाने छाहीं तो घरधणीनी ताराखी घरनी तारा सुधी गणवानुं के, कारण के घरधणीनीज प्रीति इष्ट (वांकित) के ते विषे सारंग कहे के के—

"गण्येत् स्वामिनक्त्राद्याविद्यष्यं गृहस्य च ।
नवित्रस्तु हरेद्रागं शेषं तारा प्रकीर्तिता ॥ १ ॥
शान्ता १ मनोरमा २ ऋरा ३ विजया ४ कलहोद्रवा ५ ।
पद्मिनी ६ राक्सी ७ वीरा ए स्रानन्दा ए चेति तारकाः ॥ २ ॥"

"घरस्वामीना नक्षत्रथी घरना नक्षत्र सुधी गणवुं, जे संख्या आवे तेने नवे जाग खेवो. जे आंक रोष रहे तेटलामी तारा कहेली के ते ताराओनां नाम आ प्रमाणे-शांता १, मनोरमा २, कूरा ३, विजया ४, कलहोद्जवा (कलह जत्पन्न करनारी) ५, पिंद्रानी ६, राक्सी ७, वीरा ०, अने आनंदा ए, आ ताराजं पोतानां नामनी सहश फळ आपनारी के."

हवे आयादिकनुं जदाहरण आपे छे.—जेम कोइ घरनी खंबाइ सात हाथ अने नव आंगळनी होय तथा पहोळाइ पांच हाथ अने सात आंगळनी होय. अहीं बन्ने हस्तना आंकने आंगळ करवा छे, माटे चोवीशे गुणवा. पठी तेमां जपरना आंगुल जमेरवा. तेम करवाथी खंबाइ १९९ आंगळ थइ अने पहोळाइ १९९ आंगुल थइ. ए बन्ने आंकनो पर-स्पर गुणाकार करवाथी १९४९ए आंगळनुं हेन्नफळ थयुं. आ हेन्नफळने आठे जाग लेतां शेष ९ रहे छे, तेथी ते घरनो सातमो आय गज नामनो थयो. १.

हवे नक्तत्र कहे बे-केत्रफळ १२४७ए ने आवे गुणतां १७ए०३२ थया तेने सत्यावीशे जाग लेतां शेष १२ रह्या, तेथी ते घरनुं अश्विनीथी गणतां बारमुं नक्तत्र जत्तराफाहगुनी थयुं. हवे ते घर कहपनाए करीने पूर्वाजिमुख बे, तेथी जत्तराफाहगुनी नक्तत्र दक्षिण बाजुनी जींते आववाथी ते सारुं बे. २.

हवे तेनो न्यय आ प्रमाणे हे. नक्त्रनो आंक बारनो है. तेने आहे जागतां शेष चार रहे है. चोथो न्यय श्रेयान नामनो है, ते शुज है. ३.

तेनो श्रंश श्रा प्रमाणे हे.-ते घरनुं कहपनाए करीने ध्रुव नाम हे, तेथी तेमां वे श्रक्तर हे श्रने व्ययनी संख्या चारनी हे, ते बन्ने श्रांक क्षेत्रफळमां जमेरवाशी १२४०५ श्राय हे. तेने त्रणे जाग दोतां शेषमां शून्य रहे हे, तेथी राजा नामनो श्रंश श्रयो, ते शुज हे. ध.

ते घरनुं चंड्वळ नक्त्र कहेवाने अवसरे कही दीधुं हे ५, राशिबळ आगळ छपर कहेशे, अने तारावळ आ प्रमाणे हे.—घरधणीनुं जनमनक्त्र कहपनाए करीने धनिष्ठा हे, माटे धनिष्ठाथी गणतां उत्तराफाहगुनी आहमी तारा थइ. ६.

हवे वास्तुनो प्रारंत्र करवाना महीनात्रो कहे हे.— वैशाखे श्रावणे मार्गे पौषे फाल्युन एव च । कुर्वीत वास्तुप्रारंत्रं न तु शेषेषु सप्तसु ॥ ७५॥

अर्थ—वैशाख, आवण, मार्गशिर्ष, पोष अने फाहगुन मासमां वास्तुनो आरंज करवो, पण बीजा सात मासमां आरंज करवो नहीं। वास्तुनो आरंज एटले सूत्रपात (दोरी नाखबी ते) तथा खात मुहूर्त्त विगेरे कार्य जाणवुं.

दैवज्ञवद्वज्ञमां घरना आरंज विषे मासना फळने आ प्रमाणे कहे हे.—
"शोकं १ धान्यं २ मृत्युदं ३ पश्चतां ४ च,
स्वाप्तिं ५ नैःस्व्यं ६ संगरं ७ वित्तनाशम् ए ।
स्वं ए श्रीप्राप्तिं १० विद्वजीतिं ११ च खदमीं १२,
कुर्युश्चेत्राद्या गृहारंजकाले ॥"

"चैत्र मासमां घर चणाववानो आरंज कर्यो होय तो ते शोक करावे हे १, वैशाख मास धान्यवृद्धि करे हे ६, ज्येष्ठ मास मृत्युने आपे हे ३, अपाम मास पण मृत्युने करे हे ४, श्रावण मास धननी प्राप्ति करावे हे ५, जाइपद मास निर्धनपणुं करे हे ६, आश्विन मास युद्ध करावे हे ५, कार्तिक मास धननो नाश करे हे ७, मार्गशीर्प मास धन प्राप्त करे हे ए, पोष मास पण धननी प्राप्ति करे हे १०, माघ मास अग्निनो जय करे हे ११, तथा फाहगुन मास खदमी प्राप्त करे हे १२." अहीं सर्वे मासो चांइ एटले शुक्ल प्रति-पदाथी आरंजीने जाणवा

हवे घरना आरंजमां संक्रांतिए करीने युक्त एवा सूर्यमासो कहे हे. धामारजेतोत्तरदक्तिणास्यं, तुलालिमेषर्पज्ञाजि जानौ । प्राकृपश्चिमास्यं मृगकुंजकर्कसिंहस्थिते द्वांगगते न किश्चित्॥ ७६॥

अर्थ—तुला, वृश्चिक, मेष अने वृष ए चार संकांतिमां उत्तर घारतुं के दिश्ण घारतुं घर शरु करतुं. मकर, कुंच, कर्क अने सिंह ए चार संकांतिमां पूर्व के पश्चिम घारवाळुं घर शरु करतुं. तथा घिस्वजाव राशि एटले मिश्चन, कन्या, धन अने मीन ए चार संकांितिमां कोइ पण घरनो आरंज करवो नहीं, एटले के चारे दिशानां घारवाळुं पण घर शरु करतुं नहीं.

नारचंदनी टिप्पणीमां तो आ प्रमाणे लख्युं छे.—"मेष, धन अने सिंह ए त्रण संकां-तिमां पूर्व मुखवाळा घरनो आरंज करवाथी राजानो जय थाय छे, वृष, कन्या अने मकर संक्रांतिमां दक्षिणाजिमुखवाळा घरनो आरंज करवाथी पुत्रादिकनुं मुत्यु थाय छे. मिथुन, लुदा अने कुंज संक्रांतिमां पश्चिम घारवाळुं घर शरु करवाथी संताप विगेरे छत्पन्न थाय हे. तथा कर्क, वृश्चिक अने मीन संक्रांतिमां जत्तर घारवाळुं घर करवाथी कुळनो इय थाय हे."

> हवे कइ दिशामां प्रथम लोदवानो आरंज करवो १ ते कहे हे.— जाडादित्रित्रिमासेषु पूर्वादिषु चतुर्दिशम् । जवेद्वास्तोः शिरः पृष्ठं पुष्ठं कुद्दिरित क्रमात् ॥ ९९ ॥

अर्थ-नाइपदादिक त्रण त्रण मासने विषे पूर्वादिक चार दिशाए अनुक्रमे वास्तुनं

शिर, पृष्ठ (पीठ), पृञ्च अने कुहि (पेट) होय हे.

श्रहीं वास्तु पुरुष जमणा श्रंगने दबावीने (जमणे पमले) सुतेखों नागने आकारे रहेखों हो. तेमां जाजपद, श्राश्विन अने कार्तिक मासमां ते वास्तुनुं मस्तक पूर्व दिशामां हो, दिशा दिशामां पृष्ठ हो, पश्चिम दिशामां पृष्ठ हो अने उत्तर दिशामां कुछि हो. मार्ग-शिष्, पोष श्रने माघ मासमां दिशण दिशाए मस्तक, पश्चिम दिशाए पृष्ठ, उत्तर दिशाए पृष्ठ अने पूर्व दिशाए कुछि होय हो. फाहगुन, चैत्र श्रने वैशाल मासमां पश्चिम दिशाए शिर, उत्तर दिशाए पृष्ठ, पूर्व दिशाए पृष्ठ अने दिशाए दिशाए कुछि होय हो. ज्येष्ठ, श्राम अने श्रावण मासमां उत्तर दिशाए शिर, पूर्व दिशाए पृष्ठ दिशाए पृष्ठ अने पश्चिम दिशाए पृष्ठ अने पश्चिम दिशाए कुछि होय हो. तात्पर्य ए हे जे कुछिने विषेज प्रथम खोदवानो श्रारंज करवो. बीजी दिशामां करवो नहीं. ते विषे दैवज्ञवञ्चलमां कहां हे के—

"शिरः खनेन्मातृपितृन्निह्न्यात्, खनेच पृष्ठे जयरोगपीनाः। पृष्ठं खनेत् स्त्रीशुजगोत्रहानिः, स्त्रीपुत्ररलान्नवसूनि कुद्दौ॥"

"जो प्रथम वास्तुनुं शिर खोदे तो माता पितानो नाश थाय, पृष्ठ खोदे तो जय, रोग अने पीना थाय, पृष्ठ खोदे तो स्त्री, गुज अने गोत्रनी (कुळनी) हानि (नाश) थाय, अने कुहिए खोदे तो स्त्री, पुत्र, रत्न, अन्न अने धननी प्राप्ति थाय." केटलाक आ वास्तुने ठेकाणे वत्स एवं पण नाम कहे हे. आ वास्तुना अंग तथा दिशाना कहेवाए करीने खात विगेरेनी दिशानो नियम कह्यो, पण विदिशानो नियम वास्तुशास्त्रमां आ प्रमाणे कह्यो हे.—

''ईशानादिषु कोणेषु वृषादीनां त्रिके त्रिके । शेषाहेराननं त्याज्यं त्रिखोमेन प्रसर्पतः ॥''

"वृषादिक त्रण त्रण संक्रांतिए ईशानादिक खूणाने विषे विखोम (छखटा)पणाए करीने चाखता शेषनागनुं मुख त्याग करवा खायक हे. अर्थात् विखोमपणाए करीने शेषनाग त्रण त्रण मासे फरे हे, तेथी ज्यारे तेनुं मुख त्रण मास (वैशाख, ज्येष्ठ, अपाम) सुधी ईशानमां होय हे त्यारे श्रिप्त खूणामां त्रण मास सुधी नाजि होय हे, नैर्फल्यमां त्रण मास सुधी पृष्ठ होय हे, श्रमे वायव्य खूणो खादी होय हे. ते खादी खूणो खात विगेरेमां श्रेष्ठ हे. ज्यारे बीजा त्रण मास सुधी वायव्यमां मुख होय हे त्यारे ईशानमां नाजि, श्रिप्तमां पृष्ठ अने नैर्फल्य खादी होय हे. ए प्रमाणे विद्योमपणाए करीने शेषनाग फरे हे. तेमां वृषादिक त्रण संकांति सुधी ईशानमां मुख होय हे, सिंहादिक त्रण संकांति सुधी वायव्यमां मुख होय हे, वृश्चिक विगेरे त्रण संकांति सुधी नैर्फल्यमां मुख होय हे, तथा कुंजादिक त्रण संकांति सुधी श्रिप्तमां मुख होय हे. ए प्रमाणे—

"विदिक्त्रयं स्पृशँस्तिष्ठेत् स्ववक्त्रनाजिपुञ्जकैः। शेषस्तित्रतयं त्यक्त्वा जूखातकार्यमाचरेत्॥ नाजौ च चियते जार्या धनं पुद्वे मुखे पतिः। इति मत्वा शिखान्यासे जूखाते तत्रयं त्यजेत्॥"

"शेषनाग पोतानां मुख, नाजि अने पुछे करीने त्रण विदिशानो स्पर्श करीने रहे हो, तेथी ते त्रणेनो त्याग करीने पृथ्वीनुं खातकर्म करतुं, केमके ते शेषनी नाजिमां खातकर्म करवाथी घरधणीनी स्त्री मरण पामे हो, पुछमां खोदवाथी धननो नाश थाय हो, अने मुखे खोदवाथी घरधणी मरण पामे हो, आ प्रमाणे जाणीने जूखातने विषे शिक्षास्थापन करती वखते ते त्रणे अवयवोनो त्याग करवो."

हवे आयादिक कहेवानुं तात्पर्य कहे हे.-

समाधिकव्ययं कर्तुः समनाम यमांशकम् । विरुद्धराशितारं च विनाऽन्यद्धेशम शोजनम् ॥ ७७॥

अर्थ-सम अथवा अधिक व्ययवाळुं, कर्तीनी समान नामवाळुं, यम अंशवाळुं तथा विरुद्ध राशि अने तारावाळुं घर मूकीने वीजुं घर सारुं हे

जे घरमां श्रायनी समान (जेटलो) अथवा अधिक व्यय श्रावतो होय तो ते घर त्याग करवा लायक हे. ए रीते सर्वत्र जाण्वुं. श्राम कहेवाथी व्यय करतां श्राय श्रधिक होय तो ते श्रेष्ठ हे, एम जाण्वुं. ते श्राय पण विषम (एकी) होय तो ते स्थिर होवाथी श्रात श्रेष्ठ हे. ते विषे लक्ष कहे हे के—''कुर्यात् स्थिराधिकायं स्वयोनिन्नं शुद्धतारांशम्"। "स्थिर श्रने श्रधिक श्रायवालुं पोतानी योनिना नक्त्रवालुं तथा शुद्ध तारा श्रने श्रंश-वालुं घर करवुं." तथा जे घरनुं नाम एटले तेना श्रक्षरो कर्ताना नामनी तुह्य होय ते घर पण त्याग करवा लायक हे. जे घरमां यमना श्रंशनी जत्यित सती होय, जे घरनी राशिनी साथे घरधणीनी राशिनुं शश्रु षमाष्टक के वीयाबारमुं जत्यन्न थतुं होय, तथा जे घरनी तारा घरधणीनी ताराशी त्रीजी, पांचमी के सातमी होय, तेमज मूळ श्लोकमां च शब्द लख्यो है, माटे जे घरनुं नक्त्र राक्सगणमां होय अथवा तो घरधणीना नक् त्रनी योनि साथे विरुद्ध के बळवान् योनिवाळुं होय तो आ सर्व जातनुं घर तजवा लायक है. ते विषे लक्ष कहे हे के—

> "आयविरुष्टे ज्ञवने न सुखं षमष्टके स्थिते मरणम्। न धनं दिदादशके नवपश्चमके त्वपत्यमृतिः ॥ १ ॥ निधनं सप्तमतारे पञ्चमतारे च तेजसो हानिः। विपदस्तृतीयतारे यमांशके गृहपतेर्मृत्युः॥ २ ॥"

"आये करीने विरुद्ध घर होय तो वसनारने सुख उपजे नहीं, षमाष्टक होय तो मरण थाय, बीयाबारमुं होय तो धननो नाश थाय, नव पंचम होय तो पुत्रनुं मरण थाय, सातमी तारा होय तो घरधणीनुं मरण थाय, पांचमी तारा होय तो तेजनी हानि थाय, त्रीजी तारा होय तो विपत्ति आवे अने यमांश होय तो गृहपतिनुं मरण थाय." आहीं नामीवेध होय तो ते श्रेष्ठज हे, केमके नामीवेध होय तो योनिनी विरुद्धता विगेरे दोषोनी पण अड्ष्टिता संजवे हे.

श्रहीं कोइ शंका करे के-जे घरमां वे पादनुं के त्रण पादनुं नक्त्र होय त्यां घरनी राशि शी रीते जाणवी ? श्रने राशि जणाया विना पनाष्टक विगेरेनो विचार शी रीते श्राय ? श्रानो जवाव ए छे जे-ते वखते नक्त्रनो पाद खाववो परे छे. तेनी रीत श्रा प्रमाणे ब्यवहारप्रकाशमां कही छे.—

"क्षेत्रफले रद ३२ गुणिते जक्ते वस्वज्रज्ञिनिः १०० शेषात् । च्येकान्नविज्ञः शेषं पादो लब्धं वृषाज्ञगणः ॥"

"क्षेत्रफळने बत्रीशे गुणी एक सो ने आठे जाग लेवो, जे शेप रहे तेमांथी एक उठो करी तेने नवे जाग देवो. तेमां शेप रहे ते पाद अने जागमां जे आवे ते (तेटलामो) वृष राशिथी राशि समजवो." दृषांत तरीके कहेला घरनुं नक्षत्र उत्तराफाहगुनी त्रण पादवाळुं ठे, तेथी तेमांज आनो जावार्थ जावीए—प्रथम आणेलुं क्षेत्रफळ ११४७ए छे, तेने बत्रीशे गुणीए त्यारे ११ए३१० थाय. तेने एकसो ने आठे जागतां शेप ४० रहे ठे, तेमांथी एक उठो करतां ४९ थाय. तेने नवे जाग देतां जागमां पांच आव्या, माटे वृष राशिथी पांचमी राशि कन्या छे. वाकी वे वध्या, माटे उत्तराफाहगुनी नक्षत्रनो बीजो पाद ते घरनो आव्यो. हवे घरधणीनो जन्म धनिष्ठाना उत्तराफाहगुनी नक्षत्रनो जन्मराशि कुंज थइ. ते कुंज राशि विषम (एकी) छे, तेथी कुंजथी गणतां कन्या राशि आठमी थइ,माटे ते प्रीति पमाष्टक थयुं, केमके "ओजात्स्यादष्टमे प्रीतिः" विषम राशिथी आठमी राशिवाळा साथे प्रीति षमाष्टक थाय छे." एम प्रथम कही गया छे.

हवे ब्राह्मणदिक वर्णीने छाश्रीने घरना छाय तथा मुख (दार)नी व्यवस्था कहे छे.— क्रमाद्विप्रादिवर्णानां विषमायैर्ध्वजादिजिः ।

धीमिक्किधीम निर्दिष्टं प्रतीच्यादिमुखं क्रमात् ॥ उए ॥

अर्थ—ब्राह्मणदिक चार वर्णीने अनुक्रमे विषम एवा ध्वजादिक आये करीने अनुक्रमें पश्चिम विगरे दिशाना धारवालुं घर पंमितोए कहेलुं हो, एटले के ब्राह्मणे ध्वज आयवालुं पश्चिम धारवालुं घर करवुं, केमके ध्वज पूर्व दिशामां रहेलो हो, अने तेथी पश्चिमाजिमुल धार होवाथी ते ध्वज ब्राह्मणने प्रवेश करती वलते सन्मुल रहेलो हो, तेथी ते शुजने माटे हो. एज प्रमाणे सिंहना आयने विषे छत्तराजिमुल धारवालुं राजाए घर करवुं, कारण के सिंह दक्षिण दिशामां रहेलो होवाथी प्रवेश करतां सन्मुल आय, माटे ते शुज हो. एज प्रमाणे बीजालंने विषे पण जाणवुं, एटले के वैश्योए वृषना आय-वालुं पूर्वाजिमुल धारवालुं घर करवुं, अने शुष्ठीए गजना आयवालुं दिशाणिजिमुल धारवालुं करवुं.

्ह्वे आयादिकनो अपवाद कहे हे. (एटले के कये हेकाणे आयादिक न खेवा

ते कहे है.)-

ये ग्रहेऽबिन्दनिर्यूहनिर्गमायाश्रतुर्दिशम्।

न तेष्वायादिकं योज्यं बाह्यजूषासु वास्तुनः ॥ ए० ॥

अर्थ—घरने विषे जे अदिंद (ओंशरी, परसाळ विगेरे नाना खंम), निर्यूह एटखे जीत विगेरेनी बहार नीकळेख काछ विशेष एटखे मर्दछक विगेरे, निर्गम एटखे दरवाजो धार विगेरे, तथा श्लोकमां आदि शब्द हे माटे प्रशीव एटखे फरुखा, गोंख विगेरे जाएवा. आ सर्वे वास्तुनी वहार शोजारूप होवाथी तेर्जने विषे आयादिक प्रहण करवा नहीं.

हवे सूत्रपात विगेरेनुं मुहूर्त कहे हे --

सूत्रस्य सिद्धिवेसुनायहस्तमेत्रस्थिरसातिशतर्कपुष्यैः।

न्यासः शिलायाः करपुष्यमार्गपौष्णध्रुवेषु अवणे च शस्तः ॥ ए१ ॥ अर्थ—धनिष्ठा, इस्त, मैत्र (चित्रा, अनुराधा, रेवती, मृगशिर), स्थिर (रोहिणी, जसरापाढा, जसराफाहगुनी, जसराजाइपद), स्वाति, शततारका अने पुष्य एटलां नक्तत्रोए करीने सूत्रनी सिक्ति थाय हे, एटले के ते नक्त्रोमां सूत्रपात करवो. तथा शिलानं स्थापन इस्त, पुष्य, मृगशिर, रेवती, ध्रुव (रोहिणी, त्रण जसरा) अने अवण एटलां नक्त्रोमां प्रशस्त हे.

१ खीळीओ.

अ० इ४

तिथि तथा वारनी शुक्ति तो रिक्ता विगेरेनो त्याग करवाथी स्पष्टज हे. ते विपे ब्रह्मशंजुटीकामां कहां हे के—

"एकादशी दितीया पञ्चमी सप्तमी तृतीया च । प्रतिपद्दशमी चेष्टा त्रयोदशी पौर्णमासी च ॥ सूर्येन्फ्जीवसौम्यानां जार्गवस्य च वासरे । सूत्रपातादिकं कार्यं निष्पत्तिमजिवाञ्चता ॥"

"श्रागीयारश, बीज, पांचम, सातम, त्रीज, पमवो, दशम, तेरश श्राने पूनम तथा रिववार, सोमवार, गुरुवार, बुधवार श्राने शुक्रवार श्राटक्षा तिश्रि वारे समृद्धिने इञ्चता पुरुषे सूत्रपातादिक कार्य करतुं."

हवे घरना आरंजमां लग्नवळ कहे हे.— चराद्न्यत्र लग्नेन्छोः शुजैः संयुक्तदृष्टयोः । कर्म १० स्थितेषु सौम्येषु गेहारंजः शुजावहः ॥ ७१ ॥

श्रर्थ— सन्न तथा चंद्र चर थकी अन्यत्र स्थाने होय एटले के स्थिर श्रयवा दिस्वजाव-वालुं सन्न होय श्रने चंद्र पए स्थिर श्रथवा दिस्वजाववाली राशिमां रह्यो होय, तथा ते बन्ने शुज ब्रहोए युक्त श्रयवा तेना पर शुज ब्रहोनी दृष्टि पमती होय, तथा सौमैय ब्रहों कर्म एटले दशमें स्थाने रह्या होय तो ते वसते घरनों श्रारंज शुजकारक है.

केन्डित्रकोणगैः सौम्यैः कूरैः शत्रुत्रिलाजगैः। ग्रुजाय जवनारंजोऽष्टमः कूरस्तु मृत्यवे॥ ए३॥

छार्य—केन्डस्थाने (पहेले, चोथे, सातमे छाने दशमे स्थाने) तथा त्रिकोणमां (नवमे तथा पांचमे स्थाने) सौम्य घहो रह्या होय, छाने कूर घहो ठें , जीजे के छागीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते वखते घरनो छारंज करवो शुज ठे, परंतु कोई पण कूर घह छाठमे स्थाने रह्यो होय तो घरधणीना मृत्युने माटे ठे.

अहीं आटलो विशेष दैवज्ञवद्यनमां कह्यो हे.—
"गुरुर्लग्ने जले शुक्रः स्मरे इः सहजे कुजः।
रिपौ नानुर्यदा वर्षशतायुः स्याद्वहं तदा ॥ १ ॥"

"गृहना आरंजसमये जो जन्मां गुरु होय, जळ (१०) स्थाने शुक्र होय, स्मर (७) स्थाने बुध होय, सहज (३) स्थाने मंगळ होय अने शत्र (६) स्थाने सूर्य होय तो ते घर सो वर्षना आयुष्यवाळुं आय हे."

१ यूष, सिंह, वृश्चिक अने कुंभ. २ मिथुन, कन्या, धन अने मीन. ३ चंद्र, बुध, गुरु अने शुक्त. ४ शनि, रवि अने मंगळ.

"सितो लग्ने गुरुः केन्डे खे बुधो रविरायगः। निवेशे यस्य तस्यायुर्वेश्मनः शरदां शतम् ॥ २ ॥"

"जे घरना आरंजे लग्नमां शुक्र होय, केंद्रमां गुरु होय, दशमे स्थाने बुध होय अने आय एटले अगीयारमे स्थाने रहेलो रिव होय तो ते घरनुं आयुष्य सो शरद्कतु सुधी (सो वर्षनुं) आय हे."

''त्रिशत्रुसुतत्रस्थः सूर्यारेज्यसितैर्जवेत् ।

प्रारंजः सद्मनो यस्य तस्यायुर्दे समाशते ॥ ३ ॥"

"त्रीजे स्थाने सूर्य होय, उठे स्थाने मंगळ, पांचमे स्थाने गुरु अने खग्नमां शुक्र रहेखों होय ते वखते जे घरनो आरंज कर्यों होय ते घरनुं आयुष्य बसो वर्षनुं शाय हे."

"व्योन्नि चन्दः सुसे जीवो खाने नौमशनैश्वरौ ।

यस्य धाम्नः समाज्ञीतिं स्थितिस्तस्य श्रिया युता ॥ ४॥"

"जे घरना प्रारंजवलते दशमे स्थाने चंद्र होय, सुल (४) स्थाने गुरु होय तथा साज (११) स्थाने मंगळ अने शनि होय तो ते घरनी स्थिति खझी सहित एंशी वर्ष सुधी रहे हे."

"स्वोचस्थे लग्नगे शुक्रे १ हिवुकस्थेऽथवा गुरी २। स्वोच्चे मन्देऽथवा लाजे ३ धाम्नः सश्रीः स्थितिश्चिरम्॥ ५॥"

"जे घरना प्रारंत्रवखते शुक्र पोताना जच स्थाननो अइने खप्तमां रह्यो होय, अथवा गुरु हिंबुक (४) स्थाने रह्यो होय, अथवा शनि जच स्थाननो अइने खात्र (११) स्थाने रह्यो होय तो ते घरनी स्थिति खक्की सहित चिर काळ रहे हे एटखे अभित स्थिति होय है."

जे ह्या विशेषो गृहारंजना लग्नमां कहेवाय है ते जिनालय विगेरेना प्रारंजना लग्नने

विषे पण जाणवा. तथा—

"स्वर्के चन्छे विसमस्ये जीवे कंटकवर्तिनि । ज्ञवेसक्षीयुते धाम्नि जूरिकासमवस्थितिः ॥ ६ ॥"

"जे घरना प्रारंत्रे चंड पोताना नक्त्रमां रहीने खग्ने रह्यो होय, तथा गुरु कंटक (१-४-९-१०) स्थाने रह्यो होय तो ते घर खड़्यी युक्त थाय हे, तथा तेमां चिर काळ स्थिति श्राय हे. श्रर्थात् तेमां रहेनाराउं चिर काळ सुधी रहे हे."

"स्विमित्रोच्चगृहांशस्थैसांध्रयाश्चिरमासते । खगैरन्यगतैरन्ये नीचगैश्चापि निर्धनाः॥ ॥॥"

"धरना प्रारंत्रसमये प्रहो पोतानां स्थानमां, मित्रना स्थानमां तथा उच्च स्थानमां खने वळी पोताना खांशमां, मित्रना खांशमां तथा उच्च खांशमां रह्या होय तो तेमां ते

धरधाषीना वंशजो चिर काळ रहे छे, छाने जो तेथी छान्य स्थानोमां रह्या होय तो ते धरधाषीना वंशजोधी वीजा जनो चिर काळ तेमां रहे छे, पण जो घहो नीच स्थानमां रह्या होय तो तेमां वसनारार्छ निर्धन रहे छे.''

> "श्चनस्तर्गैः सितेज्येन्डजन्मराशिविखश्नपैः । स्वोचस्वदेत्रजागस्यैर्जवेद्यीसौरुयदं गृहम् ॥ ० ॥"

"गुक्र, गुरु, चंद्र, जन्मनो स्वामी, राशिनो स्वामी अने लग्ननो स्वामी आटला ग्रहो अस्त पामेला न होयं तथा पोतानां जच स्थाने, पोतानां देत्रमां अने पोताना अंशमां रहेला होय तो ते घर लक्की तथा सुलने आपनारुं थाय हे."

"गृहिणीन्दौ गृहस्थोऽर्के गुरौ सौख्यं सिते धनम् । विवले नाशमायाति नीचगेऽस्तंगतेऽपि च ॥ ए ॥"

"घरना प्रारंत्रसमये चंड निर्वळ होय, नीच स्थाने रह्यो होय अथवा अस्त पाम्यो होय तो घरधणीनी स्त्री नाश पामे हे. एज रीते सूर्य निर्वळ, नीच के अस्त होय तो घरधणी नाश पामे हे. गुरु निर्वळ, नीच के अस्त होय तो सुखनो नाश आय हे अने शुक्र निर्वळ, नीच के अस्त होय तो धननो नाश थाय हे."

श्रा प्रमाणे दैवज्ञवक्षजमां कह्यं हो. तथा—

"गृहेषु यो विधिः कार्यो निवेशनप्रवेशयोः।

स एव विश्वषा कार्यो देवतायतनेष्विष ॥ १॥"

"घरनुं स्थापन करवानो तथा तेमां प्रवेश करवानो जे विधि कहेलो हे तेज विधि विदाने देवालयोने विषे पण करवो (कहेवो-जाणवो.)" एम व्यवहारप्रकाशमां कहां हे.

लग्नने विषे दोपने कहे हे.-

वर्णेशो डुर्बेसः कुर्यादावर्षाद्रन्यहस्तगम्।

एकोऽपि चून ७ कर्म २० स्थः परांशे स्थाचिद महः॥ ७४॥

अर्थ—जो वर्णनो स्वामी छुर्वळ होय तथा सातमा अने दशमा स्थानमां रहेलो एक पण बह जो बीजाना नवांशमां होय तो ते घर एक वर्षमां बीजा घणीने हाथ जाय. अहीं श्लोकना उत्तरार्धमां कहेलो एकलोज योग होय तो कहेलुं फळ अनेकांत (अनिश्चित) जाणबुं अने पूर्वार्धमां कहेलो योग होय तो अवस्य फळ मळे एय जाणबुं, पण बन्ने योगो अन्य बहुना नवांशमां रह्या होय तो जलदीथी घरनो नाश थाय हे.

यात्रा करीने पाठा वळेखा राजादिकनो सामान्य रीते घर प्रवेश अथवा नवा घरमां प्रवेश करवानो विधि कहे हे.—

यहप्रवेशं सुविनीतवेषः, सौम्येऽयने वासरपूर्वजागे । कुर्याद्विधायालयदेवताचाँ, कल्याणधीर्जूतबलिकियां च ॥ ए५ ॥

अर्थ—सारो विनयवाळो वेष धारण करीने कह्याणबुद्धिवाळा राजादिके सौम्य अयनमां दिवसना पहेखा जागने विषे गृहदेवतानी पूजा तथा जूतने बिखदाननी किया करीने गृहप्रवेश करवो.

अहीं सारो विनयवाळो वेप धारण करवी एटले के अति जस्त वेष न करवी, पण पवित्र अने जिन्त वेष पहेरवी, सौम्य अयन एटले जत्तरायण जाणवुं, ते विषे कहां है के—

''सौम्येऽयने कर्म शुन्नं विधेयं, यन्नहिंतं तत्खलु दक्षिणे च"।

सौम्य अयन एटले जत्तरायणमां शुन कार्य करतुं, अने जे निंदित कार्य हे ते दिल-णायनमां करतुं. अहीं शुन कार्यमां पण आटलो विशेष हे.—

"मासादिसंख्यानियतं सीमन्तोन्नयनादिकम् । याम्यायनादौ तत्सर्वे क्रियमाणं न छुष्यति ॥ १ ॥"

"जे शुन्न कार्यमां मासादिकनी संख्यानोज नियम करेखो होय एवां सीमंत विगेरे सर्व कार्यो दिक्तणायनादिकमां करवाथी पण दोप नथी" एम त्रिविकम कहे हे. श्रहीं याम्यादी—दिक्तणायनादिकमां ए हेकाणे श्रादि शब्द खखेखो हे तेथी श्रिधिक मास तथा क्षय मास पण श्रादां कार्योमां निंद्य नथी एम जाणवुं.

मूळ श्लोकमां दिवसनो पहेलो जाग कह्यो है. तेनो छर्थ चढते दिवसे जासवो गृह-देवतानी पूजा एटले वास्तुशास्त्रमां कहेली वास्तुनी पूजा. जूतवळिदान एटले दिशार्ड तथा विदिशार्डमां जूतने बळिदान छापबुं ते. कह्यासबुद्धिवाळा एटले के गृहप्रवेश-समये चित्तमां सद्बुद्धि राखवी.

गृहप्रवेशमां वार तथा नक्त्रनो नियम कहे हे.—
प्रविशेष्ठेरम वारेषु हित्वार्कक्तितनन्दमौ ।
जैश्च पुष्यश्चवस्वातिधनिष्ठामृङ्घवारुणैः ॥ ए६ ॥
विधाय वामतः सूर्यं पूर्णकुंजपुरस्मरः ।
गृहं यहिङ्मुलं तहिगुद्धारिष्ठण्थे विशेषतः ॥ ए९ ॥

श्रर्थ—रिववार तथा मंगळवारने वर्जीने वीजा वारोमां पुष्य, ध्रुव संज्ञावाळा (रोहिणी श्रने त्रण उत्तरा), स्वाति, धनिष्ठा, मृड संज्ञावाळा (मृगिशिर, चित्रा, श्रनु-राधा श्रने रेवती) तथा शतिषक् एटलां नज्ञत्रोमां सूर्यने मावी वाजु राखीने पूर्ण कुंत्र सहित घरमां प्रवेश करवो. तेमां पण जे दिशाना मुखवाळुं घर होय ते दिशाना घरनुं नज्ञत्र होय तो ते विशेष शुत्र हो. श्रहीं प्रवेश करती वखते गोचर अने अष्टक वर्गनी विधिए करीने चंद्र अनुकूळ होय, रिक्ता तिथि न होय तथा विष्कंजादिक कुयोग न होय ए पोतानी मेळे जाणी खेबुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कहुं हे के—

"तारेन्घोर्वेखकाखे तिथावरिक्तेऽह्वि शुन्नदस्य।"

"तारा अने चंद्रनुं बळ होय त्यारे रिक्ताने वर्जीने बीजी तिथिमां अने शुप्रदायक दिवसे गृहप्रवेश करवो."

मूळ श्लोकमां रिव अने मंगळने वर्जवानुं कारण ए हे के ते बन्ने वारो रोग तथा रक्त प्रकोपने करनारा है. वर्ज्य नक्त्रनुं फळ दैवज्ञवक्षत्रमां आ प्रमाणे कह्यं हे.—

"विशाखासु राज्ञी सुतो दारुणेयु, प्रणाशं प्रयात्युयनेषु हितीशः।

गृहं दहाते विह्ना विह्निधिष्ये, चरैः क्षिप्रधिष्पेश्च जूयोऽपि यात्रा ॥ १॥"

"विशाखामां गृहप्रवेश करवाथी राणीनो नाश थाय, दारुण नक्त्रोमां प्रवेश करवाथी पुत्रनो नाश थाय, जय नक्त्रोमां प्रवेश करवाथी राजानो नाश थाय, श्रक्तिना नक्त्र (कृत्तिका) मां प्रवेश करवाथी ते घर श्रक्तिवमे वळी जाय, तथा चर श्रमे किप नक्ष्रोमां प्रवेश करवाथी फरी यात्रा करवी पमे हे."

मूळ श्लोकमां पूर्ण कुंज सहित प्रवेश करवानुं कहुं एटले के जळथी जरेला कळशोने (कळशवाळी स्त्रीजंने) स्त्रागळ करीने प्रवेश करवो. जे दिशाना मुखवाळुं घर होय एम जे कहुं तेनो स्त्रर्थ ए के-पूर्व दिशानी सन्मुख घर होय तो पूर्व धारवाळां कृत्तिकादिक सात नक्त्रों छे, माटे ते नक्त्रोमां प्रवेश करवानो स्त्रिधकार छे. तेथी करीने पूर्वे कहेला गुणवाळुं पण प्रवेशनुं नक्त्र जो घरनी सन्मुखनी दिशाना धारवाळुं होय तो ते ख्रात्यंत शुज जाएवं. विशेषमां लक्ष कहे छे के-

''सर्वमहैविमुक्तं प्रवेशनं शस्त्रते प्रयत्नेन । कैश्चित्सौम्यसमेतं शुजपदं कीर्तितं मुनिजिः॥ १॥"

"सर्व प्रहोने जोमीने प्रयत्नवमें जो प्रवेशनुं नक्षत्र खीधुं होय तो ते वखाणवा खायक जे. केटखाक मुनिष्ठं कहे जे के ते प्रवेशनुं नक्षत्र सौम्य (रिव, मंगळ श्राने शिन विर्तित) प्रहोए करीने सिहत होय तो ते शुप्तकारक जे."

नवा घरमां प्रवेश करवो होय तो शुक्रनुं सन्मुखपणुं तजवा योग्य हे. ते विषे त्रिवि-क्रमे कह्युं हे के—

"त्यजेत् कुतारां प्रस्थाने शुक्रज्ञौ गृहवेशके । यात्रासु च नवोडस्त्रीवर्ज संमुखदक्तिणौ ॥ १ ॥"

"प्रस्थान करती वखते कुताराने वर्जवी, नवीन विवाहेख स्त्रीने छोमीने बीजाने गृह-प्रवेशमां तथा यात्रामां सन्मुख के जमणी बाजुए रहेखा शुक्र श्राने बुधने तजवा."

हवे खन्नवळ कहे हे.— जन्मराशिविखग्नाच्यां प्रथमोपचयस्थितम् । खग्नं स्थिरं तदंशश्च प्रवेशे सिक्षरिष्यते ॥ ए० ॥

अर्थ—सत्पुरुषोए गृहप्रवेशने विषे जन्मनी राशिष्टी अने जन्मलग्नथी प्रथम तथा जपचयस्थानमां रहेलुं स्थिर लग्न तथा तेनो अंश (नवांश) इन्नेलो हे. अहीं प्रथम स्थान एटले जन्मराशि अने जन्मलग्नरूपज लग्न होय तो ते गृहप्रवेशमां प्रशस्य हे. ते विषे लग्न कहे हे के—

"स्वनक्त्रे स्वक्षप्ते वा स्वमुहूर्त्ते स्वके तियो । गृहप्रवेशमंगध्यं सर्वमेतत्तु कारयेत् ॥ १ ॥ क्कुरकर्म विवादं च यात्रां चैव न कारयेत् ।"

"पोताना (जन्मना) नक्त्रमां, पोताना खग्नमां, पोताना मुहूर्त्तमां अने पोतानी तिथिमां गृहप्रवेश तथा सर्व मांगितिक कार्य कराववां, परंतु क्रौर कर्म, विवाद तथा यात्रा ए त्रण कार्य कराववां नहीं." जन्मराशि अने जन्मलग्न थकी उपचयस्थानमां (३-६-१०-११) रहेलो पण राशि प्रशस्य हे. ते विषे लक्ष कहे है के—

"आरोग्यदो १ धनहरो २ धनदः ३ सुखन्नः ४, पुत्रान्तको ५ ऽरिगणहा ६ ऽत्र नितम्विनीन्नः ७ । प्राणान्तकृत् ७ पिटकदो ए ऽर्थ १० धनौष ११ जीदो १२, जन्मकृतसम्बद्धयाद्य विवासराज्ञिः ॥ १ ॥"

"जन्मना नक्षत्रश्री तथा तेना जदयथी लग्ननो राशि जो पहेले स्थाने होय तो आरोग्य आपे ठे, बीजे होय तो धननो नाश करे ठे, त्रीजे होय तो धनने आपे ठे, चोथे होय तो सुखनो नाश करे ठे, पांचमे होय तो पुत्रनो नाश करे, ठें होय तो शत्रुना समूहनो नाश करे, सातमे होय तो स्त्रीनो नाश करे, आठमे होय तो पोताना प्राण्नो नाश करे, नवमे होय तो व्याधि करे, दशमे होय तो धनने आपे, अगीयारमे होय तो धननो समूह आपे अने बारमे होय तो जयने आपे ठे."

मूळ श्लोकमां सामान्य रीते स्थिर खग्न कहां हो, तोपण ते स्थिर खग्न गामनुं खेतुं, पण श्ररप्यनुं खेतुं नहीं, एटखे के वृष के कुंज खग्नमां के तेना नवांशमां गृहप्रवेश करवो श्रेष्ठ हो, केमके ते वे खग्नज प्रहण करवा खायक (प्राम्य) हो मूळमां तेनो श्रंश कहाो हो ते साथे च शब्द खख्यो हो, माटे दिस्वजाववाळा खग्न तथा श्रंश (नवांश) गृह- प्रवेशमां इषित नथी, केमके चर खग्न तथा चर श्रंशनोज दोप कहाो हो ते विषे खन्न कहे हे के—

"पुनः प्रयाणं मेषे स्थान्मृत्युः कर्के तुले रुजः । धान्यनाशो मृगे लग्नैरंशैश्च फलमीदृशम् ॥ १ ॥"

"मेष खग्नमां के तेना खंश (नवांश)मां गृहप्रवेश करवाथी फरीने प्रयाण करबुं पमे हे, कर्कमां के तेना खंशमां गृहप्रवेश करवाथी मृत्यु थाय है, तुला के तेना खंशमां करवाथी व्याधि थाय हे, छने मकरमां करवाथी धान्यनो नाश थाय है. छा प्रमाणे चर खग्ननुं तथा तेना खंशनुं फळ है."

ग्रहोनी व्यवस्था नवीन घरना स्थापन करवामां जे कही है तेज गृहप्रवेशमां पण है, तेथी करीने जूदी पामीने कही नथी। यहोना त्रण प्रकार व्योतिपसारमां द्या प्रमाणे कह्या है.—

"कूरा ति छ गारसगा सोमा किंदे तिकोणगे सहया। कूर ठम छाइ छासुहा सेसा मिक्फिम गिहारंचे ॥ १॥ किंद ठमंति १२ कूरा छासुहा ति श्गारहा सुहा सबे। कूरा वीछा छासुहा सेस समा गिहपवेसे छ।॥ १॥"

"नवीन घरनो आरंज करवामां कूर ग्रहो (रिव, मंगळ, शिन, राहु) त्रीजे, उर्ड तथा अगीयारमे स्थाने होय तो ते सारा (जत्तम) ठे. सौम्य ग्रहो केन्द्र (१-४-५-१०) स्थानमां तथा त्रिकोए (ए-५) स्थानमां होय तो ते सारा ठे. कूर ग्रहो आठमे स्थाने रह्या होय तो ते अत्यंत अशुज (अधम) ठे. वाकीना ग्रहो आठमा स्थानमां रह्या होय तो ते मध्यम ठे. (१) गृहप्रवेश करवामां कूर ग्रहो केन्द्र (१-४-५-१०) स्थानमां आठमे स्थाने तथा वारमे त्थाने होय तो ते अशुज (अधम) ठे, सर्वे ग्रहो त्रीजे तथा अगीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुज (जत्तम) ठे. कूर ग्रहो वीजे स्थाने होय तो ते अशुज (अधम) ठे. वाकीना मध्यम ठे." यंत्र नीचे प्रमाणे.—

गृहस्थापन ऋने गृहप्रवेशमां ब्रहोनी व्यवस्था-

1	उ त्तम	मध्यम	अध म
रवि	₹ _६_११	ા્્−પ	ʊ─१─४ ─ ७─१ ० ─११ ─ २
चंद	१ <i>-६-५-</i> ५०-ए-५-३-११	७– २−६–१३	U
मंगळ	३–६−११	. હ–પ	C-1-8-9-10-12-9
बुध	१- ४-७-ए-ए-५-३-११	७–२–६– १२	•
गुरु	\$-8-3-40-M-5-44	७-२-६-१ ३	
<u> शु</u> क	१-ध- ७-१०- ए-५-३-११	□ –२–६–१२	o
शनि	₹-६-११	ણ _પ	₽ ─१ ─8 ─ 9 ─ 1
राहु	३-६-११	ણ_ ૫	□-१-8-9-१ □- १२-२

विशेषमां जास्कर कहे हे के—

"रात्री विवाहजे शस्तः सन्मुहूर्ते स्थिरोदये।

वधुप्रवेशो नैवान प्रतिशुकाङ्गयं विद्धः॥ १॥"

"रात्रे विवाहना नक्त्रमां शुज मुहूर्ते छने स्थिर खग्नमां वहुनो प्रवेश प्रशस्त है, तेमां सामा (सन्मुख) शुक्रनो जय कह्यो नथी-"

तथा रत्नमाळामां आ प्रमाणे कहां है.—

"पुनर्वसौ च स्तिकागृहस्य निर्मितिः स्मृता ।

विरिश्चिविष्णुजान्तरे प्रवेशनं च तत्र तु ॥ १ ॥"

"सृतिकागृहनुं निर्माण पुनर्वसु नक्षत्रमां कह्यं हो, अने तेमां प्रवेश करवानुं अजितित् तथा अवण ए वे नक्षत्रोनी वस्चे कह्यं हो. अहीं पुनर्वसु नक्षत्र खेवानुं कारण ए हे जे तेनो स्वामी देवमाता हे माटे, तथा अजिजित् अने अवणनी वस्चे प्रवेश करवानुं कारण ए हे जे तेमना सृष्टिकर्ता (ब्रह्मा) अने पालनकर्ता (विष्णु) स्वामी हे माटे. प्रवेश करवामां अति जत्सुकता होय तो आ वे नक्षत्रोना जदयनी (जयनी) वस्चे प्रवेश करवो.

॥ इति वास्तुदारम् ॥ ए ॥

इति श्रीमति श्रारंजिसिक्विवातिके गम १ वास्तुनिवेशप्रवेशपरीक्षात्मकश्चतुर्थो विमर्शः ॥ ४॥

॥ पञ्चमो विमर्शः ॥

॥ अध्य विखग्नदारम् ॥ १०॥ हवे दशमुं विखग्न (विवाह)दार कहे हे.— खग्नं विवाहे दीक्तायां प्रतिष्ठायां च शस्यते। रवौ मकरकुंजस्थे मेषादित्रयगेऽपि च ॥ १॥

श्चर्य—विवाह, दीका अने प्रतिष्ठाने विषे मकर, कुंज अने मेषादिक त्रण (मेष, वृष तथा मिश्रन) संक्रांतिना सूर्य होय त्यारे लग्न (मुहूर्त्त) लेवुं ए शुज हो.

श्रहीं दीक्षाएं करीने उपस्थापना (वनी दीका) जाणवी. प्रतिष्ठा एटखे जिनबिंब, जिनप्रासाद विगेरेनी स्थापनाः श्लोकमां च शब्द लख्यों हे ते नहीं कहेलाने पण प्रहण करवा माटे हे, तेथी राज्याजिषेक अने आचार्यपदाजिषेक मुं पण प्रहण करवुं. शुज हे एटखे अवश्य आदरवावमें करीने बहु मानेखुं हे आ विवाहादिक कार्यों शुक्त लग्नना बहे करीनेज करवा लायक है, ते सिवाय करवा लायक नथी; अने बीजां कार्यों तो दिवस अने नक्षत्रनी शुक्ति होय त्यारे मात्र सारा मुहूर्त्तमां पण करवा लायक है. अहीं भार १५

कोइ शंका करे के-"जो जन्मलग्नथीज शुजाशुज फळ थाय छे तो आ विवाहादिकना लग्ननुं प्रवळपणुं विचारवानुं शुं प्रयोजन छे ? अने जो कदाच विवाहादिकना लग्नना वळनुंज प्रमाण होय तो पछी जातकादिक शास्त्रोनुं निर्धकपणुं यशे." आ शंकानो जवाव आपतां आचार्य महाराज कहे छे के-"एम न बोलवुं, कारण के जातकादिकमां जे शुजाशुज फळ कहेलुं छे ते (फळ)नी विवाहादिकना लग्नना बळथी अधिकता के न्यूनता थाय छे. जेमके जन्मनुं (जन्मलग्ननुं) फळ शुज छतां पण दशा प्रवेशने काळे जे तत्काळनुं लग्न आवे तेमां दशानो पति (स्वामी) अने तेना मित्रादिक लग्नादिक स्थानमां रह्या होय तथा चंज्ञथी मित्रस्थानमां, जच्च स्थानमां, जपचयस्थानमां अने त्रिकोणादिक स्थानमां रह्या होय तो तेनुं फळ अत्यंत शुज कहां छे. ते विवे बृहज्जातकमां आ प्रमाणे कहां छे.—

"पाकस्वामिनि सम्रगे सुहृदि वा वर्गस्य सौम्येऽपि वा, प्रारब्धा शुन्नदा दशा त्रिदशपड्सानेषु वा पाकपे । मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-श्चन्दाः सरफत्नवोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा ॥ १ ॥"

"पाकनो स्वामी एटले दशानो स्वामी खन्नस्थानमां के मित्रना स्थानमां रह्यो होय अथवा पोताना वर्ग संबंधी सौम्य यह साथे रह्यो होय ते वखते आरंज अथेली दशा शुज फळ आपनारी जाणवी. अथवा दशानो स्वामी त्रीजे, दशमे, उठे के अपीयारमे स्थाने होय तोपण ते शुज हो, तथा दशाना स्वामीना मित्रस्थानमां, जच्च स्थानमां, जपचयस्थानमां, त्रिकोणस्थानमां के स्वीज्ञवनमां चंज रह्यो होय तो ते सत्फळना बोधने करे हो, तेनाथी अन्य स्थानमां रह्यो होय तो पापने करे हो-अशुज फळदायक हो."

वळी प्राणी जेनुं जन्मलग्न श्रशुज इतां पण तत्काळना विवाहादिक खग्नना बळथी शुज पण श्राय हे, माटे सर्व जपर कहेलुं निर्दोष एटले युक्ति युक्तज हे.

"विवाहादों स्मृतः सौरः" "विवाहादिक कार्यमां सौर (सूर्य संबंधी) मास कहाो छे." ए प्रमाणे रत्नमाळाना जाष्यमां कहां छे, तेथी खग्नमां सूर्यसंकांतिथी प्रवर्तेखा सौर मासनो नियम कहाे. हवे चांद (चंद्र संबंधी) मासनो नियम कहे छे.—

माघफाव्युनयो राधज्येष्ठयोश्चापि मासयोः। सन्नं श्रेयः परे त्वाहुस्तद्धत्कार्तिकमार्गयोः॥ १॥

अर्थ—माध अने फाहगुन मासमां तथा वैशाख अने ज्येष्ठ मासमां पण खन्न शुज है. वही बीजा आचार्यों कार्तिक अने मार्गशिष मासमां पण तेज प्रमाणे एटखे शुज खन्नने कहे है. श्रा शुक्त प्रतिपद्शी श्रारंतीने चांड मासोज ग्रहण करवा. श्रहीं कोइ शंका करे के ज्येष्ठ मासमां तो मिश्रुन संकांति होय छे, श्रुने ते संकांति तो उपरना (पहेला) श्लोकमां पण ग्रहण करवानी कही छे, तेथी श्राहीं फरीथी ज्येष्ठ मासनुं ग्रहण केम कर्युं श्रा शंकानो जवाब ए छे जे—श्रपाढ मासमां कदाचित् मिश्रुन संकांति श्रावती होय तोपण सर्वथा ते श्रपाढ मासनो निषेध करवा माटे श्राहों ज्येष्ठ मासनुं ग्रहण कर्युं छे. केटलाक श्राचार्योए मिश्रुन संकांति होय तो श्रपाढ मासनी शुक्त दशमी सुधीनो प्रथम त्रिजाग प्रहण करवानो कह्यो छे. ते विषे त्रिविक्रम कहे छे के—''कैश्रिदिएरूयंशः शुचेरपीति" ''केटलाएके श्रपाढ मासनो पहेलो त्रिजाग पण इह्यो छे.'' मूळ श्लोकमां कार्तिक तथा मार्गशीर्ष मास पण मतांतरे लीधा छे, परंतु ते मास श्रधम होवाथी तेमां हीन जातिना मनुष्योनो विवाह थइ शके छे एम जाणवुं. तेमां पण कार्तिक शुक्त एकादशी पढीज श्रइ शके एम जाणी लेवुं. ते विषे ज्यवहारप्रकाशमां कह्यं छे के—

"कार्तिकमासे गुर्ज्ञिरीर्विलोक्या रवेश्व चन्ज्वलम् (ले)। स्रकृरयुते धिष्ण्ये देवोत्थानाद्दशाहं स्यात् ॥ १ ॥"

"कार्तिक मासमां देव चठ्या (एकादशी) पत्नी गुरुनी तथा सूर्यनी शुद्धि जोवी. कूर प्रह रहित नक्षत्रमां चंद्र बळवान् होय तो दश दिवस विवाह श्रइ शके".

श्रा जपर कहेंसा ਹ मास सिवाय बीजा वाकीना ठ चंज मासमां स्ना यहण करतुं नहीं एम सिज्ज श्रयुं. वळी पाकश्रीकार तो श्रा प्रमाणे कहे हे—''कार्तिक विगेरे त्रण त्रण मासमां श्रमुक्तमे चार स्थिर राशिनां स्त्रो श्रमुतस्वजाववाळां हे. ते श्राप्रमाणे—कार्तिका-दिक त्रण मासमां वृष स्ना शुज्ज हे, माधादिक त्रण मासमां सिंह स्ना शुज्ज हे, वैशाखा-दिक त्रण मासमां वृश्चिक स्ना शुज्ज हे, श्रने श्रावणादिक त्रण मासमां कुंज स्ना शुज्ज हे. श्रा राशिनंना वर्गोत्तमना मध्यम श्रंशना जदयमां सर्व कार्यनी सिज्जि श्राय हे.

जे वर्ष मासादिकमां लग्न ग्रहण करवामां आवतुं नथी तेने कहे हे.—

जीवे सिंहस्थे धन्वमीनस्थितेऽकें,विष्णौ निष्ठाणे चाधिमासे च सग्नम्। नीचेऽस्तं वासे सग्ननाथेऽंशपे वा, जीवे शुक्रे वाऽस्तं गते वाऽपि नेष्टम्॥३॥

अर्थ—बृहस्पित सिंह राशिमां रहेखो होय, सूर्य धन अथवा मीन संक्रांतिमां रहेखो होय, विष्णु सुतेखा होय, अधिक मास होय, खग्ननो स्वामी अथवा अंशनो स्वामी नीच स्थाने रह्यो होय अथवा अस्त पाम्यो होय, तथा गुरु के शुक्र अस्त पाम्या होय त्यारे खग्न खेंबुं इष्ट नथी.

सिंह राशिमां रहेखो बृहस्पति होय तो लग्न खेवुं इष्ट नथी. ते विषे सप्तर्षि कहे ने के---

"गुरुर्मघायां पुरुषं हंन्ति जाग्ये स्थितः स्त्रियम् । जत्तराफट्गुनीपादे घ्यं हन्ति न संशयः ॥ १ ॥"

"मघा नक्षत्रमां रहेलो बृहस्पति पुरुषने हणे छे, पूर्वाफाहगुनीमां रह्यो होय तो स्त्रीने हणे छे, स्त्रने जत्तराफाहगुनीना पहेला पादमां रह्यो होय तो बन्नेने हणे छे. तेमां कांइ पण संदेह नथी. (स्त्रा सवा वे नक्षत्रो सिंह राशिनां छे.)"

> ''गोदावर्युत्तरतो यावज्ञागीरश्रीतटं याग्यम् । तत्र विवाहो नेष्टः सिंहस्थे देवपतिपूज्ये ॥ २ ॥"

"बृहस्पित सिंह राशिमां रह्यो होय त्यारे गोदावरी नदीना जत्तर कांठाथी आरंजीने गंगा नदीना दक्षिण कांठा सुधीना वचला प्रदेशमां विवाह करवानुं इन्नचुं नथी."

केटलाएक आ प्रमाणे कहे हे -ज्यांसुधी बृहस्पति मेघा नक्त्रने ज्ञांघन न करे त्यांसुधी सिंहस्थनो दोष मोटो हे. ते विषे शौनक कहे हे के—

> "पितृन्ते यदि सुरपूज्यो नीचर्चे वाऽश्रवाऽरिसंयुक्तः । कन्योढा वैधव्यं प्रयाति संवत्सरैः पद्भिः ॥ १ ॥"

"जो बृहस्पति मघा नक्त्रमां होय, श्रथवा नीच राशिमां होय, श्रथवा शत्रुस्थान-वमे संयुक्त होय तो तेवा लग्नमां परणेली कन्या उ वर्षे विधवा थाय हे."

जो मघा नक्त्रने उद्घंघन करी गयो होय तो तेटलो वधो दोष नथी, तेथी करीने कन्याकाळना श्रातिक्रमण्यी, वरना लोजयी के देशना उपक्रव विगेरेना हेतुथी संपूर्ण सिंहस्थनो त्याग करवो श्रशक्य होय तो तेर्ज मघामां रहेला गुरुनोज त्याग करे हे. तेर्ज कहे हे के—

"वहवोऽप्येवं जगड़ः सिंदारूढोऽपि वृत्रशत्रुगुरुः । समतिकान्तमघर्द्यो न विरुद्धः सर्वकार्येषु ॥ १ ॥"

"धणा आचार्यो कहे हे के इंन्डनो गुरु बृहस्पित सिंह पर आरूढ थयो होय तोपण मघा नक्षत्रने छद्वंघन करी गयो होय तो सर्व कार्यमां विरुद्ध नथी."

पराशर कहे हे के—''सिंहमां रहेला बृहस्पतिए जो सिंहना पहेला पांच नवांशो जोगबी लीधा होय तो अमुक देशमां सिंहस्थनो दोष लागतो नथी. ते आ प्रमाणे.—

> "सिंहस्थे ज्योऽनुसिंहांशाजाह्नवीतीरयोर्घयोः । न छष्टो गंगयोर्मध्यदेशेषु तु स छःखदः ॥ १ ॥"

"सिंहमां रहेलो बृहस्पित सिंहना प्रथम पांच नवांश जोगन्या पढी गोदावरीना दिहाए कांठे तथा गंगाना जत्तर कांठे हुष्ट नथी. गोदावरी तथा गंगाजीना मध्य जागमां तो इःखदायक है.

वळी सप्तर्षिचे श्रा प्रमाणे कहे हे.—"श्रमुक देशमां सिंहस्थ गुरु प्रथमधीज श्रप्तष्ट हे. ते श्रा प्रमाणे.—

''जागीरध्युत्तरे तीरे गोदावर्याश्च दक्तिणे। विवाहो व्रतबन्धो वा सिंहस्थे ज्ये न फुष्यति॥१॥"

"सिंहस्थ गुरु होय त्यारे गंगाना जत्तर कांठे तथा गोदावरीना दक्षिण कांठे विवाह

श्रयवा व्रतबंध (दीहा, उपनयन विगेरे) करवानो दोष नथी."

वळी बीजा श्राचार्यो श्रा प्रमाणे कहे छे—"मेप राशिमां सूर्य होय त्यारे जो सन्न प्रहण कर्यु होय तो मघा नक्त्र जोगवाइ जवाथी सिंहस्थ गुरुनो दोप नथी." तेर्च कहे छे के—

"सिंहिच्छि जइ जीवो मह जुत्तं होइ छाह रवि मेसे। ता कुण्ह निविसंकं पाणिग्गहणाइ कल्लाणं॥ १॥"

"सिंहस्य गुरुए जो मघा नक्त्र जोगवी लीधुं होय, अने मेष राशिमां सूर्य होय तो

निःशंकपणे पाणियहणादिक शुच कार्यो करवां."

अहीं आ सर्वे यन्थांतरोना संवादो विवादना फळने आश्रीने देखाड्या हे, परंतु प्रतिष्ठा अने दीहा विगेरे सर्व कार्योमां पण आने अनुसरीनेज फळ कहेवुं. एज प्रमाणे आगळ पण जाणवुं.

मूळ श्लोकमां धन श्रने मीन संक्रांतिमां विवाहनो निषेध कर्यो है। त्यां विशेष श्रा

प्रमाणे जाणवो ---

''फ्रिपो न निन्द्यो यदि फाह्गुने स्या-दजस्तु वैशाखगतो न निन्द्यः । मध्वाश्रितौ घायपि वर्जनीयौ, मृगस्तु पौषेऽपि गतो न निन्द्यः ॥ १ ॥"

"जो फाहगुन मासमां मीनना सूर्य होय तो ते निंद्य नथी, अने वैशाख मासमां पण मेष होय तो ते पण निंद्य नथी, परंतु चैत्र मासमां मीन के मेप संक्रांति होय तो ते बन्ने वर्जवा योग्य हे. तथा पोष मासमां मकर होय तोपण ते निंद्य नथी." आ विद्याधरी विद्यास ग्रंथमां कहां हे.

श्रा श्लोकनेज केटलाएक श्रा प्रमाणे बोले हे.—

"फ्षो न निन्द्यो यदि फाहगुने स्थादजस्तु चैत्रेऽपि गतो न निन्द्यः।
मृगस्तु पौषेण च संप्रयुक्तो,
वशिष्टगर्गादिजिरेतछक्तम्॥१॥"

"फाहगुन मासमां मीन होय तो ते निंध नथी, मेष राशि चैत्र मासमां होय तोपण ते निंध नथी, मकर राशि पोष मासमां होय तो ते पण निंध नथी, एम वशिष्ठ, गर्ग विगेरे किष्ठिं कहे हे." आ पाठमां आदलो विशेष जाएवो के चैत्र मासने विषे पण जो मेषना सूर्य होय तो लग्न ग्रहण करवामां दोष नथी। वळी रह्माळाजाण्यमां तो आ प्रमाणे कह्यं हे.—

"कर्कादि राशिषद्धं च पूर्वार्ध पौपचैत्रयोः। अस्तमितं गुरुं शुक्रं त्यजेच्च्मादिकर्मणि॥ १ ॥"

"कर्कथी आरंजीने धन सुधीनी छ संक्रांतिने, पोष तथा चैत्र मासना पूर्वार्ध (पहेला प्रखावामीया)ने अने गुरु तथा शुक्रना अस्तने चूमादिक कर्ममां वर्जवा." अहीं पोप तथा चैत्र मासना पूर्वार्धने तजवानुं कहां है तेने नहीं सहन करतो श्रीपित आप्रमाणे कहे है.—

"सौम्येऽयनेऽप्यविकखौ पौषचेत्रौ परित्यजेत्। पद्दोऽपरः शुन्नः कैश्चित्र चैतद्युक्तिमदचः॥ १॥"

"जत्तरायणने विषे पण पोष तथा चैत्र मास संपूर्ण त्याग करवा खायक है, केटखाक आचार्योए शुक्ख पक्तने शुज कह्यो है, पण ते वचन युक्तिवाळुं नथी." एम दैवज्ञवह्न-जमां कह्युं है.

मूळ श्लोकमां "विष्णु सुतेला होय" एम जे कहां हे ते लोकरूढिए करीने जाण्तुं, एटले अषाढ शुक्ल एकादशीथी कार्तिक शुक्ल एकादशी सुधीनो काळ जाण्वो. मूळ श्लोकमां अधिक मास वर्जवानो कहाो हो, ते अधिक मास आ प्रमाणे थाय हे.—कोइ पण मासनी अमावास्थाने विषे एक संक्रांति वेठी होय अने वीजी संक्रांति त्यारपठीना मासनी प्रतिपदाने दिवसे वेठी होय त्यारे वचेनो जे संक्रांति रहित मास रह्यो ते अधिक मास कहेवाय हे. कहां हे के—

"एकोऽमावास्यायां जवेडवेः संक्रमः परो दर्शात् । जर्ध्व जायेत यदा तदाऽधिमासः शुजेऽनिष्टः ॥ १ ॥"

"एक सूर्यनुं संक्रमण (संक्रांति) श्रमावास्थाने दिवसे होय श्राने बीजुं संक्रमण श्रावती श्रमावास्या पठी होय त्यारे वचेनो श्रधिक मास श्राय हे. ते श्रधिक मास शुज कार्यमां श्रनिष्ट हे."

विशेष आ प्रमाणे हे.—

"मासघ्येऽब्दमध्ये तु संक्रान्तिन यदा जवेत्।

पाकृतस्तत्र पूर्वः स्थादधिमासस्तथोत्तरः॥ १॥"

"एकज वर्षमां ज्यारे वे मासने विषे संक्रांति न होय त्यारे पूर्वनो मास प्राकृत अने

पठीनो मास श्रिष्क जाण्वो." श्रहीं प्राकृत एटले प्रकृति—धर्मव्यवहार ते संबंधी श्रर्शात् विवाह, दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरे शुज कार्यने योग्य एवो श्रश्च जाण्वो. एक वर्षमां ने मास श्रिष्क होय त्यारे जो पहेलाने श्रिष्क मास कहीए तो तेमांनो पहेलो मास धर्मकर्मना व्यवहारने योग्य हो, श्रने बीजो नहीं, पण बीजा मासने जो श्रिष्क गणिए तो ते बेमांनो बीजो मास धर्मव्यवहारने योग्य जाण्वो एम काळनिर्णय प्रथमां कह्यं हो. ब्रह्म-सिद्धांतमां पण कह्यं हे के—''वर्षमध्ये मासद्यवृद्धौ प्रथममासवृद्धौ कर्मकृदाद्योऽपरस्त्व-शुज इति" "एक वर्षमां वे मासनी वृद्धि होय त्यारे पहेला मासनी वृद्धि करीए तो पहेलो मास कर्मने लायक हे श्रने बीजो श्रशुज हो."

मूळ श्लोकमां "अधिमासे च" अहीं च शब्द हे तेथी क्षय मास पण लग्नमां तजवा योग्य हे. ते क्षय मास आ प्रमाणे जाणवो.—ज्यारे एक संक्रांति शुक्ल प्रतिपद्ने दिवसे होय अने बीजी संक्रांति तेज मासनी अमावास्थाने दिवसे अर्थात् अमावास्था सुधीमां होय त्यारे ते वे संक्रांतिवाळो क्षय मास कहेवाय हे. ते क्षय मास कार्तिक, मार्गशीर्ष के पोष ए त्रण्मांथीज कोइ एक संजवे हे. ते विषे काळनिर्णय प्रन्थमां कहां हे के.—

> "असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्, दिसंक्रान्तिमासः क्रयाख्यः कदाचित्। क्ष्यः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्, ततो वर्षमध्येऽधिमासदयं स्यात्॥१॥"

"जे मासमां संक्रांति न होय ते ऋधिक मास कहेवाय हो, श्रने कोइक वखत एक मासमां वे संक्रांति होय एवो क्य मास पण होय हो. ते क्य मास कार्तिक विगेरे त्रण मासमांज होय हो, तथा ते वर्षमां वे ऋधिक मास आवे हे." तथा—

"यस्मिन्मासे न संक्रान्तिः संक्रान्तिष्यमेव वा। मलमासः स विक्षेयः सर्वकार्येषु वर्जितः॥ १॥"

"जे मासमां संक्रांति न होय, अथवा जे मासमां वे संक्रांति होय ते मख मास जाएवो. आ मास सर्व कार्यमां वर्जित हो." आ प्रमाणे काठगृह्यमां कह्यं हो.

मूळ श्लोकमां "नीचेऽस्तं वेति" एटखे खग्ननो तथा श्रंशनो स्वामी नीच स्थानमां रहेखो होय तो ते त्थाग करवा योग्य हे. ते विषे प्रश्नप्रकाशमां कहां हे के—

"त्रि १ इसे २ कगुणा २ धेवलः ४ खग जद्मग १ वऋ २ शीघ २ नीचस्थः ४।"

"मह जच स्थाने रह्यो होय तो तेनुं बळ त्रण गणुं होय हो, वक गतिवाळो होय तो तेनुं बळ बमणुं होय हो, श्रीम गतिवाळो होय तो एक गणुं होय हो, श्रने नीच स्थानमां रह्यो होय तो तेनुं अर्ध बळ होय हे." परंतु अस्त पामेखो होय तो तेनुं कांइ पण बळ

नथी. मात्र एक बुध शह श्रस्त पामेखों के जदय पामेखों होय तो ते विवाहादिकना खग्नमां समान फळवाळोज हे. कहुं हे के---

"रविकिरणमध्यवर्ती चरति सदा सवितृमंगले शशिजः। तस्मान्न दोषकृतस्यात् सोऽस्तं यातोऽपि जांशपतिः॥१॥"

"सूर्यनां किरणोना मध्यमां वर्तनारो बुध सर्वदा सूर्यमंमळमांज गति करे हे, तेथी करीने ते अस्त पामेखो होय तोपण बुध दोष करनार थतो नथी."

यहोना खदय श्रने श्रस्तना दिवसनी संख्या सामान्य रीते श्रा प्रमाणे ज्योतिष-सारमां कहेखी छे.—

"उस्सयसन् ६६० उतीसा ३६ तिन्निवहुत्तर ३७२ छएगपन्नासा २५१। तिन्निवयाला ३४२ खंगारयमाई छदयदिवस कमा ॥ १॥ सुन्नरिव १२० सोल १६ दसणा ३२ नंद ए बयालीस ४२ पश्चिमत्यदिणा। जोमाई तह पुबे बुहसिख्य उत्तीस ३६ सगसयरी ७७॥ २॥"

"मंगळनो छदय ६६० दिवस सुधी रहे हो, बुधनो छदय ३६ दिवस रहे हो, गुरुनो छदय ३५२ दिवस, शुक्रनो २५१ अने शनिनो छदय ३५२ दिवस रहे हो (१). मंगळनो अस्त १२० दिवस सुधी रहे हो, बुधनो अस्त १६ दिवस रहे हो, गुरुनो अस्त ३२ दिवस, शुक्रनो ए अने शनिनो अस्त ४२ दिवस रहे हो. आ सर्वे पश्चिम दिशामां अस्त पामे तेने आश्चीने दिवसोनी संख्या कही हो, पण पूर्वमां अस्त होय तो बुध ३६ दिवस अने शुक्र ५५ दिवस सुधी अस्त रहे हो. १."

ग्रहोनो खदय श्रने श्रस्त श्रवानो प्रकार श्रा प्रमाणे हे.—
"सूर्याः १२ सप्तदश १९ त्रिजूपरिमिता १३ रुड़ा ११ नवा ए ब्धीन्दवः १४,
कालांशाः शशिनोऽनुजोईगुरुणः काव्यस्य मन्दस्य च"

"सूर्यना १२ त्रिंशाशने मध्ये चंद्र आवे त्यारे तेनो अस्त आय हे, १९ त्रिंशांशने मध्ये मंगळ आवे, १२ त्रिंशांशने मध्ये बुध आवे, ११ त्रिंशांशने मध्ये गुरु आवे, ए त्रिंशांशने मध्ये शुरु आवे ए त्रिंशांशने मध्ये शुरु आवे अने १४ त्रिंशांशने मध्ये शिन आवे त्यारे तेमनो अस्त आय हे. तेटला त्रिंशांशनी बहार होय त्यारे तेमनो छदयज होय हे." एम खंमलाद्यना जाज्यमां कहां हो.

मूळ श्लोकमां "अस्तं वाष्ठे" "खग्ननो तथा अंशनो स्वामी अस्त पाम्यो होय तो ते वर्ष्य हे" एम जे कह्यं हे ते जपलक्ष हो, तेथी करीने खग्ननो अथवा अंशनो स्वामी क्रूर ग्रहे करीने युक्त होय अथवा क्रूर ग्रहनी तेना पर दृष्टि पमती होय तोपण ते लग्न अश्वन जाणवं.

मूळ श्लोकमां गुरु अथवा शुक्रनो अस्त होय तो ते लग्न अशुन हे एम कहां. से विषे लग्न कहे हे के—

"श्रस्तमिते जृगुतनये नारी म्नियते बृहस्पतौ पुरुषः"।

"विवाहना लग्नसमये शुक्रनो श्रास्त होय तो स्त्री मरण पामे हे, श्राने गुरुनो श्रास्त होय तो पुरुषनुं भरण नीपजे हे."

केटलाएक छाचार्यो छाम पण कहे हे.—
"श्रिजिजिजारुणादित्यरेवतीसंगते सति ।
तदा लोपगते जीवे विवाहादि विवर्जयेत् ॥ २ ॥"

"श्रिजित्, शतिज्ञपक्, पुनर्वसु श्रने रेवतीए करीने युक्त एवो गुरु होय तो ते खोपगत कहेवाय हे. ते वखते विवाहादिक शुज कार्यने वर्जवां." श्रहीं श्रा प्रमाणे संप्रदाय हे.—वारे महीनाश्रो एकांतर नक्त्रना नामे करीने चिह्नवाळा हे. जेमके श्रिश्वनी नक्त्रते करीने श्राश्विन मास, कृत्तिकावमे कार्तिक, मृगशिरवमे मार्गशिर, पुष्यवमे पौष मास विगरे. श्रा रीते एकांतर गणतां पण जे जे नक्त्रत्र वस्त्रे श्रिषक रहेवां हे ते नक्त्रते श्रिजित्, शतिज्ञपक्, रेवती श्रमे पुनर्वसु हे. श्रा नक्त्रतेमां गुरु रहेवां होय तो ते लोपगत कहेवाय हे. ते वखते लग्न प्रहण करवं नहीं. तथा सारंग कहे हे के—

''ऋस्तं गते ऋगुसुते जवेद्यदि बुधोदयः । पुत्राष्टकस्य जननी तदोढा कन्यका जवेत् ॥ १ ॥"

" शुक्र श्रस्त पाम्यो होय श्रने जो बुधनो जदय होय तो ते वखते विवाहित श्रयेखी कन्या श्राठ पुत्रनी माता श्राय हो. श्रशीत ते लग्न शुज हे."

वळी गर्ग कहे हे के—

"शशांकजो यदोदेति गुरोरस्तमनं यदि । पुत्राष्टकस्य जननी तदोढा कन्यका जवेत् ॥ १॥"

''बुधनो जदय होय अने जो गुरुनो अस्त होय तो ते वखते विवाहित थयेखी कन्या आठ पुत्रनी माता थाय हे."

"शुक्रना अस्तमां दीक्षानो दोष नथी" एम दिनशुष्त्रि ग्रंथमां कहां हे. विशेषमां एम जाणवुं के जेम गुरुना अस्तमां लग्न इष्ट नथी तेज रीते गुरु नीच स्थानमां रह्यो होय तोपण ते इष्ट नथी. ते विषे विवाहपटलमां कहां हे के—

"वाक्पतौ मकरराशिमुपेते, पाणिपीकनविधिर्न विधेयः। तत्र दूषणमुशन्ति मुनीन्झाः, केवलं परमनीचनवांशे॥ १॥"

भा॰ ३६

''गुरु मकर राशिमां रहेलो होय त्यारे पाणिग्रहणनो विधि करवा योग्य नथी. तेमां पण मात्र स्त्रत्यंत नीच नवांशमांज दूपण हे एम मुनींको कहे हे."

"पांचज नीच नवांशोनो त्याग करवो" एम अन्य यंथमां कहुं है. तेमां लोक-रूढिए परम नीच अंश पर्यंत पहेला पांच त्रिंशांशरूप नीचांशो त्याग करेला है. जो के लोकमां सर्वत्र मात्र पांचमो त्रिंशांशज परम नीच है, हतां पांचमा त्रिंशांश सुधीना पांचे त्रिंशांशो वर्जवानुं कहुं ते लोकरूढिने अनुसरीने कहुं है एवं ज्योतिषशास्त्रना वेत्तार्जनुं वचन है.

मूळ श्लोकमां "जीवे सिंह्स्थे" ए वचनवमे वर्षनी अने "धन्वमीनस्थितेऽर्के" ए वचनवमे मासनी शुक्ति कही. वळी कांइक मासनी शुक्ति तथा दिवस अने नक्त्रनी शुक्ति "ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे" (मिश्रदार श्लोक ६) तथा "छदाहे मृगपैत्रर्के" (मिश्रदार श्लोक १) ए श्लोकमां कहेशे. समयनी शुक्ति आ प्रमाणे जाणवी.— रात्रिनो मध्य जाग अने दिवसना मध्य जागने विषे लग्न ग्रहण करतुं नहीं. ते विषे गदाधर कहे वेके—

"निवसित मुहूर्त्तकालो महानिशायां च दिनदले यस्मात्। दश पूर्व दश परतस्तस्मादण्यीचरपलानि॥ १॥"

''मध्य रात्रीए तथा दिवसना मध्य जागे मुहूर्त्तकाळ रहे हे, माटे ते समये प्रथमना तथा पढ़ीना दश दश पळनो त्याग करवो."

कोइ आचार्यो एम कहे हे के—"दिवसना पाइला जागमां एटले के मध्याहकाळ पढी प्रतिष्ठा, विवाह विगेरेनुं लग्न आवे नहीं (शुज नश्री), अने तेथी करीनेज गृहप्रवेशना अधिकारमां "सौम्येऽयने वासरपूर्वजागे" (वास्तुष्ठार श्लोक ०५) १ श्लोकमां दिवसनो पूर्व जाग लीधो हो." आ तेमनुं कहे बुं अयुक्त हो, केमके विवाहमां दिवसना पाइला जागे सूत्रकारज लग्न लेवानी आज्ञा आपवाना हो. ते बावत "विवाह त्वकीकी त्रिरिपुनिधनायेषु शुजदौ" (मिश्रष्ठार श्लोक ३६) ए श्लोक आगळ कहेशो. वळी विवाहना लग्नमां अपराह्ण (दिवसनो पाइलो जाग) न लइए तो सूर्यनुं आहमा स्थानमां रहेवापणुं संजवतुं नथी, (अने लग्नथी सूर्य आहमे होय तो तेने शुज कहेवामां आवशे ते शी रीते घटे १) परंतु अपराह्मां प्रतिष्ठादिकना लग्नने प्रहण करवानो व्यवहार प्राये देखातो नथी अने विवाहनुं लग्न तो अपराह्मां प्रहण करता कवित् जोवामां पण आवे हे. तेथी करीने आ विषे वृद्धोज प्रमाणजूत हे.

जीर्णः शुक्रोऽहानि पञ्च प्रतीच्यां, प्राच्यां बालस्त्रीण्यहानीह हेयः । त्रिघ्नान्येवं तानि दिग्वैपरीत्ये, पक्तं जीवोऽन्ये तु सप्ताहमाहुः ॥ ४ ॥ अर्थ—शुक्रने पश्चिम दिशामां पांच दिवस सुधी वृद्ध जाणवो, स्त्रने पूर्व दिशामां त्रण दिवस बाळक जाणवो, परंतु दिशाना विपरीतपणाने विषे ते दिवसो त्रण गुणा जाणवा. आ वन्ने अवस्था लग्नमां तजवा योग्य हे. गुरु वन्ने अवस्थामां एक पद्य (पंदर दिवस) त्याग करवा योग्य हे, अने वीजा आचार्यों तो सात दिवस त्याग करवा योग्य कहे हे.

विवेचन-श्सोकमां "जीएँ" शब्दे करीने अस्तनुं सूचन कर्युं हे, तेथी अस्त पाम-वानी तैयारीवाळो एवो अर्थ जाण्वो. "वाळ" शब्दे करीने जदयनुं सुचन कर्युं हे अर्थात नवो जदय पामेलो एवो अर्थ जाएवो. दिशाना विपरीतपणाने विषे एटले के जो पूर्व दिशामां अस्त अवानो होय अने पश्चिममां उदय अयो होय तो ते दिवसोने त्रण गुणा एटले पंदर अथवा नव दिवस तजवाना जाणवा, एटले के पूर्वमां छदय पामेखो शुक्र वाळ होवाथी त्रण दिवस त्याग करवो, पण पश्चिममां छदय पामे तो ते नव दिवस वाळ होवाथी तेटला दिवसो वर्जवा. तथा जो पूर्वमां ऋस पामवानो होय तो बृद्धपणाने लीधे तेना पंदर दिवस वर्जवा, पण पश्चिममां श्रस्त पामवानो होय तो पांच दिवस वर्जवा. मूळ श्लोकमां गुरुने पंदर दिवस तजवानं कहां है, एटले के नवो जदय पामे त्यारे ते बाळक होय छे अने अस्त पामवानी सन्मुख होय त्यारे ते वृद्ध कहेवाय हे. ते वज्ञे अवस्थामां- पंदर दिवस तजवा योग्य हे. "गुरु पण त्रण दिवस वाळक हे श्रने पांच दिवस वृद्ध है" एम पण केटलाक कहे है, परंतु गुरुनो पूर्व दिशामां श्रस स्रमे पश्चिम दिशामां चदय स्रतो नयी. बीजाउं एटले सप्तक्रिष विगेरे तो गुरु स्रमे शुक्र ए बन्नेने बन्ने दिशामां ऋस्त के छदय होय तोपण सात सात दिवसनी बाह्यावस्था तथा वृद्धावस्था कहे हे. आ बन्नेनी बाह्यावस्था के वृद्धावस्था होय त्यारे खग्न खेवुं नहीं. ए तात्पर्य हे. "आ वास्य तथा वृद्धपणानी अवस्थानी कस्पना निर्वळपणारूप तेना फळने जणाववा माटेज करेखी हे, पण वास्तविक रीते तेमनी अवस्थार्ज होती नथी" एम रलमाळाजाध्यमां कह्यं हे.

विशेष आ प्रमाणे जाणवो.—

"अरिगयनीए वके अत्यमिए लग्गरासि निसिनाहे।
अवले रविगुरुसुके सामि अदिं चयह लग्गं॥ १॥"

"खन्नराशिनो स्वामी तथा चंद्र शत्रुना स्थानमां होय, नीचना होय, वक होय के अस्त पामेखा होय, तथा रिव, गुरु अने शुक्र निर्वेळ होय, तथा स्वामीनी दृष्टि न पर्नती होय एवं खन्न, आ सर्वे त्याग करवा योग्य हो." आ जंगने देनारा खन्नना दोषो सर्वत्र वर्ष्य हो.

॥ इति खन्नदारम् ॥ १० ॥

॥ ऋथ मिश्रदारम् ॥ ११ ॥

हवे मिश्र नामनुं श्रमीयारमुं दार कहे हे. तेमां प्रथम खग्न ग्रहण करवामां ग्रह-गोचरनी शुद्धि कहे हे.—

लग्ने गुरोवेरस्याथ प्राह्मं चान्डबलं बुधैः। शिष्यस्थापककन्यानां जीवेन्द्रकेवलानि च॥ ५॥

अर्थ-पंिनतोए खग्नवखते गुरुनुं तथा वरनुं चंडवळ ग्रहण करतुं. तथा शिष्य, स्थापक अने कन्याने गुरु, चंड अने सूर्यनां वळ ग्रहण करवां.

विवेचन—दीहा तथा प्रतिष्ठाना खेशमां गुरु (आचार्य)ने अने विवाहना खशमां वरने चंडवळ होवुं जोइए. ते चंडवळ पूर्वे कहेला विधिए करीने राशिगोचर १, नवांशिगोचर १, अष्टवर्गशुद्धि ३, शुज तारा ४, शुज अवस्था ५, वाम (कावो) वेध ६, शुक्ल तथा कृष्णपद्धनो प्रारंज ७, मित्र तथा अधिमित्रना धर (स्थान)मां रहेवुं ए, सौम्य प्रहना आहामां रहेवुं १, मित्र तथा अधिमित्रना आंशमां रहेवुं १०, सौम्य प्रहना आंशमां रहेवुं ११, मित्र तथा अधिमित्रना ग्रहनी साथे रहेवुं १२, सौम्य प्रहनी साथे रहेवुं १३, मित्र तथा अधिमित्रना ग्रहनी साथे रहेवुं १३, सौम्य प्रहनी साथे रहेवुं १३, मित्र तथा अधिमित्रना स्थाननी दृष्टि १४, अने सौम्य प्रहनी दृष्टि १५, आ पंदर प्रकारमांथी कोइ पण प्रकारे करीने चंडनी अनुकूळतारूपी वळ अवश्य ग्रहण करवुं. ते विषे कहुं हे के—

''सर्वत्रामृतरक्ष्मेर्वक्षं प्रकड्प्यान्यखेटजं पश्चात् । चिन्त्यं यतः शशाङ्के विविनि समस्ता ग्रहाः सबद्धाः ॥ १ ॥"

"सर्वत्र (सर्व प्रकारनां लग्नमां अथवा शुज कार्यमां) प्रथम चंद्रनुं बळ ग्रहण करीने पढ़ी बीजा ग्रहोनुं बळ चिंतवबुं,कारण के चंद्र बळवान् होय तो सर्वे ग्रहो बळवान् होय हे."

मूळ श्लोकमां शिष्य—दीहा लेनार अथवा पदवीने विषे जेने स्थापन करवो होय ते. स्थापक—इव्यनो व्यय करनार जे श्रावक विगेरे होय ते. तेमणे गुरु, चंद्र अने सर्यनुं बळ अवस्य ग्रहण करवुं. ते विषे कह्यं ठे के—

"रविशशिजीवैः सबद्धैः ग्रुजदः स्याकोचरः"

"रिव, चंद्र अने गुरु बळवान् होय तो गोचर शुप्तदायी थाय हे." प्रहोना वळना तरतमपूषा विगेरेनो विजाग आ प्रमाणे हे.—

> "पूर्ण २० लेटाष्टकबलमूनं पादेन १५ गोचरं प्रोक्तम् । वेधोत्यमर्थमानं १० पादवलं ५ दृष्टितः खचरे ॥ १ ॥"

"आठ ग्रहोनुं बळ होय तो ते पूर्ण एटले २० वसा बळ जाएवं, गोचरनुं बळ एक पाद हीन एटले १५ वसा कहेलुं हो, वेधथी जत्पन्न थयेलुं बळ अर्धु एटले १० वसा कहुं हो, तथा दृष्टिथी एटले एक ग्रह पर बीजा ग्रहनी दृष्टि पमती होय तेवुं बळ एक पाद एटले पांच वसा कहेलुं हो." आ सामान्यथी सर्व ग्रहोने आश्रीने कहुं. तेमां एक चंडने आश्रीने विशेष हो ते कहे हो.—

"एणाङ्के गोचरबल १ मष्टक २ तारोत्य २ वेध ४ पक्तवम् ५। कमशस्तारा १ वेधज २ पक्तजवानी ३ ह गोणानि ॥ २॥"

"चंद्रने विषे गोचरवळ १, अष्ट वर्गनुं वळ २, ताराथी जत्पन्न थयेलुं वळ ३, वेधनुं वळ ४ अने पक्त (पलवामीया)थी जत्पन्न थयेलुं वळ ५. आ पांच प्रकारनां वळ-मांथी अनुक्रमे तारा १, वेध २ अने पक्तथी ३ जत्पन्न थयेलुं वळ गौण हे, एटले के आ त्रण वळ जत्तरोत्तर हीन, हीनतर अने हीनतम हे." वाकीनां पहेलां वे बळनुं स्वरूप आ प्रमाणे हे.—

"ग्रहगोचरा १ प्रवर्गों २ तुहयवसी शुद्धिकारणादनयोः। एकेनापि वसेन प्राप्तेन प्रवेतसुशुद्धिरहः॥ ३ ॥"

"ग्रहगोचर अने अष्ट वर्ग ए बन्ने शुक्तिनुं कारण होवाथी तुह्य वळवाळा छे. ते वेमांथी एकनुं पण वळ प्राप्त थयुं होय तो तेथी अहीं द्वग्नमां सारी शुक्ति थाय छे."

"चेकोचरान्न हि जवेत्तदाऽष्टवर्गादिखोक्यते शुद्धिः । गोचरतोऽष्टकवर्गी वलवानुदाहदीकादौ ॥ ४ ॥"

"जो गोचरथी शुद्धि न आवती होय तो छष्टवर्गथी शुद्धि जोवी, अने विवाह तथा दीहादिकमां ग्रहगोचर करतां छष्ट वर्ग वधारे बळवांन् हे."

''तसादष्टकशुद्धिर्रुरोविंलोक्या रवेश्च चन्डस्य।

निधना ए न्ला १२ म्बु ४ गतेष्वपि रेखाधिक्यात्सुशुद्धिः स्यात् ॥ ५ ॥"
"तथी करीने गुरुनी, सूर्यनी छाने चंद्रनी छाप्टवर्गशुद्धि जोवी के जेथी करीने
तेड (गुरु, सूर्य छाने चंद्र) चोथे, छाउमे के वारमे स्थाने रह्या होय तोपण रेखाना
छाधिकपणा थकी सारी शुद्धि थाय."

''समग्रुद्धिरपि श्रेष्ठा ग्रुद्धिपतेर्यदि जवेत्रुजा रेखा । ग्रुद्धीशस्य न रेखा यदा तदा पद्गिधादिवीर्यवतः ॥ ६ ॥"

"जो शुद्धि (खन्नशुद्धि)ना स्वामीनी रेखा शुज होय तो समान शुद्धि पण श्रेष्ठ हे, स्राने ज्यारे शुद्धिना स्वामीनी रेखा शुज न होय तो ह प्रकारादिक वीर्य सकी शुज जाणवी."

"मित्रग्रहस्य रेखा समरेखां शुद्धिमुत्तमां कुरुते । तामन्तरेण मुनिजिर्न हाधिकाऽपि प्रशस्यते रेखा ॥ ७ ॥"

"मित्रग्रह्नी रेखा समरेखावाळी शुद्धीशनी शुद्धिने उत्तम करे हे, ते (मित्रग्रह्नी रेखा) विना बीजी श्रिधिक रेखाने पण मुनिर्जय वखाणी नथी, एटले के मित्रग्रह्नी रेखाज प्रशंसा योग्य हे."

१ विमर्श पांचमो श्वोक ३६ थी जुओ.

"समशुद्ध्यामष्टकतः शुद्धिपते रेखिकामृते वेधात् । शुचदे ग्रहे सति शुचा शुद्धिः स्थात्प्रोच्यते विवुधैः ॥ छ॥"

''श्रष्टकथी समशुद्धिने विषे शुद्धिपतिनी रेखा न आवती होय अने वेधथी शुज-दायक यह आवतो होय तो ते पए पंक्तितोए शुज शुद्धि कही हे."

"नवमिष्यस्थातः समरेखोऽप्यधिकशुज्जेफलः सूर्यः। संक्रमकालेन्छवलात् समोऽपि सर्वत्र शुज्जदोऽर्कः॥ ए॥"

"नवमा, बीजा श्राने पांचमा स्थानमां रहेलो समान रेलावाळो पण सूर्य श्राधिक शुज फळ देनारो हे, श्राने संक्रांतिने वसते चंद्रना बळथी समान एवो पण सूर्य सर्वत्र शुजने देनारो हे."

"दशमाङ्ध्वं केवललप्तबलेन स्त्रिया विवाहः स्यात्। शुक्रिनैवालोक्या स्वीज्ययोः पूजयोदाहः॥ १०॥"

"दश वर्षनी वय थया पढ़ी कन्याना विवाह मात्र खग्ननाज वळथी थाय है. तेमां सूर्य तथा गुरुनी शुद्धि जोवानीज नथी, परंतु ते सूर्य अने गुरु अशुद्ध होय तो तेमनी पूजावमे विवाह करवो. अर्थात् तेनी पूजा करवाथी दोषनो नाश थाय है." आ सर्व व्यवहारप्रकाशमां कहेलुं हे.

वळी व्यवहारसारमां आ प्रमाणे कह्यं जे-

"जन्मिद्यस्यनवमद्युनगः खरांशुः, पूजां च वाञ्ज्ञति न चाष्टचतुर्व्ययस्थः। जीवस्त्रिजन्मदशमारिगतस्तु पूजामिञ्जेत् कदाचिदपि नाष्टचतुर्व्यस्थः॥ १॥"

"सूर्य पहें खे, बीजे, पांचमे, नवमें अने सातमें स्थाने रह्यों होय तो ते पूजाने चाहे हे, एटखें के पूजा करवाथी तेनी शुक्ति थाय हो, परंतु आहमें, चोथे के बारमें स्थाने रह्यों होय तो ते पूजाने चाहतों नथीं, एटखें के ते स्थानों आतंत अशुज होवाथी तेनी पूजा करवाथी पण ते अनुकूळ यतो नथीं. तेज प्रमाणे गुरु त्रीजे, पहेंखे, दशमें अने हों स्थाने रह्यों होय तो ते पूजाने इह्ये हो, पण आहमें, चोथे के बारमें स्थाने रह्यों होय तो ते कदापि पूजाने इह्यतों नथीं."

परंतु गर्गाचार्य तो एम कहे ने के—"गोचरविरुद्ध जीवे वैधन्यमेव, पूजा त्वप्रमाएम्" "जो गुरु गोचरवरे करीने विरुद्ध होय तो ते कन्याने विधवापणुंज थाय ने, अने तेनी जे पूजा करवी ते तो अप्रमाण ने."

हवे अवशेष रहेली मासशुद्धि, दिनशुद्धि अने नक्षत्रशुद्धि एक श्लोके करीने कहे हे.— ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे मासि स्यात् पाणिपीमनम् ।

न पुनस्त्रयमप्येतन्मासाहर्जेषु जन्मनः ॥ ६॥

श्चर्य-मोटा पुत्र-पुत्रीनुं पाणिब्रहण ज्येष्ठ मासमां करवुं नहीं, तथा त्रा त्रणे कार्यो जन्मना मासमां, जन्मना दिवसमां (तिथिमां) श्चने जन्मना नक्तत्रमां करवां नहीं.

विवेचन—मूळ श्लोकमां "ज्येष्ठ श्रपत्य" कह्यो हे, तेथी पुत्र तथा पुत्री वन्ने समजवां. "पाणिपीक्न" (पाणिग्रहण) ए शब्दनुं छपलक्षण होवाश्री बीजां शुन्न कार्यो पण जाणवां. ते विषे हर्षप्रकाशमां कह्यं हे के—"सुहकक्के वक्के सबहिं पि जिन्नस्स जिन्नं ति" "सर्व शुन्न कार्यमां ज्येष्ठ (मोटा) श्रपत्य (पुत्र-पुत्री)ने ज्येष्ठ मास वर्जवो." तथा—

> "जेष्ठे न ज्येष्ठयोः कार्यं नृनार्योः पाणिपीमनम् । तयोरेकतमे(रे) ज्येष्ठे ज्येष्ठोऽपि न विरुध्यते ॥ १ ॥"

''ज्येष्ठ पुरुष छाने नारी (वर-कन्या) नुं पाणिप्रहण ज्येष्ठ मासमां करवुं नहीं, परंतु ते वर कन्यामांथी जो एक ज्येष्ठ होय तो ज्येष्ठ मास पण विरुद्ध (छाशुज) नथी."

मूळ श्लोकमां त्रणे कार्यों कह्यां छे ते दीका १, प्रतिष्ठा २ अपने विवाह ३ समजवां. तथा "मासाहर्जेषु" एटखे जन्म संबंधी मास, दिवस (तिथि) अपने नक्त्रने विषे विवाह विगेरे वर्जवा. अहीं विवाहमां वर कन्याना, दीकामां शिष्यना अने प्रतिष्ठामां स्थाप-कना मासादिक वर्जवा एम स्वयं जाणी लेवुं. केटलाएक कहे छे के—'जो पक्ष (पखवानीयुं) जूदो होय तो जन्ममास पण विरुद्ध नथी. जन्मतिथि पण दिवस अने रात्रिना विजागना विपर्यासे करीने अविरुद्ध छे. (एटले के जो (तिथिनी) रात्रीए जन्म होय तो दिवस विरुद्ध नथी, अने दिवसे जन्म होय तो रात्रि विरुद्ध नथी.) जन्मनक्त्र पण राशिनुं जिन्नपणुं होय तो ते शुजज छे, एटले अशुज (विरुद्ध) नथी. (जेमके कृत्तिकाना पहेला पादमां जन्म होय तो ते मेष राशि छे,माटे कृत्तिकाना बीजा, त्रीजा के चोथा पादमां वृष राशि होवाथी ते त्रण पाद शुज छे.) आ त्रणे बाबत विषे व्यवहारसारमां कह्यं छे के—

''जन्ममासि विपरीतपद्योर्घ्यत्यये दिननिशोर्जनुस्तिथौ । जन्मजेऽपि किल राशिजेदतः, पाणिपीमनविधिर्न छुष्यति ॥ १ ॥''

"जन्ममासमां जो विपरीत (जिन्न) पक्ष होय, जन्मनी स्थितिमां जो दिवस रात्रिनो विपरीय (छलटपालट) होय अने जन्मनक्षत्रमां पण जो राशिनो जेद होय तो पाणियहणनो विधि द्वषण पामतो नथी."

अथवा तो एक (समान) पक्तमां पण आ रीते जन्ममास पण विरुष्ट नथी—शुक्ख पंचमीने रोज कार्य करवानी इला हे, अने शुक्ल अष्टमी जन्मतिथि हे. आ प्रमाणे होय तो दोष नथी, कारण के ते पुरुषनो जन्ममास शुक्ल अष्टमीथी शरु थाय हे, तेथी शुक्ल पंचमी तत्त्वथी जिन्न मासमांज रहेली गणाय, पण जो आथी विपरीत होय (एटले के शुक्ल पंचमीनो जन्म होय अने शुक्ल अष्टमीए कार्य करवं होय) तो जन्ममासनो दोष लागेज हे आ प्रमाणे ज्योतिषना विदानो कहे हे ज्यवहारप्रकाशमां तो आ प्रमाणे कहुं हे.—''शुज (सौम्य) यह वळवान् श्रश्ने केन्डस्थानमां रह्यो होय तो जन्मनद्दत्र पण श्र्षित नथी. ते विषे कहुं हे के—''नो जन्मजं च कार्य विलिन शुजं केन्ड्रगे सौम्ये" ''सौम्य यह बळवान् श्रश्ने केन्ड्रमां रह्यो होय तो शुज कार्य करवुं. तेमां जन्म-नद्दत्रनो दोष नथी."

> हवे दिनशुक्तिं जूदी कहे हे.— सादिमं प्रहणस्थाहः सप्ताहं च तदप्रतः । त्यजेचिंशांशमेकैकं प्राक् पश्चाचापि संक्रमात् ॥ ७ ॥

श्चर्य—श्चादिना दिवस सहित ग्रहणनो दिवस तथा तेनी पठीना सात एम नव दिवसो वर्जवा तेमज संकांतिनी पहेलानो तथा पठीनो एक एक त्रिंशांश तजवो. श्चर्यात् कुल त्रण दिवस वर्जवा.

विस्तरार्थ—स्त्रादि सहित एटले चतुर्दशी सहित. केटलाएक त्रयोदशीने पण वर्जे हे. तेर्ड कहे हे के—

"त्रयोदशीतो दशाहं सूर्येन्ड्यहणे त्यजेत्।"

"सूर्य अने चंजना ब्रहणमां त्रयोदशीथी आरंजीने दश दिवस वर्जवा." ब्रहणनी पढीना सात दिवस वर्जवाना कह्या हे, तोपण तेमां आ प्रमाणे विशेष जाणवो.—

"सर्वयस्तेषु सप्ताइं पञ्चाइं स्याद्दवयहे । त्रिस्त्रेकार्धाङ्कवयासे दिनत्रयं विवर्जयेत् ॥ १ ॥"

"ग्रहणमां सर्व ग्रास (खग्रास) थयो होय तो पठीना सात दिवसो तजवा, अर्ध ग्रास थयो होय तो पांच दिवस तजवा, तथा त्रण, बे, एक के अर्ध आंगळ ग्रास थयो होय तो त्रण दिवस वर्जवा." आ अंगिरानुं वचन हे.

वली दैवक्रवद्वजमां आ प्रमाणे विशेष कह्यो हे.-

"राहाँ दृष्टे शुजं कर्म वर्जयेदिवसाष्टकम् । त्यक्तवा वेतालसंसिद्धिं पापदंजमयं (जयदं) तथा ॥ १॥"

"राहुनुं दर्शन थाय त्यारथी आठ दिवस सुधी शुज कर्म वर्जेबुं जोइए, परंतु वेताल (जूत-प्रेतादिक)नुं साधन तथा पाप अने दंजमय एवुं अशुज कर्म (अथवा पाप देनारुं अने जय देनारुं अशुज कर्म)विना, एटले के तेवां कर्ममां वर्जवाना नथी.

१ पापदं भयदं पाठांतरः

मूळ श्लोकमां त्रिंशांश एटले संक्रांतिना मासनो त्रीशमो जाग एटले सामान्ये करीने एक दिवस. संक्रांतिना दिवसनी पहेलानो अने पठीनो एक एक दिवस तथा संक्रांतिनो दिवस एम त्रण दिवस वर्जवा. ते विषे हरिजबसूरि पण कहे हे के—

"संकंतीए पुर्व संकंतिदिएं तयग्गिमं च दिएं। विक्रकंतिण्"

"संक्रांतिनो पूर्व दिवस, संक्रांतिनो दिवस अने तेनी पठीनो दिवस वर्जवो." नार-चंद्रमां पण कह्यं वे के—

"त्यज संक्रमवासरं पुनः सह पूर्वेण च पश्चिमेन च।"

"पूर्वना अने पढ़ीना दिवस सहित संकांतिनो दिवस तुं तज."

"श्रत्यंत आवश्यक तथा जतावळना कार्यमां जो त्रण दिवसनो त्याग न थइ राके तो संक्रमणसमयनी पूर्वनी अने प्रजीनी सोळ सोळ घनी अवश्य तजवी" एम घणा आचार्योनो मत है

जडार्धयामगएमान्तकु तिकोत्पातङ्क्षितम्। दिनं तपिस राकां च स्थापने च कुजं त्यजेत्॥ ए॥

अर्थ-ज्ञा, अर्धे प्रहर, गंनांत, कुलिक अने जत्पाते करीने इपित एवा दिवसनो त्याग करवो, तथा दीकामां पूर्णिमानो त्याग करवो, अने प्रतिष्ठामां मंगळवारनो त्याग करवो.

विवेचन—ज्ञा विगेरे असाध्य दोषोए करीने लग्न पण हणाय हे एटले इषित श्राय हे. ते विषे विवाहवृंदावनमां कहां हे के—

> "गंमान्तेषु सवैधृतावुजयतः संक्रान्तियामद्ये, यामार्घव्यतिपातविष्टिकुलिकेर्जमं विलमं जगुः।"

"श्चर्ध प्रहर, व्यतिपात, विष्टि (जड़ा) अने कुलिके करीने सहित लग्नने तथा गंकांतमां, वैधृतिमां अने संक्रांतिना पूर्वना अने पढ़ीना वे पहोरमां रहेल लग्नने जग्न (नाश) कहे हें."

मूळ श्लोकमां जत्पात लख्यो हे ते पूर्वे वर्षन करेला पृथ्वी संबंधी विगेरे जत्पातो जाणवा. सारंग तो जत्पातमां पांच दिवस तजवानुं कहे हे ते आ प्रमाणे—

''निर्घातोस्कामहीकंपग्रहजेदादिदर्शने । श्रा पञ्चवासराञ्चढा नाशमाप्तोति कन्यका ॥ १ ॥''

"निर्धात, छहकापात, पृथ्वीकंप अने ब्रहनो नेद ए विगरे जत्पातो जोवामां आवे त्यारथी पांच दिवस सुधीमां जो कन्या विवाहित थइ होय तो ते मृत्यु पामे हे." तथा— "दम्पत्योः सह मरणं पाणिब्रहणोदिते केतौ।"

आ॰ ३७

"पाणिग्रहणने दिवस जो केतुनो छदय होय तो घर बहुनुं साथेज मरण श्राय." दीह्यामां पूर्णिमा तजवानुं मूळ श्लोकमां कह्यं हे, पण प्रतिष्ठामां तेनो त्याग नश्री. तेने माटे नारचंद्रमां कह्यं हे के—

"त्र्येकिदितीयपञ्चमदिनानि पक्तद्येऽपि शस्तानि । शुक्लेऽन्तिमत्रयोदशदशमान्यपि च प्रतिष्ठायाम् ॥ १ ॥"

"प्रतिष्ठामां बन्ने पहानी त्रीज, एकम, बीज आने पांचम एटखा दिवसी शुज हो, तथा शुक्ल पहानी होत्री (पूर्णिमा), तेरश आने दशम पण शुज हो."

मूळ श्लोकमां स्थापने एटले सर्व प्रतिष्ठामां मंगळवार वर्ज्य हे. ते विषे रत्नमालामां

कह्यं हे के-

''तेजस्विनी १ केमक २ दिन्नदाहिवधायिनी ३ स्यादरदा ४ दृढा च ५ । आनन्दक ६ त्कहपनिवासिनी ७ च, सूर्यादिवारेषु जवेत् प्रतिष्ठा ॥ १ ॥"

"रिववारे प्रतिष्ठा करवाथी प्रतिमानुं तथा प्रतिष्ठा करावनारनुं तेज वृद्धि पामे हे. सोमवारे करेखी प्रतिष्ठा केम कुशळ करनारी थाय हे, मंगळवारे करवाथी अग्निदाह करनारी थाय हे, बुधवारे वर (मनवांहित) ने आपनारी थाय हे, गुरुवारे दृढ थाय है, शुक्रवारे आनंद करनारी थाय हे अने शनिवारे करेखी प्रतिष्ठा कहप पर्यंत एटले चंज सूर्य रहे त्यांसुधी स्थिर रहेनारी थाय हे. रिव विगेरेना खन्नमां तथा पडूरीमां पण प्रतिष्ठा करी होय तोपण तेनुं फळ आज प्रमाणे जाणी खेवुं एम रह्ममाखाना जाण्यमां कह्युं हे."

मूळ श्लोकमां "स्थापने च" ए स्थळे च शब्द हे माटे दीहा, विवाह अपने राज्याजिषेक विगेरे कार्योमां पण मंगळवारनो त्याग करवो. ते विषे यतिवक्षजमां कह्यं हे के—

"राजानिषेके वीवाहे सिक्यास च दीक्से।

धर्मार्थकामकार्थे च शुजा वाराः कुजं विना ॥ १ ॥"

"राजाना श्राजियेकमां, विवाहमां, शुज् क्रियामां, दीकामां तथा धर्म, अर्थ अने

कामना कार्यमां मंगळ सिवायना वीजा वारो शुज हे."

श्रीपतिए तो "विवाहमां रिव, मंगळ अने शनिवार दारिद्य तथा दौर्जाग्यने देनारा है, अने सोमवार सपत्नी (शोक)ने आपनार है" एम कह्युं है. दैवशवद्वजमां आ प्रमाणे विशेष कह्यों है.—

> "कृष्णपके निषिद्धेषु वारधिष्ण्यक्तसादिषु । संकीर्णानां प्रशंसन्ति दारकर्म न संशयः ॥ १ .॥"

"संकर जातिना वर कन्यानो विवाह कृष्ण पद्ममां अने निषेध करेखा वार, नद्मत्र तथा कृणादिकमां शुज्ज हो, तेमां कांइ संशय नथी."

हवे नकत्रनो नियम कहे हे .-

उद्दारे मृगपैत्रक्षें प्रतिष्ठायां तु ते उने । सादित्यपुष्यश्रवणधनिष्ठानिः समं छुने ॥ ए॥

अर्थ—विवाहमां मृगरीर्ष अने मघा ए वे नहत्रो शुत्र हे, अने प्रतिष्ठामां पुनर्वसु, प्य, श्रवण अने धनिष्ठा सहित ते वे एटले मृगरीर्ष अने मघा पण शुत्र हे, एटले के गार नहत्रो शुत्र हे.

विवेचन-अहीं प्रतिष्ठा एटखे प्रस्तावथी जिनविंव विगेरेनी प्रतिष्ठा जाणवी. बीजा

बोनी प्रतिष्ठामां तो नक्त्रोनो नियम रत्नमालामां आ प्रमाणे कह्यो छे.—

"रोहिण्युत्तरपौष्णवैष्णवकरादित्याश्विनीवासवा-नुराधेन्दवजीवजेषु गदितं विष्णोः प्रतिष्ठापनम् । पुष्यश्चत्यजितिसम् चेश्वरकयोर्वित्ताधिपस्कन्दयो-

मेंत्रे तिग्मरुचेः करे निर्कतिजे छुर्गादिकानां शुजम् ॥ १ ॥"

"विष्णुनी प्रतिष्ठा रोहिणी, त्रणे उत्तरा, रेवती, श्रवण, हस्त, पुनर्वसु, अश्विनी, नेष्ठा, श्रव्यापा, मृगर्शार्ष तथा पुष्य, आटलां नक्षत्रोमां शुज कहेली हे. महादेव ने ब्रह्मानी प्रतिष्ठा पुष्य, श्रवण श्रने अजितित नक्षत्रमां शुज हे. कुवेर श्रने कार्तिक मिनी प्रतिष्ठा श्रव्यापामां शुज हे. सूर्यनी प्रतिष्ठा हस्त नक्षत्रमां शुज हे, तथा प्रणा के देवताश्चोनी प्रतिष्ठा मूळ नक्षत्रमां शुज हे." श्रहीं सूर्यनी प्रतिष्ठा हस्त नक्षत्रमां शिते संक्षेपश्ची कह्यं हे. ते विषे जीमपराक्षम प्रथमां विस्तारथी श्रा प्रमाणे कह्यं हे.—

"प्रगधिष्यचतुष्केण मैत्राहिर्बुधपूषजैः। सपुनर्वसुनिः कुर्यात् प्रतिष्ठामुष्णरोचिषः॥ १॥"

"ज्ञग नक्षत्रथी चार एटखे पूर्वाफाहगुनी, उत्तराफाहगुनी, इस्त छाने चित्रा, तथा विद्या सहित छानुराधा, उत्तराजाइपद छाने रेवती, छा छाउ नक्षत्रोमां सूर्यनी प्रतिष्ठा थी." उपरना श्लोकमां दुर्गादिकानां ए पदमां छादि शब्द होवाथी जूत, यक्ष, गण सर्प विगेरेनी प्रतिष्ठा पण मूळ नक्षत्रमां करवी. तथा—

"गणपरिवृहरक्षोयक्षज्ञतासुराणां, प्रथमफिणसरस्वत्यादिकानां च पौष्णे।
अविस सुगतनाम्नो वासवे खोकपानां,निगदितमिखदानां स्थापनं च स्थिरेषु॥ २॥"
"गण, परिवृद्ध, राक्षस, यक्ष, जूत, असुर, शेषनाग अने सरस्वती विगेरेनी प्रतिष्ठा
ती नक्षत्रमां करवी. सुगत (बौक्ष)नी प्रतिष्ठा श्रवण नक्षत्रमां करवी, खोकपाळोनी
ष्ठा धनिष्ठामां करवी, अने बीजा समग्र इंद्रादिक देवोनी स्थापना स्थिर (रोहिणी,
राषाढा, जत्तराफाहगुनी अने जत्तराजादपद) नक्षत्रोमां करवी." तथा—

"सप्तर्षयो यत्र चरन्ति धिष्ण्ये, कार्या प्रतिष्ठा खद्ध तत्र तेपाम् । श्रीव्यासवास्मीकिघटोज्ञवानां, तथा स्मृता वाक्पतिचे प्रहाणाम् ॥ ३ ॥" "सप्तर्षिणं जे नक्षत्रमां चालता होय तेज नक्षत्रमां तेमनी प्रतिष्ठा करवी, तथा श्रीव्यास, वाहमीिक अने अगस्त्यनी प्रतिष्ठा पण तेज नक्षत्रमां एटले जे नक्षत्रमां सप्तिषे होय तेमांज करवी, तथा प्रहोनी प्रतिष्ठा पुष्य नक्षत्रमां अने पोतपोताना वारमां करवी." अहीं सप्तिषें जे नक्षत्रमां चाले हे एम कहां तेनो जावार्थ आ प्रमाणे हे.—

"श्रासन्मघासु मुनयः शासित राज्यं युधिष्ठिरे नृपतौ । पड्डिकपञ्चिद्ध १५१६ मितः शककालस्य राङ्गश्च ॥ १ ॥ एकैकस्मिन् धिष्णये शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम् । प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्ते ससाध्वीकाः ॥ २ ॥"

"युधिष्ठिर राजा राज्य करता इता त्यारे सप्तिष्ठिं मद्या नक्षत्रमां इता ते राजाना शक्तो काळ १५१६ वर्षनो हतो, एटले के ते राजानी पत्नी १५१६ वर्ष गयां त्यारे शालिवाहननो शक प्रवर्त्यों हवे ते सप्तिष्ठिं सो सो वर्षे एक एक नक्षत्रमां चाले हे, एटले के एक नक्षत्रमां तेर्जनी सो वर्ष सुधी स्थिति हे, तेथी करीने शकना प्रारंजे तेर्ज पुष्य नक्षत्रमां हता एम सिद्ध थयुं. ए सप्तिष्ठिं छहंधती सहित निरंतर ईशानमां उदय पामे हे." छा सप्तिष्ठिंना जदयनी व्यवस्था छा प्रमाणे हे.—

"पूर्वे जागे जगवान्मरीचिरपरे स्थितो वशिष्ठोऽस्मात् । तस्याङ्गिरास्ततोऽत्रिस्तस्यासन्नः पुद्धस्त्यश्च ॥ १ ॥ पुद्धहः कतुरिति जगवानासन्नानुक्रमेण पूर्वोद्याः । तत्र वशिष्ठं मुनिवरमुपस्थिताऽरुन्धती साध्वी ॥ २ ॥"

"पूर्व जागे जगवान् मरीचि रहेखा है, तथा पश्चिम जागे विशिष्ठ रहेखा है, तेनी समीपे छांगिरा, तेनी समीपे छात्रि, तेनी समीपे पुखस्त्य, तेनी समीपे पुखह छाने तेनी समीपे जगवान् कतु रहेखा है. छा प्रमाणे समीपना छानुक्रमे करीने पूर्व पश्चिम जागे तेच रहेखा है. तेमां विशिष्ठ मुनिवरनी समीपे साध्वी (सती) छारंधती रहेखी है." छा सप्तिषेंनुं स्वरूप वराहसंहितामां कहेलुं है. तथा—

"स्वतिश्विक्तणुनक्त्रकरणेषु न्यसेत्सुरान् । वापीकृपतमागाद्यं न्यसेष्परुणदैवते ॥ १ ॥ श्रहिर्बुभाधिपे लेप्यमारामाद्यं तथाऽनिले । गृहस्थापनयोगा ये तानप्यत्र विचिन्तयेत् ॥ २ ॥"

"देवोने पोतानी तिथि, ऋण, नक्त्र अने करणमां स्थापन करवा, वाव, कूवा, तळाव विगेरेने शतिज्ञषक् नक्त्रमां स्थापन करवा, लेप्य मूर्तिने जत्तराजा इपदमां स्थापन करवी, वगीचा विगेरेने स्वाति नक्त्रमां स्थापन करवा, तेमज घरने स्थापन करवामां जे योगो कह्या वे ते पण श्रहीं विचारवा." श्रा प्रमाणे दैवज्ञवक्षणमां कह्यं वे. श्रा श्रम्य देवो विगेरेनी प्रतिष्ठा विगेरेनुं स्वरूप ज्योतिषना विदानोने संमत वे, मादे प्रसंगने लीधे खख्युं वे.

दीक्तायां त्वाश्विनादित्यवारुणश्चतयः शुजाः। त्रिषु मैत्रं करं स्वातिर्मूलः पौष्णं ध्रुवाणि च ॥ १०॥

अर्थ—अश्वनी, पुनर्वसु, शतिषक् अने श्रवण, ए नक्त्रो दीकामां शुन्न हे. अनु-राधा, इस्त, स्वाति, मूळ, रेवती अने ध्रव (रोहिणी अने त्रणे उत्तरा),ए नक्त्रो त्रणेमां एटखे प्रतिष्ठा, दीका अने विवाहमां शुन्न हे.

विस्तरार्श्र—दिनशुद्धि विगेरे ग्रंथमां पूर्वजादपद अने पुष्यमां पण दीका कही है.

कद्यं हे के-

''जत्तररोहिणिहत्याणुराहसयजिसयपुबजद्वया । पुस्सं पुण्वसुरेवइ मृलास्सिणि सवणसाइ वए ॥ १ ॥"

"त्रणे उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, शतिषक्, पूर्वजाषपद, पुष्य, पुनर्वसु, रेवती, मूळ, अश्विनी, श्रवण अने स्वाति, श्राटलां नक्त्रो त्रत (दीका)मां शुज हे." तथा—
"मृगचित्राधनिष्ठान्यमृष्ठित्रचरध्रवैः।

शिष्यस्य दीक्षणं कार्यं तथा मूखाजपादयोः ॥ १ ॥"

"मृगशिर, चित्रा, धनिष्ठा विना, मृड, किय, चर अने ध्रुव संकावाळां नक्त्रोमां यथा-मृड (अनुराधा, रेवती), किय (पुष्य, अजिजित, इस्त, अश्विनी), चर (अवण, स्वाति, पुनर्वसु), ध्रुव (रोहिणी, त्रण उत्तरा) तथा मूळ अने पूर्वजाइपद, ए नक्त्रोमां शिष्यने दीका आपवी "

मूळ श्लोकमां त्रिषु लख्युं हे तेनो अर्थ प्रतिष्ठा, दीका अने विवाह ए त्रणे कार्यो

जाणवां. ते त्रणे कार्योनां नक्त्रोनी स्थापना आ प्रमाणे-

जैनप्रतिष्ठा	रो॰	मृष	पुण	पुण	I	ंड ∘ फा ॰	ह॰	स्वाव	श्रनु∘		छ □ षा □	श्रव	ម្ន	ত ০ সা ০	रेंग
दीक्रा	ऋष	रोष	पुन	जि० फा∘		स्व(॰	ऋनु¤	मू∘	ख¤ षाण	श्रष	३ा०	ভ ¤ না ¤	रे□	ū	ū
विवाह	रो०	मृ॰		ভ ¤ দ্যা ¤		स्वा०	अनु ०	मू∘	ত ভ			ū	8	0	0

विवाहनां नक्तत्रोमां विशेष कहे हे .--

स्त्रियः प्रियस्वमुद्धाहे मूलाहिर्बुध्नवैश्वजैः।

पौष्णब्राह्ममृगैः पुंसां मिथः शेषेस्तु पञ्चनिः ॥ ११ ॥

श्चर्य—मूळ, जत्तराजाइपद के जत्तरापाढा नक्षत्रमां विवाह श्रया होय तो स्त्रीनुं प्रियपणुं श्राय हो, रेवती, रोहिणी श्चने मृगशिरमां विवाह श्रया होय तो पुरुषनुं प्रियपणुं श्राय हो, तथा बाकीनां पांच नक्षत्रोमां विवाह श्रया होय तो बन्नेनुं परस्पर प्रियपणुं श्राय हे.

विस्तरार्थ—स्त्रीनुं प्रियपणुं एटले के पुरुषने स्त्री जेटली वहाली लागे तेटलो पुरुष स्त्रीने वहालो न लागे, स्त्रश्चीतुं सारुं सौजाग्य होया स्त्रा विगरे वण नहत्रो पूर्वे नहत्रना स्त्रिधिकारमां चंद्रनी साथे उत्तरार्धना योगवाळां कह्यां हे. पुरुषनुं प्रियपणुं स्त्राय हे एटले स्त्रीने पुरुष वहालो लागे हे, पण पुरुषने स्त्री तेवी वहाली लागती नस्त्री, स्त्रश्चीतुं सेवुं सौजाग्य न होया स्त्रा रेवती विगरे वण नहत्रो पूर्वार्धना योगवाळां नहत्रोमां गणाव्यां हो बाकीनां पांच एटले मधा, उत्तराफाहगुनी, हस्त, स्वाति स्त्रने स्त्रनुराधा, स्त्रा पांच नहत्रो मध्यम योगवाळां कह्यां हो स्त्रा स्त्रीयार नहत्रोज विवाहनां होवासी बाकीनां नहत्रो स्त्रहीं गणाव्यां नस्त्री वळी दैवहवहज्ञमां कह्यं हे के—

"वह्नजः स्यान्नरो नार्या बिह्नजिः पुरुषप्रहैः। स्त्रीप्रहैः पुरुषस्य स्त्री सर्वैः प्रेमोजयोरिय ॥ १ ॥"

"विवाहना तम्मां पुरुषना महो बळवान् होय तो स्त्रीने पुरुष वधारे प्रिय तागे, श्रमे स्त्रीना महो बळवान् होय तो पुरुषने स्त्री वधारे प्रिय तागे, तथा बन्नेना महो बळवान् होय तो परस्पर प्रेम रहे."

वर्णकायं विवाह कें कुमार्या वरणं पुनः। स्वातिपूर्वानुराधानिवेंश्वत्रयहुताशनैः॥ १२॥

अर्थ-वर्णक विगेरे कार्य विवाहनां नक्तत्रमां करवां, अने कुमारीनुं वरण (वेसवाळ) स्वाति, त्रण पूर्वा, अनुराधा, वैश्वत्रय (जत्तरापाढा, अवण अने धनिष्ठा) तथा कृत्तिका नक्तत्रमां करवुं

विस्तरार्थ—वर्णक एटले जींत विगेरे पर चित्रनुं कर्म करतुं ते, अथवा वर वहुनुं वर्णक नामनुं मंगळकर्म हे ते. वर्णकाद्यं ए पदमां आद्य शब्द लख्यो हे, तेथी नीचेना श्लोकमां कहेलां कुसुंजादिक सर्व विवाहनां कार्यो विवाहनांज नक्त्रोमां करवां.

खग्नाद्वीग्न कुवीत त्रिषष्टनवमे दिने । कुसुंजमंनपारंजवेदीवर्णयवारकान् ॥ १३॥

अर्थ-लग्नना दिवसनी पहेलां त्रीजे, उठ के नवमे दिवसे कुसुंज, मंनपनी आरंज, वेदिका, वर्षक अने यवारक (जुवारा वाववा ते) तथा जपलक्षणथी कन्यानुं वरण आदिक कार्यो करवां नहीं.

नान्ये प्रतिष्ठां जन्मईं दशमे षोमशे च ने । अष्टादशे त्रयोविंशे पश्चविंशे च मन्वते ॥ १४ ॥

अर्थ—केटलाक आचार्यो प्रतिष्ठा करवा लायक प्रतिमा अने प्रतिष्ठा करावनार ए वन्नेना जन्मनक्त्रमां जन्मनक्त्रनुं ज्ञान न होय तो नामनक्त्रमां तथा ते जन्म-नक्त्रथी दशमा, सोळमा, अढारमा, त्रेवीशमा अने पचीशमा नक्त्रमां प्रतिष्ठाने मानता नथी (प्रतिष्ठा करवानी संमति आपता नथी).

श्रीहरित्रष्रसूरि तो न्ना प्रमाणे कहे हे.— "कारावयस्स जम्मण रिकं दस सोलसं तहरारं तेवीस पंचवीसं बिंवपइठाइ विकक्ता ॥ १॥"

"प्रतिष्ठा करावनारनं जन्मनक्त्र तथा ते जन्मनक्त्रथी दशमुं, सोळमुं, श्रदारमुं, हेवीशमुं श्रने पचीशमुं, एटलां नक्त्रो विंवनी प्रतिष्ठामां तजवां." (श्रश्रीत् विंवनां जन्मादिक नक्त्रो तजवानां कह्यां नथी.)

विशेषमां आ नक्षत्रोनी संज्ञा आ प्रमाखे हे.—
"जन्माद्यं दशमं कर्म संघातं षोक्तशं पुनः ।
आष्टादशं समुद्यं त्रयोविंशं विनाशजम् ॥ १ ॥
मानसं पञ्चविंशं जमिति पङ्गोऽिखदाः पुमान् ।
जातिदेशाजिषेकैश्च नव धिष्णयानि जूपतेः ॥ २ ॥"

"पहेलुं नक्त्र जन्म नामनुं हो, दशमुं कर्म नामनुं, सोळमुं संघात नामनुं, श्रदारमुं समुदय नामनुं, त्रेवीशमुं विनाश नामनुं श्रने पचीशमुं नक्त्र मानस नामनुं हो. ए प्रमाणे समग्र पुरुष हा नक्त्रवाळो हो. तथा जातिनक्त्र, देशनक्त्र श्रने श्रजिषेक-नक्त्रे करीने राजानां नव नक्त्रो हो."

जातिनक्षत्रो आ प्रमाणे हे.—
"विप्राणांकृत्तिकापूर्वा राज्ञां पुष्यस्तयोत्तराः ३ ।
सेवकानां धनिष्ठैन्छचित्रामृगशिरांसि च ॥ १ ॥
छप्राणां जानि वायव्यमूलार्धाशततारकाः ।
कर्षकाणां मधाः पौष्णमनुराधा विरिध्यजम् ॥ २ ॥
विण्जामित्र्वनी हस्तोऽजिजिता (दा) दित्यमेव च ।
चंमालानां श्रुतिः सार्पं यमदेवं दिदैवतम् ॥ ३ ॥"

"ब्राह्मण जातिनां नक्त्रो कृत्तिका तथा त्रण पूर्वा हे, राजार्छनां पुष्य तथा त्रण उत्तरा हे, सेवक जातिनां धनिष्ठा, ज्येष्ठा, चित्रा छने मृगशिर हे, उद्य जातिनां स्वाति, मूळ, आर्जा अने शततारका है, कर्षक (खेरुत) जातिनां मघा, रेवती, अनुराधा अने रोहिणी हे, विणक् जातिनां अश्विनी, हस्त, अजिजित् अने पुनर्वसु हे, तथा चंनाळ जातिनां अवण, अश्वेषा, जरणी अने विशाखा हे."

देशनक्त्रो पद्मचक्रमां आप्यां हे ते जाएवां, अने राज्याजिषेकनुं जे नक्त्र ते अजिषेकनक्त्र जाएवुं. (ते विषे आगळ ७६ मा श्लोकमां कहेशे.)

श्रहीं कोइ इंका करे के—''जन्मनक्त्रादिकनो त्याग शामाटे करवो ?'' तेनों जवाब कहे हे—"प्राये करीने नक्त्रों कूर प्रहादिकवमें पीमाय हे, माटे जो इष्ट पुरुषनां जन्मनक्त्रादिक प्रतिष्ठादिक कार्यने विषे खेवामां आवे तो ते (जन्मनक्त्रादिक) कूर प्रहादिकवमें पीमा पामवाथी ते पुरुषनुं अनिष्ट श्राय हे, अने जो ते (जन्मनक्त्रादिक) खेवामां न आवे तो ते नक्त्र पीमा पाम्यां हतां पण अनिष्ट फळ देवामां समर्थ थतां नथी" एम शी रीते जाण्वुं १ ए शंका पर जवाब आपे हे के—

"विखग्नस्थोऽष्टमो राशिर्जन्मलग्नात् सजन्मजात् । न शुज्जः सर्वकार्येषु लग्नाचन्द्रस्तथाष्टमः ॥ १ ॥"

"जनसलग्नथी के जनमनक्षत्रथी गणतां आठमो राशि जो लग्नमां रह्यो होय तो ते सर्व कार्योमां शुज नथी, तथा लग्नथी आठमे स्थाने चंज होय तो ते पण शुज नथी." इत्यादिक दैवज्ञवद्वजमां कहां हे.

जेम आवा प्रकारना खग्नादिक योगो घणीवार मळे छे, परंतु तेर्च कांइ पण अनिष्ट फळ दइ शकता नथी, पण ज्यारे तेर्च (योगो) यात्रादिकमां आवे छे त्यारे प्राये करीने अवस्य अनिष्ट फळ आपे छे. तेज प्रमाणे अहीं पण जाणवुं.

जन्मनक्त्रादिक नवे नक्त्रनी पीमा तथा तेमनुं फळ था प्रमाणे कहां हे.---

"केत्वर्काकिंजिराकान्तं जीमवक्रजिदाइतम् । जन्नाग्रहणदग्धं च नवधाऽपि न जं शुजम् ॥ १ ॥"

"केतु, सूर्य अने शनिए आक्रमण करेखुं नक्तत्र, मंगळे, वक ग्रहे अने जिदाए (जिन्न नक्तत्रे)हणेखुं नक्तत्र, तथा जहकानुं नक्तत्र, ग्रहणनुं नक्तत्र अने दग्ध नक्तत्र, ए नव प्रकारनुं नक्तत्र शुज्ज नथी." (अर्थात् आ नक्तत्रो पीका पामेखां न्हणायेखां कहेवाय हे.)

> "देइविनाशो जन्मईपीमने कर्मण्थ कर्मर्शे । जत्सववांधवनाशौ समुदयसंघातयोईतयोः॥ २ ॥"

"जन्मनक्षत्र पीका पाम्युं होय तो शरीरनो नाश थाय, कर्मनक्षत्र पीकायुं होय तो कर्म (कार्य) नो नाश थाय, समुदयनक्षत्र हणायुं (पीका पाम्युं) होय तो श्रोष्ठवनो नाश थाय, श्राने संघातनक्षत्र हणायुं होय तो वंधुनो नाश थाय."

"स्वतनुविनाशो वैनाशिके इते मानसे मनस्तापः। कुलदेशस्त्रीनाशो जातिजदेशाजिषेकेषु॥ ३॥"

"विनाशनक्त्र हणायुं होय तो पोताना शरीरनो नाश थाय, मानसनक्त्र हणायुं होय तो मनमां संताप (उदेग) थाय, जातिनक्त्र हणायुं होय तो कुळनो नाश थाय, देशनक्त्र हणायुं होय तो देशनो नाश थाय हे, अने अजिषेक-नक्त्र नाश पाम्युं होय तो स्त्रीनो नाश थाय है."

अजिषेकनकत्र तथा देशनकत्र आ प्रमाणे हे.—
''राज्याजिषेकदिवसेऽजिषेकधिष्णं च देशनकत्रम् ।
पद्मविजागे क्रेयं प्रादिक्षियेन जूमध्यात् ॥ ध ॥''

''राज्याजिषेकने दिवसे जे नक्त्र होय ते श्रजिषेकनक्त्र जाण्डुं, श्रने पृथ्वीना मध्य जागधी प्रदक्षिणाना क्रमे पद्मचक्रना विजागमां देशनक्त्र जाण्डुं." (एटखे के पृथ्वीना मध्य जागधी जे दिशा के विदिशामां जे देश होय ते दिशा के विदिशामां पद्मचक्रने विषे जे नक्त्रो होय ते देशनक्ष्त्रो जाण्डां.)

्यद्मचऋनी स्थापनानी रीत छा प्रमाणे हे.—

"कर्णिकाष्टदलैराड्ये पद्मे नाजौ दक्षेषु च । प्राच्यादिस्थेषु जानीह न्यस्याग्निजत्रयादितः॥ ५॥"

"कर्णिका (नाजि) तथा आठ पांलकी सहित एक पद्म (कमळ) करबुं, तेनी नाजिने विषे तथा पूर्वादिकना अनुक्रमे रहेखी पांलकी छने विषे कृत्तिकाथी आरंजीने त्रण त्रण नक्षत्रो मूकवां."



आ० ३८

"त्रितयैराग्नेय्याचैः ऋरग्रहपीिकतैः क्रमेण नृपाः । पाञ्चालो १ मागिधकः २ कालिंगश्च ३ क्तयं यान्ति ॥ ६ ॥ स्रावन्त्यो ४ ऽश्चानर्तो ५ मृत्युं चायाति सिन्धुसौवीरः ६ । राजा च दारहरो ७ महेशो ० ऽन्यश्च कौणिन्दः ए॥ ७ ॥"

"कृत्तिकादिक त्रण नक्त्रों जो कर प्रहवमे पीमायेख होय तो पांचाल देशनो राजा नाज्ञ पामे हे. १ एज प्रमाणे पूर्व दिशा विगेरेना अनुक्रमे रहेलां नक्षत्रो पीनायेलां होय तो अनुक्रमे मगध देशनो राजा २, कलिंगनो राजा २, अवन्तीनो राजा ४, आनर्तनो राजा ए, सिंधुसौवीरनो राजा ६, हारहूरनो राजा ७, मद देशनो राजा ७, अने कोणिंद देशनो राजा ए, क्य पामे हे." (एटले के पूर्व दिशामां रहेलां आर्धादिक त्रण नक्तत्रो पीमायां होय तो मगध देशनो राजा नाश पामे हे, अग्नि खुणामां रहेखां अश्लेषादिक त्रण नक्तत्रो पीमित होय तो कलिंग देशनो राजा क्य पामे हे. ए रीते ईशान सुधी जाणवं.) आ जपर कहेला देशो अनुक्रमे कर्णिका (नाजि)ने विषे तथा पूर्व, अग्नि, दिहाण विगेरे आठ दिशार्जनी पांलफीर्जने स्थाने रहेला हे, तेथी ते ते नक्त्रो पीमायाथी ते ते देशना राजानो छय थाय हे. आ देशाधिपना नामनी गणतरी मात्र दिशानेज जहेशीने करी है, तेथी जपर प्रमाणे नव खंमवेम कहपना करेखी आ आखी पृथ्वीने विषे जे जे खंममां जे जे देशो रहेखा होय ते ते देशो (देशाधिपतिष्ठं) ते ते नक्त्रो पीना पामवाथी पीनाय हे-नाश पामे हे एम जाएी खेवुं. नरपतिजयचर्यामां तो आ पद्मचक्रने वेकाणे कूर्मस्थापना करीने पण आज जावार्थ वर्णव्यो हे. केटलाक आचार्यी जन्मनक्त्रतीज जेम श्रोगणीशमुं श्राधान नक्त्र पण कूर प्रहवने पीना पाम्युं होय तो ते प्रवास आपनार होवाथी तेने वर्जे हे. आ सर्व हकीकत सक्षे रचेसा रलकोशमां सखेसी हे.

ग्रहनुं दृष्टपणुं होय तो नवांशे करीने शुद्ध एवं पण लग्न अशुद्ध (अशुज)ज हे, एम सप्तापिए कहे हुं होवाथी यथोक्त नक्षत्रोना दोषनो प्रकार कहे हे.—

कूरेण मुक्तमाकान्तं जोग्यं यहणजं तथा। इष्टं यहोदयास्ताज्यां यहैर्जिन्नं च जं खजेत्॥ १५॥

अर्थ-कर यहे मूकी दीधेलुं नक्त्र, आक्रमण करेलुं नक्त्र अने जोग्य नक्त्र, तथा यहणनुं नक्त्र, यहोना जदय अने अस्तवने दोष पामेलुं नक्त्र अने यहोए जेदेलुं नक्त्र, आटलां नक्त्रो तजवा योग्य हे.

श्रहीं ग्रहनुं क्रूरपणुं स्वाजाविक जाणवुं, परंतु जेम श्रीणपणाए करीने चंद्रनुं क्रूरपणुं कह्यं ने श्रने पापग्रहनी साथे रहेवाथीज बुधनुं क्रूरपणुं कह्यं ने, एवं चपाधिथी श्रयेखुं क्रपणुं श्रहीं जाणवुं नहीं, तेथी श्रहीं ए जावार्थ थयो के जे नक्त्र कूर एटले रिव, मंगळ, शिन श्रने राहुमांथी कोइ पण यहे जोगवीने मूकी दीधेलुं होय ते नक्त्र, तथा श्राक्रमण करेलुं एटले तेज कूर यहे जोगवातुं नक्त्र, तथा जोग्य एटले तेज कूर यहे हमणां तरतज जोगववानुं होय ते नक्त्र, श्रा त्रण नक्त्रों तजवा योग्य कह्यां है. तेमनां फळ श्रा प्रमाणे सारंग कहे हे.

> "क्राश्रितक्र्रविमुक्तक्र्रगन्तव्यधिष्ण्येषु कुमारिकाणाम् । वदन्ति पाणिग्रहणे मुनीन्जा, वैधब्यमब्दैस्त्रिजिरत्रिमुख्याः ॥ १ ॥"

"कूर बहे आश्रित करेखुं (जोगवातुं), कूर बहे जोगवीने मूकी दीधेखुं अने कूर बहे गंतव्य एटखे हजु हवे जोगववातुं, ए त्रणमांश्री कोइ पण नक्त्रमां कुमारिकातुं पाणि-बहण (विवाह) कर्धुं होय तो ते कन्या त्रण वर्षनी अंदर विधवापणुं पामे वे एम अत्रि विगेरे मुनीं को कहे वे."

बीजा आचार्यों कहे हे के-

"तुक्तं जोग्यं च नो त्याज्यं सर्वकर्मसु सिद्धिदम् । यलात्त्याज्यं तु सत्कार्ये नक्तत्रं राहुसंयुतम् ॥ १ ॥"

"क्रूर ग्रहे जोगवेखं तथा जोगववानं एवं नक्त्रो सर्व कर्ममां सिद्धि आपनार होवाधी तजवा योग्य नथी, परंतु शुज कार्यने विषे राहुवके युक्त एवं नक्त्र अवस्य यहाधी त्याग करवा योग्य हे."

प्रह्णनक्त्र एटले के दिननक्त्रमां (दनइया नक्त्रमां) सूर्य के चंक्तुं प्रह्ण थयुं होय ते. ग्रह्ना छदय श्रमे श्रस्तवमे दोष पामेलुं नक्त्र एटले के दिननक्त्रमां ग्रहोनो छदय के श्रस्त थयो होय ते. श्रागमने विषे वक्त ग्रहे श्राक्रमण करेलुं (जोगवातुं) नक्त्र पण तजवा योग्य कर्लुं हे. "विड्डेरमवहारियं" "विद्वर नक्त्र एटले श्रपक्षारित नक्त्र तजवा योग्य हे." श्रहीं श्रपक्षारित एटले वक्त ग्रहे श्राक्रमण करेलुं एवो श्रर्थ हे. ग्रहोए जेदेलुं एटले जीम (मंगळ) विगेरे पांच ताराग्रहो कृत्तिका, रोहिणी विगेरे जे नक्त्रनेति वच्चे जेदीने जाय हे ते ग्रहिज्ञ कहेवाय हे. ते विषे लग्नशुष्टिमां कह्यं हे के— "मज्फेण गहो जस्स छ गन्नइ तं होइ गहिज्ञनंत्र" "ग्रह जेनी मध्ये श्रइने जाय हे ते ग्रहिज्ञ कहेवाय हे." नारचंक टिप्पणीमां तो एम लख्युं हे के— "जेना पर ग्रहोनी मानी तथा जमणी दृष्टि पमती होय ते ग्रहिज्ञ कहेवाय हे." श्रहीं दृष्टि जाणवाने माटे सात रेखावाळा चक्रनी जेम कृत्तिका नक्त्रश्री श्रारंजीने सात सात नक्त्रो चारे दिशामां स्थापवां. ते श्रा प्रमाणे—

Ī	कृ□	रो॰	मृ∘	श्चा 🛮	पुः	ã a	अ	_
ব								1
n N						;		94
₽ ~								0
0								20
اکھ					i 	İ		4
- Sign							<u> </u>	स्वाव विव
2					1	!		विव
-	علاه	eXi.o	<u> </u>	ďa	£۵	2540	e Ke	

त्यारपडी—

"यस्मिन् धिष्ण्ये स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं जवेत् ।
प्रहृष्टिप्रजावेण वामदिक्षणसम्मुखम् ॥ १ ॥
वक्रगे दिक्षणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीव्रगे ।
जीमादिपञ्चकस्य स्थान्मध्यदृष्टिश्च मध्यमे (गे)॥ १ ॥
राहुकेतू सदा वक्रौ सदा शीव्रौ विधूष्णग् ।
कूरा वक्रा महाकूराः सौम्या वक्रा महाशुजाः ॥ ३ ॥
वेधदयं जजित धिष्ण्यमिजारिदंष्ट्रासंस्थानदिग्दयगतोकुगतप्रहाज्याम् ।
एकं तथाऽजिमुखसंस्थितमध्यनासापर्यन्तजागधृतिधष्ण्यगतप्रहेण ॥ ४ ॥"

"जे नहत्रमां कोइ पण ग्रह रह्यो होय ते नहत्रश्री ग्रहनी दृष्टिना प्रजावने लीधे माबो, जमणो श्रमे सन्मुख एवा त्रण वेध श्राय है (१). तेमां जो वक गतिवाळो ग्रह होय तो तेनी जमणी दृष्टि पमे हे, शीध गतिवाळो होय तो तेनी माबी दृष्टि पमे हे, श्रमे मंगळ विगेरे पांचमांथी कोइ मध्य गतिवाळो होय तो तेनी मध्य एटले सन्मुख दृष्टि पमे हे (१). तेमां राहु श्रमे केतु ए वे ग्रहो निरंतर वक्र गतिवाळाज होय हे, तथा चंद्र श्रमे सूर्य ए वे निरंतर शीध गतिवाळाज होय हे. तेमां जो कूर ग्रहो वक थया होय तो ते श्रात कूर जाणवा, श्रमे सौम्य ग्रहो वक्र श्रया होय तो ते श्रित शुज जाणवा (३). जे नहत्रश्री सिंहनी दाढाना संस्थाननी जेम (तिरहा) वे दिशामां जे वे नहत्रो रहेलां होय ते वे ग्रहोए करीने

प्रथमनुं नक्तत्र बे वेधने जले (पामे) छे, तथा तेज प्रथमनुं नक्तत्र पोतानी सन्मुख रहेला मध्य नासिकाना पर्यंत जाग छपर रहेला नक्तत्र छपर ले यह होय ते यहे करीने त्रीजो सन्मुख वेध थाय छे (४)." आ प्रमाणे नरपतिजयचर्यामां कह्यं छे. आनुं छदाहरण आपवाथी बराबर समजारो, माटे छदाहरण आपे छे के को कार्य मृगशिर नक्त्रमां करवा धार्यु छे अने चित्रा नक्त्रमां मंगळ विगेरे सात प्रहोमांनो कोइ पण वकी यह रह्यो होय तो तेना वक्त गतिपणाने लीधे जमणी दृष्टि मृगशिर छपर पनी. तथा रेवती नक्त्रमां सूर्यादिक सात प्रहोमांनो कोइ पण अतिचारी (शीघ गतिवाळो) प्रह होय तो तेना शीघ गतिपणाने लीधे माबी दृष्टि मृगशिर छपर पनी. ए प्रमाणे बन्ने तरफथी प्रहनी दृष्टि पमवाने लीधे ते मृगशिर नक्तत्र प्रहन्तित्र अयुं कहेवाय. वळी छत्तराषाढा नक्त्रमां मंगळ विगेरे पांच प्रहोमांनो कोइ पण मध्य गतिवाळो प्रह होय तो सन्मुख दृष्टिए करीने ते मृगशिरनो त्रीजो वेध पण थयो. एज रीते वीजां नक्त्रोना संबंध्यां पण जाणवुं, परंतु आ त्रीजो सन्मुख नामनो वेध "वेधेनैकार्गछो०" ए आज विमर्शना सत्तरमां श्लोकमां कहेशे, अने बीजा वे वेधनो आहीं अधिकार छे.

श्रशुद्ध नक्त्रनी शुद्धि क्यारे थाय ? ते कहे छे.---

धिष्एयं कार्याय पर्याप्तं चन्द्रजोगाद्वहाहतम्। शुद्धं षड्जिर्जवेन्मासैरुपरागपराइतम्॥ १६॥

श्रर्थ—प्रहथी हणायेखुं नक्तत्र चंड्रवमे जोगवाया पठी शुज कार्यने माटे पर्याप्त (योग्य) याय ठे, अने जपराग (प्रहण) श्री हणायेखुं नक्तत्र ठ मासे करीने शुङ्घ थाय ठे. अहीं पर्याप्त एटले योग्य थाय ठे एवो अर्थ करवो. प्रहथी हणायेखुं नक्तत्र एटले क्रूर प्रहे जोगवीने मूकी देवाथी, जोगवातापणाथी के जोग्यपणाथी दृषित करेखुं, अथवा प्रहोए जदय के अस्त करवाए करीने इषित करेखुं, अथवा वक्ती प्रहे आक्रमण विगेरे करवावने करीने इषित करेखुं जे नक्तत्र ते. चंड्रना जोगथी एटले प्रहे करेखों दोष इर

थया पढ़ी जो ते नक्तत्र चंद्रे जोगब्यं होय तो ते खादरवा योग्य हे-यूज हे. ते विषे

वराह कहे हे के-

"दोषेर्मुक्तं यदा धिष्ण्यं पश्चाचन्द्रेण संयुतम् । ततः पश्चादिशुद्धं स्यान्नान्यथा शुज्जदं जवेत् ॥ १ ॥"

"इषित नक्तत्र प्रथम तो दोषथी मुक्त थाय, अने पड़ी ते चंदवमे संयुक्त थाय-जोग-वाय, त्यारपड़ी ते शुद्ध थाय डे, अन्यथा एटखे ते पहेखां ते शुज फळने आपनारुं थतुं नथी." लल्ल तो आ प्रमाणे कहे छे—
''तत्सूर्येन्दोर्जोगात्कर्मण्यत्वं प्रयाति ज्योऽपि ।
धिष्ण्यं कर्मसु शुद्धं तापनिषेकात्सुवर्णमिव ॥ १ ॥''

"ते (इषित थयेखुं)नक्त्र फरीथी सूर्य अने चंद्रना जोगच्या पढ़ी शुज कार्यने माटे योग्य थाय हे. जेम अशुद्ध सुवर्ण अग्निमां तपावीने जळमां नाख्या पढ़ी कार्य (अखं-कार)करवामां शुद्ध थाय हे तेम. अर्थात् ते नक्त्र प्रथम सूर्यवेक तपावाय हे, अने पढ़ी चंद्रवेक शांत कराय हे."

जपरागष्ठी एटले चंद्र के सूर्यना ग्रहण्यी हणायेलुं एटले द्वित ययेलुं जे नक्त्र होय ते ग्रहणनक्षत्र कहेवाय हे. ते ह मास सुधी शुन्न कार्यमां वर्जवा योग्य हे. केटलाक आचार्यो एम कहे हे के—ज्यांसुधी ते नक्त्रने फरीथी सूर्य न जोगवे त्यांसुधी ते वर्जवा योग्य हे. श्रहीं विशेष आ प्रमाणे हे.—

''पद्यान्तरेण ग्रहण्ड्यं स्याद्यदा तदाद्यग्रहणोपगं जम्। पद्यादिशुद्धं जवति दितीयग्रहोपगं शुध्यति मासपद्गात्॥ १॥"

"एक पखवामीयाने आंतरेज जो वे ग्रहण अतां होय तो पहेला ग्रहणथी दूषित अयेखुं नक्षत्र एक पखवामीयाए करीने (बीजुं ग्रहण आवे त्यारे)शुरू आय हे, अने बीजा ग्रहणथी दूषित थयेखुं नक्षत्र ह महीने शुरू आय हे" एम सप्तर्षित्र कहे हे

वळी जे नक्त्रमां केतुनो चदय थयो होय तेज नजत्रमां छ मास सुधी केतु रहे छे, तेथी ते नक्त्र पण छ मास सुधी तजवा योग्य छे. तथा जे दिननक्षत्रमां मंगळ विगेरे पांच ताराग्रह मांहेना कोइ पण वे ताराग्रहनो परस्पर जेद (वेध) थतो होय तो ते नक्त्र पण छ मास सुधी तजवा योग्य छे. ते विषे विवाहवृन्दावनने विषे कह्यं छे के—

"यस्मिन् धिष्ण्ये वीद्यितौ राहुकेत्, जेदस्ताराखेटयोर्यत्र च स्यात्। स्रापण्मासाँसत्र त्रग्नेन्छजाजि, ज्राजिष्णु स्यात्रो शुजं कर्म किञ्चित्॥ १॥"

"जे दिननक्षत्रमां राहु अने केतु जोया होय, अने जे नक्षत्रमां मंगळादिक वे ताराप्रह्मो परस्पर जेद—वेध अतो होय ते लग्नना चंड्रवमे शोजता एवा नक्षत्रमां छ मास
सुधी कोइ पण शुज कार्य कर्युं होय तो ते शोजावाळुं एटले शुज फळदायक अतुं नथी."
जे दिननक्षत्रमां सूर्य के चंड्रनुं ग्रहण अतुं होय ते नक्षत्रमां राहु जोयो कहेवाय छे,
अने जे नक्षत्रमां केतुनो जदय अतो होय ते नक्षत्रमां केतु जोयेखो कहेवाय छे, अहीं
कोइने शंका आय के केंतुना जदयनुं नक्षत्र शी रीते जाणी शकाय? आ शंकाना
जसरमां त्रिविक्रमशतकनी टीकामां लखेला श्लोको अहीं लखे छे.—

"'मेवेऽकें सित रेवत्यां यदि याति विधुंतुदः।
जादमासोत्तरार्धे स्थात् पुष्ये केतृदयस्तदा ॥ १॥"

''मेष संक्षांतिमां जो रवती नक्षत्रने विषे राष्ट्र रह्यो होय तो जादरवा मासना बीजा पखवामीयामां पुष्य नक्षत्रने विषे केतुनो छदय श्राय हो. १."

> "सूर्ये वृषस्थितेऽश्विन्यां यदि याति विधुंतुदः । स्थाश्विनस्योत्तरार्धे तद्रोहिण्यां केतुरीहयते ॥ २ ॥"

"वृष राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो श्रिश्विनी नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो श्राश्विन मासना वीजा पखवानीयाने विषे रोहिए। नक्षत्रमां केतु देखाय छे-छदय पामे छे. २."

"त्ररएयां मिश्रुनस्थेऽर्के यदि याति विधुंतुदः। कार्तिकस्थोत्तरार्धे तदार्जायां केतुदर्शनम्॥ ३॥"

"मिश्रुन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो जरणी नक्त्रमां राहुरह्यो होय तो कार्तिक मासना बीजा पखवाकीयामां आर्जा नक्त्रने विषे केतुनुं दर्शन थाय हे. २."

> ''कर्कस्थेऽर्के कृत्तिकायां यदि याति विधुंतुदः। मार्गशीर्षापरार्धे तत्केतृदयः पुनर्वसौ॥ ध॥"

"कर्क राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो कृत्तिका नक्षत्रमां राहु रह्यो होय तो मार्गशीर्ष मासना बीजा पखवामीयामां पुनर्वसु नक्षत्रने विषे केतुनो जदय थाय हे. ध."

"सिंहेऽर्के सित रोहिएयां यदि याति विधुंतुदः। पौषमासापरार्धे तदश्खेषायां शिखीक्ष्यते॥ ५॥"

"सिंह संक्रांति होय त्यारे जो रोहिए। नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो पोष मासना बीजा पखवामीयामां अश्लेषा नक्षत्रने विषे केतु देखाय छे-जदय पामे छे. ए."

> "कन्यास्थेऽर्के मृगर्शीर्षे यदि याति विधुंतुदः। माघमासोत्तरार्धे तिचत्रायां दृश्यते शिखी॥ ६॥"

"सूर्य कन्या राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु मृगशीर्ष नक्षत्रमां रह्यो होय तो माध मासना बीजा पखवामीयामां चित्रा नक्षत्रने विषे केतु देखाय हे. ६."

"तुखार्के सति श्रार्जायां यदि याति विधुंतुदः । फास्गुनस्योत्तरार्धे स्यान्मृखे केतूदयस्तदा ॥ ७ ॥"

"तुला राशिमां सूर्य होय त्यारे जो आर्जा नक्षत्रमां राहु रहेलो होय तो फाहगुन मासना बीजा पखवामीयामां मूळ नक्षत्रने विषे केतुनो जदय शाय हे. ७."

> "वृश्चिकेऽर्के पुनर्वस्वोर्यदि याति विधुंतुदः । चैत्रमासोत्तरार्धे स्यात्स्वातौ केतृदयस्तदा ॥ ঢ ॥"

"वृश्चिक राशिनो सूर्य होय त्यारे जो पुनर्वसु नक्त्रमां राहु रहेखो होय तो चैत्र मासना बीजा पखवामीयामां स्वाति नक्त्रने विषे केतुनो छदय स्राय हे. ए." "धनुःश्थिते रवौ पुप्यं यदि याति विधुंतुदः। वैशाखस्योत्तरार्धे स्यान्मूले केतूदयस्तदा॥ ए॥"

"धन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो पुष्य नक्त्रमां राहु रहेखो होय तो वैशाख मासना बीजा पखवामीयामां मूळ नक्त्रने विषे केतुनो जदय थाय हे. ए."

"अश्लेषां मकरस्थेऽकें यदि याति विधुंतुदः।

ज्येष्ठमासोत्तरार्धे तज्ज्येष्ठायां दृश्यते शिखी ॥ १० ॥"

"सूर्य मकर राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु अश्लेषा नक्षत्रमां रह्यो होय तो ज्येष्ठ मासना बीजा पखवामीयामां ज्येष्ठा नक्षत्रने विषे केतु देखाय हे. १०."

> "कुंजस्थेऽकें मघाधिष्णयं यदि याति विधुंतुदः। ज्ञापाढमासोत्तरार्धे श्रुतौ केतृदयस्तदा॥ ११॥"

"सूर्य कुंन्न राशिमां रह्यो होय त्यारे जो राहु मधा नक्षत्रमां होय तो श्राषाढ मासना बीजा पखवामीयामां अवण नक्षत्रने विषे केतुनो छदय होय हे. ११."

"मीनेऽकेंऽपरफट्गुन्यां यदि याति विधुंतुदः।

श्रावणस्योत्तराधें तदारुणे दृश्यते शिखी ॥ १२ ॥"

"मीन राशिमां सूर्य रह्यो होय त्यारे जो राहु उत्तराफाहगुनी नक्त्वमां होय तो श्रावण मासना बीजा पखवामीयामां शतिजवक् नक्त्वने विषे केतु देखाय छे-उदय पामे छे. १२." उहकापात अने चंद्र सूर्यना परिवेषधी ह्षित थयेखुं नक्त्व पण छ मास सुधी शुज कार्यमां वर्जवा योग्य छे एम केटखाक आचार्यों कहे छे.

वेधेनैकार्गलोत्पातपातलतानिधेरपि । दोषेरुपग्रहाचैश्च नक्तत्रं छष्टमुत्स्टजेत् ॥ १७॥

अर्थ-वेधवरे करीने एटले सात अने पांच रेखावाळा चके करीने बतावेला वेधवरे इषित अयेलुं तथा एकार्गल, जत्पात, पात अने लत्ता नामना दोषे करीने इषित अयेलुं, तथा जपग्रहादिके करीने दृषित अयेलुं नक्षत्र शुज कार्यमां तजवा योग्य हे.

जित्यात एटले जे दिवसे जीम विगेरे जत्यातो यया होय ते दिवसनुं नक्तत्र जत्यातवमे दूषित कहेवाय हे. श्लोकमां अपि शब्द होवाथी यह युद्धादिकवमे दृषित थयेखुं नक्तत्र पण तजवा योग्य हे. आ सर्वे दोषोथी दृषित थयेखां नक्तत्रो ते ते दोषथी मुक्त थया पही ज्यारे चंद्रवमे जोगवाइ जाय त्यारे ते शुद्ध थाय हे एम रक्तमाळाना जाष्यमां कहां हे.

हवे वेळा (समय)नी शुद्धि कहे हे.-

श्वर्केन्द्रोर्ज्जेक्तांशकराशियुतौ क्रान्तिसाम्यनामाऽयम् । चक्रदक्षे व्यतिपातः पातश्वके च वैधृतस्त्याज्यः ॥ १०॥

अर्थ—सूर्य अने चंद्रना जिक्त अंश तथा राशिने एकठा करवाथी कांतिसाम्य नामनो दोप याय है. तेमां जो ते एकठा करेखा राशिनी संख्या अर्धचक एटखे हनी आवे तो ते कांतिसाम्यनुं नाम न्यतिपात कहेवाय है, अने जो चक्र एटखे बारनी संख्या आवे तो तेनुं पात तथा वैधृत एवं नाम कहेवाय है. आ बन्ने प्रकारनो कांति-साम्य दोष शुन्न कार्यमां तजवा योग्य है.

विस्तरार्श—सप्ट करेला सूर्य अने चंद्रने अयनांशो सहित करवा. पृत्ती तेमां जुक्त अंश तथा राशि नालवा. तेमां जो राशिना अंकने स्थाने उनी के वारनी संख्या आवे तो क्रांतिसाम्यनो संजव ठे एम जाणवुं. ते वेळा तजवा योग्य ठे. ते क्रांतिसाम्य नामनो दोप जो उनी संख्यावके थयो होय तो तेनुं व्यतिपात एवं नाम कहेवाय ठे, अने जो बारनी संख्यावके थयो होय तो तेनां पात अने वैधृत एवां वे नाम कहेवाय ठे. अहीं तात्पर्य ए ठे के—आ क्रांतिसाम्यनी वेळा निश्चयथी कही शकाती नथी, कारण के वर्षे वर्षे ते वेळा अनियमित वखते आवे ठे. तेने माटे विवाहवृंदावनने विषे कह्यं ठे के— "त्रिजागशेषे ध्रवनामि चैन्द्रव्यंशे गते सम्प्रति संजवोऽस्य।"

"विष्कं जादिक योगो मांहेना ध्रुव नामना योगनो त्रीजो जाग शेप रहे त्यारे स्त्रने ऐंड नामना योगना त्रण जाग वीती जाय त्यारे हाखना समयमां स्त्रा कांतिसाम्य नामना दोषनो संजव हे."

> त्यारपढ़ी कोइए आम कह्यं हे.— "पूर्वीर्धे पुनरैन्डस्य पश्चिमार्धे ध्रवस्य च ।"

"पेंडना पहेला अर्ध जागमां अने ध्रवना पाउला अर्धा जागमां आ कांतिसाम्यनो संजव हे." हमएां तो—

"ब्रह्मणश्चरणे शेषे ध्रुवस्य चरणे गते । तत्संत्रव इत्याहुक्षीः ॥ १ ॥"

"ब्रह्मा नामना योगनो चोथो जाग शेष रहे त्यारे अने ध्रुव योगनो एक पाद (चोथो जाग) जाय त्यारे ते क्रांतिसाम्यनो संजव हे एम ज्योतिषशास्त्र जाणनाराउं कहे हे."

श्रा बाबत शी रीते निश्चय करवो ? ते माटे कहे छे के— 'ते वखतना सूर्य श्राने चंद्रने राशि, श्रंश विगेरे रूपे स्पष्ट करीने ते वर्षना श्रयनांशोने ते (स्पष्ट करेखा सूर्य श्रमे चंद्र)मां नाखवा पढ़ी ते बन्नेने एकठा करवा तेमां जो राशिनी संख्या छ श्रयवा बार श्रावे तो कांतिसाम्यनो संजव छे एम जाखबुं तेमां पण श्रा प्रमाणे विशेष जाखबुं जो हनी के बारनी संख्या पूरेपूरी एटखे के श्रंश, कळा विगेरेने स्थाने शून्यज

१ जे वखते कार्य करवानुं होय ते वखतना. आ॰ ३९

आवे श्रने मात्र राशिने स्थानेज छ के वारनी संख्या आवे तो तेज वस्तते कांतिसाम्य छे एम जाण्वुं, परंतु जो छ के वारनी संख्या छपर श्रंश, कळा विगेरे कांइ पण श्रिष्ठ आवे तो तेटलुं कांतिसाम्य वीती गयुं छे एम जाण्वुं, अने जो छ के वारनी संख्याधी कांइक न्यून होय तो हवे पठी कांतिसाम्य थरो एम जाण्वुं. कांतिसाम्य वीती गयाने केटलो काळ थयो श्रथवा केटला काळ पठी कांतिसाम्य थशे? ते जाण्वानी इहा थाय तो आ रीते करवुं.— सूर्य अने चंद्रनी गतिने केळा तथा विकंठारूपे स्पष्ट करीने ते वन्नेन एकत्र करी ते सर्वनी विकळा करवी. (करी राखवी.) त्यारपठी श्रयनांश सहित सूर्य श्रने चंद्रने एकत्र करी छ श्रयवा वारनी संख्याथी जे कांइ श्रयनांश सहित सूर्य श्रने चंद्रने एकत्र करी छ श्रयवा वारनी संख्याथी जे कांइ श्रिक राशि, श्रंश विगेरे होय तेमांथी पहेला राशिना श्रंकने छोनीने वीजा श्रंश विगेरेनी विकळा करवी. पठी श्रा विकळारूप करेला श्रंकने छपर विकळारूप करी राखेला गतिना श्रंकवेन जाग देवो. जागमां जे श्रावे तेटली धटी जाण्वी. फरीशी तेज प्रमाणे शेष रहेलाने साठे गुणी तेज पतिना श्रंकवेन जाग देवो. जागमां जे श्रावे तेटली धटी जाण्वी. फरीशी तेज प्रमाणे शेष रहेलाने साठे गुणी तेज गतिना श्रंकवेन जाग देतां जागमां जे संख्या श्रावे तेटला पळ जाण्वा. एटला दिवस, घटी श्रने पळ वीती गथा एटले के एटला दिवस, घटी श्रने पळ नी पहेलां कांतिसाम्य वीती गयुं एम जाण्वुं.

परंतु जो छनी के वारनी संख्या कांड़क न्यून होय तो ते सर्वने छ अथवा वारमांथी बाद करी जे शेष रहे तेनी विकळा करवी. ते विकळाना अंकने प्रथमनीज जेम गतिनी विकळाना अंकवे नाग देवो. नागमां जे आवे ते दिवस जाणवा पछी पूर्वनीज जेम शेषने साठे गुणी तेने गतिनी विकळावे ने नाग देवो. नागमां जे आवे ते घटी जाणवी. एज प्रमाणे फरीथी गुणाकार तथा नागाकार करी पळ काढवा. आटलो काळ गया पछी क्रांतिसाम्य आवशे, एटले के तेटला दिवस, घटी अने पळ गया पछी क्रांतिसाम्य शशे एम जाणवुं. जो पहेली वार नाग देतां नागमां कांइ न आवे तो दिवसने स्थाने शून्य जाणवुं, एटले के क्रांतिसाम्य वीत्याने अथवा आववामां एक दिवस गयो अथवा अवानो नथी, परंतु केटलीएक घनी छं अने पळोज गइ के जवानी छे, अने जो बीजी वार नाग देतां पण नागमां कांइ न आवे तो घटीने स्थाने पण शून्य जाणवुं, एटले के क्रांतिसाम्य वीत्याने घनी छं पण गइ नथी अथवा आववानी नथी, परंतु केटलाएक पळोज वीत्या के वीतवाना छे एम जाणवुं.

आनं उदाहरण आपवाथी आ विषय वरावर समजाहो. तेथी प्रथम उनी संख्यानं उदाहरण आपे हे.—

[🐧] घटी. २ पळ.

संवत् १५१२ नी साखमां वैशाख सुदि १० गुरुवारे मघा नक्षत्रमां प्रातःकाळे घमी १ पळ ४५ समये ध्रव योगनो पहेलो पाद पूर्ण ययो हे. ते वखते ऋांतिसाम्यनो विचार करीए डीए. - ते वखते स्पष्ट सूर्य राशि०, अंश १०, कळा ५० अने विकळा १६ हे. ते वर्षमां अयनांशो १५, कळा ३४ हे. तेने स्पष्ट सूर्यमां नाखवाथी अयनांश सहित सूर्य १-४-१४-१६ श्रयो. सर्यनी गति स्पष्ट कळा ५७, विकळा ५० हे. ते वखते स्पष्ट चंड ध-११-२-३० हे. तेमां अयनांश १५. कळा ३४ जेळववाथी अयनांश सहित चंद्र ध-१६-३६-३०थयो. चंद्रनी गति स्पष्ट कळा १५० हे. हवे अयनांश सहित सूर्य अने चंद्रने एकत्र करीए त्यारे ६-१-०-५६ थया, माटे आ समये क्रांतिसाम्य वीती गयुं हे. तेने वीत्याने केटलो वखत थयो? ते जाएवा माटे अंश (१)ने साठे गुएी कळा करवी एटले ६० थया. ोने फरीथी विकळा करवा माटे साठे गुणी ए६ विकळा जेळववाथी ३६ए६ विकळा यइ. त्यारपत्नी जपर कहें बी सूर्यनी स्पष्ट गति ५९ कळा अने ५० विकळा तथा चंजनी रपष्ट गति कळा ७५० ए बेने एकत्र करवी. एटखे कळा ००५, विकळा ५० थइ. कळाने विकळा करवा साटे साठे गुणी ५० विकळा जमरेवाथी ४०४५० विकळा थइ. पत्नी पूर्वना स्रंक ३६५६ ने स्ना ४०४७० स्रंके जाग खेवानो हे, परंत जाग चालतो नथी, तेथी दिवसने ठेकाणे - आव्युं, त्यारपठी ते ३६५६ अंकने साठे गुणवाथी २१ए३६० थया, तेने ते ४०४७० श्रंके जाग देतां ४ घटी प्राप्त थइ. शेष २५४४० ने साठे गुणी फरीथी तेज ४०४९० छांके जाग देतां ३१ पळ खाध्या, तेथी ४ घमी छाने ३१ पळ पहेलां क्रांतिसाम्य वीती गयुं हे एम सिद्ध श्रयुं.

हवे बारनी संख्यानुं छदाहरण आ प्रमाणे.—संवत् १५१३ नी साखमां क्षीिकक वैशाल विद ए मंगळवारे धनिष्ठा नक्षत्रमां घनी १०, पळ ५४ समये बहा योगनो छेहो पाद अवशेष रहारे छे. ते वखते कांतिसाम्यनो विचार करीए छीए.—ते वखते राशि, अंश, कळा अने विकळारूपे स्पष्ट करेलो सूर्य १-०-४१-१३ छे. तेमां अयनांश १५, कळा ३४ नाखवाथी अयन सहित सूर्य १-१६-१५-१३ अयो. रविनी गति स्पष्ट कळा ५९, विकळा ३० छे. ते वखते स्पष्ट चंड ए-१ए-१०-५३ छे. तेमां अयनांश १५, कळा ३४ जेळववाथी १०-१४-४४-५३ आय छे. चंडनी गति स्पष्ट कळा ७४२, विकळा ६ छे. हवे अयन सहित सूर्य अने चंडने जेळववाथी ०-१-०-६ आय छे. अहीं पण क्रांतिसाम्य वीती गयुं छे एम जाणवुं. वीत्याने केटलो वखत अयो छे? ते जाणवा माटे अहीं पण प्रथमनीज जेम सर्व रीत करवाथी धनी ४ आवे छे, तेथी क्रांतिसाम्य वीत्याने चार धनी थइ एम जाणवुं.

एज प्रमाणे छ अथवा बारनी संख्या कांइक न्यून होय तो क्रांतिसाम्य केटखा वखत

पढ़ी आवशे ? तेने माटे छपर कहेंसी रीते दिवस अने घमी विगेरे काढवा. बहो अने अहोनी गतिने स्पष्ट करवानो विधि (रीत) आगळ कहेवामां आवशे.

आ क्रांतिसाम्यना संजवनुं स्थान सूत्रकारे स्थूल प्रमाण्यी कहां हो, तेथी अमे पण तेने अनुसरीने स्थूल प्रमाण्नुंज विविरण कर्यु हो, परंतु कोइने सूहम दृष्टिश्री जोवुं होय, जेमके क्रांतिसाम्यनो आरंज क्यारे थयो ? ते केटला वलत सुधी रहीने क्यारे ते पूर्ण ययुं ? क्रांतिसाम्य शब्दनुं सार्थक नाम शुं ? एटले के एनुं क्रांतिसाम्य एवुं नाम केम कहेवायुं ? ह अने वारनी संख्यानी छत्पत्ति हतां पण क्रांतिसाम्य थतुं नथी ए क्यारे अने शी रीते ? क्रांतिसाम्य हतां पण ते क्यारे अने शी रीते दोषकारी न होय ? इत्यादि सृहम प्रमाणने इह्ननारे करणकुतूहल, जास्करिसद्धांत विगेरे ग्रंथो जोवा.

अहीं कोई शंका करे हे के—तमे प्रथम एवं कहां के क्रांतिसाम्यनं स्थान मासे मासे अने वर्षे वर्षे फरे हे, तो तेने फरवाना स्थाननी कांइ पए सीमा हे के नहीं ? आ शंकानो जवाब आपतां कहे हे के—हा, हे. ते आ प्रमाएे.—

> "गण्मोत्तरार्धान्नुक्खादेः क्रान्तिसाम्यस्य संप्रवः । सार्धपश्चसु योगेषु तत्त्र्यहं परिवर्जयेत् ॥ १ ॥"

"गंमना उत्तरार्धश्री अने शुक्ल योगनी आदिथी आरंजीने सामा पांच योग सुधी कांन्तिसाम्यनो संजव हे. तेना त्रण दिवस वर्जवा योग्य हे. गंम योगना उत्तरार्धश्री आरंजीने (एटले गंम योगना वे पाद गया पहि) सामा पांच योग सुधी (एटले वज्र योग पूर्ण थाय त्यांसुधी) तथा शुक्ल योगने पहेलेथीज आरंजीने सामा पांच योग सुधी (एटले प्रीति योगना वे पाद पूर्ण थाय त्यांसुधी) कांतिसाम्यनो संजव हे. आ सिवाय बीजा योगोमां तेनो संजवज नथी, एम खंमलाच जाध्य विगरेमां कहुं हे. आर्थात् आ वे स्थाने सामा पांच योगने विषेज कांतिसाम्य फर्या करे हे, ए सामा पांच योगने छहंघन करीने बीजा कोइ पण योगमां कोइ पण वखत कांतिसाम्य गयुं (अयुं) नथी तेम जशे (अशे) पण नहीं. आ क्रांतिसाम्य दोपना त्रण दिवस वर्जवाना कह्या हे, एटले के हाखना समयमां ब्रह्म योगनो अन्त्य पाद अने ध्रुव योगनो आद्य पाद ए वे स्थानथी पाठळ चालतुं (रहेखुं) क्रांतिसाम्य कदाचित् गयेले (पहेले) दिवसे जाय हे (आय हे) अने आगळ चालतुं (रहेखुं) क्रांतिसाम्य कदाचित् आगळने (पहीने) दिवसे जाय हे, तेथी करीने क्रांतिसाम्यना संजवना स्थानवाळो एक दिवस अने आगळ पाठळनो एक एक दिवस एम त्रण दिवस तजवाना हे. अथवा बीजी रीते पण त्रण दिवस त्याग करवातुं आ प्रमाणे कहुं हे—

"गत १ मेष्य १ इर्तमानं ३ सुख १ लहम्या १ युषां ३ कमात्। कान्तिसाम्यं सुजेजानिं त्र्यहं तेनात्र वर्ज्यताम् ॥ १ ॥" "जे दिवसे क्रांतिसाम्य होय ते दिवसथी पहेलानो दिवस सुखनी हानि करे हे, तेनी पढ़ीनो दिवस लहमीनी हानि करे हे, अने क्रांतिसाम्यनो दिवस आयुषनी हानि करे हे, माटे आ त्रण दिवसो वर्जवा योग्य हे."

केटलाक आचार्यों क्रांतिसाम्यवाळो एकज दिवस वर्जवानुं कहे हे, श्रने बीजा केटलाक तो ते दिवसे पण क्रांतिसाम्य थवानो समयज मात्र तजवानो कहे हे. तेर्ज कहे हे के—

"विषप्रदिग्धेन इतस्य पत्रिणा, मृगस्य मांसं सुखदं इताहते। यथा तथैव व्यतिपातयोगे, इणोऽत्र वर्ज्यो न तिथिर्न वारः॥१॥"

"जेम विप लगावेला वाण्यी हणायेला मृगनुं क्त (क्तना स्थान)विनानुं वीजुं सर्व मांस सुलकारक हे तेम व्यतिपात (क्रांतिसाम्य) योगने विषे पण ते योगनो समयज वर्जवा योग्य हे, परंतु आखी तिथि के आखो वार वर्जवा योग्य नथी."

कांतिसाम्यनी वेळानो निश्चित समय तथा ते कांतिसाम्य केटलो यखत रहे हे तेनुं परिमाण करणकुतूहल विगेरे ग्रंथमां कहेला विधिने अनुसारे जाणवुं एम प्रथम कही गया हीए. आ कांतिसाम्य मोटो दोष गणाय हे. ते विषे लक्ष कहे हे के—

"खङ्गाहतोऽग्निना दग्धो नागदष्टोऽपि जीवति । कान्तिसाम्यकृतोदाहो चियते नात्र संशयः ॥ १ ॥"

" खड़ियी हणायेखो, श्रिप्तियी बळेखो त्राने सर्पथी मसायेखो पुरुष कदाच जीवी शके हे, परंतु क्रांतिसाम्यमां विवाहित थयेखो पुरुष मरीज जाय हे, तेमां कांइ पण संशय नथी." श्रा विवाहना विषयमां तजवा योग्य श्रदार दोषोना संग्रहनो श्खोक श्रा प्रमाणे हे.

"स्युर्वेधः १ पात २ खत्ते ३ यहमिलनमुकु ४ ऋरवारा ५ यहाणां, जन्मर्क्त ६ विष्टि ७ रर्धप्रहरक ० कुलिको ए प्रयह १० क्रान्त्य ११ वस्थाः १२। कर्कोत्पातादि १३ घंटो १४ विगतबलक्षक्षी १५ छ्रष्टयोगार्गलाख्या १६, गएमान्तो १७ दग्धरिकाप्रमुखतिथि १० रथो नामतोऽष्टादशैते॥ १॥"

"वेध १, पात २, खत्ता ३, ब्रह्यके मिलिन (इषित) अये खुं नक्त्र ४, कूर वार ४, प्रहोनुं जन्मनक्त्र ६, विष्टि ६, अर्धप्रहर ७, कुलिक ए, जपब्रह १०, क्रांति ११, अवस्था १२, कर्क, जत्पात विगेरे १३, घंट १४, निर्वेळ चंद्र १५, इष्ट योगो तथा अर्गख योग १६, गंकांत १९ तथा दम्ध अने रिक्ता विगेरे तिथि १०, आ नामना अहार दोषो जाएवा. अहीं ब्रह्यके मिलिन अये खुं नक्त्र एट खे कूरेण मुक्तमाकान्तं ० (विमर्श ५. श्लोक १५) ए श्लोकमां कहेला दोषथी दृषित अये खुं अने वळी चंद्रना जोगववावके हजु सुधी शुद्ध अये खुं न होय ए खुं नक्त्र कर्र वारे करीने कूर होरा पण

श्रहीं जाण्वी (दोषमां गण्वी) ग्रहोनुं जन्मनक्त्र जरिचतुत्तरे ए पूर्वोक्त श्लोकमां तथा विशाखाकृत्तिके ए पूर्वोक्त श्लोकमां कहेलुं जाण्वुं. श्रधंपहर श्रने कुलिकना दोष माटे सारंग कहे ने के—"यामार्धेन जवेन्नोपः कुलिकेन तनुक्तयः"—"अर्धप्रहरमां कार्य करवाश्री शरीरनो शोप श्राय ने श्रने कुलिक योगमां करवाश्री शरीरनो क्य (नाश) श्राय ने " तथा—

''<mark>अग्नं पश्चचतुर्वर्गं भ्रष्यते क्र्रहोरया ।</mark> स्त्रपि पद्वर्गसंशुक्तं कुलिकेन विहन्यते ॥ १ ॥''

"खग्न पांच के चार वर्गे करीने शुद्ध होय तो ते कूर होराए करीने इपण पामे है, अने ह वर्गे करीने शुद्ध होय तोपण ते कुलिके करीने हणाय है—दूषित थाय है" एम रक्षमालाना जाष्यमां कहां है.

अहीं अर्धपहर अने कुलिक कहेवाए करीने काळवेळा, कंटक अने उपकुलिक पण जाणवा, तेथी ते पण शक्ति प्रमाणे त्याग करवा. उपप्रहे करीने छुष्ट रिवयोगो पण अहीं जाणवा. कांतिए करीने सूर्यसंकांति तथा कांतिसाम्य ए वन्ने समजवा. अवस्थाए करीने चंदनी प्रोषित विगेरे छुष्ट अवस्थाउं जाणवी. कर्क, उत्पात विगेरे, अहीं आदि शब्द हो माटे तिथि अने नक्षत्रने आश्रीने तथा तिथि अने वारने आश्री उत्पन्न थता जे मृत्यु, काण, संवर्तक अने वज्रपात विगेरे योगो कहेला है ते सर्वे अहीं जाणवा. घंट शब्दे करीने जामाए करीने सत्यन्नामानी जेम यमघंट योग जाणवो. अहीं यमघंटने जे जूरो पासीने गणाव्यो है ते तेनुं अति छष्टपणुं जणाववा माटे गणाव्यो है. ते विवे लक्ष कहे है के-

"यमघष्टे गते मृत्युः कुलोह्नेदः करमहे । कर्तुर्मृत्युः प्रतिष्ठायां शिशुर्जातो न जीवति ॥ १ ॥"

"यमधंट योगमां जो प्रयाण कर्युं होय तो ते प्रयाण करनारनुं मरण थाय हे, विवाह कर्या होय तो कुळनो नाश थाय हे, प्रतिष्ठा करी होय तो प्रतिष्ठा करनारनुं मरण थाय हे, श्रने जो बाळकनो जन्म थयो होय तो ते वाळक जीवतो नथी एटले मरण पामे हे."

निर्बळ चंद्रे करीने गोचरादिकवमे विरुद्ध (अशुज) चंद्रने पण दूषित जाणवो, तथा कृष्णपद्यमां विरुद्ध तारा पण दूषित जाणवी. इष्ट योगो विष्कंज विगेरेमांना जाणवा. अर्गक्ष एटखे एकार्गक्ष, आ योग विष्कंज विगेरे योगोमांना कुयोगोमांज संजवे हे, तेथी तेनी साथेज जाण्यो हे. गंकांते करीने विवाहवृंदावन विगेरे यंथोमां कहें खो तिथ्यादिकनो संधिदोष पण जाण्यो. "दम्धरिक्ताप्रमुख" आ पदमां प्रमुख—आदि शब्द खख्यो हे तेथी पद्यक्तिद्ध, कूर तिथि, अवम तिथि तथा फट्यु तिथि पण जाण्यी. ते विषे सारंग कहें हे के—

''सूर्योदये यथा तारा विनश्यन्ति समन्ततः । यथाग्निरम्बुना लग्नं तथा वृद्धिक्षये तिथिः (थेः) ॥ १ ॥''

"जेम सूर्यनो जदय थाय त्यारे चोतरफथी ताराजं नाश पामे हे, तथा जेम जळवमे करीने अग्नि जंखवाइ जाय हे तेम तिथिनी वृद्धि अथवा क्य थवाथी खन्न विनाश पामे हे."

आ जपर कहेला अहार दोषो शुद्ध नक्षत्रना बळे करीने जाया लग्न विगेरेमां ज्यारे प्रतिष्ठा के दीका विगेरे कार्य करवामां आवे जे त्यारे पण अवश्य वर्जवा योग्य जे, तो पजी घटिका लग्नने विषे त्याग करवामां तो शुं कहेतुं? अर्थात् अवश्य वर्जवाज जोइए. आ दोषोने मध्ये केटलाक दोषोनो जंगविधि पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे कह्यो जे.—

"लग्ने गुरुः सौम्ययुतेकितो वा, लग्नाधिपो लग्नगतस्तथा वा।

कालारूयहोरा च यदा शुजा स्याज्ञवेधदोषस्य तदा हि जङ्गः॥१॥"

"विवाह समये गुरु सौम्य यह युक्त होय, अथवा सौम्य यहनी तेना पर दृष्टि पमती होय, अथवा लग्ननो स्वामी होय अथवा लग्नमां रहेलो होय, तथा ज्यारे काळहोरा शुज (सारी) होय त्यारे नक्षत्रवेध नामना दोषनो जंग थाय हे, एटले के आ दोष लागतो नथी." अहीं नक्षत्रवेधनोज जंग कह्यो हे, तेथी नक्षत्रना पाद वेधरूप दोषनो जंग थतो नथी एम जाणवुं. वळी व्यवहारप्रकाशमां तो वेधने जलटो शुज पण कह्यो हे, ते आ रीते.—

''सौम्यैश्वरणान्तरितः शुन्नः शुन्नैः केन्द्रगैर्वेधः ।"

"पादोना त्रांतरामां रहेदा सौम्य ग्रहोएँ करीने वेध शुज है तथा शुज (सौम्य) ग्रहो केंजस्थानमां रह्या होय तो वेध शुज है."

॥ इति वेधदोषजंगः ॥ १॥

''एकार्गद्धोपग्रहपातत्वत्ताजामित्रकर्तर्थुदयादिदोपाः ।

लग्नेऽर्कचन्द्रेज्यवले विनश्यन्त्यकींद्ये यद्यदहो तमांसि ॥ १ ॥"

"एकार्गख, उपग्रह, पात, खत्ता, जामित्र छने कर्तरीनो उदय ए विगेरे दोषो सूर्य, चंड छने गुरुए करीने बळवान खग्न होय तो नाश पामे हे. जेम सूर्यना उदये छंघकार नाश पामे हे तेम." छा प्रमाणे सप्तिष्ठि कहे हे. तथा केटलाक छाचार्यों कहे हे के—

"श्रंगेषु वंगेषु वदन्ति पातं, सौराष्ट्रयाम्ये खचरस्य खत्ताम् । जपग्रहं माखवसैन्धवेषु, गएमान्तयुक्तिं सकले पृथिव्याम् ॥ १ ॥"

"अंग तथा बंग देशमां पात दोष वर्जवानो कह्यो हे, सौराष्ट्र देश तथा दिश्ण देशमां ग्रहनी खत्ताने वर्जवानी कही हे, माखव अने सिंध देशमां जपग्रहने वर्जवानो कह्यो हे, तथा पृथ्वी पर सर्व स्थाने गंमांतने वर्जवानो कह्यो हे." वळी वामदेव तो आ प्रमाणे कहे हे.—

"बत्तां बंगाबदेशे च पातं कौशिवके त्यजेत्। जपग्रहं गौकदेशे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ १॥"

"बंगाल देशमां लत्तानो त्याग करवो, कोशल देशमां पातनो त्याग करवो, गौम देशमां जपग्रहनो त्याग करवो, ऋने वेधनो सर्व देशमां त्याग करवो."

।। इति पात २ लत्तो २ पग्रहै ४ कार्गलानां ५ जंगः ॥ ५॥ ''होराः कूराः सौम्यवर्गाधिके स्युर्लग्ने मोघाः सौम्यवारे च राज्याम् । पापारिष्टं निष्फलं शक्तिजाजां, स्यात् पडुर्गे लग्नगे सद्ग्रहाणाम् ॥ १ ॥"

"खग्नमां सौम्य ग्रहोनो वर्गाधिक होय तो तथा सौम्य वारोमां छने रात्रिमां कर होरा निष्फळ थाय छे. खग्नमां सौम्य ग्रहोनो पड़ वर्ग होय तो पुष्यवंतोने पापी ग्रहोनुं छारिष्ट निष्फळ थाय छे.

त्रिविक्रम पण कहे हे के-

"क्रूरस्य कालहोरां च क्रूरवारे दिवा त्यजेत्।"

"क्रूरनी काळहोरा क्रूर वारने विषे दिवसे तजवी," एटले के जो दिनवार क्रूर होय श्रम दिवसे कार्य करतुं होय तो क्रूर होरा तजवी, परंतु जो सौम्य (शुज) काळहोरा होय तो ते क्रूर वारना दोषनो नाश करे छे, माटे ते ग्रहण करवा योग्य छे, श्रमे जो वारज सौम्य होय तो दिवसे श्रम्रवा रात्रिए होरा जोवानी कांइ जरुर नथी.

॥ इति सूर्येन्छ्यहणवर्जयहमितनोतु १ क्र्रवारहोरा १ दोषयोर्जिगः ॥ ९ ॥ जन्मनक्त्रना दोषनो जंग आगळ कहेवाता कर्कादिकना जंगनी जेमज जाणवो. ए. विष्टि दोषनो जंग छे नहीं. जो कदाच तेनो जंग होय तो "विष्टिपुत्ते ध्रुवं जयः" "विष्टिना पुष्टमां कार्य करवाथी निश्चे जय आय छे." इत्यादि जाणवुं. ए. अवस्था दोषनो जंग आगळ शिवचक्रवमे कहेवाता निर्वळ चंद्रना दोषना जंगनी जेम जाणवो.१०.

कर्क, जत्पात विगरे दोषोनो जंग छा रीते हे.—
"श्रयोगास्तिथिवारर्क्कजाता येडमी प्रकीर्तिताः।
लग्ने प्रहवलोपेते प्रजवन्ति न ते कचित्॥ १॥
यत्र लग्ने विना कर्म क्रियते शुजसंक्रकम्।
तत्रैतेषां हि योगानां प्रजावाक्यायते फलम्॥ २॥"

"तिथि, वार श्रने नक्षत्रथी जत्पन्न थयेदा जे कुयोगो कहेदा है ते यहना बळे करीने युक्त एवा लग्नने विषे कोइ पण वखत समर्थ थता नथी—बाध करी शकता नथी, परंतु ज्यां लग्न विनाज शुज कार्य करवामां खावे त्यांज श्रा योगो समर्थ होवाथी तेनुं फळ थाय है" एम व्यवहारसारमां कहुं है.

॥ इति कर्कोत्पातादिदोषजंगः॥ ११ ॥

यमघंटनी इषित घमीले आ प्रमाणे जाणवी.—

"पनरस १ तेर २ ठारस ३ एगा ४ सग ५ सत्त ६ छाठ ७ घमिछाले।
जमघंटस्स ल इका रविमाइस सत्तवारेस ॥ १ ॥"

"रिववारश्री आरंजीने सात वारोने विषे यमघंटनी छुष्ट धर्मी आ प्रमाणे जाणवी— रिववारे पंदर धर्मी, सोमवारे तेर धर्मी, मंगळवारे अढार धर्मी, बुधवारे एक घर्मी, गुरुवारे सात धर्मी, शुक्रवारे सात घर्मी अने शनिवारे आठ धर्मी तजवा योग्य हे." आ प्रमाणे श्रीहरिज्ञ सुरिए कह्युं हे. बीजा तो एम कहे हे के—

''तिथि १९ रस ६ रुझा ११ स्वरगुण ३० सार्धहया ।। च्रतु ६० खगुण ३० मितघटिकाः । त्याज्या घंटे रव्यादिष्वाद्या जत्तरास्तु शनिबुधयोः ॥ १ ॥''

"रिववारे यमघंटनी पहेली पंदर घमील तजवी, सोमवारे पहेली उ घमी तजवी, मंगळवारे पहेली अगीयार घमी, बुधवारे छेली त्रीश घमी, गुरुवारे पहेली सामीसात घमी, शुक्रवारे पहेली साठ घमी अने शनिवारे छेली त्रीश घमी तजवा योग्य छे."

बाकीनी बसील अड्ड एटले अज्ञूज नथी.

॥ इति यमघंटदोषजंगः ॥ १२ ॥

निर्वळ चंद्रनो दोष "खग्ने गुरोर्वरस्य०" (विमर्श ए श्लोक ए)ए श्लोकमां कहेला पंदर प्रकार मांहेला कोइ पण प्रकारे करीने चंद्रनी अनुकूळता सर्वथा न थाय तो शिवचकना बळे करीने हणाय हो, केमके शिवचक चंद्रादिकना प्रतिकूळपणाने हणे हे एम कहां हो. १३. विष्कंत्र विगेरे योगोमां जे छ्रष्ट योगो हो तेमनी छ्रष्ट धनीर्ड अवश्य तजवानी हो, बीजी धनीर्ड तजवामां जेवी इक्षा एम कहां हो, मादे ते दोषनो जंग प्रगटज हो. १४. गंकांत तो लग्न, तिथि अने नक्षत्रना त्रीजा त्रीजा जागने आंतरे थाय हो, तथी ते दोषनो जंग नथी. तथा सर्वे तिथिर्ड, नक्षत्रो अने योगोनी संधिमां जे संधि नामनो दोष कहां हो तेनो जंग आ प्रमाणे हो.—

"धिष्एयस्यादावन्ते त्यजेच्चतस्रो घटीः करग्रहणे। यदि शुद्धे दे धिष्एये विवाहयोग्ये तदा श्रेष्ठे ॥ १ ॥"

"पाणिग्रहणमां नक्त्रनी आदिनी तथा अंतनी चार घमी तजवी. तेमां जो ते मन्ने नक्त्रो विवाहने योग्य होय तो ते श्रेष्ठ हे. (अर्थात् तेनी घमी तं तजवानी जरुर नथी.)" एम व्यवहारप्रकाशमां कहां हे. तथा—

"गुरुर्जुगुर्वा केन्छे वा त्रिकोणे वा यदा जवेत्। जसन्धिस्तिथिसन्धिश्च योगसन्धिर्न दोषदः॥ १॥ येऽन्ये सन्धिकृता दोषास्ते सर्वे विखयं ययुः। इति प्रोक्तं तु गर्गेण विशिष्ठात्रिपराक्षरैः॥ २॥"

आ ० ४०

"गुरु के शुक्र जो केन्छ के त्रिकोणस्थानमां होय तो नक्षत्रसंधि, तिथिसंधि स्रते योगसंधि ए दोषने देनारा स्रता नधी, तथा संधिए करेला जे बीजा दोषो होय ते पण नाश पामे हे, एम गर्गे, विशिष्ठे, स्रत्रिए श्रने पराशर क्षषिए कहां हे."

॥ इति जतिथियोगादिसन्धिदोषजंगः ॥ १५ ॥

तिथिदोषनो जंग "तिथिरेकगुणा प्रोक्ता॰" (तिथिनुं फळ एक गुणुं हे) ए वचनथी स्पष्टज हे. स्रथवा "दिने बलवती तिथिः" (तिथिनुं बळ दिवसे होय हे), "तिथ्यर्धे तिथि-फलं समादेश्यं" (तिथिना स्रधी जागमां तिथिनुं फळ कहेवुं) विगेरेथी जाणवुं १६.तथा-

"सर्वेषां तु कुयोगानां वर्जयेद् घटिकादयम्।

जत्पातमृत्युकाणानां सप्त पद् पञ्च नामिकाः ॥ १ ॥"

"सर्वे कुयोगोनी वबे घमी वर्जवी, जत्पात योगनी सात घमी, मृत्यु योगनी छ अने काण योगनी पांच घमी वर्जवी" एम नारचंद्रनी टिप्पणीमां कह्यं है. केटलाएक मृत्यु योगनी बार घमीलं त्याग करवानुं कहे है. तथा—

"यमघंटे नवाष्टौ च काद्ममुख्यां विवर्जयेत्। दग्धे तिथ्रौ कुवारे च नामिकानां चतुष्टयम्॥ १॥"

"यमघंटनी नव घरीं अने काळमुखीनी आठ घरीं वर्जवी, तथा दग्ध तिथिमां अने कुवारमां चार चार घरीं तजवी" एम पण केटलाएक कहे हे. तथा—

"कुतिहि कुवार कुजोगा विची वि स्त्र जम्मरिक दहृतिही। मञ्जलहिएलचे परं सबं पि सुजं जवेऽवस्सं॥ १॥"

"कुतिथि, कुवार कुयोग, विष्टि, जन्मनक्त्र अने दग्ध तिथि ए सर्वे मध्याह पठी अवस्य शुत्र थाय हे" एम हर्षप्रकाशमां कहां हो लक्ष पण कहे हे के—

"विष्टामङ्गारके चैव व्यतीपातेऽय वैधृते । प्रत्यरे जन्मनक्त्रे मध्याह्वात्परतः शुजम् ॥ १ ॥''

"विष्टि, श्रंगारक, व्यतीपात, वैधृत, प्रत्यर (सातमी तारा) श्राने जनमनक्त्र, श्रा दिवसोने विषे मध्याह पठीनो काळ शुज हो." श्रदी "प्रत्यर" शब्दनो श्रर्थ सातमी तारा हे, श्रने तेना छपलक्ष्णश्री त्रीजी, पांचमी श्राने श्राधान तारा पण जाणवी, तेशी करीने ते ताराठने विषे पण मध्याह पठीनो काळ शुज जाणवो. श्रा प्रमाणे सामान्य रीते प्रतिष्ठामां प्रणा दोषोनो जंग कह्यो.

॥ इति सामान्येन प्रतिष्ठायां बहुदोषजंगः ॥ दवे प्रतिष्ठामां खग्नना श्रंशनो नियम कहे हे.— खग्नं श्रेष्ठं प्रतिष्ठायां क्रमान्मध्यमथावरम् । इसङ्गं स्थिरं च जूयोजिर्श्यौराढ्यं चरं तथा ॥ १ए ॥ अर्थ—जिनेश्वरनी प्रतिष्ठाने विषे दिस्त्रजाव लग्न श्रेष्ठ हो, स्थिर लग्न मध्यम हे अने चर लग्न किनष्ट हो, परंतु ते चर लग्न जो अत्यंत बळवान् घणा शुज बहोए करीने सिहत होय तो ते पण त्रीजा जांगे ब्रहण करवा लायक हे. स्थापना नीचे प्रमाणे—

दिस्वजाव	3	દ્	η.	१ হ	उत्त म
स्थिर	इ	પ	G	११	मध्यम
चर	2	Я	В	₹ 🛮	श्रधम

बीजा देवोनी प्रतिष्ठामां श्रा प्रमाणे खग्नो जाणवां.—

"सिंहोदये दिनकरो घटजे विधाता,

नारायणस्तु युवतौ मिश्रुने महेशः।
देव्यो दिमूर्त्तिज्ञवनेषु निवेशनीयाः,

क्रुडाश्चरे स्थिरगृहे निखिखाश्च देवाः॥ १॥"

"सिंह खग्नमां सूर्यनी स्थापना करवी, कुंज खग्नमां ब्रह्मानी स्थापना करवी, कन्या खग्नमां विष्णुनी, मिश्रुन खग्नमां महादेवनी, दिस्वजाववाळां खग्नमां देवीचेनी, चर खग्नमां कुड़ (ब्यंतर विगेरे) देवोनी अने स्थिर खग्नमां बीजा सर्व देवो (इंडादिक)नी प्रतिष्ठा करवी" एम रलमाळामां कह्यं हे. वळी खह्म तो आम कहे हे.—

"सौम्यैर्देवाः स्थाप्याः क्र्रैर्गन्धर्वयक्तरक्षांसि । गणपतिगणाँश्च नियतं कुर्यात्साधारणे खग्ने ॥ १ ॥"

"सौम्य खन्नमां देवोनी प्रतिष्ठा करवी, कूर खन्नमां गंधर्व, यक्त श्रने राक्सनी प्रतिष्ठा करवी, तथा गणपति श्रने गणोनी स्थापना श्रवस्य साधारण खन्नमां करवी."

अंशास्तु मिद्यनः कन्या धन्वाद्यार्धं च शोजनाः। प्रतिष्ठायां वृषः सिंहो विणग्मीनश्च मध्यमाः॥ २०॥

अर्थ—प्रतिष्ठाने विषे मिथुन, कन्या अने धननो प्रथम अर्ध एटखा अंशो सारा (जत्तम) हे, तथा वृष, सिंह, तुखा अने मीन एटखा अंशो मध्यम हे.

धन श्रंशनो प्रथम श्रधं एटले ते लग्ननो श्रदारमो श्रंश जाएवो. वृष विगेरे श्रंशोने मध्यम कह्या तेनुं कारए ए हे जे देवनुं श्रत्यंत पूज्यपणुं हतां पए ते श्रंशो देवालयना कर्ता तथा प्रतिष्ठा करनारने हानि करनारा हे. एम मध्यम कहेवाथीज सिद्ध थाय हे. बाकीना एटले मेप, कर्क, वृश्चिक, मकर श्रने कुंजना श्रंशो तथा धन श्रंशनो हेह्नो श्रधं जाग श्रधमज हे. ते विषे नारचंद्रनी टिप्पणीमां कह्यं हे के—

"मेर्षांशे स्थापितो देवो वह्निदाइजयावदः १। वृषांशे स्रियते कर्ता स्थापकश्च क्रतुत्रये २। मिथ्रुनांशः शुजो नित्यं जोगदः सर्वसिष्टिदः २॥१॥ षट्पदी॥"

"मेषांशमां देवनी प्रतिष्ठा करवाथी अग्निना दाहरूप जय जत्पन्न थाय हे १, वृषां-शमां स्थापना करवाथी प्रतिष्ठाना कर्ता गुरु तथा स्थापना करनारनुं त्रण क्तुमां एटखे ह मासनी खंदर मृत्यु थाय हे १, खने मिथुनांश निरंतर शुज हे, जोगने आपनार हे, खने सर्व सिद्धिने करनार हे ३."

> "कुमारं तु हन्ति कर्कः कुखनाश क्तुत्रये । विनश्यति ततो देवः षङ्किरव्दैर्न संशयः ध ॥ २ ॥"

"प्रतिष्ठामां जो कर्कोश लीधो होय तो ते कुमारने (प्रतिष्ठा करनारना पुत्रने) हणे हे, अने त्रण क्रतुमां एटले ह मासमां तेना कुळनो नाश याय हे. त्यारपही ह वर्षनी अंदर देव (प्रतिमा)नो पण नाश याय हे, तेमां संशय नथी."

> "सिंहांशे शोकसंतापः कर्तृस्थापकशिष्टिपनाम् । संजायते पुनः ख्याता खोकेऽर्चा सर्वदैव हि ५ ॥ ३ ॥"

"सिंहांशमां स्थापना करवाथी प्रतिष्ठाकारक गुरु, स्थापना करनार स्थने शिष्ट्पी (कारीगर)ने शोक संताप जत्पन्न स्थाय हे, परंतु ते प्रतिमा सर्वदा खोकमां प्रसि-द्भिने पामे हे-पूजाय हे."

> "जोगः सदैव कन्यांशे देवदेवस्य जायते । धनधान्ययुतः कर्ता मोदते सुचिरं छुवि ६ ॥ ४ ॥"

"कन्यां शमां प्रतिष्ठा करवाथी सर्वदा देवाधिदेवने जोग (पूजा) प्राप्त थाय हे, श्रने प्रतिष्ठा करनार धन धान्यथी युक्त थड़ने चिर काळ सुधी पृथ्वी पर श्रानंद पामे हे."

"जन्नाटनं जनेत् कर्तुर्नेधश्चैन सदा जनेत्। स्थापकस्य जनेनमृत्युस्तुद्धांशे नत्सरहये ।। ।।।।"

"तुलांशमां प्रतिष्ठा करवायी प्रतिष्ठाकारक गुरुनुं उचाटन (नाश) थाय हे, श्रने निरंतर तेनो बंध थाय हे, तथा वे वर्षनी श्रंदर प्रतिष्ठा करनारनुं मरण थाय हे."

> "वृश्चिके च महाकोपं राजपीनासमुद्रवम् । अग्निदाहं महाघोरं दिनत्रये विनिर्दिशेत् ए॥ ६॥"

१ 'मेषांशे स्थापितं बिम्बं बह्निदाहभयावहं ।' इत्यपि प्रसन्तरे.

"वृश्चिकांश्चमां प्रतिष्ठा करी होय तो त्रण दिवसमां राजपीमाथी जत्पन्न थयेखो महाकोप तथा महा जयंकर श्रक्षिनो दाह थाय एम कहेवुं."

"धन्वांशे धनवृद्धिः स्थात् सन्नोगं च सदा सुरैः। प्रतिष्ठापककर्तारौ नन्दतः सुचिरं छुवि ए॥ ७ ॥"

"धनांशमां प्रतिष्ठा करवाथी धननी वृद्धि याय हे, अने निरंतर देवो पासेथी सारा जोग प्राप्त याय हे, तथा प्रतिष्ठा करनार अने आचार्य चिर काळ सुधी पृथ्वी पर आनंद पामे हे."

"मकरांशे जवेन्मृत्युः कर्तृस्थापकशिहिपनाम् । व जाञ्चस्त्रादा विनाशस्त्रिजिरब्दैर्न संशयः १०॥ ए॥"

"मकरांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो प्रतिष्ठापक आचार्य, प्रतिष्ठा करावनार तथा शिहपीनुं मृत्यु थाय हो, तथा त्रण वर्षनी अंदर वज्रशी के शस्त्रथी तेनो (विंबनो) नाश थाय हो, तेमां कांइ पण संशय नथी."

"घटांशे जिद्यते देवो जलपातेन वत्सरात्। जलोदरेण कर्ता च त्रिजिरब्दैर्विनश्यति ११॥ ए॥"

"कुंजांशमां प्रतिष्ठा करी होय तो एक वर्षनी खंदर जळना पनवाथी देव (प्रतिमा) जेदाय छे-नाश पामे छे, अने प्रतिष्ठा करनार त्रण वर्षमां जखोदरना व्याधिश्री नाश पामे छे."

"मीनांशे त्वर्च्यते देवो वासवाद्यैः सुरासुरैः । मनुष्यैश्च सदा पूज्यो विना कारापकेन तु १२ ॥ १० ॥"

''मीनांशमां प्रतिष्ठा करवाथी ते देव (प्रतिमा) इंज विगेरे सुर श्रसुरोए पूजाय हे, तथा करावनार विना बीजा सर्व मनुष्योए पण सदा पूजाय हे, श्रश्वीत् करावनार मरण पामे हे.'' रक्तमाळामां तो मंगळने वर्जीने बीजा सर्वे ग्रहोना ह वर्गो प्रतिष्ठामां शुज कह्या हे.

हवे दीकाने विषे खग्नांशो कहे हे.--

त्रताय राशयो छ्यद्गाः स्थिराश्चापि वृषं विना । मकरश्च प्रशस्याः स्युर्लग्नांशादिषु नेतरे ॥ ११ ॥

अर्थ—दीहाने विषे, खग्नमां तथा नवमांशमां दिस्वजाव राशिखं, वृष विनानी स्थिर राशिखं अने मकर राशि, एटली राशिखं शुज हे. ते सिवायनी बीजी राशि शुज नथी. अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धन, मकर, कुंज अने मीन, ए आह राशिखं शुज हे, बीजी मेष, वृष, कर्क अने तुला ए चार राशिखं लग्नमां, नवांशोमां अने "आदि" शब्द कह्यों हे माटे दादशांशमां पण त्याग करवा लायक हे. ते विषे नारचंद्रमां कह्यं हे के- "जृगोरुद्य १ वारां २ रा २ जवने ४ क्ष्ण ५ पश्चके । चन्छांशो १ दय २ वारे च ३ दर्शने च ४ न दीक्ष्येत्॥ १॥"

"शुक्रनो छदय एटले शुक्र लग्नमां रह्यो होय १, शुक्रवार २, लग्नमां शुक्रनो नवांशो ३, शुक्रनुं जवन वृष अने तुला ४, तथा शुक्रनुं ईक्रण एटले संपूर्ण दृष्टियमे शुक्र लग्नने के सातमा स्थानने जोतो होय ५, आ पांच वलते दीक्षा देवी नहीं. तथा चंडनो अंश—चंडनो नवांशो १, चंडनो छदय एटले चंड लग्नमां रह्यो होय २, चंडनो वार—सोमवार ३, तथा चंडनुं दर्शन ४, आ चार वलते दीक्षा लग्न देवुं नहीं." ए प्रमाणे उवर्गनी शुद्धि जाणवी. तथा—

"जीवमन्दबुधार्काणां पद्भगों वारदर्शने । शुजावहानि दीक्षायां न शेषाणां कदाचन ॥ १ ॥"

"गुरु, शनि, बुध अने सूर्यनो पड्रवर्ग, वार अने दर्शन एटले दृष्टि, एटलां दीशाने विषे शुज्ज हे, अने बीजा (चंड, मंगळ अने शुक्र)ना पड्रवर्गादिक कदापि शुज्ज नथी."वळी दृषप्रकाशमां तो वृषांश शुक्रवारे होय तोपण ते वर्गोत्तम होवाथी शुज्ज कह्यो हे. कहां हे के-

> "मेसविसाएं मुत्तूण सेसरासीण पंचमे श्रंसे। न य दिस्किङ जर्छ सो विणसइ तह तह पर्छगार्छ॥ १॥"

"मेष आने वृषना पांचमा अंश विना बीजी राशिखेना पांचमा अंशमां दीहा देवी नहीं, कारण के ते तथा तथा प्रयोगधी नाश पामे."

हवे विवाहमां लग्न श्रने श्रंश विगेरे कहे हे.— विवाहे नाग्रहः कोऽपि सम्नानामिह केवसम् । नवांशा धनुराद्यार्धयुग्मकन्यातुलाः शुजाः॥ २२ ॥

श्चर्य—विवाहने विषे लग्ननो कांइ पण स्त्रायह नथी. स्रहीं तो केवळ धननो पूर्वार्ध, मिस्रुन, कन्या स्त्रने तुला एटली राशिना नवांशोज शुज हे.

श्चामह एटले श्चमुक खग्नो प्रहण करवां श्चने श्चमुक खग्नो त्याग करवां एवो जे नियम ते * श्चामह कहेवाय हे. जेम प्रतिष्ठा श्चने दीक्षामां खग्न संबंधी नियम हे तेम विवाहमां खास नियम नथी. केवळ श्चा विवाहना विषयमां गमे ते खग्न हो, परंतु नवांशो तो छपर कहेखाज मनुष्य जाति होवाथी प्रहण करवा बीजा प्रहण करवा नहीं. रक्षमाळाजाष्यमां कहां हे के—"मनुष्यांशेज्योऽन्यत्रासती दरिका च स्थात्" "मनुष्य जातिना श्रंशोधी श्चन्य श्रंशोमां विवाह करवाथी ते स्त्री श्चमती श्चने दरिक श्वाय हे." वळी केटलाक कहे हे के—"धनुषि पराजवयुक्ता" "धनांश खग्न करवाथी

परणेखी स्त्री पराजवे करीने युक्त साय हे," परंतु ग्रंथकारना मतमां तो धननो उत्तरार्धज विरुद्ध हे, स्त्रने पूर्वीर्ध तो मनुष्य जाति हे, तेस्री शुज हे. वळी रक्तमाळामां तो खन्ननो पण नियम स्त्रा प्रमाणे कह्यो हे.—

"कन्या नृयुग्मं च विणिग्वलग्ने, स्थितो विवाहः शुल्रमादधाति।"

"जो क्षप्रमां कन्या, मिथुन के तुक्षा राशि रही होय तो तेमां करक्षो विवाह शुजकारक हे." आ क्षप्तोमां पण नवांशानो नियम जपर कह्या प्रमाणेज जाणवो. ते विषे जास्कर कहे हे के—

"निन्दोऽपि सम्ने दिपदांश इष्टः, कन्यादिसम्रेष्वपि नान्यन्नागः।"

"सम्म निंद्य (श्रशुज) होय तोपण मनुष्यना नवांशाज इष्ट हे, श्रने कन्यादिक शुज समोमां पण बीजो (मनुष्य सिवायनो) श्रंश इष्ट नश्री." वळी व्यवहारप्रकाशमां तो श्रा प्रमाणे कहे हे.—

"धम्वांशो न बुधास्ते जीमास्ते नो तुलांशकः कार्यः । न तुलांशश्चरलग्ने देयस्तुलमकरसंस्थेन्दौ ॥ १ ॥"

"बुधनो श्रस्त होय तो धननो नवांशो क्षेत्रो नहीं, मंगळनो श्रस्त होय त्यारे तुक्षनो श्रंश देवो नहीं, श्रने तुक्ष तथा मकरनो चंद्र होय त्यारे चर क्षग्नमां तुक्षनो श्रंश देवो नहीं."

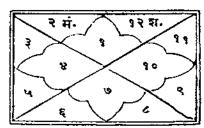
हवे सर्व (त्रणे) प्रकारनां खन्नने विषे साधारण नियम कहे हे.--

त्रिष्विप कूरमध्यस्थौ शुक्रकूराश्चितशुनौ । नेष्टौ लग्नविधू केन्डस्थितसौम्यौ तु तौ मतौ ॥ १३॥

अर्थ — त्रणे (प्रतिष्ठा, दीका अने विवाद) ने विषे के कूर प्रह्नी मध्यमां (वचे) जो खग्न के चंद्र रहे खो होय तो ते इष्ट (शुज) नथी. तथा खग्न के चंद्रथी सातमुं स्थान शुक्र के कूर प्रहे आश्रित कर्युं होय तो ते पण इष्ट नथी, परंतु जो खग्न के चंद्रथी केंद्रनां चारे स्थानमां सौम्य प्रहो रह्या होय तो ते (खग्न अने चंद्र) इष्ट बे.

त्रणेने विषे एटले प्रतिष्ठा, दीका छाने विवाहने विषे वे क्रूर ग्रहनी मध्यमां रहेला जो लग्न के चंद्र होय एटले के लग्ननी बन्ने बाजुए एटले बीजा छाने बारमा स्थानने विषे क्रूर ग्रहो होय, छाने तेज रीते चंद्रनी पण बन्ने बाजुए क्रूर ग्रहो होय तो छा बन्ने प्रकारे क्रूर कर्तरी कहेवाय के छा प्रत्येक क्रूर कर्तरी त्रण त्रण प्रकारनी के छा र, दुष्टा २ छाने छहप दे तेमां जो धन एटले बीजा स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह बक्ती होय, छाने ब्यय (बारमा) स्थानमां रहेलो क्रूर ग्रह मध्यम गतिवाळो होय तो

बन्ने बाजुबी संघट्टो धवाथी (त्यप्ननी साथे अयमावाथी) ते क्र कर्तरी अति इष्ट कहेवाय हे. तेनी स्थापना आ प्रमाणे —



ज्यारे ज्यय (बारमा) स्थानमां रहेलो क्रूर यह अतिचारवाळो (शीध गितवाळो) होय त्यारे ते क्रूर कर्तरी विशेष करीने अति छुष्ट जाण्वी, केमके तेनो संघहो शीधपणे याय हे माटे. र ज्यारे धन (२) अने ज्यय (१२) बन्ने स्थानमां रहेला क्रूर यहो मध्य गितवाळा होय, अथवा ते बन्ने स्थानमां रहेला क्रूर यहो वक्र गितवाळा होय तो ते क्रूर कर्तरी मध्यम छुष्ट हे, कारण के लग्नने एक बाजुधीज संघहो थाय हे. २. परंतु ज्यारे धन (२) स्थानमां रहेलो क्रूर यह मध्यम गितवाळो होय अने ज्यय (१२) स्थानमां रहेलो वक्री होय त्यारे ते क्रूर कर्तरी अह्य छुष्ट जाण्वी, कारण के ते बन्ने बाजुनी कर्तरीनो वियोग थाय हे. तेमां पण जो धन (२) स्थानमां रहेलो क्रूर यह अतिचारी (शीध गितवाळो) होय तो ते विशेष करीने अह्य छुष्ट हे, कारण के तेनो शीधपणे वियोग थाय हे. २. आनी जावना छपर आपेली स्थापनाने विषे स्वयं करी लेवी. एज प्रमाणे चंवनी बन्ने बाजुए क्रूर ग्रहो रहेला होय तो तेनी पण त्रणे प्रकारनी क्रूर कर्तरी जाणी लेवी. अहीं आ प्रमाणे विशेष हे—

"क्र्रग्रहस्यान्तरमा तनुर्जवेनमृतिप्रदा शीतकरश्च रोगदः । शुज्जैर्धनस्थैरथवाऽन्त्यमे गुरौ, न कर्तरी स्यादिह जार्गवा विष्ठः ॥ १ ॥" "त्रिकोणकेन्द्रमो गुरुस्त्रिलाजमो रविर्यदा । तदा न कर्तरी जवेज्जमाद बादरायणः ॥ २ ॥"

"बे कूर ग्रहनी मध्ये लग्न रहां होय तो ते (कर्तरी) मृत्युने करे हे, अने चंज रहाो होय तो ते रोगने करे हे, परंतु धन (२) स्थानमां शुज यह रहाा होय अथवा बारमा स्थानमां गुरु रहाो होय तो कर्तरी यसी नथी एम जार्गव कहे हे. (१) ज्यारे त्रिको- एमां के केंज्रमां गुरु रहाो होय, अने त्रीजा तथा अगीयारमा स्थानमां रिव रहाो होय त्यारे पण कर्तरी अती नथी एम बादरायण (व्यास) कहे हे. २."

वळी जो कदाच बीजुं खग्न नहीं मळवाथी क्र्र कर्तरीनो त्याग थइ शके तेम न होय तो खग्ननी बन्ने बाजुना पंदर पंदर त्रिंशांशोनी श्रंदर जो क्र्र यहो आवता होय तो ते क्रूर कर्तरी श्रवश्य तजवा योग्य हे. एज रीते चंद्रना. विषयमां पण जाणवुं. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्यं हे के-

"पूर्वे पश्चात् पापात्तिथ्यंशा १५ घाटमध्यमश्चन्दः । वर्जियतव्या योगे यस्मादाइयंशरिक्सयुतिः ॥ १ ॥"

"चंद्रनी पूर्वे अने पढ़ीना पंदर अंशोनी अंदर जो पाप अहरूपी कर्तरी होय तो ते वर्जवी, कारण के ते राशि अने अंशनी कळानी युति कहेवाय हे."

मूळ श्लोकमां शुक्रकूर॰ एम कहुं हे तेनो अर्थ आ प्रमाणे हे—लग्नथी के चंत्रथी जो सातमा स्थानमां शुक्र के कूर प्रह होय तो ते जामित्र नामनो दोष कहेवाय है। ते विषे सारंग कहे हे के—

''जदयात्सप्तमसंस्थे शुक्रे सूर्येऽयवा शनौ राहौ । वैधव्यं हितितनये सप्तमगे कन्यका म्रियते ॥ १ ॥"

"खग्नश्री सातमे स्थाने शुक्त, सूर्य, शिन के राहु रह्यो होय तो ते स्त्रीने विधवा-पणुं प्राप्त श्राय हे, श्रने सातमे स्थाने मंगळ रह्यो होय तो ते विवाहित कन्या मरण पामे हे." तथा—

> "सुकं १ गारय २ मंदाए ३ सत्तमे ससहरे गहिश्रदिको । पीनिकाए श्रवस्सं सत्य १ कुसीखत्त २ वाहीहिं ३ ॥ १ ॥"

"शुक्रशी सातमे स्थाने चंद्र होय तो तेवा खग्नमां दीक्तित ययेखो शस्त्रवमे ख्रवस्य पीमा पामे हे, मंगळथी सातमो चंद्र होय तो कुशीळपणाथी पीमाय हे, ख्रने शनिथी सातमो चंद्र होय तो व्याधिथी पीमाय हे" एम खग्नशुद्धिमां कहां हे. तथा—

"शुक्रार्कशिनजीमानां सप्तमेन्दौ विवाहिता ।

संसापल्या १ च विधवा २ निष्पुत्रा ३ स्वैरिए। ४ कमात्॥ १॥"

"शुक्रथी सातमे चंद्र होय तेवे समये कन्यानो विवाह कर्यो होय तो ते सपत्नी (शोक्य)वाळी थाय हे, सूर्यथी सातमो चंद्र होय तो ते विधवा थाय हे, शिनशी सातमो चंद्र होय तो ते विधवा थाय हे, शिनशी सातमो चंद्र होय तो ते पुत्ररहित थाय हे, अने मंगळथी सातमे स्थाने चंद्र होय तो ते कुखटा थाय हे" एम दैवज्ञवह्मजमां कह्यं हे. श्रहीं कोइ हेकाणे राहुने माटे कांइ विशेष कह्यं नथी, तेथी तेनुं फळ शनिनी प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए हे के—

"दौ ब्रहौ यदि जामित्रे कूरौ सौम्यौ च संस्थितौ। अब्दत्रयेण दारिद्यं कन्या पान्नोति दारुणम्॥१॥॥

"जो जामित्र स्थानमां ने कूर ग्रहो श्रने ने सौम्य ग्रहो रहेला होय तो ते कन्या त्रण वर्षमां जयंकर दारिद्य पामे हे" एम दैवक्षवह्मजमां कह्यं हे. मूळ श्लोकमां जे शुककूर० कहां वे तेनो अपवाद मूळ श्लोकमांज केन्द्रस्थित० ए विगेरे पदोधी कहे वे.—लग्नथी अने चंद्रथी जो चारे केन्द्रस्थानमां सौम्य यहो होय तो शुक्र के करू यहे आश्रय करेला सातमा स्थानवाळा लग्न अने चंद्र शुज्ज मानेला वे, एटले के कोइक वलत आदर करवा लायक पण वे. वळी सारंग तो चंद्रथी केन्द्र-स्थानमां रहेला कूर यहनो दोष आ प्रमाणे कहे वे.—

> "सम्रा १ म्बु २ सप्त ३ व्योम ४ स्थो जवेत्क्रूरम्रहो विधोः। आपीमा १ चैव संपीमा २ जुग्वाद्या ३ वर्तिताः ४ क्रमात्॥ १॥ आत्मनो १ बन्धुवर्गस्य २ जायायाः ३ कर्मणः ४ क्रमात्। विनाशो जायते नूनं तदेखाकार्यकारिणः॥ २॥"

"चंज्रश्री पहें थे १, चोथे २, सातमे २ स्त्रने दशमे ४ स्थाने जो क्रूर ग्रह रह्यों होय तो ते स्त्रनुक्रमे स्त्रापीका १, संपीका २, स्त्रावादिक २ स्त्रने वर्तिता ४ एवे नामे कहेवाय हो. ते वेळाए कार्य करवासी स्त्रनुक्रमे पोतानो १, वंधुवर्गनो २, स्त्रीनो २ स्त्रने कर्मनो ४ नाश साय हो." एटले के चंजसी पहेले स्थाने क्रूर ग्रह होय तो ते स्त्रापीका कहेवाय हो, स्त्रने तेनुं फळ स्त्रात्मानो नाश हो. विगेरे.

अहीं कोइने शंका याय के— आ स्थळे लग्न अने चंदना गुण तथा दोष सरला केम कह्या ? आ शंकानो जवाब ए ठे जे—

"क्षप्रवतान्त्रारीरं चन्डबढान्मानसं ग्रहाः सर्वे । द्युक्तीवाश्रयजं शुक्रमशुक्तं वा फलं नियमात् ॥ १ ॥"

"सर्वे ग्रहो लग्नना बळथी शरीर संबंधी श्रने चंदना बळथी मन संबंधी जावना आश्रयथी जत्पन्न थतुं शुच श्रथवा अशुच फळ श्रवश्य आपे हे" एम व्यवहार-प्रकाशमां कहुं है

हवे चंद्रश्री सातमा स्थानमां रहेखा कूर ग्रहश्री जत्पन्न श्रता जामित्र नामना दोषनो जंग कहे हे.

गुरुर्बुधश्च शीतांशुसप्तमकूरदोषहृत्।

पुष्टयेन्डं दशा परयन् खन्न र खा र० म्बु ४ त्रिकोण ए-५ गः॥ १४॥

श्रर्थ—खग्नमां, दशमा स्थानमां, चोथा स्थानमां के त्रिकोण (ए-५)मां रहेलो गुरु श्रयवा बुध जो पुष्ट दृष्टिए करीने चंजने जोतो होय तो ते चंजयी सातमा स्थानमां रहेला क्रूर ग्रहथी जत्पन्न थता दोषने हरण करे हे. श्रहीं पुष्ट दृष्टिए करीने एटले संपूर्ण दृष्टिए अथवा त्रिपाद दृष्टिए करीने एम जाणवुं.

. इवे दीक्तासमये चंघनी साथे रहेला बीजा ब्रहोनुं फळ कहे हे.—

दीकायां कुरुते चन्द्रः क्रमाङ्गीमादिनिर्युतः।

किंदि नियं र मृतिं र नैःस्ठयं ४ तिपदं ए जूमिमृज्ञयम् ६ ॥ १ए ॥ अर्थ—दीक्षासमये जो चंड मंगळनी साथे रह्यो होय तो ते क्लेशने करे छे, बुधनी साथे रह्यो होय तो मृत्युने करे छे, शुक्रनी साथे रह्यो होय तो मृत्युने करे छे, शुक्रनी साथे होय तो विपत्तिने करे छे, अने सूर्यनी साथे रह्यो होय तो ते राजजय जत्पन्न करे छे.

मंगळश्री आरंत्रीने सूर्य सुधी अनुक्रमे क्लेश विगेरे छपर कहेलां फळो जाणवां. विशेष ए छे जे "नीचेऽस्तं वासे॰" (विमर्ष ५, श्लोक ३) ए ठेकाणे महोना अस्तमयना विपयमां जे काळांशो कहेला छे तेमना अर्ध जागमां जो महोनो योग होय तो ते योग इषित छे, अने जो ते महो ते काळना अर्ध विजागने पाम्या न होय अथवा तेने छद्यंघन करी गया होय तो कहेला दोषो छत्पन्न आय खरा, परंतु ते दोषो पाछा निवृत्ति पण पामे छे. ते विषे शौनक कहे छे के—

"योगा यथोक्तफखदाः काखार्धविज्ञागसंश्रितानां तु । अप्राप्तातीतानामिञ्चामात्रं फखं तेषाम् ॥ १ ॥"

"काळना ऋर्ध विजागने आश्रय करेखा (पामेखा) यहोना योगो कह्या प्रमाखे फळने आपनारा होय हो, परंतु ते ऋर्ध विजागने पाम्या न होय अथवा तेने उद्धंघन करी गया होय तो ते योगोनुं फळ इज्ञामात्रज हे."

> हवे विवाह श्रने दीक्षा ए बन्नेनो साधारण नियम कहे हे.— विवाहदीक्षयोर्क्षप्ते यूनेन्ट्स् प्रहवर्जितौ । शुनो केचित्तु जीवक्षयुक्तमिन्द्रं शुन्नं विद्यः ॥ १६ ॥

श्चर्य—विवाह तथा दीकाना लग्नमां सातमुं स्थान तथा चंद्र ए बन्ने स्थान ग्रहे करीने रहित होय तो ते शुन्न हे. केटलाएक तो गुरु श्राने बुधे करीने युक्त एवो चंद्र होय तो तेने शुन्न कहे हे.

सातमुं स्थान ग्रहे करीने रहित होय तो ते ग्रुज हे. तेने माटे सप्तर्षि कहे हे के—
"वैधव्यं १ सापल्यं २ वन्ध्यात्वं ३ निष्प्रजत्वं ४ दौर्जाग्यम् ५ ।
वेदयात्वं ६ गर्जच्युति ७ रकीद्या खग्नतोऽस्तगाः कुर्युः ॥ १ ॥"

"ब्राग्री सातमें स्थाने सूर्य रहें बो होय तो ते विवाहित थयें बी कन्याने विधवापणुं करे हे, चंद्र रह्यो होय तो सपली (शोक्य)ने करे हे, मंगळ रह्यो होय तो वंध्यापणुं करे हे, बुध रह्यो होय तो प्रजारहितपणुं (वंध्यापणुं) करे हे, गुरु रह्यो होय तो प्रजीयपणुं करे हे, शुक्र रह्यो होय तो वेश्यापणुं करे हे, अने शनि रह्यो होय तो गर्जपात करे हे."

चंद्र पण एकखोज रह्यो होय तो ते शुन्न हे. केटलाएक बुध अने गुरु सहित एवा चंद्रने शुन्न कहे हे, कारण के तेर्ड बुध अने गुरु सिवायना बीजा ब्रहोनी साथे रहेला चंद्रनुं फळ आ प्रमाणे कहे हे.—

> "रविणा १ सिण २ जोमेहिं ३ सुक्क ४ केऊहिं ५ राहुणा ६। एगरासिगए चंदे जुझ्दोसो पबुच्च ॥ १॥ दरिहा १ समणी २ चेव मरणं ३ ससवत्तिस्रा ४। कवाबिणी स्र ५ हस्सीदा ६ कमा नारी विवाहिस्रा॥ २॥"

" चंद्र जे राशिमां (स्थानमां) रह्यो होय तेज राशिमां जो रिव १, शिन १, मंगळ ३, शुक्र ४, केतु ५ के राहु ६ रह्यो होय तो ते युति दोष कहेवाय छे. ते युति दोषमां विवाहित थयेली नारी अनुक्रमे आ प्रमाणे फळ पामे छे.—रिवनी युति होय तो ते स्त्री दिद्र थाय छे १, शिननी युति होय तो ते साध्वी थइ जाय छे १, मंगळनी युति होय तो ते मरण पामे छे ३, शुक्रनी युति होय तो ते सपलीवाळी थाय छे ४, केतुनी युति होय तो ते कापालिनी (परिवाजिका) थाय छे ५, अने राहुनी युति होय तो ते कुशीळवाळी (कुलटा) थाय छे ६."

शुक्र श्रने चंद्रनी युति विवाहने विषे सर्वश्रा त्याग करवा योग्य हे एम व्यवहार-सारमां कहुं हे, पण सत्यसूरि तो श्रा प्रमाणे कहे हे.—

> "अन्यर्केंऽन्यगृहे वा कुजबुधगुरुशुक्रशौरिजिः सार्धम्। न जवति दोषाय शशी प्रदक्तिणं याति यदि चैषाम्॥ १॥"

"श्रन्य नक्षत्रमां के अन्य स्थानमां मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र के शनिनी साथे चंडमा रह्यो होय, अने वळी जो ते चंड ते मंगळादिकनी दक्षिए (जमणी) बाजुए चालतो होय तो ते चंड दोषने माटे नथी."

विशेषमां दैवज्ञवहाल कहे ने के—''छा। हैं। ऋरैर्युते चन्छे न्यसः प्रव्रजितः शुक्तैः।" ''वे अथवा तेथी अधिक क्र प्रहोए करीने अथवा सौम्य प्रहोए करीने युक्त एवो चंद्र होय त्यारे जो दीहा खीधी होय तो ते मरण पामे ने."

जपर त्रेवीशमा श्लोकमां लग्नथी के चंजथी सातमा स्थानमां शुक्र के क्रूर यह रह्यो होय तो तेने जामित्र दोष कह्यो हो, ते दोषनो मतांतरे करीने श्रपवाद (जंग) कहे हे.-

> पञ्चपञ्चाशमेवांशं जामित्रं परमं परे। श्रंशाफुज्जन्ति खग्नेन्द्रोगीहितग्रहदूषितम्॥ १७॥

अर्थ-केटलाक आचार्यों कहे है के लग्न अने चंदनों जे आंश कार्य वखते आध-

कार कर्यों होय ते अंशथी पंचावनमोज आंश निंदित (शुक्र के कूर) यहे करीने दूषित होय तो ते परम जामित्र नामनो दोष हो, माटे तेनो त्याग करवो

बग्न अने चंद्रना अधिकार करेला अंशयी पंचावनमोज अंश निंदित ग्रहे करीने युक्त होय तो ते निंदित ग्रह्माज कारण्यी परम जामित्र नामनो दोष थाय हे, माटे तेनेज केटलाक आचार्यो तजे हे—तजवानुं कहे हे. जावार्थ ए हे जे—जेटलामो नवांशो लग्नने विषे अधिकार (स्वीकार) कर्यो होय तेटलामोज सातमा स्थाननी राशिमां रहेलो नवांशो पंचावनमो होय हे. तेज रीते चंद्र पण जे राशिमां जेटलामा नवांशामां होय ते राशियी सातमी राशिनो तेटलामो नवांशो चंद्रना नवांशायी पंचावनमो होय हो, तथी लग्नना अंशयी अथवा चंद्रना अंशयी पंचावनमा नवांशामां जो कूर ग्रह के शुक्त होय तो ते परम जामित्र नामनो दोष थाय हे. जेम मेष राशिना पहेला अंशमां लग्न अथवा चंद्र होय अने तुलाना पहेला अंशमां कूर ग्रह के शुक्त होय, अथवा चंद्र होय अने तुलाना पहेला ग्रंशमां ते ते प्रमाणे होय के शुक्त होय, अथवा एज रीते त्रीजा, चोथा विगेरे अंशोमां ते ते प्रमाणे होय तो ते अवश्य तजवा योग्य हे. कहां हे के—

"लग्नेन्छसंयुतादंशात् पञ्चपञ्चाशदंशके । अहोऽन्यो यद्यसौ दोषो न गुणैरपि हन्यते ॥ १ ॥"

"तम के चंद्रना श्रिधकार करेता श्रंशथी पंचावनमा श्रंशने विषे जो कोइ मह श्रावतो होय, श्रने जो ते दोषरूप थतो होय तो ते दोष बीजा गुणोए करीने पण हणातो नथी" एम दैवज्ञवस्वनमां कहां हो, परंतु जो पंचावनमा श्रंशंथी न्यून श्रयवा श्रिधक श्रंशे शुक्र के कूर मह होय तो ते जामित्र नामनोज दोष कहेवाय हो, पण ते परम जामित्र थतो नथी. जेमके मेष राशिना त्रीजा श्रंशमां लग्न के चंद्र होय, श्रने तुलाना पहेला के बीजा श्रंशमां शुक्र के कूर मह होय त्यारे ते त्रेपनमो के चोपनमो श्रंश थयो, श्रने ज्यारे मेषना पहेला श्रंशमां लग्न के चंद्र होय, श्रने तुलाना बीजा, त्रीजा के चोथा श्रंशमां कूर मह के शुक्र होय त्यारे ते मेषना पहेला श्रंशथी हप्पनमो, सत्तावनमों के श्रावनमों श्रंश थयो. विगेरे स्थळे केवळ जामित्र दोष थाय हे, श्रने श्रा दोष श्रतंत इष्ट नथी एवो तेनो मत हे. श्रा मत घणाने पण संमत हे.

हवे प्रतिष्ठाने आश्रीने प्रहोनी युति अने दृष्टिनुं फळ कहे बे-

स्थापने स्युर्विधौ युक्ते दृष्टे चाऽऽरादिजिः ऋमात् । स्राप्तिजी र क्रिक्ति र सिक्तार्चा ३ श्री ४ पञ्चत्वा ५ मिजीतयः ६॥ २०॥ अर्थ-प्रतिष्ठाने विषे जो चंड मंगळे करीने युक्त अथवा दृष्ट (जोयेखो) होय तो अप्रिनो जय याय १, बुधे करीने युक्त के दृष्ट होय तो समृष्टि प्राप्त थाय २, गुरुए करीने युक्त के दृष्ट होय तो सिद्धाची एटले प्रतिमा अधिष्ठायक देव सहित (प्रजाव-वाळी) थाय ३, शुक्ते करीने युक्त के दृष्ट होय तो लहमी प्राप्त थाय ४, शनिए करीने युक्त के दृष्ट होय तो श्रिप्तिनो युक्त के दृष्ट होय तो श्रिप्तिनो जय थाय ६, वळी "गुरुणा सर्वपूजिता—" "चंड जो गुरुए करीने युक्त के दृष्ट होय तो ते प्रतिमा सर्वने पूजवा लायक थाय वे" एम दैवइवह्मजमां कह्यं वे श्रा श्लोकमां सामान्यथी दृष्टि शब्द कह्यों वे, तोपण पुष्ट एटले संपूर्ण अथवा त्रिपाद दृष्टि जाण्वी.

हवे सर्व शुज कार्यनां लग्नोमां साधारण रीते तजवा योग्य समय छ श्लोके करीने कहे छे.-

जन्मराशिं जनेर्बम्नं ताज्यामन्त्यं तथाऽष्टमम् । लग्नलग्नांशयोश्चेशौ लग्नात् षष्टाष्टमौ त्यजेत् ॥ १ए ॥

श्रर्थ—जन्मनी राशिने, जन्मना लग्नने, ते बन्नेथी वारमा तथा श्राठमा (लग्न)ने, तथा लग्न अने लग्नांशना स्वामीलं जो लग्नथी ठठे के आठमे होय तो तेने तजवा.

जन्मनी राशिने तजवी एटले जन्मनी जे राशि होय ते राशि खग्नकुंम्ळीमां पहेला जुवनमां आववी न जोइए, अने ते जन्मराशि दीक्षामां शिष्यनी, प्रतिष्ठामां स्थापक अने शिक्ष ए बन्नेनी तथा विवाहमां वर अने कन्या ए बन्नेनी तजवानी हे. ए प्रमाणे आगळ पण सर्वत्र जाणवुं. जन्मनुं लग्न अहीं वर्जवानुं कह्यं हे, परंतु नारचं इमां ते वर्ज्युं नथी. जन्मराशि अने जन्मलग्नथी बारमा तथा आहमा लग्नने अहीं वर्जवानां कह्यां हे ते प्रमाणे कोइए चोथाने पण वर्जवानुं कह्यं हे. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कह्यं हे के-

"दम्पत्योरुपचयजं जन्मक्षिद्वयतश्च शुजलग्नम् । निधनं व्ययं च हिबुकं नेष्टं शेषाणि मध्यानि ॥ १ ॥"

"वर वहुनी जन्मराशियी तथा जन्मलग्नथी छपचय (२-६-११)स्थानमां रहेली राशि जो विवाहसमये लग्नमां होय तो ते शुज लग्न हो, अने आहमा, बारमा के चोथा स्थाननी राशि जो लग्नमां होय तो ते अशुज हो, अने बाकीनां लग्नो मध्यम हे." तथा-

"चतुर्थदादशे कार्ये खग्ने बहुगुणे यदि । श्रष्टमं तु न कर्तव्यं यदि सर्वगुणान्वितम् ॥ १ ॥"

"जो चोशुं श्रने बारमुं लग्न घणा गुणवालुं होय तो ते करवा लायक हे-शुन हे, परंतु जो श्राटमुं लग्न सर्व गुणे करीने युक्त होय तोपण ते करवा लायक नथी" एम गर्ग कहे हे. विशेष ए हे जे—

''अष्टमर्झोदयोद्भतदोषो नश्यति जावतः। स्रोशाष्ट्रमराशीशौ मिश्रो मित्रे यदा तदा॥ १॥" "जो लग्ननो स्वामी अने आठमी राशिनो स्वामी परस्पर मित्र होय तो आठमी राशिथी अने लग्ननी राशिथी जत्पल थयेलो दोप जावथी नाश पामे हे" एम बृहस्पति कहे हे.

"तथा चतुर्थं रिष्पं वा मित्रत्वेन शुर्जं स्मृतम् । गुरुणा जुगुणा केन्जित्रकोणस्थेन चेकितम् ॥ १ ॥"

"तथा चोथुं अने वारमं लग्न परस्पर मित्रपणाए करीने युक्त होय, अने केन्द्र के त्रिकोणमां रहेला गुरु के शुक्रनी तेना पर दृष्टि पनती होय तो ते शुन्न कहेलुं हे" एम सारंग कहे हे. तथा—

"होराष्टमं जन्मगृहाष्टमं वा, सम्रं शुनं केन्यसितेहितं चेत् ।"

"जो श्रावमी होरानुं लग्न होय के जन्मना स्थानथी आवमा स्थाननी राशिनुं लग्न होय, श्रने तेना पर जो बुध, गुरु के शुक्रनी दृष्टि पमती होय तो ते लग्न शुक्र हे" एम केशव कहे हे. तथा—

> "जन्मगृहजन्मजान्यामष्टमज्ञवनं मृतिप्रदं खग्ने । व्ययहिबुककेन्द्रसंस्थैः शुजग्रहैः शोजनं विविज्ञिः ॥ १ ॥"

"जन्मनी राशिथी के जन्मना ब्रह्मी आठमुं जवन जो लग्नमां होय तो ते मृत्यु आपनारुं हो, परंतु जो बारमा, चोथा के केन्जस्थानमां बळवान् ग्रुज ब्रहो होय तो ते ग्रुज हे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्युं हो.

मूळ श्लोकमां लग्नलग्नांशयोश्च ए पदमां च शब्द लख्यों हे, तेथी जेक्काणनो स्वामी पण लग्नथी होने के आहमें होय तो ते पण तजना योग्य हे. ते विषे लग्न कहे हे के— "लग्नस्थेऽपि गुरौ छष्टः पष्टस्थों लग्ननायकः।"

"अप्रमां गुरु रह्यो होय तोपण जो अप्रमो स्वामी उठा स्थानमां रह्यो होय तो ते हृष्ट-श्रमुच हे." अदमीधर पण कहे हे के-

"विखग्नाधिपतौ पष्ठे वैधव्यं स्यात्तश्रांशपे । जेष्काणाधिपतौ मृत्युर्विखग्ने वखवत्यपि ॥ १ ॥"

"लग्ननो स्वामी तथा नवांशानो स्वामी जो उठे स्थाने रह्यो होय तो विधवापणुं प्राप्त थाय हे, अने देष्काणनो स्वामी उठे होय तो लग्न बळवान् हतां पण मृत्यु श्राय हे."

खग्ननो स्वामी आठमे स्थाने होय तो ते अशुजज हे, तेथी पण (ते करतां पण) जो आठमा जवनमां रहेखो खग्ननो स्वामी खग्नना केष्काण्यी बाबीशमा केष्काणमां होय तो ते घणोज अशुज हे. वटी जो खग्ननो स्वामी अने आठमा जवननो स्वामी एकज केष्काणमां रह्या होय तो ते करतां पण अत्यंत वधारे अशुज हे. खग्नना, नवमांशना अने देव्काणना स्वामी जो उठ के आठमे रह्या होय तो तेनुं फळ रलमाखानाष्यमां आ प्रमाणे कहुं डे.—

"वर्षमासदिनैर्गेहदेष्काणनवमांशपाः । राशिमानेन दास्यन्ति फल्जमित्याह शीनकः ॥ १ ॥"

"डोंड के आउमे स्थाने रहेलो लग्ननो स्वामी राशिने अनुसारे एटले जेटलामी राशि होय तेटली संख्यावाळा वर्षे करीने तेनुं फळ आपे डे, एज प्रमाणे फेंब्काणनो स्वामी तेटले मासे अने नवमांशनो स्वामी तेटला दिवसे करीने फळ आपे डे एम शौनक कहे डे.'

मूळ श्लोकमां षष्ठाष्टमी कहुं हे. तेना छपत्रक्षाश्री वारमा स्थानमां रहेलो लग्ननो स्वामी पण शुज नथी, तेथी करीने लग्ननो अने लग्नांशनो स्वामी होछ, आहमे के वारमे होय तो ते शुज नथी एम सिद्ध थयुं. तेनो अपवाद आ प्रमाणे हे.—वृश्चिक लग्न के वृश्चिकनो नवमांश प्रहण कर्यो होय तो तेनो स्वामी मंगळ जो मेष राशिमां रह्यो होय तो कांइ पण दोष नथी, केमके ते बन्नेनो स्वामी (मंगळ) एकज हे. एज रीते वृष्तुं लग्न अथवा तेनो अंश प्रहण कर्यो होय त्यारे तेनो स्वामी शुक्र जो तुलामां रह्यो होय, तथा कुंज लग्न अथवा तेनो अंश प्रहण कर्यो होय त्यारे तेनो स्वामी शिक्त जो मकरमां रह्यो होय तो बन्नेनो स्वामी एक होवाथी कांइ पण दोष नथी. कह्यं हे के—

"न वृश्चिकं हन्ति कुजोऽजवतीं, वृषं न शुक्रोऽपि तुखाधरस्यः । तथैव कुंजं रविजो न हन्ति, मृगस्थितो वा तनुगं व्ययस्थः ॥ १ ॥"

"मेष राशिना खन्नमां रहेलो मंगळ वृश्चिकने हणतो नथी, तुला राशिना लग्नमां रहेलो गुक्र वृषने हणतो नथी, तथा मकर राशिरूप व्यय (१२)स्थानमां रहेलो मंगळ पहेला स्थानमां रहेलो कुंजने हणेतो नथी." वळी आज युक्तिए करीने मेष के तुला राशिमां जन्मलग्न के जन्मराशि होय तो ते मेष अने तुलाथी आठमा रहेला वृश्चिक आने वृष पण लग्नपणे ग्रहण करवामां आवे तो ते दोषने माटे नथी. ते विषे विवाहवृंदावनमां कह्यं हे के—

"व्यित्ववृषं जननक्षित्वसयोर्जवनमप्टममञ्युदितं त्यजेत्।" "जन्मराशि अने जन्मलग्नने विषे (मध्ये) वृश्चिक अने वृष सिवाय वीजा आठमा जवनरूप लग्न तजवा योग्य हे. अर्थात् वृश्चिक अने वृष ए वेज आठमा स्थानमां रहेला सारा हे." तथा—

"जन्मराशिजन्मद्ययाच्यां घादशमष्टमं च द्यप्नेशं त्यजेत्।"

"जन्मराशि अने जन्मलग्नथी बारमो अने आठमो लग्ननो स्वामी तजवा योग्य है" एम पण रत्नमालाजाष्यमां कहां है.

इन्डक्र्रयुतं सम्रं तथा सम्रोदितांशकान् । अधिकांशमहं दूष्यग्रहादर्वागपि त्यजेत् ॥ ३० ॥

अर्थ—लग्नमां चंड के कोइ पए कूर यह होय तो ते लग्न तजवुं, तथा लग्नमां कहेला नवांशों जो चंड के कूर यहे करीने युक्त होय तो ते पए तजवा, तथा लग्नना इप्ट अंशथी अधिक अंशमां रहेला यहने (चंड अथवा कूर यहने) इषित स्थानथी पहेलां पए तजवो.

लग्नमां चंद्र तथा कर प्रहने तजवा माटे लक्ष पण कहे हे के-

"सौम्यम्बस्युक्तमपि प्रायः शशिनं विवर्जयेद्वप्ते । कूरमहं न लग्ने कुर्यान्नवपञ्चमधने वा ॥ १ ॥"

"खग्नमां चंद्र जो सौम्य ग्रहे करीने युक्त होय तोपण ते प्राये करीने तजवा खायक हो, (अर्थात् क्र्र ग्रहे करीने युक्त होय तो अवश्य तजवा योग्य हे,) तथा खग्नमां क्र्र ग्रहने करवो नहीं एटले तजवा योग्य हे, तेज प्रमाणे नवमा स्थानमां, पांचमा स्थानमां अने बीजा स्थानमां पण क्रूर ग्रह तजवो." तथा—

"लग्नस्थे तपने व्यालो १ रसातलमुखः कुजे १। इयो मन्दे २ तमो राहौ ४ केतावन्तकसंक्षितः ५॥१॥ योगेष्वेषु कृतं कार्यं मृत्युदारिद्यशोकदम्।"

"तम्मां सूर्य रह्यो होय तो ते व्यात योग कहेवाय है रे, मंगळ रह्यो होय तो ते रसातत्तमुख नामनो योग कहेवाय है रे, शनि होय तो छय योग रे, राहु होय तो तम योग ४ अने केतु होय तो ते अंतक नामनो योग कहेवाय है ए. आ योगमां करेतुं कार्य मृत्यु, शोक अने दारिद्य आपनारुं आय है" एम दैवक्षवद्वान कहे है.

"लग्नोदितांशकान्" एटले लग्नने विषे छदित एटले कहेला जे कन्यादिक नवांशों हे ते पण चंद्र के कूर महे युक्त होय तो तजवा लायक हे, एटले के जे राशिमां चंद्र के कूर मह होय ते राशिना नामवाळो लग्नेशनो (लग्नना स्वामीनो) नवांशक पण तजवा योग्य हे. ते विषे गदाधर कहे हे के—

"यस्मिन् राशौ प्रवेचन्द्रस्तमंशं परिवर्जयेत् । तस्माद्भवेच वैधव्यमावर्षान्मुनयो जगुः ॥ १ ॥ यस्मिन् राशौ प्रवेत् क्रूरस्तमंशं परिवर्जयेत् । खग्ने मृत्युं विजानीयात् पञ्चमेऽब्दे न संशयः ॥ १ ॥"

"जे राशिमां चंड होय ते श्रंशने खग्नमां वर्जवी, कारण के तेथी एक वर्ष सुधीमां कन्याने विधवापणुं प्राप्त श्राय हे एम मुनिर्ड कहे हे. वळी जे राशिमां क्र्र ग्रह होय

ते श्रंशने पण क्षयमां वर्जवो, कारण के तेथी पांचमे वर्षे मृत्यु याय हे एम जाणवुं. तेमां कांइ पण संशय नथी."

तथा अधिकांशमहं एटले लग्नमां अधिकार करेलों जे अंश जदय पामेलों होय ते अंशधी अधिक एटले आगळना अंशोमां जे मह रह्यों होय ते मह जावरीतिए करीने आगळना स्थानमांज रहेलों कहेवाय हो, कारण के ते आगळना स्थानमुंज फळ आपे हो, तेथी आ रीतिए करीने पण ते महे ते स्थान आश्रय करातुं हतुं जो दोषने पामतुं होय तो ते पहेलाना स्थानमां रहेला महने पण तजवों जोइए. अर्थात् ते महे ते स्थान प्राप्त नथीं कर्युं तोपण ते (स्थान) इषित हो. ते विषे जास्कर कहे हे के—

"खन्नोदितांशाज्यधिको ब्रह्मे यो, जावेऽब्रिमे जावफलेन स स्यात्। ब्रह्मे यदा जावफलेन याति, स्थाने निषिद्धे तमपीह जह्यात्॥ १॥"

"खग्नमां कहेला श्रंशयी श्रिधक श्रंशमां रहेलो जे ग्रह होय ते जावफळे करीने आगळना स्थानमां छे एम गणवो, तेथी जो कोइ पण ग्रह (ऋर ग्रह) जावफळे करीने निष्ठ (ङ्षित) स्थानमां गयो होय तो तेने पण श्रहीं (लग्नमां) तजवो." श्रहीं ए जावार्थ छे के—लग्नना जे (जेटला) श्रंशों कहेला होय ते (तेटला) श्रंशोमां जे ग्रह रह्यों होय ते ग्रह तेज स्थानना फळने श्रापे छे, श्रने जे ग्रह तेटला श्रंशोने छहंघन करीने रह्यों होय ते ग्रह श्रागळना स्थानना फळने श्रापनारों होय छे. एज रीते बीजा, त्रीजा, चोश्रा विगेरे सर्वे स्थानोमां जाणवुं. ते विषे जास्करेज कह्यं छे के— "लग्नस्थ येंडशा छदिता ग्रहों यस्तेषु स्थितः स्थानफलं स दत्ते।

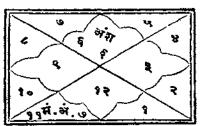
यस्तानतीतः स जवेद्वितीयः, स्थानेषु शेषेष्विप चिन्त्यमेतत् ॥ १॥"

"खग्नना जे (जेटला) श्रंशो कहेला होय ते (तेटला) श्रंशो सुधीमां जे ग्रह रहेलो होय ते ग्रह तेज स्थानना फळने श्रापे छे, श्रने जे ग्रह ते श्रंशोने लक्षंघन करी गयो होय ते ग्रह बीजो (बीजा स्थानमां रहेलो) श्राय छे. एज रीते बीजां सर्वे स्थानोमां जाणवं." दैवक्रवक्षजमां पण कहां छे के—

"खन्नस्थः प्रोच्यते सोऽत्र ग्रहो य उदितांशगः। दितीयोऽनुदितांशस्थः सर्वराशिष्वयं क्रमः॥ १॥"

"जे मह कहें खा श्रंशोमां रहे खो होय ते मह श्रहीं खग्नमां रहे खो कहे वाय हो, श्रने जे मह कहे खा श्रंशोमां रहे खो न होय श्रशीत् तेने उद्घंघन करी गयो होय ते मह बीजा स्थानमां रहे खो कहे वाय हो. श्राज कम सर्व राशि जेने विषे जाए यो." श्रहीं सर्व राशि जेने विषे एम जे कहुं तेनुं तात्पर्य श्रा माणे हे.—खग्नमां रहे खो जेट खामो श्रंश कार्य वखते वर्ततो होय तेट खामोज श्रंश बारे स्थानोने विषे वर्ते हे एम जाए खुं, तेशी करीने जे को इ स्थानने विषे के मह वर्तमान श्रंशने श्रोठंगीने रहाो होय ते (ग्रह) तेनी श्रागळना स्थानमां ज

रहेलो जाएवो. तेथी करीने "दूषितगृहाद्वीगि त्यजेत्" "इषित स्थानथी पहेलां पण वर्जवो" एम जे मूळ श्लोकमां कहां तेनो आज जावार्थ (तात्पर्य) धयो. आ रीते पण आगळना स्थानमां रहेलो आ (वर्तमान) यह तजवानो कहाो होय तो तेवुं सम लेवुं नहीं. जेम कोइ प्रतिष्ठामां कन्या लग्न हे, अने कार्य वखते हो मिथुनांश यहण कर्यो हे, तेथी जो कुंज (सग्नथी हिं।) राशिमां सातमा, आहमा विगेरे अंशोमां मंगळ रह्यो होय तो ते (यह) जावरीतिए करीने मीनमां रहेलो होवाथी सातमा स्थानमांज गणाय, (अने सातमुं स्थान वर्ष्य हे,) तेथी करीने ते सग्न (कन्या सग्न) पण त्याग करवा लायक हे. तेनी स्थापना आ प्रमाणे.—



आज प्रमाणे सर्वत्र जाण्डुं. अहीं कोइ शंका करे के—"ज्यारे आ जावरीतिए करीने इषित थयेखुं स्थान तजवा योग्य कहां त्यारे एज रीतिए जे स्थान प्रहे करीने शोजित होय ते स्थान आदरवा खायक पण्यशे." आवी शंका करवी नहीं, केमके आवा (जाव-रीतिथी थयेखा) गुणोनुं कृत्रिमपणुं होवाथी अनादर करवानेज योग्य हे. कहां हे के —

"नाङ्गीकारो जावजानां गुणानां, तद्दोषाणां तत्त्वतस्त्याग एव । जावव्यक्तावष्टमत्वं गतोऽपि, त्याच्यो लग्नात्सप्तमः सप्तसप्तिः॥ १॥"

"जावरीतिथी जत्पन्न थयेखा गुणोनो अंगीकार करवो नहीं, अने तेना (जाव-रीतिथी जत्पन्न थयेखा) दोषोनो वास्तविक रीते त्यागज करवानो छे, तेथी करीने जावनी स्पष्टताने विषे (जावरीतिए करीने) सूर्य खग्नथी आठमा स्थानमां गयो होय तोपण ते खग्नथी सातमा स्थानमांज छे, माटे तेनो त्याग करवो." तथा—

> "सप्तमस्थो यदा चन्द्रो जवेद्रावफलाष्टमः। न तदा दीयते लग्नं शुजैः सर्वप्रहेरपि॥१॥"

"सातमा स्थानमां रहेलो चंद्र जो जावफळे करीने आठमो खतो होय तो ते वखते सर्व ग्रहो शुज होय तोपण खग्न देवुं नहीं." तथा—

"प्रत्याख्येयः पाहिकोऽपीह दोषः, सम्यग्न्यापी यो गुणः सोऽनुगम्यः । यसादंशैदेंहजावाधिकः सन्न स्याद्भत्यै जार्गवः पञ्चमोऽपि ॥ १ ॥" "आ विवाहादिकना खग्नमां एक पक्तनो दोष पण निषेध-स्ननादर करवा खायक हे, खने जे गुण सारी रीते व्यापीने रह्यो होय तेज अनुसरवा योग्य हे, जेथी करीने अंशोए करीने लग्नना जावथी अधिक थयेलो पांचमो शुक्र पण आबादीने माटे नथी (शुज नथी). खर्थात् चोथा स्थानमां रहेलो शुक्र जो अंशोए करीने लग्नना जावथी अधिक स्थानमां एटले पांचमा स्थानमां जतो होय तोपण ते शुज नथी." आ सर्व हकीकत विवाहने खाशीने विवाहनुंदावनादिक यंथोमां कही हे.

जवेज्जन्मनि जन्मक्तान्मृत्युधामनि यो यहः। ग्रुजोऽपि खग्नवत्येष सर्वकार्येषु नो ग्रुजः॥ ३१॥

अर्थ—जन्मसमये जन्मराशिष्ठी अथवा जन्मलग्नथी आठमा स्थानमां जे ब्रह रह्यो होय ते जो कदाच शुज होय तोपण विवाहादिक सर्व शुज कार्यमां लग्नने विषे वर्ततो ते ब्रह शुज नथी.

जन्मने विषे एटले जन्मसमये. जन्मक्षीत् एटले कक् शब्दना वे अर्थ होवाथी जन्म-राशिथी अथवा जन्मलग्नथी. शुज होय तोपए अर्थात् कूर ग्रहनुं तो शुं कहेवुं? वळी जास्कर तो आ प्रमाएं कहे हे.—

> "जन्मर्कजन्मसम्भाज्यां यौ रन्ध्रेशावश्राष्टमे । सम्रोतांश्च तदंशांश्च तदाशीनपि च त्यजेत् ॥ १ ॥"

"जन्मराशिषी तथा जन्मखग्नथी जे आठमा स्थानना स्वामी खग्नने विषे आठमे होय ते आठमाना स्वामी तथा तेना अंशो तथा ते आठमी राशिनो त्याग करवो."

> शनिश्चिकोणकेन्डस्थो बढीयान् सुहृद्रीकितः। कुजः केन्डान्त्यधर्माष्टस्थितो वा जडजञ्जनः॥ ३१॥

अर्थ—ित्रकोणमां के केन्छस्थानमां रहेलो शिन अति बळवान् अने तेना मित्रवमें जोवायेलो (तेना पर तेना मित्रनी हिष्ट पमती) होय अथवा केन्छस्थानमां, बारमा स्थानमां, नवमा स्थानमां के आठमा स्थानमां रहेलो मंगळ पण अत्यंत बळवान् अने तेना मित्रवमे जोवायेलो होय तो जड़जंजन नामनो योग थाय हे. आ कुयोगनी सार्थक संक्षा हे. अर्थात् अशुज हे, आठमा स्थानमां रहेला मंगळनुं फळ गर्गे आ प्रमाणे कहां हे.—

"खन्नाज्ञीमेऽष्टमगे दम्पत्योर्वह्विना मृतिः समकम् । जन्मनि यो वाऽष्टमगस्तस्मिँद्वन्नं गते वाऽपि ॥ १ ॥"

"मंगळ जो खन्नश्री आतमा स्थानमां रह्यो होय अथवा जन्मसमये जे यह आतमो होय ते यह जो विवाहना खन्नमां रह्यो होय तोपण ते वर बहुनुं एक साथेज अग्निथी मृत्यु थाय हे."

रिवः कुजोऽर्कजो राहुः ग्रुको वा सप्तमस्थितः। इन्ति स्थापककर्तारौ स्थाप्यमप्यविलम्बितम् ॥ ३३ ॥ श्चर्य—रिव, मंगळ, शिन, राहु श्रयवा शुक्र जो सातमा स्थानमां रह्या होय तो प्रतिष्ठा करनार गुरुने, प्रतिमा स्थापन करनारने श्चने बिंवने पण शीघ्रपणे हणे हे. श्चा श्लोक प्रतिष्ठाने श्चाश्रीने जाणवो.

खन्ना १ म्बु ४ स्मर ७ गो राहुः सर्वकार्येषु वर्जितः । त्रिषडेकादशः शस्तो मध्यमः शेषराशिषु ॥ ३४ ॥

श्रर्थ-पहेला, चोथा श्रने सातमा स्थानमां रहेलो राहु सर्व कार्यमां वर्ज्य हे. श्रीजा, ह्रा श्रने श्रमीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते शुच हे, श्रने ते सिवाय बीजां स्थानोमां रह्यो होय तो ते मध्यम हे.

सर्व कार्यमां एटले दीक्षा, प्रतिष्ठा विगेरे (विवाह) कार्यमां. केतुने माटे नारचंद्रमां कहां हे के—"पहेला छने सातमा स्थानमां रहेलो तथा चंद्रे करीने युक्त एटले चंद्रनी साथे रहेलो केतु तजवा योग्य हो, त्रीजा, ह्रा छने छगीयारमा स्थानमां रह्यो होय तो ते प्रहण करवा योग्य (शुज) हो, छने वाकीनां स्थानोमां रह्यो होय तो ते मध्यम हे." छा छपरथी ए सिद्ध थयुं के—राहु जो नवमे के वारमे रह्यो होय तो ते पण श्रेष्ठ हे. छन्यथा (जो श्रेष्ठ न होय तो) केतुने त्रीजा के ह्रा स्थाननी प्राप्तिनो छसंजव थाय.

श्रा रीते सामान्यश्री घटिका लग्नने विषे वर्ज्य दोषो कह्या.

हवे प्रतिष्ठादिक सर्व कार्यना घटिका खग्नमां साधारण जंग आपनारी (अशुज) प्रहोनी संस्था (व्यवस्था) आ प्रमाणे हे.—शिन, रिव, चंड अने मंगळ खग्नमां रह्या होय तो ते अशुज हे, चंड, मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्र आहमा स्थानमां रह्या होय तो ते अशुज हो, चंड, शुक्र, खग्ननो स्वामी अने तेना अंशनो स्वामी होंचे स्थाने रह्या होय तो ते अशुज हो, तथा सातमा स्थाने रहेखा सर्वे प्रहो अशुज हो. ते विवे त्रिविकम कहे हो के—

"त्याज्या तम्नेऽब्धयो ४ मन्दात् षष्ठे शुक्रेन्छतम्रपाः। रम्ध्रे चन्द्रादयः पञ्च सर्वेऽस्रोऽज्ञगुरू समौ॥१॥१

"खन्नने विषे शनिश्री आरंजीने चार महो (शनि, रवि, चंड, मंगळ) वर्ज्य है, ह्या स्थानने विषे शुक्र, चंड अने खन्ननो स्वामी वर्ष्य है, आहमा स्थानमां चंड्यी आरंजीने पांच महो (चंड, मंगळ, बुध, गुरु, शुक्र) वर्ष्य है, तथा सातमा स्थानने विषे सर्वे महो वर्ष्य है, परंतु केटलाकना मते चंड अने गुरु ए वे महो सातमा स्थानमां सम एटले छदासी (मध्मय) है. अहीं राहुने शनि जेवो जाणवो."

सर्व कार्योमां शुज बहनी संस्था दैवहवद्वजमां आ प्रमाणे कही हो.—
"खन्ना छुपचयस्थे २-६-१०-११८केंऽन्त्या १२ स्त ए कर्मा १० य ११ गे विधी।
कोणी पुत्रेऽकेपुत्रे च छिश्चवय २ रिपु ६ खाज ११ गे॥ १॥
त्यक्तरिष्या १२ ष्टमे ए सौम्ये जीवेऽष्टा ए रि ६ व्ययो १२ जितते।
सर्वकार्याणि सिध्यन्ति त्यक्तपद्ससमे सिते॥ २॥"

'खग्नथी जपचय (३-६-१०-११) स्थानमां सूर्य रह्यो होय, बारमा, सातमा, दशमा अने अगीयारमा स्थानमां चंद्र रह्यो होय, मंगळ अने श्रान जीजा, उठा अने अगीयारमा स्थानमां रह्या होय, बुध बारमा अने आठमा सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय, तथा होय, गुरु आठमा, उठा अने बारमा सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय, तथा शुक्र उठा अने सातमा स्थान सिवाय बीजा कोइ पण स्थानमां रह्यो होय तो सर्व कार्यो सिद्ध थाय हे." आ उत्तम अने अशुज (अधम) ए वे प्रकारनी संस्थायी जे प्रहो बाकी रह्या होय ते मध्यम संस्थामां जाणवा. यंत्र आ प्रमाणे—

	ज् सम.	मध्यम.	श्रधम.
रवि	३–६–१०–११	₹-8-4-0-6-45	\$-3
चंड	१२- 3- १० -१ १	₹-4-4-ए	≒– ঢ− १
मंगळ	₹-६-११	₹-8-4-6-\$ 0-\$\$	१-9- 0
बुध	१- २-३-४-५-६- घ-ए-१०-११	१६	G
गुरु	१- २-३-४- ५- ७-१ ०-११	६–१२	Ü
शुक	१- १-३-४-५- 0-ए-१०-११-१२	σ	€ ~9
शनि	३–६–११	2-8-4-6-6-6-6-6	? —9
राडु	₹-६-११	2-V-G-G-60-65	\$H3
केतु	₹-६-११	2-V-C-U-30-38	₽ − В − \$

आ रीते सर्व कार्यमां सामान्य रीते ब्रहोनी संस्था है। हवे दीशाना खग्नमां असाधारण (विशेष) शुज ब्रहोनी संस्थाने कहे है।—

दीक्षायां तरिष्धिन २ त्रि ३ तनया ५ रि ६स्थः शशी िद्ध २ त्रि ३ षट् ६— व्योम १० स्थः क्षिति जू स्त्रि३षड्र६दशमगो १० क्षेज्यौ व्यया १२ ष्टो ठ जिजतौ १-१-३-४-५-६-७-ए-१०-११ ।

शुक्रोऽन्ला ११ रि६ सुत ५ त्रि३ धर्म एधन १ गो मन्दो धन १ चातृ३षट्६— पुत्र५हिड ७ गतश्च शोजनतमः सर्वे च साजस्थिताः ॥ ३५ ॥

अर्थ — दीकानी खग्नकुंमळीमां जो सूर्य बीजे, त्रीजे, पांचमे के उठे स्थाने रह्यो होय तो ते अत्यंत शुज हे, चंद्र बीजे, त्रीजे, उठे के दशमे स्थाने रह्यो होय तो ते शुज हे, मंगळ त्रीजे, उंच के दशमे स्थाने रहेलो शुज ठे, बुध तथा गुरु वारमा तथा स्थाठमा सिवायना १-१-३-४-५-६-५-५-११ स्थानोमां रहेला शुज ठे, शुक्र वारमे, उंच, पांचमे, त्रीजे, नवमे के बीजे स्थाने रहेलो शुज ठे, तथा शिन बीजे, त्रीजे, उंच, पांचमे के स्थाठमे रहेलो शुज ठे. वळी सर्वे यहो स्थानीयारमे स्थाने रह्या होय तो ते शुज ठे. स्था सर्वे यहो खपर कहेलां स्थानोमां रह्या होय तो दीहाना खग्नमां श्रेष्ठ होवायी तेर्च रेला स्थापनारा ठे एम जाणबुं. हर्षप्रकाश विगरे अंश्रोमां तो यहोनी उत्तमादिक त्रण प्रकारनी रचना स्थापमाणे कही ठे.—

"ड पण उरिव ति ड उससी कुज ति उदह बुह ति ड उपण दसमो। किंद तिकोणे य गुरू सुको ति स्र उनव बारसमो॥ १॥ मंदो ड पण उसमो सुक विणा सिंबिगारसहा सुहया। चंदा कूर सत्तम श्राहश्रसहा दिरकसमयिमा॥ १॥ रिव ति ३ सिंस सत्त दसमो बुहेग चल सत्त नव गुरू ति उदो। सुको ड पंच सिंण तिस्र मिकाम सेसा श्रसह सबे॥ ३॥

"दीहाने समये रिव बीजे, पांचमे अने उठ रह्यो होय, चंछ त्रीजे, बीजे के उठ रह्यो होय, मंगळ त्रीजे, उठ के दशमे होय, बुध त्रीजे, बीजे, उठ, पांचमे के दशमे होय, गुरु केंछ के त्रिकोण (१-४-९-१०-१०-१०) स्थाने होय, शुक्र त्रीजे, उठ, नवमे के बारमे होय, शिन बीजे, पांचमे, उठ के आठमे होय तथा शुक्र विना बीजा सर्वे प्रहो अगीयारमे स्थाने होय तो आ सर्वे शुज (उत्तम) डे. तेमज चंडथी सातमे स्थाने कूर प्रह रह्या होय तो ते आत्यंत अशुज डे. तथा रिव त्रीजे स्थाने रह्यो होय, चंछ सातमे के दशमे स्थाने होय, बुध पहेखे, चोथे, सातमे के नवमे स्थाने होय, गुरु त्रीजे, उठ के बीजे स्थाने होय, शुक्र बीजे के पांचमे होय अने शिन त्रीजे स्थाने होय तो ते सर्वे मध्यम डे. बाकीना सर्वे अशुज डे." स्थापना नीचे प्रमाणे.—

1	जत्तम.	मध्यमः	श्रधम.
रवि	५–५–६–११	₹	१ <u>—४—</u> 9— ७—ए—१ ०— १ २
चंद्र	१—३—६—१ १	3 ₹□	१—ध— ५— ७— ए— १ २
मंगळ	३–६–१०-११	ā	१ —२—४—५—७—ए— १ २
बुध	३– ₽−६− ५−१ ०− ११	ร−8−a−ต	ए१ व
गुरु	१- ध- 9-१०-ए-ए-११	३–६–१	ঢ− ₹목
शुक	३–६–ए–१घ	ચ૫	१— ५—८—१० —११
शनि	ユーリーモー ロー さき	₹ .	१- ध- ७-ए-१०- १ २
राह्	₹-६-११	₹-५-5-ए-१ ०-१ २	₹ध9
केतु			

श्रहीं श्रा रहस्य हे.—
"श्रहवावि मिक्तिमबलं काकण सिणं गुरुं च बलवंतं।
श्रवलं सुकं लग्गे तो दिस्कं दिक्क सीसस्स ॥ १॥"

"श्रथवा तो खग्नमां रानिने मध्यम बळवाळो करीने, गुरुने बळवान् करीने तथा गुक्रने बळरहित करीने शिष्यने दीका देवी" एम श्रीहरिजड सूरि कहे छे.

आ प्रहो अनुक्रमे मध्यम बळवान्, जत्कृष्ट बळवान् अने हीन बळवाळा आ प्रमाणे आय हे. बीजे, पांचमे, आउमे अने अगीयारमे स्थाने रहेलो शनि ए स्थानो पण्फरनां होवाथी मध्यम बळवान् हे, अने हर्छ स्थान आपोक्लिमनुं हे तोपण दिग्रबळ सहित होवाथी मध्यम बळवान् हे, गुरु केन्छमां के त्रिकोणमां होय त्यारे ते बळवानज होय हे ए प्रगटज हे. गुरुने अगीयारमा हर्षस्थान आगळ कहेवाशे, तेथी ते स्थानमां पण ते बळवान् हे. तथा त्रीजुं, हर्छ, नवमुं अने वारमुं ए स्थानो आपोक्लिमनां होवाथी त्यां रहेलो शुक्र हीन बळवाळो हे. ते विषे त्रैलोक्यप्रकाशमां कह्यं हे के—

"रूपा २० धे १० पाद ५वीचीः स्युः केन्छादिस्था नजश्चराः।"

"केन्डमां रहेला यहो पूर्ण एटले वीरा वसा बळवान् होय हे, पणफर स्थानमां रहेला यहो मध्यम एटले दश वसा बळवान् होय हे, अने आपोक्लिम स्थानमां रहेला यहो हीन बळवान् एटले पांच वसा बळवान् होय हे."

तेथी करीनेज आ जपरना यहो जत्तम जंगमां स्थापन कर्या है. बाकीना यहो जे स्थानमां रहीने सर्वनी संमितिए रेखाने आपनारा है ते पण जत्तम जंगमां दाखल कर्या है. जे यहो रेखाने आपनार हतां पण यंथांतरमां तेमनो विसंवाद है तेलेने मध्यम जंगमां गल्या है. सातमा स्थाने रहेलो चंड प्रस्तुत (जपरनी त्रण) गाथाने अनुसरवा माटेज मध्यम जंगमां लख्यो है. आ वन्ने जंगथी वाकी रहेला यहोने अधम जंगमां गल्या है. अगीयारमे स्थाने रहेलो शुक्र सूत्रमां (मूळ श्लोकमां) रेखा आपनार कह्यो है तोपण नारचंड, लग्नशुद्धि विगेरे यंथोमां तेनो निषेध होवाथी अधम जंगमां लख्यो है.

हवे विवाहना खप्तमां रेखा आपनारी बहोनी संस्था कहे हे.—
विवाहे त्वकीकी त्रि ३ रिपु६ निधना ७ येषु ११ शुजदो,
विधुः स्वर २ त्र्या ३ येषु ११ कितितनय आय ११ त्रि ३ रिपु६ गः।
बुधेज्यो सप्ता ७ ष्ट ७ व्यय १२ विरहितावास्फुजिदरि६स्मरा ७ ष्टा ७ न्या १२ मुक्त्वा वितनु १ सुख ४ कामे ७ व्वथ तमः ॥ ३६॥
अर्थ—विवाहनी खप्तकुंकळीमां सूर्य अने शनि जो त्रीजा, हका, आहमा के अगीया-

रमा स्थाने रह्या होय तो ते शुज फळ छापनारा हे. चंछ वीजा, त्रीजा के छगीयारमा स्थाने रह्यो होय तो ते शुज हे. मंगळ छगीयारमे, त्रीजे के होंच रहेलो शुज हे. बुध छने गुरु सातमा, आहमा छने वारमा स्थान सिवायनां (१-१-३-४-५-६-ए-११) स्थानोमां रहेला होय तो ते शुज हे. शुक्र हा, सातमा, आहमा छने वारमा स्थान सिवायनां (१-१-३-४-५-ए-१०-११) स्थानोमां रहेलो होय तो ते सारो हे, छने ज्ञानि पहेला, चोथा छने सातमा स्थान सिवायनां (१-३-५-६-ए-ए-१०-११) स्थानोमां रहेलो होय तो ते सारो हे, थरीन शिवायनां (१-३-५-६-ए-ए-१०-११०-११०) स्थानोमां रहेलो सारो हे.

चंद्रनुं बीजुं, त्रीजुं अने अगीयारमुं स्थान शुज कह्यं हे. ते विषे लक्ष कहे हे के—
''यत्रेन्द्रनीयगतो न तृतीयो न दितीयगश्चापि ।
अनुकूलैरिव शेपैस्तह्यग्नं वर्जयेन्मितमान् ॥ १ ॥"

ं ''जे लग्नकुंमळीमां चंड अगीयारमे स्थाने रह्यों न होय अथवा त्रीजे स्थाने रह्यों न होय, अथवा बीजे स्थाने पण न रह्यों होय तो वीजा ग्रहों अनुकूळ होय तोपण तेवुं लग्न बुद्धिमाने वर्जवुं."

मूळ सूत्रमां "सप्ताप्टव्यवण" एम जे कहां हे तेने माटे शौनक कहे हे के—
"सप्तमगते बुधे सित सप्ताब्दान्मारयेत् पितं कन्या ।
मासत्रयेण कन्या निधनगते पश्चतां याति ॥ १ ॥
श्रायुःसौजाग्ययोर्जङ्गः पुंसां द्यूनगते गुरौ ।
स्रुगौ तु योपितामाह विवाहे देवलो मुनिः ॥ २ ॥"

"विवाहकुंमळीमां जो बुध सातमे स्थाने रह्यो होय तो ते कन्या पोताना पितने सात वरस सुधीमां मारे ठे, (अर्थात् तेनो पित मरण पामे ठे,) अने जो बुध आठमे स्थाने रह्यो होय तो त्रण मासनी अंदर कन्या मरण पामे ठे. १. वळी सातमा स्थानमां गुरु रह्यो होय तो पुरुषनां आयुष्य अने सौजाग्यनो नाश याय ठे, अने जो शुक्र सातमे स्थाने रह्यो होय तो कन्यानां आयुष्य तथा सौजाग्यनो नाश याय ठे एम देवस मुनि कहे ठे."

मूळ श्लोकमां "श्रास्फुजित्" शब्द लख्यो वे तेनो श्रर्थ "शुक्र" वे. वळी मूळमां "श्रिरस्मराष्ट्रण" विगेरे कह्यं वे तेने माटे दैवक्षवह्वजमां कह्यं वे के—

"त्रब्रस्थेऽपि गुरी छप्टो जृगुः षष्टोऽप्टमः कुजः"
"गुरु त्रम्मां होय तोपण ठघो शुक्र तथा आठमो मंगळ छष्ट ठे."
मूळ श्लोकमां "वितनु०" विगेरे कह्यं ठे ते विपे शीनक कहे ठे के—
"त्रब्रस्थो वरमरणं राहुर्दिशति द्युने कनीमरणम् ।"
अ१० ४३

"राहु क्षग्नमां रह्यो होय तो ते वरनुं मृत्यु कहे हे, अने सातमे स्थाने रह्यो होय तो ते कन्यानुं मरण कहे हे."

"त्याज्या खग्नेऽब्धयो मन्दात्" खग्नने विषे शनिश्री आरंजीने चार ब्रहो (शनि, रिव, सोम, मंगळ) वर्ज्य हे. आ श्लोकनां अपवादस्थानो कहे हे. चोथा विना बाकीनां पांचमा, सातमा, नवमा, दशमा स्थानमांथी कोइ सौम्य स्थानमां रहेखो शुज ब्रहोए जोयेखो चंद रेखाने आपवावाळो हे.

हवे उठा, आउमा अने वारमा स्थाननुं अशुजपणुं होवाधी ते स्थानोमां प्रहोनी स्थितिना निश्चयनो संप्रह कहे हे. (अर्थात् आ स्थानो अशुज हे तोपण अमुक अमुक प्रहो ते स्थानोए शुज हे. ए वात कहे हे.)—

विवाहे नाष्ट्रमाः श्रेष्ठाः पञ्च सूर्यशनी विना । षष्ठौ चेन्छ्रसितौ तद्भदन्त्येऽन्त्य इति केचन ॥ ३७॥

श्रर्थ—विवाहमां सूर्य अने शनि विनाना पांच प्रहो आठमे स्थाने श्रेष्ठ नथी, एटखे के सूर्य तथा शनि आठमे स्थाने श्रेष्ठ हो, बीजा प्रहो श्रेष्ठ नथी. हो स्थाने रहेखा चंद्र अने शुक्र पण तेज प्रमाणे जाणवा, एटखे के चंद्र अने शुक्र हो स्थाने श्रेष्ठ नथी, अने बाकीना पांच प्रहो श्रेष्ठज हो. वळी केटलाक कहे हे के अन्त्य एटखे बारमा स्थानमां रहेखों अन्त्य प्रह एटखे केतु श्रेष्ठ नथी. आ उत्तम जंगमां प्रहोनी संस्था जाणवी. विशेष आ प्रमाणे हो.—

"जीमे लग्नकलत्रनैधनगते शुकेऽरिसप्ताष्ट्रगे, चन्छे रन्ध्रविलग्नपष्टिनरते लग्नास्तगे जास्वति । तष्क्रानुसुते गुरौ निधनगे सौम्येऽष्टजामित्रगे, जायाम्जोनिधिलग्नजाजि तमसि प्राहुर्न पाणिप्रहम् ॥ १ ॥"

"पहेला, सातमा अने आठमा स्थानमां मंगळ रह्यो होय, शुक्र उद्दे, सातमे के आठमे स्थाने होय, चंड आठमे, पहेले के उठ स्थाने होय, सूर्य पहेले के सातमे स्थाने होय, शनि पण तेज प्रमाणे एटले पहेले के सातमे स्थाने होय, गुरु आठमे स्थाने रह्यो होय, बुध आठमे के सातमे स्थाने रह्यो होय, तथा राहु सातमे, चोथे के पहेले स्थाने रह्यो होय तो ते वखते पाणियहण (विवाह) कह्यं नथी." आ स्थानोए आ यहो अधम ठे एम यतिवहाजमां कह्यं ठे. आ बने जंगथी बाकी रहेलां यहो तथा स्थानो मध्यम जंगमां जाणवां. तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

विवाहकुंमळीनी ग्रहसंस्था--

	जन्म-	मध्यम.	श्रधम.
रवि	३–६– ∪−११	₹-8-4-6-40-45	₹- 3
चंड्	थ—३—१ ६	8-4-3-6-40-45	१–६–७
मंगळ	₹६११	च-ध-ए-ए-१०- १ २	⋠ 一⋬ 一 घ
बुध	₹ द द-ध-ए-६-ए-१०-११	१२	a–£
गुरु	१-2-3-8- ५-६-ए-१११	9-12	ū
शुक	१— २—३—४— ५—ए—१०—११	१२	€—9—¤
शनि	₹ — ६—ʊ—११	इ—ध—ए—ए—१० −१ २	? — 9
राइ-केत्	य—३— ५ —६—७—ए—१०—११	१२	१- ध9

हवे चार श्लोके करीने विवाहना लग्नने विषे विशेष कहे छे.—

चन्छे च सम्रे च चरेऽङ्गनायहैर्द्धे च केन्छे बलिजिः श्रिते चरैः १। युग्मर्क्तगे वाऽथ विधौ विलोकिते,पापयहैः १ स्यायुवतेः पतिष्ठयम् ॥ ३०॥

अर्थ-चर एवा चंड अने सम स्त्रीना ग्रहोए जोयेस होय अने वळवान चर ग्रहोए केन्डस्थाननो आश्रय कर्यो होय तो. १. अथवा मिथुन राशिमां रहेसो चंड पाप ग्रहोए जोयेस होय तो. १. ते स्त्रीने वे पित श्राय हे.

चंद्र चर राशिमां रह्यो होय अने खग्न पण चर होय, तथा ते चंद्र अने खग्नने विषे स्त्रीना ग्रहोनी दृष्टि पमती होय, तथा केन्द्र एटखे एक पण केन्द्रनुं स्थान बळवान् चर ग्रहोए एटखे यायि संज्ञावाळा सूर्य, चंद्र, मंगळ अने शुक्रे अधिष्ठित होय तो एक (पहेखों) योग याय छे. १. अथवा मिश्रुन राशिमां रहेखों चंद्र पाप ग्रहोए संपूर्ण दृष्टिवमे जोवायेख होय तो बीजो योग याय छे. २. आ वेमांथी एक पण योग होय तो ते स्त्रीने वे पति थाय छे. ते विषे दैवज्ञवद्यन्तमां कह्यं छे के—

"चरराशौ विल्नन्नेन्द्रोरङ्गनाग्रहदृष्टयोः । बल्जिर्ज्ञायिजिः केन्द्रे जजेन्नारी पतिद्वयम् ॥ १ ॥ चन्द्रे युग्मस्थिते पापैर्द्षष्टेऽन्यो योषितः पतिः ।"

"चर राशिमां रहेखा खग्न तथा चंद्र स्त्रीना ग्रहोए जोयेखा होय श्रने वळी केन्द्र-स्थानमां बळवान् यायि सूर्य, चंद्र, मंगळ के शुक्र होय तो ते स्त्री वे पतिने जजे हे. १. श्रयवा मिथुन राशिमां रहेखो चंद्र पाप ग्रहोए जोयेख होय तोपण ते स्त्रीने बीजो पति श्राय हे."

तथा—

रविचन्द्रकुजैनींचै १ र्बग्नेशे शत्रुराशिगे १। निवींयें चापि जामित्रे ३ युवत्या निरपत्यता ॥ ३०॥

श्रर्थ—रिव, चंड अने मंगळ नीचना होय तो एक योग. १. खग्ननो स्वामी शत्रुनी राशिमां रह्यो होय तो बीजो योग. १. श्रथवा सातमुं स्थान वीर्य रहित होय तो त्रीजो योग. ३. श्रा त्रणमांथी कोइ पण योग होय तो ते स्त्री संतित रहित थाय छे. श्रहीं स्वामी, सौम्य शहनी युति के दृष्टिनो श्रशाव तथा ते शहोनुं कूर होवापणुं ए विगेरे वेम सातमा स्थाननुं वीर्य रहितपणुं जाणवुं.

तथा--

जामित्रेशः पतिः स्त्रीणां श्वशुरौ जृगुजास्करौ । तैरुचादिस्थितैस्तेषां श्रेयः स्यादन्यदन्यथा ॥ ४० ॥

अर्थ—जे ग्रह सातमा स्थाननो स्वामी होय ते स्वीनो पित जाएवो, तथा शुक्र श्रने सूर्य स्वीना सासु श्रने ससरो जाएवा. श्रा ग्रहो उच्च विगेरे स्थाने रह्या होय तो तेश्रोनुं (पित विगेरेनुं) श्रेय-शुल थाय हो, श्रने श्रन्यथा एटले उच्चादिक स्थाने न रह्या होय तो तेर्जनुं श्रश्रेय-श्रशुल थाय हो.

"श्वशुरी" एटले शुक्र सामु अने सूर्य ससरो ए बेनो एकशेष समास करवाथी "श्वशुरी" अयुं हे. "तैः" एटले ते सातमा स्थाननो स्वामी विगेरे. "ज्ञादि" एटले पोताना ज्ञा स्थाने रह्यो होय तो दीप्त १, पोतानी राशिमां होय तो स्वस्थ १, मित्रना स्थानमां होय तो मुदित ३, पोताना वर्गमां रह्यो होय तो शांत ४, प्रगट किरणोने धारण करतो होय तो शक्त ५, पोताना नीच स्थानने ज्ञांघन करीने पोताना ज्ञा स्थाननी सन्मुख अयो होय तो प्रवृद्धवीर्य ६, पोताना अंशमां रह्यो हतो सौम्य प्रहोए जोयेल होय तो अधिवीर्य ५, सूर्यथी हणायेलो होय तो विकल ७, पोताना शानुना स्थानमां होय तो खळ ए, प्रहे जीतायेलो होय तो पीनित १०, अने नीच राशिमां रह्यो होय तो दीन ११. आ प्रमाणे लह्ने कहेली प्रहोनी अगीयार अवस्थामांनी शुज अवस्थामां रहेला सातमा स्थानना स्वामी, शुक्र अने सूर्ये करीने ते पित, सासु अने ससरानुं श्रेय–शुज आय हे, अने अन्यथा एटले आ अवस्थामांनी अशुज अवस्थामां रहेला सातमा स्थानना स्वामी, शुक्र अने सूर्ये करीने ते पित, सासु अने ससरानुं अश्रेय थाय हे.

तथा—

लग्नोदितांशः स्वेशेन युतो दृष्टोऽथवा नृणाम् । तद्वज्ञामित्रगः स्त्रीणामिष्टोऽनिष्टो विपर्यये ॥ ४१ ॥ अर्थ-समनो उदितांश जो पोताना स्वामीए युक्त अथवा दृष्ट होय तो ते पुरुषो (वर)ने इष्ट-शुज हे. वही सातमा स्थानमां रहेको पण तेज प्रमाणे होय तो ते स्त्रीजने इष्ट-शुज हे, अने तेथी विपरीत होय तो अनिष्ट-अशुज हे.

लग्नमां श्रिधिकार करेलों जे जदयी नवांशों होय ते लग्नोदितांश कहेवाय है. ते नवांशाना नामनी राशि कुंक्ळीमां कोइ पए स्थाने रही होय, परंतु जो ते पोताना स्वामीए युक्त श्रथवा दृष्ट होय तो ते लग्नोदितांश स्वेशयुतदृष्ट कहेवाय है. ते पुरुषोने एटले वरने इष्ट है. तथा लग्नमां रहेलों जेटलामों श्रंश जदयी है तेटलामों सातमा स्थाननों श्रंश जो प्रथमनीज जेम एटले स्वेशयुतदृष्ट होय तो स्त्रीजने एटले कन्याने श्रुज फळदायी है, परंतु तेथी विपरीत एटले जदयी लग्नांश जो स्वेशयुतदृष्ट न होय तो पतिनुं मरण श्राय है, श्रने तेटलामों सातमा स्थाननों श्रंश जो स्वेशयुतदृष्ट न होय तो वहुनुं मरण श्राय है.

श्रहीं तात्पर्य श्रा प्रमाणे हे.—श्रा एक जदय श्रने श्रस्तनो प्रकार हे. ते विषे यतिवञ्चत्रमां कहां हे के.—

"लग्नोदिते तत्प्रजुणा नवांशे, दृष्टे युते वोदयशुष्टिरुक्ता । तत्सप्तमांशे तु कलत्रजाजि, स्वस्वामिनैवं कथितास्तशुष्टिः ॥ १ ॥"

"लग्ननो छदयी नवांशो जो तेना स्वामीए दृष्ट अथवा युक्त होय तो ते छदयशुिक्त हो, अने स्त्रीना (सातमा) स्थानने जजनारो तेनो सातमो छांश पोताना स्वामीए दृष्ट के युक्त होय तो ते अस्तरुद्धि कही छे." अहीं "तत्सप्तमांशे" तेनो सातमो छांश एम जे कहां छे तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे.—लग्नमां जेटलामो छांश छदय पामेलो होय तेटलामो कलत्र (स्त्री) नामना सातमा स्थाननो छांश लग्नना छदितांशश्री गणीए तो सातमोज थाय छे. आ एक प्रकारनी छदयशुद्धि अने अस्तरुद्धिनी रीत छे, अने छीजी रीत आगळ कहेशे, अने ते छदयास्तरुद्धिना बन्ने प्रकारो विवाहना लग्नमां अवश्य प्रहण करवा योग्य छे.

वळी जास्कर नामना आचार्य तो तेटलामो (जेटलामो लग्नोदितांश होय तेट-लामो) पांचमा स्थानमां रहेलो पुत्र नवांशो पण स्वेशयुतदृष्ट होवो जोइए एम इक्षे हो. ते कहे हे के—

"नाथायुक्तेक्षिता खग्नजार्यापुत्रनवांशकाः । कमात् पुंस्त्रीसुतान् झन्ति न झन्ति युतवीक्षिताः ॥ १ ॥" "खग्नना, स्त्रीना (सातमा स्थानना) स्त्रने पुत्रना (पांचमा स्थानना) नवांशो पोत- पोताना स्वामीए युक्त के दृष्ट न होय तो ते अनुक्रमे पुरुष (वर)ने, वहुने अने पुत्रने हुए हो तो ते ते जैने हुएता नथी."

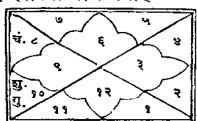
हवे नव श्लोकवरे सर्व कार्यमां साधारण एवा ग्रहसंस्थारूप शुजाशुज योगोने कहे छे.---

खाजेऽकारी शुजा धर्मे श्रीवत्सो यद्यरी शनिः १। अर्धेन्छर्विक्रमे मन्दो रविर्लाजे रिपो कुजः १॥ ४२॥

अर्थ—जो अगीयारमा स्थानमां रिव अने मंगळ होय, नवमा स्थानमां गुज बहो (सौम्य बहो) होय अने उठा स्थानमां शिन होय तो ते श्रीवत्स योग कहेवाय हे. र. अहीं "यदारी" एटले "जो अरि (शत्रु) स्थानमां" एम "जो" शब्द लखवानुं आ तात्पर्य हे.—जे जे बहो जे जे स्थाने नियमित कर्या हे ते ते बहो ते ते स्थानेज होवा जोइए, अने बीजा बहो गमे ते स्थाने होय तोपण आ योग याय हे. ए प्रमाणे सर्व योगोमां जेम संज्ञवे तेम जाणवुं. विक्रम (३) स्थानमां शिन होय, लाज (११) स्थानमां रिव होय अने रिपु (६) स्थानमां मंगळ होय तो बीजो अर्थेन्छ नामनो योग थाय हे. १.

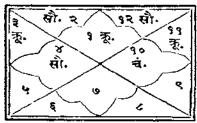
शंखः शुज्रमहैर्बन्धुधर्मकर्मस्थितैर्जवेत् ३। ध्वजः सौम्यैर्विलग्नस्यैः करूरैश्च निधनाश्चितैः ४॥ ४३॥ गुरुर्धर्मे व्यये शुक्रो लग्ने इश्चेत्तदा गजः ५। कन्यालग्नेऽलिगे चन्डे हर्षः शुक्रेज्ययोर्मृगे ६॥ ४४॥

श्रर्थ—बंधु (४) स्थानमां, धर्म (ए) स्थानमां श्रने कर्म (१०) स्थानमां शुज यहो रह्या होय तो शंख योग थाय हे. ३. लग्नमां सौम्य यहो रह्या होय श्रने निधन (७) स्थानमां कूर यहो रह्या होय तो ध्वज योग थाय हे. ४. धर्म (ए) स्थानमां गुरु रह्यो होय, व्यय (१२) स्थानमां शुक होय श्रने लग्नमां बुध होय तो गज योग थाय हे. ५. कन्या राशिनुं लग्न होय, श्रने वृश्चिक (०) राशिमां चंद्र रह्यो होय, तथा मकर राशिमां शुक श्रने गुरु रहेला होय तो हर्ष योग थाय हे. ६. श्रहीं हर्ष योगमां कन्या लग्ननो नियम करवाथी एवं जणावे हे के बीजा योगोमां लग्ननो कांइ पण नियम नथी. हर्ष योगनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—



धनुरष्टमगैः सौम्यैः पापैर्व्यगतैर्ज्ञवेत् । कुठारो जार्गवें षष्ठे धर्मस्थेऽकें शनौ व्यये । ॥ ४५ ॥ मुशलो (लं) बन्धुगे जोमे शनावन्त्येऽष्टमे विधो ए। चक्रं च प्राचि चक्रार्धे चन्द्रात् पापशुजैः क्रमात् १०॥ ४६॥

अर्थ—आउमा स्थानमां सौम्य यहो रह्या होय, अने बारमा स्थानमां पाप यहो रह्या होय तो धनुष् योग याय छे. ए. छठा स्थाने शुक्र होय, धर्म (ए) स्थाने सूर्य होय अने बारमे स्थाने शिन होय तो कुठार योग याय छे. ए. बंधु (४) स्थाने मंगळ होय, वारमे स्थाने शिन होय अने आठमे स्थाने चंड होय तो मुशळ योग थाय छे. ए. चंड (कुंमळी)ना पूर्व अर्ध जागमां प्रथम चंड अने त्यारपठी पाप यह अने शुज यह एवा कमधी चंड योग याय छे. १०. एटखे के लग्नना जेटला नवांशो छदित होय तेटला दशमा स्थानना नवांशोनी पठी पदिक्तणाने कमे गमन करतां (जतां) चोथा स्थानना तेटलाज अंशो सुधी चक्र (कुंमळी)नो पूर्वार्ध कहेवाय छे. ते पूर्वार्धमां प्रथम चंड मूकवो, अने त्यारपठीनां स्थानोमां प्रथम पाप यह अने त्यारपठीना स्थानमां शुज यह मूकवो, ए अनुकमे यहोनी संस्थाने विषे चक्र योग याय छे. चक्र योगनी स्थापना—



कूर्मः पुत्रा । र्थ १ रन्ध्रा ए न्त्ये ११ व्वारमन्देन्ड्जास्करैः ११ वापी पापैस्तु केन्ड्रस्यै ११ योंगाः स्युर्द्धादशेत्यमी ॥ ४९ ॥

अर्थ—पांचमा स्थानमां मंगळ, बीजा स्थाने शिन, आठमा स्थाने चंड अने बारमा स्थाने सूर्य होय तो कूर्म योग आय हे. आ प्रमाणे आ कूर्म योगमां स्थानोनो अने महोनो अनुक्रम जाणवो. ११. तथा केन्डमां पाप प्रहो रह्या होय तो वापी नामनो योग आय हे. १२. आ रीते आ बार योगो धाय हे.

रलमालामां गज विगेरे चार योगोनं लक्षण आ प्रमाणे कहां हे.— "तनुनवजवगैः क्रमेण योगो, बुधविबुधार्चितपङ्गजिर्गजः स्यात् १। व्ययरिपुहिबुकेषु वक्रशुक्रद्यमणिसुतैः क्रमशः कुठार एषः २॥ १॥ रविकविरविजेन्छित्रः क्रमेण, व्ययधनषड्निधनेषु कूर्म एपः ३। व्ययनिधनतनृषु मन्दचन्दारणकिरणैर्भुशतं जगुर्भुनीन्दाः ।। १॥"

"पहेला स्थानमां बुध, नवमा स्थानमां गुरु स्थाने आगीयारमा स्थानमां पंगु (शिन) रह्यो होय तो गज योग स्थाय है. १. बारमा स्थानमां शिन, ह्या स्थानमां शुक्र स्थान चोश्या स्थानमां बुध रह्यो होय तो कुटार योग स्थाय है. १. बारमा स्थानमां सूर्य, बीजा स्थानमां शुक्र, ह्या स्थानमां शिन स्थानमां शिन स्थानमां स्थानमां सूर्य होय तो कूर्म योग स्थाय है. ३. बारमा स्थानमां शिन, स्थानमां सूर्य होय तो मुशळ योग स्थाय है. ४. एम मुनीं हो कहे है."

एच्यः श्रीवत्सपूर्वाः पट् पूर्वे सर्वेषु कमेसु । श्रेयस्तमा धनुर्मुख्यास्त्वन्यथा स्युः षष्ठत्तरे ॥ ४० ॥

अर्थ—आवारे योगमांना श्रीवत्सादिक पहेला व योगो सर्व कार्यमां अत्यंत शुन वे, अने धनुष् विगेरे बाकीना व योगो अन्यथा एटले अत्यंत अशुन वे. विशेष आ प्रमाणे वे.—

> "जदयन्नमें सम्मं १ नवपंचिम क्रकंटयं चिष्यं २। दसमचजत्थे सक्षं ३ कूरा जदयस्थितं बिदं ४॥१॥ मम्मदोसेण मरणं कंटयदोसेण कुलक्खर्ज होइ। सक्षेण रायसत्तू बिद्दे पुत्तं विणासेइ॥२॥"

"क्रूर ग्रहो पहेले छाने छाठमे स्थाने रह्या होय तो मर्म नामनो दोप थाय है. रे. नवमे छाने पांचमे स्थाने रह्या होय तो क्रूरकंटक कह्यो है. रे. दशमे छाने चोथे स्थाने रह्या होय तो शह्य थाय है. रे. छाने पहेले तथा सातमे स्थाने रह्या होय तो हिइ दोष थाय है. ध. मर्म दोषे करीने पोतानुं मरण थाय है, कंटक दोषे करीने छुलनो हाय थाय है, शह्य दोषे करीने राजा शत्रुक्ष थाय है, छाने हिइ दोष होय तो पुत्रनो विनाश थाय है" एम पूर्णजड़ कहे है.

श्रानन्द र जीव शनन्दन ३ जीमृत ४ जय ए स्थिरा ६ मृता ७ योगाः । इग्रुरुसितैः प्रत्येकं द्विकत्रिकैश्चापि लग्नगतैः ॥ ४ए ॥

श्चर्य—बुध, गुरु अने शुक्र ए दरेक दरेक, बवे अने त्रले लग्नमां रह्या होय तो तेले करीने अनुक्रमे आनंद १, जीव २, नंदन २, जीमूत ४, जय ५, स्थिर ६ अने अमृत ४, ए सात योग आय हे.

लग्नमां रहेला दरेक बुध, गुरु अने शुक्रे करीने अनुक्रमे आनंदादिक त्रण योग थाय हे, (एटले के लग्नमां बुध होय तो आनंद १, गुरु होय तो जीव २, अने शुक्र होय तो नंदन २ योग श्राय हो,) लग्नमां बुध छने गुरु रह्या होय तो जीमृत ४ योग श्राय हो, बुध अने शुक होय तो जय ५ योग श्राय हो, गुरु अने शुक्र होय तो स्थिर ६ योग श्राय हो, तथा लग्नमां बुध, गुरु अने शुक्र त्राणे रह्या होय तो श्रमृत ९ योग श्राय हो. अहीं दिकनो अर्थ वबे अने त्रिकनो अर्थ त्रण श्राय हो.

योगा यथार्थनामानः सर्वेषूत्रमकर्मसु । ऐश्वर्यराज्यसाम्राज्यविधातारः क्रमादमी ॥ ५०॥

अर्थ—आ साते योगो सर्व उत्तम कार्यमां यथार्थ नामवाळा होवाथी शुन हे, तथा श्रा योगो अनुक्रमे एैश्वर्य, राज्य अने साम्राज्यने करनारा हे. राजाउने जे शासन करे ते सम्राद् कहेवाय हे, तथी साम्राज्यनो अर्थ चक्रवर्तीपणुं थाय हे. अनुक्रमे एैश्वर्यादिकने करनारा हे एटले के एक एक ग्रह्वाळो योग होय तो एैश्वर्य आपे, वधे प्रह्नो योग होय तो राज्य आपे, अने त्रणे ग्रह्नो योग होय तो साम्राज्य आपे. आ रीते सर्व (११-४-७) मळीने त्रेवीश योग थाय हे.

हवे प्रतिष्ठाना खग्नमां रेखाने आपनारी ग्रहसंस्था कहे हे.— प्रतिष्ठायां श्रेष्ठो रविरुपचये ३-६-१०-११ शीतिकरणः,

स्वधर्मास्ये तत्र १-३-६-ए-१०-११ क्तितजरविजो त्र्यायरिपुगो ३-११-६। बुधस्वर्ग्याचार्यो व्ययनिधनवर्जो १-१-३-४-५-६-७-ए-१०-११मृगुसुतः, सुतं यावस्त्रप्रान्नवमदशमायेष्वपि तथा१-१-३-४-५-ए-१०-११॥ ५१॥

अर्थ-प्रतिष्ठामां सूर्य जो जपचय (३-६-१०-११)स्थानमां रह्यो होय तो ते श्रेष्ठ हो. चंद्र धन (२) अने धर्म (ए) स्थान सिहत पूर्वनां स्थानोमां (२-३-६-ए-१०-११) रह्यो होय तो ते श्रेष्ठ हो. मंगळ अने शिन त्रि, आय अने रिपु (३-११-६) स्थानमां श्रेष्ठ हो. बुध अने गुरु न्यय (१२) तथा निधन (७) ए वे स्थान सिवाय बाकीनां (१-१-३-४-५-६-५-ए-१०-११) स्थानोमां श्रेष्ठ हो. तथा शुक्र लग्नथी सुत (पांचमा) जवन सुधी (१-१-३-४-५) तथा नवमा, दशमा अने आगी-यारमा स्थाने रहेलो श्रेष्ठ हो.

वळी त्रिविकमे जंग देनारा यहो छा प्रमाणे कह्या छे.—
"खग्नमृत्युसुतास्तेषु पापा रन्ध्रे शुजाः स्थिताः ।
त्याज्या देवप्रतिष्ठायां खग्नषष्ठाष्टगः शशी ॥ १ "
भा॰ ४४

"पाप ग्रहो एटखे रिव, मंगळ, शिन अने राहु जो पहेला, आठमा, पांचमा अने सातमा स्थानमां रह्या होय, शुज ग्रहो आठमा स्थानमां रह्या होय, अने चंज पहेला, उठा के आठमा स्थानमां रह्यो होय तो आ रीतनी महसंस्था देवनी मितहामां तजवा योग्य हे." आधी करीने एक पण मह जंग देनारा स्थानमां रह्यो होय तो रेखाए करीने अधिक एवा पण लग्नने विषे मितिष्ठा करवी नहीं, परंतु जंग देनार स्थान एक पण न होय अने केटलाक महो इष्ट होय तथा केटलाक महो अनिष्ट होय तोपण रेखाए करीने अधिक एवा लग्नने विषे मितिष्ठा करवी. वळी केटलाक आचार्योए "ठठो चंज मितिष्ठामां रेखा आपनार हे" एम कहां हो, ते अमुक मकारना योगने आश्रीनेज कहां हो, अन्यशा प्रकारे ते रेखा आपनार यतो नथी एम जाणहुं. आ प्रमाणे त्रिविक्रमशतकनी टीकामां कहां हो.

वळी नारचंदमां तो उत्तम १, मध्यम २, विमध्यम २ अने अधम ४ ए रीते बहोनी चार जंगी कही हो. ते आ प्रमाणे.—

"त्रिरिपा १ वासुतखे २ स्वत्रिकोणकेन्द्र ३ विरैस्मरेऽत्रा ४ ग्यर्थे ए । लाजे ६ कूर १ बुधा २ चिंत ३ जृगु ४ शक्षि ए सर्वे ६ क्रमेण शुजाः ॥ १॥"

"ऋर ग्रहो (रिव, मंगळ, शिन, राहु) त्रीजे तथा उंछ स्थाने शुन हे. बुध पहेलेथी सुत स्थान सुधी (१-१-३-४-५) तथा स (१०) स्थानमां शुन हे. गुरु स्व (१), त्रिकोण (ए-५) खाने केन्द्र (१-४-५-५०) स्थानमां शुन हे. शुक छपरनां सात स्थानो (१-ए-५-१-४-५०) मांथी धन (१) खाने स्मर (१) स्थान रहित एटले ए-५-१-४-१० ए पांच स्थानोमां शुन हे. चंद्र ख्रिय (१) खाने धानोमां शुन हे. तथा सर्वे ग्रहो लाज (११) स्थानमां शुन हे." वळी

"खेऽर्कः केन्द्रारिधर्मेषु शशी क्षोऽरिनवास्तगः । षष्ठेज्यः स्वत्रिगः शुक्रो मध्यमाः स्थापनकृषो ॥ २ ॥ स्थारेन्द्रकाः सुतेऽस्तारिरिष्ये शुक्रस्त्रिगो गुरुः । विमध्यमाः शनिर्धीखे सर्वे शेषेष्र निन्दिताः ॥ ३ ॥ "

"दशमे स्थाने रहेलो सूर्य, केन्ड (१-४-९-१०), छिर (६) छने धर्म (ए) स्थाने रहेलो चंड, उठे, सातमे छने नवमे स्थाने बुध होय, उठे स्थाने गुरु होय, शुक बीजे के त्रीजे स्थाने होय तो ते प्रतिष्ठाने समये मध्यम हे. मंगळ, चंड छाने सूर्य पांचमे स्थाने रह्या होय, शुक उठे, सातमे के वारमे स्थाने होय, गुरु त्रीजे स्थाने होय, शिन पांचमे के दशमे स्थाने होय तो ते विमध्यम आखवा. शेष स्थानोमां सर्वे महो स्थाम हे."

प्रतिष्ठाने विषे प्रहसंस्थानो यंत्र.

	उत्तम.	मध्यम.	विमध्यम.	श्रधम.
रवि	३-६-११	₹ □	Ų	१- २-४- 9-७- ए-१ २
चंद	च- च-११	१-ध-६-७-ए-१०	પ	७-१목
मंगळ	३-६-११		પ	१-२-४-9- ८-ए-१ ०-१२
बुध	१-२-३-४-५-१०-११	ફ-વ-ાપ	0	ए-१ २
गुरु	१-2-8-V-W-9-१0-११	६	३	ए- १२
গুক	१-४-५-ए-१०-११	श- ३	६-७-१२	U
श्रुनि	३-६-११		ए- १ ०	१- २-४- 9- <i>७-</i> १-१२
रा.के.	₹-६-११	इ-ध-ए-ए-१०-१३	ä	₽-\$

पूर्णज्ञ यहसंस्थाना फळने स्था प्रमाणे कहे हे.—

"प्रासाद जंग १ हानी २ धनं ३ स्वजन ४ पुत्र धीम ५ रिपुधाताः ६ ।
स्वीमृति ७ मृति ७ धर्मगमाः ए सुल १० किं ११ शोका १२ स्तनोः प्रजृति सूर्यात् ॥ १॥"
"प्रतिष्ठा लग्नमां जो सूर्य पहेले स्थाने रह्यो होय तो प्रासादनो नाश थाय १, बीजे
होय तो हानि थाय १, त्रीजे होय तो धन मळे ३, चोथे होय तो स्वजनने पीमा थाय
४, पांचमे होय तो पुत्र धीमा थाय ५, छेठ होय तो शत्रुनो नाश थाय ६, सातमे
होय तो स्त्रीनुं मरण थाय ७, आठमे होय तो पोतानुं मरण थाय ७, नवमे होय तो
धर्मनो नाश थाय ए, दशमे होय तो सुल मळे १०, अगीयारमे होय तो किंद्र मळे
११ अने बारमे होय तो शोक थाय १२."

"कर्तृविनाश १ धनागम २ सीजाग्य ३ दन्द ४ दैन्य ५ रिपुविजयाः ६ । शिशानोऽसुख ७ मृति ० विश्वा ए मृपपूजा १० विषय ११ वसुहानी १२ ॥ १॥" "चंद्र पहेले स्थाने होय तो प्रतिष्ठा करनारनो नाश याय १, बीजे होय तो धननी प्राप्ति याय २, त्रीजे होय तो सौजाग्य याय ३, चोथे होय तो युद्ध थाय ४, पांचमे होय तो दीनता थाय ५, ठठे होय तो शञ्जनो जय थाय ६, सातमे होय तो श्रमुख थाय ७, श्राठमे होय तो मरण थाय ०, नवमे होय तो विश्व थाय ए, दशमे होय तो राजाथी सन्मान मळे १०, श्रगीयारमे होय तो विषयविकारनी हानि थाय ११ श्रने बारमे होय तो धननी हानि थाय १९."

"दहनं १ सुरगृहजंगो २ जूलाजो २ रोग ४ पुत्रशस्त्रमृती ५ । रिपु ६ नारी ७ स्वजन ७ गुणजंशा ए रोगा १० र्थ ११ हानयो १२ जौमात् ॥ २ ॥" "मंगळ पहेले स्थाने होय तो प्रासाद बळी जाय १, बीजे होय तो देवनो प्रासाद जांगी जाय २, त्रीजे होय तो पृथ्वीनो लाज थाय २, चोथे होय तो रोग थाय ४, पांचमे होय तो पुत्रनुं शस्त्रथी मरण थाय ए, उंचे होय तो शत्तुनो नाश थाय ६, सातमे होय तो स्त्रीनो नाश थाय ७, आउमे होय तो स्वजननो नाश थाय ७, नवमे होय तो गुणनो नाश थाय ए, दशमे होय तो रोग थाय १०, अगीयारमे होय तो धननी प्राप्ति थाय ११ अने बारमे होय तो हानि थाय १२."

"चिरमहिम १ धन २ रिपुक्तय ३ सुख ४ सुत ५ परिपन्थिमरण ६ वरकन्याः ७ । शशिजेन सूरिमृत्यु ७ र्वसु ए कर्मा १० जरण ११ रैनाझाः १२ ॥ ४ ॥"

"बुध पहेले स्थाने होय तो (प्रतिमानो) घणा काळ सुधी महिमा रहे १, बीजे होय तो धननो लाज थाय २, त्रीजे होय तो शत्रुनो क्रय थाय २, चोथे होय तो सुख मळे ४, पांचमे होय तो पुत्रप्राप्ति थाय ५, ढेंच्र होय तो शत्रुनो नाश थाय ६, सातमे होय तो श्रेष्ठ स्त्रीनी प्राप्ति थाय ७, आठमे होय तो आचार्यनुं मरण थाय ७, नवमे होय तो धन मळे ७, दशमे होय तो कार्यसिद्धि थाय १०, अगीयारमे होय तो आजूषण मळे ११ अने वारमे होय तो धननो नाश थाय १२."

"कीर्ति १ वृद्धिः १ सौख्यं २ रिपुनाशः ४ स्रुतसुखं ५ स्वजनशोकः ६। स्त्रीसुख ९ गुरुमृति ० धन ए खाज १० क्रक्यो ११ हानि १२ रमरगुरोः॥ ५॥"

"गुरु पहेले स्थाने होय तो कीर्ति वधे १, बीजे स्थाने होय तो वृद्धि श्राय १, बीजे होय तो सुल मळे २, बोथे होय तो शत्रुनो नाश श्राय ४, पांचमे होय तो पुत्रनुं सुल मळे ७, ब्रेड होय तो स्वजननो शोक श्राय ६, सातमे होय तो स्वीनुं सुल मळे ७, श्रावमे होय तो गुरुनुं मरण श्राय ०, नवमे होय तो धन मळे ए, दशमे होय तो लाज श्राय १०, श्रामी बारमे होय तो इदि पास श्राय ११ श्रामे बारमे होय तो हानि (मरण्) श्राय १२."

"सिद्धि १ धन २ मान ३ तेजः ४ स्त्रीसुख ५ इप्कीर्तयः ६ सुताधि युता ।
चैत्यादिसर्वहानि ९ श्रासुख ० मितरेषु ए-१०-११-१२ पूज्यता शुक्रात् ॥ ६॥"
"शुक्र पहेंद्वे स्थाने होय तो कार्यसिद्धि श्राय १, बीजे होय तो धन मळे २, त्रीजे होय तो मान पामे २, चोथे होय तो तेज वधे ४, पांचमे होय तो स्त्रीनुं सुख मळे ५, छंठे होय तो अपयश मळे ६, सातमे होय तो पुत्रनी प्राप्ति तथा चैत्य विगेरे सर्वनो विनाश श्राय ९, श्राठमे होय तो असुख श्राय ० तथा नवमे, दशमे, श्रागीयारमे के बारमे होय तो पुज्यपणुं प्राप्त श्रायः"

"पूजा १ कर्तृविघात २ जूरिविजव ३ प्रासादबन्धुक्तयाः ४, पुत्राक्तेम ए विपक्तरोगविद्धय ६ क्वातिप्रियाच्यापदः ७ । गोत्रप्राण्विपत्ति ए पातकपरिष्वक्षी ए च कार्यक्रतिः १०, कान्ताकाञ्चनरक्वजीवितधनं ११ मन्देन मान्धोदयः १२ ॥ ७ ॥" "शिन पहेले स्थाने होय तो (प्रतिमानी) पूजानो नाश श्राय १, बीजे होय तो प्रतिष्ठा करनारनो नाश श्राय २, त्रीजे होय तो घणो वैज्ञव प्राप्त श्राय २, चोशे होय तो प्रासाद श्रने बंधुनो नाश श्राय ४, पांचमे होय तो पुत्रनुं अकस्याण (मरण) श्राय ५, छेठ होय तो शत्रु अने रोगनो नाश श्राय ६, सातमे होय तो ज्ञाति (सगा संबंधी) अने स्त्रीनुं मरण श्राय ५, श्राठमे होय तो गोत्रना (पित्राइना) प्राणनो नाश श्राय ०, नवमे होय तो पाप कर्म वंधाय ए, दशमे होय तो कार्यनी हानि श्राय १० श्रागीयारमे होय तो स्त्री, सुवर्ण, रत्न, जीवित श्राने धननी प्राप्ति श्राय ११ तथा वारमे होय तो मांदगीनो जदय श्राय १२."

"सकतकुंमिलकासु विधुंतुदः, शनिसमानफलो हि विचार्यताम्।" "सर्व लग्नकुंमळीचमां राहुने शनिनी जेवा फळवाळो जाणवो."

वळी खझ तो स्त्रा प्रमाणे कहे हे.— "बलवति सूर्यस्य सुते वलहीनेऽङ्गारके बुधे चैव । मेषवृषस्थे सूर्ये ऋपाकरेऽचीईती स्थाप्या ॥ १ ॥"

''सूर्यनो पुत्र (ज्ञानि) बळवान् होय, मंगळ अने बुध बळहीन होय अने मेष तथा वृष राज्ञिमां सूर्य तथा चंद्र रह्या होय त्यारे अरिहंतनी प्रतिमानी स्थापना करवी." अहीं ''मेषवृषस्थे"ने बदले केटलाएक आचार्यो ''मेषमृगस्थे" एटले ''मेष अने मृग राज्ञिमां" एम कहे हे.

"बंबरीने त्रिदशगुरौ बंबवित जीमे त्रिकोणसंस्थे वा । श्रमुरगुरौ चायस्थे महेश्वराची प्रतिष्ठाप्या ॥ २ ॥"

"गुरु वळहीन होय, मंगळ वळवान् होय अथवा त्रिकोणमां रह्यो होय तथा शुक्र अगीयारमे स्थाने रह्यो होय त्यारे महेश्वर (महादेव)नी प्रतिमा स्थापन करवी."

> "बस्रहीने त्वसुरगुरौ बस्रवति चन्द्रात्मजे विसन्ने वा । चिद्रशुरावायस्थे स्थाप्या ब्राह्मी तथा प्रतिमा ॥ ३ ॥"

"शुक्र बळहीन होय, चंडनो पुत्र (बुध) बळवान होय श्रयवा सग्नमां रह्यो होय तथा गुरु श्रगीयारमे स्थाने रह्यो होय त्यारे ब्रह्मानी प्रतिमा स्थापन करवी."

"शुक्रोदये नवम्यां बखवति चन्छ कुजे गगनसंस्थे। त्रिदशगुरौ वखयुक्ते देवीनां स्थापयेदर्चाम्॥ ४॥"

"नवमीने दिवसे शुक्रनो उदय होय, चंज बळवान् होय, मंगळ दशमे स्थाने रह्यो होय अने गुरु बळवान् होय त्यारे देवीनी प्रतिमा स्थापवी."

"बुधलग्ने जीवे वा चतुष्टयस्थे जृगौ हिबुकसंस्थे । वासवकुमारयदेन्डजास्कराणां प्रतिष्ठा स्यात् ॥ ५॥" "बुध खन्नमां रह्यो होय, श्रयवा गुरु चतुष्टय (१-४-५-१०) स्थानमां रह्यो होय श्रमे शुक्र हिबुक (४) स्थानमां रह्यो होय त्यारे इन्द्र, कार्तिकस्वामी, यक्ट, चंद्र अने सूर्यनी प्रतिष्ठा करवी."

> "यस्य यहस्य यो वर्गस्तेन युक्ते निशाकरे । प्रतिष्ठा तस्य कर्तव्या स्वस्ववर्गीदयेऽपि वा ॥ ६ ॥"

"जे ग्रहनो जे वर्ग होय ते वर्गे करीने युक्त चंद्र होय त्यारे ते ग्रहनी प्रतिष्ठा करवी, श्रयवा पोतपोताना वर्गनो जदय होय त्यारे करवी."

''श्रसात्कालाद्धष्टास्ते कारकसूत्रधारकर्तृणाम् ।
क्रयमरणबन्धनामयविवादशोकादिकर्तारः ॥ ।। ॥"

"आ जपर कहेला समयथी रहित काळे प्रतिष्ठा करी होय तो ते ते देवो करावनार, सुधार अने करनारना इय, मरण, बंधन, व्याधि, विवाद अने शोक विगेरेने करनारा थाय है."

विशेष ए हे जे—रेखा श्रापनारा दरेक श्रहोए करीने सर्व कार्योमां वीश विशोपक-वाळुं लग्न श्राय हेन्ते स्त्रा प्रमाणे.—

> "श्रद्धः विसा रविणो पण सिमणो तिन्नि हुंति तह गुरुणो । दो दो बुहसुकाणं सहा सिणनोमराहूणं ॥ १ ॥"

"सूर्यना सामा त्रण वसा, चंद्रना पांच वसा, गुरुना त्रण, बुधना तथा शुक्रना वबे अने शनि, मंगळ तथा राहुना दोढ दोढ वसा होय छे." आ सर्व मळीने वीश वसा एटखे विशोपक थाय हे."

हवे प्रतिष्ठाना खन्नमां विशेष कहे हे.

बसहीनाः प्रतिष्ठायां रवीन्छग्ररुजार्गवाः ।

रहेश र रहिणी २ सौस्य ३ खानि ४ इन्युर्यथाक्रमम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—जो प्रतिष्ठामां सूर्य, चंद्र, गुरु अने शुक्र वळहीन होय तो तेर्छ अनुक्रमें घरना स्वामीने, तेनी स्त्रीने, सुखने तथा धनने हणे हो, एटले के सूर्य वळहीन होय तो घरना स्वामीनो नाश थाय हो, चंद्र वळहीन होय तो तेनी स्त्रीनो नाश थाय हे विगेरे. अहीं वळहीन एटले पहेलां अहार प्रकारे अथवा नव प्रकारे ग्रहोनी निर्वळता कही हो ते जाणवी. अथवा तो नीच, कूर प्रहे युक्त के अस्त पामेलो जे यह होय ते निर्वळज कहाो हो.

तथा—

तनु १ बन्धु ४ सुत ५ चून ७ धर्मेषु ए तिमिरान्तकः । सकमेसु १० क्रजाकी च संहरन्ति सुरालयम् ॥ ५३ ॥ अर्थ-पहेदा, चोथा, पांचमा, सातमा के नवमा स्थानमां जो सूर्य रह्यो होय अने जपरनां (पांच) स्थानोमां के दशमा स्थानमां मंगळ के शनि रह्यो होय तो ते देवाखयनो नाश करे हे.

> हवे सर्व कार्यमां शुन्न ब्रहोनी शक्ति तथा तेना फळने कहे हे.— सौम्यवाक्पतिशुक्राणां य एकोऽपि बलोत्कटः । क्रोरेखक्तः केन्डस्थः सचोऽरिष्टं पिनष्टि सः ॥ ५४॥

श्रर्थ--बुध, गुरु अने शुक्रमांनो कोइ पण एक बलोत्कट (बिल्ल) होय तेमज ऋर यह तेनी साथे रहेलो न होय अने ते पोते केंडस्थानमां रह्यो होय तो ते तत्काळना रिष्ट योगनो नाश करे हे.

श्रहीं बद्धोत्कट कह्यो हो, तेथी प्रहोने विषे वीश प्रकारे वळ कहे हुं हो. ते श्रा प्रमाणे.-

"स्व १ मित्र २ कों ३ च ४ मार्गस्थ ५ स्व ६ मित्रवर्गगो ७ दितः ०। जयी ए चोत्तरचारी च १० सुह ११ त्सोम्यावलोकितः १२॥१॥ त्रिकोणा १३ यगतो खग्नात् १४ हर्षी १७ वर्गोत्तमांशगः १०। मुश्रुशिखं १ए मुश्रिरफं २० यदि सौम्यैप्रेहैः सह ॥ २॥ सर्वयोगे जवेदेवं बखानां विंशतिर्प्रहे। याबद्वखयुताः खेटास्ताविद्शोपकाः फलम् ॥ ३॥"

"ग्रह पोताना स्थानमां रहेलो होय १, मित्रना स्थानमां रहेलो होय १, पोताना नक्त्रमां रहेलो होय ३, जच्च स्थाने रहेलो होय ४, मार्गमां रहेलो (मार्गी) होय ५, पोताना वर्गमां रहेलो होय ६, मित्रना वर्गमां रहेलो होय ७, जदय पामेलो होय ०, जयवाळो होय ए, जत्तरचारी होय १०, मित्रे जोयेलो होय ११, सौम्य ग्रहे जोयेलो होय ११, त्रिकोणमां रहेलो होय १३, लग्नथी अगीयारमे स्थाने रहेलो होय १४, त्रण प्रकारनो हणीं होय १७, वर्गोत्तमना नवांशकमां रहेलो होय १०, सौम्य ग्रहनी साथे मुंशुशिल योग होय १ए, सौम्य ग्रहनी साथे मुंशुशिल योग होय १ए, सौम्य ग्रहनी साथे मुंशुशिल वोच होय १ए, सौम्य ग्रहनी साथे मुंशुशिल वोच वाच १ए, सौम्य ग्रहनी साथे मुंशिरिक योग होय २०, आ सर्व योग आय तो ग्रहने विषे वीश वसा बळ थाय. जेटला बळवाळा ग्रहो होय तेटला विशोपका (वसा) फळ जाणां."

जपर त्रण प्रकारनो हर्षी प्रह कह्यो है. तेमां प्रहोतुं हर्षस्थान चार प्रकारे कहेलुं है ते आ प्रमाणे —

> ''गो ए त्र्य ३ क्के ६ का १ य ११ घी ए रिष्य १३ स्थानानि जास्करादिखु । इर्षस्थानमिदं पूर्व १ सर्वेखु स्वोच्चजं परम् ॥ १ ॥

१ 'मुशुशिल, २ मूशरिफ, आ वे योगनुं स्टरूप चतुर्थ प्रकाशना ४७ श्वोकना अर्थमां छे.

निशि सायं १ दिने २ योषित् १ पुंग्रहैश्च २ परं क्रमात् ३ ।
तुर्य ज्योम्नलनुं यावनुर्याद्यावच्च सप्तमम् ॥ २ ॥
पुंग्रहेषु तनोर्यावनुर्यं सप्तमतो नन्नः ।
स्वीग्रहेषु मुदः स्थानं ४ फलं तदनुमानतः ॥ ३ ॥"

"सूर्यादि साते यहोने विषे अनुक्रमे नवमुं, त्रीजुं, उष्टं, पहेलुं, अगीयारमुं, पांचमुं अने वारमुं, आ स्थानो प्रथम हर्षस्थान हे १. साते यहोनां जे उच्च स्थान हे ते वीजुं हर्ष-स्थान हे १. स्त्रीरूप एवा चंद्र तथा शुक्र रात्रि तथा संध्याए होय, रिव, मंगल, गुरु आदि पुरुषरूप प्रहो दिवसे होय तो आ यहोनुं त्रीजुं हर्षस्थान हे २. पुरुषरूप रिव, मंगल, गुरु आदि यहोने विषे चोथुं दशमाथी लग्न सुधी (१०-११-११-१), चोथेथी सातमा (४-५-६-५) स्थानो तथा सूर्य, चंद्र तथा शुक्रादिक यहोने विषे लग्नथी चोथा सुधी (१-१-३-४), सातमाथी दशमा सुधी (१-०-१०),आ स्थानो चोथुं हर्षस्थान हे ४, तेनुं फळ ते स्थानोना अनुसारे जाण्डुं."

आमां जच्च हर्पस्थान पूर्वे कहे छुं हो, तेथी अहीं गएयुं नथी. ए रीते अहीं त्रण प्रकारने हर्पस्थान कहुं. पूर्वे कहे छी अगीयार अवस्थाने मध्ये जे यह शुज अवस्थान बाह्ये होय अथवा ह प्रकार आदि बळे करीने युक्त होय ते बही (बळवान्) जाणवो ए रीते अन्य स्थळे पण प्रहोनी सबळता जाणवी.

मूळ श्लोकमां सद्यो रिष्टं एटले तत्काळनो रिष्ट योग, एटले के ते वखते (कार्य वखते) जे लग्न, तिथि, वार विगेरे होय तेमना योगे करीने जे रिष्ट योग जत्पन्न अयो होय ते। जेम मध अने धीना समान योगे करीने विष योग आय है. आवा रिष्ट योगनो नाश करे हे एम जाण्डुं, ते रिष्ट योग आ प्रमाणे थाय है.—

"छदयाजतलग्नमिति (तिं) संक्रान्तेर्जुक्तदिवसमितियुक्ताम् । सैकां च विधाय बुधः पृथक् पृथक् पश्चधा न्यसेत् ॥ १ ॥ किस्वा तत्र क्रमशः तिथि १५ रवि १२ दश १० वसु ए मुनीन् ७ जजेन्नवितः। शेषाङ्कः शरसङ्ख्यो यदि जवति तदा वदेन्निपुणः ॥ १ ॥ कलह १ कृशानुजीति २ र्जूपजयं ३ चौरविषयो ४ मृत्युः ५ । कमशो जवेत् प्रतिष्ठापरिणयनादौ तदा रिष्टम् ॥ ३ ॥"

"जदयश्री गयेला लग्नना प्रमाणने संकांतिना जुक्त (जोगवायेला) दिवसना प्रमाण-वमे युक्त करी तेमां एक नाखवो. पढ़ी बुधने जूदो जूदो पांच प्रकारे स्थापन करवो. तेमां दरेकमां श्रनुक्रमे १५-१२-१०-० श्रने ९ जमेरवा. पढ़ी तेने नवे जाग देवो. शेषमां जो पांच वधे तो निपुण पुरुषे रिष्ट योग कहेवो. प्रतिष्ठा श्रने विवाहादिकमां तेनुं फळ छा प्रमाणे हे.—जो एक शेष रह्यो होय तो कसह याय, वे शेष रह्या होय तो छाग्निथी जय याय, त्रण रह्या होय तो राजाधी जय याय, चार रह्या होय तो चोरनो छपडव याय छाने पांच रह्या होय तो मरण याय." छा प्रमाणे ज्योतिपसार विगेरेमां कह्यं हे. छाथवा.—

"तिथिवारजलग्नाङ्गान् संमीक्ष्य न्यस्य पश्चराः ।
रसा ६ रामा ३ मही १ नागा ० वेदा ४ स्तेषु कमाद्भवाः ॥ १ ॥
केप्यास्ततो ग्रहे ए जीगे पञ्चरोपे फलं कमात् ।
रजा १ ग्नि २ कितिजृ ३ चोरजयं ४ मृत्युजयं ५ तथा ॥ २ ॥
राशिपञ्चकरोपाणां योगे तु नवजिईते ।
पञ्चरोषे जवेन्नागजीतिर्दिग्ने निशागते ॥ ३ ॥"

"तिथि, वार, नक्षत्र श्रने लग्नना श्रंकने एकठा करीने तेने पांच वार स्थापन करवा. तेमां श्रमुक्रमे ठ, त्रण, एक, श्राठ श्रने चार नाखवा. त्यारपठी तेने नवे जाग देवो. जाग देतों एकथी पांच सुधी जो शेष रहे तो श्रमुक्रमे श्रा प्रमाणे फळ जाण्डुं. एक शेष रहे तो व्याधि थाय, वे रहे तो श्रमिश्री जय थाय, त्रण रहे तो राजाथी जय थाय, चार रहे तो चोरथी जय थाय श्रने पांच शेष रहे तो मृत्युजय थाय. रात्रिना सम्मां पांचे राशिमां जे शेष रहेल होय तेने एकठा करीने पठी नवे जाग सेतां जो पांच शेष रहे तो सर्पनो जय थाय.

॥ इति बुधपञ्चकदोषः ॥

मूळ श्लोकमां "पिनष्टि" एट से "(तत्काळ रिष्ट योगनो) नाश करे हे" एम कहां ते विषे जातकवृत्तिमां पण एमल सक्युं हे के—"वुध, गुरु अने शुक्रना छत्कृष्ट बळे करीने तथा रिष्ट योग करनारा यहो छपर तेमनी (वुध, गुरु अने शुक्रनी) पुष्ट (पूर्ण) हिष्ट पमवाश्री सर्वे रिष्ट योगोनी निर्वळता श्राय हे" एम कहां हे, तेश्री अहीं पण तेज प्रकारे कहां.

हवे ते (बुध, गुरु अने शुक्र)नाज जचपणाने विषे शक्तिनुं फळ कहे हे.— बिक्षः स्त्रोचगो दोषानशीतिं शीतरहिमजः। वाक्रपतिस्तु शतं हन्ति सहस्रं चासुरार्चितः॥ ५५॥

श्चर्य—बित्व श्चने पोताना उच्च स्थानमां रहेको बुध एंशी दोबोने हणे हे, (एवोज)
गुरु सो दोबोने हणे हे श्वने (एवोज) शुक्र हजार दोबोने हणे हे.

बिष्ठ एटले सूर्यना विंबनी साथे रहेलो न होय ए आदिए करीने आत्यंत बळवान्. आ (बिष्ठ) तथा पोताना उच्च स्थानमां रहेलो ए बन्ने विशेषणो गुरु अने शुक्रने पण जोमवां—जाणवां. दोषो एटले पादगत वेध, क्रांतिसाम्य विगेरे श्रसाध्य दोषो सिवायना बीजा दोषोने हणे हे एम पोतानी मेळे जाणवुं. वळी एंशी, सो श्रमे हजार एवा शब्दो श्रहीं लख्या हे ते घणा, श्रतिघणा श्रमे तेथी पण घणा जाणवा, परंतु कहेली संख्यावाळाज न जाणवा. श्रजिपाय ए हे के बुध, गुरु श्रमे शुक्र विषष्ठ श्रमे पोताना जन्म स्थानमां रहेला होय तो प्रतिष्ठादिक कार्य करवुं श्रम हे. एज प्रमाणे श्रागळ पण जाणवुं.

श्रा त्रणे यहो केंद्रमां रहा। होय तो तेनी केटली शक्ति होय ते कहे छे.—
बुधो विनार्केण चतुष्टयेषु, स्थितः शतं हन्ति विलग्नदोषान्।
शुक्रः सहस्रं विमनोजवेषु, सर्वत्र गीर्वाणगुरुस्तु लक्तम्॥ ५६॥

श्रर्थ—सूर्यनी साथे नहीं रहेलो बुध चारमांथी कोइ पण केंडस्थानमां रह्यो होय तो ते खग्नना सो दोषोने हणे हे, सूर्य विनानो शुक्र सातमा सिवाय वाकीना कोइ पण केंडस्थानमां रह्यो होय तो ते खग्नना हजार दोषोने हणे हे श्रने सूर्य विनानो गुरु सर्वत्र एटले चारमांना कोइ पण केंडस्थानमां रह्यो होय तो तेलग्नना लाख दोषोने हणे हे.

विनाऽर्केण सूर्य विना ए पद त्रणेनी साथे जोमवुं. विमनोज्ञवेषु एटले सातमा स्थानने वर्जीने वाकीना केन्द्रस्थानोमां. सर्वत्र एटले केंद्रनां चारे स्थानोमां. रत्नमालाना जाष्यमां विमनोज्ञवेषु ए पद त्रणे ग्रहोने विषे जोड्युं हो. ते विवाह अने दीहाने आश्रीने आहीं पण अवदय जोमवुं, केमके "विवाहदीह्योर्लग्ने चूनेन्द्रग्रह्वार्जितौ।" "विवाह अने दीहाना लग्नमां सातमुं तथा चंद्रनुं स्थान ए वे स्थान ग्रहरहित होवां जोइए" एम कह्युं हो. मूळमां लाख दोषोने हणवानुं कह्युं. ते विषे कह्युं हो के—

"तिथिवासरनक्त्रयोगलग्नक्णादिजान्। सवलान् हरतो दोषान् गुरुशुकौ विलग्नगौ॥१॥ त्रिकोणकेन्द्रगा वाऽपि जङ्गं दोषस्य कुर्वते। वक्रनीचारिगा वाऽपि क्रजीवज्रगवः शुजाः॥ २॥"

"क्षग्नमां रहेका गुरु अने शुक्र तिथि, वार, नक्षत्र, योग, खग्न अने मुहूर्त्तथी जत्पन्न ययेक्षा बळवान् दोषोने (पण) हणे हे. बुध, गुरु अने शुक्र जो त्रिकोण के केंड्रमां रह्या होय तो ते दोषनो नाश करे हे, तथा ते बुध, गुरु अने शुक्र वक्र होय नीचना होय अथवा शत्रुना स्थानमां रहेक्षा होय, परंतु शुज्र होय, तो ते पण दोषनो नाश करे हे." अहीं "शुज्र होय तो" एम जे कहुं तेनो जावार्थ आ प्रमाणे हे.—

"वकारिनीचराशिस्थः शुजकृत्योच्यते गुरुः । स्वोचांशस्थः स्ववर्गस्थो जृगुणा क्षेन वा युतः ॥ १ ॥" "जो गुरु वकी होय, नीच स्थानमां रह्यो होय ख्रयवा राष्ट्रना स्थानमां रह्यो होय, परंतु पोताना जच्च खंशमां रह्यो होय, पोताना वर्गमां रह्यो होय ख्रने शुक्र के बुधनी साथे रह्यो होय तो ते शुज कहेवाय हे" एम व्यवहारप्रकाशमां कह्यं है.

विशेष ए हे के—श्रहीं दोषों वे प्रकारना जाएवा. तेमां केटलाक दोषों पोते एकलाज लग्नने हणे हे—श्रूषित करे हे, श्रने केटलाक वे त्रण मळीनेज लग्नने हणे हे, पण एकला हणी शकता नश्री. तेमां एकला दोषों श्रा प्रमाणे हे.—

दी ज्ञामां पूर्णिमा तिथि १, प्रतिष्ठामां मंगळवार २, प्रतिष्ठादिकमां गुरुने चंकनुं बळ न होय ते ३, शिष्य स्थने स्थापकने गुरु, चंड स्थने सूर्य ए त्रऐनां वळ होवां जोइए ते न होय ते ४, विवाहमां वरने चंडनुं वळ न होय ते ५, कन्याने गुरु, चंड अने सूर्य ए त्रऐनां बळ होवां जोइए ते न होय ते ६, शिष्य, स्थापक, वर अने कन्याने जन्मनी राशिनुं खन्न १०, ते चारेने जन्मखन्ननुं खन्न होय ते १४, तथा ते चारेने जन्मराशिथी आठमुं लग्न १०, जन्मलग्नथी आठमुं लग्न ११, जन्मराशिथी वारमुं लग्न १६, अने जन्मखग्नथी बारमुं खग्न ३०, तेज शिष्यादिक चारेने जन्मनी राशिष्यी आठमा स्थानमां रहेला ब्रहोनुं तात्काळिक लग्नमां (लग्नकुंकळीमां) पहेला ज्ञवनमां रहेवापणुं ३४, श्रथवा जन्मलग्नथी श्राठमा स्थानमां रहेला ग्रहोनुं तात्काळिक लग्नमां पहेला जवनमां रहेवापणुं २०, ते चारेनां जन्मनक्त्रो ४२, प्रतिष्ठादिक सर्व कार्यना खन्नमां ऋर प्रहोए जोगवीने मुकेलं ध३, जोग्य (जोगववानुं) ४४, छाने छाक्रमण करेलुं नदात्र, ४५ अथवा ग्रह्विक नक्त्र ४६, ग्रह्निल (ग्रहे लेदेखें) नक्त्र ४७, ग्रहोना खदयवेर इषित थयेखुं ४०, तथा श्रस्तवमे इषित थयेखुं ४ए, वक ग्रहे श्राक्रमण करेखुं ४०, जहकापात विगेरे जत्पातची छूषित थयेलुं नहात्र ५१, लग्नगंनांत ५२, तिथिगंनांत ५३, नक्षत्रगंनांत ५४, एकार्गख ५५, विष्टि ५६, व्यतिपात ५७, वैधृत ५०, ऋांतिसाम्य ५ए, संक्रांतिनी पूर्वनी तथा पढ़ीनी सोळ घमीलं ६०, अर्धयाम ६१, कुलिक ६२, बहुणनुं नक्षत्र ६३, ग्रहण्यी दृषित श्रयेला दिवसो ६४, लग्नयी ६५ चंत्रयी ६६ के ते बन्नेयी ६९ सातमे स्थाने रहेलो कूर ग्रह, ते त्रऐथी सातमे स्थाने रहेलो शुक ७०, अशुज वार तथा होरा ७१, श्रशुज स्थाने रहेला ग्रहो ७२, जावरीतिथी पण निषिक स्थानमां श्रावता ग्रहो ७३, लग्ननी ७४, चंजनी श्रयवा ते वन्नेनी ७६ श्रागळ पाउळना पंदर त्रिंशांशनी मध्ये वे कूर ग्रहो आववाधी कूर कर्तरी थाय हे ते, लग्ननो स्वामी ७७, नवांशानो स्वामी ७० श्रयवा ते बन्ने ७ए जावे करीने उठा होय ते, अथवा ते त्रणे जावे करीने आठमा होय ते ७२, नहीं कहेलो नवांशक ७३, आश्रितपणाए करीने

१ जे बखते कार्य करवुं होय तेज बखते.

चंदथी अशुद्ध ययेखुं खग्न ०४, के कूर महथी अशुद्ध ययेखुं खग्न ०५, अथवा तेमनी नवांशक ०९, ७दयनी अशुद्धि ०० तथा असनी अशुद्धि ०ए.

> "एषां मध्यादेकेनापि हि दोषेण इष्यते खन्नम् । चित्रैदोंषेमिंखितैयैंने शुजं तानथो वस्ये ॥ १ ॥"

"आ उपर गणावेदा दोषोमांना एक दोषे करीने पण सम्म इषित आय है. इवे जे वे त्रण दोषो मळीने समने अग्रुज करे हे ते दोषोने हुं कहीश—कहुं हुं."

> "चन्द्रस्य मृतावस्था १ यमाहिरकोऽग्निपः क्रणो यत्र २ । स्रवमं त्रिदिनस्पृग्वा ३ जवेत्तदा क्षग्नमशुजाय ॥ २ ॥"

"जे लग्नने विषे चंद्रनी मरणायस्था होय १, जे मुहूर्त्तनो यम, सर्प, राक्षस के आग्नि स्वामी होय २, तथा अवम (क्ष्य) अथवा त्रण दिवसने स्पर्श करनारी (फह्गु) तिथि होय तो ते लग्न अशुजने माटे हे."

> "पापम्रहलत्ता १ चेजुपम्रहः २ स्यादरायुधः पातः ३ । कात्वैवं त्रिजिरेतैर्जवेत्तदा लग्नमशुजाय ॥ ३॥"

"जो पाप (फुष्ट) ग्रहनी खत्ता होय १, उपग्रह होय २ तथा श्रेष्ठ आयुधवाळो पात होय २, आ प्रमाणे आ त्रण कुयोगोवने इपित थयेखुं खग्न होय तो ते अशुजने माटे हे."

"िवचयगाश्चेत्कूराः १ सौम्यानां केन्द्रसंस्थितिर्न जवेत् २ । सम्नपतिर्देष्टयुतो ३ जवेत्तदा सम्मग्रुजाय ॥ ४ ॥"

" जो ऋर ग्रहो बीजा के बारमा स्थानमां रह्या होय १, सौम्य ग्रहो केंडस्थानमां रहेखा न होय २ अने अग्ननो स्वामी छष्ट (ऋर) ग्रहनी साथे रहेखो होय ३ तो ते अग्न अशुजने माटे हे."

"शुजहग्हीनं खग्नं १ प्रस्तिजं नो शुजैर्युतं दृष्टम् २। केन्द्रस्थाश्चेत्र शुजा ३ जवेत्तदा लग्नमशुजाय॥ ५॥"

"जो शुज बहनी दृष्टि रहित लग्न होय १, जन्मनी राशि शुज बहोए सहित के दृष्ट न होय १ तथा केंजस्थानमां शुज बहो न होय २ तो ते लग्न अशुजने माटे हे." अहीं प्रसूतिजं एटखे शिष्य, स्थापक, कन्या अने वरनी जन्मराशि शुज बहोए युक्त अथवा दृष्ट न होय एम जाएवं.

> "रविजीवौ समरेखौ शुद्धां १ खग्नेऽपि मध्यजावफद्धौ २। केन्द्रगतौ नो सौम्यौ ३ जवेत्तदा खग्नमग्रजाय॥ ६॥"

"जो सूर्य अने गुरु शुद्धिने विषे सम रेखावाळा होय १ अने खन्नने विषे पण मध्यम फळवाळा होय २, तथा केंद्रमां वे सीम्य यहो रहेखा न होय ३ तो ते खन्न अशुप्तने माटे हे."

"व्ययमः सौरो १ नवमे पापलगः सद्ग्रहैर्वियुक्तः स्यात् १।

चृगुसुतयुक्तश्चन्द्रो ३ जवेत्तदा सम्मग्रजाय ॥ **७** ॥"

"जो बारमा स्थानमां शनि होय १, नवमा स्थानमां शुज यह रहित एकछो पाप यहज रह्यो होय २ श्रने चंड शुक्ते करीने युक्त होय ३ तो ते खग्न श्रशुजने माटे छे." प्रति-धामां शुक्र श्रने चंडनो योग श्रेष्ठ छे, तेथी विवाहादिकमां श्रा योग श्रशुज जाणवो.

''श्चनत्यचतुर्थे खन्नं १ जन्मतिथि १ मीस एव जन्माख्यः ३।

फाह्गुनभीनार्कयुति ध र्जवेत्तदा क्षग्नमशुजाय ॥ ० ॥"

"बारमुं के चोशुं खन्न होय १, जन्मनी तिथि होय २, जन्मनो मास होय २ तथा फाह्युन मासमां मीन संक्रांति होय ४ तो ते खन्न श्रशुनने माटे हे."

आ सर्वे समुदायवाळा दोपो बुध, गुरु छाने शुक्र केंद्रादिक स्थानमां रह्या होय तो हणाय हे. ते विषे व्यवहारप्रकाशमां कहां हे के—

"हन्ति शतं दोषाणां शशिजः समुदायिनां हि केन्प्रस्थः। शको हन्ति सहस्रं बसी गुरुर्सक्षमेकं हि॥ १॥"

"केंद्रमां रहेखो बुध समुदायवाळा सो दोवोने हुए छे, बळवान् शुक्र हुजारने हुए छे स्राने गुरु लाख समुदायी दोवोने हुए छे."

जे एकखा दोषों है ते वे प्रकारना है—साध्य छने छसाध्य. तेमां गंकांत, विष्टि, परम जामित्र छने वेध विगेरे दोषों छसाध्य है. छा दोषों होय त्यारे सर्व प्रहोनुं बळ विगेरे विविध गुणों हतां पण खन्न प्रहण करवा खायक नथी. कहां है के—

"एकोऽपि इषयेहोषः प्रवृद्धं गुणसंचयम् । सम्पूर्णं पञ्चगव्येन मद्यविन्दुर्घटं यथा ॥ १ ॥"

"जेम ड्रध, दहीं, घी विगेरे पंच गब्ये करीने संपूर्ण जरेखा घनाने एकज मदिरानुं बिंड इषित करे हे तेम वृद्धि पामेखा गुणसमूहने एकज दोष इषित करे हे."

जे साध्य दोषो हे तेमना प्रतिकारने वे श्लोकवमे कहे हे.-

सम्भातान्नवांशोस्यान् कूरदृष्टिकृतानपि ।

हन्याङ्गीवस्तनौ दोषान् व्याधीन् धन्वन्तरिर्यथा ॥ ५९ ॥

श्चर्य— तम्बी जत्पन्न थयेता, नवांशक्यी जत्पन्न थयेता श्चने कूर दृष्टिए करेता पण दोषोने पहेता स्थानमां रहेतो गुरु हणे हे. जेम शरीरमां रहेता व्याधिर्जने धन्वंतरि हणे हे तेम. तनौ एटले मूर्ति (पहेला) स्थानमां रहेलो स्थित बिलिष्ठ गुरु स्था दोषोने हणे हे. खग्नस्थी हत्पन्न स्रयेला एटले "जन्मराशिं जनेर्लग्नं" (विमर्श ५,श्लोक २५) ए श्लोकमां कहेला दोषोने. नवांशकसी हत्पन्न स्रयेला एटले जे नवांशकनो स्थिपकार कयों न होय स्रयीत् निषेध कयों होय ए विगरेश्री हत्पन्न स्रयेला दोषोने. कूर दृष्टिए करेला एटले "स्थापने स्युर्विधौ दृष्टे युक्ते च" (विमर्श ५,श्लोक २०) ए श्लोकमां कहेला हे ते दोषोने हणे हे. स्थार्थी करीने—

"दर्शने यदि स्यादंशदादशकमध्यगः कूरः। इन्दोर्क्षग्रस्य तथा न शुजः सर्वेषु कार्येषु ॥ १ ॥"

"चंद्र श्रने खन्ननी दृष्टिए जो वार श्रंश सुधीमां कूर ग्रह रहेखो होय तो ते कोइपए (शुज) कार्यमां शुज नथी।"

श्रा श्लोकनो जावार्ष श्रा प्रमाणे हे.—पोतपोताना त्रिंशांशमां रहेला लग्न, चंक्र श्रम बीजा सर्वे प्रहो तात्कालिक (जे काले कार्य करवानं होय ते कालना) स्पष्ट करवा पत्नी जे प्रहोए लग्न श्रमे चंक्र देखाता होय एटले लग्न श्रमे चंक्र छपर जे प्रहोनी हिष्ट पक्ती होय ते प्रहोना श्रमे लग्न तथा चंक्रना जोगवायेला त्रिंशांशो वाद करवा, तेमां जो बाकी बार सुधी रहे तो कूर प्रह श्रशुज जाण्वो, श्रमे सौम्य प्रह होय तो ते शुज जाण्वो, जेमके—बीशमा श्रंशमां रहेलो श्रामि श्राहमा श्रंशमां रहेला लग्न के चंक्रमे जुवे हे, तथी वीशमांथी श्राहमे बाद करतां बाकी बार रहे हो, माटे ते श्रशुज हे। ए प्रमाणे श्रगीयार, दश विगेरे बाकी रहे तो ते पण वर्जवा योग्य हे, परंतु बार करतां वधारे श्रंशमां रहेला कूर प्रहनी हिष्ट दोषवाळी—वर्ज्य नथी.

मूळ श्लोकमां "कूर दृष्टिए करेला पण" एम पण एटले ऋषि शब्द लख्यो हे तेथी कूर प्रदृती साथे रहेवाथी पण जत्यन्न थयेला दोषो ऋहीं जाणवां ते विषे "दीकायां कुरुते चन्दः" (विमर्श ५, श्लोक १५) ए श्लोकमां कहां हे. व्याधीन एटले जेम शरीरमां रहेला व्याधिजने धन्वंतरि हणे हे.

हवे शुज बहोनी दृष्टिनी केटली शक्ति होय हे ? ते कहे हे.— लग्नात् ऋरो न दोषाय निन्दास्थानस्थितोऽपि सन् । दृष्टः केन्डिजिकोणस्थः सौम्यजीवसितैर्यद् ॥ ५०॥

अर्ध-कूर ग्रह लग्नयी निंध स्थानमां रहेलो होय तोपण जो ते केंज्र के त्रिकोणमां रहेला बुध, गुरु अने शुक्रे जोयेलो होय (आ ग्रहोनी तेना पर दृष्टि पनती होय) तो ते दोषने माटे नथी.

निंद्य स्थान एटले आ पांचमा विमर्शमां "तिष्विप ऋरमध्यस्थे" (श्लो॰ १३), "ज्ञेक्कन्मिन जन्मक्रीत्" (३१), "श्लोनिस्त्रकोणकेन्द्रस्थ" (३१), "रिवः कुजोऽर्कजो राहुः" (३३), "तनुबन्धुमुत्रयून" (५३), इत्यादि श्लोकोमां कहेला ते ते दोषोनो आ अपवाद हे. "हष्टः" एटले जोयेलो एम सामान्य रीते कह्यं हे, तोपण अहीं पृष्ट हिए जाण्वी. वळी जो ते ऋर यहने बुध, गुरु अने शुक्र साथे स्वाजाविक अथवा तात्काळिक मैत्री होय तो हिष्टथी अधिक विशेष थयो एम जाण्वं. केंद्र अने तिकोण्यां रहेला एटलुं कह्यं हे तेना जपलक्षण्यी पोताना जच्च स्थानमां रहेला ए विगेरे वमे अत्यंत बित्र होय ते पण जाण्या कह्यं हे के—

"कूरा हवंति सोमा सोमा छुगुणं फलं पयझंति । जइ पासङ् किंदिविचे तिकोणपरिसंविचे वि गुरू ॥ १ ॥"

"जो केंडमां रहेखो अथवा त्रिकोणमां रहेखो गुरु कर प्रहोने जोतो होय तो ते कर प्रहो सौम्य थइ जाय हे, अने सौम्य प्रहोने जोतो होय तो ते बमणा शुज फळने आपे हे." हवे शुज प्रहोनी संस्थाने कहे हे.—

त्रिकोणकेन्द्रायगतैः शुजयहैर्विसप्तमेनासुरपूजितेन च । स्युः कूरचन्द्रै रिपु६विक्रमा३य ११ गैः,कर्तुःश्रियः सन्निहिताश्च देवताः॥५ए॥

अर्थ—शुज ग्रहो त्रिकोण, केंज् अने अगीयारमां स्थाने रह्या होय, तेमां पण शुक सातमा सिवाय बीजां स्थानोमां रह्यो होय, तथा कूर ग्रहो अने चंज उठा, त्रीजा अने अगीयारमा स्थाने रह्या होय- आवी ग्रहसंस्था समये कार्य कर्यु होय तो कर्ताने खदमी मळे डे अने प्रतिमानी सांनिध्यमां देवता रहे डे.

सातमा स्थानने वर्जीने केंद्र अथवा त्रिकोणमां रहेलो शुक्र जाणवो. क्र्यन्दैः एटले क्र्र ग्रहो अने चंद्र. ते चंद्र अने क्र्र ग्रहो प्रतिष्ठादिक सग्नमां त्रीजे, उठे अने अगी-यारमे स्थाने रह्या होय तोज ते शुज डे. अहीं आ प्रमाणे अपवाद डे.—

> "पापोऽपि कर्तृजन्मेशः केन्डस्थः शस्यते ग्रहः। श्रशून्यानि च केन्डाणि मूर्तौ जीवज्ञजार्गवाः॥ १॥"

"कर्ताना जन्मनो स्वामी पापी—क्रूर होय तोपण जो ते यह केंडमां रह्यो होय तो ते शुज हे, अने केंडस्थान अशून्य होय तो ते वलाणवा लायक हे, तथा पहेला स्थानमां रहेला बुध, गुरु अने शुक्र शुज हे." जावार्थ ए हे के—कर्ता एटले प्रतिष्ठा करावनार, श्रावक, दीहा खेनार शिष्य अथवा दीहा देनार गुरुना जन्मने विषे अथवा नामने विषे जे राशि होय तेनो स्वामी पापी होय तोपण जो ते केंडमां रह्यो होय तो शुज हे, अने केंडस्थाने शुज ग्रहो सहित होय तो ते श्रेष्ठ हो, पण शून्य होय तो ते श्रेष्ठ नथी.

मूळ श्लोकमां "संनिहिता" एटखे प्रतिमाने विषे देवता सांनिध्य करे छे एटखे रहे छे छावा प्रकारना खग्न वखते प्रतिष्ठा करवी. ए तात्पर्य छे. अहीं प्रतिष्ठाने आश्रीने छा प्रह्मंस्था कही छे, परंतु आवी प्रह्मंस्था सर्व शुज कार्यमां सिष्टि आपनारी छे एम जाण्तुं. हवे उदय अने अस्तनी शुष्टि कहे छे.—

पश्यन्नंशाधिपो सम्नं जवेड्डद्यशुद्धये । श्रंशास्ते ९ शस्तु सम्नास्तमस्तशुद्ध्ये विस्नोकयन् ॥ ६० ॥

अर्थ—जो अंशाधिपति खग्नने जोतो होय तो ते जदयशुष्टिने माटे हे, परंतु अंश (नवमांश खग्न)थी सातमा स्थाननो स्वामी जो खग्नथी सातमा स्थानने जोतो होय तो ते अस्तशुष्टिने माटे थाय हे.

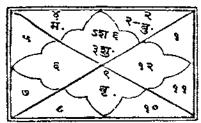
श्रहीं श्रंशाधिप श्रंश शब्दे करीने श्रहीं सर्वत्र नवांशकज प्रहण करवी, केमके ते नवांशने विषेज छदय अने अस्तनी शु ि जोवाय है. वळी "प्रजुरिह नवांशः" अहीं नवांशोज प्रञु हे एम कह्युं हे, परंतु घादशांश के त्रिंशांशने विषे आ शुद्धि जीवाती नथी. "जदयश्रद्धये" अहीं चतुर्थी विजिक्ति तादर्थ्य—तेने अर्थे एवा अर्थमां हे. एज प्रमाणे श्रागळ पण जाणवं. तेथी करीने—जदय पामेखो नवांशनो स्वामी पोताना स्थानमां रहीने जो खन्नने जोतो होय तो जदयशुद्धि थाय हे, केमके खन्नने जोवामां त्यीं रहेला नवांशकतुं पण तेनांथी अपृथक् (अजिन्न)पणाए करीने जोवापणुं हे. श्रंशाधिपः ए जपलक्ष हे, तेथी करीने प्रश्नादिकना लग्नने विषे लग्ननो स्वामीज खग्नने जोतो होवो जोइए. कहुं हे के-"शिरःशुन्यं तदा खग्नं यदा स्वामी न पश्यति।" "ज्यारे खन्ननो स्वामी खन्नने जोतो न होय त्यारे ते खन्न मस्तक रहित छे एम जाएवं." श्रंशास्तेश:-श्रस्त एटले सातमुं स्थान, तेथी करीने आवो अर्थ जाएवो के-लग्नने विषे जे राशिना नामनो नवांशक होय से राशिथी जे श्रस्त-सातमं स्थान, ते सात-मानो स्वामी जो लग्ननी अपेदाए सातमा स्थानने जोतो होय तो अस्तश्चि जाएवी. जावार्ध ए हे जे-कर्क खप्ननो त्रीजो कन्या नवांशक प्रहण कर्यो होय त्यारे जो नवांशनी कन्या राशिष्ठी सातमा स्थानमां रहेली मीन राशिनो स्वामी गुरु मेष, वृश्चिक, वृष, कन्या, तुल, मिथ्रुन श्रने कर्कमांना कोइ पण स्थानमां रहीने कर्क खन्नथी सातमी मकर राशिने जोतो होय तो कर्क खग्नना कन्या नवांशकमां श्रस्तशुष्टि श्रव जाएवी. ए रीते बीजे हेकाले पण जाणवुं. केटलाक श्राचार्यों कहे हे के--"लग्नना नवांशकनी समान नामवाळी राशि कोइ पण स्थाने रहीने पोताना स्वामीवने जोवाती होय त्यारे चदयशुद्धि कहेवाय हे." ते विषे हरिजड सूरि पण कहे हे के-

१ पोताने स्थाने. २ लमधी.

''जदयत्थमुद्धिमिण्हिं जणामि जदर्ज नवंसगो इत्थ । तम्मि श्र खग्गविश्षे सनाहिदके जदयसुद्धी ॥ १॥"

"हवे हुं जदय छाने छासानी शुक्तिने कहुं हुं—इहां जदयशुक्ति नवमांशमां रही है। ते जदयशुक्तिमां लग्नमां छांगीकार करेल नवमांशने नवमांशनो स्वामी जोतो होय तो जदयशुक्ति जाएवी."

स्रानं जदाहरण ए हे जे—िमशुन लग्ननो मीन नवांशक लीधो होय त्यारे ते (मीन)ना स्वामी गुरुए जो मीन राशि जोवाती होय तो जदयशुष्टि जाणवी. ए रीते सर्व हेकाणे जाणवं. स्थापना नीचे प्रमाणे.—



व्यवहारप्रकाशमां तो आ बन्ने प्रकारनी शुद्धिने घणी मानी है. एटखुं तेनुं फळ जत्तम कहुं है. ते आ प्रमाणे.—

> ''श्रंशाधिपतेर्दृष्टिर्यदांशकेंऽशास्तपस्य जागास्ते १। जागपतेर्विन्ने वाऽष्यंशास्तपतेर्विद्धशास्ते २॥१॥ जदयास्तस्य च यदि हृष्टेः शुद्धिर्जवेदिद्धग्नेऽत्र। कान्ताया मङ्गद्धयान्यतनूनि तनौ प्रजायन्ते॥ १॥"

"क्षग्नमां ग्रहण करेल नवमांशना स्वामीनी जो नवमांश छपर दृष्टि होय तो छदय-शुद्धि, नवमांशथी सातमा स्थानना स्वामीनी दृष्टि नवमांशथी सातमा स्थान छपर होय तो अस्तशुद्धि, अथवा नवमांशना स्वामीनी लग्न छपर दृष्टि होय तो छदयशुद्धि, नवमांशथी सातमाना स्वामीनी लग्नथी सातमा स्थान छपर दृष्टि होय तो अस्त-शुद्धि, अहीं लग्नने विषे जो दृष्टिथी छदय अने अस्तनी शुद्धि होय तो स्त्रीना शरीरमां घणां मांगलिक थाय हे."

यतिवद्वजमां तो आ प्रमाणे पण कहां हे.—
"जदयास्तांशतुस्याख्यराश्योरिप विलोकने ।
योगेऽथवा परे प्रादुरुदयास्तविशुद्धताम् ॥ १ ॥"

''छदयांश श्रने श्रास्तांशनी तुक्ष्य नामवाळी बन्ने राशिना जोवामां श्रायवा योगमां केटलाक श्राचार्यो छदय श्रने श्रास्तनी शुद्धि कहे हे." श्राही विद्योकने एटले पोत-भा॰ ४६ पोताना स्वामीए (ते बन्ने राशिने) जोयेख होय तो. योगे— उदयांश अने असांशना नामवाळी बन्ने राशिचे पोतपोताना स्वामीए अधिष्ठित होय तो.

आ जदय अने अस्तनी शुद्धिना प्रकरणधी मात्र दृष्टिनंज काम है, तेश्री ते दृष्टि पुष्ट अथवा अपुष्ट गमे ते होय तेमां कांइ पण विशेष जाणवो नहीं.

विवाहेषु द्वयोगीह्या विशुद्धिरुदयास्तयोः। प्रतिष्ठादीक्तयोस्तावानस्तशुद्धौ तु नामहः॥ ६१॥

अर्थ—विवाहने विषे जदय अने अस्त बन्नेनी शुद्धि अवस्य प्रहण करवी, परंतु प्रतिष्ठा अने दीक्षामां अस्तनी शुद्धि माटे एटलो वधो आग्रह नथी.

बाह्या ए शब्दमां आवश्यक अर्थमां ध्यण प्रत्यय थयेतो होवाथी "अवश्य प्रहण करवी" एवो अर्थ थाय हो. अस्तशुद्धि माटे आग्रह नश्री एटले के छदयशुद्धि तो सर्व कार्यना लग्नमां होवीज जोइए ए अजिपाय हे.

श्रा वाबतमां हरिजड सूरि तो श्रा प्रमाणे कहे हे.—
"वयगहणपइचासु खदयत्यविसुद्धिविश्वश्रे पि सुई।
मन्नेति केइ लग्गं तं च मयं वहुमयं नेयं॥ १॥"

"केटलाएक आचार्यों वतगहण (दीहा) अने प्रतिष्ठामां उदय अने अस्तनी शुक्ति रहित लग्नने पण शुज माने हे. आ मत घणाने संमत हे एम जाण्युं."

श्रा रीते ब्रह्ण करवा लायक लग्ननो अने तेना नवांशादिकनो गुण दोषनी चिंता (विचार) करवापूर्वक निर्णय कर्या उतां पण ते समय क्यारे आवे हे ? ते जाणवा माटे लग्नथी काळलाववानो प्रकार कहेवानो हे. तेमां प्रथम लग्ननुं मान (प्रमाण) कहे हे.—

मध्ये मेषजषो पत्नैर्ननयने १२९ मितङ्गतस्त्रे १५० र्वृषः, कुम्जो वा मिथुनः पुनर्मकरवत्तर्काञ्चधूमध्वजैः ३०६। कर्की धन्विवदम्बराम्बुधिगुणै ३४० रच्चाब्धिरामेरिलः ३४०, सिंहश्चाय कनीघटो यहरदे ३१७ रचन्त्यमी राज्ञयः॥ ६१॥

अर्थ—मध्य देशमां मेष अने मीन राशि २२९ पळोए करीने जदय पामे हे, वृष अने कुंद्रा २५० पळोए करीने जदय पामे हे, मिश्रुन अने मकर २०६ पळोए करीने जदय पामे हे, कर्क अने धन ३४० पळे, सिंह अने वृश्चिक ३४० पळे तथा कन्या अने तुद्धा ३१ए पळोए करीने जदय पामे हे.

मध्ये एटले ''हिमविदिन्ध्ययोर्मध्यं'' ''हिमालय अने विंध्याचळ पर्वतनो मध्य" इत्यादि निघंदुमां कहेवाथी मध्य देशमां आ आ राशिलं आटला आटला पळोए करीने

जदय पामे हे. पळ एटखे एक घनीनो साहमो जाग. एक पळनुं प्रमाण साह गुरु श्रक्रोए करीने थाय हे. ते साह गुरु श्रक्रखाळो कामकीना नामनो हंद (श्लोक) होय हे. ते श्रा प्रमाणे.—

> ''देवः श्रीसर्वज्ञो विश्वश्रीशः सिष्ठिस्त्रीकान्तः, कामडुष्ठोद्दाग्निर्मायादोषात्रास्त्रात्रीरागः । चन्द्रश्वेतश्योकः स्यादादारामाच्दो खोकार्च्या, वीतापायः शान्तो खोकेन्योऽसंख्यं सौख्यं देयात् ॥ १ ॥"

"विश्वनी खदमीना स्वामी, सिष्किरूपी स्त्रीना पित, कामदेवरूपी वृक्तनो नाश कर-वामां अग्नि समान, मायारूपी रात्रीनो नाश करवामां सूर्य समान, राग रहित, चंड जेवा जजवळ कीर्तिवाळा, स्यादादरूपी आराम (वाग)ने नवपछ्यवित करवामां मेध समान, त्रिज्ञवनना लोकने पूच्य, कष्ट रहित अने शांत एवा श्रीसर्वक्ष देव लोकोने असंख्य सख आपो."

एक पळना मानवाळो छावो श्लोक साठ वार वोलवाथी एक घनी थाय हे. छहीं कोइ शंका करे के—"पळना प्रमाणवाळा श्लोकतुं वोलवुं शीध शीधतरपणे छाथवा मंद मंदतरपणे पण संज्ञवे हे, तेथी छा कहेलुं पळनुं मान शी रीते मळतुं छावे ?" छानो छत्तर ए हे जे—"शीधता छाने मंदता रहित मध्यमपणे बोलवुं एज छाहीं इहेलुं हे, केमके सर्व व्यवहारो लोकमां मध्यम प्रमाणे करीनेज प्रवर्ते हे. छाथवा सूदम हिंचाळाने छा बीजी रीते पण जाणवुं के—संगीतशास्त्रमां प्रसिद्ध एवा पंचमातक नामना ताळने छाविहिन्नपणे (एक धाराए) चोवीश वार हाथ छाने मुखवके सम्यक् प्रकारे स्पष्ट करवाथी सर्वथा प्रकारे विसंवाद विनाज एक जळपळ थाय हे." ताळनुं स्वरूप तथा तेने स्पष्ट करवानो विधि संगीतशास्त्रने जाणनारां पासेथी जाणवो.

मूळ श्लोकमां जनयनैः १२७ कह्या हे. तेमां आ प्रमाणे संप्रदाय हे.—
"लङ्कोदया नागतुरङ्गदस्रा २९०, गोऽङ्काश्विना २०० रामरदा २१२ विनाड्यः।
क्रमोत्क्रमस्याश्चरखंनकैः स्वैः, क्रमोत्क्रमस्थेश्च विहीनयुक्ताः॥ १॥
मेषादिषशामुदयाः स्वदेशे, तुलादितोऽमी च प्रतुत्क्रमस्थाः।"

"लंका नगरीना छदयनुं नलग्ननं मान २०० – २०० अने २२२ पळोनं छे. आ पळोने अनुक्रमे तथा छत्कमे स्थापन करवा. (तथी करीने मेपथी कन्या सुधीना लग्ननं मान थयुं. इवे तेज पाजा छत्कमे करीने तुलाधी मीन सुधीनं मान जाणवं ते नीचेनी स्थापनाथी स्पष्ट समजारो.) पजी जे देशना लग्ननं मान करवं होय ते देशना पोताना चर्रसंकेरेए करीने अनुक्रमे रहेला छपरना (१९० – २०० – २०० – २०० अंकने अनुक्रमे

१ चरखंडनी समजुती हमणांज नीचे कहेशे.

करीनेज रहित करवा (बाद करवा), अने जल्कमे रहेला (३१३-१एए-१९०) त्रण श्रंकने जल्कमे करीने युक्त-सहित करवा, तेथी ते उ श्रंको पोताना देशमां मेषादिक उ राशिनां लग्न स्रयां एम जाण्डुं, अने तेज उ श्रंको जल्कमे स्थापन करवाथी तुला-दिक उ राशिनां लग्न जाण्डां."

वंकाना खग्नना पळोना माननी स्थापना क्रम अने जत्क्रमचेक आ प्रमाखे हे.--

मेष	ឧឧច	मीन
वृ ष	त्रकत	कुंन
मिश्चन	३२३	मकर
कर्क	३२३	धन
सिंह	३एए	वृश्चिक
कन्या	१९७	ਰੁਕ

श्रा लग्नमानना पळोमांथीज "श्रयनलव॰" इत्यादि नीचे कहेला करण्कुतूहलनी रीते करीने प्राप्त थयेला पोतपोताना देशना चरखंकोने श्रानुक्रमे बाद करवाथी तथा सहित करवाथी पोतपोताना देशनां लग्नमान श्रावे हे ते रीत श्रा प्रमाणे हे.—

"श्रयनखबितैः प्राग्मेषसंक्रान्तिकाखा-प्रवित दिवसमध्ये या प्रजाऽक्षप्रजा सा । दश १० गज ७ दश १० निघ्नी सा प्रजाऽन्या त्रिजका, प्रतिगृहचरखंगानीति तज्ज्ञा वदन्ति ॥ १ ॥"

"जे दिवसे सूर्य मेष राशिमां संक्रमे हे ते दिवसनी पहेलाना अयनांशना दिवसो मूकीने पढीना दिवसे मध्याह्मसमये जे देशमां जेटली देहनी हाया थती होय ते हाया विषुवह्याया अने अक्ष्मजा एवे नामे कहेवाय है. ते हायाने (अंगुलनी संख्याने) त्रण वार स्थापन करी तेने अनुक्रमे १०-० अने १० वमे गुणवी. पही हेही संख्याने त्रणवेने जाग देवो. तेम करवाथी त्रणे हेकाणे जे संख्या आवी ते चरखंको कहेवाय है." शेथी करीने मध्य देशमां ५१-४१-१९ चरखंको आवे हे. पही जपर लंका लग्नना

१ एम घारों के मध्य देशमां मध्याह्वनी छाया अंगुल ५ अने व्यंगुल ८ नी छे. तेने त्रण वार स्थापन करतां ५-८, ५-८, ५-८. प्रथमने १० वहे गुणतां ५०-८० आव्या. ८० व्यंगुलने ६० वहे भाग देतां भागमां एक आव्यो, ते ५० मां उमेरतां ५१ थया. एज रीते बीजी ५-८ संख्याने आठे गुणतां ४०-६४. ६४ मांथी एकने उपर नाखतां ४१ थया. त्रीजी संख्याने तेज रीते दशे गुणतां ५१ आव्या. तेने त्रणे भाग देतां १७ आव्या, तेथी ५१-४१-१७ ए चरखंडो थया. आ देहलायानुं प्रमाण प्रथमां आप्युं नथी. समजुतीने माटे अनुमाने लख्युं छे.

श्लोकमां "क्रमोत्कमस्थाश्चरखंनकैः स्वैः" "श्चनुक्रमे श्चने जत्कमे रहेला ते लंका लग्नना पळो श्चनुक्रमे तथा जत्कमे स्थापन करेला चरखंनोवने रहित श्चने सहित करवा" एम कह्यं छे, मादे जेम लंका लग्ननी त्रण राशिने श्चनुक्रमे (१९०-१एए-३५३) तथा जत्कमे (१९३-१एए-१९०) करीने स्थापन करी छे, तेज रीते चरखंनोनी त्रण राशिने पण श्चनुक्रमे (५१-४१-१९) तथा जत्कमे (१९-४१-५१) स्थापन करवी. पछी प्रथमनां त्रण लंका लग्नोमांथी प्रथमनी त्रण चरखंनोनी राशिने बाद करवी, श्चने पछीनां त्रण लग्नोमां पछीनी त्रण राशिजे नाखवी-जेळववी तेम करवाथी मध्य देशमां मेक्शी कन्या सुधीनी छ राशिजेनां लग्नो थयां. तेज छ लग्नो जत्कमे स्थापन करवाथी तुलाने श्चारंजी मीन पर्यंतनां लग्नो थाय छे. तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

मध्य देशमां लग्नना माननी स्थापना-

मेष	वंदव	मीन
वृष	२ ५७	कुंन
मिथ्रुन	३०६	मकर
कर्क	३४०	धन
सिंह	३४०	वृश्चिक
कस्या	इश्ष	तुखा

तेज रीते ऋणहिझपुर पाटणमां ५३-४३-१० चरखंको थाय हे. केवी रीते थाय हे?

"श्चातिद्वपुरे तिसन् दिने मध्याह्मसंत्रवा । ग्राया विषुवती पञ्चाङ्कुद्धा व्यङ्गुद्धविंशितिः ॥ १ ॥ दशादिन्ने दये प्रधा हतेऽत्र व्यङ्गुद्धाङ्कके । खब्धं चोपरि संयोज्यं मानमेवं ततो स्वेत् ॥ २ ॥"

"आण्हिसपुर पाटणमां ते दिवसे मध्याह्नसमये विष्ठवती नामनी देहजाया आंगुल ए अने ब्यंगुल २० नी छे. आ वन्ने (५-२०)ने दश, आठ अने दशवमे गुणवा. ब्यंगुलना श्रंकने साठे जाग देतां जागमां आवेला श्रंकने जपर अंगुलना श्रंकमां चमाववो. तेम करवाशी जपर कहेलुं (५३-४३-१०) चरलंगोनुं मान श्रशे." आ सर्व रीत मुहूर्तसारमां कही छे.

त्यारपठी आ (५३-४३-१०) चरखंनोवंने लंकानां लग्नोनो संस्कार करवाथी आण्डिलपुर पाटणुनां लग्नो आय हे, ते वावत कहे हे.— श्रीमजीर्जरपत्तने त्वजिष्णे तत्वाक्तिजि ११५ गोंघटी, षद्तत्त्वैः १५६ शरखामिजिश्च ३०५ मिथुनो मार्गाननो वा पक्षैः। कर्की हमातिशये ३४१ धनुर्वदि बिवर्तिसहो द्विवेदित्रकैः ३४१, कन्येन्छित्रिदशै ३३१ स्तुबावछुदयं यान्तीति मेषादयः ॥ ६३॥

अर्थ-श्रीमत् गुर्जर देशना पाटणमां मेष अने मीन खग्न ११५ पळोए करीने जदय पामे छे, वृष अने कुंज १५६ पळोए करीने, मिश्रुन अने मकर २०५ पळोवके, कर्क अने धन ३४१ पळोवके, सिंह अने वृश्चिक ३४२ पळोवके तथा कन्या अने तुला खग्न ३३१ पळोवके जदय पामे छे, एटले के आटला आटला (जपर कहेला) पळो-वके ते ते मेषादिक खग्नो जदय पामे छे. तेनी स्थापना नीचे प्रमाणे.—

मेष ११५ मीन
वृष १५६ कुंन्न
मिथ्रुन ३०५ मकर
कर्क ३४१ धन
सिंह ३४१ वृश्चिक
कन्या ३३१ तुला

हवे खग्नोनुं जदय संबंधी घमी जनुं मान श्राने होरादिकनुं पळमान प्रसंग होवाश्री खखे छे.-खग्नानां मानं होराएां मानं देष्काएतनां नवांशानां मानं |दादशांशानां त्रिंशांशानां मानं

		मानं		मानं	1
घटी-पदा	पख-ऋहर	पक्ष-ऋक्र	पल-अहर-व्यहर	पल-श्रक्र	पल-अहर
मेष ३-५५	११५-३०	ष्ठ	ર્ષ	१ ७–ध५	3− ₹ □
वृष ४-१६	१२०	₢ ऍ—₹ ¤	२७–२६ – ४□	२१—२ ०	ॻ —३ १
मिद्युन ५- ५	१५५–३०	१०१—४०	३३५३ २०	१ ५– १ ५	₹¤—₹¤
कर्क ५-ध१	१ ७०-३०	११३ —धः	३ 9−५३ − २०	হঢ−হ্ধ	११–२२
सिंह ५–४२	१पर	११ध	₹ΰ	२७—३□	११–२ध
कन्या ५-३१	१६५–३०	११०—२०	३६–५६–५ ०	२७–३५	११— २
तुखा ५–३१	१६५–३०	११७—२०	३६– ४६–४०	થુક–રૂપ	११- २
वृश्चिक ५–४३	१ 9१	११ 日	₹७	२०३०	११— २४
धन ५ धर	१५०-३व	११३⊸४०	३ 9−५३ − ₽०	२ ७—३५	११–१२
मकर ५ ५ ५	१५६–३०	१०१–४०	₹ ₹ —५ ₹ −₽ □	इए—इए	१ १ -
कुंज ध-१६	१२०	ঢ়ৼ—ঽ৹	২০ ২६ ৪০	३१ —३०	ʊ− ₹₹
मीन ३-४५	११ 9–३०	3 ų	इए	१७–ध५	9—₹ °

विशेष आ प्रमाणे हे.—

"रेवत्युदयाद्रश्व्यादीन्युज्ञञ्चन्ति जलपत्नैः क्रमशः । चित्रान्तान्यृतुनन्दै ए६ विंखरूपै १०२ रष्टलावनिजिः १०० ॥ १ ॥ शरकुकुजिः ११५ लिक्कुजि १६० र्युगगुण्रूपै १३४ वस्द्धिमृगांकैः १४०। शशिपञ्चकुजि १५१ स्त्रिशरहमाजिः १५३ करविषयवसुधाजिः १५६ ॥ २ ॥ त्रीषुकुजि १५३ रष्टयुगकुजि १४० रगचतुरेकैः १४५ पमन्धिकुजि १४६ रेवम् । हस्तादेः प्रतिलोमं स्वात्याद्युदये क्रमान्मानम् ॥ ३ ॥ श्रजिजिच्च वसुजिनै १४० रिति क्रहाणामुदयपत्नसंस्था ।"

''रेवतीनो जदय यया पठी अश्विनी थी आरं जीने चित्रा पर्यतनां नक्त्रो अनुक्रमे नीचे खखेला जळपळोए करीने जदय पामे हे. अश्विनी ए६, जरणी १०२, कृत्तिका १००, रोहिणी ११५, मृगशिर १२०, आर्जा १३४, पुनर्वसु १४०, पुण्य १५१, अश्वेषा १५२, मधा १५२, पूर्वाफाहगुनी १५२, जत्तराफाहगुनी १४०, हस्त १४० अने चित्रा १४६ जळपळोए करीने जदय पामे हे. हस्तादिकना जल्कमे करीने स्वाति, विशासा विगेरेना जदयमुं मान जाणवुं तथा अजितित् नक्त्र १४० जळपळोए करीने जदय पामे हे. आ प्रमाण नक्त्रोना जदयना पळोनी संस्था जाणवी." स्थापना नीचे प्रमाणे.—

_		
रे.	ए६	প্স.
ত্ত•	१०६	স.
पू.	१०७	कृ. रो.
श.	११५	रो.
घ.	१६०	मृ.
श्र.	१३ध	ऋा.
ভ.	१४७	पु.
पू.	१५१	यु.
मू. ज्ये.	१ ५३	श्च.
ज्ये.	१५३	म.
প্স.	१ ५३	વૂ.
वि.	१४७	ਚ.
स्वा.	१ ४७	₹.
	१ध६	चि.
श्चित्र	जेत् १४।	<u>.</u>

आ नक्त्रोमां अजिजितने वर्जीने अश्विनीथी सवा बबे नक्त्रोनुं मान मेळववाथी उपर कहेलुं राशिनुं मान घाय हे. (जेमके-अश्विनी ए६, जराषी १०२ अने कृत्ति- काना पहेला पादना पळो २७ मेळववाश्री २१५ पळ थया, तेथी घमी ३ पळ ४५ मेष राशिना लग्ननुं मान थयुं. कृत्तिकानां पाठलां त्रण पादना पळो ०१, रोहिणीना ११५ अने मृगशिरनां वे पादना पळो ६० मेळववाश्री कुल पळो २५६ थया, तेथी घमी ४ पळ १६ वृष राशिनुं मान थयुं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.)

हवे राशिजंनी विशेष संज्ञाने तथा तेना प्रमाणने कहे हे.— द्वादशराशिर्जगणो राशिस्तु त्रिंशता जवित जागैः। जागे षष्टिर्विता विसा षष्ट्या विविसाजिः॥ ६४॥

अर्थ—बार राशि मळीने एक जगण (नक्त्रोनो समूह) कहेवाय हे. (एटले के बार राशि अर्ने जगण ए वे नाम समान हे,) त्रीश जागे करीने एक राशि याय हे, एक जागमां ६० विसा होय हे, अने एक विसा ६० विसिशए करीने आय हे.

जागनुं बीजुं नाम त्रिंशांश पण कहेवाय हे. तेनुं मान आ रीते हे.—

"खन्नानां सर्वदेशेषु यन्मानं घटिकादिकम्।

तच दिझं पदाद्यं स्थान्मानं त्रिंशांशकस्य हि ॥ १ ॥"

"सर्व देशोमां लग्नोनुं जे घटिकादिक मान कहां है ते बमणुं करवाथी जे संख्या आवे तेटला पळादिक त्रिंशांशनुं मान थाय है." (कारण के एक घनीना वे त्रिंशांश होय है, तेथी घनीने बमणी करीए तो तेटला पळ एक त्रिंशांशना थाय है.)

विसानुं बीजुं नाम कळा अने विविद्यानुं बीजुं नाम विकळा पण हे. विशेष ए के— एक विविद्या (विकळा) भी साह परम विकळा होय हे. ते परम विकळानुं बीजुं नाम अक्र कहेवाय हे. एक अक्रना पण साह व्यक्तो होय हे, परंतु ते (व्यक्तर) अत्यंत सूक्ष्म काळ होवाथी व्यवहारने योग्य नथी.

ब्रिज्ञोनुं मान कहां. इवे सूर्यने स्पष्ट करवा माटे वारे संक्रांतिर्जनी अंतराख (वचेनी)

घभी उने कहे हैं ---

सङ्गान्त्यन्तरनािक श्रय धृति १० मेंषािदतोऽश्वेषुिनः ५७, त्रुते नै०५ मेंनिगोिन एउ रष्टवसुनि ०० नेंत्रतिनि ६२ नें १९ स्तथा। श्रत्यिश्च १९ समिनवता त्रिनविनः ए३ खेटतिनः ६० खर्तिः ६०, समाङ्गे ६९ निधिकु अरे ०० रथ धृति १० श्चन्डेक् एश्च ११ कमात् ॥६५॥ श्चर्य—हवे संकांतिनी श्चंतराल घमी ने मेष राशिश्च श्चनकमे श्चा प्रमाणे ने — मेष श्चने वृष संकांतिनी वचे १०५९ घमी ने होय ने, एटले के मेष संकांति वेसे त्यारथी १०५९ घमी ने जाय त्यारे वृष संकांति वेसे, श्चने त्यारपी १००५ घमी जाय त्यारे वृष संकांति वेसे, श्चने त्यारपी १००५ घमी ने संकांति वेसे, श्चने त्यारपी १००५ घमी ने संकांति वेसे, श्चनी संकांति वेसे, श्चनी सुधी रहे ने, वृष संकांति १००५

घमी सुधी होय हे. एज रीते मिथुननी घमील १०ए७ हे, कर्कनी १०००, सिंहनी १०६२, कन्यानी १०२७, तुलानी १७ए३, वृश्चिकनी १७६ए, धननी १७६०, मकरनी १७६७, कुंजनी १७०ए छाने भीननी १०२१ घमील हे.

सूर्यनी संक्रांति—संक्रमण बार राशिंडने विषे होय हो. तेमना आंतरामां एटली एटली घनींड होय हो. मूळ श्लोकमां "धृति" शब्द लख्यों हो, ते आहार आक्रनी हंदोजाति हो, तेथी आहारनी संख्या जाण्यी, अने "आत्यिष्ट" शब्द सत्तर आक्रनी हंदोजाति होवाथी तेनो आर्थ सत्तरनी संख्या जाण्यी. मेपादिक थकी एटले मेप अने वृष संक्रांतिनी वस्ते धृति एटले १० अश्वेषुन्निः एटले ५७ वने सहित एटले के आहारसोने सतावनवने युक्त करवा तेटली घनींड होय हो. ए रीते आगळ पण जाण्युं.

संक्रांतिर्जना अंतरनी जिक्तनो यंत्र--

मेष	१०५७	वृष	<u>नु</u> दाः	१ ७ए३	वृश्चिक
वृ प	र्वष्	मिथ्रुन	वृश्चिक	१७६ए	धन
मिश्रुन	१ ७ए७	कर्क	धन	₹ ସ ६ □	मकर
कर्क	१ 000	सिंह	मकर	\$ 9 \$ 9	कुंत्र
सिंह	१७६२	कन्या	कुंज	१ वण्ए	मीन
कस्या	१ ७३७	<u>तु</u> द्धाः 🖟	मीन	१०२१	मेप

हवे सूर्यने स्पष्ट करवा माटे आ जपर कहेली घमी उंए करीने सूर्यने स्पष्ट करवानी रीत बतावे हे.-

स्फुटोऽय जानुर्गतनािकाञ्यः, संकान्तितः खडवलना ३० हताञ्यः। जागादिजिः खान्तरजुक्तिलब्धै, राज्ञ्यादिकः स्याज्ञतराशियुक्तैः॥ ६६॥

अर्थ—चातती संक्रांतिनी वीती गयेखी घमीछंने त्रीशे गुण्यी, पठी तेने छपर कहेखी पोतानी अन्तरमुक्तिवमे जाग देवो. तेम करवाथी जागादिक (अंश विगेरे) आवे हे, अने गयेखी राशिए युक्त करवाथी राशि विगेरेरूप सूर्य स्पष्ट थाय हे.

इष्ट (कार्य) समये चालती संकातिनी जेटली घमी गर होय ते सर्वने एकत्र करी त्रीशे गुण्यी. स्वान्तरज्ञकि—पोतानी अंतरज्ञकि अने संकांतिनी अंतराल घमी ए वक्तेनो एकज अर्थ हे पही पोतानी अंतरज्ञक्तियमे जाग दश्ने अंश, कळा अने विकळारूप त्रण प्रकारनुं फळ श्रहण करबुं (काढबुं). पही गयेली राशिए एटले जेटली राशिड सूर्ये जोगवी लीधी होय तेनो अंक उपर मूकवो. एम करवाथी राशि विगेरे एटले राशि, अंश, कळा अने विकळारूप सूर्य स्पष्ट थाय हे.

जदाहरण—विक्रम संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि 9 सोमवारे पुष्य नक्षत्रमां मेष राशिमां सूर्यनी संकांति श्रया पठी सत्तरमे दिवसे कर्क लग्ननो कन्या नवांशक कार्य करवामां लीधेलो हे. ते वखते मेष संक्षांतिनी एएस घमील व्यतीत श्रइ हे. ते श्रा प्रमाणे.—

सोळ्यी कांइक अधिक दिवसो निर्ममन थया हे, तोपण प्रथम स्थूळ दृष्टियी जोतां सूर्ये मेषना सोळ त्रिंशांशो जोगवी दीधा हे. शेष चौद त्रिंशांशो रह्या. तेना पळ १०५ थया. वृषनुं मान १५६ पळ, मिथुननुं मान २०५ पळो तथा कर्कना पहेला वे नवांशाना पळो ७५ अने अक्टर ४६ हे, ते ४६ अर्धा छपर होवाथी एक पळ गणतां छुल पळ ७६ थया. ते सर्व पळो एकत्र करवाथी ७४२ थया. तेने ६० वमे जाग देतां जागमां १२ आव्या. ते (११) लग्नना दिवसनी घमीछ थइ. शेष पळो १२ रह्या, तथा मेष संकांतिना दिवसनी शेष धमीछ २१ हे. वळी संकांतिना दिवस अने लग्नना दिवसनी अतन्राले सोळ दिवस होवाथी तेनी घमीछ ए६० थइ. ते सर्वने एकत्र करतां एए४ घमी अने २१ पळ मेष संकांतिनी गत घमीछ थइ.

श्रा गत धनी एए४ ने त्रीशे गुएतां १ए०१० श्रया. तेने मेष श्रने वृष संक्रांतिनी श्रांतरप्रिक्त जे छपर १०५९ घनीनी कही छे तेनावके जाग देतां सोळ खाध्या. ते (१६) जाग एटले श्रंश कहेवाय छे. जाग देतां शेष १०० रहे छे, तेने ६० वके गुएी छपरना ११ पळो नाखवाथी ६५०१ थया. तेने फरीथी १०५९ वके जाग देतां जागमां ३ खाध्या ते कळा थइ. शेष ए३१ रह्या, तेने पए ६० वके गुएीए त्यारे ५५०६० थ्याय. तेने पण १०५९ वके जाग देतां जागमां आवेला ३० विकळा थइ. शेष १५० वध्या तेनो त्याग कर्यो. आ प्रमाणे जाग (श्रंश), कळा श्रने विकळाए करीने श्रंशादिक सूर्य स्पष्ट थ्यो. पठी मूळ श्लोकमां वीती गयेली राशिए युक्त करवानुं कह्यं छे, तेथी वृष विगेरे संक्रांति होत तो गयेली राशि पूर्वे मूकात, अने राश्यादिक पण थात, परंतु श्रहीं तो जिक्त राशि एके नथी, तेथी राशिने स्थाने ० शून्य मूकवुं, तेथी करीने कार्यने समये स्फुट सूर्य राशि०, श्रंश १६, कळा ३ श्रने विकळा ३० थयो.

हवे स्पष्ट श्रयेखा सूर्यथी श्रयनांश सहित सूर्यनुं जोग्य मान खाववानी रीत कहे हे.—

१ एक त्रिंशांशाना ७॥ पळ छे तेथी, जुओ उपर त्रिंशांशाना माननो कोठो.

गणितविष्ठपदेशात्तत्र दत्त्वाऽयनांशान् , पुनरिप जगणार्धं ६ रात्रिलसे तु दद्यात् । अय हत उद्यस्त्रिर्जकशेषैर्लवायै— रुपरि च खगुणा ३० सः स्यात्पलात्मार्कजोग्यम् ॥ ६७ ॥

श्रर्थ—गणितना जाणनारना जपदेशथी आवेदाा अयनांशोने ते स्पष्ट करेद्वा सूर्यमां नाखवा, परंतु जो रात्रिनुं लग्न होय तो तेमां फरीथी जगणार्थ एटले ६ जेळ-ववा. (तेम करवायी अयनांश सहित सूर्य थाय हे.) (हवे सूर्यनुं जोग्य मान लाव-वानी रीत कहे हे.—) अथ एटले सायनांश सूर्य कर्या पठी (करवाथी) जे राशिनो जदय होय तेना पळोने त्रण वार स्थापन करी ते दरेकने जुक्तथी शेष रहेला लव (श्रंश) विगेरेवमे गुणवा. (पठी हेल्ला वे अंकने जत्कमधी साहे जाग दइ दइने जपर चमाववा.) जपर जे श्रंक श्रावे तेने त्रीशे जागतां जे लाधे तेटला पळो सूर्य जोग्य कहेवाय हे.

तत्र एटले स्पष्ट करेला सूर्यमां ते वर्षना अयनांशो नाखवा. अही एकला अयनांशोज कहा हो, तोपण कळादिक पण नाखदी एम समज हो, केमके ते कळादिक पण अयनांशरूपज हो. ए रीते सर्वत्र जाण हो, पण जो रात्रिने विषे लग्न होय तो ते राशिमां फरीथी ह जमेरवा. आम करवाथी जपर जे राशि (मेपादिक) आवे ते जिक्क जाण वी, अने जे राशि तेनी पहीनी होय ते जदय कहेवाय हे. ते जदय राशि हो जे पळरूप मान कहां होय ते पळोने त्रण वार स्थापन करवा. हवे ते जिक्क राशिनी जपरांत जे अंश, कळा अने विकळा होय ते जिक्क कहेवाय हो, मादे तेने वाद करतां जे अंश, कळा अने विकळा होय ते जिक्क कहेवाय हो, मादे तेने वाद करतां जे अंश, कळा अने विकळा आवे तेले करीने त्रण वार स्थापन करेलुं ते लग्न हुं मान (जदय राशि हुं पळरूप मान) अनुक्रमे गुण हुं. हो हा वे अंकने साहे जाग दह दहने पहेला पहेलानी संख्यामां नाखवाथी जे संख्या पहेला अंकनो साहे जाग देतां जेटला लाधे तेटला पळवाळुं अर्क जोग्य थाय हे. वाकी रहेला अंकने साहे गुणी त्रीशे जाग देतां जपरना पळ जपरांत अहरो पण आवे हे.

हवे जदाहरणमां घटावतां पहेलां प्रथम अथनांश दाववा माटे गणितना झान-वाळानो जपदेश बतावे छे.—विक्रम संवत् एष्णमा वर्षयी आरंजीने तथा शाद्धिवाहनना धधध मा वर्षथी आरंजीने १४०४ वर्ष सुधी दरेक वर्षे एक कळा, एक विकळा अने वीश परम विकळा वृद्धि पामे छे. ६० कळाए करीने एक अथनांश थाय छे, तथी करीने १४०४ वर्षे करीने २३ छंशो, ५५ कळा छने वार विकळा वधे छे. ए प्रमाणे छ्ययनां-शनी वृद्धि इहेली छे. पढ़ी तेज कमे करीने हानि पामता ते छ्ययनांशो तेटलांज एटले १४०४ वर्षे करीने खाली घइ जशे. ए प्रमाणे वारंवार ते छ्ययनांशोनी वृद्धि छने हानि जाणवी. लग्नमां, क्रांतिसाम्यमां छने चर लाववामां छा छ्ययनांशोनो छपयोग छे. कहां छे के—

"श्रयनांशाः सदा देया लग्ने कान्ती चरागमे।"
"लग्नमां, क्रांतिसाम्यमां श्रने चर लाववामां हमेशां श्रयनांशो देवा."
हवे जदाहरणमां लीधेला इष्ट काळने विषे श्रयनांशो लाववा माटे श्रा रीत हे.—
"श्राषाढे विक्रमं नन्दसप्तेषू ५६ए नं त्रिधा कु १ जू १।
नखे १० निंग्नं जजेत् षष्ट्या लब्धे स्युरयनांशकाः॥ १॥"

"श्रपाम मासथी शरु थता विक्रम संवतमांथी ५९ए वाद करी वाकी रहे तेने त्रण वार स्थापन करवा. पढ़ी ते त्रणेने अनुक्रमे १-१-१० वर्भ गुणवा. पढ़ी तेने ढेढ़ा छांकथी साठे जाग दह दहने पूर्व पूर्व छांकमां नाखवाथी अथनांशो थाय ढे."

जावार्थ ए हे के—चैत्र मासथी शालिवाहननो शक शरु थाय हे. तेमां १३५ नाख-वायी विक्रम संवत् थाय हे. ते संवत् अपाम मासथी शरु थाय हे. ते स्थापन करवो. ते संवत् प्रकृत छदाहरणमां १५१२ हे. तेमांथी ५७ए बाद करतां शेष ए३३ रहे हे. आ अंकने त्रण वार स्थापन करी तेने अनुक्रमे १-१-२० वमे गुणवा. (तेथी ए३३-ए३३-१०६६० थाय हे) तेने हेन्नेथी साहे जाग दइ दइने छपर छपर चमाववाथी १५ अंश, ५३ कळा अने ४५ विकळा थइ. आ अयनांशनुं मान १५१२ मा वर्षमां सृहम दृष्टिथी आवे हे, परंतु दरेक वर्षे कांइक अधिक एवी एक एक कळाज वधे हे. एवं स्थूळ मानज धणा ज्योतिर्विदोने संमत हे, तेथी अभे पण स्थूळ मानज अहीं लइए हीए, तेथी करीने १५१२ मा वर्षे १५ अंश अने ३५ कळा आवे हे. आ अयनांशने स्पष्ट करेखा सूर्यमां नाखवाथी अंश ३१, कळा ३९ अने विकळा ३० आय अयनांशने स्पष्ट करेखा सूर्यमां नाखवाथी अंश ३१, कळा ३९ अने विकळा ३० आय हे. हवे दरेक राशिनुं मान ३० अंशज होय हो, तेथी आ अयनांशनी अपेकाए करीने जोतां सूर्ये आखी मेष राशि जुक्त थइ गइ, अने वृष राशिनो १ अंश, ३९ कळा अने ३० विकळा पण जुक्त थइ एम सिद्ध थयुं. स्थापना—१-१-३९-३०. आ सायन अथवा सायनांश एटले अयनांश सहित सूर्य थयो.

हवे प्रकृत जदाहरणमां वृषनो जदय हे. तेतुं मान २५६ पळो हे. तेने त्रण बार स्थापना करवा—२५६–२५६–२५६. पही सूर्थे जोगवेला मानमांथी श्रंशादिकनी अपे-हाए शेष श्रंशादिक काढीए (एटले के श्रंश १, कळा ३७ श्रने विकळा ३० काढीए) त्यारे अंश २०, कळा २२, विकळा २० रहे. आ त्रण अंकवने उपरनी त्रण राशिष अनुक्रमे गुणतां ७१६०-५६३१-७६०० याय हे. तेने साहे जाग दइ दइने पूर्व पूर्वनं राशिमां नाखवायी ७१६४ थाय हे. तेने २० वमे जाग देतां १४१ पळो खाध्या. अस्पर्य जोग्य पळमान आगळ पर उपयोगमां आवशे, माटे स्थापी राखबुं.

हवे इष्ट लग्ननं जिक्त लाववावने करीने इष्ट समयने स्पष्ट करवा माटे कहे हे.— इष्टाञ्चक्तनवांशकैर्दशगुणैस्रयातिर्लवाद्यं फलं, लग्नं सायनमूर्ध्वराशिसहितं सैकप्रवृत्यंशकम् । तञ्जकेन् लवादिना तञ्जदयः भ्रुषो हृतस्त्रिंशता,

जास्त्रद्रोग्यवदान्तरोदययुतः कालः पलात्मा जवेत् ॥ ६०

अर्थ—इष्ट समना मुक्त नवांशोने दशे गुणी त्रणे जाग देतां के अंशादिक फर्व आवे ते सम जाणवुं. तेने अयन सहित करवुं. पठी छपर (पहेसां) राशि सहित (गयेसी राशि सहित) करवुं. पठी एक प्रवृत्त्यंश सहित करवुं. तेटसा अंशादिक जुन थया, ते जुक्तवमे ते (सम्र)ना छदयने गुणवो. पठी तेने त्रीशे जाग देवो. पठी ते सूर्व जोग्य अने आंतरोदय सहित करीए त्यारे तेटसा पळरूप इष्ट समय स्पष्ट थाय हे.

लग्नमां जे नवांशक इष्ट होय तेनी पहेलां जेटला नवांशक गया होय तेने दशे गुण् त्रण जागवा. जे लाघे ते छांश, कळा छाने विकळारूप त्रण प्रकारनुं फळ घाय हे. तेने ज्ञा जाण्लुं. ते लग्नने छ्यन सहित तथा व्यतीत थयेली राशि सहित करीने तेमां एवं प्रवृत्त्यंश एटले छाधिकार करेला नवांशकनो त्रीजो जाग नालवो, परंतु प्रतिष्ठा छां विवाहमां जो धनुष राशिनो नवांशक लीधो होय तो तेमां नवांशकना त्रीजा जाग पण छां नालवुं, केमके ते कार्यमां धनुषना नवांशकनो पहेलो छां जागज इहेलो हे छा रीते करवाधी जेटला छंश, कळा छाने विकळा थाय तेटला छाक जाण्या. ते छुच एवा छांश, कळा छाने विकळावने करीने इष्ट लग्ननुं पळरूप मान त्रण वार स्थाप करीने गुण्लुं. पही तेने पथमनी जेम साठे जाग दश दशने पूर्व पूर्वमां नाली छपरने (पहेलो) जे एक छावे तेने त्रीशे जाग देतां जेपळ छाने छहरूप मान छावे ते इष्ट लग्न छुक्त (जोगवेलुं)कहेवाय हे. तेनी छंदर पूर्वे छालेलुं सूर्य जोग्य नालवुं, तथा सूर्ये छाकमण करेली राशिनी छाने इष्ट लग्ननी छंतराले जेटला लग्नो रह्यां होय तेनां पळरूप मानोने पा तेमां नालवां. छा रीते करवाथी जे छंक छावे तेटला पळोए करीने सूर्योदय पढ़ी इल्यानो इष्ट छंशा छावे हे.

जदाहरण-प्रकृत जदाहरणमां कर्क लग्ननो त्रीजो कन्या नवांशक प्रहण करें छे, तेथी इष्ट एवा कन्या नवांशकनी पहेलां चे नवांशो व्यतीत थया छे, मा

वेने दशे गुणतां वीश थया तेने त्रणे जागतां ६ त्रिंशांशो खाध्या अने शेष है रह्या, एटखे के जेटखा त्रए जागे करीने एक त्रिंशांशक थाय तेटखा वे जाग, तेथी करीने छांश ६ अने कळा ४० थाय है, कारण के एक एक (दरेक) त्रिंशांशनी ६० कळाउं होवाथी बे त्रिजागे करीने धै० कळालेज थाय हे. या लग्न थयुं. तेने अयन सहित करबुं हे, माटे अयनांश १५ अने कळा ३४ जेळववी. (११-१४ याय हे.) तथा जेटली राशिड व्यतीत थइ होय तेटलो अंक राशिने स्थाने मूकवो ते अहीं कर्क लग्न यहए करेलुं होवाथी त्रणनो स्रंक स्रावशे, तथा संशना संकमां एक प्रवृत्त्यंश स्रने ७ कळा नाखवी, कारण के दरेक नवांशकमां त्रण त्रिंशांशो स्थने वीश कळाउं होय हे. तेनो त्रीजो जाग तेटलोज (१-9) थाय हे, तेथी करीने त्रण राशिज व्यतीत थइ अने चोथी कर्क राज्ञिना २३ ख्रांशो छाने २१ कळाखं पण व्यतीत थड़, तेथी (३-१३-११) एटखं जुक्त अयुं. अहीं जुक्त (ब्यतीत अयेखी) राशिनो चपयोग नथी, तेथी तेणे जुक्त एटखें चालता कर्क लग्नवमें जुक्त एवा अंश २२ कळा २१ वमे तेनो जदय एटले अहीं प्रकृत होवाथी कर्कनो छदय ३४१ पळना स्वरूपवाळो छे तेने बे वार स्थापन करीने गुणवो. जो विकळा होत तो त्रण वार स्थापन करीने त्रीजो छंक विकळावके पण गुणात, पण श्रहीं तो विकळा नथी, तेथी वे वार स्थापन करवानुं कह्युं हे. श्रा रीते करवाथी (३४१ ने बे बार १३ छाने ११ वर्भ गुणवाथी) 9083-9१६१ थाय हे. बीजा छांक्रने ६० वर्भ जाग देतां जागमां ११ए छाज्या. तेने प्रथमना छंकमां नाखवाथी ७ए६२ थया. तेने त्रीशे जागतां २६५ पळो लाधी. शेष १२ रह्या तेने ६० वमे गुणी २० वमे जाग देतां श्रहर २४ लाध्या. श्रा पळ २६५, श्रहर २४ कर्क लग्ननुं गुक्त थयुं. तेने सूर्यना जोग्य सहित तथा आंतरोदयना खग्नना पळो सहित करवुं हे, तेथी आहीं सूर्यना जोग्य पळो १४२ हे. अने आंतरोदय तो निधनज हे. तेनं मान २०५ पळो हे. ते त्रणेने एकत्र करवाथी 0१२ पळो एटले के १३ घनी अने ३१ पळो थया. आटलो वखत सूर्योदयथी जाय त्यारे कर्क लग्ननो कन्या नवांशक ऋ वे हे.

श्रहीं विशेष आ प्रमाणे हे.—

"दयोर्नवांशयोः शुक्तिः प्रतिष्ठायां विलोक्यते ।
श्राद्येऽधिवासना बिम्बे दितीये च शलाकिका ॥ १ ॥
संस्थाप्य लग्नमानं गुणयेन्मध्यनवांशकैः ।
नवित्रस्तु हुते जागे लब्धेऽन्तरपलागमः ॥ २ ॥"

"प्रतिष्ठामां वे नवांशकनी शुक्ति होत्री जोइए. तेमां पहेला नवांशकमां विंबनी

१ वे त्रिंशांशनी १२० कळा थइ तेनो त्रीजो भाग ४० थाय.

अधिवासना करवी, अने बीजामां अंजनशासाका करवी. ते शुक्ति जोवानी रीत आ प्रमाणे—समूनं मान स्थापन करीने तेने मध्य (वच्चे)ना नवांशकोवके गुणवुं. पढ़ी तेने नववके जाग देवाथी जे साधे ते अंतर पळो आवे हे."

अहीं मात्र किंदित छदाहरण आ प्रमाणे जाणवुं.—प्रतिष्ठामां आज कर्क खप्ननों त्रीजो कन्या नवांशक अने आठमों कुंज नवांशक प्रहण करवाना हे, तेथी कुंज नवांशकनी पहेलां कन्यादिक पांच नवांशकों हे, माटे कर्क खप्ननुं मान जे ३४१ हे तेने पांचे गुणीए त्यारे १९०५ थाय हो. तेने नवे जाग देतां जागमां १०ए पछों (एटले घनी ३ पछ ए) आवे हो. तेने त्रीजों कन्या नवांशक प्रहण करवा माटे स्पष्ट करेला १३ घनी अने ३३ पळरूप काळमां नाखवाथी धनी १६, पछ ४१ थया. आटलो वखत जाय त्यारे कुंजना नवांशकनी वेळा आवे हो.

हवे खन्नना अंश (नवांशक)नो समय स्पष्ट करवा माटे अथनांशनी अपेका विना बीजो प्रकार कहे हे. अथवा तो.—

संक्रान्तिराशेर्गतनािकाशे, माने दिवा निश्यथ सप्तमस्य। संक्रान्तिकोगेन हते तद्यश्यशान्विते शेषमिहार्ककोग्यम्॥ ६ए॥

अर्थ—दिवसे खग्न होय तो संकांतिनी राशिनुं मान गयेखी घमी विवसे गुणवुं, अने रात्रिए खग्न होय तो सातमी राशिनुं मान गयेखी घमी विवसे गुणवुं, पत्नी तेने संकां- तिनी जित्तके जाग दह तेमां तेज राशिनो त्रीजो जाग नाखवो. शेष रहे ते अहीं सूर्य जोग्य जाणवुं.

दिवसनुं खग्न होय तो सूर्यसंकांतिनी राशिनुं मान संकांतिना समयथी आरंजीने खग्नना समय सुधीमां जेटली घमील गड़ होय तेटली घमीलंवमे गुणवुं. रात्रिनुं खग्न होय तो सूर्यसंकांतिनी राशिथी जे सातमी राशि होय तेनुं मान गुणवुं. त्यारपत्नी पोतानी (संकांतिनी) अंतरजिक्तियमे तेने जाग देवो. जागमां जे आवे तेमां प्रस्तुत राशिनो त्रीजो जाग जदो पामीने नाखवो. तेम करवाथी जे थाय ते सूर्य जिक्त कहेवाय हे. ते सूर्य जिक्तने सूर्यसंकांतिनी राशिमांथी वाद करवुं. जे शेष रहे ते सूर्य जोग्य कहेवाय हे.

जेमके प्रकृत जदाहरणमांज दिवसना लग्नमां सूर्यसंकांतिनी राशि मेष हे. तेनुं मान ११५ हे. संकांतिना समयनी पही अने लग्ननी पहेलां जे गयेली घनी छ एए४ हे ते बन्नेनो गुणाकार करतां ११३६५० घया. तेने पोतानी खंतरजुक्ति १०५९ वने जाग लेतां ११० पळ लाध्या. त्यारपही सूर्यसंकांतिनी राशिना माननो त्रीजो जाग तेमां नाखवो, एटले के खाईी मेषनुं मान ११५ हे, तेने त्रणे जागतां ९५ लाध्या. ते पूर्वना ११० मां

नाखवाथी १ए५ थया. आ सूर्य जुक्त थयुं सूर्यसंकांतिनी राशि मेपना मानरूप ११५ पळमांथी ते १ए५ बाद करीए त्यारे बाकी ३० पळो रहे. आ सूर्य जोग्य थयुं आ प्रमाणे दिवसना लग्नमां जाणवुं हवे रात्रितुं लग्न होय त्यारे सूर्यसंकांतिनी राशिथी सातमी राशिनो सूर्य जुक्त धमीच साथे गुणाकार, तेनी अंतरजिक्वमे जागाकार विगेरे सर्व सूर्यसंकांतिनी राशिनी प्रमाणेज करवुं.

जुक्तेऽय खग्नस्य तदंशकाच्च, दद्यातित्रजागावुद्यप्रवृत्योः।
तद्धग्नजुक्तं च तथाऽर्कजोग्यं, कालोऽन्तरालोदययुक् पलातमा॥ उ०॥ अर्थ—त्यारपठी तेना अंशनी (इप्ट नवांशक)नी पहेलां लग्नना जुक्तमां जदय अने प्रवृत्तिना त्रिजागो नाखवा ते लग्न जुक्त कहेवाय हे. त्यारपठी ते लग्न जुक्त तथा सूर्य जोग्यने अंतरालना जदय सहित करवाथी जे आवे तेटला पळोवाळो काळ इप्ट लग्ननो हे एम जाण्तुं.

श्रथ-त्यारपढी तदंशकात् एटखे इष्ट नवांशकनी, पहेलां लग्नना जिक्ते विषे उदय श्रमे प्रवृत्तिना त्रिजागो नालवा एवो संबंध हे. जावार्थ श्रा प्रमाणे हे.—श्रधिकार करेला नवांशकनी पहेलां जेटखुं लग्ननुं जिक्त होय तेने स्पष्ट करीने तेने विषे तेज लग्ननो त्रिजाग श्रमे प्रवृत्त्यंश नामना तेज नवांशकना त्रिजागने नालवा त्यारपढी तेलग्न जुक, पूर्वे श्राणेखुं सूर्य जोग्य श्रमे श्रंतराल लग्ननुं पळमान ए त्रणेने एकत्र करवां. जेटला पळो श्रावे तेटला पळोए करीने सूर्योदय पढी इष्ट लग्ननो इष्ट नवांशक श्रावे हे.

जेमके—श्रहीं कर्कनुं मान २४१ हे. तेने नववमे जाग देवाथी २० पळो एक नवां शकनुं मान थयुं. इवे श्रहीं इप्ट नवांशक (कन्या नामनो) त्रीजो हे, तेनी पहेलां वे नवांशो गया हे, तेथी २० ने वमणा करतां १६ पळो श्रया. श्राटलुं ते लग्न जुक्त थयुं. त्यारपही तेमां कर्क लग्नना मान २४१ ने त्रणे जाग देतां ११४ पळो लाध्या. श्रा छदयनो त्रिजाग थयो. तेने लग्न जुक्त १६ पळोमां नालवाथी १ए० थया. त्यारपही जे नवांकश प्रहण कर्यों हे तेनुं मान २० पळनुं हे, तेनो त्रिजाग १२ पळ थाय हे. ते पण तेमां (१ए० मां) नालवाथी १०१ थया. पही सूर्य जोग्य पळो २०, तथा सूर्यसंकां-तिनी (मेष) राशिने श्रने इप्ट लग्न (कर्क) ने श्रंतराले हुप श्रने मिश्रुन हे. तेमनुं मान १५६–२०५ हे. सर्वनी स्थापना —२०१–२०–१५६–२०५ श्रा सर्वे एकत्र करन्वाथी १ए२ पळो थया. तेने ६० वमे जाग देतांघमी १३ पळ १३ लाध्या. श्राटलो काळ सूर्योदयथी जाय त्यारे कन्या नवांशक श्रावे हे. श्रा वीजी रीत होवाथी पळोमां पूर्वनी करतां फारफर श्राब्यो तेमां कांइ दोप नथी। एम बीजे हेकाणे पण जाणवुं.

श्रा प्रमाणे खग्नने श्राश्रीने समय लाववानी रीत कही. हवे तेनी प्रतीतिने माटे वे श्लोके करीने समयने श्राश्रीने लग्न लाववानी रीत बतावे हे.—

त्यवस्वार्कजोग्यं च पलात्मकालाङ्गागादिजोग्यं तरणौ निद्ध्यात्। क्रमेण शेषानुद्यान् विशोध्य, राशीत्र्यसेत्तत्प्रमिताँश्च जानौ॥ ११॥

श्चर्य—पळरूप करेला काळमांथी सूर्य जोग्य बाद करतुं. पठी श्चंशादिक जोग्यने सूर्यमां नाखतुं. पठी श्चनुक्रमे शेप जदयोने शोधी (बाद करी) तेटली राशिजेने सूर्यमां नाखती.

कोइक माण्स घनी, पळ विगेरे इष्ट काळ बोलीने प्रश्न करे के—"ए वखते कयुं लग्न, अंश विगेरे हे." ते वखते तेणे कहेली घनी विगेरे सर्वना पळो करवा. पठी ते पळरूप करेला काळमांश्री सूर्य जोग्य जेटला पळो होय तेटला बाद करवा. पठी अयनांशो सहित स्पष्ट करेला सूर्ये जे राशि आकांत करी होय ते राशिनुं शेष रहेलुं जे आंश, कळा अने विकळारूप सूर्य जोग्य होय तेने सूर्यमां अने सायनांश स्पष्ट करेला सूर्यमांज नाखवुं, एटले के ते राशि संपूर्ण करीने लखनी. त्यारपठी ते पळरूप करेला काळमांथी सूर्ये आकांत करेली राशिनी पठीनां पळरूप लग्नो (पठीनां लग्नोना पळो) जेटलां नीकळे तेटलां काढीने तेटली राशिनो अंक सूर्यना अंकमां नाखवो.

शेषादय खगुण ३० गुणादिवशुद्धोदयहृतादवातेन । जागादिना सनाथो दिननाथो निरयनांशको खग्नम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-त्यारपढी शेषने २० वमे गुणवा. पढी तेने अशुक्ष उदय (अप्न)वमे जाग देतां प्राप्त अयेखा (आधेखा) अंशादिकवमे सूर्यने सहित करवो. पढी ते सूर्यने अय-नांश रहित करवो. एम करवाथी अप्न आवशे.

त्यारपढी (एटले पळरूप लग्नो काढ्या पढी) शेष रहेला एटले के जे शेषमांथी लग्न शोधी न शकाय (राशि काढी न शकाय) तेवा शेषने २०वके गुणवा. तेने अशुक्ष (नहीं शोधेला-नहीं बाद करेला) लग्नना मानवके जाग देतां जे अंश, कळा अने विकळा लाधे तेने सूर्यमां नाखवा. पढी तेमांथी अयनांशो बाद करवा. शेष रहे ते इष्ट काळे स्पष्ट लग्न अने नवांशक थया.

श्रा खदाहरण पहेला प्रकारमां जावे हे.—कोइए घनी १३, पळ ३२ कहा. तेना पळो कर्या त्यारे ०१२ पळो थया. तेमांथी सूर्य जोग्य २४२ पळो बाद कर्या. शेष ५९० रह्या. हवे श्रयनांशो सहित करेलो स्पष्ट सूर्य राशि १-१-३९-३० हे. तेमां वृष राशितुं भा॰ ४४

शेष मान खंश १०, कळा ११, विकळा २० नाख बुं, तेथी सूर्य राशि १-०-०-० थयो. पठी पळरूप करेलो काळ ५९० हे, तेमांथी सूर्याकांत दृष राशिनी पठीनी मिथुन राशिनुं ३०५ पळोतुं मान काढी शकाय हे, तेथी एक राशि सूर्यमां नाख वाथी ते सूर्य राशि ३-०-०-० थयो. पही ५९० मांथी (मिथुनना पळो) ३०५ काढी खेतां शेष १६५ रहे. तेमांथी कर्क राशिनुं मान २४१ पळो काढी शकाता नथी, तेथी ते शेषने ३० वमे गुणवाथी ९७५० थया. तेने खरुष्य (नीकळी नहीं शकेला—वाद करी शकाया नहीं एवा) कर्कना मानपळो २४१ वमे जाग देतां खंश १३, कळा १०, विकळा ४७ एम त्रण प्रकारनुं फळ लाध्युं. तेने सूर्यमां नाख्युं, तेथी राशि ३-१३-१०-४७ थया. तेमांथी खयनांशो १५ खंश, ३४ कळा वाद करवाथी शेष लग्न ३-५४-४७ रह्यं, एटले के कर्क राशिना ९ खंश, ४४ कळा खने ४७ विकळा जुक्त—जोगवाया हे एम सिद्ध थयुं. हवे एक एक नवांशकमां त्रण तिंशांश छने चोथा तिंशांशनी १० कळाले होय हे, तेथी ६ खंशो खने ४० कळाले काढी लेवाथी वे नवांशो गया कहेवाय. वाकी एक खंश अने सात कळाले प्रवृत्तिने माटे खापेली हती, ते हे एम जाण बुं. वे त्रण कळाले वधारे होय तेमां कांइ दोष नथी, केमके लग्ननी कळाले खत्यंत सूझ हे. तेथी तेटलो फेर खावेज.

विशेषमां स्थूळ दृष्टिथी दिवसे काळने आश्रीने खग्न अने अंश (नवांशक) खाव-वानी रीत आ प्रमाणे हे.—

> "श्रष्टांशं प्रति धीवेदाः ४५ संक्रान्तेर्गतवासराः । तदैक्यादच्चरामा ३० सं खग्नमाकान्तराशितः ॥ १ ॥ शेषे षष्टिहते जक्ते विशत्या खन्धमंशकः । होराद्युक्ताङ्कजकेऽत्र होराद्यमपि खज्यते ॥ २ ॥"

"श्रष्टांश (याम) प्रत्ये ४५ पळोनो एक ध्रुवक याय छे. हवे इष्ट काळने ध्रुवके गुणी तेमां संक्रांतिना गयेला दिवसो छमेरवा. पठी तेने २० वमे जाग देवो. जे लाधे ते संक्रांतिनी राशियी लग्न जाणवुं. पठी शेषने ६० वमे गुणी २०० वमे जाग देतां जे लाधे ते नवांशक जाणवो, तथा ६० वमे गुणेला श्रंकने होरादिकना श्रंकवमे जाग देवाथी होरादिक पण प्राप्त थाय छे."

अष्टांश एटले याम (प्रहर-पहोर) दरेक याम प्रत्ये ४५ पळोनो ध्रुवक होय हे, तेथी पहेलो याम पूर्ण याय त्यारे ४५ अने बीजो याम पूर्ण याय त्यारे ए०, ए प्रमाणे ध्रुव-कनी जत्पत्ति हे. जे वखते जेटलुं दिनमान होय ते वखते ते दिनमाननो जे चोथो जाग थाय ते एक एक यामनुं मान जाणवुं, तेथी एक यामना माननी घमीलए विजक्त

धए ध्रुवकथी जे प्राप्त याय तेज दरेक घनी प्रत्ये ध्रुवक जाएवी. जेमके छाहीं मेष संकांतिमां सूर्य आज्या पढ़ी सत्तरमे दिवसे दरेक याम पोणी आठ आठ घनीनो हे, तेनी दरेक घमी प्रत्ये खगजग उ पळनो एक ध्रुवक त्रिराज्ञिनी रीते आवे हे. ते आ रीते.—ते दिवसे एक यामनुं मान घमी ७ अने पळ ध२ हे. तेना पळ करीए त्यारे ४६२ थाय हे, तेथी जो ४६२ पळोए करीने ४५ पळोनो एक ध्रुवक होय तो एक घनी एटले ६० पळे करीने केटलो भ्रवक थाय ? ए त्रिराशिनी स्थापना--- ध६१-- ४५-६०. म्रहीं मध्य राशिने देखा राशि साथे गुणतां २९०० थया. तेने पहेली राशिए जाग देतां पळो ५ अने श्रहर ५० थया। जो के आटखं प्रमाण थयं, तोपण ६ पळमां जराकज हो हं होवाथी परिपूर्ण ६ पळ जाणवा, तेथी चालता चदाहरणमां १३ घमी हे, तेने ६ वमे गुणतां ७० थायः तेमां उपरना ३२ पळो हे, माटे तेनी अपेदाए त्रण पळो नाखवाथी ण् थया. तेमां संक्रांतिना गत (वीतेखा) दिवसो १६ नाखवाथी ए**७ थया. तेने ३०** वरे जाग देतां जागमां ३ आव्या, शेष ७ रह्या, माटे ३ लग्न वीती गयां अने चोधा कर्क लग्नना 9 त्रिंशांश पण गया. इवे नवांशक लाववानी इहा खाय तो 9 ने ६० वसे गुणतां ४२० थया. तेने २०० वमे जाग देतां २ खाध्या, ऋने शेष २० रह्या. तेथी नवांशक २ गया, अने त्रीजा कन्या नवांशकनी २० कळालं पण गइ, एम जाणवं. "होरादि॰" एटले ६० वमे गुऐला अंकने होरादिकना अंक जे ए००-६००-१५०-६० है तेवने पृथक् पृथक् जाग देवाथी होरा, जेष्काण, जादशांश अने त्रिंशांश पण श्राय है. नवांशंकनुं प्रजुपणुं (बळवानपणुं) होवाथी तेने जूदो कह्यो हे आ रीते करवाथी कळा सुधीनंज मान स्पष्ट थाय हो, पण विकला खावी शकती नथी, खाने तेथीज खारीत स्थळ कही है.

अहीं कोइने शंका थाय के—''जो सर्वत्र नवांशकनुंज प्रजुपणुं होय तो शामाटे लग्नोना अने ग्रहोना तिंशांशो स्पष्ट कर्या हे?' आनो उत्तर ए हे जे—''त्रिष्विप क्रमध्यस्थी" (५-१३) ए श्लोकमां लग्न अने चंडने विषे पंदर तिंशांशनी मध्ये क्र्र ग्रह रह्या होय तो क्र्र कर्तरी थाय हे, ए विचार कह्यो हे, तेथी करीने "दर्शने यदि स्यादंशदादशकमध्यगः क्र्रः" (५-५९ अर्थमां) ए श्लोकमां लग्न अने चंडनी उपर क्र्र ग्रहनी दृष्टिनो विचार कह्यो हे, माटे तिंशांशनो आवे स्थाने उपयोग कहेलोज हे. (निष्फळ नथी) तेमज लग्नने विषे जे पद्मी होय ते क्रूर ग्रह संबंधी हे के सौम्य ग्रह संबंधी है श्रा ग्रह स्ववर्गमां रहेलों हे के अन्य वर्गमां रहेलों हो? इत्यादि विचारमां पण तेनो उपयोग हे.

शंका—कळा विगेरेने जे स्पष्ट करवानी रीत कही तेनो क्यां जपयोग हे?

जत्तर—ज्यारे कळानो श्रंक साठनी श्रपेकाए श्रधं (३०) करतां वधारे होय त्यारे ते श्राखो गणीने त्रिंशांशमां जेळवाय ठे श्रने एज प्रमाणे विकळा पण त्रीशथी श्रधिक होय तो कळामां एक नाखवामां श्रावे ठे तथा जातक विगेरे ग्रंथोमां श्रंशायु, पिंमायु, दशा श्रने श्रंतर्दशा विगेरे लाववामां कळा विगेरेनी स्पष्टतानो विशेष जपयोग ठे, माटे श्रहीं तेनो वधारे विस्तार करता नथी.

आ प्रमाणे दिवसे समना अंशो साववानी रीत कही. हवे रात्रिने विषे ते साव-वानी रीत बतावे हे.—

> "रात्रौ तु मूर्झि यिष्ठिष्ण्यं तस्मात्रक्त्रमष्टमम् । जदेति पूर्वस्यां तेन लग्नोदयविनिर्णयः ॥ १ ॥"

"रात्रिए जे नक्षत्र माथे (मध्यमां) होय तेनाथी आत्रमुं नक्षत्र पूर्व दिशामां खदय पामे हे, तेले करीने खग्नना खदयनो निर्णय करवो."

तथा रेवतीनो जदय थया पठी अश्विनीनो जदय थाय त्यांसुधी अश्विनीनाज चारे पाया जदय पामे हे. एज रीते अश्विनीनो जदय थया पठी जरणीनो जदय थाय त्यां-सुधी जरणीनाज चारे पायानो जदय थाय हे. ए प्रमाणे मस्तक पर रहेखा नहत्रना पायानी कहपनाए करीने जदय पामेखो नवांशक पण निश्चय करवो. आ प्रमाणे खम्ननुं स्पष्टीकरण कर्युं.

हवे प्राये करीने दिवसे काळनुं ज्ञान शंकु ग्रायाने आधीन हे, तेथी करीने काळ थकी ग्राया अने ग्रायाथी काळ आणीने बतावे हे. तेमां प्रथम सूझ रीते दिनमान खाववानी रीत आ प्रमाणे हे.

> "दत्तायनांशा रविजुक्तजागाः, पत्नेन गुष्या दिनवृद्धिहान्योः। षष्ट्याजिलब्धं घटिकाद्यमेतत्स्यादाढ्यमूनं प्रथमद्यमानात्॥ १॥"

"सूर्ये जोगवेदा श्रंशोमां श्रयनांशो नाखवा. पढी तेने दिवसनी वृद्धि श्रयवा हानिना पळोवने गुणवा. तेने ६० वमें जाग देवाथी जे घनी विगेरे खाधे ते संक्रांतिना पहेखा दिवसना मानमां नाखवा श्रयवा डिंडा करवा."

इष्ट दिवसने विषे सूर्ये पोते आक्रमण करेखी राशिना जेटला त्रिंशांशो जोगव्या होय तेमां ते वर्षना अयनांशो नाखी तेने छपर (प्रथम) जे राशि आवी होय ते राशि संबंधी पूर्वे कहेला कर्केत्यादि (पत्र १९)ने आधारे दिननी वृद्धि अथवा हानिना जे पळो होय तेवने गुणी साठे जागतां जे लाधे ते घमी विगेरेने रसिदनाड्य (१-१५ ना अर्थमां पत्र १९) इत्यादि श्लोकमां कहेला मुख्य अहर्मान (दिनमान)मां मकरादिक उ राशिमां सूर्य होय तो नाखवा, श्रने कर्कादिक उ राशिमां सूर्य होय तो तेमांश्री बाद करवा. एम करवाश्री स्पष्ट दिनमान श्रावशे. ते दिनमानने साठ घनीना प्रमाणवाळा रात्रि दिवसना मानमांश्री शोधीए त्यारे शेष रहेलुं रात्रिमान स्पष्ट श्राय हे. श्रा दिनमान तथा रात्रिमान कुलिकने स्पष्ट करवो ए विगेरेमां छपयोगी हे.

चदाहरण—श्रहीं—इष्ट दिवसे मेप राशिनो सूर्य थया पढ़ी सत्तरमे दिवसे प्रातःकाळे घमी १३ पळ ३१ समये "स्फुटोऽथ जानुः" (५-६६) इत्यादि रीतिए करीने स्पष्ट करेला सूर्यवमे जोगवायेला छांशो १६, कळा ३, विकळा ३० थइ हे. तेमां अथनांश १५, कळा ३४ नाखवाथी राशि १, छांश १, कळा ३७, विकळा ३० थाय हे. अहीं अथनांश सहित करेला सूर्ये मेप राशि संपूर्ण जोगवी, तथा वृप राशिनो छांश १, कळा ३७, विकळा ३० पण जोगवी एम सिद्ध थयुं, तेथी छाहीं वृष राशि संबंधी दिवसनी वृद्धि पळ १, छहर ५२ हे, तेथी छांशादिक छांको गोमूत्रिकानी रीते वे स्थाने स्थापन करी एक स्थाने २ वमे अने बीजे स्थाने ५२ वमे गुणवाना हे.

स्थापना	হ) ५इ
	?	?
	39	39
	3,0	३०
	गुए	गुवाथी
	হ	
	ลล	પ્ર
	ξο	१ए२४
	j	१५६० ।

वेह्म (१५६०) छंकने ६० वमे जाग देतां जागमां १६ आव्या, तेने छपर (१ए१४) मां नाख्या त्यारे १ए५० थया। छा राशिने पहेली राशिना नीचला छंक ६० मां नाख-वाथी १०१० थया। तेने ६० वमे जाग देतां ३३ लाध्या। तेने छपरना (५३) छंकमां नाखवाथी ०५ पळ थया। तेमां पहेली राशिमां सम पंकिए रहेला छंक ९४ मां नाख-वाथी १५ए थया। तेने ६० वमें जाग देतां शेष ३ए छहर रह्मा, छने जागमां २ पळ छाव्या, तेने छपरना वे पळमां नाखवाथी पळो ४ थया। तेने ६० वमे जाग देतां जाग चालतो नथी, माटे घनीने स्थाने शून्य छावी। स्थापना-घनी ०, पळो ४, छहर ३ए. छा राशिने वृषना पहेला दिवसना छहर्मान घनी ३१, पळ ४६ मां नाखवाथी घनी ३१,

पळ ए०, ऋक्र इए श्रया. आ ते दिवसनुं स्पष्ट मान श्रयुं, तथा ते दिवसनी रात्रिनुं मान घमी २०, पळो ए, ऋक्र २१ श्राय हे. (६० मांश्री २१-५०-३एवाद करवाश्री.)

हवे एज मानथी मध्य ठाया खाववानी रीत कहे हे.—

"ज्येष्ठाहिनाहिनं शोध्यं शेषादशगुणात्स्वतः । त्यजेत्सप्तशरे ५७ र्जव्यं सूर्ये १२ मीध्यांहयः स्मृताः ॥ १ ॥"

"मोटा दिनमानमांथी इष्ट दिवसनुं दिनमान वाद करबुं. वाकी रहेखाने दशे गुणवा. की तेने एष वके जाग देवो. जे खांधे तेने १२ वके जाग देवो. जे खांधे ते मध्याह्रना बाद (पारैया-पगलां) जाणवा.":

इष्ट दिवसनुं छाहर्मान (दिनमान) मोटा छाहर्मानमांथी घर करवुं. होष रहे तेने दिशे गुणवा. त्यारपढी "स्वतः" एटखे तेज खंकने नीचे मूकी ५७ वके जाग देतां जे साधे ते मुख्य छंकमांथी बाद करवुं. जो जाग न चाखे छाने ५७ नी छापेकाए उपरनो छंक छाधेथी छाधिक होय तो एक छाखो घहण करीने मुख्य छंकमांथी बाद करवो. खारपढी तेने १२ वके जाग देवो. जे खाधे ते मध्याह्ननी ढायाना पाद जाणवा, छाने शेष रहे ते छांगुख जाणवा.

जेमके—अहीं इष्ट दिनमान (घमी २१, पळ ५०, अहर २ए) ने मोटा दिनमान मिनी २३, पळ ४० मांथी बाद कर्यु त्यारे घमी १, पळ ५७, अहर २१ रह्या. आ होष होवाथी तेने दशवमे गुणी ६० वमे जाग दह दहने जपर जपर नाखवाथी नीचे (शेष) १३ रह्या अने जपर (जागमां) १ए आव्या. आ (१ए)ने ५९ वमे जागी शकाशे महीं. तेमज ५९ नी अपेकाए अर्धथी अधिक पण नथी, तेथी ते रीत कर्या विनाज ते (१ए)ने वारे जाग देतां १ पाद लाध्यो. शेष अंगुल ७ अने २३ व्यंगुल थया. आ प्रमाणे इष्ट दिवसनी मध्याह ग्राया थइ.

हवे आ मध्याह बायाची इष्ट काळनी बाया लाववानी रीत कहे बे.—

"खमही कर २१० हतदिवसे विहते वान्ठितपर्केधुंगतरोपैः। जन्धं मध्यपदैर्युग् नग ७ रहितं स्यात् पदछाया ॥ १ ॥ रोषमर्क १२ गुणं कृत्वा वान्ठितैस्तु पर्केह्तम्। खन्धमङ्गुलसंइं स्यादेवं ठायाङ्गुलागमः॥ २ ॥"

"इष्ट दिनमानने ११० वमे गुण्डुं. तेने वांबित दिनना (मध्याह्न पहेखां होय तो) शयेखा पैळोए ऋश्रवा (मध्याह्न पबी होय तो) होष पळोए जाग देवो. जे खाधे तेने

१ वांछित (इष्ट) दिवसनी जेटली घड़ी तथा पळ होय ते सर्वना पळ करवा.

१०० श्रंगुल थया. तेमां छपर वधेला श्रंगुल १० नालवाथी ११० थया. हवे मध्या- ह्ननी ज्ञाया पाद १, श्रंगुल ९ छे, तेना श्रंगुल करवाथी १ए श्रया. ते १ए ने ११० मांथी बाद करतां एए रह्या. हवे ते दिवसना दिनमानना त्रेण श्रंकने पृथक् पृथक् ४२ वक्ते गुणी ६० वक्ते जाग दर दर्शने छपर छपर नालवाथी नीचे ४२, तेनी छपर २०, श्रमे तेनी पण छपर १३३७ श्रावे छे. तेने एए वहे जाग देतां १३ धर्मी लाधी. रोष ५० रह्या. तेने ६० वक्ते गुणी तेमां नीचेना २० जेळववाथी २०२० श्रया. तेने एए वक्ते जाग देतां पळ २० लाध्या. रोष ५० रह्या. तेने ६० वक्ते गुणी नीचेना ४२ नालवाथी २५२२ श्रया. तेने पण एए वक्ते जाग देतां श्रक्तर ३५ लाध्या. रोष ५७ रह्या. ते (५०) एए नी श्रपेक्षाए श्रधीधिक होवाथी श्रक्तरमां एक वधार्यों, तेथी श्रक्तर ३६ श्रया. श्रा (३६) पण ६० नी श्रपेक्षाए श्रधीधिक होवाथी पळमां एक वधार्यों, तेथी पळ ३१ श्रया, तेथी करीने २ पाद, १० श्रंगुल श्रमे २४ व्यंगुलनी ज्ञाया होय त्यारे १३ घर्मी श्रमे ३१ पळ जेटलो दिवस चनेलो होय एम सिद्ध श्रयुं, श्रमे दिवसना पाजला भागमां जो श्रा ज्ञाया लड्डए तो तेटला घर्मी, पळ दिवस वाकी रह्यों के एम जाणवुं. श्रा बीजी रीत होवाने लीधे एक वे पळनो फरक पक्ते तेमां कांइ पण दोष नथी एम जाणवुं. श्रा रीते प्रसंगने लीधे ज्ञाया श्रमे काळ लाववानी रीत कहीं.

हवे प्रकृत होवाथी प्रहोनुं अने तेमनी गतिनुं स्पष्टीकरण कहे हे.-

''गतेष्टनाड्यो गुणिताः खलेजैः, ए००-६००-४००-२०० सर्वर्द्धनामीविह्ताः कलाद्यम् । जुक्तर्रयुक्तं सकला ब्रहाः स्युः, प्रष्टा हतेष्वष्टशतेषु जुक्तिः ॥ १ ॥"

"इष्ट दिवसे ने ग्रह होय तेनी गयेली घमी ए००-६००-४०० के १०० वमे गुणवी. त्यारपढ़ी तेने नक्षत्रनी सर्व घमी उंचमे जाग देवो. जे आवे ते कळादिक जाणवा. पढ़ी तेमां जोगवाइ गयेली नक्षत्रोनी कळाउं नाखवी. ते कळा पण ०००-६००-४०० के १०० होय हे. पढ़ी तेने ६० वमे जाग देतां जे आवे ते आंशादिक जाणवा. (आ रीते अहो स्पष्ट याय हे.) पढ़ी ००० विगेरेने साहे गुणी नक्षत्रनी सर्व घमी उंचमे जाग देवाथी ते ग्रहोनी गति आवे हे."

१ उपर दिनमान घडी ३१, पळ ५०, अक्षर ३९ छखेळा छे. गणितनी रीते पण तेटलाज थाय छे, परंतु अहीं घडी ३१-५०-४१ छइने गणित कर्युं होय तेम जणाय छे. अन्यथा गणित मळतुं आवतुं नथी. प्रथमना गणितमां ३९ ने बदले अर्थाधिक वधेला करीने ४० तो थइ शके छे. तेने बदले ४१ अक्षर लीधा, तेनुं कारण बीजी रीत होवाथी तेटलो फरक लेवामां अडचण नथी एम धारवुं योग्य छे.

श्रा श्लोकनं जाष्य श्रा प्रमाणे हे.—
"इष्टात्प्राग्गतनाड्योऽष्ट्रशताद्यैगुणितास्ततः ।
सर्वर्र्घटिकाजकाः कलाद्याः स्युरिति स्फुटम् ॥ १ ॥
जुक्तऋद्वाष्ट्रशत्यादिप्रमाणसहितास्ततः ।
पष्टिजक्तेऽंशकादि स्याह्रेषे पष्टिगुणे ततः ॥ १ ॥
सर्वर्र्घिटकाजके लब्धं स्यादिकलादिकम् ।
एवं स्पष्टा प्रहाः सर्वे कर्तव्या गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥"

"इष्ट ग्रहनी पहेलां जेटली घमीलं गइ होय तेने आठसो विगेरे वमे गुणवी. त्यारपठी नक्षत्रनी सर्व घमीलंबमे जाग देवो, जाग देतां जे आवे ते कळादिक स्पष्ट रीते आवे हो. त्यारपठी जोगवायेलां नक्षत्रोनुं जे आठसो विगेरे प्रमाण हे तेने ते कळालंमां नाखवुं. पठी तेने ६० वमे जाग देतां जे लाघे ते अंशादिक जाणवा. तथा ते ६०० विगेरेने ६० वमे गुणी नक्षत्रनी सर्व घमीलंबमे जाग देवो. जे लाघे ते कळा अने शेष रहे ते विकळारूप ते ग्रहोनी गति स्पष्ट श्राय हे. आ रीते गणित जाणनारालंप सर्वे ग्रहो स्पष्ट करवा."

श्रहीं आठसो विगेरे कहुं हे तेनो अर्थ आ प्रमाणे हे.—आला नक्त्रनी गत नामी जिन्ने गुणवा होय तो ते आला नक्त्रनो जोगवटो आठसो कळानो हे, माटे आठसो वमे गुणाकार करवो, अने ज्यां नक्त्रना त्रण पादनी, वे पादनी के एक पादनी गत नामी जे इष्ट होय त्यां अनुक्रमे हसो, चारसो अने वसोवने गुणाकार करवो एम जाण हुं. नक्त्रनी सर्व धमी जेवमे जाग देवानुं कहुं त्यां पण आला (चार पादवाळा) नक्त्रनी, त्रण पादवाळा, वे पादवाळा के एक पादवाळा नक्त्रनी सर्व धमी जेवमे ते ते हेकाले जागाकार जाण थो. एज प्रमाणे जोगवायेलां नक्त्रोना आठसो विगेरे प्रमाणे करीने सिहत करवानुं कहुं हो, त्यां पण एक, वे के त्रण पाद जोगवाइ गयानो संजव होय त्यारे पण अनुक्रमे १००-४०० के ६०० कळा जेनो लाधेली कळा जेमां प्रकेष करवो एम जाण हुं. "ऋक्त" शब्दनो अर्थ "राशि" पण यइ शके हे, तेथी ते प्रहे जेटली राशि जोगवी होय ते राशिनो अंक पण माथे (जपर) लखवो.

आज अर्थ स्पष्टपणे कहे हे.--

''इन्दोर्गुण्या गता घट्योऽष्टशत्या प्रतिजं सदा । जीमसूर्यक्षश्चकाणां गुण्या छष्टशतादिज्ञः ॥ १ ॥ शनिवाक्पतिराहूणां दिशत्या पादगत्वतः । गता घट्यो हता जांद्रिघट्यासं स्थात्कलादिकम् ॥ २ ॥

आ० ४८

राहोर्घामगतित्वेन खब्धा या विकद्धाः कद्धाः । शोध्यास्ता दिशतीमध्याञ्चेषं जोग्यकद्धा इह ॥ ३ ॥"

"चंद्रनी गत घमी जेने ए०० वमे गुण्यी। मंगळ, सूर्य, बुध अने शुक्रनी गत घमी जं ए०० विगेरे वमे गुण्यी। एक पादमां रहेला होवाथी शिन, गुरु अने राहुनी गत घमी जं २०० वमे गुण्यी। पछी तेने नक्त्रना पादनी सर्व घमी जंवरे जाग देवाथी जे लाधे ते कळादिक जिक्त थाय हे, परंतु राहु वाम गतिवाळो होवाथी जे कळा विकळा लाधे ते बसोमांथी बाद करवी। जे बाकी रहे ते जोग्य कळादिक थाय हे."

चंद्रनी गत घमील ए०० वमे गुणवानी कही तेनुं कारण ए हे जे—सर्वत्र चंद्रनो चार (गित) नक्त्रनी अपेक्षाए करीनेज टीपणामां लख्यो होय हे. मंगळ विगेरेने आहमो विगेरेची गुणवानुं कहुं तेनुं कारण ए के—जोमादिकनो चार टीपणामां नक्त्रनी अपेक्षाए तेमज राशिनी अपेक्षाए पण लखेलो होय हे, तथा शिन विगेरेनो चार तो नक्त्रना एक पादनीज अपेक्षाए तखेलो होय हे, तथी एक पादनी अपेक्षाएज तेलंनी वर्तना करवी, एटले के नक्त्रना एक पादनी गयेली इष्ट धमील २०० वमे गुणतां जे आवे तेने नक्त्रना एक पादथी बीजा पादमां जतां वच्चे जेटली घमील होय ते सर्व घमील ने नाग देवो. जे कळादिक लाधे ते जुक्त थाय हे, परंतु राहुनी वाम गित होवाथी जे लाधे ते २०० मांथी बाद करवी. शेष रहे ते राहुए ते पादनुं जोग्य अयुं एम जाणवुं. पही तेमां जोग्य नक्त्रनी ००० विगेरे घमील नाखवी. अहीं राशिल पण जेटली जोग्य होय तेज लपर लखवी. आ प्रमाणे सूर्यादिक प्रहोनी वर्तना कोइ वखत एक पादनी अपेक्षाए अने कोइ वखत वे त्रण पादनी अपेक्षाए पण करवामां आवे हे. मात्र आज रीतिए करीने सूर्यादिक सात प्रहो जुक्तनी अपेक्षाए स्पष्ट थाय हे, अने राहु तो जोग्यनी अपेक्षाए स्पष्ट थाय हे. जो राहुनी राशिना अंकमां ह नाखीए तो केतु पण जोग्यनी अपेक्षाएज स्पष्ट थाय हे.

(ग्रहोनी गित लाववानी रीत—) उपरना प्रथम श्लोकमां "षष्ट्या हतेष्वष्टशतेषु जुक्तिः" (आठसोने साठे गुणतां जुक्ति आवे हे.) आ ठेकाणे "सर्वर्क्षनामीविहतेषु" (नक्षत्रनी सर्व धमीउवमे जाग दीधेला एवा आठसो) एटलुं अध्याहार हे, तथी करीने तेनो आवो अर्थ थाय हे.—आठसोने अथवा संजव प्रमाणे हसो, चारसो के बसोने साठे गुणी नक्षत्रनी सर्व धमीउवमे अथवा संजव प्रमाणे त्रण, वे के एक पादनी धमीउवमे जाग देवाथी जे वे फळ आवे तेटली कळा विकळारूप प्रहोनी दिवस संबंधी गितिनुं मान जाणवुं.

हवे ऋहीं तत्काळ (इष्ट काळ)ना नव बहोने स्पष्ट करीने खदाहरण बतावे हे. तेमां सूर्य तो प्रथमज स्पष्ट करी बताव्यो हे, परंतु तेनी गति कही नथी, तेथी तेतुं बारे संकांतिमां छानुक्रमे कळा विकळारूप दिवसनी गतिनुं मान प्राये करीने आ प्रमाणे होय हे.—

"वस्वर्था निधयो ए०-ए नवेषुसधृति एए-१० दिः षद्शरं ए६-ए६ त्र्यूनिका, षष्टिर्दादश ए७-१२ कुञ्जरेषुगगनं ए०-० चैकोनपष्टिर्दयाः एए-९। षष्टिर्विश्वयुता ६०-१३ कुपद् च सगुणा ६१-३ कङ्गं दियुग्विशतिः ६१-२१, कङ्गं सन्निधि ६१-ए षष्टिका युगयुगं ६०-२२ खेटेषु धृत्या युतम् एए-१०॥ १॥"

"मेष राशिनी संक्रांतिमां सूर्यनी गति कळा ए०, विकळा ए होय छे, एज रीते वृष-एए-१०, मिथुन-ए६-ए६, कर्क-ए९-१२, सिंह-ए०-०, कन्या-एए-९, तुला-६०-१३, वृश्चिक-६१-३, धन-६१-२२, मकर-६१-ए, कुंज-६०-२२, मीन-एए-१०."

ते दिवसे चंछ पुष्य नक्त्र (तथा कर्क राशि)मां हे. तेनी गत घमी कार्य वखते १९ हे. तेने ए०० वमे गुणतां १३६०० थया. तेने पुष्यनी सर्व घमी इदि वमे जाग देतां लाधेली कळा १०६, विकळा ३, शेष ४१. आ (४१) ६६ नी अपेक्षाए अधीधिक होवाथी विकळा ४ थइ. पही पुनर्वसुना हेला पादनी १०० कळा उपरनी कळा (१०६) मां नाखवाथी कळा ४०६ थइ. तेने ६० वमे जाग देतां लाध्या अंश ६, कळा ४६, विकळा ४. जुक्त राशि त्रण होवाथी तेने उपर लख्यो, तेथी ते वखते स्पष्ट चंछ राशि ३-६-४६-४ थयो. तेनी गति कळा ४२९, विकळा १६ हे.

ते दिवसे मंगळ जत्तरजाजपदमां (तथा मीन राशिमां) हे ते वखते गत घमीछ १४ए हे. ते आ रीते—जत्तरजाजपदमां मंगळ ४४. ते दिवसनी शेष घमीछ १६, कार्यना दिवसनी घमीछ १३ छाने वचेना वे दिवसनी घमीछ १६० हे, ते सर्व मळवाथी १४ए थाय हे. तेने ००० वमे गुणवाथी ११ए२०० थाय हे. तेने नक्त्रनी सर्व घमीछ १०२२ वमे जागवाथी कळा ११६, विकळा ३० थाय हे. पूर्वजाजपदना हेझा पादनी २०० कळाछ छपरनी कळाछमां नाखवाथी ३१६ थाय हे. तेने ६० वमे जाग देतां श्रंश ५, कळा १६, विकळा ३० थइ. गत राशि ११ नो खंक छपर मूकवाथी स्पष्ट मंगळ राशि ११-ए-१६-३० थयो. तेनी गति कळा ४६, विकळा ५० हे.

ते दिवसे बुध वृष राशिमां कृत्तिका नक्षत्रमां हे. ते वखते गत धमी १९० हे. ते आ रीते.—वृषमां बुध १३. ते दिवसे शेष धमी ३९, कार्यना दिवसनी धमी १३,

वचेना वे दिवसनी घमीछ १२०, ते सर्व मळी १९० थाय हे. तेने कृत्तिकाना त्रण पादज वृपमां रहेला होवाथी ६०० वमे गुणतां १०२००० थया. त्यारपछी तेने वृषे बु॰ थी छारंजीने रोहि॰ बु॰ त्यांसधीना ज्ञण पादनी जे घमीछं हे ते सर्व घमीछं ४५५ हे. तेवमे जाग देतां कळा ११३, विकळा ११, होष ३१३ रह्या. ते ४५५ नी छपे- छाए छार्घाधिक होवाथी विकळा ११ थइ. कळाउंने ६० वमे जाग देतां छंश ३ लाध्या. तेनी छपर जुक्त राशि १ मूकवाथी स्पष्ट बुध १-३-४३-१२ थया. तेनी गति ६०० ने ६० वमे गुणी ज्ञण पादनी घमीछ ४५७ वमे जाग देतां कळा ७०, विकळा ४६ छावे हे.

ते दिवसे गुरु आर्जाना पहेला पादमां हो. ते वखते गत घमी 29६ हो. ते आ रीते.—रौंडे प्रण्युण ३९. ते दिवसनी शेष घमी 2३, कार्यना दिवसनी घमी १३ अने वचेना चार दिवसनी घमी 2४० मळीने २९६ आय हो. तेने गुरु एक पादमां रहेल होवाथी २०० वमे गुएतां ५५२०० अथा, तेने आर्जाना पहेला पादनी सर्व जोग घमी ११ए२ वमे जाग देतां कळा ४६, विकळा १० थइ. कळामां आर्था मृगशिरनी कळा ४०० नाखवाथी ४४६ कळा थइ. तेने ६० वमे जाग देतां आंश ९ लाध्या. छपर जुक्त वे राशि मूकवाथी स्पष्ट गुरु १-९-१६-१० थयो. तेनी गित लाववा माटे २०० ने ६० वमे गुएी आर्जाना एक पादनी सर्व घमी (११ए२) वमे जाग देतां कळा १०, विकळा ४ थइ.

ते दिवसे शुक्र पूर्वजाइपदमां हो. ते वखते गतः घमी ए ५४१ हो. ते छा रीते.—
"पू. ज. सित" पूर्वजाइपद शुक्र १२. ते दिवसनी शेषधमी ए ५५ हष्ट दिन धमी ए १३ तथा
बच्चेना छात्र दिवसनी घमी ए ५०० मळी ५४१ थाय हो. तेने पूर्वजाइपदना ज्ञण पाद
बुंजना होवाथी ६०० वमे गुणतां ३२४६०० थाय हो. तेने "मीने सि०" मीनना शुक्र
तेनी पहेलांनी सर्व धमी ए ५०० वमे जाग देतां कळा ५५७ विकळा ४४ थइ. कळामां
ह जुक्त नवांशकनी कळा १२०० नाखवाथी कळा १७५७, विकळा ४४ थइ. तेने ६०
बमे जाग देतां छंशो १ए लाध्या एपर १० राशि देवाथी स्पष्ट शुक्र राशि १०—१ए—
१९—४४ थयो तेनी गति कळा ६१, विकळा ५१ थाय हो.

ते दिवसे वक शनि श्रनुराधाना चोथा पादमां हे. ते वखते गत घमी १४९९ है. ते श्रा रीते.—"पुनरनु॰ च श॰" ३६. ते दिवसनी शेष घमी १४५, इष्ट दिन घमी १३ श्राने वच्चेना २४ दिवसनी घमी १४४० मळवाथी १४९९ श्राय हे. तेने शनि एक पादमां रहेतों होवाथी २०० वमे गुणतां २०५४०० तेने चोथा पादनी सर्व जोग घमी ४४०२ वमे जाग देतां कळा ९०, विकळा ३० श्रइ. तेने शनि वक्र होवाथी २०० मांथी

वाद करतां कळा १२ए, विकळा २२ रही. तेमां चार नवांशकनी कळा ००० नाखवाथी कळा ए२ए थइ. तेने ६० वमे जाग देतां छांश १५ खाध्या. उपर ७ राशि देवाथी स्पष्ट शनि राशि ७-१५-२ए-२२ थयो. तेनी गति कळा २, विकळा ५२ छे.

ते दिवसे राहु चित्राना छेद्वा पादमां छे. ते चखते गत धमी ११०३ छे. ते आ रीते.—चित्रा० च० रा० ४०. ते दिवसनी शेष धमी ११०, कार्य दिन धमी ११ अने वचेना ११ दिवसनी धमी ११६० मळी ११०३ थाय छे. तेने राहु एक पादमां रहेली होवाथी १०० वमे गुणतां १५६६०० थया. तेने चित्राना छेद्वा पादनी सर्व जोग धमी इं ३९५४ वमे जाग देतां कळा ६९, विकळा ५ए थइ. तेने १०० मांथी बाद करतां कळा १३२, विकळा १ रही. कळामां कन्या राशिमां रहेला चित्राना त्रीजा पादनी २०० कळा चे नाखवाथी ३३२ कळा थइ. तेने ६० वमे जाग देतां अंश ५ लाध्या. जपर ६ राशि देवाथी जोग्यनी अपेकाए स्पष्ट राहु ६-५-३१-१ अयो. तेनी गति कळा ३, विकळा ११ आवे छे.

राहुनी राशिना श्रंकमां ६ नाखवाश्री स्पष्ट केतु राशि ०-५-३१-१ थाय हे. तेनी गित राहु प्रमाणे जाणवी.

ते काळना स्पष्ट करेखा नव ग्रहोनी तथा तेमनी गतिनी स्थापना.--

तु
0
Ų
ą
<u> </u>
₹
१

अहीं कोइने शंका थाय के—प्रहोने अने तेनी गतिने स्पष्ट करवानुं शुं फळ ? तेनो जवाब आ हे.—प्रथम कार्यने समये स्पष्ट करेला प्रहना काळ पही अने वीजुं कार्य के बखते करतुं होय ते बखतनी पहेलां जेटली घमीछ गइ होय ते घमीछने वे बार स्थापन करवी. पही तेने कळा विकळारूप प्रतिदिननी गतिव के अनुक्रमे गुणवी. पही तेने साहे जागतां जे कळादिक लाघे तेने प्रथमना कार्यनी वेळाए स्पष्ट करेला प्रहोने मध्ये नाखवा, पण जो वकी ग्रह होय तो तेमांथी अने जोग्यनी अपेकाए स्पष्ट करेला राहुमांथी बाद करवा. तेम करवाथी बीजा कार्यनी वेळाए ग्रहो स्पष्ट थाय हे.

चदाहरण—पूर्वे कहेलाज वर्ष, मास अने पक्तनी (१ए५६ ना वैशाख सुदि) १३ ने दिवसे इस्त नक्त्रमां सूर्य उते ए घनी दिवस चमे ते समये कोइए कार्य करवा धार्युं जे, तेथी आ वेळा अने पूर्वे कहेली वेळानुं अंतर ३५५ घनीनुं छे ते आ रीते—पूर्वे वैशाख सुदि ९ ने दिवसे १३ घनीचं कहेली छे, माटे ते दिवसनी शेष घनीचं ४७ रही, तथा इस्तना सूर्यवाळा दिवसनी (सुदि १३ नी)ए घनीचं छे, तथा बच्चेना पांच दिवसनी घनीचं ३०० थइ. ते सर्व मळी ३५५ घनीचं थइ. हवे मेषमां रहेला सूर्यनी गति कळा ५०, विकळा ए छे. तेवमे बेवार स्थापन करेला ३५५ ने गुण्वा. स्थापना—३५६।३५५ गुण्तां ३५५६ नीचेना अंकने ६० वमे जाग देतां ५३ लाध्या, तेने खपरना अंकमां नाखवाथी २०६४३ थया. तेने ६० वमे जाग देतां कळा ३४४ लाधी. शेष विकळा ३ रही. एज प्रमाणे बीजा चंद्रादिक ग्रहोनी कळा विकळा लावीए त्यारे ते आ प्रमाणे आय छे.—

		चंद्र							
कळा	३	ধর • র	ર99	ម ६६	५ ए	३६५	१६	१ _ए	१ ०
विकळा	३	ধূর	પ ર	ឧ	३३	५६	एउ	१ _ए	५०

आ कळा विकळावने संस्कारं करेखा पूर्वना ग्रहो बीजा कार्य समये आवा प्रका-रना थाय है.--

रवि	चंद	मंगळ	बुध	गुरु	शुक	शनि	राहु	केतु
ए ११	Ų	2.2	*	হ	११	а	ξ	0
2 १	? 5	ਅ	33	ច	ų	१५	ų	ų
83	त्रल	પંધ	इए	इए	श्३	ংহ	१३	१३
३३	ą	११ ए ए १ १ १	१ 업	५१	Я¤	३५	११	2.2

हवे जे यहो तरतज वक थया होय अथवा वक थवानी तैयारीमां होय, तथा मार्गी-चत (मार्गे रहेखा) होय अथवा मार्गनी सन्मुख होय तेमनुं स्पष्टीकरण कहे हे.

> "वकात्रपश्चिमे जुक्ता जोग्या मार्गात्रपश्चिमे। श्रन्तरांशकला ब्राह्यास्तासां सीमा च सर्वजम् ॥ १॥ वकाङ्क्ष्यं फलं लब्धं जुक्तजागौधतस्यजेत्। सजोग्यजुक्तजागौधास्याज्यं मार्गादितः फलम् ॥ १॥"

१-३४४ ने ६० वडे भाग देतां ५ अंश आव्या. ते १६ मां नाखवाथी २१ थया. शेष ४४ क्या रही ते ३ मां नाखता ४७ थइ. शेष रहेली ३ विकळा ३० मां नाखवाथी ३३ विकळा यह.

"वक श्रयेखा ग्रह्नी पढीनी श्रने पहेखांनी जुक्त एवी श्रने मार्गी श्रयेखा ग्रह्नी ग्रीनी तथा पहेखांनी जोग्य एवी श्रंतरांश कळाडं ग्रहण करवी, श्रने ते सर्व कळाडंनी जे सीमा ते सर्वज कहेवाय हे. १. वक्री श्रया पढी खाधेखुं जे फळ ते जुक्त श्रंश—कळाना समूहमांश्री बाद करतुं, श्रने मार्गी श्रया पढी ते खाधेखुं फळ जोग्य सहित करेखा जुक्त श्रंश—कळाना समूहमांश्री बाद करतुं."

श्रा वे श्लोकोनं जाष्य श्रा प्रमाणे हे.—
"वकात् पूर्वगता नाड्यो हताः स्वर्क्कलादिजिः।
सीमान्तसर्वजघटीविजक्ताः स्युः स्फुटं कलाः॥ ३॥
शेषे षष्टिगुणे सर्वर्कलब्धे विकलागमः।
जुक्रर्शयुक्ते तत्राङ्के षष्टिजकेंऽंशकादिकम्॥ ४॥
वक्रपश्चादपीत्थं स्यात्सीमाधीष्ण्येऽयतः स्थिते।
लब्धं फलं पुनस्त्याज्यं जुक्जागौघतस्तदा॥ ५॥
मार्गात् पूर्वगता ध्यो गुण्या जोग्यकलादिजिः।
शेषं प्राग्वकौग्ययुक्तजुक्तांशेज्यः फलं त्यजेत्॥ ६॥
मार्गपश्चात्तु रूक्येति विक्रमार्गियहाः स्फुटाः।"

"वकीनी पहेलां गयेली कळाउं पोताना नक्त्रनी कळाउंए गुएवी. तेने सीमान्तनी सर्व नक्त्रनी घमीउंए जाग देवाथी स्फुट कळाउं थाय हे. शेषने ६० वमे गुएी सर्व नक्त्रनी घमीउंए जाग देतां विकळा आवे हे. पठी ते अंकने जिक्क नक्त्रनी घमीउं सिंहत करीने ६० वमे जाग देतां अंशादिक आवे हे. हवे वकी थया पही पए एज प्रमाणे सीमा नक्ष्त्र आगळ रहे हते करतुं, परंतु ते वखते जिक्क अंशोना समूहथी आधेखा फळने बाद करतुं. हवे मार्गी थयानी पूर्वे गयेली घमीउं जोग्य कळादिके दिने गुएवी. बीजुं प्रथमनी जेम जोग्य सहित करेला जिक्क अंशोमांथी फळने बाद करतुं, परंतु मार्गी थया पही तो रूंढिथी जाएतुं. आ प्रमाणे वकी अने मार्गी यहो आप हे."

कोकोनी न्याख्या आ प्रमाणे हे.—वक्राव्रपश्चिमे एटले थहनुं वक्रपणुं श्रवा पहेलां. मार्गाप्रपश्चिमे एटले मार्गी थया पढ़ी श्रने पहेलां. अन्तरांशकला प्राह्याः में स्वाप्ताविक गतिवाळा थहने स्पष्ट करवा माटे गयेली इष्ट घमीर्जने ए०० पंजाबानुं कहुं हे तेम श्रहीं (गयेली इष्ट घमीर्जने) वकी श्राने मार्गी थवाना

१ आनी रीत भागळ टीकाना विस्तारथी जणाशे.

समये टीप्पणमां खलेखा जुक्त श्रंशो श्रने कळाउंए करीने गुणवी. विशेष (तफावत) ए के वकी अयेला ग्रहनी बन्ने तरफनी (पठीनी अने पहेलांनी) जुक्त कळाए करीने अने मार्गी थयेखा ग्रहनी बन्ने तरफनी जोग्य कळाए करीने गुणाकार करवो. तासां सीमा च सर्वजं एटले प्रस्तावने लीधे तासां-ते सर्व नामीर्ड (घमीर्ड)ने. जावार्थ ए हे जे-जेम बीजे ठेकाणे सर्वे नक्त्रनी घमी वक्ते जाग देवानो कहा। तेम इष्ट समये ते बहे आक्रमण करेलं नक्षत्र के तेनो पाद जे वलते स्पर्श्यों होय त्यारश्री आरंजीने वकी के मार्गी श्राय त्यांसुधीनी अथवा वकी के मार्गी श्रवाना समयथी आरंजीने बीजा नक-त्रमां के तेना पादमां संक्रमण थाय त्यांसुधीनी जे सर्व घनी होय ते घनी हेवने जाग देवो. त्यारपत्नी वकाद्रध्ये एटले जो वकी थया पत्नी बहने स्पष्ट करवानो होय तो जे कळादिक फळ लाधेलं होय ते वक्री श्रवाना समये टीप्पणमां लखेला जुक्त श्रंश श्रने कळाटिकमांची बाद करवं, अने वकी थया पहेलां यह स्पष्ट करवानो होय तो गयेली इह घरी जैने कहेली रीत प्रमाणे जुक्त कळावने गुणी तथा सर्व धनी जैवने जाग दइ जे खाधे तेने जुक्त नक्षत्रनी कळाए युक्त करवुं, ए रीत सुगमज हे. मार्गादितः एटखे के जो मार्गी थया पहेलां यहने स्पष्ट करवानो होय तो मार्गी थवाने समये दिप्पनकमां खलेला चुक्त खंशो छने कळाउंमां तेनीज जोग्य कळादिक मेळवीने पढ़ी ते एकंदर थयेखा श्रंकमांथी लाधेली कळादिक बाद करवी, श्राने मार्गी थया पत्नी ग्रहने स्पष्ट करवो होय तो रूढिए करीने करवो. एटले के-जेम स्वाजाविक गतिवाळा ब्रहोनी कळाउं लावीने तेमां प्रक नक्षत्रनी कळाउं मेळवाय हे तेज रीते ते मेळवणी ख्रहीं पण करवी. ख्रा प्रमाखे वक्री छने मार्गी ययेखा तथा वक्री छने मार्गी यवानी सन्मुख ययेखा प्रहो स्पष्ट थाय है. आतं जदाहरण बुध अने शुक्रने आश्रीने लखे है, कारण के प्राये करीने श्चा वे बहो घणी वार वकी श्वने मागीं घाय हे.

तेमां वकी थया पढीनी रीत आ प्रमाखे करवी.-

वृष राशिमां वकी थयेला बुधनुं गणित आ प्रमाणे ठे.—वकी थयेला दिवसनी शेष भित्री १६, लग्नना दिवसनी घमी १० तथा छंतराळना (बच्चेना) चार दिवसोनी शिष १४० ए सर्व मळीने १९६ थइ. आ छंक जूदो राखी मूकवो. हवे बुध जे बिससे वक थयो ते दिवसे वृष राशिनुं जुक्त काढवा माटे टिप्पनकमां जोयुं तो छंश अभ, कळा ४४ ठे. ते सर्वने कळारूप करतां १५४४ कळा थइ. तेमांथी कृत्तिकाना त्रण थाद अने रोहिणीना चारे पादनी मळी १४०० कळा बाद करीए त्यारे शेष १४४ रहे ठे. आ मृगशीर्पनुं जुक्त आन्युं. आटलावमे "वकामपश्चिमेऽन्तरांशकला जुक्ता प्राह्याः"—

"वकीनी पठीनी तथा पहेंसांनी जुक्त खंश कळाउं यहण करवी." एटखानी व्याख्या पूरी थरु. त्यारपठी थ्रा १४४ मृगशिरना जुक्तवमे पूर्वे आएेखी १९६ गत रृष्ट घमीउने गुणवाथी २ए९४४ थाय के. त्यारपठी टिप्पनकमां जोवुं, अने वकीना दिवसथी आरंजीने रोहिणीमां बुध ९ घमी होय त्यांसुधीनी सर्व घमीउं एकत्र मेळववी. ते आ रीते — वकीना दिवसनी शेष घमीउं १६, रोहिणीमां आवेखो बुध घमी ९, तथा अंतराळना ६ दिवसनी घमीउं ३६० मळी ३ए३ थरु. आ सर्व नक्त्रनी घमीउंवमे पूर्वे कहेखा खंक २ए९४४ ने जाग देतां जागमां कळा १०१ आवी अने शेष विकळा ए रही. आने पूर्वे कहेखा मृगशिरना जुक्त १४४ मांथी बाद करीए त्यारे कळा ४२, विकळा ५२ रहे के आटलाए करीने "वकादूर्ध्वं फलं लब्धं जुक्तजागीधतस्त्यजेत्—" "वकीनी पठी जे फळ खाध्युं तेने जुक्त अंशना समूहमांथी बाद करबुं." एटलानी व्याख्या पूरी थरु. पठी ते कळा ४२, विकळा ५२ ने कृत्तिकाना त्रण पादनी अने रोहिणीना चारे पादनी मळी १४०० घमीउंमां नालवाथी १४४२ कळा अने ५२ विकळा थरु. कळाने ६० वमे जाग देतां जागमां २४ अंशो आव्या. ते उपर जुक्त राशि एक देवाथी स्पष्ट बुभ राशि १ – १४–१ थयो.

हवे ते बुधनी गित छा प्रमाणे लाववी.—आठसोने ठेकाणे छहीं १४४ नो छंक है, तेने ६० वके गुणी सर्व नहामनी घनी उए३ वके जाग देतां कळा ११, विकळा ५ए घइ. छा वक थया पठी लग्नने दिवसे बुधनी गित छावी. गितने स्पष्ट करवानुं फळ पथ-मनी जेमज जाणवुं. विशेष ए के—छा गितवके गत इष्ट घनी छेने पूर्वे कहेली रीत प्रमाणे गुणवाथी जे कळादिक फळ लाधे ते बीजा कार्यसमये पूर्व कार्यना समयना प्रहोमांथी बाद करीए त्यारे बीजा कार्यसमयना ग्रहो स्पष्ट थाय है.

ह्वे वक अया पहेलांनी वर्तना छा प्रमाणे — पुनर्वसुमां शुक्र घमी एए हे. ते दिव-सनी पढ़ीने वीजे दिवसे १० घमी पढ़ी लग्न लीधेलुं हे, तेथी लग्नना दिवसनी घमी १० अने पुनर्वसुमां शुक्र छाव्यों ते दिवसनी शेष घमी १ मळी ११ घमी छ अइ. त्यारपढ़ी शुक्र क्यारे वक्र यहा १ ते माटे टिप्पनकमां जोवुं. त्यारे लग्नना दिवसनी पढ़ी वक्री शुक्र घमी ४ए, छंदा २१, कळा १० ए प्रमाणे टिप्पनकमां लखेलुं जोयुं. तेमां छंदा विगरेनी कळा करवाथी १२५० अइ. तेमांथी मृगशिरना वे पादनी अने आर्जा धारे पादनी मळी १२०० कळाडं बाद करतां शेष कळा ५० रही. आ पुनर्वसुनं जुक्त थयुं. आटलावमे "वक्रादये पूर्व चान्तरांशकला जुक्ता ब्राह्माः"—"वक्रनी पढ़ीनी अने पहेलांनी जुक्त छंतरांश कळा (वच्चे रहेला छंश—कळा) ब्रह्म करवी." एटलानी व्याख्या मह. त्यारपढ़ी आ पुनर्वसुनी जुक्त कळा ५० वमे गत इष्ट घमी ११ ने गुणतां भा• ५० 99० थर्. त्यारपढी फरीथी टिप्पनकमां जोवाथी पुनर्वसुमां शुक खाव्यो ते दिवसनी शेष धमी १, वक दिवसनी धमी थए खने खंतराळना पांच दिवसनी धमी उं २०० मळीने ३५० थर्. खा सर्व नक्त्रनी धमी खं थर्. तेवने पूर्वे कहेला ९९० ने जाग देतां कळा २ खने विकळा ११२ खावी. खाटलुं लग्नसमये शुके पुनर्वसुनुं जुक्त थयुं, तेथी तेने मृगशिरना वे पादनी तथा खार्जाना चारे पादनी मळी १२०० कळामां नाख- वाथी कळा १२०१ खने विकळा १२ थर्. कळाने ६० वमे जाग देतां जागमां २० खंशो लाध्या. तेनी छपर वे राशि देवाथी लग्नवेळाए स्पष्ट शुक्र राशि २-२०-१-१२ थयो.

हवे तेनी गति छा प्रमाणे. छाउसोने स्थाने छहीं १० नो छांक हे, तेने ६० वर्षे गुणी सर्व नक्षत्रनी कळा ३५० वर्षे जाग देतां कळा १२, विकळा ० छावी. छा वक्ष घया पहेलां लग्नने दिवसे शुक्रनी गति थइ. छा गतिवर्षे गुणवाथी जे कळादिक फळ छावे ते पूर्व काळना ब्रहोमां मेळववुं.

हवे मार्गी अया पहेलांनी वर्तना आ प्रमाणे - रोहिणीमां बुध घमी 9 ए प्रमाणे खखेलुं होवाथी जणाता दिवसनी पढी आठमे दिवसे पांच घनी गया पढी लग्न लीधेलुं वे, तेथी लग्नना दिवसनी घमी ए, रोहिणीमां बुध आव्यो ते दिवसनी शेष घमीछ एर श्वने श्रंतराळना सात दिवसनी धमीर्च ४२० मळीने ४९० घमीर्च थइ ते गत इष्ट घमीलं जाण्वी त्यारपत्नी टिप्पनकमां जोयुं तो खग्नना दिवसनी पत्नी सातमे मार्गी बुध घनी ४५, छांश १३, कळा १३, विकळा सखेद्धं जोयुं. त्यारपठी ते श्रंशादिकने कळारूप करवाश्री प्रए३ कळा श्रने प्र विकळा थइ. आ टिप्पनकमां लखेलुं श्रंशादिक बुधे वृष राशिनुं जुक्त थयुं एम जाण्डुं, श्चने जोग्य तो कळा १००६, विकळा ५२ हे, माटे श्चा जोग्यवमे गत इष्ट धमील ४९० बे स्थाने स्थापन करी अनुक्रमे गुण्वी. स्थापना—३७३६ आटलाए करीने "जोग्या मार्गाग्रपश्चिमे"—"मार्गीनी पहेलांनी अने पठीनी जोग्य कळा गुणवी" एम कहेलं होवाधी जोग्य कळाउंज गत इष्ट घमीउं साथे गुणवा माटे यहण करी है. तेने अनुक्रमे गुणवाधी ४५९१५६६ श्रयुं. नीचेना श्रंकने ६० वेभ जाग देतां जागमां श्रावेखा ४१४ जप-रना अंकमां नाखवाथी ४०१२०२ थया. त्यारपठी रोहिणीमां बुध आव्यो ते दिवसनी ज्ञेष घर्मी ए ए. मार्गी बुध थयो ते दिवसनी ज्ञेष घर्मी छ ४५ तथा अंतराळना चौद दिवसनी घनील ए४० ए सर्व मळीने ए३० थइ. आ सर्व नक्त्रनी धनील थइ, तेना वके पूर्वे कहेला ४०१२०२ ने जाग देतां कळा ५१३ लाधी. दोष विकळा ६ रही. आरखं फळ लाध्यं. त्यारपठी लग्नना दिवसथी आठमे दिवसे टिप्पनकमां लखेली मार्गी

१ बाकी रहेला ७० ने ६० वहे गुणी ३५० वहे भाग देतां १२ विकळा आवे छे.

बुध श्रंश १३, कळा १३, विकळा ० छे, तेनी कुल कळा उए३, विकळा ० रूप वृष राशिनुं जे जुक्त थयुं छे तेने जोग्य कळा १००६, विकळा ० सहित करवाथी १००० कळा थाय छे, तेमांथी पूर्वे लाधेलुं फळ कळा ५१३, विकळा ६ वाद करवी, केमके "सजोग्य जुक्तजागौघात्या ज्यं मार्गादितः फलं"—"जोग्य सहित करेला जुक्त श्रंशा-दिकना समूह्यी मार्गीना लाधेला फळनो त्याग करवो" एम कहेलुं छे, तेथी ते बाद करतां कळा १२०६ अरने विकळा ५४ रही. कळाने ६० वमे जाग देतां अंश २१, कळा २६, विकळा ५४ स्त्राची. आटलुं मार्गी थया पहेलां लग्नने दिवसे बुधे वृष राशिनुं जुक्त थयुं. तेना जपर एक राशि देवाथी स्पष्ट बुध राशि १-२१-२६-५४ थयो.

तेनी गति आ प्रमाणे — १००६-५२. तेमां पहेला अंकने ६० वमे गुणी सर्व नक्ष-त्रनी घमी ए १० वमे जाग देतां कळा ६४, विकळा १३ आवी. आ रीतवमे प्राप्त अये खुं कळादिक पूर्वना प्रहोमांथी वाद करवुं.

हवे मार्गी थया पत्नी आ प्रमाणे वर्तना करवी.--मार्गी बुध जे दिवसे थयो ते दिवसे ४५ घमीए अयेको होवाश्री ते दिवसनी शेष घमी ए १५, क्सना दिवसनी घमी छ तथा अंतराळना च दिवसनी घमी छ ३६० सर्व मळीने ३०२ घइ. आ गत इष्ट घमी खं अइ, तेने वे वार स्थापन करवी. पत्नी मार्गी बुध घमी धए, खंश १३, कळा १३, विकळा ७, ए प्रमाणे टिप्पनकमां खखेखुं हे, अने तेथी शेष रहेखी जोग्य कळा १००६, विकळा ५२ हे, तेने छपरनी गत इष्ट घनी छ ३०२ वने गुणवी, केमके "जोग्या मार्गायपश्चिमे"—"मार्गीनी पहेलांनी तथा पाउळनी जोग्य घकील यहण करवी" एम कह्यं हे, तेथी तेने गुणतां ३०४६१३-४ थया. त्यारपत्नी फरीथी टिप्पनकमां जोतां मार्गी श्रया पढ़ी १४ दिवसे मृगशिरमां बुध ४९ खखेखो जोयो, तेशी करीने बुधना मार्गी थवाना दिवसनी शेष घमी ए १५, मृगशिरमां बुधना आववाना दिवसनी घमी छ ४७ तथा श्रंतराळना तेर दिवसनी घमी**लं** ७०० ए सर्व मळी ०४२ घमील श्रंड. सर्व नक्तत्रनी घमी अइ. आना वमे पूर्वे कहेला अंक ३०४६२३ ने जाग देतां कळा धए६. विकळा ४० थइ. कळाने ६० वमे जाग देतां अंश ७ खाध्या. शेष कळा ३६ अने विकळा ४० रही. आ अंकमां मार्गी यवाना दिवसे खखेला अंश १३, कळा १३ आने विकळा ए छमेरवी, केमके "मार्गपश्चात्तु रूड्या"—"मार्गी थया पत्नीनी वर्तना होय तो रूढि प्रमाणे करवुं एटले के जमेरवा" एम कहुं हे, माटे ते जमेरतां ऋंश २०, कला धए, विकळा ५६ थाय हे. आदलुं प्रमाण लग्नसमये बुधे वृष राशिनुं खुक्त थयुं. तेना **उ**पर एक राशि देवाथी स्पष्ट बुध राशि १-२०-४ए-ए६ थयो.

तेनी गति आ प्रमाणे.--१००६-५२. तेमां पहेला अंकने ६० वमे गुणी सर्व नह-

त्रनी घनी उठि उठि वने जाग देवाथी कळा ७१ तथा विकळा २२ आवी. आ रीते आ-वेलुं कळादिक फळ पूर्वे आणेला महोमां जेळववुं. आ रीते वीजा महोनी वर्तना पण उपर कह्या प्रमाणे पोतानी वुिक्सि करवी. आ सर्व गणित ज्योतिर्विदोने निरंतर उप-योगी होवासी तथा प्रसंग होवासी देखाङ्युं हे.

हवे विवाहमां गोधू खिक खग्न कहे है.-

सन्ध्याखग्नमपि श्रेयो गोखुरोत्खातधूखिजिः। गोपानां हीनवर्णानां प्राच्यां च स्यात्करश्रहे॥ ७३॥

अर्थ-गोवाळना, नीच वर्णना अने पूर्व देशमां रहेनारना विवाहमां गायनी खरीए उनामेखी धूळवमे जणातुं संध्या खग्न पण श्रेय (शुज्ज) हे.

सूर्यना अस्त वखते सूर्यनं अर्ध विंव देखातुं होय त्यारथी आरंजीने गायनी खरीशी छमेखी धूळ ज्यांसुधी जांत न थह होय त्यांसुधी गोधूलिक लग्ननो समय होय छे, तथी करीनेज अहीं श्लोकमां "धूलिजिः"एम कह्यं छे. अर्थात् ज्यांसुधी तारा न देखाय त्यांसुधी जाणवुं. जो सूर्य वादळांथी ढंकायेल होय तो प्रपुन्नाट नामनी जेषधिना पत्रनुं मळी जवुं, पक्षीजेना समूहनो कोलाहल थवो तथा तेमनुं पोतपोताना माळा तरफ जवा माटे जत्सुकपणुं ए विगेरे चिह्नोवमे लग्नसमयनो निर्णय करवो. मूळ श्लोकमां "श्रेयो"-शुज्र छे एम कह्यं ते लोककिटिथी कह्यं छे. तथा "हीनवर्णानां" एटले नीच वर्ण ए शब्द सामान्य रीते कह्यो छे, कारण के गदाधर कहे छे के—

"घटिकालग्राजावेऽङ्गीकार्यं गोरजोऽपि विप्रैश्च।"

"धिटका लग्नने अजावे बाह्मणोए गोरज (गोधूलिक) लग्न पण अंगीकार करतुं.' हवे गोधूलिक लग्नमां केटली शुक्ति होवी जोइए ते कहे हे.—

शीतचुतिं षष्टमथाष्टमं च, जङार्धयामौ कुलिकं च हित्वा। विनाऽिष सम्रांशखगानुकूह्यं, गोधूलिकं प्रायहरं वदन्ति ॥ उ४॥

अर्थ-- उठो तथा आठमो चंज, जजा, अर्धयाम अने कुलिकने ठोमीने लग्ननो नवांशक अने नक्त्रनी अनुकूळता न होय तोपण गोधूलिक लग्नने श्रेष्ठ कहे हे.

लग्नश्री उन्ने के श्राठमे चंद्र होय तो ते कन्याना मृत्युने देनार हे तथा "मंगळ पण पहेला के श्राठमा स्थानमां रह्यो होय तो ते पतिना मृत्युने करनार होवाथी तजवा योग्यज हे" एम सारंग कहे हे. अर्थयाम तथा कुलिकने तजवाना लख्या हे, तेथी एवं सूचवन थाय है के गोधू िक लग्नमां गुरु अने शनिवार तजवाना है, कारण के ते दिवसे अनुक्रमे अर्धयाम अने कुलिकनी छत्पत्ति है. (गुरुवारे अर्धयाम अने शनिवारे कुलिक थाय है.) केशवार्क तो आ प्रमाणे कहे है.—

"सार्क शनौ चिरविचित्रशिखण्मिसूनौ, तत्केवलं कुलिकयामदलोपलम्लात्।"

"शनिवारे सूर्य जतां गोधू दिक दाय करतुं, केमके सूर्यास्त पठी कु दिक योग आय छे, तथा गुरुवारे सूर्यास्त पठी करतुं, कारण के ते पहेदां अर्धयाम योग श्राय छे."

मूळमां खग राब्द खख्यों हे तेनो छार्थ यहो थाय है. तेमनी छानुकूळता विना पण एम मूळमां खख्युं हे तोपण क्रांतिसाम्य विगेरे मोटा दोपो छावस्य त्याग करवा योग्य हे. तेने माटे व्यवहारप्रकाशमां कह्युं हे के—

> "क्र्रैर्युतनक्त्रं व्यतिपातं वैधृतिं च संक्रान्तिम् । क्रीणं चन्दं ग्रहण्यशनिगुरुदिनक्रान्तिसाम्यानि ॥ १ ॥ दम्पत्योरष्टमत्रं खग्नात् पष्ठाष्टमं च शीतांशुम् । रिवजीवयोरशुद्धिं विवर्ष्यं गोधूखिकं शुजदम् ॥ २ ॥ गोधूखिकापरिणयने येषां केन्द्रोपगः शुजो न मृतौ । जौमो नोदयनिधने तेषां सौख्यानि नान्येषाम् ॥ ३ ॥"

"कूर ग्रहवमे युक्त नक्षत्र, व्यतिपात, वैभृति, संक्रांति, क्षीण चंष्र, प्रहण नक्षत्र, शिनवार, गुरुवार, क्षांतिसाम्य, लग्नथी स्त्रीपुरुषने आठमुं नक्षत्र, उठो के आठमो चंष्र तथा रिव अने गुरुनी अशुष्टि, आटलांने वर्जीने गोधूलिक लग्न शुजदायक हे. गोधूलिकना विवाहमां जेर्डने केन्ष्रमां शुज ग्रह होय अने मृत्यु (०) स्थानमां शुज ग्रह न रह्यो होय, तथा उदय (१) अने निधन (०) स्थानमां मंगळ रहेलो न होय तेमने सुल हो, वीजाने नथी."

मूळ श्लोकमां ''प्रायहरं'' एटले बीजा दोषोए आ (गोधू लिक) जीती शकाय तेवुं नथी, माटे प्रधान-श्रेष्ठ हे. ते विषे सारंग कहे हे के—

> "जामित्रं न विचिन्तयेद्वहयुतं खग्नाह्यशङ्कात्तथा, नो वेधं न कुवासरं न च गतं नागामि जं पाप्मिजः। नो होरां न नवांशकं न च खगानमूर्त्त्यादिजावस्थितान्, हित्वा चन्द्रमसं षमष्टमगतं गोधृद्धिकं शस्यते॥ १॥"

"जामित्र (७) स्थाननो विंचार करवो नहीं, लग्नथी तथा चंज्यी प्रहवने युक्तपणुं

१ जामित्र स्थान शुद्ध छे के अशुद्ध छे ? तेनो विचार करवी नहीं. ए रीते सर्वत्र जाणवुं.

विचारवं नहीं, वेधनो विचार करवो नहीं, अशुज दिवसनो विचार करवो नहीं, कूर ग्रह साथे रहेला अने रहेशे एवा नक्त्रनो विचार करवो नहीं, होरानो विचार करवो नहीं, नवांशकनो विचार करवो नहीं, तथा मूर्ति (१०) आदिक स्थानोमां रहेला ग्रहोनो पण विचार करवो नहीं. मात्र ठिंडा अने आठमा चंदनो त्याग करवाथीज गोधूलिक लग्न प्रशस्य-शुज ठे."

आ श्लोकमां जो के उठा आठमा चंद्रनो त्यागज अपेक्तित हे, बीजुं कांइ पण अपे-क्तित नथी एम कहां हे, तोपण आ प्रमाणे जाणवुं.—गोधूलिक लग्न लीधुं होय तो-पण विवाहनुंज नक्त्र अने तेनी शुद्धि होवी जोइए, तथा वर्ष, मास, पक्ष अने दिव-सनी शुद्धि पण अवस्य होवी जोइए.

श्रहीं कोइ शंका करे के—जो बीजा दोषोए नहीं जीती शकाय एवं होवाश्री गोधू खिक खग्न प्रधान हे तो पूर्वे कहेखां खग्नादिकनां फळोनुं श्रप्रधानपणुं थहे ? छत्तर—खरी बात हे, केमके छद्धंघन न करी शकाय एवा कुळ श्रने देशना धर्मने श्रमुसरवाश्री कोइ बार ते खग्नादिक फळोने श्रप्रधानपणानी प्राप्ति श्रावे तोपण ते श्रिनेष्ट नश्री—इष्टज हे. कह्यं हे के—

"न शास्त्रदृष्ट्या विष्ठुषां कदाचिष्ठद्वंघनीयाः कुलदेशधर्माः । देशे गतोऽप्येकविलोचनानां, निमीह्य नेत्रं निवसेन्मनीषी ॥ १ ॥"

"विद्यानोए कोइ वखत पण शास्त्रनी दृष्टिने खीधे कुळ, देश अने धर्मनुं छक्षंघन करवुं नहीं, केमके माह्यो माणस एक नेत्रवाळाना देशमां गयो होय तो तेणे त्यां पोतानुं एक नेत्र बंध करीनेज वसवुं जोइए."

श्रा रीते श्रमुक कुळ श्रने देशमां गोधूलिकनुंज प्रधानपणुं हे, परंतु लग्नादिकना फळनुं प्रधानपणुं नथी, तेथी कांइ पण दोष श्रावतो नथी. वळी श्रमुक कुळ श्रने देशना धर्म मात्र गोधूलिकनाज विषयवाळा हे एम नथी, परंतु ग्रहगोचरादिक विषय-वाळा पण हे. जेमके—विवाहमां नागरलोको ह्या श्राह्मा विगरेने गणता (श्रपेका राखता) नथी, जार्गवना वंशजोमां जाइपद शुक्ल दशमने दिवसेज विवाह करवानी रीत हे, श्रा कुळधर्म हे. देशधर्मों श्रा प्रमाणे हे. जेमके—गौम देशना लोको गोचरक्षे श्रेष्ठ एवा सूर्यनी श्रपेका राखे हे श्राह्म वर्गे करीने श्रपेका करे हे. दिश्यना लोको गुरुने श्रष्टक वर्गे करीने श्रपेका करे हे. दिश्यना लोको गुरुने गोचरवमें करीने श्रेष्ठ इहे हे श्राह्म वर्गे करीने तथा गोचरवमें

करीने श्रेष्ठ इन्ने हे. मालव देशना लोकोने गोचर प्रमाणरूप नथी, परंतु श्रष्टक वर्गज प्रमाण हे. बीजा देशोमां गोचर तथा श्रष्टक वर्ग बन्ने प्रमाण हे.

हवे पूर्वे कहेला जाया लग्ननी जेवाज बळवाळा ध्रुव लग्नने कहे छे.—

स्युदींक्तास्थापनादीनि ध्रुवचके तिरःस्थिते।

कर्ध्वे खातध्वजोन्नायप्रायाणि प्रायशः श्रिये ॥ ७५ ॥

अर्थ—ध्रवचक तिरहं रहां होय त्यारे दीका, स्थापना विगेरे कार्यो शुजदायक है, अने खात, ध्वजारोपण विगेरे छंचाइ जेवां कार्यो ध्रवचक कध्व रहां होय त्यारे प्राये करीने कह्याणने माटे है.

स्थापना एटले प्रतिष्ठाः आदि शब्दश्री बीजुं पण स्थिर कर्म जाणवुं. तिरः एटले तिरहं. कथ्वें एटले जंचुं रहे उते. ध्रवनी चोतरफ रहेलुं श्रंखलक (चक) माबुं जमतुं जमतुं एक रात्रि दिवसमां बे वार तिरहुं अने वे वार कथ्वे आवे हे. तेथी करीने—

"तिर्थगूर्ध्वं स्थिते चक्रे तत्प्रान्तगततारके। समसूत्रे यदा स्थातां ध्रवखग्नं जवेत्तदा॥१॥"

"ध्रवचक तिरबं अने कर्ध्व रहे अते ज्यारे तेना छेना पर रहेला वे तारार्छ सरखी लाइनमां आवे त्यारे ध्रव लग्न आय हे."

ते ध्रुव खग्नना समयनो अतिसूहम दृष्टिए करीने अथवा ध्रुवने फरवाना यंत्रवमे करीने निश्चय करवो, अने स्थूळ दृष्टिए तो पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे निर्णय कर्यो हे.— "खद्ए महाधणिष्ठाण छहुं अणुराहिकत्ति ध्रुव तिरिक्तं त्ति"

"मघा अने धनिष्ठानो जदय होय त्यारे ध्रव कर्ध्व होय हे, अने अनुराधा तथा कृतिकानो जदय होय त्यारे ध्रव तिरडं होय हे."

परंतु नक्षत्रनं जदयप्रमाण बराबर स्पष्ट रीते दृष्टिगोचर यह शकतुं नथी, तेथी मस्तक पर (माथे-स्थाकाशना मध्यमां) रहेला नक्षत्रनी अपेक्षाए ध्रुव लग्ननं स्वरूप कहे-वाय हो, ते स्था प्रमाणे—स्थिषा स्थने श्रवण नक्षत्र मस्तक परश्री जतरतां होय त्यारे ध्रुव तिरजं होय हे, तथा जरणी स्थने विशाला नक्षत्र मस्तक परश्री जतरतां होय त्यारे ध्रुव कर्ध्व होय हे, तथा —

"स्यादूर्ध्वो मृगकर्के तु समस्तिर्यक् तुलाजयोः। यथा तथा तु शेषेषु सन्नेषु स्याध्धवं ध्रवः॥ १॥"

"मकर श्रने कर्क राशिनुं खग्न होय त्यारे ध्रुव कर्ध्व होय हे, तथा तुखा अने मेव राशिनुं खग्न होय त्यारे ते तिरद्धं होय हे, श्रने बीजां खग्नो होय त्यारे ते अवस्य गमे ते रीते—अनियमित होय हे." "ते ध्रुव लग्ननो समय ते काळे जे लग्ननो उदय होय तेना नवांशक जेटलोज होय हे," एम केटलाक कहे हे. वळी बीजा कहे हे के → "ते नवांशकनो मात्र मध्यना त्रिजाग जेटलोज होय हे." आ ध्रुव लग्ननुं तिरहापणुं तथा कध्वेपणुं रात्रिने आश्रीनेज कहे-वाय हे, परंतु दिवसने आश्रीने कहेवातुं नश्री, कारण के दिवसे तो ते सूर्यनां किरणोश्री लुप्त थाय हे.

मूळ श्लोकमां "प्रायाणि" एम प्राय शब्द लखेलो होवाथी यात्रादिक कार्य पण प्रहण

करबुं. ते मादे कहां हे के-

"पृष्ठतो वा रविं कृत्वा गच्छेद्दक्षिणगं तथा । जत्तानपादपुत्रस्य दोखरे चोर्ध्वसंस्थिते ॥ १ ॥"

"जत्तानपादना पुत्र (ध्रुव) नुं शेखर (मस्तक) कर्ध्व रहेखुं होय त्यारे सूर्यने पाठळ करीने श्रयवा दक्षिण (जमणो) करीने प्रयाण करबुं."

हर्षप्रकाशमां पण ध्रव खग्न कहां हे ते आ प्रमाणे ---

"जइ पुण तुरियं कजं हिवज लग्गं न लप्रए सुर्छ । ता जायाध्वलग्गं गहिश्चवं सयलकजेसु ॥ १ ॥"

''जे कार्य जलदी करवा लायक होय अने शुरू लग्न नळतुं होय तो समग्र कार्यमां जाया लग्न अने ध्रुव लग्न ग्रहण करवां.''

हवे आहीं प्रसंगोपात्त राजादिकना अजिषेकनुं मुहूर्त कहे हे .--

श्रजिषिको महीपादः श्रुतिज्येष्टा खघुधुवैः।

मृगानुराधापौष्णेश्च चिरं शास्ति वसुन्धराम् ॥ ७६ ॥

श्चर्य-श्रवण, ज्येष्ठा, लघु (पुष्य, श्चित्रिजित्, हस्त, श्चश्चिनी), ध्रुव (रोहिणी, श्रुण जत्तरा), मृगशिर, श्चनुराधा श्चने रेवती नक्षत्रमां राजाने श्वजिषेक कर्यो होय तो ते चिर काळ सुधी पृथ्वीनुं राज्य करे हे. श्चा तेर नक्षत्रो श्रजिषेकनां हे.

सबलत्वे जनमदशालक्षेशानां कुजार्कयोरि च।

राज्ञां शुनोऽनिषेकः सितगुरुशशिनां च वेपुरुषे ॥ 99 ॥

श्चर्य-जन्मेश, दशेश, लग्नेश, मंगळ श्चने सूर्य श्चाटला महोनुं सबळपणुं होय, तथा शुक्र, गुरु श्चने चंद्रनुं विपुलपणुं होय त्यारे राजानो श्वजिपेक करवो शुज हे.

जन्मवलते जे राशिमां चंद्र होय ते राशिनो ईश जन्मेश कहेवाय हे, अजिपेकने यलते जे ग्रहनी दशा होय ते दशेश कहेवाय हे, तथा जन्मवलते लग्ननो जे पित होय ते लग्नेश कहेवाय है. विपुलपणुं एटले घणा दिवसथी छदय अथेलो होवाथी मोटां विंबनुं होवापणुं तथा सारां-घणां किरणवाळापणुं.

त्र्त्ये स्वस्तित्रकोणो १ च १ एह ३ मित्रई ४ गैर्थहैः। अजिषेको न नीचारिकेत्रगास्तिमतैः पुनः॥ ७०॥

अर्थ-पोताना त्रिकोणमां, पोताना उच स्थानमां, पोताना स्थानमां अने पोताना मित्रना स्थानमां ग्रहो रहेला होय त्यारे अजिषेक करवो ए ज्विजिशाबादीने माटे हे (शुज हे), परंतु ग्रहो नीच के शहना स्थानमां रहेला होय के अल पामेला होय तो ते शुज नथी.

अहीं "स्वस्व" पोतपोतानुं" ए शब्द त्रिकोण विगेरे चारे शब्दमां जोमवो. आ बहो आवी रीतना होय तोज अजिपेक करवो श्रेष्ठ हे. ते विषे कहां हे के—

"सुहृब्रिकोणस्वगृहोच्चसंस्थाः, श्रियं च कीर्ति च दिशन्ति खेटाः । श्रस्तंगताः शत्रुजनीचगा वा, जयाय शोकाय जवन्ति राहाम् ॥ १ ॥"

"मित्र, त्रिकोण, स्वगृह अने जच्च स्थानमां रहेला ग्रहो सहमीने तथा कीर्तिने आपे हे, अने अस्त पामेखा होय के शत्रुना स्थानमां रह्या होय के नीच स्थानमां रह्या होय तो ते राजाने जयने माटे तथा शोकने माटे याय हे."

मूळ श्लोकमां (विकोण विगेरेमां रहेक्षा) "प्रहो होय" एम; सामान्य रीते कहां छे तोपण विशेषे करीने गुरु, चंद्र श्चने शुक्र, तथा जन्मवार, दशानो वार, क्षप्तेशनो वार श्चने दिनवार प्रहण करवा ते माटे लक्ष कहे छे के—

> "विशेषाज्जन्मलग्नेशदशेशदिनजर्तृषु । यसात्तसात्प्रयत्नेन सौस्थ्यमेषां प्रकटपयेत् ॥ १ ॥"

"जे कारण माटे जन्मनो स्वामी, लग्ननो स्वामी, दशानो स्वामी अने दिननो स्वामी (अजिषेकने विषे) विशेष जपयोगी हे ते कारण माटे ते बहोनुं सुरूपणुं (सारां स्थानोमां रहेवापणुं) प्रयत्नवके करवुं."

ताराबक्षे शशिबक्षे शुक्षौ तिथिवारधिष्णयोगानाम् । त्रिषमायस्थैः पापैः सौम्येश्वयायत्रिकोणकेन्द्रगतैः ॥ ७ए ॥

अर्थ—तारानुं बळ अने चंदनुं बळ होय त्यारे तथा तिथि, वार, नक्त्र अने योगनी शुद्धि होय त्यारे, त्रीजे, उन्ने अने अगीयारमे स्थाने पाप यहो रह्या होय, अने सौम्य प्रहो त्रीजे, अगीयारमे, त्रिकोणमां अने केन्द्रमां रह्या होय त्यारे राज्यात्रिषेक करवो शुन्न है.

तारा श्चने चंद्र ए वन्नेनुं बळ राज्याजिषेकमां श्चवस्य ग्रहण करतुं, तेथी करीने शुक्स-भार ५१ पह तथा कृष्णपहनी अपेदाए बन्नेनुं वळ दोवुं एवो अर्थ करवो नहीं. दग्धा अने रिका विगरेने त्याग करवाथी तिथिनी शुद्धि कहेवाय हे, सौम्य वार दोवाथी वारनी शुद्धि आय हे, क्रूर यहे आक्रमण करेद्धा नद्द्यत्र विगरेनो त्याग करवाथी नद्द्यत्री शुद्धि जाणवी, तथा छुष्ट योग अने छपयोगने वर्जयाथी योगनी शुद्धि थाय हे. "त्र्याय"— "त्रीजे, हुछे" अहीं छपत्रकण्यी धन (बीजुं) स्थान पण सौम्य यहोवकेज सहित होवुं जोइए. सामर्थ्यथी एम पण जणाय हे के—आहमुं अने बारमुं ए वे स्थान शून्य होय तोज ते सारां हे, कारण के ते वे स्थानोमां शुज के अशुज कोइ पण यह रह्यो होय तो ते अनिष्ट आपनारज हे.

जन्मक्तीं छुपचयने स्थिरेऽय शीर्षोद्येऽयवा जवने । सौम्यैर्विलोकितयुते न तु पापैर्जूपमजिषिश्चेत् ॥ ०० ॥

अर्थ-जन्मनी राशिष्ठी जपचयस्थानमां, अथवा स्थिर लग्नमां, अथवा शीर्षोदयी (माथेष्ठी जदय पामनार) लग्नमां, अने ते लग्न सौम्य शहोए जोयेल तथा युक्त होय, पण क्रूर ग्रहोए इष्ट के युक्त न होय तेवा लग्नमां राजानो अत्रिपेक करवो शुज हे.

जे पुरुषने श्रानिषेक करवानो होय तेनी जन्मनी राशिशी छपचयस्थानमां रहेखुं खग्न होय, श्राथवा स्थिर राशिनुं खग्न होय, श्राथवा शिषोंदयी राशिवाळुं खग्न होय. "न तु पापैः" एटखे के ऋर ग्रहोए जोयख श्राथवा युक्त न होय.

यमार्कयोक्ष्या ३ य ११ गयोर्छरौ तु, सुखा ४ म्बर १० स्थे नृपतिः स्थिरश्रीः। यद्वा त्रिकोणोए- ५दयगे १सुरेज्ये, शुक्रे नजः १०स्थे क्वितिजे रिपु ६ स्थे॥७१॥

अर्थ—शिन अने सूर्य त्रीजे के अगीयारमे स्थाने रह्या होय, अने गुरु चोथे के दशमें स्थाने रह्यों होय तो ते (राज्याजिषिक) राजानी खदमी स्थिर थाय हो, अथवा तो गुरु नवमा, पांचमा के पहेखा स्थानमां रह्यों होय, शुक दशमा स्थानमां होय अने मंगळ हो स्थाने होय तोपण ते राजा स्थिर खदमीवाळो थाय हे. अहीं यमनो अर्थ शिन हे.

श्रितिषक्तो बलीयोजिर्घहैः केन्डित्रिकोणगैः। कूरः पापैः शुक्रैः सौम्यो मिश्रैः साधारणो जवेत्॥ एर ॥

अर्थ—केन्द्र अने त्रिकोणमां रहेला बळवान् ऋर महोए अतिषेक करायेलो राजा कर याय हे, तेवाज शुज महोए करीने सौम्य अने मिश्र महोए करीने साधारण याय हे.

जो त्रिकीण अने केन्समां रहेला बळवान् यहो सर्वे क्रूर होय तो राजा क्रूर थाय छे, सर्वे शुन्न यहो होय तो राजा सौम्य थाय छे, अने जो मिश्र होय एटले के केट-लाक यहो क्रूर होय अने केटलाक सौम्य होय तो साधारण एटले अत्यंत क्रूर के सौम्य न थाय. वळी "विधुगुरुशुकैं। सार्कें।" आ श्लोक जे उपनयनना अधिकारमां कह्यों छे ते अहीं पण जाणवो.

हवे अन्निषेकमां मोटा दोषने कहे हे.-

चन्डे सौम्येऽपि वाऽन्यस्मिन् रिपु ६ रन्ध्र ए स्थिते यहैः। क्रुरैर्विलोकिते मृत्युरजिषिक्तस्य निश्चितः॥ ए३॥

श्चर्य—चंद्र श्रथवा बीजो कोइ पए सौम्य ग्रह उठे के आठमे स्थाने रह्यो होय श्वने तेना पर ऋर ग्रहोनी पूर्ण दृष्टि पमती होय ते वखते श्वित्रिषेक करेखा राजानुं श्रवश्य मरण थाय हे. श्वहीं "विद्योकिते" एटखे पुष्ट (पूर्ण) दृष्टिए जोयेखो एवो श्वर्थ है.

श्वित्रिषेकनी वेळाए तनु (१) विगेरे स्थानोमां पाप यहो रहेखा होय तेनं फळ कहे बे.-रोगी तनु १ स्थैरधनो धनाश्रन्त्यगेर्डःखी च पापैर्नृपतिस्त्रिकोण ए-५ गेः । पदच्युतोऽस्ता ९ म्बु ४ गतैर्मृति ७ स्थितेरख्पायुराकाश १० गतै स्त्वकर्मकृत्ण्ध

अर्थ—अजिषेक वसते पाप यहों जो पहेंद्वा स्थानमां रह्या होय तो ते राजा रोगी रहे हे, बीजा अने बारमा स्थानमां रह्या होय तो निर्धन याय हे, त्रिकोण (ए-ए) मां रह्या होय तो छःखी याय हे, सातमें के चोथे रह्या होय तो पद प्रष्ट (राज्य प्रष्ट) थाय हे, आहमें रह्या होय तो अहप आयुष्यवाहों थाय हे, अने दशमा स्थानमां रह्या होय तो ते अकर्मकर थाय हे. अकर्मकर एटले अकिंचित्कर अर्थात् उद्यम रहित थाय हे.

इति वक्तव्यता येयं जूषाबस्याजिषेचने । श्राचार्यस्याजिषेकेऽपि सा सर्वाप्यनुवर्तते ॥ ए५ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे राजाना अतिषेकमां जे आ वक्तव्यता (व्यवस्था) कही हे ते सर्वे आचार्यना अतिषेकमां पण जाणवी.

श्लोकमां श्रिप शब्द होवाश्री बीजा पण (जपाध्यायादिक) पदना स्थापनने विषे पण श्रा व्यवस्था जाणवी, तेथी करीने राज्याजिषेक श्रिने सूरिपदादिकमां श्रा प्रमाणे कुंकळी सिद्ध श्राय हे.—

जत्तम

मध्यम

```
रिव | ३-११ .

चंड | १-२-३-४-५-१०-११ | ६-५-१२ | ६-५-१२ | १-२-४-५-१०-१२ | १-२-४-५-५-१०-१२ | १-२-४-५-५-१०-१२ | १-२-४-१०-१२ | १-२-३-४-५-१०-१२ | १-२-४-१२ | १-२-४-१२ | १-२-४-१२ | १-२-४-१२ | १-२-४-१२ | १-२-४-१२ | १-२-४-५-१२ | १-२-४-५-१२ | १-२-४-५-१२ | १-२-४-५-१२ | १-२-४-५-१२ | १-२-४-५-१२ |
```

दैवज्ञवञ्चलमां विशेष ए हे जे.-

''राजयोगाः खयोगाश्च चन्द्रयोगास्तथायुपः । सर्वेऽप्यत्र विकडप्याः स्युर्वास्तुलन्नगुणाश्च ये ॥ १ ॥"

"राजयोगो, खयोगो, चंजयोगो तथा आयुष्यना योगो अने वळी जे वास्तु खग्नना गुणो हे ते सर्वे अहीं विचारवा—प्रहण करवा," एटले के पूर्वे कहेला राजयोगो, खयोगो एटले सूर्यने बीजा प्रहो साथे जे संयोग थवो ते खयोगो, चंजने बीजा प्रहो साथे जे संयोग थवो ते चंजयोगो कहेवाय हे, आयुष्यना योगो एटले पूर्वे जे अरिष्ट योगो कहेला हे तेमने नाश करनारा जे योगो हे तेले आयुष्यने हितकारक होवाथी आयुष्यना योगो कहेवाय हे. आ सर्वेनं स्वरूप जातकथी जाणवं. अत्र एटले अजिषेकना खन्नमां विचारवा. वास्तु लग्नना गुणो पूर्वे कहेला हे ते जाणवा.

वळी सर्व घहोना बळे करीने युक्त एवं खग्न न मळे तो सर्वे कार्योमां आ प्रमाणे जाणवं.—

> "पञ्चितः शस्यते खग्नं ग्रहैर्बखसमन्वितः। चतुर्जिरपि चेत्केन्द्रे त्रिकोणे वा गुरुर्जुगुः॥ १॥"

"बळे करीने युक्त एवा पांच महोए करीने लग्न वलाएवा लायक हे. श्रथवा जो केंद्रमां के त्रिकोएमां गुरु श्रने शुक्र होय तो बळे करीने युक्त एवा चार महोए करीने पए ते लग्न प्रशस्य हे."

अहीं "पांच ग्रहोए करीने" एम कहां हे तोपण आ प्रमाणे विशेष जाणवो.—
गुरु, सूर्य अने चंड ए त्रणमांथी एकनुं पण वळ न होय अने वीजा पांच वळवान् होय
तोपण ते सन्न आदर करातुं नथी, एटसे प्रशस्य नथी एम रत्नमासाजाष्यमां कहां
हे. वळी केटसाएक कहे हे के—

''त्रयः सौम्यग्रहा यत्र लग्ने स्युर्वलयत्तराः । बलवत्तदपि क्षेयं रोषेर्हीनवलैरपि ॥ १ ॥"

"जे खग्नमां त्रण सौम्य यहो श्रत्यंत बळवान् होय ते खग्न पण बीजा यहो हीन बळवाळा ठतां पण बळवान् ठे एम जाणवुं."

॥ इति एकादशं मिश्रदारम् ॥ ११

हवे समय ग्रंथना अर्थनुं समर्थन करे हे.— इत्युक्तखेटबलशालिनि दोषमुक्ते, लग्ने शुनैश्च शकुनैः शशिनः प्रवाहे। कार्याणि जूमिजलतत्त्वगतौ कृतानि, निर्देजमाज्युद्दिकीं प्रथयन्ति लक्षीम्॥ ए६॥

श्चर्य—आ प्रमाणे कहेला ग्रहोना बळे करीने शोजता अने दोपे करीने रहित एवा लग्नने विषे शुज्ज शकुन जोइने चंद्र नामी वहेती होय त्यारे तेमां पण पृथ्वी तत्त्व के जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे (तेवा समये) करेलां कार्यो दंज रहित अन्युदयनी लक्षीने विस्तारे हे.

खेऽदिन्त—आकाशमां गित करे ते खेद कहेवाय हे, अहीं अद् धातुयकी अच् प्रत्यय थयो हे, अने "तत्पुरुषे कृति॰" ए सूत्रथी सप्तमी विज्ञिक्तिनो अलुक् अवाधी खेट शब्द सिद्ध थयो हे. खेट एटखे प्रहो, तेमनुं बळ. आम कहेवाथी तिथि विगेरेनुं बळ पण जाण्वुं. दोषमुक्ते एटखे मोटा दोष रहित, कारण के सर्वथा निर्दोष खग्न घणा दिवसोए करीने पण मळी शकतुं नथी, तेथी थोमा दोषवाळुं अने घणा गुणवाळुं खग्न प्रहण करीने कार्यो करवां, परंतु सर्वथा निर्दोष खग्न आवशे त्यारे कार्य करशुं एम धारीने घणो विलंब करवो नहीं, कारण के धन, यौवन अने आयुष्यनी स्थिरता हे नहीं. एवो अहीं अनिप्राय हे. कहां हे के—

"यसादशेषगु एसंपदहो जिरहपै हीं राविदाऽपि गणुकेन न खन्यतेऽत्र ।

तसादनहपगुणसंयुतमहपदोषं, लग्नं नियोज्यमिखलेष्वपि मङ्गलेषु ॥ १ ॥"

"जेथी करीने समय गुणनी संपदावाळुं खग्न होराने जाणनार गणक (जोशी) पण थोका दिवसमां मेळवी शकतो नथी तेथी करीने सर्व शुज्न कार्यमां घणा गुणवाळुं तथा श्रहप दोषवाळुं खग्न प्रहण करवुं."

"स्वह्पो नानर्थकृद्दोषो खग्ने बहुगुऐ जवेत् । तोयबिन्छरिव क्तिप्तः समिष्ठे कृष्णवर्त्मनि ॥ २ ॥" "सळगता श्रक्षिमां नालेखा जळना विंडुनी जेम घणा गुणवाळा खन्नने विषे श्रोमो दोष श्रनर्थ करनार श्रतो नश्री."

मूळ श्लोकमां शकुन जोवानुं कह्यं हे ते शकुन जांधिक-जासुद विगेरे हे. शकुननुं प्रधानपणुं व्यवहारप्रकाशमां आ प्रमाणे कह्यं हे.—

"नक्त्रस्य मुहूर्त्तस्य तिथेश्च करणस्य च । चतुर्णामपि चैतेषां शकुनो दण्मनायकः ॥ १ ॥"

"नक्षत्र, मुहूर्त्त, तिथि श्रने करण, ए चारेनो दंमनायक शकुन छे."

श्रहीं शकुनना संबंधमां श्रंगनुं फरकवुं, मननी प्रसन्नता ए विगेरे निमित्त पण जाणवां. श्रा शुन्न शकुनादिके करीने लग्ननी शुद्धिनो निर्णय करी तेवा लग्नने प्रहण करवाश्री कार्य करनारनो जय थाय हे लग्न पण कहे हे के—

> "अपि सर्वगुणोपेतं न ग्राह्यं शकुनं विना । लग्नं यसान्निमित्तानां शकुनो दण्मनायकः ॥ १ ॥"

''लग्न सर्व गुणोए करीने युक्त होय तोपण शकुन विना ते प्रहण करवुं नहीं, कारण के सर्व निमित्तनो दंगनायक शकुन हे.''

मूळ श्लोकमां "शशिनः प्रवाहे-" "चंद्र नामी वहेती होय त्यारे" एम कहां हे. ते विषे श्रध्यात्म शास्त्रमां माबी अने जमणी नासिका अनुक्रमे चंद्र अने सूर्य नामनी हे, तेथी करीने—

"सार्ध घटी घरं नािकरेकेकार्को दया घहेत्।
अरघट्टघटी च्रान्तिन्याया द्वाख्योः पुनः पुनः ॥ १ ॥
इातानि तत्र जायन्ते निःश्वासो ह्वासयोर्नव।
खखषट्कुकरैः ११६०० सङ्क्षाऽहोरात्रे सकले पुनः ॥ २ ॥
षट्त्रिंदा जुरुवणीनां या वेला जणने जवेत्।
सा वेला मरुतो नाङ्या नाङ्यां सञ्चरतो लगेत्॥ ३ ॥"

"जेम अरघट्ट (रेंट) नी घनीओं अनुक्रमे एक पठी एक फर्या करे हे तेम आ चंद्र अने सूर्य नामीमांनी एक एक (दरेक) नामी सूर्योदयथी आरंत्रीने अही अही घमी बहेती रहे हे. (एटले सूर्योदयने आरंत्रीने अही घमी सुधी चंद्र नामी वहे हे, पठीनी अही घमी सुधी सूर्य नामी वहे हे, पठीनी अही घमी चंद्र नामी वहे हे विगेरे.) ते दरेक नामीमां नवसो छङ्कास निःश्वास थाय हे, तेथी करीने एक रात्रि दिवसमां धइने कुल ११६०० छङ्कास निःश्वास थाय हे. हत्रीश गुरु अक्तरो बोलतां जेटलो वलत खागे हे तेटलो वलत एक नामीमांथी बीजी नामीमां संचार करता वायुने खागे हे.

(एटले के एक नामीमांथी बीजी नामीमां जतां वायुने तेटली वार लागे हे, श्रर्थात् तेटलो वखत बन्ने नासिकामां समान वायु रहे हे.)"

तेमां वाम (माबी) नासिका पेसता वायुए करीने पूर्ण थाय त्यारे सर्वे शुज कार्यनो धारंज करवो. कहां हे के—

"खाजे दानेऽध्ययने गुरुदेवाज्यर्चने विषविनाशे। पुरमन्दिरप्रवेशे गमागमादौ शुजा वामा॥ १॥"

"लाजमां, दानमां, जणवामां, गुरु अने देवनी पूजामां, विष खतारवामां, नगर अने घरमां प्रवेश करती वखते तथा जवा आववामां वाम नामी शुज हे." तथा—

"पूजाजन्यार्जनोदाहे छुर्गाजिसरिदाकमे । गमागमे जीविते च गृहकेत्रादिसंग्रहे ॥ १ ॥ क्रये विक्रयणे दृष्टौ सेवायां विदिषो जये । विद्यापद्याजिषेकादौ सुजेऽर्थे च सुजः शशी ॥ १ ॥"

"पूजामां, जन्य उपार्जन करवामां, विवाहमां, तथा किह्यो, पर्वत अने नदीने उद्धं-घन करवामां, जवा आववामां, जीवितमां, घर केत्र विगेरे द्वेवामां, क्रथ विकयमां, दृष्टिमां, सेवामां (नोकरी रहेवामां), रात्रुनो जय करवामां, विद्याना आरंजमां अने राज्याजिषेकमां ए विगेरे शुज कार्यमां चंड एटले चंड नामी (वाम नामी) शुज हे."

मूळ श्लोकमां "ऋमिजखतत्त्वगतौ–" "पृथ्वी तत्त्व अने जळ तत्त्वनी गति होया त्यारे" एम कह्युं हो. ते विषे कह्युं हो के—

"वायोर्वह्नेरपां पृथ्व्या व्योमसत्त्वं वहेत्क्रमात्। वहन्त्योरुजयोर्नाड्योर्जातव्योऽयं क्रमः सदा॥१॥"

"वहन यह (चायती) वन्ने नामीमां वायु, अग्नि, जळ, पृथ्वी अने आकाशनुं तत्त्व अनुक्रमे वहे छे-चाले छे. आवो कम निरंतर जाणवो."

ए पांचे तत्त्वोनो प्रवाह (गति-वहें वं ते) आ प्रमाणे हे ---

"कर्ध्वं वहिरघस्तोयं तिरश्चीनः समीरणः।

पृथ्वी मध्यपुटे व्योम सर्वगं वहते पुनः ॥ १ ॥"

"श्रिप्तितत्त्व णंचे वहे हो, जळतत्त्व नीचे वहे हो, वायु तत्त्व तिरहं वहे हो, पृथ्वी तत्त्व मध्य पुरमां वहे हो स्राने स्थाकाश तत्त्व सर्वन्यापक श्रश्ने वहे हो."

तेनुं प्रमाण आ रीते हे ---

''पृथ्व्याः पतानि पञ्चाश ५० चत्वारिंश ५० त्तथाम्त्रसः । स्रश्लेखेश ३० तथा वायोविंशति २० निजसो दश १०॥ १॥'' "पृथ्वी तत्त्वनुं प्रमाण पळ ५० हे, जळ तत्त्वनुं ४० हे, अग्निनुं ३०, वायुनुं २० अने आकाश तत्त्वनुं प्रमाण १० पळनुं हे."

आ रीते एक एक नाकी नुं प्रमाण १५० पळो थाय हे. आ प्रमाणे वाम नाकी वहेती होय त्यारे पण ज्यारे पृथ्वी तत्त्व के जळ तत्त्व होय त्यारे शुज कार्य करवुं, परंतु अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्वमां करवुं नहीं. कहुं हे के—

> "तत्त्वाच्यां ज्ञालाच्यां स्याह्यान्ते कार्ये फलोन्नतिः। दीप्तास्थिरादिके कृत्ये तेजोवाय्वम्वरैः शुनम् ॥ १ ॥ पृथ्व्यप्तेजोमरुद्ध्योमतत्त्वानां चिह्नमुच्यते। स्थाद्ये स्थेर्ये स्वचित्तस्य शैत्यकामक्यौ परे॥ १ ॥ तृतीये कोपसंतापौ तुर्ये चञ्चलता पुनः। पञ्चमे शून्यतेव स्याद्यवा धर्मवासना॥ ३ ॥"

"पृथ्वी अने जळ तत्त्ववमे शांत कार्य कर्यु होय तो फळनी छन्नति आय हे. (शांत कार्यमां आ वे तत्त्व शुज हे.) दीप्त, अस्थिर विगेरे कार्य अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्ववमे करत्रुं शुज हे. हवे पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पांच तत्त्वोतुं चिह्न कहे हे—पहेखा पृथ्वी तत्त्वमां कार्य करवाथी पोताना चित्तनी स्थिरता आय हे, बीजा जळ तत्त्वमां शीतळता अने कामदेवनो श्य आय हे, त्रीजा तेज तत्त्वमां क्रोध अने संताप आय हे, चोथा वायु तत्त्वमां मननी चंचळता आय हे तथा पांचमा आकाश तत्त्वमां मननी शून्यताज थाय हे अथवा तो धर्मनी वासना आय हे."

तथा---

"श्रुत्योरङ्गुष्ठको मध्याङ्गुट्यो नासापुट६ये।
सक्वणोः प्रान्त्यकोपानत्याङ्गुट्वी शेषे दगन्तयोः॥ १॥
न्यत्यान्तस्तु पृथिव्यादितत्त्वज्ञानं जवेत् कमात्।
पीत १ श्वेता १ रुण ३ श्यामे ४ विन्छिजिनिरपाधि खम्॥ १॥
पीतः कार्यस्य संसिद्धिं बिन्छः श्वेतः सुखं पुनः।
जयं सन्ध्यारुणो ब्र्ते हानिं जुङ्गसमद्युतिः॥ ३॥
जीवितव्ये जये जाने सस्योत्पत्तौ च कर्षणे।
पुत्रार्थे युद्धप्रश्ने च गमनागमने तथा॥ ४॥
पृथ्व्यसत्त्वे शुने स्थातां विह्नवातौ च नो शुनौ।
श्रर्थसिद्धः स्थिरोर्व्यां तु शीधमम्जसि निर्दिशेत्॥ ५॥"

''बे कानमां वे खंगुठा, वे नासापुटमां वे मध्य (वचली) आंगळी, वे उंछ उपर

(हमपचीमां) टचली तथा तेनी पासेनी ए बबे आंगळी तथा नेत्रना प्रांत जागमां शेष (अंगुठा पासेनी) वे आंगळी उं राखीने अंतः करणमां ध्यान करवाथी पृथ्व्यादिक तत्त्वो जं कान अनुक्रमे आ प्रमाणे थाय हे.—पीत—पीळो—वर्ण जासे तो पृथ्वी तत्त्व, श्वेत जासे तो जळ तत्त्व, अरुण—रातोजासे तो तेज तत्त्व, श्याम जासे तो वायु तत्त्व अने विंड एटले कांइ पण न जासे तो जपाधि रहित आकाश तत्त्व हे एम जाणवुं. पीतं वर्ण कार्यनी सिद्धिने कहे हे, बिंड तथा श्वेत वर्ण सुखने कहे हे, संध्या जेवो रातो वर्ण जयने कहे हे, जमरा सरखी कांतिवाळो स्थाम वर्ण हानिने कहे हे. जीवितमां, जयमां, लाजमां, धान्यनी जत्पित्तमां, खेतीमां, पुत्रने अर्थे, युष्ट्रना प्रक्षमां तथा जवा आववामां पृथ्वी अने जळ तत्त्व शुज हे, आग्न अने वायु तत्त्व शुज नथी. पृथ्वी तत्त्वमां कार्य करवाथी अर्थनी सिद्ध स्थिर थाय हे, अने जळ तत्त्वमां कार्य जलदी सिद्ध थाय हे, एम जाणवुं.

वळी---

"षोमशाङ्कुलिका पृथ्वी १ जलं तु घादशाङ्कुलम् २ । तेजश्राष्टाङ्कुलं ३ वायुश्चतुरङ्कुलको मतः ४ ॥ १॥ नैकमप्यङ्कुलं व्योम ए वहतीति विनिर्णयः ।"

" पृथ्वी तत्त्व सोळ आंगळ वहे हे ?, जळ तत्त्व बार आंगळ वहे हे २, तेज तत्त्व आठ आंगळ वहे हे ३, वायु तत्त्व चार आंगळ वहे हे ४ अने आकाश तत्त्व एक आंगळ पण वहेतुं नथी. ए प्रमाणे निर्णय करेलो हे." एटले के ज्यारे नासिकानो वायु नासिकानी बहार वहेतो हतो सोळ आंगळ सुधी आकाशने व्यापे हे त्यारे पृथ्वी तत्त्व हे एम सर्वत्र जाणवुं. अथवा तो आ वाक्यनी बीजी रीते पण व्याख्या थइ शके हे, ते आ प्रमाणे—दोष रहित लग्नने विषे पृथ्वी अने जळ तत्त्वनी गति होय त्यारे एवो संबंध करवो, एटले के शुद्ध लग्न होय तोपण ज्यारे पृथ्वी के जळ तत्त्व होय त्यारे शुज कार्य करवुं, परंतु अग्नि, वायु के आकाश तत्त्वमां करवुं नहीं.

कह्यं हे के-

" पृथ्वी राज्यं १ जलं वित्तं २ विह्निर्हीनें २ समीरणः। जेदगं ४ गगनं दत्ते पञ्चतां ५ सर्वलग्नतः॥ १॥"

"सर्व कार्यना खग्नने विषे पृथ्वी तत्त्व खीधुं होय तो ते राज्यने आपे हे १, जळ तत्त्व धनने आपे हे १, अग्नि तत्त्व हानि करे हे ३, वायु तत्त्व छदेग छपजावे हे ४ अने आकाश तत्त्व मरण आपे हे ५.

श्रा तत्त्वोनी जत्पित्तनो प्रकार श्रा प्रमाणे हे ---

१ पीत वर्ण पृथ्वी तत्त्व छे, तेमां कार्य करवाथी ते कार्य सिद्ध थाय छे एम सर्वत्र जाणवुं. आ॰ ५२

"त्रिंशांशं पश्चधा हन्याहशा १० ष्ट ए पड़ ६ युगा ४ श्वि २ जिः।
जू १ जला २ म्य ३ निल ४ व्योम्नां ५ समर्के जायते मितिः॥ १॥
श्व २ व्थ्य ४ इत ६ वसु ए दशजि १० स्तष्त्रिंशांशकाहतिः।
खा १ निला २ मि ३ जले ४ लाना ५ मोजराशौ मितिः स्मृता ॥ २॥"

"सम राशिमां त्रिंशांशने पांच प्रकारे स्थापीने ते दरेकने अनुक्रमे १०-७-६-४-१ वर्मे गुणवाथी अनुक्रमे पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु अने आकाश तत्त्वनुं प्रमाण थाय हे. तेज रीते विषम राशिमां त्रिंशांशने १-४-६-७-१० वर्मे गुणवाथी अनुक्रमे आकाश, वायु, अग्नि, जळ अने पृथ्वी तत्त्वनुं प्रमाण थाय एम कह्युं हे.

श्रा बे श्लोकनो श्रर्थ श्रा प्रकार हे.— लग्नना पहानो जे त्रीशमो जाग ते त्रिंशांश कहेवाय हे. जेमके मेप लग्नना पहा ११५ हे, तेनो त्रिंशांश पह ए श्रक्र २० श्राव हे. श्रा त्रिंशांशने पांच वार स्थापन करी विषम राशि होवाश्री तेने १-४-६-७-१० वक्षे गुण्वाश्री श्रनुक्रमे श्राकाश विगेरे तत्त्वोनुं मान श्राव हे श्रने सम राशि होय तो १०-६-४-३ वक्षे गुण्वाश्री श्रनुक्रमे पृथ्वी विगेरे तत्त्वोनुं मान श्राव हे. श्रयवा तो जे लग्नना जेटला पह्नो होय ते पह्नोने प्रथम १५ वक्षे जाग देवो. जागमां जे श्राव तेने विषम राशि होय तो श्रनुक्रमे १-१-३-४-५ वक्षे गुण्वाश्री श्राकाश विगेरे तत्त्वोनुं मान श्राव हे, श्रने सम राशि होय तो ५-४-३-१-१ वक्षे गुण्वाश्री श्रनुक्रमे पृथ्वी विगेरे तत्त्वोनुं मान श्राव हे. एम करवाश्री जे शाय हे ते नीचे स्थापनावके स्पष्ट करी बतावे हे.—

मेषमान पळ ११५
त्रिंशांश पळ ७ छ्यहर ३०
छाकाश तत्त्व पळ १५
वायु तत्त्व पळ ३०
छात्र तत्त्व पळ ४५
जळ तत्त्व धभी १
पृथ्वी तत्त्व धभी १ पळ १५
मिछुनमान पळ ३०५
मिछुनमान पळ ३०५
वायु पळ ४०—४०
वायु पळ ४०—४०
वायु पळ ४०—४०
वायु पळ ४०—४०
वायु पळ ४०—४०
वायु पळ ४०—४०

वृषमान पळ २५६
त्रिंशांश पळ ए छाहर ३२
पृथ्वी तत्त्व घमी १ पळ २५ छाहर २०
जळ तत्त्व घमी १-७-१६
तेज तत्त्व पळ ५१-१२
वायु तत्त्व पळ ३४-७
छाकाश तत्त्व पळ १७-४
कर्कमान पळ ३४१
त्रिंशांश पळ ११ छाहर २२
पृथ्वी घमी १-५३-४०
जळ घमी १-७-१२
वायु पळ ४५-२०
छाकाश पळ ११-४८

॥ पश्चमो विमर्शः ॥

सिंहमान पळ ३४२ त्रिंशांश पळ ११ ऋक्रर २४ **आकारा पळ २२**–४० वायु पळ ४५-३६ तेज घर्मी १-७-२४ जळ धकी १–३१–१२ प्रथ्वी घमी १–५४ तुखामान पळ ३३१ त्रिंशांश पळ ११−२ **आकारा पळ २२-**४ वाय पळ धध-ए तेज घर्मी १-६-१२ जळ घरी १-२०-१६ पृथ्वी धर्मी १-५०-२० धनमान पळ ३४१ त्रिंशांश पळ ११–१२ श्राकाश पळ ११-४४ वाय पळ ४५-२० तेज घरी १-७-१२ जळ घरी १-३०-५६ पृथ्वी घसी १-५३-४० कुंजमान पळ १५६ त्रिंशांश पळ ए--३२ श्चाकाश पळ १५–४ वाय पळ ३४-ए तेज पळ ५१-१२ जळ घनी १-७-१६ प्रथ्वी घर्मी १--२५--२०

कन्यामान पळ ३३१ त्रिंशांश पळ ११-२ पृथ्वी धनी १-५०-२० जळ घमी १-१७-१६ तेज घमी १–६–१२ वायु पळ ४४-० **ब्याकारा पळ २२-४** वश्चिकमान पळ ३४२ त्रिंशांश पळ ११–२४ प्रथ्वी घनी १-५४ जळ घमी १-३१-११ तेज घर्मी १–७--२४ वाय पळ ४५-३६ ब्राकाश पळ २२-४० मकरमान पळ ३०५ त्रिंशांश पळ १०--१० पृथ्वी घमी १-४१-४० जळ घनी १-२१-२० तेज घमी १-१ बाय पळ ४०-४० ञ्जाकाश पळ २०−३० मीनमान पळ २२५ त्रिंशांश पळ ५-३० पृथ्वी घमी १–१५ जळ घर्मी १ तेज पळ धए वायु पळ ३० श्राकाश पळ १५

आ रीते दरेक लग्नमां पांच पांच तत्त्वो अनुक्रमे तथा जत्क्रमे होय हे. विशेष ए हे जे—
पृथ्वी अने जळ तत्त्वना पळो पण जो ह वर्गवमे शुक्ष के पांच वर्गवमे शुक्ष होय तो
ते अत्यंत शुज हे. ते आ प्रमाणे—मेष लग्नमां सातमा तुला अंशना पहेला १० पळोमां
लग्ननी अशुक्षि होवाथी पांच वर्गनी शुक्षि हे अने पृथ्वी तत्त्व हे, तथा मेष लग्नमां
नवमा धन अंशना हेला १० पळोमां पांच वर्गनी शुक्षि अने पृथ्वी तत्त्व हे. १. वृष

खन्नमां त्रीजा मीन खंशना पहेला ७ पळोमां छ वर्गनी शुष्त्रि खने पृथ्वी तस्व हे, तथा वृष खग्नमां पांचमा वृष खंशना पहेला १४ पळोमां उ वर्गनी शुष्ति खने जळ तत्त्व हे. २. मिथुन खग्नमां उचा मीन अंशना पहेला ए पळोमां उ वर्गनी शुद्धि अने जळ तस्व हे, अने पांच वर्गनी शुद्धि तो दादशांशनी अशुद्धि होवाथी आखा नवांशकमां है. ३. कर्क खग्नमां पहेला कर्क अंशना पहेला १० पळोमां उ वर्गनी शुष्टि अने पृथ्वी तत्त्व है, तथा कर्क लग्नमां त्रीजा संपूर्ण कन्या अंशमां ह वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तस्व है. ध. सिंह लग्नमां उचा कन्या श्रंशमां दश पळ पठी २० पळोमां लग्ननी श्रशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुक्ति अने जळ तत्त्व हे. ए. कन्या लग्नमां त्रीजा मीन अंशमां नव पळ पठीनी २९ पठोमां ठ वर्गनी शुद्धि छाने पृथ्वी तत्त्व हे. ६. तुला लग्नमां छाहमा मृष अंशमां पहेला १० पळोमां छ वर्गनी शुद्धि अने पृथ्वी तत्त्व हे, तथा तुला लग्नमां नवमा मिथ्रुन खंशमां बेह्या १७ पळोमां व वर्गनी शक्ति खने पृथ्वी तस्व हे. ए. वश्चिक खन्नमां चोथा तुला अंशमां पहेला २० पळोमां लग्ननी अशुष्टि होवायी पांच वर्गनी शुष्टि अने जळ तस्य हे. ए. धन लग्नमां हका संपूर्ण कन्या अंशमां केष्काणनी अशुद्धि होवाथी पांच वर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व हे, तथा धन क्षयमां सातमा तुदा श्रंशमां बेहा ए पळोमां घादशांशनी अशुष्टि होवाथी पांच वर्गनी शुष्टि अने पृथ्वी तत्त्व हे, तथा धन लग्नमां नवमा धन श्रंशमां पहेला ए पळोमां दादशांशनी श्रशुक्ति होवाशी पांच वर्गनी शुक्ति अने पृथ्वी तत्त्व हे. ए. मकर लग्नमां पांचमा वृष अंशमां पहेला १६ पळोमां लग्ननी अशुष्टि होवाथी पांच वर्गनी शुष्टि अने जळ तस्व हे. १०. कुंज लग्नमां उठा वृष अंशमां वेहा २० पठोमां लग्ननी अशुद्धि होवाथी पांच त्रर्गनी शुद्धि अने जळ तत्त्व हे, तथा कुंज खरमां आहमा वृष अंशर्नी हेहा १४ पळो अने नवमा मिथ्रन श्रंशना पहेला 9 पळो कुल २१ पळोमां लग्ननी श्रशुद्धि होवाश्री पांच वर्गनी शुद्धि श्रने पृथ्वी तत्त्व हे. ११. मीन लग्नमां पहेला कर्क आंशमां पहेला १० पळोमां ह वर्गनी शुद्धि श्रने पृथ्वी तत्त्व हे, तथा मीन लग्नमां त्रीजा २५ पळवाळा संपूर्ण कन्या संशासं ह वर्गनी शुक्ति अने पृथ्वी तत्त्व हे. १२.

मूळ श्लोकमां "कृतानि"—"करेलां कार्यो" एम लख्युं हो. ते विषे वृद्धों कहे हे के—दीहा, प्रतिष्ठा, तीर्थयात्रा, पदवी आरोपण विगेरे कार्योने मध्ये जे कोइ कार्यमां जे नहत्र, जे वार अने जे तिथिनो अधिकार कर्यो होय ते सर्व सारी रीते शुद्ध जोइने रिवयोग अने सिद्धियोगादिक सिहत प्रथम दिनशुद्धि अने पही लग्नशुद्धि अने त्यारपही नवांशशुद्धि जोवी. सर्वथा प्रकारे शुद्ध लग्न न मही शके अने कार्य अवस्य करवानुं होय तो शुद्ध दिनशुद्धिमां, हाया लग्नमां, ध्रव लग्नमां, विजय मुहूर्समां के शुद्ध चोधनीयामां कार्य करवुं ए समय गंथनुं रहस्य हो.

. मूळ श्लोकमां ''प्रथयन्ति'' खख्युं हे, एटले के छा प्रमाणे करेलां कार्यो सर्व प्रका-रना जदयने विस्तारे हे.

इति श्रीमति श्रारं जिसि ज्विवार्तिके विख्य १ मिश्र २ घारपरी शातमकः पश्चमो विमर्शः संपूर्णः ॥ ए ॥

श्चा रीते श्री आरंजसिकिना वार्तिक—टीकामां विलय १ अने मिश्र ६ दारनी परीकावाळो पांचमो विमर्श संपूर्ण थयो.

"श्रीसूरीश्वरसोमसुन्दरगुरोर्निःशेषशिष्याग्रणी-र्गक्वेन्द्रः प्रज्ञरत्तशेखरगुरुर्देदीप्यते सांप्रतम् । तक्विष्याश्रवहेमहंसरचितस्यारंजसिद्धेः सुधी-श्रङ्गाराजिधवार्तिकस्य बुधजाः ए सङ्घो विमशोंऽज्ञवत् ॥ १ ॥"

"हालमां सूरीश्वर श्री सोमसुंदर गुरुना सर्व शिष्योमां मुख्य अने गञ्चना स्वामी प्रञ्ज —पूज्यरत्नशेखर गुरु अत्यंत देदीप्यमान वर्ते हे. तेमना आज्ञाधीन शिष्य श्री हेमहंसे रचेला आ आरंजसिकिना सुधीश्वंगार नामना वार्तिकनो पांचमो विमर्श संपूर्ण अयो

"विमर्शैः पञ्चन्तिः प्रेष्ठविष्यैरिव संवृतम् ।

न कस्याह्याददायीदं सुधीश्रङ्गारवार्तिकम् ॥ २ ॥"

"लत्तम पांच विषयोनी जेम पांच विमर्शाए करीने संवरेखं आ सुधीशंगार नामनं वीर्तिक कोने आह्वाद आपनार न होय ? अश्रीत् सर्वने हर्ष जत्पन्न करनारुं हे."

"बहुज्योतिःशास्त्रात्मकमणिसुवर्णापणगणात्, मया सारं सारं द्युतिमयसुपादाय किमपि। सुधीश्रङ्गारोऽयं व्यरचि रुचिरः सैष सुधियां, करे कएने कर्णे हृदि च सुषमां पृष्वययतु॥ ३॥"

"घणां ज्योतिःशास्त्ररूप मणि अने सुवर्णनी खुकानोना समूहथकी कांइक कांतिमय सार सार वस्तु खड़ने आ मनोहर सुधीश्रंगार (विदानोनो अखंकार) रच्यो हे, तेथी ते आ विदानोना हाथमां, कंहमां, कानमां अने हृदयमां सुख छत्पन्न करो."

॥ अय प्रशस्तिः ॥

"श्रीमचन्द्रकुले पुराऽजनि जगचन्द्रो गुरुर्यसापा-चार्यख्यातिमवाप तीव्रतपसा तस्यान्वयेऽजायत । प्रौढः श्रीवरदेवसुन्दरगुरुस्तत्पदृपूर्वागिरेः, शक्के श्रीप्रजुसोमसुन्दरगुरुर्जानुर्नवीनोऽजवत् ॥ ध ॥" "पहेखां श्रीमान् चंत्र कुळने विषे श्री जगचंत्र नामना गुरु (आचार्य) छत्पन्न श्रया हता के जेलं तीन्न तपवमे तपाचार्यनी ख्याति पाम्या हता. तेमना वंशमां मोटा प्रजाव-वाळा श्री वरदेवसुंदर नामना गुरु (आचार्य) थया, अने तेनी पाटरूपी लदयाचळ पर्वतना शिखर लपर श्री सोमसुंदर नामना गुरु नवीन सूर्यरूप थया," कारण के—

> "जानोर्जानुशतानि षोमश त्यसन्त्येकत्र मास्याश्विने, यञ्जिष्यास्तु ततोऽधिका अपि महीमुद्द्योतयन्ते सदा । तस्याहं चरणावुपासिषि चिरं श्रीमत्तपागञ्जप-द्योणीविश्रतसोमसुन्दरगुरोश्चारित्रिचूमामणेः॥ ए॥"

"सूर्यने मात्र एक आश्विन मासमांज सोळसो किरणो विदास पामे हे, परंतु जेमना तेथी पण वधारे शिष्यो निरंतर पृथ्वीने उद्योत करे हे ते साधुउंमां चूमामणि समान, श्री तपा गह्यना नायक अने पृथ्वी पर प्रख्यात थयेद्वा श्री सोमसंदर गुरुना वे चरणोनी में चिर काळ सेवा करी हे."

"मारिर्येन निवारिताऽसुरकृता संसूच्य ज्ञान्तिस्तवं, सूरिः श्रीमुनिसुन्दराजिधगुरुदींकागुरुः सैप मे । यस्य क्यामसरस्वतीतिबिरुदं विख्यातमुवींतले, गुवीं श्रीजयचन्द्रसूरिगुरुरप्याधात्प्रसत्तिं स मे ॥ ६ ॥"

"जेमणे श्रमुरे जत्पन्न करेखी मरकी शांतिस्तव रचीने निवारी, तेखं श्रा श्री मुनिसंदर सूरि नामना गुरु मारा दी शागुरु हे, तथा जेमनं स्याम—काळी सरस्वती नामनं विरुद्ध पृथ्वी पर प्रसिद्ध हे ते श्री जयचं हम्हरि नामना गुरुए पण मारा पर मोटी प्रसन्नता धारण करी है."

"साम्प्रतं तु जयन्ति श्री-रत्तशेखरसूरयः। नानाग्रन्थकृतस्तेऽपि, पूर्वाचार्यानुकारिएः॥ ७॥"

"हमणां तो पूर्वना आचार्योनी सददा तथा विविध यंथोने रचनारा तेर्ज प्रसिद्ध श्री रक्षशेखर नामना सूरि जयवंता वर्ते हे."

> "एतानाचार्यहर्यकान्, प्रत्यक्तानिव गौतमान्। वीतमायं स्तुवे स्फीत-श्रीतपागञ्जनायकान्॥ ए॥"

"जाएे प्रत्यक्ष गौतमस्वामीज होय एवा अने आचार्योने मध्ये सिंह समान आ वृद्धि पामेखा श्री तपा गञ्जना नायकोनी हुं निष्कपटपएे स्तृति करुं हुं."

वळी.—

"एकोऽप्यनेकशिष्याणां, यश्चित्ताङ्गान्यवोधयत् । ंतं श्रीचारित्ररत्नं जो ! नजोरत्नसमं स्तुमः ॥ ए ॥"

"जेणे एकलाएज अनेक शिष्योनां चित्तरूपी कमळो विकसित कर्यो हे ते सूर्य समान श्री चारित्ररत्नने अमे स्तयीए हीए."

> "चिन्मयानां मयाऽमीषामृषीणां सुप्रसादतः । हेमहंसाजिधानेन वाचनाचार्यतायुजा ॥ १० ॥ श्रीमिदकमवत्सरे मनुतिथौ १५१४ शुक्छिदितीयातिथौ, नक्षत्रे गुरुदैवते गुरुदिने मासे शुचौ सुन्दरे । श्राशापिष्ठपुरे पुरः प्रतिनिधेः श्रीमसुगादिप्रजो-र्यन्थः सेष समर्थितः प्रथयतादाद्यं पुमर्थं सताम् ॥ ११ ॥ "

"क्षानवाळा आ ऋषिर्छ (मुनिर्छ)नी आत्यंत कृपाथी हेमहंस नामना में वाचना-चार्ये श्रीमिक्कम संवत् १५१४ ना सुंदर एवा आषाम मासमां शुक्ल पक्षनी बीज ने गुरुवारे पुष्य नक्षत्रमां आशापिक्ष नामना नगरमां श्रीयुगादि प्रजुनी प्रतिमानी पासे आ ग्रंथ रच्यो छे, ते सत्पुरुषोना पहेला पुरुषार्थ—धर्मनो विस्तार करो."

"इति श्रीतपागञ्चपुरन्दरश्रीसोमसुन्दरसूरिश्रीमुनिसुन्दरसूरिश्रीजयचन्द्रसूरिप्रमुखश्रीगुरुसाम्प्रतिवजयमानश्रीगञ्चनायकश्रीरत्तरोखरसूरिचरणकमलसेविना महोपाध्यायश्रीचारित्ररत्नगणिप्रसादप्राप्तविद्याद्यवेन वाचनाचार्यश्रीहेमहंसगणिना स्वपरोपकाराय संवत्
१ए१४ वर्षे श्रापाढशुक्तिविद्यायां निर्मितिमिदं सुधीश्रङ्काराख्यं श्रीश्रारंत्रसिद्धिवार्तिकं सर्वथा सावद्यवचनविरतैः सुविहिताचार्यवर्थैर्वाच्यमानं चिरं नन्दतात्॥"

श्रा प्रमाणे श्री तथा गद्यना इंड श्री सोमसुंदर स्रि, श्री मुनिसुंदर स्रि, श्री जयचंड स्रि विगेरे श्री गुरु महाराजालं श्रने हालमां विजय पामता श्री गद्यनायक श्री रत्नशेलर स्रिना चरणकमळने सेवता श्रने महोपाध्याय श्री चारित्ररत्न गणिना प्रसादश्री जेने विद्यानो लेश प्राप्त थयो ठे एवा वाचानाचार्य श्री हेमहंसगणिए स्व-परना छपकार माटे संवत् १५१४ श्राषाढ सुदि बीजने दिवसे रचेलुं श्रा सुधीशंगार नामनुं श्रारंजनिसिद्धनुं वार्तिक सर्वथा प्रकारे सावद्य वचनश्री विरित्त पामेला श्रेष्ठ सुविहिताचार्योए वंचातुं चिर काळ श्रानंद पामो।

हवे ग्रंथकार पोताना श्रजिप्रायने प्रगट करे हे.—

"विद्यारम्जतपःकियाप्रजृतिकप्रारम्जवर्ज समे
ऽप्यारम्जा श्रशुजाः शुजाश्च नियतं सावद्यताद्षिताः ।

सर्वारम्जविधेश्च सिष्किकरणादारम्जसिद्ध्याह्नयो, यन्थोऽयं तत एव चाप्रकटनायोग्यो विश्कात्मसु ॥ १ ॥"

"विद्यारंत्र स्रने तपस्यानी क्रिया विगेरे स्त्रारंत्रोने वर्जीने बीजा सर्वे शुन स्त्रने स्त्रश्चन स्त्रानं स्त

"येन श्रीप्रज्ञसोमसुन्दरगुरोः काले कली जङ्गम-श्रीमत्तीर्थकरस्य चारु सुचिरं सेवा कृता तस्य मे । एतज्ज्योतिषवार्तिकप्रणयनं नो युष्यते सर्वथा, ग्रन्थोऽयं तदपीह येन विधिना जातस्तदाकर्ण्यताम् ॥ २ ॥"

"आ कित काळने विषे जंगम तीर्श्वकररूप पूज्य श्री सोमसुंदर गुरुनी जेणे सारी रीते चिर काळ सुधी सेवा करी हे एवा मारे आ ज्योतिष शास्त्रना यार्तिकनी रचना करवी ए सर्वधा प्रकारे योग्य नथी, तोषण आ ग्रंथ जे विधिए करीने जत्पन्न थयो हे ते सांज्ञों."

"केचित्केचिदिप क्यचित्क्वचिदिप ग्रन्थे विशेषा मया, दृष्टा ज्योतिषगोचराः किल समुचेतुं च ते चिन्तिताः। प्रकान्तश्च समुचयो रचियतुं संवर्धमानः पुनः, सोऽशैरेव शनैः शनैः समजवद्धन्थानुरूपाकृतिः॥ ३॥"

"ज्योतिष संबंधी केटलाक विशेषों कोइक ग्रंथमां तथा केटलाक विशेषों बीजा कोइक ग्रंथमां में जोया, अने ते विशेषोने एकत्र करवानों में विचार कर्यों, अने पठी समूहरूप करवाने आरंज कर्यों, त्यारे ते अर्थवर्मे वृद्धि पामीने धीमे धीमे एक ग्रंथने आकारे यह गयों."

"प्राप्तः सोऽयमचिन्तितामि यदा प्रन्थस्य रीतिं तदा, चित्तेऽचिन्ति मया धिया निपुणया सम्यग्विचार्यायतिम् । निःशूकैर्यतिजिस्तथा गृहिजिरण्यादास्यतेऽसौ यदा, सावद्यप्रथितेर्वताधिकरणं संपत्स्यतेऽलं तदा ॥ ४ ॥"

''ज्यारे आ ग्रंथ नहीं चिंतवेदी ग्रंथनी पद्धति (आकार)ने पाम्यो त्यारे में चित्तमां निपुण बुद्धियी सारी रीते परिणाम (जत्तरकाळ)नो विचार कर्यो के निःशूक एवा मुनिजंप तथा गृहस्थीजंप ज्यारे आ ग्रंथ ग्रहण कराशे त्यारे आ ग्रंथ सावधना विस्तार (समूह)ना अधिकरणने आत्यंत पामशे ए खेदकारक है.

" तेनैतस्य जलावमक्जनविधिर्वन्थस्य निर्माप्यते, नोत्सर्पत्यधिकाधिकाधिकरएस्फातिर्यथाऽस्मादिति । तत्कंर्तुं तु न शक्यते स्म विविधयन्थोञ्खवृत्त्या हृता, गञ्जेऽत्र स्थितिमावहन्तु कथमप्येते विशेषा इति ॥ ५ ॥ "

"तथि करीने आ ग्रंथनो जळने विषे मक्कनविधि करुं के जेथी करीने आ ग्रंथ थकी अधिकाधिक अधिकरणनी वृद्धि न थाय, परंतु तेम करतुं पण शक्य नथी, कारण के आ विषयो विविध ग्रंथोमांथी जंड वृत्तिए करीने एकत्र करेला डे, तेथी आ विशेषों कोइ पण प्रकारे आ गहमांज स्थितिने करो."

" एतस्मादिजिसन्धितः परिहृताम्जोमज्जनः सज्जनाः, सोऽयं यन्त्र जपागमत्करतते युष्माकमायुष्मताम् । सत्याष्योऽय तथा कथञ्चन यथाऽऽरम्जप्रथाकारणं, धर्म्याणामपि कर्मणां प्रणयने जात्वेष नो जायते ॥ ६ ॥ "

" हे सक्जनो ! आ श्रिजियायथी त्याग कर्युं वे जळने विषे मक्जन जेनुं एवो आ ग्रंथ तमारा आयुष्यवंतना हाथमां प्राप्त थयो वे, तेथी कोइ पण रीते तथा प्रकारे आ ग्रंथ सफळ करवो के जेथी कोइ पण वखत आ ग्रंथ धर्म संबंधी कार्यो करवामां पण आरं-जना विस्तारनुं कारण न थाय.

> " खद्भः खण्मनहेतवे खखजनस्यादीयते धीयते, नो सम्यग्यदि सोऽपि सौवधनिकोन्नेदाय तज्जायते । वेताखोऽपि विधेयतामपि गतो यत्रापि तत्रापि चेत्, संयोज्येत यथा तथा ननु तदा स्वं साधकं वाधते ॥ ७ ॥ एवं ज्योतिषशास्त्रमेतदिखं सावद्यसङ्जात्मनां, चैत्यादेरपि चेन्मुहूर्त्तकथने व्यापार्यते साधुनिः । तत्तेपामनवद्यनाषणमयं याति व्रतं सर्वथा, खिप्यन्तेऽपि च पातकेन महता ते शास्त्रकर्त्रा समम् ॥ ० ॥ "

" खळ पुरुषोना नाशने माटे खड़ ग्रहण करवामां आवे हे. तेने जो सारी रीते धारण न कर्युं होय तो ते पण पोताना स्वामी (धारण करनार)नाज नाशने माटे थाय हे. वळी वश अयेदों पण वेताळ जो ज्यां त्यां (जे ते कार्यमां) जेम तेम जोक-वामां आवे तो ते पोताना साधकनेज वाध (पीना) करे हे. तेज रीते आ समग्र ज्योतिष शास्त्र जो सावद्य व्यापारमां सक्त अयेदा गृहस्थी होने चैत्यादिकनां मुहूर्त्त अरु ५३

कहेवामां पण साधुर्छए व्यापार कराय तो तेर्डनुं सत्य जावणमय बीजुं वत सर्वश्रा प्रकारे नाश पामे हे, अने तेर्ड शास्त्रकार सहित मोटा पापवके पण खींपाय हे. "

" नन्वेवं यदि जैनचैत्यरचनाश्रीतीर्थयात्रादिनः, पुण्यस्यापि मुहूर्त्तमात्रमृषिजिनों देयमित्युच्यते । तत्पुण्योपचयः कथं नु जिवता गाईस्थ्यजाजां नृणां, नानाग्रामनिवासिनामथ यतेः स्यात्पुण्यक्षाजः कथम् ॥ ए ॥ "

" अहीं कोइ शंका करे के-जो जिनेश्वरनुं चैत्य वनाववुं, तीर्थयात्रा करवी विगेरे पुष्य कार्यनुं मुहूर्त्त मात्र पण साधुलंप न देवुं एम तमोए कहेवाय छे, तो जिन्न जिन्न गामोमां वसनार गृहस्थाश्रमी माणसोने पुण्यनी वृद्धि शी रीते अशे ? अने साधुने पण पुण्यनो खाज शी रीते थाय ?" जत्तर.—

" पुण्यं स्थादनुमोदनैव यतिनां चैत्यादिनिर्मापणे, मोहूर्ताः पुनरर्पयन्ति गृहिणामुदाहनादाविव । चैत्याद्येऽपि मुहूर्त्तमञ्जततरं संवादमेषां पुन-ज्योतिर्क्का यतयो दिशन्त्यखिलमप्येवं सुयुक्तं प्रवेत् ॥ १० ॥ "

" चैत्यादिक कराववामां यतिर्छने अनुमोदनावनेज पुण्य याय हे, परंतु गृहस्थी-छने विवाहादिकनी जेम चैत्यादिकने विषे पण अत्यंत अद्जुत (शुज) मुहूर्स तो जोशीर्छज आपे हे, किंतु ए जोशीर्छना समग्र संवादने ज्योतिष जाणनारा यतिर्छ वतावी शके हे. आ रीते करवाथी सर्व युक्तियुक्त थाय हे."

> " एवं सत्यिप कर्मगौरववशाद्यः पातकानीखुकः, शास्त्रस्यास्य वितन वद्दयति जने मूढो मुहूर्तादिकम् । तस्यैवैतद्यं पतिष्यिति शिरस्यारम्नसंनारजं, नैतद्भन्यविधायिनस्तु मम तत्संवन्धवेशोऽपि हि ॥ ११ ॥ "

" आम उतां पण जारे कर्मना वशिष्ठी पापना जय रहित जे कोइ मूढ (यित) आ शास्त्रना बळे करीने खोकमां मुहूर्तादिकने कहेशे तो आरंजना समूह्यी जत्पन्न थतुं आ पाप तेनाज मस्तक पर पमशे, परंतु आ ग्रंथने करनारा मने ते पापना अथवा आरंजना संबंधनो खेश पण नथी."

" तस्मात्तत्त्विमदं वदाभि तिददं शास्त्रं रहो जण्यतां, शिष्याणामिष जाण्यतामवगतास्ते चेदघाष्त्रीरवः । पर्यायान् परिवर्धयन्तु च वुधाः सर्वेऽपि वोधस्य ते, यस्मात्केवलभेतदेव हि फलं मेऽजीष्टमेतत्कृतेः ॥ १२ ॥ " **19**, 198

"तथी हुं आ रहस्यने कहुं हुं के —आ शास्त्र एकांतमां वांचो — जाणो, तथा पोताना शिष्योने पण जो तेमने पापथी जीरु जाएया होय तो सुलेथी जाणवो, अने ते सर्वे पंक्तिो ज्ञानना पर्यायोने वृद्धि पमानो, कारण के आ कृतिनुं मात्र एज फळ मने इष्ट है." तेथी करीने —

" ज्ञानांशोपचयैकपेशलफलप्रस्पुत्तिये वार्तिकं, कुर्वाणेन मया शुजाशयवशाद्यत्पुण्यकर्मार्जितम् । दिष्टचा तेन जवे जवे जवतु मे सन्ज्ञानलाजोदयो, यस्मादद्भतधाम शाश्वतचिदानन्दं पदं प्राप्यते ॥ १३ ॥ "

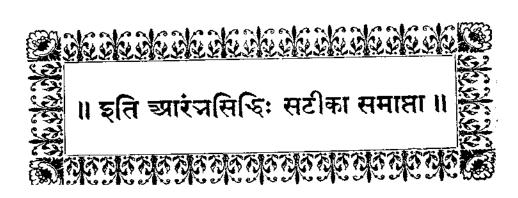
क्रानना पर्यायोनी वृद्धिरूप एक सुंदर फळनी स्फुर्तिने माटेज आ वार्तिकने रचतां में शुज परिणामना वशथी जे कांइ पुण्य कर्म जपार्जन कर्युं होय ते पुण्यवमे मने जव जवने विषे सत् क्रानना खाजनो जदय अजो, के जे क्रानथी अद्जुत धामवाळुं शाश्वतुं चिदानंद (मोक्ष) पद मने प्राप्त आय. "

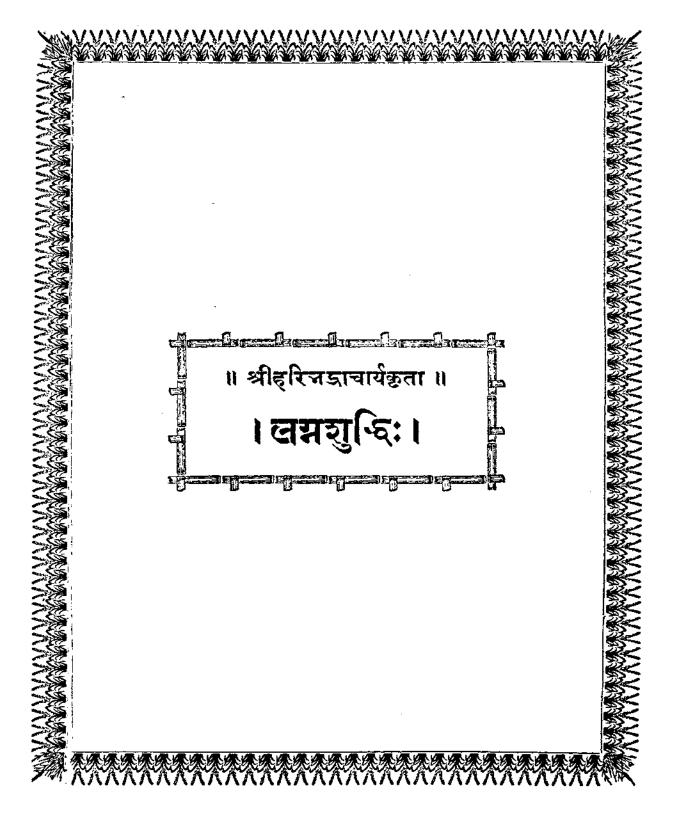
श्रा प्रमाणे प्रंथकारना पोताना श्रजिप्रायने सूचवनारां श्रा काव्यो (श्लोको) वांचीने तत्त्वज्ञानीलए लपदेश करेखा मार्गना श्रनुष्टान माटे यल करवो. इति शम्.

॥ इति प्रशस्तिः॥

॥ इति आरंत्रसिद्धिः सटीका समाप्ता ॥







। सम्रज्जुिकः।

श्चवितहसवाएसं निमजं चोवीसमं जिएवरेसं। बुडामि समासेणं लग्गं सुगुरूवएसेणं॥१॥

जेनो सर्व आदेश सत्य हे एवा श्री चोवीशमा जिनेश्वरने नमीने सद्गुरुना छप-देशथी संहेपमां खन्ननी शुद्धि कहुं हुं. १.

> कर्कं कुणंतयाणं सुहावहो जोइसम्मि जो जणिछ । कालविसेसो लग्गं कर्कं पुण बहुविहं जइ वि ॥ २ ॥ तह वि हु इह लोग्रत्तरिकोवछावणापइछाछ । स्रहिगिच लग्गसुधिं जणिक्कमाणं निसामेह ॥ ३ ॥

कार्य करनारने माटे ज्योतिष शास्त्रमां जे काळिवशेष सुसकारक कहेतो हे ते सम कहेवाय है. जो के कार्य घएां प्रकारनां है, तोपए अहीं दीहा, छपस्थापना अने प्रतिष्ठा ए त्रए सोकोत्तर कार्यने आश्रीने हुं समनी शुद्धि कहुं हुं ते तमे सांजळो॥२-३.

> सा पुण इह विन्नेया गोश्ररसुद्धीइ दिवससुद्धीए। तस्समयजदयपत्तस्स तह वि खग्गस्स सुद्धीए॥ ४॥

अने ते खग्नगुष्ति अहीं गोचरनी गुष्तिथी तथा दिवसनी गुष्तिथी जाणवी, तथा ते समयमां जदय पामेखा खग्ननी गुष्तिथी पण खग्नगुष्ति याय हे. (अर्थात् गोचरगुष्ति, दिवसगुष्ति अने खग्नगुष्ति ए त्रण घार हे) ध. इति घारम्

गुरुससिरविणो बिलणो दिस्कोविष्ठावणासु सीसस्स । जइ तो गोश्ररसुद्धी गुरुणो वि हु सिसवेस संते ॥ ५॥

जो दीक्षा तथा जपस्थापनामां शिष्यने गुरु, चंद्र अने रिव वळवान् होय अने आचार्यने पण चंद्र बळवान् होय तो गोचरशुद्धि जाणवी. ५.

विंबपञ्जाञ्च पुणो कारावयसावयस्स विलएसु । गुरुससिसूरेसु जवे गोळरसुद्धि ति बिंति बुहा ॥ ६॥

अने विंवप्रतिष्ठामां प्रतिष्ठा करावनार आवकने गुरु, चंद्र अने रिव वळवान् होय तो गोचरशुद्धि याय एम पंभितो कहे हे. ६. दोश्पंच ५ सत्त उनविम एकारसमो ११ जम्मरासिणो जीवो । पढम १ ति ३ ठ ६ सत्त उदसमे १० कारसमो ११ ससहरो बलवं ॥॥॥ जन्मनी राशिष्ठी गुरु बीजे, पांचमे, सातमे, नवमे अने अगीयारमे होय तो ते बळ-वान् जाणवो, चंज बन्ने पहमां पहेले, बीजे, ठठे, सातमे, दशमे अने अगीयारमे होय तो ते बळवान् जाणवो. उ

दो १ पंच ५ नवमगो ए विहु सियपकेसो रवी उ ति ठ दसमो। इक्कारसमो अ वली सेसठाणेसु ते अवला॥ ए॥

शुक्खपहमां जन्मराशिष्ठी चंज वीजे, पांचमे अने नवमे होय तो बळवान् हे, जन्म-राशिष्ठी सूर्य त्रीजे, हुछे, दशमे अने अगीयारमे होय तो बळवान् हे अने बाकीनां स्थानोमां होय तो ते निर्बळ हे. ए.

सियपके चंदबलं छसिए तारावलं पि गहियवं।

तं पुण ति ३ पंच ८ सत्तम ७ तारार्ट मुत्तु सेसा छ ॥ ए ॥ शुक्खपक्तमां चंद्रतुं बळ खेबुं, अने कृष्णपक्तमां तारातुं वळ पण ग्रहण करबुं. तेमां पण त्रीजी, पांचमी अने सातमी ताराने मूकीने वाकीनी तारार्ट खेवी. ए.

> पढमा जम्मणि रिके तत्तो दसमम्मि इग्रणवीसे छ। बीछा तप्परएसुं तिसु एवं जाव नव तारा ॥ १०॥

पहेखी तारा जन्मनक्त्रमां मूकवी, एटखे के जन्मनं नक्त्र ए पहेखी तारा गणवी. तेनी नीचे दशमी तारा मूकवी श्रने तेनी नीचे खंगणीशमी तारा मूकवी पहेखी तारानी पठी बीजी, श्रीजी एम अनुकमे नव सुधी मूकवी, दशमीनी पठी अगीयार, बार एम श्रदार सुधी मूकवी श्रने खंगणशमीनी पासे वीश, एकवीश एम सत्यावीश सुधी मूकवी. ए त्रणे खाइननी त्रीजी त्रीजी, पांचमी पांचमी श्रने सातमी सातमी तारा श्रवा श्रवा होवाशी शुज कार्यमां लेवी नहीं. १०.

जम्मं १ संपइ १ विष्पइ ३ खेमा ४ पचरय ५ साहणा ६ निहणा ७ । मित्ता ७ अइमित्ता एवा तारा नेश्रा असिश्च परके ॥ ११ ॥

ते कृष्णपद्मां तारार्जनां नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे जाणवां.—जन्म १, संपद् २, विपद् ३, केमा ४, प्रत्यवरा (यमा) ५, साधना ६, निधना ७, मित्रा ७ अने अति-मित्रा ए. एज प्रमाणे दशमी ताराधी अने जगणीशमी ताराधी पण अनुक्रमे आ नामोज जाणवां. ११.

रिव, बुध, बृहस्पित (गुरु) अने शिन एटला वार व्रतप्रहणमां (दीक्षामां) गुज तथा बिंबप्रतिष्ठामां बृहस्पित, सोम, बुध अने शुक्रवार शुज है. १६. इति वाराः ।

मुनुं चउदिस पनरिस नवमर्घमि ठिठ वारिस चउत्थी। सेसा उ वयग्गहणे गुणावहा छुसु वि पकेसु॥ १७॥

बन्ने पक्ती चौदश, पूर्णिमा अने अमावास्था, नोम, आठम, उठ, बारश अने चोट दुली तिथि वर्जीने बीजी तिथिछ वतप्रहणमां शुज ठे. १९.

सियपके पिनवय बीख्य पंचमी दसमि तेरसी पुन्ना। कसिणे पिनवय बीख्या पंचिम सुहया पष्टाए॥ १०॥

नातष्ठामां शुक्लपक्तनी एकम, बीज, पांचम, दशम, तेरश अने पूनम तथा कृष्णपक्तनी एकम, बीज अने पांचम एटली तिथित शुज हे. १०.

सबे वि वारतिहिर्ज सुहया सइ सिक्षिजोगसप्नावे। चंदंमि जवचयंमि न जए नहिम की से वा॥ १ए॥

सर्वे वारों अने तिथिछं सिद्धियोग होय तो शुज हे, परंतु चंत्र छपचय होय अने नष्ट के हीए न होय तो. १ए.

सियपितवयाज दस दिण चंदो मित्रमवलो मुणेयहो। तत्तो छ जत्तमवलो छप्पवलो तस्य दसमिम ॥ २०॥

शुक्खपक्ति। एकमथी दश दिवस सुधी चंद्र मध्यम बळवाळो जाएवो, त्यारपढीना दश दिवस जत्तम बळवाळो जाएवो छने त्रीजा दश दिवस सुधी श्रष्टप बळवाळो जाएवो. २०. इति तिथयः।

उत्तर रोहिणि हत्थाणुराह सयजिसय पुवजदवया। पुस्स पुणवसु रेवइ मूलस्सिणि सवण साइ वए॥ ११॥

त्रणे जत्तरा, रोहिणी, इस्त, अनुराधा, शतिजवक्, पूर्वाजाइपद, पुष्य, पुनर्वसु, रेवती मूळ, अश्विनी, श्रवण अने स्वाति, आटलां नद्यत्रो व्रतग्रहणमां (दीद्यामां) शुज हे. २१.

मह मियसिर हरथुत्तर अणुराहा रेवई सवण मूलं। पुस्स पुण्वसु रोहिणि साइ धणिष्ठा पष्टाए॥ ११॥

मधा, मृगशिर, इस्त, त्रणे उत्तरा, श्रनुराधा, रेवती, श्रवण, मूळ, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, स्वाति श्रने धनिष्ठा, एटखां नक्त्रो प्रतिष्ठामां शुच हे. ११.

जइ नो नज्जइ जम्मण रासी तो गणह नामरासी । अवकहमाचकार्ज सा नज्जाइ तं पुण पसिद्धं ॥ १२॥

जो जन्मराशि जाणवामां न होय तो नामराशिथी गणवुं, अने ते नामराशि अ कहमा चक्रशी जाणवी. ते चक्र प्रसिद्ध हो. १२.

॥ इति गोचरशुद्धिः॥ १ ॥

॥ अध दिनशुद्धिः ॥ २ ॥

सुहमास १ वार २ तिहि ३ रिक ४ जोग ५ करणे ६ दिणम्मि सग्रणंमि ७ । निद्दोसे ७ तद्द निद्दोस ए सग्रणरिकंमि १० दिणसुद्धी ॥ १३ ॥

दिनशुद्धिमां आ प्रमाणे दश दार छे—शुज मास १, शुज वार २, शुज तिथि ३, शुज नक्षत्र ४, शुज योग ५, शुज करण ६, सगुण दिवस ७, निर्दोष दिवस ०, निर्दोष नक्षत्र ए अने सगुण नक्षत्र १०, १३.

मिग्गसिराई मासछ चित्त पोसाहिए वि मुतु सुहा। जइ न गुरू सुको वा वालो वुड्डो य श्रत्थमिर्ज ॥ १४॥

मार्गशिर्ष मासद्यी छारंत्रीने छाठ मास शुज ठे, तेमां पण चैत्र, पोष छने छाधिक मास वर्जीने सारा ठे. तेमां पण जो गुरु के शुक्र बाळक, वृद्ध के छस्त पामेखो न होवो जोइए. १४.

दस १० तिन्नि ३ दिणे बालो पणदिण ५ पकं १५ च जिग्रसुर्ज वृद्धो । पश्चिमपुदासु कमा ग्रह वि जहसंजवं एवं ॥ १५ ॥

शुक्र पश्चिम दिशामां छदय पाम्यो होय तो छदयथी दश दिवस सुधी बाळ जाएव अने पूर्व दिशामां छदय पाम्यो होय तो त्रण दिवस बाळ जाएवो तथा पश्चिम दिशामां अस्त पामे तो अस्त पाम्या पहेलाना पांच दिवस बुद्ध जाएवो, अने पूर्व दिशामां अस्त पामवानो होय तो ते पहेलां पंदर दिवस बुद्ध जाएवो. एज रीते गुरु पण जेम संज्ञवे तेम जाएवो. १९. । इति मासाः।

श्राइच बुह विहप्फइ सणिवारा सुंदरा वयग्गहणे। बिंबपइठाइ पुणो विहप्फई सोम बुह सुका ॥ १६॥ कारावयस्त जम्मण्रिकं दस सोखसं तहऽठारं। तेवीसं पंचवीसं विंवपञ्ठाञ्च विज्ञाः॥ १३॥

विंवप्रतिष्ठाने विषे प्रतिष्ठा करावनारनुं जन्मनक्त्र, दशमुं, सोळमुं, खढारमुं, त्रेवीशमुं खने पचीशमुं नक्त्र वर्जनुं. २३. इति नक्त्राणि ।

पढमो छठो नवमो दसमो तह तेरसो छ पन्नरसो। सत्तरसेग्रणवीसो सत्तावीसो असुह जोगो॥ १४॥

विष्कं जादिक २७ योगोमांथी पहेखों, उचो, नवमो, दशमो, तेरमो, पंदरमो, सत्तरमो, उंगणीशमो अने सत्यावीशमो एटखा योगो अशुज हे. २४.

विका विद्यामी पण थ पढमो नवमो अ पंच थ घिन्छाई। तीसं ३० सत्तावीसो नव ए तेरसमो अ पन्नरसो॥ १८॥ सबं ६० सत्तरसेग्रणवीसो वज्जो अवस्समन्ने छ। जोगा सबे वि सुहा नायबा सबकजोसु॥ १६॥

उठा योगनी प्रथमनी उ घमीलं शुज कार्यमां अवश्य तजवी, दशमा योगनी पांच घमीलं, पहेलानी अने नवमानी पांच घमीलं, सत्यावीशमानी त्रीश घमी, तेरमा अने पंदरमानी नव घमीलं. १९. तथा सत्तरमा अने लंगणीशमा योगनी सर्व एटले साठे घमीलं अवश्य वर्जवी बाकीना सर्व योगो सर्व कार्यमां शुजकारी जाणवा १६. इति योगः ।

विधिं विविक्तिकणं पाएण सुहाई सवकरणाई।
एक विधिने वर्जीने बाकीनां सर्वे करणो प्राये शुजकारी हे. इति करणानि।
आणंदयरं च दिणं सगुणं तह सिक्षिजोगजुआं।। २९।।
सगुण दिवस होय अने सिक्षि योगवने युक्त होय तो ते आनंदकर जाणवो. २९.
हवे सिक्षि योगनुं स्वरूप कहे हे.

सिश्च १ बुह १ कुज ३ सिण ४ ग्रुरुणो ५ पंचसु पढमासु ढिठ कुज सुका ६ । सत्तिम बुहे ७ श्रिष्ठमि सूरमंगला ७ नविम सिणिसिसिणो ए ॥ १७ ॥ दसिम ग्रुरु १० इकारिस ग्रुरुसुका ११ वारसी बुहो श्र सुहो ११ । तरिस मंगलसुका १३ चोदिस सिण १४ पंचदिस जीवो १५ ॥ १ए ॥

एकम में शुक्रवार होय, बीज ने बुधवार होय, त्रीज ने मंगळवार होय, चोथ ने शित-वार होय, पांचम ने गुरुवार होय, उठ ने मंगळ के शुक्र होय, सातम ने बुध होय, छाठम ने रिव के मंगळ होय, नोम ने शिन के चंद्र होय. १०. दशम ने गुरु होय, छागीयारशने गुरु के शुक्र होय, बारश ने बुध होय, तेरश ने मंगळ के शुक्र होय, चौदश ने शिन होय तथा पूमम ने गुरु होय तो ते सिद्धि योग कहवाय है. ते सर्व कार्यमां शुज्ज है. १ए. इति तिथिवारसिद्धियोगाः।

हत्युत्तर ४ मूखाइं ५ रविणो सिद्धाइं पंच रिस्काइं।

रोहिणि १ मिश्रसिर १ पुस्सा ३ णुराह ४ सवणाई ५ सोमेणं ॥३०॥ रिववारे हस्त, त्रण उत्तरा अने मूळ ए पांच नक्त्रोमांनुं कोइ होय तो सिद्धि योग थाय हो. सोमवारे रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, अनुराधा अने अवण होय तो सिद्धि योग थाय हो. ३०.

ज्ञत्तरत्रह्वय १ स्सिणि १ रेवइ ३ रिक्काइं तिन्नि जोमेणं। कित्तिय १ रोहिणि १ मिश्रसिर ३ पुस्स ४ श्रणुराहा उ ५ पंच बुहे ३१ मंगळवारे जत्तराजाइपद, श्रश्विनी श्राने रेवती ए त्रण नक्तत्र होय, बुधवारे कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, पुष्य, श्रनुराधा ए पांच नक्तत्र होय तो सिद्धि योग जाणवो. ३१.

श्रक्तिणि १ पुस्स १ पुणवसु ३ श्रणुराहा ४ रेवई श्र ५ ग्रहवारे। सत्तम पढिमिकारस रेवइ श्रणुराह सवण सिए॥ ३१॥

गुरुवारे अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा अने रेवती होय, शुक्रवारे पुनर्वसु, अश्विनी, पूर्वाफाहगुनी, रेवती, अनुराधा अने अवण होय तो सिक्ति योग याय हे. ३१.

रोहिणि १ सवणं २ साई ३ सणिणा इय रिकावार सुह जोगा। छन्ने वि एवमाइ वित्यरगंथेसु जाणिङ्जा ॥ ३३ ॥

ज्ञानिवारे रोहिए।, श्रवण के स्वाति होय तो सिद्धि योग थाय हे स्था प्रमाणे नक्षत्र श्रमे वारथी थता शुन्न योगो हे. आ विगेरे बीजा पण योगो विस्तारवाळा ग्रंथोथी जाणी सेवा. ३३.॥ इति नक्षत्रवारसिद्धियोगाः॥ इति सिद्धियोगाः॥

हवे कुमार योग कहे है.

अस्मिणि १ रोहिणि १ मूलं ३ हत्य ४ पुणवसु ५ विसाह ६ मह ७ सवणा ७ । जहवया वि अ पुदा ए मंगल १ सिख्य १ बुह ३ ससी ४ वारा ॥ ३४ ॥

दसमी १ विष्ठि १ कारिस ३ पिनवय ४ पंचिम ५ तिङ्गिणमन्नयरा । एसो कुमारजोगो रिस्कतिङ्गीवारजोगिनम ॥ ३५ ॥

अश्विनी, रोहिणी, मूळ, हस्त, पुनर्वसु, विशाखा, मघा, अवण आने पूर्वा जाइपद ए नक्षत्रोमांनुं कोइ एक नक्षत्र होय आने मंगळ, शुक्र, बुध आने सोम एमांनी कोइ पण वार होय तथा दशम, उठ, आगीयारश, एकम अने पांचम एमांनी कोइ एक तिथि होय तो आ रीते नक्षत्र, तिथि अने वारना योगथी कुमार नामे योग थाय है. ३५. इति कुमारयोगः।

घरवेसमित्तयाधम्मसिप्पविज्ञाइया सुद्दा जावा। कायवा एएएं विरुद्धजोगं विवज्जिता॥ ३६॥

गृहप्रवेश, मित्रता, धर्म, शिष्टपविद्या विगेरे शुज कार्यो विरुख योगने वर्जीने श्रावा शुज योगमां करवां. ३६.

। इति सगुणदिनम् । ७

रयष्ठन्नयाइ १ संकंतिगहणदहाइत्या य दिणदोसा १। तह दिवसवारनरकत्त श्रमुहजोग ३ ऊपहराई ४॥ ३९॥

रजश्चनादिक १, संकांति, संकांतिदग्ध अने महणदग्ध तिथि विगेरे दिवसना दोष १, दिवस, वार अने नक्तत्रथी यता अशुज योग ३, तथा अर्धमहरादिक ४, ए चार वर्ज्य दार कहे हे. ३९.

रयन्न र मप्नननं २ पयंडपवणं ३ तहा समुग्वायं ४। सुरधणु ५ परिवेस ६ दिसादाहाइ ९ जुत्रं दिणं छुटं ॥ ३०॥

रजश्बन एटले आकाश रजथी-धूळथी जराइ गयुं होय १, आकाश वादळांथी ब्रवाइ गयुं होय २, प्रचंन पवन वातो होय २, समुद्धात एटले मोटा मोटा पनगंदा जेवा अवाज अता होय ४, आकाशमां इंडधनुष देखातुं होय ५, परिवेस एटले चंड तथा सूर्यनी फरतुं जे कुंनाळुं थाय हे ते ६, तथा दिशादाह एटले सर्व दिशाखं बळती होय एवो देखाव थतो होय, आ विगेरे छत्पातवने युक्त एवो दिवस छष्ट—अशुज हे ३०. इति रजश्बन्नारम्। (१)

संकंतीए पुर्व संकंति दिणं तयग्गिमं च दिणं। विज्ञाजा तह संकंति दृष्टतिहिउं श्र एश्राउं॥ ३ए॥ सूर्य संक्रांति जे दिवस बेसती होय तेनी पहेलांनो एक दिवस, तेनी पढ़ीनो एक दिवस छाने तेज एक दिवस एम ए त्रण दिवस तथा संक्रांतिए करीने दग्ध तिथिछो छा छागल गाथामां कहे हे तेने शुज कार्यमां वर्जवी. ३ए

दग्ध तिथि कहे हे.

धणुमीणगए बीआ विसे अ कुंते अ तह चल्यीए। कक्कममेसे ठठी अठिम मिहुणो अ कन्ने आ। ४०॥ विश्वियसीहे दसमी तुले आ मयरे आ बारसी जिएया। एआ दहतिही वक्के अवा पयतेणं॥ ४१॥

धन के मीननी संक्रांतिमां बीज दग्ध तिथि कहेवाय हे. वृष के कुंज संक्रांतिमां चोथ, कर्क के मेष संक्रांतिमां हफ, मिथुन के कन्या संक्रांतिमां खाहम ४०. वृश्चिक के सिंह संक्रांतिमां दशम तथा तुला के मकर संक्रांतिमां बारश ए तिथि दग्ध तिथि कहेवाय हे. ते शुज कार्यमां प्रयक्षे करीने वर्जवी. ४१.

सिस्राणं गहणं जंमि दिणंमि तमाइन कानं। सत्ति विणाइं वज्जह ताइं जर्न गहणदहाइं॥ ४२॥

चंद्र श्रयवा सूर्यनुं ग्रहण जे दिवस थयुं होय ते दिवसथी श्रारंजीने सात दिवस वर्जवा, कारण के ते ग्रहण दग्ध कहेवाय है. ४२. । इति संक्रांतिदग्धग्रहणदग्ध-तिथयः॥ इति दिनदारम् । (२)

सूरे बारिस सोमे इगारसी दसिम मंगक्षे वजा। नविम बुहे गुरु छाठिम सत्तिम सुक्किम्म सिण विछी॥ धर ॥

बारश ने रिववार होय, श्रामियारश ने सोमवार होय, दशम ने मंगळ होय, नोम ने बुध होय, श्राटम ने गुरु होय, सातम ने शुक्र होय तथा उठ ने शनिवार होय तो ते वर्ष्य हे, कारण के ते कर्क योग कहेवाय हो. धरे. । इति कर्कयोगः ।

सिस्र्रिवेणे सत्तमि तङ्खा सुक्किम ढिछ गुरुवारे। पडिवय तङ्या य बुद्दे विविज्ञियार्ज सुद्दे कङ्गे॥ ४४॥

सोम के रिववारे सातम होय, शुक्रवारे त्रीज होय, गुरुवारे ठिए होय, बुधवारे प्रमवो के त्रीज होय तो ते शुज कार्यमां वर्ष्य हो, केमके ते संवर्तक योग कहेवाय है. धर्ध इति संवर्त्तकयोगः।

जिंडा महा विसाहा अणुराहा रविदिणम्मि विज्ञा । आसादार्ज इन्निय तह य विसाहा उ सोमम्मि॥ ४५॥

रविवारने दिवसे जो ज्येष्ठा, मधा, विशाखा के श्रानुराधा होय तो ते वर्ज्य है, सोम-वारे पूर्वाषाढा, जत्तराषाढा के विशाखा होय तो ते वर्ज्य है. ४५.

सयजिस श्रद्द धणिठा मंगलवारिम पुवजदवया । मूलऽस्सिणि जरणी रेवईर्ड विज्ञिज्ञ बुहवारे ॥ ४६॥

मंगळवारे शतिजिपक्, आर्जा, धनिष्ठा के पूर्वाजाजपद होय, बुधवारे मूळ, आश्विती जरणी के रेवती होय तो ते पण वर्ज्य हे. ध६.

रोहिणि मिश्रसिर श्रदा सयजिसया विहण्फद्दिणिमा। रोहिणिमहश्रसिलेसापुस्साई सुहाई नो सुके ॥ ४७ ॥ गुरुवारे रोहिणी, मृगशिर, श्रार्कों के शतजिषक होय, शुक्रवारे रोहिणी, मधा, श्रम्लेषा के पुष्य होय तो ते सुलकारक नथी. ४७.

उत्तरफग्युणि इत्थो चित्ताऽऽसाढा छुगं च एयाई। पंच वि नकतांइ सणिवारे विज्ञिट्यदांइ॥ ४०॥

शनिवारे जत्तराफाहगुनी, इस्त, चित्रा, पूर्वाषाढा के जत्तराषाढा ए पांच नक्षत्रमांनुं कोइ एक होय तो ते वर्जवा योग्य हे. ४०. इति वारनक्षत्राशुक्रयोगाः ।

विज्ञज्ञ नरिष चित्ता उत्तरसाढा तहेव य धिष्ठा। उत्तरफग्रुषि पुस्सं रेवइ सुराइसु कमेणं॥ ४ए॥

रिववारे जरणी होय, सोमवारे चित्रा होय, मंगळवारे छत्तराषाढा होय, बुधवारे धिनष्ठा होय, गुरुवारे छत्तराफाहगुनी होय, गुरुवारे पुष्य होय अने शिनवारे रेवती होय तो ते वर्जवा योग्य हे. ४ए। इति प्रहजन्मनक्त्रागुजयोगः। इति अगुज-योगदारम्। (३)

श्रद्धपहरो कुर्वाठं ठवकुविठं श्रमुहकाबहोरा य । एए वि हु दिणदोसा वज्जेश्रवा सुहे कज्जे ॥ ५०॥

अर्धप्रहर, कुलिक, जपकुलिक अने अशुज काळहोरा ए पण दिवसना दोषो हे, ते शुज कार्यमां तजवा योग्य हे. ५०.

कुज सिश्च रिव बुह सिण सिस ग्रंहवारेसु विवक्तिणिक्तो य। श्रद्धप्पहरो बिश्ति ३ चन्ठ ४ पंच ५ ठ ६ सत्त ५ ठमो ० कमसो ॥५१॥ मंगळवारे बीजो श्रर्धप्रहर तजवा योग्य हे, शुक्रवारे त्रीजो, रिववारे चोथो, बुधवारे पांचमो, शनिवारे हो, सोमवारे सातमो श्रने गुरुवारे श्राहमो श्रर्धप्रहर (श्रर्धो पहोर) तजवा योग्य हे, ५१.

दिणवाराचे जइमा सणिग्रहणो तइयमद्भपहरेसु । कुलिचे तह जवकुलिचे जहसंखेणं मुणेयवो ॥ ५१॥

इष्ट दिवसना वारथी जेटलामो शनिवार होय तेटलामा ऋर्धप्रहरने कुलिक योग जाएवो अने इष्ट दिवसना वारथी जेटलामो गुरुवार होय तेटलामा अर्धप्रहरने छप-कुलिक जाएवो. आ बन्ने योग अशुन्त हे. ५२.

त्रा सु बु सो स गु मं तंवलयं जाणाहि कालहोर ति। श्रहाइक्ता घडिया दिणवाराजं गणसु पढमं॥ ५३॥

रिववारे पहेखी होरा रिवनी, बीजी शुकनी, त्रीजी बुधनी, चोश्री सोमनी, पांचमी शिननी, उठी गुरुनी, सातमी मंगळनी ए रीते वखयाकारे उठे उठे वारे गणतां दरेक वारे चोबीश चोबीश होरा होय जे. जे वारे गणवी होय ते वारे पहेखी पोतानीज होरा गणवी. ते दरेक होरा श्रदी घनीनी होय जे. ५३. इति श्रद्धेपहरादिदारम्। (४)

। इति मूखदारेषु निदाँपमिति दारम्। ए

संज्ञागयं र धूमिय २ मार्लिगिय ३ दहु ४ विद्ध ५ सोवगहं ६ । खत्ता ५ पाए ७ क्करगल ए इ.सिअं इस्र इंछ रिकाई ॥ ५४ ॥

संध्यागत १, भूमित २, स्त्राविंगित २, दग्ध ४, विद्य ५, सोपग्रह ६, खता ७, पात ए स्रने एकार्गल ए, स्त्रा नव योगश्री छूपित श्रयेखां छष्ट नक्षत्र तजवा योग्य हे. ५४.

संब्रागयं १ रविगयं १ विड्डेरं ३ सग्गहं ४ विखंबं च ५ । राहुद्द्यं ६ गह जिल्लं ७ विवज्जए सत्त नकते ॥ ५५ ॥

संध्यासमये जदय पामेखं नक्षत्र १, सूर्य साथे रहेखं २, विद्वर ३, बह सहित ४, विद्वर ३, बह सहित ४, विद्वर १, राहुषी हणायेखं ६, बहुषी जेदायेखं ७, ए सात नक्षत्रो शुज कार्यमां अजवा योग्य हे. ५६.

संप्रागयंमि कलहो आइचगए न होइ निवाणी। विद्वेरे परविजर्ज सगहंमि अ विग्गहो होइ॥ ४६॥ दोसो असंगयत्तं होइ कुजुत्तं विलंबिनकत्ते। राह्रहयम्मि अ मर्रणं गहनिन्ने सोणिअग्गालो॥ ५७॥

संध्यागत नेक्त्रमां कार्य करवाथी केलह याय, सूर्यगतमां करवाथी निवृत्ति थाय नहीं, विद्वरमां करवाथी सामानो विजय हे, यह सहितमां करवाथी वियह (लक्ताइ) याय. ५६ । सूर्ये जोगवीने मूकेल एवा विलंबी नक्त्रमां करवाथी असंगतिपणुं (विवाद) याय हे, राहुथी हणायेला नक्त्रमां कार्य करवाथी मरण याय अने प्रहथी जेदायेला नक्त्रमां कार्य करवाथी सरण याय अने प्रहथी जेदायेला नक्त्रमां कार्य करवाथी लोहीनुं वमन थाय. ५९.

अत्यमणे संज्ञागय र रिवगय जिल्ले विर्व उ श्राह्यो १। विद्वेरमवद्दारिय ३ सग्गहं क्र्रग्गहित्रं तु ४॥ ५०॥ रिविरिक पिष्ठनं जं विखंबि ५ राहुहयं जिहें गहणं ६। मञ्जेणं जस्स गहो वच्च तं हो इ गहिन तं ९॥ ५७॥

सूर्यास्तसमये जे नक्त्र पूर्व दिशामां छगतुं होय ते संध्यागत कहेवाय छे १, जे नक्त्रमां सूर्य रहेलों होय ते नक्त्र रिवगत कहेवाय छे १, जे नक्त्र वक्री शहे श्रिधि- छित होय ते विद्वर कहेवाय छे ३, जे नक्त्र क्रूर शहे श्रिधिष्ठत होय ते शह सिहत कहेवाय छे ४, ए०। सूर्यना नक्त्रनी पाछळ जे नक्त्र होय ते विलंबी नक्त्र कहेवाय छे ५, जे नक्त्रमां शहण शयुं होय ते नक्त्र राहुश्री हणाये छुं कहेवाय छे (आ शहण छं नक्त्र ज्यां सुधी सूर्यवके न जोगवाय त्यां सुधी अशुज्ज छे) ६, तथा जे नक्त्रनी मध्ये कोइ पण शह रहेलों होय ते शहजिल्ल-शहथी जेदाये छुं नक्त्र कहेवाय छे ७. एए। इति संध्यागतादीनि छ।

सिणमंगलाण पुरो धूमिय १ मालिंगियं च तत्ज्ञुतं ३। छालिंगियस्स पञ्चा जं रिस्कं तं जवे दुः ४॥ ६०॥

शनि अने मंगळनी सन्मुख जे नक्षत्र होय ते धूमित कहेवाय छे २, अने शनि के मंगळथी युक्त जे नक्षत्र होय ते आिंदिंगित कहेवाय छे २, तथा आिंदिंगितनी पाछळ जे नक्षत्र होय ते दग्ध कहेवाय छे ४. ६०.

तिरियं सत्तसलाया जहार्जं सत्त ताण मञ्जेणं। जनरिमपढमसलागाण कित्तिया तयणु सेसाणि॥ ६१॥ दाउं नकताई दिक्त गहे तिहणंमि जो जत्य। तो जोइक्ता वेहं गणयवरो य चंदरिकस्त ॥ ६१ ॥ जइ एगसलागाए एकदिसिं हुक्त चंदनकत्तं। बीश्रदिसाए हुक्ता को वि गहो तो जवे वेहो ॥ ६३ ॥

तिरही (आमी) सात शलाका—लींटी है करवी, तथा हजी पण सात शलाका करवी, तेनी मध्ये हपरनी प्रथम शलाकाने हेमें कृत्तिका मूक हुं, त्यारपही वाकी नं नहां अनुक्रमें मूकवां. ६१. पही जे दिवसे कार्य करवानुं होय ते दिवसे जे प्रहों जे नहां तो वहां ते नहां मूकवां. पही चंद्र नहां तो (इष्ट नहां तो) वेध गणकवरे (जोशीए) जोबो. ६२. ते आ रीते—जे चंद्र नहां (इष्ट नहां ते) एक शलाका पर एक दिशामां होय तेनी सामी दिशाए तेज शलाका पर कोइ पण प्रह होय तो ते वेध कहेवाय हे. ६३.

उत्तरसाढापाए चल्यए सवणपढमघिष्यासु । चलसु य श्रिक्ति तस्य छिए गहे रोहिणी वेहो ॥ ६४ ॥

जत्तराषाढानुं चोशुं पाद अने अवणनी प्रथमनी चार धनी, आटडो समय अनिजित् नक्त्र हे, तेमां कोइ ग्रह रह्यो होय तो रोहिणी नक्त्रनी साथे तेनो वेध थाय हे. ६४.

पंच 5 चलदस ठार इग्रणवीस छ्वीस तेवीसे। चलवीसमे अरिके लवग्गहो सूरिरकार्ल ॥ ६५॥

सूर्यना नक्त्रथी पांचमुं, घ्याठमुं, चौदमुं, घ्यडारमुं, छंगणीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं श्रने चोवीशमुं जे नक्त्र होय ते छपग्रह कहेवाय हे. ६५ । इति छपग्रहघारम् ।

रिव मंगल गुरु सिणियो छवालसं १२ तज्य ३ वठ ६ अठमयं ए। निअरिकार्ड कमेणं रिकं लत्तंति अग्गिमयं॥ ६६॥

रिव पोताना नक्षत्रथी आगळना वारमा नक्षत्रने खात मारे हे, मंगळ त्रीजाने, गुरु हाने अने शनि आहमाने खात मारे हे. ६६.

बुह सुक राहु पुन्निमसिएो पिठेण निययरिकस्स । सत्तम ९ पंचम ८ नवमं एबावीसइमं १२ च खत्तंति ॥ ६७ ॥

बुध पोताना नक्तत्रथी पाठळना सातमा नक्तत्रने खात मारे हे, शुक्र पांचमाने, राहु नवमाने अने पूर्णिमानो चंद्र पोताना नक्तत्रथी पाठळना बावीशमा नक्तत्रने खात मारे हे, अर्थात् बुध पोताना नक्तत्रथी आगळना त्रेवीशमा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमाने, राहु एकवीशमाने अने चंद्र आठमा नक्षत्रने लात मारे हे. ६९. इति लक्तादारम्।

अस्सेस महा चित्ता अणुराहा सवण रेवई होइ। जञ्मा रविरिकार्ज पार्ज अस्सिणीइ तञ्मंमि॥ ६०॥

सूर्यना नक्त्रणी अश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा, अवण अने रेवती, आ नक्त्रों केटलामां होय, अश्विनी नक्त्रणी गणतां तेटलामुं नक्त्र पात नामे कहेवाय हे. जेमके सूर्यनुं नक्त्र कृतिका हे. तेनाणी अश्लेषा सातमुं हे, तो अश्विनीणी सातमुं नक्त्र पुनर्वसु हो, माटे ते पुनर्वसु पात कहेवाय हे. तथा मघा आहमुं हे, चित्रा बारमुं हे, अनुराधा पंदरमुं हे, अवण वीशमुं हे अने रेवती पचीशमुं हे, माटे अनुक्रमे पुष्य, उत्तराफाहगुनी, स्वाति, पूर्वाषाहा अने पूर्वाजाइपद ए नक्त्रों पात कहेवाय हे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं. ६०. बीजी रीत नीचे प्रमाणे हे.

श्राइचो जत्य ठिउं तत्तो श्रणुराह जइमिया होइ। तत्तो ठठे ठठे दस बीए पंचमे पाउँ॥ ६ए॥

सूर्य जे नक्त्रमां रह्यो होय ते नक्त्रयी अनुराधा जेटलामुं होय, अश्विनीधी गणतां तेटलामुं नक्त्र पात जाणवुं. त्यांथी पाढुं जे उडुं होय ते पात जाणवुं. त्यांथी वळी जे उडुं होय ते पात, त्यांथी जे दशमुं होय ते पात, त्यांथी जे बीजुं होय ते पात आणवुं. जेमके कृत्तिका नक्त्रनो सूर्य होय तो कृत्तिकाथी अनुराधा पंदरमुं हो, तेथी अश्विनीथी गणतां पंदरमुं जे स्वाति ते पात थयुं. स्वातिथी उडुं पूर्वाषाढा पात थयुं. पूर्वाषाढाथी उडुं पूर्वापाढाथी रात थयुं. तेथी दशमुं पुनर्वसु, तेथी बीजुं पुष्य अने तेथी पांचमुं जत्तराफाहगुनी पात थयुं. एटले उपली रीत प्रमाणेज मळतुं आव्युं. ६ए. अहीं अजिजित् गणवानुं नथी एटले सत्यावीश नक्त्र गणवां.

पढमो ठठो नवमो दसमो तह तेरसो अ पन्नरसो। सत्तरसे ग्रणवीसो सत्तावीसो अ एयाणं॥ ७०॥ जो जोगो तस्संखं रिकं जइमं हविज्ञ रविरिका। तइमे सिरिके अस्सिणीइड इक्रग्गलो होइ॥ ७१॥

विष्कंजादिक सत्यावीश योगमांनो पहेलो, उठो, नवमो, दशमो, तेरमो, पंदरमे, सत्तरमो, जंगणीशमो अने सत्यावीशमो एटला योगमांनो जे योग (शूळ) जेटलामो (ए) होय अश्विनीथी तेटलामी (ए) संख्यावाळुं नक्त्र (अश्लेषा) रविना नक्ष-

त्रथी (पूर्वीपाढाथी) गणतां जेटलामुं (१०) थाय तेटलामुं (१०) श्रश्विनीथी चंद्रनुं नक्षत्र (ज्येष्ठा) होय तो एकार्गल थाय हे. १००५१.

एकार्गेलनी वीजी रीत आ प्रमाणे हे.-

तिरियं तेरस रेहा एका तम्मञ्जगामिणी उद्घं। काऊणं चक्कमिणं सिरिरकं दिक्क तस्स सिरे॥ ३२॥ विसमे जोगे इकं अठावीसं समंमि दिक्काहि। अद्धी कयंमि तंमि उजंतं इह मुणसु सिरिरकं॥ ३३॥ अस्सिणि अणुराहा वि य मियसिर मूलो पुणवसू पुस्सो। असबेस महा चित्ता विस्कंजाईसु सिरिरका॥ ५४॥

श्रामी तेर रेखा करवी, तेमनी मध्ये एक छन्नी रेखा करवी, ए प्रमाणे चक्र करीने तेना मस्तक पर शिर नद्द्यत्र देवुं, पठी वीजां नद्द्यों श्रानुक्रमें मूकवां. शिर नद्द्यत्र कयुं समजवुं ? तेनी रीत श्रा प्रमाणे—विष्कं नादिक (श्रायुन्त) योगोमांनो जे योग इष्ट दिवसे होय ते योग जो विषम (एकी) होय तो तेमां एक छमेरवो श्राने बेकी होय तो तेमां श्राञ्चावीश छमेरवा. पठी तेने अर्घा करवा. जे शेप रहे तेटलामुं नद्द्यत्र शिर नद्द्यत्र जाणवुं एटले के तेटलामुं नद्द्यत्र मस्तक पर मूकवुं. तेनां नाम श्रा प्रमाणे छे—विष्कं योग होय तो मस्तक पर श्राव्यती श्रावे, श्रात्यता होय तो श्राव्यता श्रावे, श्राव्यता होय तो मृगशिर, गंम होय तो मूळ, व्याघात होय तो पुनर्वस्त, वन्न होय तो पुष्य, व्यतिपात होय तो श्रावे तो पित्रा नद्द्यतिपात होय तो श्रावे होय तो पित्रा नद्द्यतिपात होय तो श्रावे होय तो पित्रा नद्द्यतिपात होय तो श्रावे होय तो पित्रा नद्द्यतिपात होय तो श्रावे हो (श्रुन्त योगमां एकार्गल श्रातेज नथी.) ७१-७३-७४.

सिरिरकां कमेणं सत्तावीसं पि दिक्क रिकाइं। रेहासु तासु कमसो रिकेसु य ठवसु सिस्स्रे॥ ७५॥ एकाए रेहाए जइ डिन्न वि हुंति चंद याइचा। एकगढो हु एवं जायइ नकत्तदोस ति॥ ७६॥

पठी मलकना नक्षत्रथी अनुक्रमे ते रेखार्च जपर अनुक्रमे सत्यावीश नक्षत्रो मूकवां जी ते नक्षत्रो जपर ज्यां संजवे त्यां सूर्य अने चंड्र मूकवा ७५. हवे जो एकज रेखा अपर सामसामा सूर्य अने चंड्र वक्षे आव्या होय तो ते एकार्गल योग अयो जाएवो आक्षत्रनो दोषरूप हो. ९६. इति एकार्गलड्यारम् ।

। इति मूखदारेषु निर्दोषनक्तत्रदारम् । ए

सगुणं पुण विन्नेयं रिकं रविजोगसंजुर्झं तं च । रविरिकार्जं चज्रत्थं ४ ठ ६ न्नव ए दस १० तेरसं १३ वीसं १० ॥ ९९ ॥ सूर्यना नक्षत्रथी चोश्चं, बहुं, नवमुं, दशमुं, तेरमुं अने वीशमुं नक्षत्र जो होय तो रिव योग जाणवो. ते रिव योगवमे युक्त एवा नक्षत्रने सगुण नक्षत्र जाणवुं. ९९.

॥ इति सगुणनकत्रदारम् ॥ १०

॥ इति दिनशुद्धिः ॥ २

इतो वि खग्गसुद्धी सा पुण ववग्गसुद्धिर्घ होइ १। जदयत्यसुद्धिर्घ तह जहुत्तगहबलगुणेणं च ३॥ ७०॥

हवे तम्रशुक्ति कहीए जीए. ते (तम्रशुक्ति) ज वर्गनी शुक्तियमे होय जे १, जदय अने अस्तनी शुक्तियमे होय जे १, तथा यथोक्त महबळना गुणवमे होय जे ३. ३०.

गिह १ होरा २ दिकाणा ३ नव ४ वारस ५ तीस ६ श्रंसया य जिहें। सोमग्गहाण तणपा ठवग्गसुद्धी तिहें लग्गे ॥ ७ए॥ लग्नना गृह १, होरा २, देष्काण ३, नवांश ४, दादशांश ५ अने त्रिंशांश ६, ए

विश्वना गृह १, हारा २, ज्याल २, नवारा ७, जावसास २ व्या । नरा। विश्वना स्वामी जो सौम्य यह होय तो ते पड्वर्गशुद्धि कहेवाय वे. ९ए.

जइ पुण व्वग्गसुद्धी संजवइ न चेव कह वि सग्गिम। तो पंचवग्गसुद्धी विसुद्धिहेऊ वि सग्गस्स ॥ ए० ॥

जो कदाच कोइ पण प्रकारे खग्नमां छ वर्गनी शुद्धि न संज्ञवे तो पांच वर्गनी शुद्धि पण खग्ननी शुद्धिनुं कारण्रूप हे. ए०.

एसा य बारसन्हं लग्गाणं जंमि तीसइ विजागे। संजवइ तयं बुहं लग्गपमाणं कहेऊणं॥ ७१॥

प्रथम लग्ननुं प्रमाण कहीने पठी आ लग्नशुद्धि वार लग्नोमां जे तिंशांशमां संज्ञे हे ते हुं कहीश. ए१.

दोइगुण्वीस दोएगवन्न सय तिन्नि तिजुञ्ज तेञ्जाला। सगयाल सत्ततीसा मेसाइ पला कमुक्कमर्ज ॥ ए२ ॥

मेष लग्नना २१ए पळ हे, बृषना २५१ पळ हे, मिथ्रनना २०२, कर्कना २४२, सिंहना ३४९ छने कन्याना २२९ पळ हे, तेथी जत्कमे बीजी ह राशिना जाणवा, एटखे के

तुलाना २२७, वृश्चिकना २४७, धनना २४२, मकरना २०२, कुंजना २५१ छने मीनना २१ए पळ हे. ०२.

विस १४ मयराण १४ चछद्से छाठमए मीण एकक एक क्राणं ए। जायम्मि बारसे विश्वियस्स १२ क्षंजस्स छवीसे १६॥ ए३॥ चछवीसमे तुलाए १४ मेसस्सिगवीसमंमि जागम्मि ११। सीहस्स ठारसमे १० धणमिहुणाणं च सत्तरसे १९॥ ०४॥ इय तीसइजागेसु छवग्गो हुंति पंचवग्गो वा। सोमग्गहाण तण्डं हियइ श्वियक क्रासि दिकरो॥ ०४॥

वृष अने मकरनुं खग्न होय तो तेनो १४ मो त्रिंशांश, मीन, कर्क अने कन्या खग्न होय तो तेनो आठमो त्रिंशांश, वृश्चिक खग्ननो वारमो त्रिंशांश, कुंज खग्ननो ठवीशमो, तुला खग्ननो चोवीशमो, मेष खग्ननो एकवीशमो, सिंह खग्ननो अहारमो अने धन तथा मिथुननुं खग्न होय तो तेना सत्तरमा त्रिंशांशमां ठ वर्गनी अथवा पांच वर्गनी शुद्धि होय हे. तेमां जो सौम्य ग्रहो स्वामी होय तो ते हृदयना इन्नित कार्यनी सिद्धि करनार थाय हे. एर-ए४-एए.

खन्ने नवंसगं चिय एगं घित्तूण सोमगइतणयं। पन्नणंति लग्गसुद्धिं विणा वि व्यग्गसुद्धीए॥ ए६॥

केटलाएक आचार्यों छ वर्गनी शुद्धि न होय तोपण सौम्य मह जेनो स्वामी होय एवा एक नवांशनेज महण करीने लग्ननी शुद्धि कहे छे. ए६.

गिह होराई खग्गे गहस्स जं जस्स संतिश्चं होइ। तं संपइ पयमत्थं बुह्चं श्चबुहाण बोहत्थं॥ ए९॥

समने विषे गृह तथा होरा विगेरेने तथा जे समनी जे स्वामी होय तेने हवे श्रकात जनना बोधने माटे हुं प्रगटपणे कहुं हुं. 09.

कुजसुक्कबुहिं फुरविबुइ सियकुजग्रहसणी सणीगुरूणं। मेसाईव्या ज बारस खग्गाण घराइं जइसंखं॥ ए०॥

मंगळ १, शुक्र २, बुध २, चंद्र ४, रिव ५, बुध ६, शुक्र ७, मंगळ ०, गुरु ए, शिन १०, शिन ११ अने गुरु १२ ए मेप आदिक बार लग्नना मही अनुक्रमे हे. ००.

। इति गृहम् ।

लग्गस्सद्धं होरा सा पढमा दिण्यरस्स विसमिम। बीधा य तहिं सिसणो विवज्जएणं समे लग्गे॥ ज्या

खन्ननो अर्घ जाग होरा कहेवाय है. तेमां मेप, मिश्रुन विगेरे विषम (एकी) राशिमां पहेली होरा सूर्यनी अने बीजी होरा चंजनी हे, अने वृष, कर्क विगेरे सम राशिमां तेथी विपरीत एटले पहेली होरा चंजनी अने बीजी सूर्यनी हे. एए. इति होरा।

दिकाणो स्र तिजागो सो पढमो निययरासिस्रहिवइणो। बीउ पंचमपहुणो तइई पुण नवमगिहवइणो॥ ए०॥

देष्काण ए खग्ननो त्रीजो जाग है. तेमां पहेलो देष्काण पोतानी राशिना स्वामीनो होय, बीजो तेथी पांचमी राशिना स्वामीनो श्रने त्रीजो नवमा स्थान (राशि)ना स्वामीनो होय है. ए॰. इति देष्काणः।

मेसे मेसाईश्रा विसंमि मयराइया नवंसार्छ । मिहुणिम्म तुलाईया कके ककाइया हुंति ॥ ए१ ॥ पुण मेसमयरतुलककडाइया चन्नस सीहमाईस । एवं धनुहाईस वि नवंसया हुंति नायदा ॥ ए१ ॥

मेष खन्नमां मेषने आदि लड़ने नव नवांशो गणवा, वृषमां मकरथी गणवा, मिथ्रुनमां नुलाथी अने कर्कमां कर्कथी गणवा. ए१. एज रीते सिंह विगेरे चार राशिमां अने धनु विगेरे चार राशिमां अने धनु विगेरे चार राशिमां अनुक्रमे मेष, मकर, तुला अने कर्कथी आरंजीने नव नव नवांशो गणवा. ए१. इति नवांशाः।

बारसन्नागो पयको सो पढमो निष्ठरासिणो होइ। बीर्ज बीयस्स उ जाव बार बारसस्स नवे॥ ए३॥

दरेक राशिमां बार बार घादशांश होय है. तेमां पहेली घादशांश पोतानी राशिनोज होय, बीजो पहीनीज राशिनो होय, एम अनुक्रमे गणतां बारमो घादशांश पोत-पोतानी राशिश्री बारमी राशिनो आवे हे. ए३. इति घादशांशाः ।

कुजसिण्युरुबुहसुका पण्य पण्य थ छड एसत्त ७ पंच ५ छंसाणं। विसमे तीसंसं पहू विवज्जएणं समे लग्गे ॥ ए४ ॥

दरेक राशिमां त्रीश त्रीश त्रिंशांश होय हे. तेमां विषम राशिमां पहेला पांच त्रिंशां-शोनो स्वामी मंगळ हे, बीजा पांचनो शिन हे, त्यारपहीना आहनो गुरु हे, त्यार- पढ़ीना सातनो बुध श्रने त्यारपढ़ीना (बेहा) पांच त्रिंशांशोनो स्वामी शुक्र बे, श्रने सम राशिमां एथी विपरीत जाणवुं, एटले के ५-५-०-७-५ श्रंशोना स्वामी श्रनुक्रमे शुक्र, बुध, गुरु, शनि श्रने मंगळ जाणवा. ए४. इति त्रिंशांशाः।

ससहरग्ररुबुहसुका सोमा सामन्नर्छ मुणेयदा। सेसा य हुंति कूरा तङ्ख्य बुह खीणसिसणो छ॥ ए५॥

चंद्र, गुरु, बुध अने शुक्र ए चार ग्रहो सामान्य रीते सौम्य जाणवा, अने बाकीना (रिव, मंगळ, शिन) क्रूर जाणवा, तथा ते क्रूर ग्रहे सिहत बुध होय तो ते क्रूर जाणवों अने क्षीण चंद्रने पण क्रूर जाणवो. एए.

। इति षड्वर्गशुद्धिः ।

उदयस्थसुद्धिमिन्हिं जणामि उदर्ज नवंसगो इस्य । तम्मिय खग्गविद्वत्ने सनाइदिष्ठे उदयसुद्धी ॥ ए६ ॥

हवे जदयासानी शुष्ति कहुं हुं. इहां ते खग्नमां वर्त्ततो जे नवमांश होय तेनो स्वामी खग्नने देखे ते जदयशुष्ति जाणवी. ए६.

लगो नवंसगो जो तस्सत्तमठाण छिहवई पिछे। लगा सत्तमठाणं जह तो इह छत्यसुद्धि ति ॥ ए७॥

स्ममां जे नवांशक होय तेनाथी सातमा स्थाननो स्वामी जो समयी सातमा स्थानने जुए तो श्रहीं ते श्रस्तशुद्धि कहेवाय हे. ए०.

वयगहणपञ्जासु जदयत्यविसुद्धि विज्ञिष्ठं पि सुहं। मन्नंति केञ् लग्गं तं च मयं बहुमयं नेह ॥ एउ॥

त्रतग्रहण (दीहा) तथा प्रतिष्ठादिकमां खदयास्तनी विशुष्टि विना पण केटलाएक खन्नने शुज्ज माने हे, पण ते मत घणाने संमत नथी. ए०.

इह उदयत्यविसुद्धी गहदिछीए विणा न संजवइ। एएण पसंगेणं गहदिछी संपवस्कामि॥ एए॥

आ जदयास्तनी शुद्धि प्रह्नी दृष्टि जाण्या विना संजवती नथी, तेथी आ प्रसंगे हुं प्रह्नी दृष्टि कहुं हुं. एए.

सठाणार्ज दसमं ठाणं त्रत्यं च पायदिछीए । पिष्ठंति गद्दा नवमं सपंचमं श्रद्ध दिछीए ॥ १००॥

परणाए दिछीए चल्थयं श्रहमं च पिहंति। सवाए सत्तमयं सुहासुहफलं च दिष्टिसमं॥ १०१॥

सर्व प्रहो पोताना स्थानथी दशमा तथा त्रीजा स्थानने एक पाद दृष्टिए जुए हे, नवमा तथा पांचमा स्थानने वे पाद दृष्टिए जुए हे, चोथा तथा श्राहमा स्थानने पोणी एटले त्रण पाद दृष्टिए जुए हे, श्राहम स्थानने सर्व एटले चार पाद दृष्टिए जुए है. श्रा सर्वनुं शुजाशुज फळ दृष्टिनी जेवुं जाणवुं. १००-१०१. इति खदयास्तशुद्धिः।

लग्गस्स गहा बिखणो इवंति ते जत्थ संविया वाणे।

तं वुद्धं दिस्काए पढमं पञ्चा पञ्चाए ॥ १०२ ॥

ते सम्मना प्रहो जे स्थाने रहीने बळवान् होय हे ते प्रथम हुं दीकाने आश्रीने कहुं हुं, अने पही प्रतिष्ठाने आश्रीने कहीश. १०२.

दिस्का लग्गे दो पंच उठ इकारसो रवि सुइउ। चंदो बीउ तइउ उठो इकारसो तहय॥ १०३॥

दीका सम्मां रिव बीजे, पांचमे, उठे के अगीयारमे होय तो ते शुज है, चंड बीजे, बीजे, उठे के अगीयारमे शुज है. १०३.

तइनं नि दसमो इकारसमो कुजो बुहो य सुहो। वन्गगनं चन पंच सत्तम नव दसमगो य गुरू॥ १०४॥

मंगळ श्वने बुध लग्नथी त्रीजे, उठे, दशमें के अगीयारमें होय तो शुज हे, गुरु पहेंखें चोथे, पांचमे, सातमे, नवमें के दशमें शुज हें. १०४.

तइन विद्या नवमो खुवालसो सुंदरो जवे सुक्को । बीर्न पंचमन श्रष्टमो श्र इक्कारसो श्र सणी ॥ १०५ ॥

शुक्र त्रीजे, उंचे, नवमे के वारमे होय तो सारो, अने शनि बीजे, पांचमे, आठमे के अगीयारमे होय तो शुज हे. १०५.

जपर कहेलानेज संकेपथी कहे हे.-

खुपण्डिं छतिङ्के तिडद्सि तिडद्सि तिकोण्किंदेसु । तिडनवबारिस खुपण्ठ सिब्दगारेसियं मुत्तुं ॥ १०६॥

खन्नश्री रिव बीजे, पांचमे, इन्ने सारो, चंड बीजे, त्रीजे, उन्ने शुज, मंगळ त्रीजे, उन्ने, दशमे सारो, बुध त्रीजे, उन्ने, दशमे सारो, गुरु त्रिकोण एटखे नवमे, पांचमे तथा केंड्र एटले पहेले, चोथे, सातमे अने दशमे सारो, शुक्र त्रीजे, छठे, नवमे अने बारमे सारो. तथा रानि बीजे, पांचमे अने आठमे सारो. शुक्रने डोमीने सर्वे प्रहो अगीयारमे स्थाने सारा. १०६.

गुरु बुद्द संसिसूराणं ठवग्गो इद्द सुहो न सेसाणं।

जा जल उद्यगसुद्धी पुदुत्ता सा पश्ठाए ॥ १०७ ॥

गुरु, बुध, चंद्र (शनि) स्रने रविनो छ वर्ग (छ वर्गनी शुद्धि) स्रहीं (दीहामां) शुप्त हो, पण बीजा प्रहोनी शुद्धि शुप्त नथी। तथा पूर्वे जे ह वर्गनी शुद्धि कही हे ते प्रतिष्ठा आश्रीने हे। १०४।

श्रहवा वि मिष्निमवलं काऊण सिणं गुरुं च बलवंतं। अवलं शुक्कं लग्गे तो दिस्कं दिङ्का सीसस्स ॥ १००॥

श्रथवा तो लग्नमां शनिने मध्यम बळवाळो करीने, गुरुने बळवान् करीने तथा शुक्रने निर्बळ करीने शिष्यने दीका देवी. १००.

इ पण व श्रहेकारस वाणे मिन्नमबलो सणी होइ।

खगगर्ज चं चं सत्तम दसमो श्र ग्रह जवे बखवं ॥ १०ए॥

बीजे, पांचमे, उटे, आउमे अने अगीयारमें स्थाने रहेलो शनि मध्यम बळवाळो होय हे, अने गुरु पहेले, चोथे, सातमे तथा दशमें होय तो ते बळवान् हे. १०९

वठो इवालसो तह अवलो सुको सुहो वयग्गहणे।

दो तह्य पंच छिकारसमो तह बुहो सुहर्छ ॥ ११० ॥

तथा उंडो अने बारमो शुक्र निर्वळ हे. ते व्रतग्रहणमां शुज हे, तथा बुध बीजे, व्रीजे, पांचमे, हंडे के अगीयारमें होय तो ते शुज हे. ११०.

तइए उठे दसमे इकारसमिम मंगसे लग्गे।

दिकं पत्तो सत्तो जायइ बहुनाण तव जुत्तो ॥ १११ ॥

त्रीजे, उछे, दशमें के अगीयारमें मंगळ होय एवा लग्नने विषे दीकित अयेख सत्त्व (साधु) बहु ज्ञान अने तपवमे युक्त आय है. १११.

सुकंगारयमंदाण सत्तमे ससहरे गहियदिको।

पी िक इस अवस्मं सत्य इसी खत्तवा ही हिं॥ १११॥

शुक्त, मंगळ अने शनिथी सातमे चंद्र होय अने जो दीहा दीधी होय तो शस्त्र, मुःशीखपणुं अने ज्याधिवमे अवस्य ते पीमाय हे. ११२.

१ गुरु बुह सणि सूराणं इति प्रत्यन्तरे.

इय दिस्काकुं मिलया दिसिमित्तं दंसिया मए एवं । वुक्वं इर्जं पइठाकुं मिलयमहं समासेणं ॥ ११३ ॥ आ प्रमाणे दीकानी कुंमळी में दिग्मात्र देखामी हे. इवे प्रतिष्ठाकुंमळीने संकेपथी कहुं हुं. ११३.

गुरुबुहसुका सुहया लग्गगया मिष्मो ससी लग्गे। सूरंगारयसणिणो वज्जेयदा पयत्तेणं॥ ११४॥

गुरु, बुध अने शुक्र लग्नमां रह्या होय तो ते शुज्ज हे, चंड रह्यो होय तो ते मध्यम हे अने रिव, मंगळ अने शनिने लग्नमां प्रयत्नथी वर्जवा, एटले के तेर्च अशुज्ज हे. ११४

गुरुबुइसिसणो सुहया बीए ठाणिम मिश्रमो सुको।

कज्जस्स विणासयरा दिणयरसणिमंगला बीत्रा॥ ११५॥

बीजा स्थानमां गुरु, बुध अने चंद रह्या होय तो ते शुज हे, शुक्र होय तो ते मध्यम हे अने सूर्य, शनि अने मंगळ कार्यनो विनाश करनारा हे, एटखे के तेर्ड अशुज हे. ११५.

तज्य मिम सुद्दा रिवस सिबुह जोमस िष्ठिरा न संदेहो ।
मिश्रमर्ज सुरमंती सुक्को ज श्रासुंदरो तज्ज ॥ ११६॥
श्रीजा स्थानमां रहेला रिव, चंज, बुध, मंगळ श्राने श्रीज हो, तेमां कांड पण संदेह नथी. गुरु होय तो ते मध्यम हे श्राने शुक्र श्राज हो. ११६.

खग्गार्ठ चलस्यगया गुरुबुहसुका सुहावहा जिएया।
मञ्जूत्थो स्र चलत्थो चंदो सेसा गहा स्रसुहा ॥ ११५॥
धन्नश्री चोषा स्थानमां रहेला गुरु, बुध स्रने शुक्तने शुक्तावह कह्या हे, चोस्रे स्थाने
रहेलो चंद्र मध्यम हे स्रने बाकीना एटले रिव, मंगळ स्रने शिन स्रशुक्त हे. ११५.

रविससिकुजसुक्कसणी पंचमठाणिस्म मिश्रमा नेश्चा।
बुहगुरुणो पुण इिल्ला वि सवस्थपसाहया तस्थ ॥ ११७॥
बग्नथी पांचमे स्थाने रिव, चंड, मंगळ, शुक्र अने शिन होय तो ते मध्यम जाणवा,
अने बुध तथा गुरु ए वे बहो पांचमे स्थाने होय तो सर्व अर्थना साधक है. ११०.

रविससिकुजगुरुसणिणो ठठे ठाणिम संविश्रा सुहया। सुक्कबुहा पुण ठठा मिक्रमया हुंति नायदा॥ ११७॥ उंदे स्थाने रहेला रिव, चंद्र, मंगळ, गुरु अने शिन शुप्तकारक हे, अने शुक्र तथा बुध उद्दे स्थाने होय तो ते मध्यम जाएवा. ११ए.

सत्तमठाणिम्म ग्रेरु सुइउं सियससिबुहा य मञ्जरथा। सणिसूरमंगला पुण वज्जेखवा पयत्तेणं॥ १२०॥

सातमे स्थाने गुरु गुज हे, गुक्र, चंड अने बुध मध्यम हे, तथा शनि, सूर्य अने मंगळ सर्व प्रयत्ने वर्जवा योग्य हे—अगुज हे. १००.

श्राइच सोममंगस बुहगुरुसुका विवज्जणिज्ञार्छ ।

अन्नगणि निम विया (गया) सणिहरो मिन्नमो जणि ।। १११॥ आवमा स्थाने रहेला सूर्य, चंद्र, मंगळ, बुध, गुरु अने शुक्र वर्जवा योग्य वे अने शनिने मध्यम कहो। वे. १२१.

नवमिम सुद्दा जिएया सुक्कगुरू मिश्रमा य बुद्दसियो। वज्जेयवा य स्वया सिथमंगलदिययरा नवमा॥ १११॥

नवमें स्थाने शुक्र अने गुरु शुज कहा। हे, बुध अने चंद्र मध्यम कहा। हे, अने नवमें स्थाने रहेला शनि, मंगळ अने रिव वर्जवा योग्य हे. १९१.

बुइगुरुसुका तिन्नि वि दसमिम हवंति कज्जसिक्षिकरा। सिससिणणो मञ्जरथा श्रमुहा रिवमंगला जुन्नि ॥ १२३॥

दशमें स्थाने रहेला बुध, गुरु श्रने शुक्र ए त्रऐ कार्यनी सिष्टि करनारा है, चंद्र श्रने शिन मध्यम है, श्रने रिव तथा मंगळ ए वे श्रशुन है. ११३.

सूराईया सत्त वि इकारसगा छ कज्जसिक्किरा। बारसमा पुण सबे विन्नेया छत्यहाणिकरा॥ १२४॥

रिव विगेरे साते ग्रहो अगीयारमा होय तो कार्यनी सिद्धि करनारा है, अने बारमें स्थाने होय तो ते सर्वे कार्यनी हानि करनारा है. १२४.

इवे रिव विगेरे साते प्रहोना शुज स्थाननो संप्रह अनुक्रमे कहे हे.--

विष्ठे छुगे छ वर्षे छाइम प्ण दसमयिम छति छिहे।

चल नव दसगे ति लगे सहेगारे न बारसमे ॥ ११५॥

रिव उन्ने स्थाने होय तो सारो है, चंड बीजे स्थाने, मंगळ उन्ने स्थाने, बुध पहेलां पांच एटले पहेले, बीजे, त्रीजे, चोथे, पांचमे अने दशमे, गुरु त्रीजुं अने आउमुं मूकीने श्रश्नीत् पहेले, बीजे, चोथे, पांचमे, उठे, सातमे, नवमे अने दशमे स्थाने शुज, शुक्र चोथे, नवमे अने दशमे, अने शनि त्रीजे अने उठे सारो हे. सर्वे प्रहो अगीयारमे स्थाने सारा हे अने बारमे स्थाने अशुज हे. १२५.

श्रयवा.

श्रहवा इग इग चल पंच नवम दसमा सुहा सोमा।

कूरा बठा चंदो बीर्ज सबे वि इकारा ॥ ११६ ॥

श्रथवा तो सौम्य यहो (चंड, बुध, गुरु, शुक्र) पहेले, बीजे, चोथे, पांचमे, नवमे श्रमे दशमें स्थाने शुज हो, कूर यहो (रिव, शिन, मंगळ) हां स्थाने शुज हो, चंड बीजे स्थाने शुज हो, तथा सर्व यहो श्रगीयारमें स्थाने शुज हो. १२६.

इय बिंबपइछा सूरिष्ठवण रायाजिसेश्र बीवाहे।

श्रन्ने वि य सुद्दकड़ोसुं कुंमिलया कड़ासि किंकरा ॥ १२७ ॥

आ प्रमाणेनी कुंमळी विवप्तिष्ठा, सूरिपदनी स्थापना, राजानिषेक, विवाह स्रने वीजां पण शुज कार्योमां कार्यनी सिद्धि करनारी हे. १२७.

जइ पुण तुरियं कक्तं हविक्त लग्गं न लग्नए सुद्धं। तो धुवपयञ्चायाई निच्चं लग्गं गहेयवं॥ १२०॥

जो कदाच राीघ्रताथी कार्य करवुं होय छाने शुद्ध लग्न न मळतुं होय तो ध्रुव छाने पदछायादिके करीने हमेशनुं लग्न ग्रहण करवुं. १२०.

तिरियं वियम्मि धुवए करिक्त दिस्का पइन्नाईयं।

ज्रुक्तियिन्मि तिन्मि य कुणसु धयारोवणप्पमुहं ॥ ११ए॥ धुवने तिरहो (आमो) राखीने दीका अने प्रतिष्ठादिक कार्य करवां, अने ते धुव कर्ष्य (जनो) रह्यो होय तो ध्वजारोपण आदि कार्य करवां. ११ए. इति धुवलग्नं।

तणुडायाइपयाइं सिण्सिससुकेसु श्रद्धनव विज्ञा । श्रुठ बुद्दे नव जोमे सितकारस गुरुरवीसु ॥ १३०॥

शनि, सोम अने शुक्रवारे शरीरनी हायाना सामाआत पगलां लेवां, बुधवारे आत, मंगळवारेनव, गुरुवारे सात अने रविवारे अगीयार पगलां लेवां. ते वखते शुज कार्य करवुं. १३०.

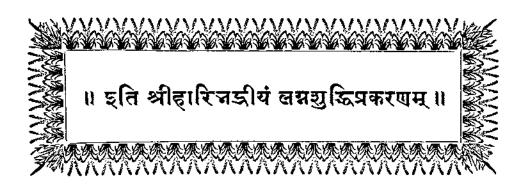
एयं डायालग्गं बुहेहिं सबुत्तमं समकायं। सबविसुके वि दिणे सुहावहं सबकजोसु॥ १३१॥ श्रा बाया लग्नने विदानीए सर्वोत्तम कहां हे, श्रने सर्व विशुद्ध दिवसे पण श्रा लग्न सर्व कार्यमां सुलकारक हे. १३१.

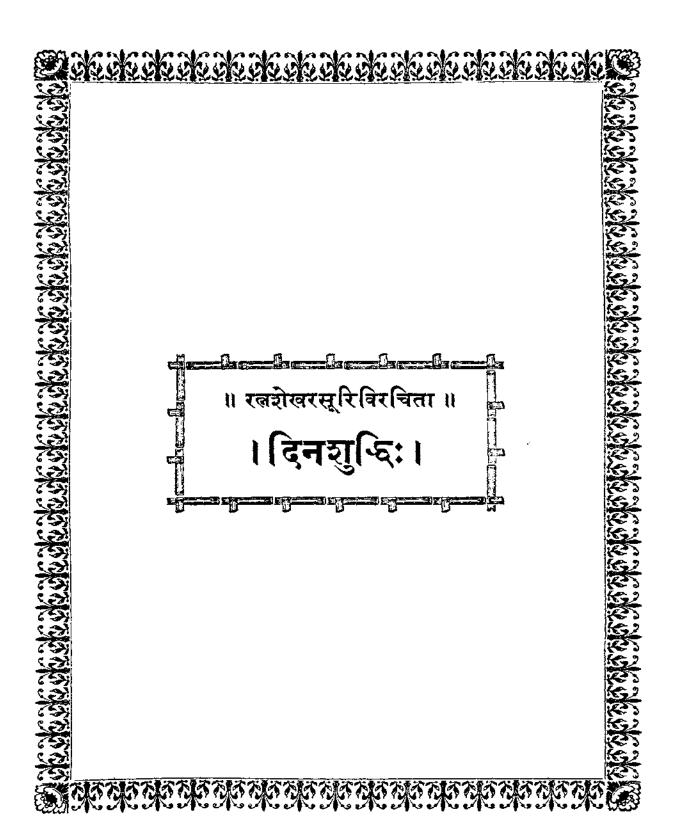
श्य सुंदरे वि लग्गे सुहसजणबढोण कुणसु किचाई। छाहव निमित्तवढोणं वयणमिणं हारिज्ञहं ति॥ १३२॥

श्रा प्रमाणे सुंदर खग्नने विषे पण शुज शकुनना बळे करीने श्रयवा शुज निमित्तना बळे करीने कार्यो करवां. ए प्रमाणे चौदसो चुमाळीश ग्रंथकर्ता श्री हरिजड सूरि-महाराजनुं वचन छे. १३१.

इय तिविहसुद्धिजुत्तं तीए विज्तं च संसियं खग्गं। जं किंचि इह श्रजुत्तं वुत्तं सोहिंतु तं विज्ञसा ॥ १३३॥ श्रा प्रमाणे त्रण प्रकारनी शुद्धिश्री युक्त तथा त्रण श्रशुद्धिश्री वियुक्त (रहित) एवं खग्न कह्यं. श्रहीं जे कांइ श्रयोग्य कह्यं होय ते विद्यानोए शोधवुं. १३३.

॥ इति श्रीहारिजडीयं लग्नशुद्धिप्रकरणम् ॥





।। दिनशुद्धिः ॥

॥ अथ रत्नरोखरसूरिविरचिता ॥

॥ दिनशुक्तिः॥

जोइमयं जोइग्रुरुं वीरं निमऊण जोइदीवाछ । दिणसुद्धि दीविष्यमिणं पयमत्थं चेव पयडेमि ॥ १ ॥

ज्योतिषमय अने ज्योतिषना गुरुरूप श्रीमहावीर खामीने नमस्कार करीने ज्योतिष-रूपी दीवा श्रकी आ प्रगट अर्थवाळा दिनशुद्धि नामना दीपकने हुं प्रगट करुं हुं. रै. प्रथम वारना अधिपतिजेने तथा तेनी सौम्य विगेरे संज्ञाने कहे हे.

रविचंदजोमबुहग्रंरसुकसणीया कमेण दिणनाहा। चं सु ग्रं सोमा मं स र कूराय बुहो सहायसमो॥ १॥

रिव, चंद्र, त्रीम, बुध, गुरु, शुक्र अने शनि ए अनुक्रमे वारोना स्वामी है. तेमां चंद्र, शुक्र अने गुरु ए त्रण सौम्य है, मंगळ, शनि अने रिव ए त्रण कूर है, तथा बुध सहायनी जेवो है, एटले के सौम्य यह साथे रह्यो होय तो सौम्य है, अने कूर साथे रह्यो होय तो कूर है, तथा एकलोज होय तो ते सौम्यज है. २.

हवे वारने विषे होराउने कहे हे.-

चं स ग्र मं र सु बु वखयकमसो दिणवारमाइ छ किचा। सम्चर्मी दोमाणा होराहिव पुत्रफलजण्या ॥ ३॥

श्रदी घनीनी एक होरा होवाशी एक रात्रि दिवसमां चोवीश होरा श्रावे हे. ते होराजेना स्वामी श्रा प्रमाणे हे.—चंछ, शिन, गुरु, मंगळ, रिव, शुरु श्रावे बुध श्राविद्याकारना श्रमुक्रमथी दिवसना वारने प्रथम करीने श्रदी घनीना प्रमाणवाळी होराना श्रिधपिति हो, एटखे के सोमवारे पहेखी होरा चंछनी, वीजी शिननी, त्रीजी गुरुनी, चोशी मंगळनी, पांचमी रिवनी, हिर्ही होरा चंछनी, वीजी शिननी, पही श्राहमी चंछनी, नवमी शिननी एम श्रमुक्रमे चोवीशे होराना स्वामी जाणवा. एज रीते शिनवारे पहेखी होरा शिननी, वीजी गुरुनी, त्रीजी मंगळनी एम गणतां सातमी चंछनी, पही फरीने श्राहमी शिननी विगेरे. ए रीते जे दिवसे जे वार होय ते वारना नामनी पहेखी होरा गणीने त्यारप्रहीना श्रा वखयमां गणावेखा श्रमुक्रमे स्वामी जाणवा. श्राहमे स्वामी जाणवा. श्राहमे स्वामी वारना पूर्ण फळने श्रापनारा हे, एटले के सौम्य प्रहमो

वार अने सौम्य ग्रहनी होरा ए बन्नेमां करेख़ं कार्य संपूर्ण शुज फळ आपे हे. (होरानो अधिपति सारो न होय तो वारनुं फळ $\frac{2}{5}$ मळे हे, एम अन्य ग्रन्थोमां कह्यं हे.) ३.

हवे वारनी प्रवृत्ति क्यारे थाय हे ? ते कहे हे.-

विश्चिश्चकुंजाइतिए निसिमुहि विस्पणुहि किक्कतुिखमे । मकमिहुण कन्नसिंहे निसि श्रंते संकमइ वारो ॥ ४॥

वृश्चिक अने कुँजादिक त्रण एटखे कुंज, मीन अने मेप आ चार संकांतिमां वारनी प्रवृत्ति रात्रिना प्रारंजे थाय हे, वृष, धन, कर्क अने तुद्धा ए चार संकांतिमां रात्रिना मध्य समये वारनी प्रवृत्ति थाय हे, तथा मकर, मिथुन, कन्या अने सिंह ए चार संकांतिमां रात्रिने अंते वार प्रवर्ते हे ध

इवे वारने आश्रीने सुवेळाने कहे हे.---

चल्चिमिश्र सुवेला एग दो उच्च सूरे, पण इग अम सोमे अह चल सत्त जोमे। इ तिश्र अम बुहंमी पंच दो सत्त जीवे, इ शिहग चल सुके तिन्नि सत्तह पंच॥

रिववारे पहेलुं, बीजुं अने उद्घं ए त्रण चोधनीयां सुवेळा कहेवाय हे, सोमवारे पांचमुं, पहेलुं अने आठमुं चोधनीयुं सुवेळा हे, मंगळवारे आठमुं, चोशुं अने सातमुं, बुधवारे उद्घं, त्रीजुं अने आठमुं, गुरुवारे पांचमुं, बीजुं अने सातमुं, शुकवारे उद्घं, आठमुं, पहेलुं अने चोशुं, तथा शनिवारे त्रीजुं, सातमुं, आठमुं अने पांचमुं चोधनीयुं सुवेळा हे. ५.

हवे कुलिक, कंटक, छपकुलिक तथा काळवेळाने कहे छे.—

रिवबुहसुका सत्तव हायंता कुलिय कंट उवकु सिया। स्रम ति व इग चव सग दो सूराइसु कालवेलाउं॥ ६॥

रिववारे सातमो अर्धप्रहर (चोघमीयुं) कुलिक योग कहेवाय हे, बुधवारे सातमो अर्धप्रहर कंटक योग कहेवाय हे, अने शुक्रवारे सातमो अर्धप्रहर उपकुलिक योग कहे-वाय हे. त्यारपहीना वारे एक एक अर्धप्रहरनी हानि करीने कुलिक, कंटक अने उप-कुलिक योग कहेवा. ते नीचेना यंत्रश्री जाण्या.

योग	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	शुक	शनि	<u></u>
कुलिक	9	६	ų	ម	३	। २	*	अधप्रहर.
कंटक	Ę	२	3	3	६	પ	ਬ	ऋर्धप्रहर-
जपकु सिक	Ų	ื่ย	३	3	?	3 .	Ę	श्रधंपहर.

रिववारे आठमो अर्धप्रहर काळवेळा कहेवाय हे, सोमवारे त्रीजो अर्धप्रहर, मंगळ-वारे होते, बुधवारे पहेलो, गुरुवारे चोथो, शुक्रवारे सातमो अने शनिवारे बीजो अर्ध-प्रहर काळवेळा कहेवाय हे. ६.

हवे वर्ष्य श्रध्यहर तथा गमनादिकमां वर्ष्य दिशाने कहे हे.— ता चउजुष्य श्रद्धपहरा तेसिं सोलम्झतीसङ्ग्राचक । चडस्र मञ्जपक्षा हेया पुत्राड दिसि वर्ष्टी ॥ ॥

छपर कहेली काळवेळामां चार जेळवीए तो ते वर्ज्य अर्धबहर आय हे, अने ते वर्ज्य अर्धबहरना मध्यना रिववारथी अनुक्रमें सोळ, आठ, बत्रीश, बे, एक, चार, अने चोसर पळो पूर्वीदिक हां हिशाए यात्रादिकमां वर्जवा योग्य हे. ते नीचेना यत्रथी जाण्डुं. प

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	गुक	शनि
काळवेळा	Ū	3	ξ.		В	a	হ
वर्श्य ऋर्धप्रहर	Я	9	2	પ	ū	₹	६
श्चर्धप्रहरना मध्य पळो यात्रादिकमां वर्जवा.	१६ पूर्व	ए वायव्य	३१ दक्तिण	् २ ईशान	१ पश्चिम	ध अग्नि	६ ध छत्तर

ऋर्धप्रहर.

॥ इति वाराः ॥

हवे तिथिदार कहे हे. तेमां प्रथम तिथिडोनां नंदादिक नामो कहे हे.— नंदा जदा य जया रित्ता पुन्ना य तिहि सनामफला। पिनवह हि इगारिस पमुहा ड कमेण नायवा॥ ए॥

नंदा, जजा, जया, रिक्ता अने पूर्णा ए नामनी तिथिछं पोतानां नामने सहश फळ आपनारी हे. तेमां पमवो, ह्रच अने अगीयारश ए नंदा कहेवाय हे. एज अनुक्रमे जजादिक संज्ञा पण जाणवी. ते यंत्रथी जाणवी. ए.

	नंदा	न्नदा	जया	रिक्ता	पूर्णा
तिथि	?	ą	३	ਬ	Ų
तिथि	દ્	3	U	ড	₹ □
तिथि	22	१२	१ ३	१ 됩	१थ

शुज कार्यमां वर्ज्य तिथिलं .--

विष्ठी रित्तेष्ठमी बारसी अ अमावसा गयतिही छ। बुद्धतिहि कूरदद्धा विज्ञिज सुहेसु कम्मेसु॥ ए॥ इन्ह, रिक्ता (ध-ए-१४), आउम, बारश, आमावास्या, क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, ऋर तिथि अने दग्ध तिथि, आटखी तिथिनं शुज कार्यमां वर्जवा योग्य हे. ए.

मेसाइ चन्तु चन्रो तिही कमेणं च पुन्न सबेसु। एवं परन सकूररासि असुहा तिही वज्जा ॥ १०॥

मेषादिक चार संकांतिमां कोइ कर यह होय तो श्रमुकमे पहेली चार तिशिखे पूर्णी तिश्व सहित वर्ज्य हे. ए रीते श्रागळ पए जाए जुं, एटले के मेष संकांतिमां क्र यह होयतो एकम अने पांचम वर्ज्या योग्य हे, वृप संकांतिमां क्र यह होय तो बीज अने पांचम, मिश्रुन संकांतिमां क्र यह होय तो त्रीज अने पांचम तथा कर्क संकांतिमां क्र यह होय तो त्रीज अने पांचम तथा कर्क संकांतिमां क्र यह होय तो त्रीज अने पांचम वर्ज्या योग्य हे. एज रीते सिंह, कन्या, तुला अने वृश्चिक संकांतिमां क्र यह होय तो अनुकमे हक, सातम, श्राह्म अने नोम ए तिश्चिखं पूर्णी तिश्चि दशम सहित वर्ज्य हे. एज प्रमाणे धन, मकर, कुंज अने मीन संकांतिमां पण क्र यह होय तो अनुकमे अगीयारश, बारश, तेरश अने चौदश ए तिश्चिखं पूर्णिमा सहित वर्ज्या योग्य हे. एवी रीते क्र यहो सहित राशिखंनी अशुज तिथिखं शुज कार्यमां वर्ज्य हे. १०.

सूर्यदग्धा तिथिछं.—

वग चन श्राप्ति वही दसमहिम बार दसिम बीया छ। बारिस चन्दिय बील्या मेसाइसु सूरदृहदिणा॥ ११॥

मेष राशिनी संक्रांतिमां उठ दग्धा तिथि हे, वृष संक्रांतिमां चोथ, मिथुनमां आहम, कर्कमां हुन, सिंह संक्रांतिमां दशम, कन्या संक्रांतिमां आहम, तुला संक्रांतिमां बारश, वृश्चिक संक्रांतिमां दशम, धन संक्रांतिमां बीज, मकर संक्रांतिमां बारश, कुंन्त संक्रांतिमां चीथ आने मीन संक्रांतिमां बीज ए सूर्यदग्धा तिथिखं कहेवाय हे. ११.

। यंत्रम् ।

धन मीन संक्रांतिमां २, वृष कुंज संक्रांतिमां ४ मेष कर्क संक्रांतिमां ६, कन्या मिश्रुन संक्रांतिमां ए वृश्चिक सिंह संक्रांतिमां १०, मकर तुला संक्रांतिमां १२

॥ इति तिथिदारम् ॥

हवे करणदार कहे हैं.-

संज्ञिष चज्यय नागा किंत्युग्वा किण्ह चजदसि निसार्छ। विरकरण तीस घनिया पर्ज चलकरण एयाई॥ १२॥

बव-बाखव-कोखव-तेतिखक गर-विण्य-वििनामाणो । पायं सबे वि सुहा एगा विष्ठी महापावा ॥ १३॥

शकुनि, चतुष्पाद, नाग अने किंस्तुझ ए चार करणो स्थिर हे. ते दरेक त्रीश त्रीश घनीनां होय हे. तेमां पहेलुं शकुनि कृष्ण चतुर्दशीनी रात्रे होय हे, बीजुं चतुष्पाद अमावास्थाने दिवसे होय हे, त्रीजुं नाग अमावास्थानी रात्रिए होय हे अने चोथुं किंस्तुझ शुक्खपद्यना प्रतिपद्ने दिवसे होय हे, त्यारपही चर करणोनां नाम आ प्रमाणे हे.—बब, बालव, कौलव, तैतिल, गर, विण्ज अने विष्टि. प्राये आ सर्वे (स्थिर अने चर) करणो शुज हे, पण एक विष्टि महा पापा—महाजुष्ट हे. १२-१३.

विष्टि क्यारे होय हे ते कहे हे.--

किएहे परके दिणे जहा सत्तमी अ च उहसी। रितं दसिम तीआए सुके एगदिणुत्तरा॥ १४॥

कृष्णपक्षमां सातम अने चौदशना दिवसने विषे जड़ा (विष्टि) होय हे अने दशम तथा त्रीजनी रात्रिए जड़ा (विष्टि) होय हे. अने शुक्खपक्षमां एक दिवस पढ़ी आवे हे, एटखे के आहम अने पूनमना दिवसे तथा अगीयारश अने चोथनी रात्रिए जड़ा होय हे. १४.

ज्ञा कर तिथिए कया पहोरमां कर दिशाए सन्मुख होय ते कहे हे.—
च च इसी छाठिम सत्तमीए राका च उत्थी दसमी इन्हा।
एगारसी तीछ कमा दिसाहिं तस्संखजामे निमुहाऽतिपावा॥१५॥
यंत्र

चौदरो पहेला पहोरमां पूर्व दिशाए जा सन्मुल होय हे, धातमें श्रात्में खूणामां बीजे पहोरे सन्मुल होय हे, सातमें त्रीजा पहोरे दिशाण दिशामां, पूर्णिमाए चोथा पहोरे नैर्ऋत्य खूणामां, चोथे पांचमे पहोरे पश्चिम दिशामां, दशमें हुई पहोरे वायव्य खूणामां, अगीयारशे सातमे पहोरे उत्तर दिशामां अने त्रीजे आठमे पहोरे ईशान खूणामां जा सन्मुल होय हे. अश सन्मुल जा अति छुट हे. १५.

- q - q							
तिथि	प्रह र	दिशा					
? 8	?	પૂર્વ					
U	হ	श्रक्ष					
9	3	द हिए।					
१५	B	नैर्क्तत्य					
ื่	Ų	पश्चिम					
₹ □	ξ	वायव्य					
2.5	3	जत्तर					
३	U	ईशान					

जजानां अंग तथा तेनुं फळ कहे हे ---

पण छुग दस पण पण तित्र वििचडी वयण कंठ उरु नाही। किन पुछगा य सिद्धी खय निस्स कुबुद्धि कलह विजयकरा॥१६॥

विष्ट (ज्ञज्ञा) पहेली पांच घमी सुधी पोताना मुखमां रहे हो, त्यारपही वे घमी कंत्रमां रहे हो, त्यारपही दश घमी करमां रहे हो, त्यारपही पांच घमी नाजिए रहे हो, त्यारपही पांच घमी नाजिए रहे हो, त्यारपही पांच घमी कटीए रहे हो अने हेल्ली ज्ञण घमी पुल्लमां रहे हो, जो ज्ञा मुखमां रही होय ते वखते यात्रादिक श्चज्ञ कार्य करवामां आवे तो कार्यनी सिद्धि थाय हो, कंते रही होय तो हथ (नाश) करनारी थाय हो, करमां रहेली होय तो निर्धन करे हो, नाजिमां रही होय तो खराब बुद्धि करे हो, कटीमां रही होय तो क्लेश करावे हे अने पुछे रही होय तो विजयने करनारी थाय हो. १६.

हवे करणनी अवस्थार्च बतावे हे ---

किंत्युग्ध संज्ञि कोखव ज्ञहकरण तिक्ति तिन्नि सुत्ताई। तेइख नाग चज्जपय पण सेस निविष्ठकरणाई॥ १५॥

किंस्तुझ, शकुनि श्रने कौद्धव ए त्रण करणो जजेद्धां होय हे, तैतिख, नाग श्रने चतुष्पद ए त्रण करणो स्तेद्धां होय हे, तथा बाकीनां पांच करणो (बव, बाद्धव, गर, विण्जि श्रने विष्टि) बेहेद्धां हे. १९.

॥ इति करणघारम्॥ इवे नक्त्रो कहे हे---

अश्विनी १, जरणी २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशीर्ष ५, आर्जा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ७, अश्वेषा ए, मधा १०, पूर्वाफाहगुनी ११, उत्तराफाहगुनी १२, इस्त १३, चित्रा १४, स्वाति १५, विशाखा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १०, मूळ १ए, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१, अत्रिजित् २२, अवण २३, धनिष्ठा २४, शतजिषक् २५, पूर्वा- जाजपद २६, उत्तराजाजपद २६ अने रेवती २०. आ अख्यावीश नक्त्रों हे.

हवे दरेक नक्षत्रनी केटली तारार्छ होय १ ते कहे हे .-

ति ति उपण ति एग चक ति उपण छ छ पिएग एग चछ चछरो।
ति इगार चछ चछ तिगं ति चछ सयं छ छग बत्तीसं॥ १०॥
इश्च रिकाणं कमसो परिश्चरतारामिई मुणेयद्या।
तारासमसंखागा तिही वि रिकेसु विज्ञा ॥ १ए॥

नीचेना यंत्र परथी तारानी संख्यार्च जाएवी.

নহাস	तारा	नक्त्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक् त्र	तारा
अश्विनी	3	पुष्य	३	स्वाति	*	श्चित्रित्	₹
त्ररणी	ą	अ श्लेषा	ξ	विशाखा	ម	श्रवण	३
क्रिका	ξ	मधा	Ų	श्रनुराधा	ម	धनिष्ठा	ម
रोहिणी	Ų	पूर्वाफाङगुनी	হ	ज्येष्ठा	३	शत्रिषक्	₹ □ □
मृगर्शीर्ष	ą	जे त्तराफास्गुर्न	२	मूळ	११	पूर्वाजाइपद	र
स्त्रार्ज	*	इ स्त	Ų	पूर्वाषाढा	8	जत्तरा नाइपद	. व
पुनर्वसु	ម	चित्रा	₹	जेत्तरा षाढा	ង	रेवती	३१

आ प्रमाणे अनुक्रमे नहात्रोना परिवारजूत ताराजनुं प्रमाण जाणनुं. तारानी समान संख्यावाळी तिथि पण आ नहात्रोमां वर्जवा योग्य हे, एटले के अश्विनी नहात्र त्रीजने दिवसे होय तो ते वर्ज्य हे, रोहिणी नहात्र पांचमने दिवसे होय तो ते वर्ज्य हे. इत्यादि. अहीं शतिज्ञवकनी सो ताराज तथा रेवतीनी बत्रीश ताराज हे, तेथी तेने तिथिनी संख्या पंदरे जाग खेतां बाकी दश अने वे रहे हे, माटे शतिज्ञवक्त दशमने दिवसे होय अने रेवती नहात्र बीजने दिवसे होय तो ते वर्ज्य हे एम समजनुं. १०-१ए.

श्रिजित् नक्त्रनी समज तथा तेनी श्रावश्यकता-

ज-ला अंतिमपायं सवणपढम घिमश्र चन श्रजीइनिई। खत्तोवगाहवेहे एगग्गलपमुहकजोसु॥ २०॥

लत्तराषाढानो हेह्नो (चोथो) पाद अने अवणनी पहेली चार घमी आटला समय सुधी अजिजित् नक्त्रनी स्थिति होय हे, अने खत्ता, लपग्रह, वेध तथा एकार्गल ए विगेरे कार्योमां तेनी जरुर पमे हे. २०.

नक्त्रोना श्रक्रोनो यंत्र.--

चु चे चो ला श्रिश्विनी लि लु ले लो जरणी श्र इ ज ए कृत्तिका जे व वि वु रोहिणी वे वो क कि मृगशिर कु घ ङ ठ श्रार्का के को इ हि पुनर्वसु दु हे हो मा पुष्य ि कु में में श्रश्लेषा
म मि मु में मघा
मो ट टि डु पूर्वाफाहगुनी
टे टो प पि जत्तराफाहगुनी
पुषण ठ इस्त
पे पो र रि चित्रा
क रे रो ता स्वाति.
ति त ते तो विशाला।

॥ दिनशुद्धिः ॥

भ्रष

न नि नु ने श्रमुराधाः नो य यि यु ज्येष्टाः ये यो ज जि मूळः जु ध फ ढ पूर्वाषाढाः जे जो ज जि जत्तराषाढाः जु जे जो ख श्रजिजित् िख ख़ खे खो श्रवण.

ग गि गु गे धनिष्ठा.

गो स सि सु शतित्रपक्.

से सो द दि पूर्वाजाइपद.

इ श फ थ उत्तराजाइपद.
दे दो च चि रेवती.

॥ इति नक्तत्रपादाक्रराणि॥

हवे कइ राशिमां केटलां नक्त्रो आवे ? ते कहे छे.— कित्ति मिग पुण असेसा ज-फ चि विसा जिठ ज-ख धणी पू-जा। रेवइ अ एग छ ति चज पायंता बार रासि कमा ॥ ११॥

कृतिकाना पहेला पादना छांत सुधी मेष राशि होय हो, मृगशीर्षना वे पादना छांत सुधी वृष राशि होय हो, पुनर्वसुना त्रीजा पादना छांत सुधी मिश्रुन छाने छाश्येषाना चोथा पादना छांत सुधी कर्क राशि होय हो। एज प्रमाणे जत्तराफाहगुनीना एक पाद सुधी सिंह, चित्राना वे पाद सुधी कन्या, विशाखाना त्रण पाद सुधी तुला, ज्येष्ठाना चार पाद सुधी वृश्चिक, जत्तराषाहाना एक पाद सुधी धन, धनिष्ठाना वे पाद सुधी मकर, पूर्वात्राइपदना त्रण पाद सुधी कुंत्र छाने रेवतीना चार पाद सुधी मीन राशि होय है. ११. तेनुं यंत्र.—

- १ मेष---अश्विनी ध, जरणी ध, कृत्तिका १.
- २ वृष-कृत्तिका ३, रोहिली ४, मृगशीर्ष २.
- ३ मिथुन-मृग्शीर्ष २, ऋार्जा ४, पुनर्वसु ३.
- ध कर्के पुनर्वसु १, पुष्य ध, अश्लेषा ध.
- ५ सिंह--मधा ध, पूर्वाफाहगुनी ध, उत्तराफाहगुनी १.
- उ तुला—चित्रा २, स्वाति ४, विशाला २.
- ण वृश्चिक-विशाला १, अनुराधा ध, ज्येष्ठा ध.
- ए धन-मूळ ध, पूर्वाषाढा ध, खत्तराषाढा १.
- १० मकर-- जत्तराषाढा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २.
- ११ कुंज-धिन्षा १, शतजिषक् ध, पूर्वाजाइपद ३.
- १२ मीन—पूर्वाजादपद् १, उत्तराजादपद् ४, रेवती ४.

॥ इति नक्तत्रराशयः॥

हवे चंजनी बार अवस्थार्च कहे हे.—

गय इरिश्च मया मोया हासा किड्डा रई सयणमसणं। तावा कंपा सुत्था ससिवत्था बार नामफला॥ १२॥

दरेक राशिमां रहेला चंजनी वार अवस्था होय हे ते आ प्रमाणे—गता १, हता १, मृता ३, मोदा ४, हासा ७, कीमा ६, रित ७, शयन ७, अशन ए, तापा १०, कंपा ११ अने स्वस्था १२. आ बार चंजनी अवस्थार्च पोतपोताना नामनी सहरा फळने आपनारी हे. २२.

चंद्रनी बार अवस्था होवाथी दरेक राशिना बार वार छंशो थया. तेने आश्रीने शुजाशुज फळ कहे हे.—

पइरासि बारसंसा असुदा उ चए जर्ज सुहो वि ससी। एयाहिं हवइ असुहो सुदाहिं असुहो वि होइ सुहो॥ १३॥

दरेक राशिना बार बार अंशो है. तेमां जे अशुज अंशो है ते शुज चंड होय तोपण वर्जवा, कारण के ए अशुज अंशोए करीने सारो चंड पण अशुज थाय है, अने अशुज चंड पण शुज अंशोए करीने शुज थाय है. १३.

> दाहिणुचो समो चंदो उत्तरुचो हलोवमो। धणु वको अ सुखाजो जेसासु कमुक्कमा॥ १४॥

सूर्य संक्रांतिमां नवीन छदय थयेल चंज अनुक्रमे करीने तथा छरकमे (छलटा क्रमे) करीने दक्षिण दिशामां छंचो होय, सम होय, छत्तर दिशामां छंचो होय, हळ सहश होय ते श्रेष्ठ छे, अर्थात् मेष तथा मीन संक्रां-ितमां दक्षिण दिशामां छंचो होय, वृषज अने कुंजमां सम होय, मिथुन अने मकरमां छत्तर तरफ छंचो होय, कर्क अने धनमां हळ समान होय, सिंह अने वृश्चिक संक्रां तिमां धनुष समान वांको होय, कन्या अने तुला संक्रांतिमां नवीन छदय थयेल चंज श्रुळ सहश होय ते श्रेष्ठ जाणवो. बीजा काळमां अशुज छे. १४.

॥ इति चन्द्रबद्धम् ॥

हवे ताराबळने कहे हे ---

जम्मा कम्मं च आहाणं तारा श्रष्ठित श्रंतरे। सस्सनामफला सदा श्रंतरा इश्र नामिश्रा॥ १५॥

46

संपर्श त्रावर्श खेमा जामा साहण निक्रणा।
मित्ती परमित्ती त्र छुटा ति सग पंचमा॥ १६॥
जम्माहाणा विविक्तिक्ता गमे एयाहिं वाहिछ।
कटेण जीवर्श किण्हे पके चंडत्तरा धमा॥ १९॥

सत्यावीश ताराजंने त्रण खाइनमां मूकवी. तेमां पहेखी खाइनमां प्रथम जन्म, बीजी इनमां प्रथम कर्म अने त्रीजीमां प्रथम आधान एम आठ आठ ताराजंने आंतरे एंजेनी संक्षा जाणवी. ते पोतपोताना नामनी सददा फळ आपे हे. इवे आंतरानी ह आठ ताराजंनी संक्षा आ प्रमाणे हे (१५)—संपद् १, आपद् १, केमा ३, मा ४, साधना ५, निर्धना ६, मैत्री ७ अने परम मैत्री ०. (जपरनी एक एकने पे गणीए त्यारे नव नव याय हे.) तेमां त्रीजी, सातमी अने पांचमी ताराजं छुष्ट १६. तेनो यंत्र नीचे प्रमाणे.—

जन्म	संपद्	ञ्चापद्	क्सा	यामा	साधना	निर्धना	मैत्री	परम मैत्री
कर्म	u	11	11	11	11	- 11	11	11
श्राधान	ll l	II.	11	11	11	11	11	H

आमांथी जन्म स्रने स्राधान ए वे तारार्ख गमनमां तजवा योग्य हे. त्रीजी, पांचमी, मी, जन्म स्रने स्राधान स्रा तारामां व्याधि स्रइ होय तो ते महाकष्टे जीवी शके हे, बेके प्राये मरणुज स्राय. कृष्णुपक्मां स्रा तारार्खनुं वळ चंज करतां स्रधिक होय हे.२४.

> ॥ इति तारावसम् ॥ इवे रवि योग कहे हे.—

चज ब्रह नवम दसमं तेरस वीसं च सूरिरकार्छ । सिसरिकं होइ तया रिवजोगो असुहसयदलणो ॥ १०॥

र्यना नक्षत्रथी चंब्रुं नक्षत्र जो चोथुं, ढ्युं, नवमुं, दशमुं, तेरमुं के वीशमुं होय रिवयोग कहेवाय छे. स्त्रायोग सेंकमो स्त्रशुजने नाश करनार छे.२०.इति रिवयोगः

कुमार योग--

सोमे जोमे बुद्दे सुके अस्तिणाइं बिइंतरा। पंचमी दसमी नंदा सुद्दो जोगो कुमारछ॥ १ए॥

तोम, मंगळ, बुध के शुक्रवारे ख्रिन्विनी, रोहिएी विगेरे बबे आंतरावाळां (आ. रो. म. ह. वि. मू. श्र. पू—जा.) नक्षत्रमांनुं कोइ एक होय तथा पांचम, दशम के नंदा कम, उठ आने आगीयारश)मांनी कोइ पण तिथि होय तो कुमार योग डे. ते शुज डे. १ए.

राज योग-

सूरे सुके बुहे जोमे जहा तीया य पुन्निमा। विंतरा जरणीमुका राजजोगो सुहावहो॥ ३०॥

रिव, शुक्त, बुध के मंगळवारे जड़ा (बीज, सातम अने बारश), त्रीज के पूर्णिमा होय तथा जराणी, मृगशिर विगेरे बवे आंतरावाळां (ज. मृ. पुष्य. पू-फा. चि. अनु. [-पा. ध. छ-जा.) नक्त्रोमांथी कोइ पण होय तो ते राज योग कहेवाय हे. ते इसकारक हे. ३०.

स्थविर योग-

थितरो ग्रैरु सिष तेरिस रित्तिक कितिया छुगंतिरिया। रुखेळेखाणसणाई अपुण(णो)करणं इहं कुङ्जा ॥ ३१॥

गुरुवारे के शनिवारे तेरश, रिक्ता (चोथ, नोम श्रने चौदश) के श्राठम होय हो कृत्तिकाथी श्रारंजीने बबे श्रांतरावाळां (कृ. श्रा. श्रश्खे. छ-फा. स्वा. ज्ये. छ-षा. हे. रे.) नक्षत्रोमांथी कोइ पण होय तो ते स्थिवर योग कहेवाय छे. श्रा योगमां व्याधिनो ह (नाश) श्रने श्रनशन विगेरे फरीथी नहीं करवानां कार्यो करवामां श्रावे छे. ३१.

हवे यमस तथा त्रिपुष्कर योग कहे हे.-

मंगल गुरु सिण जद्दा मिग चित्त धिणिठिखा जमलजोगो। कित्ति पुण ज-फ विसाहा पू-ज ज-खाहिं तिपुक्तरत ॥ ३१॥

मंगळ, गुरु के शनिवारे जजा तिथि (१-७-१२) होय तथा मृगशिर, चित्रा श्रमें निष्ठा नहत्त्र होय तो ते यमल नामनो योग थाय हे तथा तेज वार श्रमें तेज तिथिए तो कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाहगुनी, विशाखा, पूर्वाजाजपद के उत्तराषाढा होय तो नेपुष्कर योग थाय हे. ३२.

पंचक योग.

पंचग धणिठ श्रद्धा मयिकश्रविक्षिक्त जामिदिसिगमणं। एसु तिसु सुहं श्रसुहं विहिश्चं छ ति पण गुणं होइ॥ ३३॥

धनिष्ठाना श्रर्ध जागधी रेवित पर्यंत (ध. श. पू-जा. छ-जा. रे.) पंचक कहेवाय है. ब्रा योगमां मृतक कार्य तथा दक्षिण दिशामां गमनने वर्जवुं. श्रा त्रणे योगमां करेखुं इज तथा श्रशुज कार्य श्रनुकमे वमणुं, त्रण गुणुं श्रने पांच गुणुं थाय हे. ३३.

विष्कं जादिक २९ योगो-

१ विष्कंज	ण धृ ति	१५ वज्र	११ साध्य
२ मीति	ए शूब	१६ सिक्वि	१३ शुज
३ श्रायुष्मान्	१० गंम	१७ व्यतीपात	१४ शुक्ल
ध सौजाग्य	११ वृद्धि	१७ वर्ीयान्	्र १५ ब्रह्मा
ए शोजन	१२ ध्रुव	१ए पुरिघ	१६ ऐन्ड्
६ इप्रतिग्ंम	१३ व्याघात	२० शिव	१९ वैधृति.
ष सुकर्मा	१ध हर्षेण	२१ सिक	

वर्जवाना योगो-

पण तस्तग नव घनिष्ठा विकंत छुगंन सूल वाघारं। परिहरूदिणं वज्जे विहिइ विईपाय सयलदिणं॥ ३४॥

विष्कंजनी पांच घमी च ज्ञज कार्यमां वर्ष्य हो, गंम अने अतिगंमनी ह घमी चं, शूळनी सात घमी च अने व्याघातनी नव घमी चं वर्ष्य हो. परिघनो अर्ध दिवस वर्ष्य हे तथा वेष्ट्रित अने व्यतीपातनो आखो दिवस वर्ष्य हो. ३४.

श्रानंदादिक २० छपयोगनी जःपत्ति तथा तेनुं फळ.-

श्चिति मिग श्रम्सेसा हत्य णुराहाय उत्तरासाढा। सयि जिसकमेण एए सूराइसु हुंति मुहरिका॥ ३५॥ निश्चवारे निश्चरिके मुहगणिए जित्तमं ससीरिकं। तावंतिमोवर्जगो श्चानंदाई सनामफलो॥ ३६॥

श्रश्विनी, मृगशिर, अश्वेषा, हस्त, अनुराधा, जत्तराषाढा अने शतिषक्, आनक्त्रो अनुक्रमे रिव आदि वारोने विषे मुख नक्त्रो होय हो, एटले के रिववारे अश्विनी, सोमवारे मृगशिर, मंगळवारे अश्वेषा, बुधवारे हस्त, गुरुवारे अनुराधा, शुक्रवारे जत्तरा- पाढा अने शनिवारे शतिषक् मुख नक्त्र कहेवाय हे. ३५. हवे पोताने वारे पोतानं नक्त्र मुख नक्त्रश्ची गण्वं, गणतां जेटलामुं चंद्र नक्त्र (पोतानं नक्त्र) आवे तेट- खामो आनंदादिक जपयोग जाण्योः ते जपयोगो पोताना नामनी सहश फळ आपनारा हे. जदाहरण—रिववारे रोहिणी नक्त्र होय तो ते अश्विनीथी गणतां चोश्रं आवे हे, तेशी आनंदादिकनो चोथो शूज जपयोग थयो विगरे. ३६.

श्चानंदादिक २० जपयोगनां नाम-

१ श्रानंद	📗 छ श्रीवत्स	१५ बुंपक	१२ मुशळ
२ काळदंग	ए वज्र	१६ प्रवास	2३ गज
३ प्राजापत्यं	१० मुद्गर	१७ मरण्	१ध मातंग
ধ গুৰ	११ वन	१० व्याखि	२५ क्य
४ सीम्य	१२ मित्र	१ए सिद्धि	१६ किप
६ ध्वांद्य	१३ मनोक्ष	२० शूळ	१९ स्थिर
ष्ठ ध्वज	१४ कंप	११ श्रमृत	२० वर्धमान

हवे वारने आश्रीने शुज तिथिलं कहे हे.-

नवमेगठमी सूरे सोमे बीख्या नविमखा। जोमे जया य उठी ख बुहे जहा तिही सुहा ॥ ३९॥ गुरु एगारसी पुत्रा सुके नंदाय तेरसी। सणिमि खठमी रिता तिही वारेसु सोहणा॥ ३०॥

रिववारे नोम, एकम स्थने स्थानम ए तिथिन शुज है. सोमवारे बीज स्थने नोम शुज है. मंगळवारे जया (३-७-१३) स्थने हुछ शुज है. बुधवारे जड़ा तिथि (१-७-१२) शुज है. ३९. गुरुवारे स्थानियारश स्थने पूर्णा (५-१०-१५) शुज है. शुक्रवारे नंदा (१-६-११) स्थने तेरश शुज है. तथा शनिवारे स्थानम स्थने रिका तिथि (ध-ए-१४) शुज है. ३०.

हवे वारने आश्रीने शुज नहात्रों कहे हे.—
रेविस्सणी धणिटा य पुण पुस्स तिछत्तरा।
सूरे सोमंमि पुस्सो अ रोहिणी अणुराह्या॥ ३७॥
जोमे मिगं च मूढं च अस्सेसा रेवई तहा।
बुद्दे मिगसिरं पुस्सा सेसा सवण रोहिणी॥ ४०॥
जीवे हत्थ स्सिणी पू—फ विसाहाङ्ग रेवई।
सुक्ते ज—फा ज—खा हत्थं सवणाणु पुणस्सिणी॥ ४१॥
सिणिमि सवणं पू—फा महा सयजिसा सुद्दा।
पुवत्ततिहिसंजोगे विसेसेण सुद्दावहा॥ ४२॥

१ मुहूर्त चिंतामणिमां त्रीजो धूम्र अने चोथो प्राजापत्य एटलो आ साथे फरक छे.

रिववारे रेवती, श्रिश्विनी, धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य के त्रण उत्तरा (उत्तराफाहगुनी, उत्तराषाढा, उत्तराजाजपद) होय, सोमवारे पुष्य, रोहिणी के श्रनुराधा होय. ३ए. मंगळवारे मृगिशर, मूळ, अश्लेषा के रेवती होय, बुधवारे मृगिशर, पुष्य, अश्लेषा, श्रवण के रोहिणी होय. ४०. गुरुवारे इस्त, अश्विनी, पूर्वाफाहगुनी, विशाखा जिक (विशाखा अने श्रनुराधा) के रेवती होय, शुक्रवारे उत्तराफाहगुनी, उत्तराषाढा, इस्त, श्रवण, श्रनुराधा, पुनर्वसु के अश्विनी होय. ४१. तथा शनिवारे श्रवण, पूर्वाफाहगुनी, मधा के शतिज्ञषक् होय तो ते शुज हे. तेमां पण उपर कहें दी शुज तिथिनो संयोग होय तो विशेषे करीने शुज हे. ४१.

अमृतसिद्धि योग-

हत्यं मिग स्सिणी चेवाणुराहा पुस्स रेवई।

रोहिणी वारजोगेणामिश्रसिक्षिकरा कमा ॥ ४३ ॥

रिववारे हस्त नक्षत्र होय, सोमवारे मृगशिर होय, मंगळवारे अश्विनी, बुधवारे अनुराधा, गुरुवारे पुष्य, शुक्रवारे रेवती अने शनिवारे रोहिणी होय तो ते अमृतिसिक्ति योग थाय हे. ते अत्यंत शुज हे. ४३.

जत्पात, मृत्यु, काण अने सिक्षि योग विषे.— वारेसु कमसो रिस्का विसाहाइ चऊ चऊ ।

जपायमञ्जकाणास्क सिद्धिजोगावहा जवे ॥ ४४ ॥

रिव आदिक वारोमां अनुक्रमे विशाखा विगेरे चार चार नहत्रो मूकवां. तेम करवाधी अनुक्रमे ज्ल्पात, मृत्यु, काण अने सिक्षि योगो थाय हे. ते नीचेना यंत्रथी जाणुवुं. धधः

	रवि	सोम	मंगळ	बुध	गुरु	যু ক	्र शनि
ज स्पात	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	जत्तराफा स्गुनी
मृत्यु	छन् राधा	ं ड त्तराषाढा	शत्। नषक्	ऋश्विनी	मृग(श्रेर	अ श्लेषा	ह स्त
	ज्येष्ठा	श्चिजित	पूर्वाञाञ्जपद	जरणी	आर्घा	मध्	चित्रा
सिकि	मूळ	श्रवण	उत्त राजा ५ ०	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफास्गुनी	स्वाति.
यमघंट तथा यह जन्मनक्षत्र.							

म वि या मू कि रो इ सूराइसु वक्त णिक्त जमघंटा।

ज चि ज—ख ध ज—फा जे रे इख्य ख्रसुहा जम्मरिस्का य ॥४५॥ रविवारे मधा, सोमवारे विशाखा, मंगळवारे ख्रार्डा, बुधवारे मूळ, गुरुवारे कृत्तिका, शुक्रवारे रोहिषी ख्रने शनिवारे इस्त होय तो यमघंट थाय हे. ते ख्रशुज हे. तथा जरणी, चित्रा, जत्तराषाढा, धनिष्ठा, जत्तराफाहगुनी, ज्येष्ठा छने रेवती ए सात रिव ख्रादिक गरना जन्मनक्त्र हे ते पण अशुज्ज हे, एटले के रिववारे जराएी नक्त्र होय तो ते दिवसे शुज्ज कार्य करतुं नहीं विगेरे. धूप.

कर्क योग-

गुरि सयजिस सणि जत्तरसाढा एया विवज्जए पायं। वारसि एगेगहीणा सूराइसु कक्कजोग्र चए॥ ४६॥

गुरुवारे शतिजवक् होय आने शनिवारे जत्तराषाढा होय तो ते प्राये वर्ज्य हे. तथा बारशाथी एक एक तिथि हीन करी रिव आदिक वारने विषे होय तो ते कर्क योग आय हे. ते आशुज हे, एटखे के रिववारे बारश होय, सोमवारे आगीयारश होय, मंगळवारे दशम होय, एम गणतां हेवटे शनिवारे हुछ होय तो कर्क योग आय हे. ते त्याग करवो. ४६. हवे वारने आशीने आशुज तिथितं कहे हे.—

विक सत्तमि इगार चवहसी सूरि सोमि सग बार तेरसी। मंगक्षे इग इगारसी बुहे वजाए इग चवहसी जया॥ ४९॥ विक चवित्र सहजहया गुरु सुक्कि बीश्र सह तीइ रित्तया। पुत्र सत्तमि सणिंमि सबहा वजाए इस्र तिही विसेसर्व॥ ४०॥

रिववारे उठ, सातम, अगीयारश अने चौदश अशुज हे. सोमवारे सातम, बारश अने तेरश, मंगळवारे एकम अने अगीयारश, बुधवारे एकम, चौदश अने जया (३-ए-१३) ए तिथिलं वर्जवा योग्य हे. ४९. गुरुवारे उठ, चोश्र अने जड़ा (१-५-१४), शुक्रवारे बीज, त्रीज अने रिक्ता (४-ए-१४) तथा शनिवारे पूर्णा (ए-१०-१५) अने सातम ए तिथिलं विशेषे करीने सर्वथा वर्ज्य हे. ४०.

॥ इति योगाः ॥

हवे अण प्रकारनं गंगांत तथा तेनं फळ कहे के.—
चरमाइमतिहिक्षगगरिक मन्नेगश्रद्धदोघिनश्रा।
तिज्ञसत्तंतरि मुत्तं पुणो पुणो तिविह गंगंतं॥ ४ए॥
निष्ठं न सप्नए श्रत्यं श्रहिद्छो न जीवई।
जानं वि मर्श्र् पायं पत्थिनं न निश्रत्त्र्ई॥ ५०॥

हेडी अने पहेडी तिथिने मध्ये (वच्चे), हेडा अने पहेडा खग्नने मध्ये तथा हैडा अने पहेडा नक्षत्रने मध्ये अनुक्रमे एक, अर्घ अने वे घमीनुं गंमांत आवे हे. त्यारपडी तिथिमां त्रण त्रणने आंतरे, खग्नमां बबेने आंतरे अने नक्षत्रमां सात सातने आंतरे बबे तिथ्यादिकनी बच्चे तेटखाज प्रमाणवाहुं गंमांत होय हे, तेथी दरेकने आशीने त्रण त्रण वार गंनांत छावे हे. ते नीचेना यंत्रथी जाणवुं. ४ए. गंनांतमां नाश पामेखी वस्तु फरी प्राप्त थती नथी, सर्पथी नसायो होय तो ते जीवतो नथी, कोइ बाळकनो जन्म थयो होय तो ते प्राये जीवतो नथी तथा परदेश गयो होय ते पाहो छावतो नथी. ए॰.

त्रण प्रकारना गंकांतनुं यंत्र.-

नाम	बेनी वच्चे	वेनी वच्चे	वेनी वचे	घर्मी.
तिथि गंमांत	१ ५१	ų⊶६	₹ □─ ₹₹	एक घनी.
खन्न गंगांत	मीन−मेष	कर्क-सिंह	वृश्चिक–धन	ऋर्घ घर्मी.
नक्त्र गंमांत	रेवती-श्चश्विनी	ऋश्खेषा-मघा	ज्येष्ठा-मूळ	वे घनी.

वज्रपात योग---

बीआणुराह तीआ तिग्रत्तरा पंचमीइ महरिकं। रोहिणि वही करमूल सत्तमी वज्जपाउँ यं ॥ ५१॥

बीजने दिवसे श्रनुराधा होय, त्रीजने दिवसे त्रण उत्तरा (उत्तरापादा, उत्तराफाहगुनी श्रने उत्तराजाइपद)मांथी कोइ एक होय, पांचमने दिवसे मधा नक्तत्र होय, उठने दिवसे रोहिणी होय तथा सातमे हस्त के मूळ होय तो चज्रपात योग श्राय हे. ते योग श्रायुज हे. ५१.

हवे मृतक श्रवस्थावाळां नक्षत्रोने कहे हे.—
मृखद्दसाइचित्ता श्रमेससयितसय कित्तिरेवइश्रा।
नंदाए जद्दाए जद्दवया फग्गुणी दो दो ॥ ५१ ॥
विजयाए मिग सवणा पुस्सिस्सिणि जरिण जिष्ठ रिताए।
श्रासाढछुग विसाहा श्रणुराह पुणवसु महा य ॥ ५३ ॥
पुन्नाइकरधिण्ठा रोहिणि इश्रमयगवत्थरिकाइं।
नंदिपइठापमुहे सुहकको वक्षए महमं॥ ५४ ॥

नंदा तिथिए मूळ, आर्डा, स्वाति, चित्रा, अश्लेषा, शतिषक्, कृतिका के रेवती होय, जड़ा तिथिए वे जाड़पद (पूर्वा तथा जत्तरा) अने वे फाहगुनी (पूर्वा तथा जत्तरा) होय. ५२. विजया (जया) तिथिए मृगशिर, अवण, पुष्य, अश्विनी, जरणी के क्येष्ठा होय, रिका तिथिए वे आषाढा (पूर्वा तथा जत्तरा), विशाखा, अनुराधा, पुनर्वस के मधा होय. ५३. अने पूर्णी तिथिए इस, धनिष्ठा के रोहिणी होय तो आ सर्व

१ नारचंद्रमां चोथने रोहिणी वजपात कहेळ छे. २ पुछ्व इति प्रसंतरे.

मृतक श्रवस्थावाळां नक्त्रो कहेवाय छे, माटे तेमां मितमान पुरुषे दीका, नंदी, प्रतिष्ठा विगेरे शुज कार्य वर्जवा योग्य छे. ५४.

नक्त्रोनी तीक्षण जम विगेरे संज्ञा तथा तेतुं फळ कहे हे.—
जिठहाऽसेस मूलं च तिस्का रिस्का विद्याहिया।
सिऊषि मिग चित्ता य रेवई अणुराह्या॥ ५५॥
पुस्सो अ अस्सिषी हत्यं अनिई लहुआ इमे।
लगाषि पंच रिस्काषि तिपुद्या नरणी महा॥ ५६॥
चरा पुणवस्त्र साई सवणाइतिअं तहा।
धुवाषि पुण चत्तारि जत्तराषि अ रोहिषी॥ ५०॥
विसाहा कित्तिआ चेव दो अ मिस्सा विआहिआ।
तिस्के तिगित्रं कारिज्ञा मिऊ गहणधारषे॥ ५०॥
छहु चरे सुहारंत्रो लग्गरिस्के तवं चरे।
धुवे पुरपवेसाई मिस्से संधिकिअं करे॥ ५७॥

व्येष्ठा, आर्जा, अश्लेषा अने मूळ एटलां नक्त्रों तीहण कह्यां हे. मृगशिर, चित्रा, रेवती अने अनुराधा एटलां मृड कह्यां हे. ५५. पुष्य, अश्विनी, इस्त अने अनिजित् आ नक्त्रों लघु हे. त्रण पूर्वा (पूर्वाफाहगुनी, पूर्वाषाँदा, पूर्वाजावपँद), जरणी अने मधा ए पांच नक्त्रों छम हे. ५६. पुनर्वसु, स्वाति अने अवणादि त्रण (अवण, धनिष्ठा अने शतिज्ञषक्) ए चर हे. त्रण छत्तरा (उत्तराफाहगुनी, उत्तराषाद्वा अने उत्तराजावपद) अने रोहिणी ए चार ध्रव हे. ५९. विशाला अने कृत्तिका ए वे मिश्र कह्यां हे. तेमां तीहण नक्त्रोमां औषध शरु करवुं सारुं हे. वस्तुनुं महण तथा धारण मृड नक्त्रमां कराय हे. ५०. लघु नक्त्रमां शुज कार्यनो आरंज करवो. छम नक्त्रमां तप करवो. ध्रव नक्त्रमां नगरप्रवेशादिक करवा. तथा मिश्र नक्त्रमां संधिनुं कार्य करवुं. ५ए. प्रस्थान करवा विषे—

दसधणु जवरिं सयपंच मिष्र पत्थाणि जाव दिण तिचक । थायवं सग्गतिहीखणरिकससीवसं वित्तुं ॥ ६०॥

खग्न, तिथि, ऋण, नक्त्र अने चंद्रनं बळ ग्रहण करीने दश धनुषथी उपर अने पांचसो धनुषनी अंदर प्रस्थान स्थापतुं. ते प्रस्थान त्रण चार दिवस सुधी रही शके हे. ६०.

प्रयाणमां शुज खन्नादिकतुं फळ कहे हे.---

आ० ५९

पहि कुससु लिंग तिहि कड़ा सिक्षि लाजं मुहूत्तर्व होइ। रिकेणं आरोगं चंदेणं सुक संपत्ती ॥ ६१॥

सम सारं होय तो मार्गमां कुशळता रहे हे, तिथि सारी होय तो कार्यनी सिद्धि धाय हे, मुहूर्स सारं होय तो लाज थाय हे, नक्षत्र सारं होय तो शरीरे आरोग्यता रहे हे अने चंद्र सारो होय तो सुख संपत्ति मळे हे. ६१.

प्रयाणमां शुज तिथि तथा तेतुं फळ कहे हे.— पानिवए पिनवत्ती निश्च विवत्ती जणंति बीत्र्याए । तइस्राइ स्रत्यसिद्धी विजयंगी पंचमी जणिस्रा ॥ ६२ ॥ सत्तमिस्रा बहुसगुणा मग्गा निकंटया दसमिस्राए । स्राहगिस्रा इगारसि तेरसि रिज्णो निविक्तिणइ ॥ ६३ ॥

पमवाने दिवसे प्रयाण करवाथी मार्गमां प्रतिपत्ति थाय, बीजने दिवसे प्रयाण कर-वाथी विपदार्छ न आवे, त्रीजे प्रयाण करवाथी अर्थनी सिद्धि थाय हे, पांचमे विजय थाय हे. ६२. प्रयाणमां सातम बहु गुणवाळी कही हे, दशमे प्रयाण करवाथी मार्ग निष्कंटक (शश्रु रहित) थाय हे, अगीधारशे प्रयाण करवाथी आरोग्यता रहे हे तथा तेरशे प्रयाण करवाथी शश्रुने जीते हे. ६३.

प्रयाणमां वर्ष्य तिथिछं.-

चाउदिसं पन्नरिसं विज्ञिज्ञा अठिमं च नविमं च। विष्ठे चविष्यं बारिसं च छन्हं पि पकाणं ॥ ६४॥

बन्ने पखवासीयांनी चौदश, पूनम (अमास), आठम, नोम, उठ, चौथ अने बारश पटली तिशिष्ठं प्रयाणमां वर्ष्य हो. ६४.

तिथि अने नक्षत्रने योगे प्रयाणमां शुज वार कहे हे --दसि पंचिम तेरिस बीअगो जिग्रसुर्ज गमणेऽतिसुहावहो ।

गुरु पुणवसु पुरस विसेसर्ग सय जिसा छाणुराह बुहे तहा॥ ६५॥ शुक्रवारे दशम, पांचम, तेरश के बीज होय तो ते दिवस प्रयाणमां छति सुखावह है. गुरुवारे पुनर्वसु के पुष्य नक्ष्त्र होय तो ते प्रयाणमां विशेष सुखावह है. तथा बुध-वारे शतजिषक् के छानुराधा होय तो ते पण सुखावह है. ६५.

प्रयाणमां सामान्य शुज दिवस कहे छे.— सबदिसि सबकाखं सिक्किनिमित्तं विद्वारसमयंमि। पुस्सस्सिणि मिग इत्था रेवइ सवणा गहेयवा॥ ६६॥ सर्व दिशामां सर्व काळे सिष्टिने निमित्ते विहार (प्रयाण) समये पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, हस्त, रेवती के अवण एटलां नक्त्र प्रहण करवां. ६६.

हवे प्रयाणमां अग्रज दिवसो कहे हे.-

वज्जे वारतित्र्यं कूरं पिनवाय चन्नइसी। नवमन्नमी इमाहिं तु बुहो वि न सुहो गमे ॥ ६७॥

प्रयाणमां रिव, मंगळ छाने शिन ए त्रणे क्रूर वारने तजवा, तथा बुधवारने दिवसे जो प्रभ्वो, चौदश, नोम के छाठम होय तो ते बुधवार पण गमनमां शुजकारक नथी. ६९. हवे प्रयाणमां शुज, मध्यम छाने छाशुज नक्षत्रो गणावे हे.—

पुस्तस्तिणिमिगिसररेवइशं हत्या पुणवस् चेव । श्रणुराइजिन्नमूलं नव नकत्ता गमणिसद्धा ॥ ६० ॥ रोहिणी तिन्नि छ पुवा सवणधिण्ठा य सयितसा चेव । चित्ता साई एए नव नकत्ता गमिण मज्जा ॥ ६० ॥ कित्तिश्चत्ररिणिविसाहा श्रस्तेसमह छत्तरातिश्चं श्रदा । एए नव नकत्ता गमणे श्रद्दारुणा जिल्या ॥ ९० ॥

पुष्य, श्रिश्वनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुनर्वसु, श्रनुराधा, ज्येष्ठा श्रने मूळ, ए नव नक्षत्रो गमनमां सिद्धिदायक है. ६०. रोहिणी, त्रण पूर्वा (पूर्वाफांहगुनी, पूर्वाषाढाँ, पूर्वात्राह्मपैद), श्रवण, धनिष्ठा, शतिषक, चित्रा श्रने स्वाति, ए नव नक्षत्रो गमनमां मध्यम् हे. ६ए. कृत्तिका, जरणी, विशाखा, श्रश्वेषा, मधा, त्रण जत्तरा (जत्तराफांढगुनी, जत्तराषाढा, जत्तराजाह्मपैद) श्रने श्रार्का, ए नव नक्षत्रो गमनमां श्रत्यंत दारुण कह्यां हे. ५०.

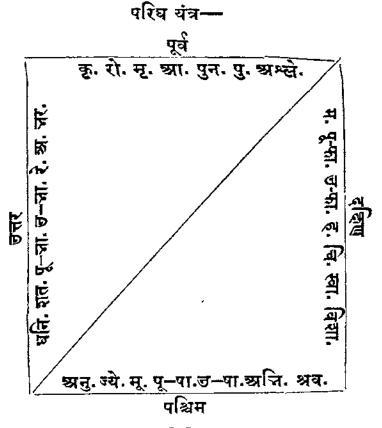
प्रयाणमां नक्त्रने आश्रीने अशुज समय—

धुवेहि मिस्सेहि पत्तायकाले, जग्गेहि मञ्जन्हि लहू परन्हे।

मिक पर्जसे निसिम्पि तिस्के, चरे निसंते न सुहो विहारो ॥७१॥
ध्रुव अने मिश्र नक्त्रोमां प्रजातकाळे, छप्र नक्त्रमां मध्याह्नकाळे, खघु नक्त्रमां
अपराह्नकाळे, मृछ नक्त्रमां प्रदोषकाळे, तीहण नक्त्रमां मध्यरात्रिए अने चर नक्त्रमां रात्रिने अतं (परोहीए) विहार (प्रयाण) करवो ते शुन्न नथी. ७१.

इवे परिधनुं स्वरूप तथा तेनो छद्वंघननो निषेध कहे छे.-

पुवाइसु सग सग कित्तिश्रांइ दिसि रिस्क सदिसि हुंति सुहा। घरदिसि मन्ना वायग्गि परिइरेहा न खंघिज्ञा ॥ उर ॥ पूर्विदिक चार दिशार्डमां अनुक्रमे कृत्तिकाथी आरंजीने सात सात नक्त्रो मूकवां ते दिशानां नक्त्रो कहेवाय हे. हवे प्रयाणमां स्विदिशनुं नक्त्रत्र शुजकारक हे. पूर्व दिशान नक्त्रोमां छत्तरमां गमन करबुं, तथा छत्तर दिशानां नक्त्रोमां पूर्वमां गमन करबुं ए घरिदिश कहेवाय हे. तेमज दिशा दिशानां नक्त्रोमां पश्चिम तरफ गमन करबुं अने पश्चिम दिशानां नक्त्रोमां दिश्ण तरफ गमन करबुं ते पण घरिदिश कहेवाय हे. ते घरिदिशनां नक्त्रोमां गमन करबुं ते मध्यम हे. वायु खूणाथी आरंजीने अग्नि खुणा सुधी आकी परिघनी रेखा हे ते परिघ रेखानुं छद्धंघन करबुं नहीं. ५२.



हवे दिक्शूळ तथा विदिक्शूळ कहे हे.— सूलं पुविं सणी सोमो दाहिणाए दिसा गुरू। पश्चिमाइ रवी सुको उत्तराए कुजो बुहो॥ 9३॥ ईसाणे ख बुहो मंदो खग्गीई ख गुरू रवी। मेरइए ससी सुक्को जूमो वाए विवज्जए॥ 98॥ शिवारे अने सोमवारे पूर्व दिशामां शूळ होय हो, गुरुवारे दिशामां शूळ होय हो, रिव अने शुक्रवारे पिश्चम दिशामां, मंगळ अने बुधे छत्तर दिशामां शूळ होय हो. ७३. बुधवारे अने शिनवारे ईशान खूणामां शूळ होय हो, गुरुवारे अने रिववारे अग्नि खूणामां शूळ होय हो, सोम अने शुक्रवारे नैर्ऋत्य खूणामां तथा मंगळवारे वायव्य खूणामां शूळ होय हो, ते बन्ने शूळ वर्जवा योग्य हो, एटले के जे दिशामां अथवा विदिशामां शूळ होय ते दिशा अथवा विदिशामां प्रयाण करवं नहीं. ७४.

कारणे दिक्शूळमां अथवा विदिक्शूळमां जवुं परे तो नीचेना पदार्थोंनुं तिखक करीने जवाथी शूळनो दोष नथी. ते कहे हे.—

चंदणं दहि मही स्र तिल्लं पिछं तहा पुणो। तिल्लं खलं च चंदिजा सूराई सूलमुत्तरो॥ ७५॥

रिववारे चंदन, सोमवारे दहीं, मंगळवारे माटी, बुधवारे तेख, गुरुवारे पिष्ट (आटो), शुक्रवारे तेख अने शनिवारे खोळनुं तिखक करीने प्रयाण करवुं. तेम करवाथी शूळ उत्तम (शुज) थाय हे. अर्थात् शूळनो दोष खागतो नथी. ९५.

हवे दिशाने आश्रीने नक्त्रशूळ कहे छे ---

उदयदिसि जसूबं दो असाढा य जिठा,घणिसवणविसाहा पूबजहा जमाए। अह वरुणदिसाए रोहिणीपुस्समूबं,सुरगिरि दिसिहस्थोफग्गुणीदोविसाहा

बे श्रवादा (पूर्वावादा श्रने छत्तरावादा) तथा ज्येष्ठा नक्तत्र होय तो पूर्व दिशामां नक्त्रशुळ थाय हे. धनिष्ठा, श्रवण, विशाखा श्रने पूर्वाजाइपद नक्त्र होय तो दिक्षण दिशामां नक्त्रशूळ थाय हे. रोहिणी, पुष्य श्रने मूळ नक्त्र होय तो पश्चिम दिशामां नक्त्रशूळ होय हे, तथा इस्त, बे फाहगुनी (पूर्वाफाइगुनी, छत्तराफाइगुनी) श्रने विशाखा होय तो छत्तर दिशामां नक्त्रशूळ होय हे. श्रा नक्त्रशूळ पण प्रयाणमां शुज नथी. ३६.

हवे वत्स कहे हे.--

मीणाइतिसंकंती पश्चिमाइसु जग्गइ। वश्चो गमे पवेसे वि न सुहो पिठि संमुहो

मीन विगेरे त्रण संक्रांतिमां पश्चिमादिक दिशामां वत्स छगे छे, एटखे के मीन, मेष अने वृष संक्रांतिमां पश्चिम दिशाए छगे छे, मिश्चन, कर्क अने सिंह संक्रांति होय त्यारे छत्तरमां छगे छे, कन्या, तुला अने वृश्चिक संक्रांति होय त्यारे पूर्वमां छगे छे, तथा धन, मकर अने कुंत्र संक्रांति होय त्यारे वत्स दिश्णमां छगे छे. ते वत्स प्रयाणसमये तथा प्रवेशसमये पण सन्मुख के प्रज्वामे होय तो ते सारो नथी, अर्थात् वाम (माबे) तथा दिश्ण (जमणे) जागे होय तो ते सारो छे. ९९.

हवे योगिनी (जोगणी) कहे हे.—

इगनवगाइकमा तिहि पुदुत्तरश्चिगनेरदाहिणए।

पिक्रमवाईसाणो जोइणि सा वामपिठि सुहा ॥ ५०॥

एकम अने नोम विगेरे तिथिना क्रमे करीने पूर्व, उत्तर, अग्नि, नैर्ऋत्य, दिख्ण, पश्चिम, वायव्य अने ईशानमां योगिनी होय हे. ते प्रयाणसमये वाम जागे अथवा पह्नामे होय तो शुज हे. ९०.

योगिनी यंत्र.-

दिशा पूर्व | जत्तर | श्रम्भ | नैर्ऋत्य | दक्षिण | पश्चिम | वायव्य | ईशान | तिथ्य | १-ए | १-१० | ३-११ | ४-१२ | ४-१३ | ६-१४ | ७-१ । जन्र ० (श्रमास) |

हवे तत्काळनी योगिनी कहे हे —

दिणदिसि धुरि च छ इडिया पर च पुबुत्त दिसि हि कमसो।

तक्काखजोइणी सा वज्जेयद्वा पयत्तेण ॥ ७ए ॥

जे दिशाए जे दिवसे योगिनी होय ते दिवसे ते दिशाए पहेखी चार घमी तत्काळ योगिनी रहे छे. त्यारपछी पूर्वनी गाथामां कहेली दिशाना अनुकमे दरेक दरेक दिशाए चार चार घमी फरती फरे छे. ते तत्काळ योगिनी प्रयत्ने करीने एटखे अवस्य वर्जवा योग्य छे. ७ए.

राहुविचार.--

उदयत्थमणा चउ चउ घडियाइं राहु पुबदिसि तत्तो । सिद्धीए दिसि ठिंडं गर्ड सुद्दो पुठिदाहिण्डं ॥ ए०॥

दररोज सूर्यना जदयसमये श्रने श्रस्तसमये राहु पहेली चार चार घनी पूर्व दिशामां होय हे. त्यारपढी सिद्धिने माटे हिं ही हिशाए चार चार घनी रहे हे, एटले के सूर्योदयधी पहेली चार घनी सुधी पूर्वमां, बीजी चार घनी वायव्यमां, त्रीजी चार घनी दिशाएमां, चोश्री चार घनी ईशानमां, पांचमी चार घनी पश्चिममां, हिं चार घनी श्रिममां, हिं चार घनी श्रिममां, सातमी चार घनी जत्तरमां श्रने श्राहमी चार घनी नैर्कत्यमां त्यारपढी पाही हिशाए एटले पूर्वमां श्रस्तसमये श्रावे हे. श्रा राहु प्रयाणसमये पहनाने तथा दिशाए (जमणी) बाजुए रह्यो होय तो ते सारों हे. ए॰.

शिवविचार.--

चितुत्तरिगडमासा दिसि विदिसि विसिष्ठि सिवु तर्ज उदया। सिष्ठि खढाई पणि घडि दिसि विदिसिं पुष्टिमुष्टि सुद्दो ॥ ७१ ॥ वितिश्मां वे मास ए प्रमाणे सूर्योदयसमये होय हे, एटले के चैत्रमां एक विदिशिमां वे मास ए प्रमाणे सूर्योदयसमये होय हे, एटले के चैत्रमां छत्तर विदिशिमां वे मास ए प्रमाणे सूर्योदयसमये होय होए हिशाए, श्रावण आक्ष्यदमां नैकेल खुणाए, श्राव्यि मासमां दिल्ला दिशाए सूर्योदयसमये होय दिशामां के दिशा विदिशामां कहेल हे त्यांथी श्राह्म दिशामां कमे करी दिशामां खे विदिशामां पांच घमी ए प्रमाणे फरे हे. तात्पर्य ए हे के समा सूर्योदयसमये प्रथम श्राह्म घमी छत्तरमां, पही पांच घमी ईशानमां, पही पर्वमां इत्यादि कमे फरे हे. वैशाख तथा ज्येष्ठ मासमां प्रथम पांच घमी वायव्य पही श्राह्म ए कमश्री सदा फरे हे. श्राह्म श्राह्म प्रयाणसमये पाइळ जमणो होय ते शुलकारक हे. ए१. शिवयंत्र श्रा श्राह्म प्रयाणसमये पाइळ

वायव्य	जत्तर	ईशान
वैशाक ज्येष्ठ	चैत्र घमी शा	माघ फाह्गुन
घमी ५		घडीू ५
पश्चिम श्रवाढ घरी २॥	शिवचक	पूर्व पोष
ા અવાદ ધના રા ા [घनी श।
श्रावण नाइपद	ञ्चाश्विन	अग्नि
घकी ५	घमी २॥	कार्तिक मार्गशीर्ष
नै र्कत्य	दक्तिए	घमी ५
•		,

रिव रित्र अंतपहराउं पुवाइसु इिन्न इिन्न पहर कमा। दाहिणपुठि विहारे वामो पुठि पवेसि सुहो॥ ए२॥

रविविचार.—

तिना बेह्या पहोरथी बबे पहोर सुधी रिव पूर्वादिक चार दिशार्छमां होय है, के रित्रनों बेह्यों तथा दिवसनों पहें तो ए वे पहोर सुधी रिव पूर्वमां होय है. बीजो तथा त्रीजो प्रहर दिश्णमां, चोथो तथा पांचमो प्रहर पश्चिममां, बचो तथा में प्रहर पश्चिममां, बचो तथा में प्रहर खत्तरमां, पबी श्रावमों प्रहर रित्रना श्रांतनो होवाथी पूर्वमां श्रावे हे. श्रा प्रयाणमां दिश्ण (जमणों) तथा पाइळ सारों हे, श्रने प्रवेशमां नावो तथा ह सारों है. हरे.

चंडविचार.--

जदयवसा अहवा दिसिदारजवसर्ज हवे ससीजदर्ज । सो अजिमुहो पहाणो गमणे अमिआई वरसंतो ॥ ०३ ॥

खदयना वशयी अथवा दिशि दारना नक्षत्रना वशयी (सवा वे दिवसे जे चंद्र हूदी जूदी राशिमां जाय हे ते) चंद्रनो छदय कहेवाय हे. अमृतने वरसावतो ते चंद्र ।याणमां सन्मुख होय तो ते प्रधान (सारो) हे. ७३.

शुक्रविचार.---

जहिं ज्याह जिंदे दिसि जमइ जिंदे च दारिजिठाइ।

तिहुं परिसंमुह सुक पुण उद्ज जि इक्कु गण्ड ॥ ७४ ॥

शुक्र जे दिशामां जगे हे, जे दिशामां जमे हे खने जे दारनी सन्मुख रहे हे ते त्रणे

कारे शुक्र सन्मुख कहेवाय हे, परंतु एक उदयने खाश्रीनेज गणाय हे. खर्थात् उद
ने खाश्रीने शकनी सन्मुखता प्रयाणसमये वर्जवी. ०४.

पाश तथा काळ विषे.-

सियपिडवयाज पुदाइस पास दसदिसिहिं काञ्ज तयिनसहो । कुज्जा विहारि वामो पासो कालो ज दाहिण्ज ॥ ७५॥

शुक्खपक्ष्ना पमवाश्री आरंजीने अनुक्रमे पूर्वादिक दश दिशामां पाश होय हे, दिखे के सुदि पमवाए पूर्वमां, बीजे अग्निमां, त्रीजे दिश्णमां ए रीते गणतां आतमे शानमां, नोमे कर्ध्व दिशामां अने दशमे आधो दिशामां, पत्री आगीयारशे पूर्वमां, एम रीने गणतां वद पांचमे आधो दिशामां पाश आवे, अने त्रीजी वार वद उठे पूर्वमां रीते गणतां वद अमावास्थाए आधो दिशामां आवे. जे दिशाए पाश होय तेनी सन्मु-।नी दिशाएज काळ होय हे. प्रयाणसमये पाशने वाम (माबो) करवो अने काळने किए (जमणो) करवो पर.

हंस (नामी) विचार.--

पुन्ननाडिदिसापायं अग्गे किचा सया विज । पवेसं गमणं कुजा कुणंतो साससंगहं ॥ ए६ ॥

पूर्ण नामीनी दिशाना पगने स्थागळ करीने एटले नसकोरानी जे बाजुमां श्वास परि-र्ण बहेतो होय ते बाजुना पगने स्थागळ करीने विद्यान् पुरुषे श्वासने रुंधीने सदा वेश स्थने गमन करतुं. ७६.

॥ इति प्रस्थानम् ॥

हवे चैत्य संबंधी मुहूर्त्तों कहे हे .--

चेइ ख्रसु छं धुविम जकरपुस्स धिण हसयि जिसासाई। पुस्सित जत्तर-रे-रो-करिमगसवणे सिखनिवेसो॥ एउ॥

चैत्यनुं खात ध्रुव, मृष्डु, इस्त, पुष्य, धनिष्ठा, शतिजिषक् स्राने स्वाति नक्षत्रमां करवुं, तथा पुष्य, त्रण जत्तरा (जत्तराफाहगुनी, जत्तराषाढा, जत्तराजाजपद), रेवती, रोहिणी, इस्त, मृगशिर स्राने श्रवण एटखां नक्षत्रोमां शिखास्थापन करवुं. ०७.

सतिनसपुस्तधणिष्ठा मिगसिरधुवमिज अपहिं सुहवारे। ससि ग्रहसिए जइए गिहे पवेसिक्त पडिमार्ज ॥ ००॥

शतिषक्, पुष्य, धनिष्ठा, मृगशिर, ध्रुव श्वने मृड, ए नक्त्रोमां शुज वारे तथा चंड गुरु श्वने शुक्रनो छदय होय त्यारे प्रतिमाने घरमां प्रवेश कराववो. ००.

तिपुत्वमूलतरणी विसाहा, सेसा महा कित्ति छहोमुहाई।
रेवस्सिणी हत्थपुणाणुचित्ता, जिष्ठामिगं साइ तिरिष्ठगाय॥ एए॥
तिजत्तरदासवणतिछं च जहंमुहो रोहिणिपुस्सजुत्ता।
जूमीहराई गमणागमाई धयावरोवाइ कमेण कुझा॥ ए०॥

त्रण पूर्वी (पूर्वाफाहगुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाचाडपद), मूळ, जरणी, विशाखा, अश्लेषा, मघा अने कृत्तिका, आटखां नक्त्रो अधोमुख कहेवाय हे. रेवती, अश्विनी, हस्त, पुनर्वम्र, अनुराधा, चित्रा, ज्येष्ठा, मृगशिर अने स्वाति, एटखां नक्त्रो तिरहां कहेवाय हे. एए. त्रण कत्तरा (कत्तराफाहगुनी, कत्तराषाढा, कत्तराजाडपद), आड्री, अवणतिक (अवण, धनिष्ठा, शतिज्ञा), रोहिणी अने पुष्य, एटखां नक्त्रो कर्ध्वमुख कहेवाय हे. भां जूमिगृह (जोंयरा) विगेरे अधोमुख नक्त्रमां करवा खायक हे, गमन आगमन विगेरे तिरहा नक्त्रमां करवाखायक हे अने ध्वजरोपण विगेरे कार्यो कर्ध्वमुख नक्त्रोमां करवा खायक हे. ए०.

॥ इति चैत्यनिवेशः ॥

हवे प्रतिमानं नाम पामती वखते शुं शुं जोवानं हे ? ते कहे हे.—
हठिमत्तं तह रिकाजोणी, वग्गठ नामीगयरिकाजावं ।
विसोवगा देवगणाइ एवं, सबं गणिङ्जा पिडमाजिहाणे ॥ ए१ ॥
प्राष्टक, नक्षत्रयोनि, वर्गाष्टक, नामीगत नक्षत्रजाव, विंशोपक अने देवगणादिक,
प सर्वे प्रतिमानां नाम पामवामां जोवानां हे. ए१.

प्रथम पनाष्टक कहे हे.--

विसमा अठमे पीई समाज अठमे रिज । सत्तुब्रुठ्यं नामरासिहिं परिवज्जए ॥ ए१ ॥ बीयबारसंमि वज्जे नवपंचमगं तहा । सेसेसु पीई निहिठा जइ छुचागहमुत्तमा ॥ ए३ ॥

विषम राशि १-३-५-9-ए-११ श्री श्रावमी राशिना स्वामी छने प्रीति होय है. सम राशि १-४-६-ए-१०-१२ श्री श्रावमी राशिने शत्रुजाव हे. ते शत्रुजाव जग-वंतनी राशिश्री प्रतिमा कारापकनी नामराशि सुधी गाएीने वर्जवो. ए२. बीजी श्रने बारमी राशिना तथा नवमी श्रने पांचमी राशि छने। स्वामीने परस्पर प्रीति न होय तो ते पण श्रवदय वर्जवी. शेष राशिमां प्रीति कहेली हे. ए३.

इवे नक्षत्रयोनि वेर कहे छे.--

श्रांसगेयमेसैसँपा सँपार्सं विकालमेस्मर्जारा। श्रांखुर्डंगगेवीमेहिसी वर्ग्धो महिसी पुणो वर्ग्धो॥ ए४॥ मिगेमिर्गंकुकेर वाँनर नर्जेलर्डिगं वाँनरो हेरितुरं गो। हैरिपसुँकुर्जेर एए रिस्काण कमेण जोणी । ए५॥

श्रिश्वनी विगरे नक्त्रोनी अनुक्रमे श्रा प्रमाणे योनिन्न हे.—श्रिश्वनीनी योनि अर्थ हे, जरणीनी योनि हांथी हे, कृत्तिकानी मेर्ष, रोहिणीनी संपं, मृगशिरनी पण संपं, श्रार्जानी श्वान, पुनर्वसुनी विद्धांनो, पुष्यनी मेर्ष, अश्लेषानी विद्धांनो, मधानी र्लंदर, पूर्वाफाहगुनीनी नंदेर, जतराफाहगुनीनी गांय, इस्तनी जेंशें, चित्रानी वेंघ, स्वातिनी जेंशें, विज्ञानी वेंघ, अनुराधानी मृंग, ज्येष्ठानी मृंग. एक्ष. मूळनी कृतरो, पूर्वाष्यानी वेंचर, जत्तरापाढानी नोळीयो, अजितत्ती नोळीयो, अवणनी वेंचर, धनिष्ठानी सिंहें, शतिज्ञपक्ती अर्थें, पूर्वाज्ञाइपदनी सिंहें, जत्तराजाइपदनी पेंशु-गो अने रेवतीनी योनि हांधी हे. एए.

गयसींहमस्समहिसं किपमेसं साणहरिणऽहिन छतं। गोवग्घ विडाह्यंदर वेरं नामेसु विज्ञाङ्का ॥ ए६॥

हाथी अने सिंह, अन्य अने पामो, वानर अने मेष, न्यान अने हरण, सर्प अने नोळीयो, गाय अने वाघ तथा बिलामो अने उंदर, आउंने परस्पर वेर होय है, माटे नाम पामवामां श्रा वेर वर्जवुं, एटले के प्रतिमाना नामनी अने प्रतिमा जरावनारना नामनी जे योनि होय ते बन्नेने जो परस्पर वेर होय तो तेवुं नाम वर्जवुं. ए६.

> ॥ इति नक्षत्रयोनिवैरम् ॥ हवे वर्गाष्टक कहे हेः—

गरुमो बिमालसीहो कुकुरसप्पो अ मूसगो हरिएो। मेसो अमवग्गपृष्ट कमेण पुण पंचमे वेरं॥ ए७॥

श्च वर्ग (सर्वे स्वर) नो पित गरुम है। क वर्गनो पित विखामो है। च वर्गनो पित सिंह है। ट वर्गनो पित कूतरों है। त वर्गनो पित सर्प है। प वर्गनो पित डंदर है। य वर्ग (यर दा व) नो पित हरण है। तथा श वर्ग (श प स ह) नो पित मेष (धेटो) है। श्वकारादि श्वाह वर्गना गरुमादि श्वाह स्वामी है है तेमने क्रमे करीने पोताना वर्ग-पितशी पांचमे पांचमे वेर है. ते वर्गवेर पण वर्ज बुं. एप.

हवे नानीमां रहेलां नक्षत्रना जावने कहे हे.-

श्रक्षिणाइतिनामीए इगनाडिगयं सुहं जवे रिखं। गुरुसीसाणं तारा विज्ञिज्ञ तिपंचसत्तरथा॥ ए०॥

श्चिनी विगेरे नव नव नक्षत्रोनी त्रण नामी (खाइन) करवी, तेमां गुरु श्चने शिष्यनुं नक्षत्र एकज नामीमां श्चान्युं होय तो ते शुज हे. वळी गुरु श्चने शिष्यनी त्रीजी, पांचमी श्चने सातमी तारा श्चावती होय तो ते वर्ज्य हे. एठ.

नामीयंत्र स्थापनाः--



हवे विंशोपक कहे हे.-

सिद्धसाहगधुरकर वग्गंके कमुक्कमिण अठविजत्ते । सेस श्रद्धकय खप्नविसो ख पित्रमात खबु खग्गगएणं ॥ एए ॥

सिद्ध (गुरु) अने साधक (शिष्य)ना नामना पहेला अक्रनो जे वगाक होय ते बन्ने आंकने कमे तथा जत्कमे (जलटा सुलटा) मूकवा, पढ़ी तेने आहे जाग देवो. वाकी जे शेष रहे तेने अर्ध करतां जे संख्या आवे तेटला विंशोपक (वसा) पहेला वर्गांकवाळा पासे बीजो वर्गांकवाळो मागे. जेमके गुरुना नामनो पहेलो अरूर द एटले पांचमो वर्ग हो, अने शिष्यना नामनो पहेलो अरूर प एटले होने वर्ग हो. तेने कमे करीने मूकवाथी ५६ आय, तेने आहे जाग देतां शेष कांइ पण रहेतुं नथी, माटे पहेला वर्गांकवाळा गुरु पासे बीजा वर्गांकवाळो शिष्य कांइ पण मागतो नथी एम समजबुं. हवे तेज आंकने उत्कमे मूकवाथी ६५ आय हो, तेने आहे जाग देतां बाकी एक शेष रहे हो, तेने अर्ध करतां अर्धो विंशोपक आवे हो, माटे पहेला आंकवाळा शिष्य पासे बीजा आंकवाळा गुरु अर्ध विंशोपक मागे एम समजबुं. एए.

हवे देवगणादिक कहे हे.-

देवस्मिणिपुणपुस्सा करसाइमिगाणुसवणरेवइश्चा।
मणुश्च तिपुवतिजत्तर रोहिणि जरणी श्च श्चद्दा य॥ १००॥
कित्तिश्चविसाहचित्ता धणिजिठाऽसेसतिन्नि जुग रका।
सगणे पीई नरसुर मन्ना सेसा पुणो श्चसुहा॥ १०१॥

श्रिश्वनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, मृगशिर, श्रनुराधा, श्रवण श्रने रेवती, श्रा नव नक्त्रो देवगण हे. त्रण पूर्वा, त्रण छत्तरा, रोहिणी, जरणी श्रने श्रार्वा, श्रा नव नक्त्रो मनुष्यगण हे. १००. तथा कृत्तिका, विशाखा, चित्रा, धनिष्ठादिक एटले धनिष्ठा श्रने शतिषा, ज्येष्ठादिक एटले श्रयेष्ठा श्रने मूळ तथा श्रश्येषादिक एटले श्रश्येषा श्रने मघा, श्रा नव नक्त्रो राक्तसवर्ग हे. तेमां गुरु शिष्यादिकनां बन्ने नामोनां नक्त्रो एकज गणमां होय तो परस्पर घणी प्रीति रहे, एकनो मनुष्यवर्ग श्रने बीजानो देववर्ग होय तो मध्यम प्रीति रहे, ते सिवायना वर्ग होय तो ते श्रशुज हे. १०१.

॥ इति प्रतिमाधारणागितः शिष्यनामकरणं च ॥ इवे विद्यारंज विषे कहे हे.—

गुरू बुहो श्र सुको श्र सुंदरा मिक्किमो रवी। विज्ञारंजे ससी पावो सणी जोमा य दारुणा॥ १०२॥ मिगसिर-श्रहा-पुस्सो तिन्नि छ पुत्रा छ मूलमस्सेसा। हस्थो चित्ताइ तहा दस बुहिकराई नाणस्स॥ १०३॥

विद्यारंत्रमां गुरु, बुध अने शुक्र सुंदर हो, रविवार मध्यम हो, सोमवार पापी (इष्ट) हो अने शनि तथा मंगळ अतिज्ञयंकर (अति इष्ट) हो. १०२. मृगशिर, आर्जी, पुष्य,

त्रण पूर्वा (पूर्वाफाहगुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाचाइपद), मूळ, अश्लेषा, हस्त अने चित्रा, आ दश नक्षत्रो क्वाननी वृद्धि करनारां हे. १०३.

द्योचकर्म विषे.—

पुणवसु श्र पुस्सो श्र सवणो अ धणि हिया।

एएहिं च उहिं रिकेहिं लो श्रकम्माणि कारए॥ १०४॥

कित्तिश्राहिं विसाहाहिं महाहिं जरणी हि श्र।

एएहिं च उहिं रिकेहिं लो श्रकम्माणि व इत्। १०४॥

पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण श्रने धनिष्ठा, श्राचार नक्त्रोमां खोचकर्म करतुं शुन्न हे. १०४. कृत्तिका, विशाखा, मघा श्रने जरणी, श्राचार नक्त्रोमां खोचकर्म वर्ष्य हे. (श्रशीत् श्रा श्राह्म सिवायनां बीजां नक्त्रो मध्यम हे.) १०५.

कर्णवेध तथा राजाना दर्शननां नक्त्रो.—

मिग-श्रण-पुण-पुस्सा जिष्ठ-रेवऽस्सिणीत्रा, सवण-कर-सचित्ता सोहणा कन्नवेहे। कर-सवणऽणुराहा-रेव-पुस्सऽस्सिणीत्रा, मिग-धणि-धुव-चित्ता दंसणे जूवईणं॥ १०६॥

मृगशिर, अनुराधा, पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, रेवती, अश्विनी, अवण, हस्त अने चित्रा, एटखां नक्त्रो कर्णवेधमां सारां हे. हस्त, अवण, अनुराधा, रेवती, पुष्य, अश्विनी, मृगशिर, धनिष्ठा, ध्रुव (रोहिणी, हत्तराफाहगुनी, हत्तराषाढा, हत्तराजाइपद) अने चित्रा, ए नक्त्रो राजाना दर्शनमां शुज हे. १०६.

वस्त्रधारण.---

सूरे जिल्लं ससी छाईं मिलणं सिण धारिछं। जोमे जुकावहं होइ वत्थं सेसेहिं सोहणं॥ १००॥

नवुं वस्त्र रिववारे धारण करवाथी (पहेरवाथी) जलदी जीर्ण थाय हे, सोमवारे पहेरवाथी श्रार्फ (जीतुं) रहे हे, शनिवारे धारण करवाथी मिलिन रहे हे, मंगळवारे पहेरवाथी छःखकारक थाय हे, श्राने बीजा (बुध, गुरु श्राने शुक्र) वारे नवुं वस्त्र पहेरवुं सारुं हे. १०७.

नवां पात्र वापरवा विवे.--

मिग-पुस्सऽस्मिणी हत्थाऽणुराहा चित्त-रेवई। सोमो गुरु श्र दो वारा पत्तवावारणे सुहा॥ १००॥

मृगशिर, पुष्य, ऋश्विनी, इस्त, ऋनुराधा, चित्रा ऋने रेवती, ए नक्त्रो तथा सोम ऋने गुरु, ए वे वारो नवां पात्र वापरवामां सारां हे. १००.

गयेली वस्तु पाछी आववा विषे.—

जामाइमुहा चन चन स्रित्तेषाई काण चिवन सर्जाऽंधा। इसु वत्त जाइ सज्जे स्रोधे लप्नइ गयं वर्थु॥ १०ए॥

दिशा दिशाने आरंजीने चार दिशामां अश्विनीथी आरंजीने चार नक्त्रो अनुक्रमें मूकवां. ए रीते अठ्यावीश नक्त्रो मूकवां. ते अनुक्रमें काणां, चीवमां, सक्त (देखतां) अने आंधळां कहेवाय हे. तेमां काणां अने चीबमां नक्त्रमां वस्तु गइ होय तो तेनी वातो थया करे अर्थात् मळवानी आशा रहे के न रहे, सक्त नक्त्रमां गइ होय तो ते वस्तु जायज अर्थात् पाही आवे नहीं, अने आंधळां नक्त्रमां गइ होय तो ते पाही आवे हे. जे दिशानुं नक्त्र होय ते दिशामां ते वस्तु गइ हे एम पण जाणवुं. र ०ए.

नक्त्रोनो यंत्र.—

काणां	चीवमां	देखतां	ऋांधळां
छ श्विनी	न्नरणी	कृत्तिका	रोहिणी
मृग शिर	ষ্ঠার্জা	<u>पु</u> नर्वसु	पुष्य
श्चश्येषा	मघा	पूर्वाफाङ्गुनी	जत्त राफा ह्गुनी
इस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
श्चनुराधा	ज्येष्ठा	मूळ	पूर्वोषाढा
ल्त्तराषाढा	अ जिजित्	श्रवण	ध्निष्ठा
शतजिषा	पूर्वाजाइपद	जत्तरात्राऽ पद ्	रेवती
वस्तु दक्तिएमां गइ हे	वस्तु पश्चिममां गइ वे	वस्तु जत्तरमां गइ डे	वस्तु पूर्वमां गइ हे.

गयेखी वस्तु जोवानी बीजी रीत.—

रविरिका उब्बाला बारस तरुणा नव परे थेरा। थेरे न जाइ तरुणेहिं जाइ बाखे जमइ पासे॥ ११०॥ सूर्यना नक्त्रश्री व नक्त्रो बाळक कहेवाय वे, त्यारपढीनां बार नक्त्रो जुवान कहेवाय वे अने त्यारपढीनां नव वृद्ध कहेवाय वे. तेमां वृद्ध नक्त्रमां गयेखी वस्तु जाय नहीं (पाठी आवे), जुवान नक्त्रमां गर होय तो गयेखी वस्तु जाय (पाठी आवे नहीं), अने बाळ नक्त्रमां गर होय तो ते पासेज जमे वे, एटखे के वेटे जाय नहीं. ११०.

सर्पमंश विषे.—

विसाहा—िकतिस्राऽसेसा मूलऽद्दा जरणी महा।
एयाहिं स्रहिणा दठो कठेणावि न जीवइ॥ १११॥
विशाला, कृत्तिका, स्रश्लेषा, मूळ, स्रार्जा, जरणी स्राने मधा, ए नक्त्रोमां जो सर्प-मंश स्रयो होय तो ते कष्टे करीने पण (कोइ पण प्रकारे) जीवे नहीं. १११.

रोगनी ज्ञांति जोवा विषे.—

पुण-पुस्स ज-फा ज-त रोहिणीहिं रोगोवसम सत्तदिणे।
मूलऽस्सिणि कित्तिनवमे सवण-त्ररणि-चित्त-सयित्रसेगदसे १११
धिण-कर-विसाहिं पके मह वीसइमे ज-खा मिगे मासे।
आणुराह-रेवइ चिरं तिपुत्र जिन्ठऽइ-सेस-साइ-मिइ ॥ ११३॥

पुनर्वसु, पुष्य, जत्तराफाहगुनी, जत्तराजाइपद अने रोहिणी, ए नक्त्रोमां व्याधि अयो होय तो सात दिवसे तेनी शांति आय हे, मूळ, अश्विनी अने कृत्तिकामां अयो होय तो नव दिवसे शांति आय हे, अवण, जरणी, चित्रा अने शतिषामां अयो होय तो अगीयार दिवसे शांति आय हे. ११२. धनिष्ठा, हस्त अने विशाखामां अयो होय तो पखवामीये शांति आय हे, मधामां अयो होय तो वीश दिवसे शांति आय हे, जत्तरा- पाढा अने मृगशिरमां अयो होय तो एक मासे शांति आय हे, अनुराधा अने रेव-तीमां अयो होय तो चिर काळे शांति आय हे, तथा त्रण पूर्वा (पूर्वाफाइगुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाजाइपद), ज्येष्ठा, आर्जा, अश्लोषा अने स्वातिमां व्याधि अयो होय तो ते मरणज पामे हे. ११३.

श्रीषध शरु करवानां नक्त्रो.---

चरसहु मिछमूसे रोगनिन्नासहेक, इवइ खड़ु पछत्तं उंसहं वाहिआणं। चर, लघु, मृड तथा मूळ, एटखां नक्त्रोमां व्याधिवाळाने श्रीषध आण्युं होय तो ते रोगना नाशनो हेतु श्राय हे. रोगधी मुक्त धयेखाना स्नान विवे.-

त्रिग्रं-सिस पुण-जिठाऽसेस-साइ-महाहिं, न य कहवि विहेयं रोगमुत्ते सिणाणं ॥ ११४ ॥

शुक्रवारे के सोमवारे तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, छाश्लेषा, स्वाति छाने मघा, एटखां नक्ष-त्रमां रोगधी मुक्त थयेखा मनुष्ये कोइ पण प्रकारे स्नान करतुं नहीं. (एटखे माथे पाणी रेमतुं नहीं.) ११४.

मृत्यु जोवा विषे.--

नामनकत्तमिकं एकनाडीगया जया। तया दिणे जवे मच्च नन्नहा जिल्जासिस्रं॥ ११५॥

नामराशिनुं नक्तन, सूर्य अने चंद्र ए त्रणे ज्यारे एक नामीमां आवे त्यारे तेज दिवसे मृत्यु शाय हे. एम जिनेश्वरनुं वचन हे ते कदापि अन्यशा न होयः ११५.

> छाई छादा मिगं छांते मन्ने मूलं परित्यां। रविंद्यजम्मनकत्तं तिविक्यो न हु जीवई॥ ११६॥

प्रथम श्रार्की नक्तत्र मूकवुं, बेह्खुं मृगशिर मूकवुं श्रमे मध्यमां मूळ मूकवुं. पढ़ी सूर्य, चंद्र श्रमे जन्मनुं नक्षत्र ए त्रऐनो वेध श्राय तो ते जीवे नहीं ११६.

स्थापना.--



मृतकार्यमां वर्ष्य नक्त्रो ---

धुविमस्सुग्गनस्कत्ता मूलऽहा छाणुराह्या । पंचगाई रवी जोमा मयकको विविक्तया ॥ १९७ ॥

ध्रुव, मिश्र श्रने जय नक्त्रो, तथा मूळ, आर्जी श्रने श्रनुराधा ए नक्त्रो, तथा एंचकादिक (पंचक, यमल श्रने त्रिपुष्कर) ए योग, तथा रवि श्रने मंगळ ए वारो मृतकार्यमां वर्ष्य हे. ११६.

दो पणयाखमुहुत्ते तीसमुहुत्तेगपुत्तलं काउं। नेरइख दाहिणाए महा परिठावणं कुङ्जा ॥ ११७॥ पीलाखीश मुहूर्त्तनां संजोगीयां नक्षत्रमां वे श्राने त्रीश मुहूर्त्तनां संजोगीयां नक्षत्रमां एक पुतळुं करीने नैर्कल्य के दक्षिण दिशामां ते पुतळानी महा परिष्ठापना करवी, एटखे श्राग्ने संस्कार करवो. ११०.

तिन्नेव उत्तराइं पुणवसु रोहिणी विसाहा य।
एष व नकता पणयालमुहुत्तसंजोगा॥ ११ए॥
सयितस-त्ररणी साई अस्सेस-जिठ्डद वच नकता।
पनरस-मुहुत्तजोगा तीसमुहुत्ता पुणो सेसा॥ ११०॥

त्रण उत्तरा (उत्तराफाहगुनी, उत्तराषाहा, उत्तराजाइपद), पुनर्वसु, रोहिणी, विशाला, ए उ नक्त्रो पीलाखीश मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय हे. ११ए. शतिषा, जरणी, स्वाति, अश्लेषा, ज्येष्ठा अने आर्जा, ए उ नक्त्रो पंदर मुहूर्त्तनां संयोगीयां कहेवाय हे. १२०.

॥ इति मृतकिया ॥

हवे दीहा तथा प्रतिष्ठा विषे कहे हे.-

मास-दिण-रिकसुर्कि मुणिकणं सिक्कशयध्वसग्गे । बारंग्रह्मिम सुके दिस्कपइहाइळं क्रुजा ॥ १२१ ॥

मास, दिवस अने नक्त्र ए त्रऐनी शुक्ति जाणीने सिक्त ठाया अथवा ध्रुव खग्न होय त्यारे अथवा बार आंगळना शंकुनी छाया शुक्त होय त्यारे दीका तथा प्रतिष्ठा विगेरे शुज कार्यो करवां. १११.

हरिसयण खकम्मण खहिखमास ग्ररिसुक्ति खरिय सिसुबुहे। सिस नहे न पइठा दिस्का सुक्तऽस्थि वि न घुठा॥ ११२॥

हिर शय्यामां सुता होय एटले चतुर्मासमां, श्रधिक मासमां, गुरु शुक्रनो श्रस्त होय त्यारे, गुरु शुक्रनी बाह्यावस्था के वृद्धावस्था होय त्यारे तथा चंद्रनो नाश (असत) होय त्यारे प्रतिष्ठा तथा दीका करवी नहीं. तेमां शुक्रना अस्तमां दीका इष्ट नथी, एटले के मात्र शुक्रनो अस्त होय तो दीका देवामां दोष नथी. १९२.

अवजोगकुलिअनदा जकाई जस्थ तं दिएं वज्जे । संकंति साइदिएतिह गहणे इग्र आइ सग पन्ना ॥ १२३ ॥ भार ११ श्रवजोग, कुलिक, जजा (विष्टि) तथा लहकापात विगेरे जे दिवसे होय ते दिव-सने वर्जवो. संक्रांतिनो दिवस, तेनी पहेलानो एक दिवस श्रने तेनी पढ़ीनो एक दिवस एम त्रण दिवस वर्जवा. तथा (सूर्य चंजना) ग्रहणमां पहेलानो एक दिवस, एक ग्रह-णनो दिवस श्रने त्यारपढ़ीना सात दिवस एम नव दिवस वर्जवा. १२३.

सुक्रतिही सुहवारे सिक्षाऽमियराजजोगपमुहाइं। जत्य हवंति सुहाइं सुहकक्को तं दिएं गिक्कं॥ १२४॥

शुद्ध तिथि स्त्रने शुज वारने दिवसे ज्यारे सिद्धि योग, स्त्रमृत योग स्त्रने राज योग विगेरे शुज योगो होय ते दिवस शुज कार्यमां ग्रहण करवो. ११४.

इत्थऽणुराहा-साई सवणुत्तर-मूलरोहिणी पुस्सा । रेवइ-पुणवसु इत्र दिस्कपइठा सुहा रिस्का ॥ ११५ ॥

इस्त, अनुराधा, स्वाति, अवण, त्रण उत्तरा, मूळ, रोहिणी, पुष्य, रेवती अने पुन-वंसु, आटलां नक्त्रो दीका अने प्रतिष्ठामां शुज हे. १२५.

श्रिस्सिणि-सयितस-पू-जा एसु वि दिस्का सुहा विणिहिष्ठा। मह-मिग-धणि-पइष्ठा कुङ्जा विज्ञिङ्ज सेसाई॥ ११६॥

जपर कह्यां जपरांत अश्विनी, शतिजा अने पूर्वाजाइपद, एटखां नक्त्रोमां पण दीका आपवी सारी कही हे. तथा मघा, मृगशिर अने धनिष्ठा, ए नक्त्रोमां पण प्रतिष्ठा करवी, बाकीनां नक्त्रो वर्ज्य हे. १२६.

कारावगस्स जम्मे दसमे सोखसमेऽठारसे रिस्के। तेवीसे पणवीसे न पड्डा कह वि कायवा॥ १२७॥

प्रतिष्ठा करावनारना जन्मनुं, दशमुं, सोळमुं, श्रदारमुं, त्रेवीशमुं श्रने पचीशमुं, श्राटलां नक्त्रो सारां होय तोपण तेमां सर्वथा प्रतिष्ठा करवी नहीं. १२७.

संजागयं रविगयं विद्वेरं सग्गहं विखंबं च। राहुहयं गहजिन्नं वज्जए सत्त नकते॥ ११०॥

शुज नक्तत्र पण संध्यागत होय, सूर्यगत होय, विद्वर होय, यह सहित होय, विद्वं-बित होय, राहुश्री हणायुं होय के यहश्री जेदायुं होय, आ सात प्रकारनां नक्त्रों वर्जवा द्यायक हे. १२०. श्रात्यमणे संजागय रिवगय जत्य िठ श्र श्राह्यो। विद्वेरमवहारिय सग्गह क्र्रगहिठ जं तु॥ ११ए॥ श्राह्य पिठ क विलंबि राहुह्यं जिहें गहणं। मिल्रेण गहो जस्स उ गहर तं होइ गहिन हो। १३०॥ संजागयिम कलहो होइ विवार् विलंबि नस्कते। विद्वेरे परविजर् श्राह्यगए श्राम्यणं॥ १३१॥ जं सग्गहिम कीरइ नस्कते तत्थिव ग्गहा होइ। राहुहयिमा मरणं गहिन हो सोणि उग्गालो॥ १३१॥

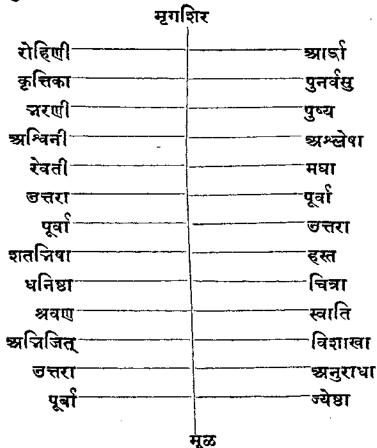
र्विरिकार्ड हेया जवग्गहा पंचमऽठ-चजदसमा । श्रष्ठारस डग्रंणीसा बाबीसा तेवीस चजवीसा ॥ १३३ ॥

सूर्यना नक्षत्रथी पांचमुं, छाठमुं, चौदमुं, छाढारमुं, छंगणीशमुं, बावीशमुं, त्रेवीशमुं छाने चोवीशमुं, एटखां नक्षत्रो छपमह कहेवाय हे. ते शुज कार्यमां तजवा योग्य हे. १३३.

> ॥ इति जपग्रहाः॥ एकार्गल योग विषे.—

सेगविसमजोगऊं सम श्रद्ध चढदसंख सिरिरिकम्। वार्जं चढदससिलाए सिसरिव इकग्गलं वक्ते॥ १३४॥

प्रथम ३९ मी गायामां विष्कंच १, ऋतिगंस ६, शूळ ए, गंस १०, व्याघात १३, वज्र १५, व्यतीपात १९, परिघ १ए, वैधृति २९, ए नव ऋशुच योगी कह्या हो. तेमां जे विषम (एकी) संख्यावाळो योग होय तेमां एक वधारीने तेना आर्ध करवा अने सम (बेकी) संख्यावाळो होय तेना आर्ध करी पठी चौद वधारवा. जे संख्या आवे तेट- लामुं नक्षत्र एकार्गल यंत्रने माथे मूकी त्यारपठीनां नक्षत्रो अनुक्रमे मूकवां. ते यंत्र तेर लींटी आर्मी अने एक जन्मी एम चौद लींटीनुं करतुं. पठी सूर्य अने चंद्र जे नक्षत्रमां होय ते नक्षत्र जपर सूर्य अने चंद्र मूकवा. जो ते बन्ने सामसामा आवे तो ते एकार्गल वर्षया योग्य हो. जेमके विष्कंत्र योग पहेलो हो. ते विषम हो, माटे एक जमरवाशी वे थया. तेने आर्ध करवाथी एक आब्यो, तेथी पहेलुं अश्विनी नक्षत्र माथे मूकवुं. ए रीते गंम योग दशमो हो. ते सम हे तेने आर्ध करवाथी पांच आवे. तेमां चौद जमेर-वाथी जंगणीश थाय, तेथी जंगणीशमुं मूळ नक्षत्र माथे मूकवुं. शूल योग नवमो हे ते विषम हो, तेथी तेमां एक जमरवाथी दश आय, तेनुं आर्थ पांच आय, तेथी पांचमुं नक्षत्र मृतिर माथे मूकवुं. १३४.



॥ दिनशुद्धिः॥

हवे पात योग कहे हे.-

श्रम्से म चि श्रणु सव रे विसमारेहा ज सेसमजिबहिजं। रविरेहस्सिणि गणिए इंडे रिकं विसमि पाज ॥ १३५॥

अश्लेषा १, मघा १, चित्रा ३, अनुराधा ४, अवण ५, रेवती ६, आ नक्त्रोधी छात्रमे रेखा करी तेमां शेष नक्त्रो स्थापन करी ज्यां सूर्य नक्त्र होय त्यांसुधी आ उ नक्त्रोथी गण्डुं. जे जे संख्या आवे अश्विनीथी छत्क्रमे गण्तां ते ते संख्यावाळां नक्त्रन्यां पात जाण्वो. तात्पर्य ए छे जे सूर्य कृत्तिकानो छे तो अश्लेषादिक उ नक्त्रयी सूर्य ११—१५—१५—ए—५ थाय तो अश्विनीथी छत्क्रमे बावीशमुं विगेरे पुनर्वस, पुष्य, छत्तराफाहगुनी, स्वाति, पूर्वाषाढा अने पूर्वाजाइपद आदि उ नक्त्रमां पात जाण्वो. १३५.

रिवमुका निश्चरिका बार हम तिश्च तिवीसं छंह च। पणवीस श्रमिगवीसं कुणंति खत्ताइघं रिकं॥ १३६॥

सूर्य जे नक्षत्रमां रहेल होय ते नक्षत्रथी बारमा नक्षत्रने, चंद्र खाठमा नक्षत्रने, मंगळ त्रीजा नक्षत्रने, बुध त्रेवीशमा नक्षत्रने, गुरु ठठा नक्षत्रने, शुक्र पचीशमा नक्षत्रने श्रानि खाठमा नक्षत्रने अने राहु एकवीशमा नक्षत्रने लत्ता दोषधी हणेलुं करे हे. १२६.

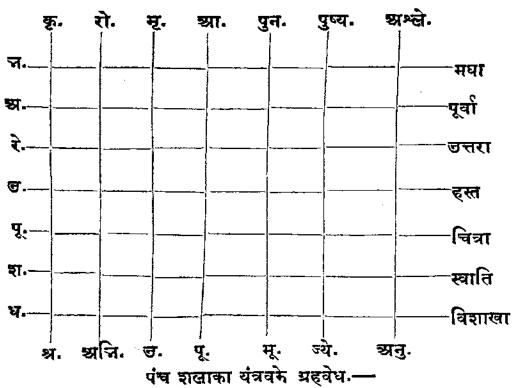
हवे वेधने कहे हे ---

सत्त सिखाए कित्तिश्रमाई रिके विवत्तु जोएइ। गहवेहमिछरिके जवरि श्रहो वा पयतेण॥ १३९॥

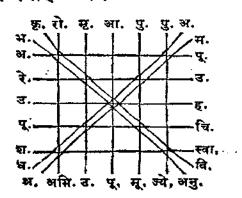
सात शलाका (लींटी) आमी तथा जनी करवी. पठी मथाळे कृत्तिकाथी अनुक्रमे १० नक्त्रो मूकीने इष्ट नक्त्रने विषे प्रयत्ने करीने ग्रहनो वेध जोवो, एटले के सप्त शलाका यंत्रमां जे नक्त्रो मूक्यां होय त्यां जे ठेकाणे संजवे ते ठेकाणे सर्वे ग्रहो मूक्या. तेमां जो सौम्य ग्रह अने पाप ग्रह सामसामा आवे तो ते वेध समजवो। ते वेध अशुन हे. १३७.

॥ दिनशुद्धिः ॥

सप्त शखाका यंत्र--



पंचित्तवाए दो दो रेहा कोणेसु रोहिणीमुका।
दिसि धुरि रिक्का उ कमा वए विलोइका वेहमिहं ॥ १३०॥
पांच शिंदाकानो यंत्र छपर प्रमाणे करी खूणामां बबे रेखार्ड करवी पड़ी दिशाने
मधाळे रोहिणीथी अनुक्रमे नक्त्रो मूकवां पड़ी छपर प्रमाणे ग्रह मूकीने तेनो वेध
दीका विषे जोवो. यंत्र नीचे प्रमाणे — १३०.





सिद्धश्रायाद्यग्गं रविकुजबुइजीव संकुपायकमा । एगारस नव श्रम सग श्रद्धाः (नव) सेसवारेसु ॥ १३७॥

ग्राया द्वाप्त आ प्रमाणे सिक्ष थाय हे. नशंकुना आंक अथवा पोतानी ग्रायानां पगद्धां रिववारे आगीयार, मंगळवारे नव, बुधवारे आह अने गुरुवारे सात थाय तथा बीजा वारोमां सामा आह सामा आह थाय ते वखते हाया द्वारा कर कहेवाय हे. ते सर्व कार्यमां शुन्न हे. १३ए.

ध्रुव चन्ननुं फळ-

तिरिन्नगे धुवे दिस्का पष्टठाष्ट्र सुहंकरे। जहुटिए धयारोव खित्तगाई समायरे॥ १४०॥

धुव तिरहो होय त्यारे दीहा, प्रतिष्ठा विगेरे कार्य शुजंकर हे, श्रने धुव कर्ध्व रह्यो होय त्यारे ध्वजारोपण तथा हेन्न वास्तु विगेरे करवां. श्रहीं एम समजवुं के ध्वना तारानी पासे वे नाना तारा होय हे ते तारा तिरहा होय तो ध्व तिरहो कहेवाय हे, श्रने ते तारा जपर नीचे होय तो ध्व पण कर्ध्व कहेवाय हे. १४०.

शंकु हाया लग्न विषे ---

वीसं सोलस पनरस चजदस तेरस य बार बारेव। रिवमाञ्सु बारंगुलसंकुष्ठायंग्रैला सिद्धा ॥ १४१॥

बार आंगळनो शंकु करवो. पठी रिववारे ते शंकुनी ठाया वीश आंगळनी आय, सोमवारे सोळ आंगळ, मंगळवारे पंदर आंगळ, बुधवारे चौद आंगळ, गुरुवारे तेर आंगळ, शुक्रवारे बार आंगळ तथा शनिवारे पण बार आंगळनी ठाया थाय त्यारे ते सिद्य ठाया कहेवाय ठे. १४१.

प्रथम गोचरी, नंदी विगेरे विषे.—

तिकुगमिस्स रिकाणि चिचा जोमसणिहरं। पढमं गोश्चरं नंदी पमुहं सुहमायरे॥ १४२॥

तीहण, उम्र अने मिश्र नक्त्रोने तथा मंगळ अने शनि ए वे वारने तजीने पहेली गोचरी तथा नंदी (मांद) विगेरे शुज कार्य करवां. १४२. इस्र जोगपईवार्ड पयमस्थपपहिं विहिश्य छक्कोत्रा । मुणिमणजवणपयासं दिणसुद्धिपईवित्रा कुण्छ ॥ १४३ ॥

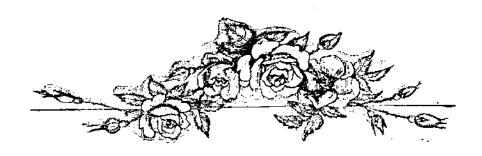
आ रीते योगरूपी प्रदीप थकी प्रगट अर्थवाळां पदोए करीने जेनो जद्योत कर्यो है एवी आ दिनशुद्धिरूपी दीपिका मुनिलेनां मनरूपी जवनना प्रकाशने करो. १४३.

सिरिवयरसेणगुरुपद्धनाह सिरिहेमतिलयसूरीणं।

पायपसाया एसा रयणसिहरसूरिणा विहिन्छा॥ १४४॥

श्री वज्रसेन गुरुनी पाटना स्वामी श्री हेमतिलक सूरिना पादप्रसादची छा दिन गुद्धि रलशेलर सुरिए रची हे.

।। इति श्रीरत्नशेलरसूरिविरचिता दिनशुद्धिपदीपिका ॥



www.jainelibrary.org